

श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

वैजयन्तीकोषः

सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री

वैजयन्तीकोषः

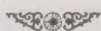
सम्पादकः

पं० हरगोविन्दशास्त्री



जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

२



श्रीयादवप्रकाशाचार्यविरचितः

वैजयन्तीकोषः

सलिङ्गनिर्देशं शब्दानुक्रमणिकासहितः

सम्पादकः

व्याकरण-साहित्याचार्य-साहित्यरत्न

श्री पं० हरगोविन्दशास्त्री



चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी

प्रकाशक
चौखम्भा भारती अकादमी

आकर ग्रन्थों के प्रकाशक एवं वितरक
'गोकुल भवन', के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी-२२१००१ (भारत)
फोन : +९१ ५४२ २३३०३४५, २३३०३४९ (ऑ.)
+९१ ५४२ २३३२६३७, २३३२७०२ (नि.)

© चौखम्भा भारती अकादमी, वाराणसी
पुनर्मुद्रित : सन् २००८
मूल्य : रु. ४००.००

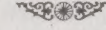
शाखा
चौखम्भा बुक्स
५ यू. ए. जवाहर नगर
(जवाहर नगर पोस्ट ऑफिस के पीछे)
मलकागंज, दिल्ली-११०००७
फोन : +९१ ११ २३८५३१६६

अन्य प्राप्ति स्थान
चौखम्भा विश्वभारती
भारतीय संस्कृति एवं साहित्य के प्रकाशक व वितरक
के. ३७/१०९, गोपाल मन्दिर लेन
वाराणसी-२२१००१ (भारत)

मुद्रक : सुरभि प्रिंटर्स, वाराणसी

Jaikrishnadas-Krishnadas Prachyavidya Granthamala

2



VAIJAYANTĪKOṢA

OF
ŚRĪ YĀDAVAPRAKĀŚĀCĀRYA

Edited with Introduction and Index

by

Śrī Pt. Haragovind Śāstri
Vyākaraṇa-Sāhityāchārya, Sāhityaratna

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY
VARANASI

Publisher

CHAUKHAMBHA BHARATI ACADEMY

Publishers & Distributors of Monumental Treatises of the East

'Gokul Bhawan' K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Phone : +91-542-2330345, 2330349 (O)

+91-542-2332637, 2332702 (R)

© Chaukhambha Bharati Academy, Varanasi

Reprint Year : 2008

Also can be had from

CHAUKHAMBHA BOOKS

5. U. A. Jawahar Nagar

(Behind Jawahar Nagar Post-office)

Malkaganj, Delhi-110007

Phone : +91-11-23853166

Branch

CHAUKHAMBHA VISVABHARATI

Oriental Publishers & Distributors

K. 37/109, Gopal Mandir Lane

Varanasi-221001 (India)

Printed at : Surbhi Printers, Varanasi

प्रस्तावना

लोकव्यवहृतिहेतु शारदराकेशविमलतमम् ।

सारस्वतं महोऽहं शब्दब्रह्माभिधं वन्दे ॥ १ ॥

चन्द्राशुसितभस्माङ्ग चन्द्राकाग्निलोचन ।

चन्द्रास्थोमाचितार्द्धाङ्ग चन्द्रचूड नमोऽस्तु ते ॥ २ ॥

अपने-अपने पूर्वजन्माजित शुभाशुभ कर्मोंके अनुसार चौरासी लक्ष योनियों-में-से नानाविध योनियोंमें जन्म लेकर इस कष्टमय संसारमें विविध दुःखोंको भोगनेके लिए जीव बाध्य हुआ करता है। देव-यक्षादि कुछ योनियां उनमें सुखद भी हैं, किन्तु उनमें भी उत्पन्न जीव अपने शुभ कर्मोंसे उपलब्ध सुखोंका भोगमात्र ही करता है, पुनः पुण्यकर्माजन्-द्वारा अपने सुखद भोगोंमें लेशमात्र भी वृद्धि नहीं कर सकता, क्योंकि वे सभी भोग-योनियां हैं, कर्मयोनियां नहीं। कर्म-योनि तो केवल मनुष्य-योनि ही है, इसीमें उत्पन्न प्राणी अपने-अपने कर्मजन्य सुखप्रद भोगोंको भोगता हुआ भी शुभकर्माजन्-द्वारा धर्मार्थकामरूप पुरुषार्थत्रय प्राप्तकर मोक्षरूप परम पुरुषार्थ भी प्राप्त कर सकता है। इसी कारण इस मनुष्य-योनि को सर्वश्रेष्ठ योनि माना गया है। इसे प्राप्त करनेके लिए देवराज इन्द्र भी तरसते हैं और चाहते हैं कि सौभाग्यवश यदि मुझे दुर्लभ मनुष्य-योनि प्राप्त हो जाय तो मैं मोक्ष-लाभकर परमानन्दकन्द परब्रह्म परमात्मामें लीन होकर कष्टमय संसारके आवागमनसे सदा सर्वदाके लिए मुक्त हो जाऊँ।

मनुष्य-योनि-प्राप्तिके साधन—

परमदुर्लभ मनुष्य-योनि-प्राप्तिके मुख्यसाधन दो प्रकारके हैं—प्रथम कठोरतम तपश्चरणादि तथा द्वितीय सुखमय जीवन व्यतीत करते हुए सत्काव्य-सेवन। इनमें-से प्रथम साधन नानाविध विघ्न-बाधाओंसे भरा हुआ अतिशय कष्ट-साध्य है तथा सत्काव्य-सेवनरूप द्वितीय साधन पूर्वापेक्षया अधिक सरल एवं सुख-साध्य है। अत एव जीवमात्रको सत्काव्य-सेवन-द्वारा यश, धन तथा व्यवहार-ज्ञानकी प्राप्ति करते हुए दुःख-निवृत्ति एवं कान्तोपदेशसम्मित सद्यः परमसुख-प्राप्ति करनी चाहिए। शास्त्रकारोंने भी डिण्डिमघोषपूर्वक इसी बातका समर्थन किया है। यथा—

‘काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरत्तये ।

सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततथोपदेशयुजे ॥’

तथा—

‘धर्मार्थकाममोक्षेषु वैचक्षणं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिषेवणम् ॥’

इसी सत्काव्य-सेवनद्वारा व्यास, वाल्मीकि, कालिदास, भास, भवभूति, माघ, मयूर, बाण, श्रीहर्ष, धावक, दण्डी आदि महामनीषियोंने स्व-स्व-लक्ष्यानुसार अर्थ, धर्म, काम और मोक्षतक प्राप्त किया, यह सर्वविदित है। मनुष्य-योनि लाभ करनेपर भी विद्या, कवित्व और कवित्व-शक्तिका लाभ करना उत्तरोत्तर दुर्लभ है। यथा—

‘नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।
कविस्त्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥’

(अग्निपुराण २३७।३-४)

भगवान् पतञ्जलिने तो सम्यक् प्रकारसे ज्ञात एवं सुप्रयुक्त एक शब्दको भी इहलोक एवं परलोकमें कामदुष्टा ही बतलाया है। यथा—

‘एकः शब्दः सम्यग्ज्ञातः सुप्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग्भवति ।’

(महाभाष्य पस्पशाह्निक)

इसी कारणसे शास्त्रकारोंने व्याकरणशास्त्रके अध्ययनपर विशेष जोर दिया है। यथा—

‘यद्यपि बहु नाधीवे पठ पुत्र व्याकरणम् ।

स्वजनः स्वजनो मा भूत् सकलं शकलं सकृच्छकृत ॥’

उपयुक्त वचनसे यह सुस्पष्ट हो जाता है कि अधमात्रात्मक एक व्यञ्जनका व्यतिक्रम होनेसे अर्थका कितना अनर्थ हो जाता है।

कोषकी आवश्यकता—

शब्द-शास्त्रके ज्ञानके बाद भी कवित्व-शक्ति-प्राप्त्यर्थ बहुशब्द-सञ्चय करना परमावश्यक होता है, वह सञ्चय उत्तमोत्तम कोषद्वारा ही हो सकता है, क्योंकि कोष-हीन पुरुष तथा भूपाल जिस प्रकार प्रजोत्पादन एवं प्रजा-रक्षणमें सर्वथैव असमर्थ रहते हैं, उसी प्रकार कोष-हीन विद्वान् भी उत्तम काव्यकी रचना करने या उसका यथावत् रसास्वादन करनेमें सर्वथा असमर्थ ही रहता है। यथा—

‘नरभूपौ चिन्ता कोषं प्रजोत्पादनरक्षयोः ।

नैव क्षमौ यथा, तद्वत् कविः काव्यकृतावपि ॥’

शब्द-दारिद्र्याक्रान्त कवि उपयुक्त शब्द-चयन करनेमें ही सदा व्यस्त रहनेसे उन्नतोन्नत-कल्पना-पूर्ण कविता करनेमें कदापि समर्थ नहीं होता है। अतः कोष-सञ्चय करना सत्कविके लिए परमावश्यक है।

वैदिक कोषकी सर्वप्रथम रचना—

सृष्टिकर्ता ब्रह्माने सर्वप्रथम अपने मानसपुत्रोंको वेदोंका अध्ययन कराया, उन्होंने उन वेदोंको सुनकर कण्ठस्थ कर लिया और पुनः उनका स्मरणकर अपने शिष्योंको अध्ययन कराया। श्रुति-गोचर (श्रवण) कर स्मरणद्वारा अध्ययन करानेकी यह परम्परा अनेक शताब्दियों तक चलती रही और हस्तामलकवत् त्रिकालदर्शी महर्षि लोकोपकारार्थ वेद-सम्मत अन्यान्य शास्त्रों (ब्राह्मण, उपनिषद्, धर्मशास्त्रादि) की रचनाकर अपने-अपने योग्यतम शिष्योंको अध्ययन कराते रहे।

आगे चलकर समय बदला और उन महर्षियोंके यम-नियम-संयमादिमें शैथिल्य होनेसे उनकी बुद्धिका भी ह्रास हो गया, श्रवणमात्रसे वेदको स्मरण रखने एवं समझनेकी क्षमताका अभाव देखकर कश्यप मुनिने वेदज्ञानार्थ निघण्टुकी रचना की, किन्तु कालचक्रके आगे बढ़ते रहनेसे अन्न-पान-संसर्गादिक बुद्धिवैश-द्यावरोधक दोषोंके कारण तपोबलका ह्रास उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया। तत्फलस्वरूप वेदार्थप्रतिपादक निघण्टुका आशय समझना भी अशक्य हो गया, यह देख यास्क (ई० पू० ७०० वर्ष) ने निघण्टुके भाष्यरूप ‘निरुक्त’ ग्रन्थकी रचना की। वेदोंमें आनेवाले शब्दोंका निर्वचन करनेसे इसके द्वारा वेदार्थ-ज्ञान करना सरल हो गया। इसके विषय ये हैं—

‘वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च द्वौ चापरो वर्णविकारनाशौ ।

धातोस्तदर्थान्तिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥’

निघण्टुके भाष्यस्वरूप इस निरुक्तमें यास्कने ‘एके, परे, अपरे, अन्ये, आचार्याः’ आदि शब्दों-द्वारा अज्ञात-नामा आचार्योंका सङ्केतकर इन बारह आचार्योंका स्पष्ट रूपसे नाम-निर्देश किया है। उनके नाम ये हैं—१ ओदुम्बरायण, २ औप-मन्यव, ३ वार्षायणि, ४ गार्ग्य, ५ आग्रहायण, ६ शाकपूणि, ७ और्णनाभ, ८ तैटिकी, ९ गालव, १० स्थोलाष्ठीवी, ११ क्रौष्टु और १२ काथक्य। जिस प्रकार वेदाङ्ग व्याकरण, छन्द, ज्योतिष, शिक्षा और कल्प कोई एक-एक ग्रन्थ-विशेष न होकर सभी अनेकानेक ग्रन्थात्मक हैं, उसी प्रकार निघण्टु या निरुक्त भी कोई स्वतन्त्र एक-एक ग्रन्थ-विशेष नहीं; अपितु वे दोनों (निघण्टु और निरुक्त) भी अनेकानेक ग्रन्थरूपात्मक ही हैं। ५० श्रीभगवद्भक्तजीने एक लेखमें वेदोंके भाष्यकार यास्कादिके भाष्य-ग्रन्थोंमें उद्धृत लगभग १७ निघण्टुओंके अस्तित्वका उल्लेख किया है, किन्तु इस समय वे सभी अप्राप्य हैं। (श्रीवाचस्पति गैरोलाकृत सं० साहित्यका इतिहास, पृ० १८७-१८९)

लौकिक कोषोंकी रचना—

संयम-नियम, आचार-विचार, अन्न-पान, रहन-सहन आदिके शास्त्र-बहिर्भूत होनेसे बल, वीर्य, मेधा, विद्या, तपश्चरणादिके और अधिक ह्रास होनेपर लौकिक

शब्दोंके अर्थ-ज्ञानको भी दुर्बोध होता हुआ देखकर आचार्योंने शास्त्र-ज्ञानार्थ 'लौकिक शब्दकोषों'की रचना की। प्राचीनाचार्योंमें अपने ग्रन्थोंमें समय, निवास तथा देशादिका परिचय देनेकी परम्परा नहीं रहनेसे किस आचार्यने कौन-सा लौकिक शब्दकोष सर्वप्रथम रचा, यह निर्णय आज तक इतिहासकार नहीं कर सके हैं। इसके कारण निम्न-लिखित हैं—

(क) 'शब्दकल्पद्रुम'के रचयिता 'स्यार राजा राधाकान्त देव बहादुर'ने उक्त ग्रन्थके मुखबन्ध (पृ० ४) में अग्निपुराणमें वर्णित अभिधानको सर्वप्रथम कोष माना है। इसका प्रकरण-क्रम इस प्रकार है—पहले स्वर्गपातालादिवर्ग, नानार्थवर्गके बाद भू-पुर-अद्रि-वनोषधि-सिंहादि-नृ (मनुष्य)-ब्रह्म-क्षत्र-वैश्य-शूद्र-वर्गका वर्णनकर अन्तमें सामान्यलिङ्गका वर्णन है। किन्तु अमरसिंहने स्व-रचित अमरकोषमें उक्त क्रमका व्यत्यासकर अग्निपुराणोक्त 'सामान्य-नामलिङ्गों'के स्थानमें विशेष्यनिघ्नवर्ग तथा सङ्कीर्णवर्गको समाविष्टकर 'लिङ्गादिसंग्रहवर्ग'को पृथक् कर दिया है। उक्त अमरसिंहका ही अनुकरण 'जटाधर' ने अपने '.....'ग्रन्थ में और 'पुरुषोत्तमदेव'ने 'त्रिकाण्डशेष' में किया है।

इसके बाद उक्त राजा सा० ने निम्नलिखित कोषों एवं उनके रचयिताओंका नाम-निर्देश किया है। यथा—

ग्रन्थकार	कोष
१. अमरसिंह	: नामलिङ्गानुशासन
२. अजयपाल	: नानार्थसंग्रह
३. गदसिंह	: नानार्थध्वनिमञ्जरी
४. चक्रपाणि	: शब्दचन्द्रिका
५. जटाधराचार्य	: पर्यायनानार्थकोष
६. दण्डाधिनाथ	: नानार्थरत्नमाला
७. दुर्गादासविद्यावागीश	: धातुदीपिका
८. धनञ्जयकवि	: नाममाला
९. धनिकदासब्राह्मण	: सारसंग्रहनामक अनेकार्थसमुच्चय
१०. नरसिंह कालीपण्डित	: निघण्टुराज (राजनिघण्टु)
११. नारायणदत्तकविराज	: राजवल्लभ
१२. पद्मनाभदत्तद्विज	: भूरिप्रयोग
१३. पुरुषोत्तमदेव	: एकाक्षरकोष
१४. "	: द्विरूपकोष
१५. "	: त्रिकाण्डशेष

ग्रन्थकार	कोष
१६. पुरुषोत्तमदेव	: हारावली
१७. भावमिश्र	: भावप्रकाश
१८. मयुरेशपण्डित	: शब्दरत्नावली
१९. महेश्वरवैद्य	: विश्वप्रकाश
२०. मेदिनीकरवैद्य	: नानार्थशब्दकोष
२१. रामेश्वरशर्मा	: शब्दमाला
२२. रत्नमालाकरवैद्य	: आयुर्वेदार्णवोत्थित पर्यायरत्नमाला
२३. वोपदेवमिश्र	: कविकल्पद्रुम
२४. श्रीनन्दनभट्टाचार्य	: वर्णाभिधान
२५. श्रीरामशर्मा	: उणादिकोष
२६. सि. कौ. संक्षिप्तसारकार :	उणादिवृत्ति
२७. " "	" "
२८. हलायुधभट्ट	: अभिधानरत्नमाला
२९. हेमचन्द्रजैन	: अभिधानचिन्तामणि

इनके अतिरिक्त (१) विश्वकोषमें—

१. भोगीन्द्र, २. कात्यायन, ३. साहसाङ्क, ४. वाचस्पति, ५. व्याडि, ६. विश्वरूप, ७. मङ्गल, ८. शुभाङ्क, ९. बोपालित और १०. भागुरिके द्वारा रचे गये—

तथा (२) मेदिनीकोषमें—

१. उत्पलिनी, २. शब्दान्व, ३. संसारावर्त, ४. नाममालाख्य, ५. वररुचि, ६. शाद्वत, ७. रन्तिदेव, ८. रत्नापरनामहर, ९. गोवर्धन, १०. रभसपाल, ११. रुद्र, १२. अमरदत्त, १३. गङ्गाधर, १४. वाभट, १५. माधव, १६. धर्म, १७. तारपाल, १८. वामन, १९. चन्द्र, २०. विक्रमादित्य और २१. गोमि'के रचित कोष तथा २२. पाणिनि-पदानुशासन कोष; इनके कोषग्रन्थोंका नामोल्लेख है।

(ख) पुरुषोत्तमदेव-रचित 'त्रिकाण्डशेष'नामक कोषकी 'साराध्वचन्द्रिका' नामकी संस्कृत व्याख्याके कर्ता 'श्रीशीलस्कन्ध यतिवरने' प्राप्ताप्राप्त एवं ज्ञाता-ज्ञात नामवाले कोषों तथा कोष-रचयिताओंके निम्नलिखित १९२ नामोंका उल्लेख-कर 'दैवज्ञ'मुखमण्डन, सरस्वतीनिघण्टु, और सिद्धीषधनिघण्टु,—इन तीन ग्रन्थों-के लङ्काद्वीपमें सिंहलाक्षर लिपिमें मुद्रित होनेकी चर्चा की है। उनकी तत्रत्य

१. उपरिलिखित २९, १० तथा २२ नामोंके अतिरिक्त भी कतिपय नाम और ग्रन्थ अर्वाचीन हैं तथा कुछ नाम कोषभिन्न हैं।

पुस्तकालयीय ग्रन्थ-संख्या क्रमशः १४६, १८७ और १९२ है, यह भी उनका कथन है। उल्लिखित १९२ कोष एवं कोषकारोंके ये नाम हैं—

प्राप्तकोष :

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
१. नामलिङ्गानुशासन	: अमरसिंह
२. कल्पद्रु	: केशव
३. शब्दार्णव	: दुर्गादास
४. प्रमाणनाममाला	: धनञ्जय
५. त्रिकाण्डशेष	: पुरुषोत्तमदेव
६. हारावली	: "
७. एकाक्षरकोष	: "
८. द्विरूपकोष	: "
९. "	: भरतसेनमल्ल
१०. मातृकानिघण्टु	: महीदास
११. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: महाक्षपणक
१२. अव्ययकोष	: महादेव
१३. विश्वप्रकाश	: महेश्वर
१४. शब्दभेदप्रकाश	: "
१५. नानार्थमञ्जरी	: भेदिनीकर
१६. वैजयन्ती	: यादव
१७. लिङ्गविशेषविधि	: वररुचि
१८. पञ्चतत्त्वप्रकाश	: वेणीदत्त
१९. नानार्थसमुच्चय	: शास्त (?)
२०. लक्ष्मीनिवास	: शिवराम
२१. गणितनाममाला	: हरिदत्त
२२. अभिधानरत्नमाला	: हलायुध
२३. शारदीयनाममाला	: हर्षकीर्ति
२४. अनेकार्थसंग्रह	: हेमचन्द्र
२५. अभिधानचिन्तामणि	: "
२६. अभिधानचिन्तामणि—	
नाममालापरिशिष्ट	: "
२७. लिङ्गानुशासन	: "

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
२८. अभिधानरत्नमालाशिलोच्छ्रः	जिनेन्द्रमुनीश्वर
२९. मदनपालनिघण्टु	: मदनपाल
३०. मुक्तावली	: श्रीधर
३१. रत्नमाला	: दण्डाधिनाथोपनाम इरुगप्प
३२. शब्दसंग्रहनिघण्टु	: अगस्त्य
३३. नानार्थसंग्रह	: अजयपाल
३४. नामसंग्रहमाला	: अप्पथदीक्षित
३५. एकाक्षरनाममाला	: अमरसिंह
३६. प्रयुक्तपदमञ्जरी	: कालिदास
३७. शब्दार्णव	: काशीनाथ
३८. लघुनिघण्टुसार	: केशव
३९. लोकप्रकाश	: क्षेमेन्द्र
४०. अनेकार्थध्वनिमञ्जरी	: गदसिंह
४१. शब्दमाला	: गोपीनाथ
४२. नामावली	: गोवर्धन
४३. शब्दसागर	: गोविन्दशर्मा
४४. शब्दचन्द्रिका	: चक्रपाणिदत्त
४५. अभिधानतन्त्र	: जटाधराचार्य
४६. निघण्टु	: जैमिनि
४७. कोमलकोषसंग्रह	: तीर्थस्वामी
४८. गीर्वाणभाषाभूषण	: त्रिविक्रमाचार्य
४९. नानार्थरत्नमाला	: दण्डनाथ या भास्कर
५०. नाममाला	: दुर्ग
५१. वैष्णवाभिधान	: देवकीनन्दन
५२. नानार्थसमुच्चय	: धरणीश
५३. कविजीवन	: धर्मराज
५४. बालप्रबोधिका	: नत्किरकवि
५५. वर्णाभिधान	: नन्दनभट्टाचार्य
५६. राजनिघण्टु	: नरसिंहपण्डित
५७. राजवल्लभ	: नारायणदास
५८. रत्नकोष	: नरसिंहमुनि
५९. भूरिप्रयोग	: पद्मनाभ

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
६०. शीघ्रबोधिनीनाममाला :	पुण्डरीकविट्ठल
६१. वर्णदेशन :	पुरुषोत्तमदेव
६२. रत्नकोष :	पृथ्वीधराचार्य
६३. शब्दचन्द्रिका :	बाणभट्ट
६४. निघण्टुकैकाध्याय :	बाल्लिकेयमिश्र
६५. त्रिरूपकोष :	बिल्लण
६६. नामसंग्रहनिघण्टु :	भार्गवाचार्य
६७. नाममाला :	भोजराज
६८. मङ्गलकोष :	मल्ल
६९. शब्दरत्नावली :	मधुरेश
७०. पदचन्द्रिका :	मयूरभट्ट
७१. अनेकार्थतिलक :	प्रदीप
७२. शब्दरत्नाकर :	"
७३. एकाक्षरनिघण्टु :	माधव
७४. सुप्रसिद्धपदमञ्जरी :	मुरारि
७५. आयुर्वेदपर्यायरत्नमाला :	रत्नमालाकर
७६. शब्दार्थनिर्णय :	राक्षस
७७. कविदर्पणनिघण्टु :	राम
७८. उणादिकोष :	रामशर्मा
७९. शब्दमाला :	रामेश्वर
८०. रूपमञ्जरीनाममाला :	रूपचन्द्र
८१. नाममालानिघण्टु :	वरदराज
८२. ऐन्द्रनिघण्टु :	वररुचि
८३. कविमञ्जरी :	बल्लभ
८४. शब्दरत्नाकर :	वामनभट्ट
८५. कविदीपिकानिघण्टु :	विक्रमादित्य
८६. शब्दार्थचिन्तामणि :	विट्ठलाचार्य
८७. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
८८. शब्दार्थकल्पतरु :	वेङ्कट
८९. शाब्दिकविद्वत्कवि- प्रमोदक :	"
९०. दशदीपनिघण्टु :	वेदान्ताचार्य

ग्रन्थ-नाम	ग्रन्थकार-नाम
९१. संयमिनाममाला :	शङ्कर
९२. शिवकोष :	शिवदत्त
९३. द्विरूपकोष :	श्रीहर्ष
९४. श्लेषार्थपदसंग्रह :	"
९५. एकाक्षरनिघण्टु :	सदाचार्य
९६. लिङ्गप्रकाश :	सारेश्वर
९७. भुवनप्रदीपिका :	सार्वभौममिश्र
९८. शब्दरत्नाकर :	सुन्दरगणि
९९. अनेकार्थतिलक :	सोमभव
१००. एकाथनाममाला :	सीभरी
१०१. द्व्यक्षरनाममाला :	"

अविदित-ग्रन्थ-नामवाले कोषकार

१०२. अमरदत्त	११७. राजमुकुट
१०३. कृत्य	११८. रुद्र
१०४. गङ्गाधर	११९. धरणीधर
१०५. चन्द्रगोमि	१२०. वाग्भट
१०६. तारपाल	१२१. सर्वधर
१०७. दामोदर	१२२. वाचस्पति
१०८. धर्मदास	१२३. राजदेव
१०९. वोपालित	१२४. वामन
११०. भागुरि ^१	१२५. मुकुट
१११. भोगीन्द्र	१२६. विक्रमादित्य
११२. मङ्गल ^१	१२७. विश्वरूप
११३. मार्तण्ड	१२८. भट्टमल्ल
११४. रन्तिदेव	१२९. व्याडि
११५. रभसपाल	१३०. विश्वलोचन ^३
११६. राजशेखर	१३१. शुभाङ्क

१. इनका रचित 'त्रिकाण्डकोष' है। (द्रष्टव्य : वाचस्पति गैरोला-रचित सं० साहित्यका इतिहास, पृ० ६२०)

२. इनकी रचना 'मङ्गलकोष' है।

३. इनका रचित 'विश्वलोचनकोष' है, जो सूरतसे प्रकाशित है।

१३२. सोमनन्दी	१३५. हट्टचन्द्र
१३३. सज्जन	१३६. हर
१३४. साहसाङ्क	१३७. कात्यायन

अविदित कर्तृनामक, विदित-ग्रन्थनामक कोष

१३८. अमरमाला ^१	१६२. बृहदमरकोष ^३
१३९. असालतिप्रकाश	१६३. महाखण्डनकोष
१४०. आनन्दकोष	१६४. पदरत्नावली
१४१. एकवर्णसंग्रह	१६५. राजकोषनिघण्टु
१४२. एकाक्षरकोष	१६६. पुद्गलकोष
१४३. उत्पलिनौ	१६७. लिङ्गप्रकाश
१४४. ऊष्मविवेक	१६८. मुनिकोष
१४५. अजय	१६९. वर्णप्रकाशकोष
१४६. अरुण	१७०. पालकोष
१४७. इन्दुकोष	१७१. वात्स्यायनकोष
१४८. कल्पतरुकोष	१७२. कोषसार
१४९. ग्रहाभिधान	१७३. शब्दतरङ्गिणी
(देवज्ञमुखमण्डन)	१७४. गङ्गाधर
१५०. जकारभेद ^१	१७५. शब्ददीपिका
१५१. दण्डिकोष	१७६. गोवर्द्धनकोष
१५२. सुभूतिकोष	१७७. शब्दरत्नसमुच्चय
१५३. धन्वन्तरिनिघण्टु	१७८. शब्दसारनिघण्टु
१५४. नक्षत्राभिधान	१७९. चन्द्रकोष
१५५. देशीकोष	१८०. संसारावर्त
१५६. नानार्थमञ्जरी	१८१. चरककोष
१५७. नामनिधान	१८२. सकलग्रन्थदीपिका
१५८. पक्षकोष	१८३. सकारभेद ^२
१५९. भुमकोष	१८४. सजीवनी
१६०. चकारभेद	१८५. सन्मुखविवृतिनिघण्टु
१६१. बीजकोष	१८६. सरसशब्दसरणि

१. कतिपय विद्वान् इसे 'अमरसिंह' रचित कोष मानते हैं।

२. ४. कतिपय विद्वान् इसे 'बाणभट्ट' की रचना मानते हैं।

३. कुछ विद्वान् इसे 'अमरसिंह' की कृति मानते हैं।

१८७. सरस्वतीनिघण्टु	१९०. सारस्वताभिधान
१८८. साध्यकोष	१९१. हनुमन्निघण्टु
१८९. रत्नकोष	१९२. सिद्धौषधनिघण्टु

(ग) श्री वाचस्पति गैरोला जीने अपने संस्कृत साहित्यके इतिहासमें पाणिनि-द्वारा एक 'द्विरूपकोष' लिखे जानेका उल्लेख किया है (पृ० ६३४)। इस आधारपर यह कहा जा सकता है कि उन्हीं गैरोला जीके उक्त इतिहासमें (पृ० ६३३) उद्धृत 'सत्यव्रत सामश्रमी'के मतानुसार पाणिनिका सत्ता-काल ई० पू० २४०० वर्ष मान लिया जाय तो पाणिनि-रचित उक्त 'द्विरूपकोष'-का रचना-काल आजसे लगभग साढ़े चार सहस्र वर्ष पूर्व ही होना सिद्ध होता है। इतना ही नहीं, अपि तु श्री गैरोला जीने उसी इतिहासमें 'भागुरि'की कृतियोंमें 'त्रिकाण्डकोश' होनेका उल्लेख किया है। उक्त 'भागुरि' का समय ई० पू० ३१०० वर्ष (उक्त इति० पृ० ६२०) होनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि कम-से-कम आजसे लगभग ६००० वर्ष पहले ही लौकिक-कोष-रचनाका श्रीगणेश हो चुका था।

इसके अतिरिक्त महावैयाकरण आपिशलि, शाकटायन, व्याडि, पतञ्जलिने भी कोषोंकी रचना की थी (वही इतिहास पृ० ७७७-७७९)।

लौकिक-कोष-रचनामें जैनाचार्योंका भी प्रमुख हाथ रहा है। इनके रचित उपलब्ध कोषोंमें 'हरिषेण'रचित 'बृहत्कथाकोष' सबसे विशाल एवं प्राचीन कोष है। इनका समय शक ८५३ (ई० ९६९) है। इनका रचित उक्त कोष १२५०० श्लोकोंमें पूर्ण हुआ है। (गैरोला, सं० सा० का इति० पृ० ७८१)।

आचार्य यादवप्रकाश—

इसी लौकिक-कोष-रचनाके सन्दर्भमें आचार्य 'यादवप्रकाश'ने प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'की रचना की। आप विशिष्टाद्वैतवादी ब्राह्मण थे। ये 'तामिलनाडु' राज्यान्तर्गत 'काञ्चीपुरम्' या 'काञ्चीवरम्'के निकटवर्ती 'तिरुप्पुटकुलि' या 'गृध्रसरस' ग्रामके निवासी थे। पहले आप कट्टर अद्वैतवादी श्रीशङ्कराचार्यके मतानुयायी थे। इन्होंने 'ब्रह्मसूत्र'पर एक 'यादवभाष्य' लिखा था और उसे ये 'शङ्करभाष्य'के साथ-साथ अपने शिष्योंको पढ़ाया करते थे। कहा जाता है कि 'तिरुप्पुटकुलि'में स्थित 'विजयराघव स्वामी-मन्दिर'में दो साधुओंकी मूर्तियाँ हैं, उनमें-से एक मूर्ति एक दण्ड धारण किये हुए अद्वैतवादी आचार्य 'यादवप्रकाश'की है और दूसरी त्रिदण्ड धारण किये हुए विशिष्टाद्वैतवादी 'रामानुजाचार्य'की है। एक बार अपने शिष्य रामानुजाचार्यके साथ शास्त्रार्थ होनेपर आचार्य यादवप्रकाश विशिष्टाद्वैतवादी होकर त्रिदण्ड धारण कर लिये।

इसका प्रमाण यह दिया जाता है कि 'काञ्चीपुरम्' में स्थित 'वरदाचार्य स्वामी'-के मन्दिरकी भित्तिपर एक चित्रमें त्रिदण्ड धारण किये हुए आचार्य 'यादव-प्रकाश' अपनी शिष्य-मण्डलीके साथ चित्रित हैं। शिष्य-मण्डलीमें रामानुजाचार्यका भी चित्र है।

आचार्य यादवप्रकाशने 'पिङ्गल छन्दःसूत्र'पर भी भाष्य लिखा था। इनके रचे हुए 'यतिधर्मसमुच्चय' नामक ग्रन्थका वैष्णव-सम्प्रदाय में बहुत आदर है। आप जीवनके अन्तिम दिन तक वैष्णव संन्यासीके रूपमें 'काञ्चीवरम्' में ही रहे।

उपर्युक्त द्विशताधिक कोषोंके अतिरिक्त भी अन्यान्य-कोषोंके प्रमापक वचनों-का उद्धरण यत्र-तत्र संस्कृत ग्रन्थोंकी व्याख्याओंमें उपलब्ध होनेसे उक्त कोषा-तिरिक्त अन्य कोषग्रन्थोंका अस्तित्व भी सिद्ध होता है। एतदतिरिक्त अर्वाचीन कतिपय विद्वानोंने और भी संस्कृत कोषोंकी रचना की है, जिनमें कुछ निम्नलिखित हैं—

१. उपनिषद्वाक्यकोष :	कर्नल जी० ए० जाकोव
२. उपनिषद्वाक्यमहाकोष :	गजाननके पुत्र शम्भु साधसे
३. कविकर्पटिका :	वादीन्द्रकवि
४. कोषकल्पतरु :	विश्वनाथ
५. कोशकौमुदी :	रामदत्तत्रिपाठीशास्त्री
६. कोषसंग्रह :	
७. कोषावतंस :	राघवकवि
८. तिङन्तार्णवतरणि :	
९. धर्मकोष :	श्रीलक्ष्मणशास्त्री
१०. भोटसंस्कृताभिधान :	लोकेशचन्द्र
११. मीमांसाकोष :	केवलानन्दसरस्वती
१२. शिवकोष :	शिवदत्त
१३. आख्यानकमणिकोष :	
१४. बाङ्मयाणव :	पं० रामावतारशर्मा
१५. वाचस्पत्यम् :	तर्कवाचस्पति तारानाथभट्टाचार्य
१६. शब्दकल्पद्रुम :	राधाकान्तदेवबहादुर
१७. वास्तुरत्नकोष :	
१८. देशीनाममाला :	हेमचन्द्राचार्य

वैजयन्ती कोषका वैशिष्ट्य—

यह कोष कुल आठ काण्डोंमें पूरा हुआ है। इसे दो भागोंमें विभक्त किया जा सकता है—एक पर्याय-भाग तथा दूसरा नानार्थ-भाग। प्रथम पर्याय-भागमें

पाँच काण्ड हैं—१ स्वर्गकाण्ड, २ अन्तरिक्षकाण्ड, ३ भूमिकाण्ड, ४ पाताल-काण्ड और ५ सामान्यकाण्ड। उनमें क्रमशः ३, ४, ९, ४ और ४ अध्याय तथा कुल २३७० श्लोक हैं। द्वितीय पर्याय-भागमें तीन काण्ड हैं—१ द्व्यक्षरकाण्ड, २ त्र्यक्षरकाण्ड और ३ सामान्यकाण्ड; इनमें क्रमशः ४, ४ और ९ अध्याय तथा कुल ८४२ श्लोक हैं। ग्रन्थकारने अन्तमें ग्रन्थप्रशस्तिके ४ श्लोक दिये हैं, इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थकी श्लोक-संख्या ३२१६ अर्थात् अमरकोषसे द्विगुणाधिक है।

महाकाव्यों एवं कोषादिकोंके संस्कृतव्याख्याकार मल्लिनाथ, नारायण, क्षीरस्वामी, भानुजिदीक्षित, सर्वदेव, महेश्वर, मुकुट आदिने 'इति यादवः, इति वैजयन्ती' लिखकर अपनी-अपनी व्याख्याओंकी पुष्टिके लिए स्थान-स्थानपर इस कोषके बहुशः उद्धरण दिये हैं। इन उद्धरणोंमें अधिकांश नानार्थ-भागोक्त अंशों-का ही प्रयोग किया गया है।

यादवप्रकाश जिसका पर्याय कहना आरम्भ करते हैं, उससे सम्बद्ध समस्त विषयोंका साङ्गोपाङ्ग वर्णन कर देते हैं। उदाहरणार्थ इसका कुछ दिग्दर्शन नीचे कराया जाता है—

(क) 'अग्निवैश्वानरः.....' (१।२।१४) से आरम्भकर 'अग्नि'-के पर्यायवाचक शब्द कहनेके उपरान्त तत्सम्बद्ध 'अग्निप्रिया, स्कन्धामि, काष्ठाभि, तुषाग्नि, करीषाग्नि, मेघाग्नि, प्रेतदाहा(चिता)ग्नि, दैत्याग्नि, पित्र्यग्नि, यज्ञाग्नि, ऋत्वग्नि, विवाहाग्नि आदि समस्त अग्नियोंका पृथक्-पृथक् नाम-निर्देश किया गया है।

(ख) ब्राह्मणादि वर्णचतुष्टयका पर्याय वर्णन करनेके बाद 'उपवर्णास्तु सङ्कीर्णाः.....' (३।५।२) से आरम्भकर वर्णसङ्कर जातियोंकी उत्पत्ति एवं उनके नामोंका निर्देश विशद रूपसे किया गया है। तदनन्तर 'एषां लक्षणसिद्धयर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते.....' (३।४।६४) से 'गरानलप्रयोगाच्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः' (३।५।१०८) तक प्रकरणागत इन वर्णसङ्कर जातियोंकी जीवि-कादिका विस्तारके साथ वर्णन किया गया है।

(ग) इसी तृतीय काण्डके षष्ठाध्यायमें कापोत, औदुम्बर, भिक्षु, व्युष्टि, सौमिक, बलिक, नोस, पुष्पाब्ध, द्विकालिक, शीर्णिक, मूलिक, पातालमूलिक, अश्व-काशिक, शिवव्रती, रुद्रव्रती, अहिब्रती आदि-आदि व्रतियों एवं तत्पृच्छ, अतिकृच्छ, चान्द्रायणादि बहुविध व्रत साङ्गोपाङ्ग वर्णित हैं। (३।६।१२५—१४९)

(घ) 'शुक्ले शुभ्रशुचिश्येताः.....' क्रिमिरः, सितलोहितः' (५।१।१०—५।३।२५) द्वारा श्वेतादि वर्णोंका पृथक्-पृथक् पर्याय एवं दो-दो, तीन-तीन वर्णों (रङ्गों) के मिश्रणसे बने हुए वर्णोंके नामोंका अत्यन्त विस्तारके साथ

वर्णनकर 'मधुरस्तु रसज्येष्ठो'.....(५।३।२५)से षड्रसोंका सामान्यतः पर्याय-निर्देश करनेके पश्चात् एकाधिक (दो, तीन, चार और पांच) रसोंके सम्मिश्रणसे निष्पन्न रसों (स्वादों) के नाम अलग-अलग '—त्रिषष्टिस्तु ततो रसाः' (५।३।४५) कहे गये हैं, इस प्रकार छः रसोंके मिश्रणसे बने ६३ रसोंका नाम-निर्देश करना ग्रन्थकारकी प्रतिभाका अनुपम उदाहरण है।

उपयुक्त दिग्दर्शनमात्रसे 'स्थालीपुलाक' न्याय-द्वारा यह स्पष्ट हो जाता है कि विषयान्तरोंके समाविष्ट होनेसे अन्यान्य कोष आकृति एवं श्लोक-सङ्ख्याकी दृष्टिसे विशाल भले ही हों, किन्तु ऐसा विशद वर्णन किसी भी कोषमें उपलब्ध नहीं है।

आधुनिक संस्कृत-साहित्यके इतिहास-ग्रन्थोंमें कोषकी उपेक्षा ?

संस्कृत साहित्यके इतिहासोंके लेखक महानुभावोंने अपने-अपने ग्रन्थोंमें इतिहास, वेद, ब्राह्मण, उपनिषद्, पुराण, काव्य, नाटक, छन्द, चम्पू, आख्यायिका नीतिशास्त्र आदिके विषयमें तो स्वतन्त्र शीर्षक देकर सैकड़ों पृष्ठ लिखनेका कष्ट किया है, किन्तु इतनी बड़ी संख्यावाले (लगभग २२५ से भी अधिक) लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें उन इतिहास-लेखक महानुभावोंकी वाच्यमिता तथा बद्धमुष्टिता देखकर महान् आश्चर्य एवं खेद होता है। कोषके विषयमें और विशद विवेचन करनेके लिए मैंने बड़े-बड़े धुरन्धर विद्वानोंके लिखे दर्जनों संस्कृत साहित्य-के इतिहास-ग्रन्थोंके पन्ने उलटे, किन्तु किसीमें भी उपयुक्त लौकिक संस्कृत कोषोंके विषयमें प्रायः कुछ नहीं पा सका। संभवतः इसका प्रधान कारण यह है कि वैदिक एवं अन्य संस्कृत साहित्यके अनुसन्धानमें अधिकतम द्रव्य-राशि एवं समय लगाकर उक्त सं० साहित्यका उद्धार करनेका प्रशस्त श्रेय प्राप्तकर भी अमर-भाषा संस्कृतको मृत भाषा कहनेवाले संस्कृत साहित्यके कुछ अंग्रेज इतिहास-लेखकोंका अनुकरण करनेवाले हमारे भारतीय, संस्कृत साहित्यके इतिहास-लेखकोंने भी लौकिक संस्कृत कोषोंपर कुछ लिखनेकी कृपादृष्टि करना उचित या आवश्यक नहीं समझा। मैं श्रीवाचस्पति गैरोलाजीको धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने अपने 'संस्कृत साहित्यका इतिहास' ग्रन्थमें 'कोष'को स्वतन्त्र शीर्षक देकर इसके विषयमें विशदरूपसे तो नहीं, किन्तु कुछ लिखनेकी उदारता प्रदर्शित की है।

आत्म-निवेदन—

अध्ययन-कालसे ही कोष-ग्रन्थोंकी ओर अपना प्रबल झुकाव होनेसे मैंने सर्व-प्रथम 'अमरकोष'की, राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'मणिप्रभा' व्याख्या, 'अमरचन्द्रिका' नामक टिप्पणीके साथ लिखी, प्रकाशन होनेपर विद्वत्समाजने उसे अपनाकर

अन्यान्य ग्रन्थ लिखनेके लिए मुझे प्रोत्साहित किया। फलस्वरूप 'हेमचन्द्राचार्य'कृत 'अभिधानचिन्तामणि'की भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखनेके बाद मैंने श्रीभानुजिदीक्षित-विरचित 'व्याख्यासुधा' (रामाश्रमी) सहित 'अमरकोष'-के सम्पादनका कार्य हाथमें लिया। उक्त व्याख्यामें उद्धृत सूत्रों एवं ग्रन्थान्तरीय प्रमापक वचनोंको उपलब्ध तत्तद्ग्रन्थोंसे मिलानकर उन सबोंका स्थल-निर्देश तथा त्रुटिपूर्ति करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दीमें 'प्रकाश' व्याख्याके साथ उसका सम्पादन किया। इन दोनों ग्रन्थोंको भी अपनाकर गुणग्राही विद्वद्गणने मेरा द्विगुणित उत्साह बढ़ाया। ये दोनों ग्रन्थ बहुत समयसे अप्राप्य थे।

इनके अतिरिक्त, अपने गुरुजनोंके आदेश, सुहृद्वर्गकी सद्भावना एवं सहानु-भूति पूर्ण प्रेरणासे उत्साहित होकर मैंने महाकवि कालिदास रचित 'रघुवंश' महाकाव्य, माघ-रचित 'शिशुपालवध' महाकाव्य, श्रीहर्षरचित 'नैषधचरित' महाकाव्य, मनु-प्रणीत 'मनुस्मृति' ग्रन्थोंकी गुत्थियोंको 'विमर्श'में स्पष्ट करते हुए राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही 'मणिप्रभा' व्याख्या लिखी। उपयुक्त सभी ग्रन्थ 'चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के द्वारा यथासमय प्रकाशित होकर सर्वजन-सुलभ हो गये हैं और नीर-क्षीर-विवेकी हंसके समान गुणैकपक्षपातपरायण विद्वत्समाजने इन्हें अपनाकर मुझे तथा प्रकाशकको अपने-अपने कार्योंमें उत्तरोत्तर आगे बढ़ते हुए संलग्न रहनेके लिए समय-समयपर प्रोत्साहित किया है।

प्रकृत ग्रन्थका सम्पादन—

महाकाव्य आदिके संस्कृत व्याख्याकारोंके द्वारा प्रकृत 'वैजयन्तीकोष'के उद्धारण देख-देखकर इसे भी सर्व-जन-सुलभ करानेकी मेरी प्रबल आकाङ्क्षा बहुत दिनोंसे हो रही थी। इसे उपलब्ध करनेके लिये स्वयं तथा मित्रों-द्वारा बम्बई, सालरापाटन, व्यावर आदि स्वपरिचित बड़े-बड़े पुस्तकालयोंके साथ पत्राचार करनेपर भी मैं सफल नहीं हो सका। किन्तु सुलतानगंज (भागलपुर)में स्थित राजकीय संस्कृतोच्च विद्यालयसे स्थानान्तरित होकर जब मैं 'आरा'में आया, तब कुछ वर्षोंके उपरान्त वार्ता-प्रसङ्गमें इस कोषकी चर्चा आनेपर मेरे अन्यतम मित्र डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री एम० ए० (संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी), ज्योतिषाचार्य, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, "जैन महाविद्यालय, आरा"ने इस 'वैजयन्तीकोष'की अत्यन्त प्राचीन प्रति मुझे देनेकी कृपा की। जो अत्यन्त जीर्ण-शीर्ण होनेके कारण प्रेसमें मुद्रणार्थ देने योग्य नहीं थी। अतः मैंने बड़ी सावधानीसे इसकी पाण्डुलिपि तैयार की है। लिङ्गनिर्देशपूर्वक इसकी शब्दसूची तैयार करनेमें मुझे अनेक कोषोंका अध्ययन करना पड़ा है। पाठकोंको इससे अधिक सीविध्य प्राप्त होगा। सर्वांगपूर्ण पाण्डुलिपि तैयार हो जानेके बाद

मैंने सहस्रों अलभ्य संस्कृत ग्रन्थ-रत्नोंके प्रकाशक 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी'के संचालक महोदयको प्रकाशनार्थ इसे दी और उन्होंने इसको प्रकाशित करनेकी सहर्ष स्वीकृति दे दी, जिसके फल-स्वरूप अत्यन्त दुर्लभ एवं महत्त्वपूर्ण इस ग्रन्थ-रत्नको सर्व-सुलभ होनेका सत्सोभाग्य प्राप्त होने जा रहा है।

मैं 'अमरकोष' तथा 'अभिधानचिन्तामणि' कोषद्वयके समान ही इसकी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीमें विशद व्याख्या लिखना प्रारंभ कर दिया था, किन्तु सांसारिक विविध कारणोंसे मेरी इच्छा त्वरित पूरी नहीं हो सकी—प्रस्तुत संस्करणमें हिन्दी व्याख्याका समावेश नहीं हो सका। अगले संस्करणको हिन्दी व्याख्यासे समन्वित कर अपनी चिरांकाक्षा पूर्ण करनेका प्रयास करूँगा।

आभार-प्रदर्शन—

सर्वप्रथम 'डा० श्री गुस्ताव आपर्ट, पी० एच्० डी०, अध्यापक संस्कृत तथा तुलनात्मक भाषाविज्ञान, प्रेसीडेंसी महाविद्यालय, मद्रास'का बहुत आभारी हूँ, जिनके द्वारा सम्पादित ग्रन्थको आधार मानकर मैं इस ग्रन्थका सम्पादन-कार्य करनेमें समर्थ हो सका हूँ। तदनन्तर अपने स्नेही डॉ० नेमिचन्द्रजी शास्त्री, डी० लिट०, का तथा उन्हींके सनामा, 'जैन सिद्धान्त भवन, आरा'के वर्तमान पुस्तकालयाध्यक्ष श्री नेमिचन्द्र शास्त्री, एम० ए०, साहित्याचार्य'का अतिशय आभार मानता हूँ, जिनकी कृपासे इस पुस्तककी मूल प्रति उपलब्ध हुई, और ग्रन्थके प्रकाशनान्ततक मेरे पास रहकर प्रमादादि दोषवश उपस्थित सन्देहोंका निराकरण करनेमें सहायिका होती रही। 'संस्कृत साहित्य-का इतिहास' ग्रन्थके लेखक श्री वाचस्पति गैरोलाका भी मैं आभारी हूँ, जिनका ग्रन्थ इस भूमिकाके लिखनेमें सहायक हुआ है। चीखम्बा संस्कृत सीरीजके प्रमुख कार्यकर्ता एवं मेरे परम मित्र व्या० आ० प० श्रीरामचन्द्र झाजीको भूरिशः धन्यवाद देता हूँ, जिनकी देख-भाल एवं सहयोगमें यह ग्रन्थ अपेक्षाकृत शीघ्र और शुद्ध प्रकाशित हो रहा है। इस ग्रन्थके सम्पादन-कालमें अपना निरन्तर सहयोग देनेवाले स्नेहभाजन अपने आत्मज चि० श्री रामकिशोर मिश्रको बहुशः आशीर्वाद-प्रदान करता हूँ।

अन्तमें अत्यन्त दुर्लभ या अमुद्रित परमोपयोगी सहस्रशः संस्कृत ग्रन्थोंके प्रकाशक 'चीखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस' तथा 'चीखम्बा विद्याभवन, वाराणसी', के वर्तमान प्रमुख व्यवस्थापक बन्धुयुगल (चि० श्री मोहनदास गुप्त एवं श्री बिट्टलदास गुप्त)को भी आशीर्वाद भूरिशः धन्यवाद देता हुआ मैं भगवान्से प्रार्थना करता हूँ कि उक्त दोनों बन्धु अपने परिवारके सहित

स्वस्थ, सुखी एवं उत्तरोत्तर ऐश्वर्य-सम्पन्न होकर चिरायु हों तथा अपने पूर्वजोंके समान संस्कृत साहित्यके उद्धारमें सदा संलग्न रहें। इस ग्रन्थके सम्पादन एवं प्रकाशनमें अन्यान्य जिन महानुभावोंकी कृतियों या प्रकारान्तरसे सहायता मिली है उन सबोंके प्रति आभार-प्रदर्शन करता हूँ।

इस सृष्टिमात्रमें जगन्निगन्ता परात्पर परब्रह्म परमात्माके अतिरिक्त कोई भी प्राकृत प्राणी सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता, अतः इस ग्रन्थके सर्वतोभावेन शुद्ध होनेका दावा करना मुझ-जैसे अल्पज्ञके लिए सर्वथा अशक्य है। इस कारण मैं गुणग्राही विद्वज्जनोंसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ कि मेरे लिखने, अत्यन्त सूक्ष्माक्षरोंके संयोजन एवं संशोधन करनेमें प्रमाद या मानव-सुलभ भ्रान्ति-वश कोई अशुद्धि रह गई हो तो वे मुझे क्षमा करते हुए सूचित करें, जिससे उसका निराकरण अग्रिम-संस्करणमें किया जा सके। क्योंकि—

‘नैवानवद्यं जगतीह किञ्चिन्न

वाऽप्यवद्यं किल वस्तुजातम् ।

तनो बुधा आददते गुणान् हि

हंसा यथा क्षीरपयोविवेकात् ॥

तथा—

‘गच्छतः स्वलनं कापि भवत्येव प्रमादतः ।

हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति सज्जनाः ॥’

इति शम् ॥

‘गोविन्द-कुटीर’

केसठ (शाहाबाद)

हरिप्रबोधिनी ११

सं० २०२८ वि०

विद्वज्जनविषेयः—

मिश्रोपाह्व हरगोविन्द शास्त्री

विषय-सूची

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रस्तावना	७-२३
१. परिभाषा	१
(पर्याय-भाग : काण्ड १-५)	२-१५८
(१) स्वर्गकाण्ड—	२-१०
१. आदिदेवाध्याय	१
२. लोकपालाध्याय	२
३. यक्षाध्याय	१०
(२) अन्तरिक्षकाण्ड—	११-२४
१. ज्योतिरध्याय	११
२. मेघाध्याय	१७
३. खगाध्याय	१८
४. शब्दाध्याय	२२
(३) भूमिकाण्ड—	२५-१०७
१. देशाध्याय	२५
२. शैलाध्याय	२९
३. वनाध्याय	३२
४. पशुसंग्रहाध्याय	४७
५. मनुष्याध्याय	५२
६. ब्राह्मणाध्याय	६०
७. क्षत्रियाध्याय	७५
८. वैश्याध्याय	८९
९. शूद्राध्याय	९९
(४) पातालकाण्ड—	१०८-१३६
१. सरीसृपाध्याय	१०८
२. जलाध्याय	११२
३. पुराध्याय	११६
४. भूताध्याय	१२७

(५) सामान्यकाण्ड	...	१३७-१५८
१. गणाध्याय	...	१३७
२. धर्मकर्माध्याय	...	१४२
३. गुणाध्याय	...	१४५
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१४९
(नानार्थभाग : काण्ड ६-८)	...	१५९-२२४
(६) द्वयक्षरकाण्ड—	...	१५९-१७२
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१५९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१६४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१६८
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१७१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१७३
(७) त्रयक्षरकाण्ड—	...	१८०-१९८
१. पुंलिङ्गाध्याय	...	१८०
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	१८६
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	१८८
४. अर्थवलिङ्गाध्याय	...	१९१
५. नानालिङ्गाध्याय	...	१९३
(८) शेषकाण्ड—	...	१९९-२२४
१. पुलिङ्गाध्याय	...	१९९
२. स्त्रीलिङ्गाध्याय	...	२०४
३. नपुंसकलिङ्गाध्याय	...	२०६
४. अभिधेयवलिङ्गाध्याय	...	२०८
(अर्थवलिङ्गाध्याय)	...	२०८
५. नानालिङ्गाध्याय	...	२१०
६. पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्याय	...	२१३
७. अनेकार्थाव्ययाध्याय	...	२१५
८. अव्ययपर्यायाध्याय	...	२१८
९. लिङ्गसंग्रहाध्याय	...	२२०
ग्रन्थोपसंहार	...	२२५
परिशिष्ट	...	२२७
शब्दानुक्रमणिका	...	१-१७०

॥ श्रीः ॥

वैजयन्तीकोषः

अथ परिभाषाध्यायः

ओंकारार्थाय तत्त्वाय वाच्यवाचकशक्तये ।
 ब्रह्मसंज्ञाय पूर्वेपां गुरुणां गुरवे नमः ॥ १ ॥
 प्रकाशयाष्टविधं लिङ्गं निर्लिङ्गं वचनानि च ।
 वैजयन्तीति विख्यातं क्रियते नामशासनम् ॥ २ ॥
 स्त्रीपुन्रपुंसकं लिङ्गं संकीर्णं तच्च पञ्चधा ।
 नृस्त्री नृषण्डषण्डस्त्री त्रिलिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ॥ ३ ॥
 समासलिङ्गाद्विधितः साहचर्यात् पृथक्कृतेः ।
 लिङ्गं विद्यात् प्रयोगाच्च क्तिन् सर्वत्रापि च स्त्रियाम् ॥ ४ ॥
 यत्प्रवृत्तं समासस्य लिङ्गं तत्स्यात् समासिनाम् ।
 विशेषविधितः कापि लिङ्गं तत्राप्ययं क्रमः ॥ ५ ॥
 स्त्रीलिङ्गे स्त्रीत्ययं शब्दः पुंलिङ्गे ना पुमानिति ।
 षण् क्लीनपुमिति क्लीबे ये च षण्डार्थवाचिनः ॥ ६ ॥
 त्रिष्वित्युक्तिर्वाच्यलिङ्गे त्रयोशब्दस्त्रिलिङ्गके ।
 अस्त्रीत्यादि निषेधेषु नृषण्डादीतरद्वयम् ॥ ७ ॥
 ज्ञातैर्लिङ्गैः साहचर्यात् कचित् स्याल्लिङ्गनिश्चयः ।
 एकत्र सव पुंलिङ्गाः स्त्रियोऽन्यत्रान्यतो नपुम् ॥ ८ ॥
 इत्येकस्यापि पर्याया लिङ्गायात्र पृथक्कृताः ।
 प्रयोगात् प्रायशो लिङ्गमुदन्तः संशये पुमान् ॥ ९ ॥
 सन्दिग्धद्विवचोऽन्तं स्त्री ना स्याद्बहुवचोऽन्तकम् ।
 समासे स्युः पृथक् सर्वे शब्दा बहुवचोऽन्तके ॥ १० ॥
 न पूर्वशब्दभागत्र पुनस्त्वन्तमथादितः ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां परिभाषाध्यायः ।

१. अथ स्वर्गकाण्डः

आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

स्वर्गो नाकः सुरावास ऊर्ध्वलोकः फलोदयः ।
 सौरिको भोगभूमिः स्त्री दिवि द्यौश्च त्रिविष्टपम् ॥ १ ॥
 अमर्त्यभवनं गौश्च त्रिदिवः स्यात्स्वरव्ययम् ।
 देवा निलिम्पा मरुतो गीर्वाणा वायुनाः सुराः ॥ २ ॥
 आदित्या ऋभवोऽस्वप्ना विवस्वन्तो दिवौकसः ।
 आदिदेवा दिविषदो लेखा अदितिर्नन्दनाः ॥ ३ ॥
 सुपर्वाणः क्रतुभुजो निर्जरा अमृताशनाः ।
 बर्हिर्मुखा विट्पतयस्त्रिदशा हव्ययोनयः ॥ ४ ॥
 अमर्त्याश्चाथ न स्त्री स्याद्देवतं देवता स्त्रियाम् ।
 त्रय एवादिदेवाः स्युर्ब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ ५ ॥
 आजानजाः स्वतोदेवाः कर्मदेवास्तु कर्मभिः ।
 ब्रह्मा विधाता विश्वात्मा धाता स्रष्टा प्रजापतिः ॥ ६ ॥
 हिरण्यगर्भो द्रुहिणो विरिञ्चः कश्चतुर्मुखः ।
 पद्मनाभः सुरज्येष्ठश्चिरजीवी सनातनः ॥ ७ ॥
 शतानन्दः शतधृतिः स्वयंभूः सर्वतोमुखः ।
 परमेष्ठी विश्वरेताः पुरुषो हंसवाहनः ॥ ८ ॥
 पद्मभूः प्राणदो वेधा द्रुघणो नाभिजो विधिः ।
 वाग्वाणी भारती भाषा गौर्गीर्वाह्मी सरस्वती ॥ ९ ॥
 विष्णुर्नारायणो बभ्रुश्चक्रपाणिर्जनार्दनः ।
 दैत्यारिः पुण्डरीकाक्षस्त्रिकुट्टिष्ठरश्वाः ॥ १० ॥
 पीताम्बरो हृषीकेशो विष्वक्सेनश्चतुर्भुजः ।
 श्रीवत्सः श्रीपतिः शार्ङ्गो श्रीवत्साङ्कोऽच्युतो हुणः ॥ ११ ॥
 वासुदेवः स्वभूश्चक्री वैकुण्ठः पुरुषोत्तमः ।
 अरिष्टनेमिरजितः श्रीधरो यज्ञपूरुषः ॥ १२ ॥
 मुञ्जकेशी मुररिपुर्गदापाणिर्धोऽक्षजः ।
 अनन्तशायी घृन्दाको मुकुन्दो धरणीधरः ॥ १३ ॥
 शतानन्दः शतावर्तो युगावर्तः सुरोत्तमः ।
 कालकुन्धो रन्तिदेवः केशवो गरुडध्वजः ॥ १४ ॥
 पद्मनाभो विश्वरूपः कृष्णो हरिरसंपुषः ।
 कैटभारिर्ब्रह्मनाभो गोविन्दो मधुसूदनः ॥ १५ ॥
 आचारा बैष्णवी सूक्ष्मा लक्ष्मीः पुष्टिर्निरञ्जना ।

जीवनी मोहनी माया नवैता विष्णुशक्तयः ॥ १६ ॥
 कौस्तुभोऽस्य मणिलक्ष्म श्रीवत्सो नन्दकस्त्वसिः ।
 चापः शार्ङ्ग पाञ्चजन्यः शङ्खश्चक्रं सुदर्शनम् ॥ १७ ॥
 कौमोदकी गदाऽथास्य मत्स्याद्यैः समनामकाः ।
 अवतारा नृसिंहस्तु हिरण्यकशिपुद्विषन् ॥ १८ ॥
 उपेन्द्र इन्द्रावरजो वामनो बलिकण्टकः ।
 आदित्यो द्विपदस्तार्क्ष्यस्त्रिविक्रम उरुकमः ॥ १९ ॥
 विष्णुश्च जामदग्न्यस्तु रामो दाशरथिः पुनः ।
 राघवो जानकीकान्तो रामो रावणसूदनः ॥ २० ॥
 दूषणारिः खरारिश्च कुम्भकर्णारिरेव च ।
 राक्षसघ्नः सुखकरः कौसल्यानन्दवर्धनः ॥ २१ ॥
 पार्थिवेन्द्रो धनुष्पाणिर्बलिर्दशरथात्मजः ।
 रामः संकर्षणः पौरो बलदेवो हलायुधः ॥ २२ ॥
 बलभद्रः प्रलम्बारिः कालिन्दीकर्षणो हली ।
 तालाङ्को रेवतीकान्तः सात्त्वतो मुसली बली ॥ २३ ॥
 भद्राङ्गो भद्रवदनः कामपालः सितासितः ।
 बलो नीलाम्बरश्चाथ तस्य संवर्तकं हलम् ॥ २४ ॥
 सौनन्दमस्य मुसलं कृष्णो दामोदरोऽद्रिधृत् ।
 दाशार्हो नरकारातिर्वनमाली गदाप्रजः ॥ २५ ॥
 शैनिः कंसरिपुः शौरिः सारथिस्तस्य दारुकः ।
 वसुदेवोऽस्य जनको दुन्दुरानकदुन्दुभिः ॥ २६ ॥
 प्रद्युम्नो मन्मथः कामो मारो मनसिजः स्मरः ।
 कन्दर्पो दर्पकोऽनङ्गो मीनाङ्को मकरध्वजः ॥ २७ ॥
 पुष्पधन्वा रतिपतिः शंबरारिरनन्यजः ।
 शूर्पकारिर्मधुसखः पञ्चेषुर्विषमायुधः ॥ २८ ॥
 बन्धुर्वामो जराभीरुर्हृच्छयो मधुसारथिः ।
 ब्रह्मसूरनिरुद्धः स्याद्दृश्यकेतुरुषापतिः ॥ २९ ॥
 अथान्ये ह्यवताराः स्युर्नरनारायणावृषो ।
 अश्वो ह्यशिराः शेषः कपिलो व्यास इत्यपि ॥ ३० ॥
 दत्तात्रेयश्च कल्की च बुद्धश्चेत्येवमादयः ।
 कपिलस्तु महाविष्णुर्व्यासः सत्यवतीसुतः ॥ ३१ ॥
 पाराशर्यो द्वैपायनः कृष्णद्वैपायनोऽपि च ।
 बुद्धस्तु श्रीधनः शास्ता बोधिसत्त्वो विनायकः ॥ ३२ ॥

समन्तभद्रः सर्वज्ञो मारजिह्नोकजिज्जिनः ।
 षडभिज्ञो दशबलो धर्मराजस्तथागतः ॥ ३३ ॥
 मुनीन्द्रः सुगतः शाक्यो मुनिरद्वयवाद्यपि ।
 शाक्यसिंहस्तु सर्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिर्गुरुः ॥ ३४ ॥
 गौतमश्चार्कबन्धुश्च जिनस्त्वहंस्त्रिकालदृक् ।
 अष्टकर्मपरिभ्रष्टो वीतरागश्च केवली ॥ ३५ ॥
 लक्ष्मीः पद्मालया शक्तिर्मा क्षीरोदमुतेन्दिरा ।
 रमाब्धिजा भार्गवी च स्त्रीलिङ्गाश्चाम्बुजाह्वयाः ॥ ३६ ॥
 गरुडः काश्यपसुतो गरुत्मानुरगाशनः ।
 सुपर्णातनयस्तादर्यो वैनतेयो महेन्द्रजित् ॥ ३७ ॥
 पन्नगारिर्विष्णुरथः सुपर्णो विहगाधिपः ।
 महेश्वरः पशुपतिः श्रीकण्ठः पांसुचन्दनः ॥ ३८ ॥
 शङ्करो गिरिशो रुद्रो गिरीशः शशिभूषणः ।
 महेश्वरश्चन्द्रमौलिः पिनाकी शशिशेखरः ॥ ३९ ॥
 कपर्दी धूर्जटिः शर्वः कपाली नीललोहितः ।
 ईश ईश्वर ईशानो भर्गो मृत्युञ्जयो मृडः ॥ ४० ॥
 व्योमकेशो महादेवः प्रमथाधिपतिः शिवः ।
 शूली दक्षाध्वरारातिः कामारिः परमेश्वरः ॥ ४१ ॥
 कृत्तिवासा अहिर्बुध्न्यो नीलम्रीवखिलोचनः ।
 गङ्गाधरो विरूपाक्षो वामदेवो वृषध्वजः ॥ ४२ ॥
 भूतेशः खण्डपरशुः स्थाणुरन्धकसूदनः ।
 भगनेत्रान्तको भीमस्त्रिपुरारिर्हंसायुधः ॥ ४३ ॥
 कटाटङ्को जटाटीरो जटाभाटो महानटः ।
 मिण्डीकान्तो रेरिहाणः सर्वज्ञो नन्दिवर्धनः ॥ ४४ ॥
 स्थालो डिण्डीश उड्डीशः कण्ठेकालो महाव्रतः ।
 कृतानुरेता जोटिङ्गः कङ्कटीक उमापतिः ॥ ४५ ॥
 खट्वाङ्गी मन्दरमणिरुलन्दो वृषवाहनः ।
 उग्रः कटप्रदिग्वासा भाण्डः पाण्डोऽकुतश्चनः ॥ ४६ ॥
 बहुरुपोऽर्धमकुटो दशबाहुर्दशाव्ययः ।
 ज्ञानं वैराग्यमैश्वर्यं तपः सत्यं क्षमा धृतिः ॥ ४७ ॥
 स्रष्टृत्वमात्मसम्बन्धोऽप्यधिष्ठातृत्वमित्यपि ।
 अव्ययानि दशैतानि शम्भोरव्ययमखियाम् ॥ ४८ ॥
 वामा ज्येष्ठा शिवा रौद्री चित्तोन्मादकरी सुखा ।
 काली कलेवरा भूतदमनी चेशशक्तयः ॥ ४९ ॥

कपर्दोऽस्य जटाजूटः खट्वाङ्गोऽस्य सुखङ्घुणः ।
 पिनाकोऽजगवं युग्यमजगावमजीगवम् ॥ ५० ॥
 प्रमथाः स्युः पारिषदा नन्दी स्यान्नन्दिकेश्वरः ।
 अथ कूश्माण्डकः केलिकिलो गणपतिप्रियः ॥ ५१ ॥
 भृङ्गरीटः पुनर्भृङ्गी चर्मा भृङ्गिरिटिः शला ।
 वृषाणो लूनदोर्बाणो भेलुकस्तु कृतालकः ॥ ५२ ॥
 वीरभद्रस्तु देवाजो विघ्नेशस्तु विनायकः ।
 लम्बोदरो हस्तिराज एकदन्तो गजाननः ॥ ५३ ॥
 द्वैमातुरः परशुभृदाखुयानो गणाधिपः ।
 कुमारः शरजः स्कन्दस्तारकारिरुमासुतः ॥ ५४ ॥
 महासेनो महातेजाः शक्तिपाणिर्गुहोऽग्निभूः ।
 वैजयन्तः सिद्धसेनः सेनानी शिखिवाहनः ॥ ५५ ॥
 स्वामी गाङ्गेयगौरैयब्रह्मचारिमहौजसः ।
 पाण्मातुरः कार्तिकेयो ब्रह्मगर्भः षडाननः ॥ ५६ ॥
 सुब्रह्मण्यो नीलदंष्ट्रः क्रौञ्चारिः कुक्कुटध्वजः ।
 अस्य शाखो विशाखश्च नैगमेषश्च पृष्ठजाः ॥ ५७ ॥
 उमा मेनात्मजा रौद्री रुद्राणी सर्वमङ्गला ।
 आर्याऽद्रिजा महादेवी शर्वाणी पार्वती शिवा ॥ ५८ ॥
 भ्रामरी रेवती षष्ठी गौतमी बाभ्रवी सती ।
 अपर्णाऽपरुजा जारी शण्डिली वारुणी हिमा ॥ ५९ ॥
 बर्हिध्वजा शतमुखी योगिनी परमेष्ठिनी ।
 सुनन्दा नन्दिनी नन्दा नन्दयन्ती कपालिनी ॥ ६० ॥
 कालरात्री महारात्री रक्तदन्त्येकपाटला ।
 एकपर्णा भद्रकाली महाकाली करालिका ॥ ६१ ॥
 दुर्गा कात्यायनी चण्डी कैटभी सिंहवाहना ।
 यमेन्द्रकृष्णमैनाकरामाणां भगिनी स्वसा ॥ ६२ ॥
 विन्ध्यमन्दरकान्तारमलयेभ्यश्च वासिनी ।
 चर्ममुण्डा तु चामुण्डा चर्चा मार्जारकर्णिका ॥ ६३ ॥
 कर्णमोटी महाचण्डी महागन्धा कपालिनी ।
 ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री वाराही नारसिंहद्यपि ॥ ६४ ॥
 कौमारी वैष्णवी चेति ता एताः सप्त मातारः ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरजितायां वैजयन्तां

स्वर्गकाण्डे आदिदेवाध्यायः ॥ १ ॥

लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

इन्द्रो दुश्श्वनो वज्री वृत्रारिर्वासवो वृषा ।
 वृद्धश्रवाः शुनासीरः सहस्राक्षो दिवस्पतिः ॥ १ ॥
 वास्तोष्पतिर्बलरिपुः पुरुहूतः पुरन्दरः ।
 मघवान् पूर्वदिक्पालः पृतनापाद् सुराधिपः ॥ २ ॥
 संक्रन्दनो हरिहयो गोत्रभृत् पाकशासनः ।
 पुलोमशत्रुर्हरिवानूर्ध्वधन्वा शचीपतिः ॥ ३ ॥
 कारुर्जम्भरिपुर्जिष्णुर्मरुत्वान् हरिवाहनः ।
 स्वाराड्भुक्षाः सुत्रामा विडौजाः सितकुञ्जरः ॥ ४ ॥
 भूरिश्रवाश्चित्ररथः सुनासीरो युधिष्ठिरः ।
 परमन्युर्वज्रपाणिः शतमन्युर्विभीषणः ॥ ५ ॥
 आखण्डल उग्रधन्वा मेषाण्डोऽप्सरसां पतिः ।
 खदिरो माहिरो दाल्मिः शयीचिर्वियुनो जयः ॥ ६ ॥
 गौरावस्कन्दिवन्दीकौ वारणो देवदुन्दुभिः ।
 महेन्द्रो बाहुदन्तेयस्तुराषाड् वज्रदक्षिणः ॥ ७ ॥
 वृषण्वसु धनाद्यस्य पुराजः शान्तिकर्मकृत् ।
 सुतो जयो जयन्तश्च जयदत्तोऽप्यथो सुता ॥ ८ ॥
 जयन्ती देवनन्दी तु द्वाःस्थः सूतस्तु मातलिः ।
 प्रासादो वैजयन्तोऽस्य वैजयन्तो ध्वजोऽपि च ॥ ९ ॥
 अमरावत्यस्य पुरी स्यात् सुदर्शनमित्यपि ।
 अश्वोऽस्य वृषणश्च स्यादारामस्त्वस्य नन्दनम् ॥ १० ॥
 क्रीडासरो नन्दिसरः क्रीडाभूस्त्वस्य नन्दिका ।
 पुलोमजा शचीन्द्राणी पौलोमी जयवाहिनी ॥ ११ ॥
 ऐरावतो राथन्तरिरभ्रनागोऽभ्रमुप्रियः ।
 ऐरावणश्चतुर्दंष्ट्रः सूर्यभ्रातारिमर्दनः ॥ १२ ॥
 अस्त्रियौ वज्रकुलिशौ भिदुरं शतधारकम् ।
 व्याधामः पुंसि दम्भोलिः शतकोटिः पविर्भिदुः ॥ १३ ॥
 वह्निर्वैश्वानरो घासिः कृष्णवर्मा समन्तभुक् ।
 जातवेदा बृहद्भानुर्वीतिहोत्रस्तनूनपात् ॥ १४ ॥
 दहनो ज्वलनः शुष्मा रोहिताश्च उषर्बुधः ।
 शोचिष्केशस्त्रिधामाऽग्निरुदर्विः पावकोऽनलः ॥ १५ ॥
 हिरण्यरेताः सप्तार्चिर्वसुरेता हुताशनः ।
 कृपीटयोनिरर्चिष्मान् धूमकेतुर्दुरासदः ॥ १६ ॥

मन्त्रजिह्वः सप्तजिह्वः सुग्निहो हव्यवाहनः ।
 आश्रयाशो वातसखः कृशानुर्वीतसारथिः ॥ १७ ॥
 वभिर्भुजिः पचिः साचिश्चिरिर्वज्रतिरञ्जतिः ।
 जागृविः सहुरिः सद्भिर्दमुना हवनो हवः ॥ १८ ॥
 सृदाकुर्भरथः पीथो जुहुराण्येषिराशिराः ।
 तेजोऽपिस्तमपांपित्तं स्वाहाऽग्न्यायै च तत्प्रिया ॥ १९ ॥
 स्कन्धाग्निः स्थूलकाष्ठाग्निर्मुर्मुस्तु तुषानलः ।
 द्वागणस्तु करीषाग्निर्मेघवह्निरिरमदः ॥ २० ॥
 कुक्ष्यग्निर्हृच्छयोऽधौर्वे द्वौ संवर्तकवाडवौ ।
 सहरक्षा दवो दुधस्ताणौ क्षामतरत्समौ ॥ २१ ॥
 क्रव्यात्तु प्रेतदाहामिर्देवाग्निर्हव्यवाहनः ।
 सहरक्षास्तु दैत्यानां पितृणां कव्यवाहनः ॥ २२ ॥
 अपोनपात्तु यज्ञाग्निः क्रत्वग्निः स्यादपाग्नपात् ।
 शुक्रान्वाहार्यपचनावध्वरे दक्षिणानिले ॥ २३ ॥
 गार्हपत्यो गृहपतिः पवमानश्च पश्चिमे ।
 शंस्य आहवनीयश्च पूर्वोऽग्निर्हव्यवाहनः ॥ २४ ॥
 सभ्यावसथ्यौ तत्पूर्वावायुः स्यात् पाशुबन्धिकः ।
 पृथिकृद्धर्तमहोमेषु पद्मोमेष्वावनीकवान् ॥ २५ ॥
 आधानादिष्वहस्तानः सुरभिर्यूपकर्मणि ।
 ब्रह्मौदनाग्निर्भरतो यविष्ठः सधनाहुतौ ॥ २६ ॥
 महिमास्तु विवाहप्रिवैश्वदेवाग्निरुतः ।
 प्रतान्ते बहुरभादः सुलभः पाकयज्ञिकः ॥ २७ ॥
 सव्यस्तु मृतके वह्निरपसव्यस्तु सूतके ।
 धूमस्तरिर्मेघवाही धूपोऽसौ गन्धवासितः ॥ २८ ॥
 शिखा जिह्वाचिरपुमान् कीला ज्वाला च नृक्षियोः ।
 भलका तु महाज्वाला प्रवर्यो नीलकोऽपि च ॥ २९ ॥
 सप्त जिह्वा पुनः काली कराली विष्फुलिङ्गिनी ।
 धूम्रवर्णा विश्वरुचिलोहिता च मनोजवा ॥ ३० ॥
 त्रयी स्फुलिङ्गोऽपुष्पो ना खट्वाङ्गश्चाथ संवरः ।
 सन्तापः स्यात्प्रकाशस्तु द्योत आलोक आतपः ॥ ३१ ॥
 दीप्ताग्रं काष्ठमुल्का स्यात् क्रमकोऽलातमुल्मुकम् ।
 अङ्गारोऽस्त्रा प्रशान्तार्चिरिङ्गालः कारिकाग्निविद् ॥ ३२ ॥
 भसितं भस्म भूतिः स्यादग्न्युत्पात उपाहितः ।

यमः पितृपतिर्दण्डधरो महिषवाहनः ॥ ३३ ॥
 यमराड् यमुनाभ्राता मन्दे वैवस्वतोऽन्तकः ।
 सावित्रेयः श्राद्धदेवः समवर्ती परेतराट् ॥ ३४ ॥
 कालः कृतान्तः शमनः कीनाशो दक्षिणाधिपः ।
 धर्मराजः पुराणान्तः कालकुन्थो विशीर्णपात् ॥ ३५ ॥
 पत्नी यमस्य धूमोर्णा चित्रगुप्तस्तु लेखकः ।
 पञ्जिका त्वग्रसन्धानी कालीची तु विचारभूः ॥ ३६ ॥
 नरको नारकोऽप्येष निरयो दुर्गतिः स्त्रियाम् ।
 अवीच्यन्ता रौरवाद्याः प्रायशो नरका नरि ॥ ३७ ॥
 नारका जन्तवः प्रेता यात्या अप्यातिवाहिकाः ।
 प्रेताः परेता वेताला गन्धर्वाः सत्त्वका ग्रहाः ॥ ३८ ॥
 यातना कारणा दुःखं त्वामनस्यं प्रसूतिजम् ।
 स्यात् कष्टं कृच्छ्रमाभीलं त्रिष्वेषां तद्वदर्थकाः ॥ ३९ ॥
 अथ रक्षांसि यातूनि राक्षसा अललोहिताः ।
 रात्रिञ्चरा रात्रिचराः क्रव्यात्क्रव्यादनैर्ऋताः ॥ ४० ॥
 कैकसेया यातुधानाः पुरुषादाः प्रवाहिकाः ।
 अनुषा विधुरा रक्तग्रहाः शङ्खव आशराः ॥ ४१ ॥
 अलक्ष्मीर्निर्ऋतिर्ज्येष्ठा रावणस्तु हरान्तः ।
 दशास्यो विंशतिभुजश्चतुष्पान्मानमन्दिरः ॥ ४२ ॥
 लङ्केश्वरो यातुपतिः सन्नाहोऽस्य विचोलकः ।
 चन्द्रहासस्तु खड्गोऽस्य क्रीडाभूस्त्वमरावली ॥ ४३ ॥
 अशोकवनिकोद्यानं त्रिशिराः समनीपदः ।
 इन्द्रजिन्मेघनादः स्यात् प्रहस्तः स्यादलम्बुसः ॥ ४४ ॥
 वरुणः शीतलो वामो दुन्दुभिः संघृतोऽप्पतिः ।
 अम्बुवासोऽम्बुकान्तारः पाशी मकरवाहनः ॥ ४५ ॥
 प्रचेता यादसाम्नाथः प्रत्यगाशापतिस्तथा ।
 जलभूषण उद्दामो गौरी तु वरुणप्रिया ॥ ४६ ॥
 वातो वायुर्जगत्प्राणः शुषिलः श्वसनोऽनिलः ।
 गन्धवाहो गन्धवहो मातरिश्वा समीरणः ॥ ४७ ॥
 युजिनो लघुगो वातिर्ध्वजप्रहरणो जगत् ।
 दैत्यदेवो बहः प्राणो नभः प्राणोऽङ्कतिः सरः ॥ ४८ ॥
 आशुगः पवनः स्पर्शः पवमानः प्रभञ्जनः ।
 मरुद्घृतिर्ध्वजो मर्कः समीरोऽग्निसखश्चलः ॥ ४९ ॥

शुष्मिर्महाबलो वेगी नभोजातः सदागतिः ।
 नभस्वान् मारुतः शीघ्रः पृषदश्वः प्रकम्पनः ॥ ५० ॥
 सङ्क्रावातः सवृष्टिः स्याद्वात्या वातस्तु मण्डली ।
 मृदुवातश्चिञ्चलिको लेढा लिट् सौरतोऽपि च ॥ ५१ ॥
 मध्यमो हारितो नेरी यौनिकः स्वेदचूषकः ।
 खरः स्वरिङ्गणोऽथासौ ग्रीष्मोभृद्भानिलोऽनिलः ॥ ५२ ॥
 पयोदान्तस्तु पवनो वसन्तेऽमलपालिकः ।
 गरवायुर्निदाघेऽल्पः शिशिरे सपुटानिलः ॥ ५३ ॥
 जारवायुस्तु हेमन्ते शारदः शारणः शरः ।
 गोगन्धनः पुरोवात उत्तरस्तु हिमानिलः ॥ ५४ ॥
 रंहस्तरः क्ली प्रसभो जवो वेगः स्यदो रयः ।
 कुबेरो यक्षराड् यक्षः कुतनुः किन्नरेश्वरः ॥ ५५ ॥
 मनुष्यधर्मैलविलः पौलस्त्यो धनदो धनी ।
 कैलासनाथश्चिशिरा धनाध्यक्षो वटाश्रयः ॥ ५६ ॥
 निधिपालो वैश्रवणो वित्तेशो नरवाहनः ।
 राजराजः पराविद्धः किशाली गुह्यकेश्वरः ॥ ५७ ॥
 एकपिङ्गो रुद्रसखः कुडः पुण्यजनेश्वरः ।
 इच्छावसू रत्नगर्भो रत्नहस्तः सितोदरः ॥ ५८ ॥
 अस्योद्यानं चैत्ररथं पुत्रस्तु नलकूबरः ।
 पुरी कैलाससारास्य विमानं पुष्पकोऽस्त्रियाम् ॥ ५९ ॥
 निधानं गूढकोशो ना निधिः शेवधिरस्त्रियाम् ।
 भेदाः पद्मो महापद्मः शङ्खो मकरकच्छपौ ॥ ६० ॥
 मुकुन्दकुन्दनीलाश्च चर्चश्चेति निधेर्नव ।

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 स्वर्गकाण्डे लोकपालाध्यायः ॥ २ ॥

यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

स्पर्शानन्दास्त्वप्सरसः सुमदाश्च रतेमदाः ।
 स्वर्वेश्याश्चाथ स्वापेयो यक्षोऽथ सुरगायनः ॥ १ ॥
 गन्धर्वो गातुगान्धर्वौ सिद्धाः स्युः सनकादयः ।
 भूतापुत्रास्तु भूतानि भूताश्च शिवपार्श्वगाः ॥ २ ॥
 किन्नराः स्युः किम्पुरुषा मयवोऽश्वमुखाश्च ते ।
 गुह्यका माणिचरयस्तथा देवजनाः सुताः ॥ ३ ॥
 विद्याधरास्तु शुचराः खेचराः सत्ययौवनाः ।
 पिशाचः स्यात्कापिशोयोऽनृजुर्दर्वश्च पिण्डकः ॥ ४ ॥
 देवयोनय एते स्युः स्वर्वेश्याद्याः सरक्षसः ।
 नासत्यदक्षौ नासत्यावश्विनौ वरबाह्नौ ॥ ५ ॥
 आश्विनेयौ यज्ञवह्नौ देववैद्यौ वरान्तकौ ।
 नासिक्यावाश्विनौ दक्षौ विश्वकर्मा शुबर्धकिः ॥ ६ ॥
 त्वष्टा नाम स देवानां मयो नाम सुरद्विषाम् ।
 सनत्कुमारो वैधात्रो नारदः कलहप्रियः ॥ ७ ॥
 रुद्रा वसव आदित्या विश्वे साध्या मरुद्गणाः ।
 तुषिता भास्वराद्याश्च बहवो देवतागणाः ॥ ८ ॥
 मन्वन्तरेषु भिद्यन्ते देवाः सप्तर्षिभिः सह ।
 असुरा दानवा दैत्या दैतेया देवशत्रवः ॥ ९ ॥
 पूर्वदेवाः शुक्रशिष्याः रसागेहा हरिद्विषः ।
 ईहृक्चेत्यादिभिर्मन्त्रैः सदा प्रोक्ता मरुद्गणाः ॥ १० ॥
 स्वानभ्राडिति गन्धर्वगणा एकादशोदिताः ।
 सुधर्मा स्याद्देवसभा दिव्य उच्चैःश्रवा हयः ॥ ११ ॥
 मेरुः सुमेरुः स्वर्णाद्रिर्मणिसानुः सुरालयः ।
 महामेरुर्वेगिरिर्गोधुक् चाथापरेऽद्रयः ॥ १२ ॥
 तालाङ्का मेरुगण्डाश्च ये मेरुं परितः स्थिताः ।
 मन्दाकिनी वियद्गङ्गा स्वर्नदी सुरदीर्घिका ॥ १३ ॥
 पञ्चैते देवतरवो मन्दारः पारिजातकः ।
 सन्तानः कल्पवृक्षश्च हरिचन्दनमस्त्रियाम् ॥ १४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

स्वर्गकाण्डे यक्षाद्यध्यायः ॥ ३ ॥

प्रथमः स्वर्गकाण्डः समाप्तः ॥ १ ॥

२. अथान्तरिक्षकाण्डः

ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

अन्तरिक्षं नभो व्योम गगनं सुरवर्त्म खम् ।
 वियद्विष्णुपदं दिव्यं वायुवर्त्म विहायसम् ॥ १ ॥
 तारावर्त्ताम्बरं मेघवर्त्म चाकाशमस्त्रियाम् ।
 दिग्दिशाशा ककुब्दीर्णा हरिदेववधूः सरिः ॥ २ ॥
 अव्ययीभावोऽपदिशमवान्तरदिशा विदिक् ।
 क्रमात् पूर्वोदिदिक्नाथा इन्द्राद्याः शङ्कराष्टमाः ॥ ३ ॥
 लोकपालास्ततो प्राद्या दिक् चैन्द्रीत्यादयो भिदाः ।
 आग्नेयी तु चराशा स्यान्नैर्ऋती तु दिगन्धकी ॥ ४ ॥
 मारुत्यनन्ता शार्वी तु शालाक्षाप्यपराजिता ।
 कौबेर्यादिषु तूदीची प्राच्यवाची प्रतीच्यपि ॥ ५ ॥
 ब्राह्मी तूर्ध्वोऽथ नागी स्यान्नारकी चाधरा ककुप् ।
 दिक्मण्डलं चक्रवालं दिगन्तः करिशोलुकम् ॥ ६ ॥
 दिक्मध्ये करिणीचारं दिग्युग्मे मण्डपीठिका ।
 अभ्यन्तरं त्वन्तरालमवकाशोऽन्तरं पदम् ॥ ७ ॥
 ऐरावतः पुण्डरीको वामनः कुमुदोऽञ्जनः ।
 पुष्पदन्तः सार्वभौमः सुप्रतीकश्च दिग्गजाः ॥ ८ ॥
 करिण्योऽश्वसुः कपिला पिङ्गलाऽनुपमा क्रमात् ।
 ताम्रपर्णी शुभदती चाङ्गना चाञ्जनावती ॥ ९ ॥
 अर्कः सूर्योऽर्यमा सूर्यो द्वादशात्मा दिवाकरः ।
 मार्तण्डः सविता भानुर्भातुः पूषा दिनप्रणीः ॥ १० ॥
 सप्तसप्तिः पद्मबन्धुस्तपनोऽनूरुसारथिः ।
 शुभणिर्हरिदश्वोऽद्रिरशीतांशुर्विकर्तनः ॥ ११ ॥
 शुमान् कुमुद्वतीशत्रुस्त्विषांपतिरहर्पतिः ।
 भास्करोऽहस्करो भास्वान् विषस्वाञ्जलतस्करः ॥ १२ ॥
 रश्मिमाली दृगध्यक्षः कर्मसाक्षी त्रयीवनुः ।
 तर्षुर्मार्तण्डमुण्डीरपाथिपेरुगभस्तयः ॥ १३ ॥
 पासिर्दृशानो रात्रिद्विद् प्रभाकरविभाकरौ ।
 खाध्वनीनः खतिलकः खगः खाङ्कस्तमोरिपुः ॥ १४ ॥
 चण्डांशुरंशुमानंशुः सहस्रांशुः सदागतिः ।
 आदित्यो मिहिरो मित्रो रविः प्रत्यूषडम्बरः ॥ १५ ॥

घृष्टिपादमयुखांशुस्तान्ध्योद्योगंगभस्तयः ।
 किरणोस्त्रौ च रोचिः क्ली रश्मिरक्ली मरीचिवत् ॥ १६ ॥
 तासां शतानि चत्वारि रश्मीनां वृष्टिसर्जने ।
 शतत्रयं हिमोत्सर्गं तावद्धर्मस्य सर्जने ॥ १७ ॥
 आनन्दनाश्च मेध्याश्च नूतना पूतना इति ।
 शतं शतं वृष्टिवहास्ताः सर्वा अमृताः स्त्रियः ॥ १८ ॥
 ता एव भन्दना मन्दाः कातनाः कोतनाः क्रमात् ।
 अथ मेध्यश्च पोष्यश्च ह्लादिन्यश्च शतं शतम् ॥ १९ ॥
 हिमोत्सर्गाय ताः सर्वाः सर्वाश्चन्द्राश्च नामतः ।
 ता एव रेश्यो वाश्यश्च मेध्याश्चेति यथाक्रमम् ॥ २० ॥
 अथ रुद्रा विश्वभृतः ककुहाश्च शतं शतम् ।
 घर्माय शुक्रास्ताः सर्वा माण्ड्यः शक्य इत्यपि ॥ २१ ॥
 आलोकस्तु प्रभा भा रुद्रुचिदीधितिदीप्तयः ।
 अथातपो रौद्रमिद्धं मृगतृष्णा मरीचिका ॥ २२ ॥
 संज्ञास्य रेणुर्द्युमयी त्रसरेणुः सुवर्चला ।
 त्वाष्ट्री प्रभाऽप्यथच्छाया विष्णुभा भूमिमय्यपि ॥ २३ ॥
 हिमद्युतिः शशी चन्द्रश्चन्द्रमाः शशभृद्विधुः ।
 परिष्मा रोहिणीकान्तो निशानाथो निशाकरः ॥ २४ ॥
 पुनर्युवा दशाश्वो ग्लौरिन्दुः कुमुदबान्धवः ।
 ओषधीशो निशाकेतुर्मृगलक्ष्माऽन्निनेत्रजः ॥ २५ ॥
 हृद्यांशुरंशुरब्जारिरमृतांशुः कलानिधिः ।
 यजतस्तपसः क्लेदुः स्यन्दः स्पन्दो यथासुखः ॥ २६ ॥
 प्राचीनतिलको जर्णो व्याध्वः सृप्रस्तृपिस्तृपत् ।
 उडुराजः शशाङ्कश्च समुद्रनवनीतकम् ॥ २७ ॥
 चन्द्रपादास्तु संवाला ज्योत्स्ना च शशिनः प्रभा ।
 चन्द्रिका चन्द्रिमा चान्द्री कौमुदी चन्द्रगोलिका ॥ २८ ॥
 अङ्कश्चिह्नमभिज्ञानं लाञ्छनं लक्ष्म लक्षणम् ।
 पुष्पवन्तौ सहैवोक्तयां सूर्याचन्द्रमसावुभौ ॥ २९ ॥
 परिग्रहोपरक्तौ तु प्रस्तार्केन्द्रोरथ ग्रहे ।
 उपप्लवोपरगौ द्वौ स तु सन्निहितो रवेः ॥ ३० ॥
 गजच्छायाऽप्यथार्केन्द्रोः परिधिः परिवेषकः ।
 कुजारमङ्गलाङ्गारा लोहिताङ्गो धरासुतः ॥ ३१ ॥
 कर्षको रुधिरौ भौमः प्रव्यालोऽप्यथ हर्षुलः ।

बुधः श्यामाङ्ग एकाङ्गः सौम्यश्चान्द्रमसायनि ॥ ३२ ॥
 वाचस्पतिरनिर्वापः सुराचार्यो बृहस्पतिः ।
 गीष्पः याङ्गिरसौ चक्षाश्चारुश्चित्रशिखण्डिजः ॥ ३३ ॥
 प्रचक्षा दीदिविश्वाथ शुक्रो दूतो दिवाचरः ।
 तिर्यग्गाम्यसुराचार्य उशना भार्गवः कविः ॥ ३४ ॥
 मन्दः खोडोऽसितः क्रोडश्छायापुत्रः शनैश्चरः ।
 सौरिः स्थिरगतिः कोणो दीर्णाङ्गो युगवर्तकः ॥ ३५ ॥
 श्रुतकर्मा नीलवासा वक्रः कोलः स्थिरः शनिः ।
 स्वर्भानुर्ग्रहकङ्गोलः संहिकेयो विधुन्तुदः ॥ ३६ ॥
 राहुरभ्रपिशाचश्च केतवो विकचाः कुशाः ।
 धूमजाः शिखिनो ब्रह्मपुत्राः श्रीमन्त आहिकाः ॥ ३७ ॥
 तारा भं रात्रिजं विष्ण्यं सन्नक्षत्रमुडुर्न ना ।
 मृगशीर्षं मृगशिरो मार्गायण्याग्रहायणी ॥ ३८ ॥
 इन्वकास्तच्छिरोदेशे तारका इत्वला मताः ।
 योग्यः सिध्यश्च पुष्यः स्याद्यामकौ तु पुनर्वसू ॥ ३९ ॥
 निष्ठया स्वाती विशाखेतु रावे आर्द्रा तु कालिनी ।
 श्रवणे श्रोणा मूले तु मूलवर्हण्यथ श्रविष्ठासु ॥ ४० ॥
 मन्दाग्राश्च धनिष्ठाश्च भरण्योऽपभरणीषु योग्याश्च ।
 ज्येष्ठा ज्येष्ठप्री स्यात्प्रोष्ठपदाः पुष्ययोः सभाद्रपदाः ॥ ४१ ॥
 अश्विन्यौ वालिन्यावश्वयुजावाश्वकिन्यौ च ।
 यथाप्रयोगमेतेषु वचनं स्याद्व्यवस्थितम् ॥ ४२ ॥
 अषाढाकृत्तिकाश्लेषामघा भूमिन् स्त्रियश्च ताः ।
 फल्गुन्यौ तु द्वित्वभूम्नोर्हस्तः शतभिषक् च सा ॥ ४३ ॥
 अनूराधास्तु पुंभूमिन् शेषं सर्ववचः स्त्रियाम् ।
 वीध्यो नवैव नक्षत्रैरश्विन्याद्यैस्त्रिभिस्त्रिभिः ॥ ४४ ॥
 त्रिवीथिका त्रयो मार्गा दक्षिणोत्तरमध्यमाः ।
 उत्तरो देवयानः स्याद्योगियानस्तु मध्यमः ॥ ४५ ॥
 दक्षिणः पितृयाणः स्यात्तत्राद्या नागवीथिका ।
 रोहिण्याद्याजवीथी स्यात्तत्तत्स्त्वैरावती परा ॥ ४६ ॥
 मार्गोऽयं देवयानाख्यो मघाद्या पुनरार्षभी ।
 हस्तादिका तु गोवीथी ततो जारद्वी परा ॥ ४७ ॥
 मार्गोऽयं योगियानाख्यो मूलाद्या गजवीथिका ।
 श्रोणाद्या मृगवीथी स्यात्ततो वैश्वानरी परा ॥ ४८ ॥

मार्गोऽयं पितृयाणाख्यः स्थानान्येषां पथां दिवि ।
 ऐरावतं जारद्वयं वैश्वानरमिति क्रमात् ॥ ४६ ॥
 सप्तर्षयस्तु खे तारारूपाश्चित्रशिखण्डिनः ।
 ज्योतिषामयनं ज्योतिःशास्त्रं राशिर्ग्रहाह्वयः ॥ ४७ ॥
 पूर्वपश्चिमराशयधौ सन्दालवलयौ क्रमात् ।
 संज्ञा द्रेक्काणहोराद्याः शास्त्रे ज्ञेयाः सलिङ्गकाः ॥ ४८ ॥
 कालोऽनेहा च दिष्टश्च स सूक्ष्मः स्त्री तुटिस्तुटिः ।
 द्वे तुटी लघुक्षरकस्तौ द्वावक्षरपातकः ॥ ४९ ॥
 तौ निमेषो लिप्तिका तु तौ द्वौ काष्ठा तु ता नव ।
 ते द्वे लवो लवाः पञ्च कला दश च तद्द्वयम् ॥ ५० ॥
 लेशो लेशाः पञ्चदश क्षणो नाडी तु षट् क्षणाः ।
 तौ तु नाडी मुहूर्तोऽस्त्री घटिका धारिकेति च ॥ ५१ ॥
 त्रिशता तैरहोरात्रः पक्षाङ्गोऽप्यथ वासरः ।
 दिवसं चास्त्रियौ भानुर्घृणिर्घस्रो रविध्वजः ॥ ५२ ॥
 पद्मबन्धुः कोकहितो द्युश्च क्ली स्यादहर्निशम् ।
 रजनी यामिनी याम्या त्रियामा क्षणदा क्षपा ॥ ५३ ॥
 तमी तमस्विनी रात्रिर्निशा घारिर्विभावरी ।
 तमिस्रा क्षणिनी क्षाणी शर्वरी वासतेय्युषा ॥ ५४ ॥
 निशीथिनी निशीथ्या च ज्योत्स्नी ज्योतिष्मती निशा ।
 पूर्णेन्दुस्तु दिनम्मन्या गर्भितं तु निशाद्वयम् ॥ ५५ ॥
 बह्वयस्तु गणरात्रं च चिररात्रं च रात्रयः ।
 पक्षाभ्यामिव याऽहोभ्यां युक्ता सा पक्षिणी निशा ॥ ५६ ॥
 तामसी सात्त्विकी चित्रा चित्रोपमा च राजसी ।
 खण्डिता चेति शर्वयः प्रावृडाद्युतुषु क्रमात् ॥ ५७ ॥
 या सप्तसप्ततितमे वर्षे मासि च सप्तमे ।
 सप्तमी प्राणिनां घोरा रात्रिर्भैरवरी हि सा ॥ ५८ ॥
 ध्वान्तस्तिमिरमासक्तं तामिस्रं शार्वरं तमः ।
 आततिश्चान्धकारोऽस्त्री तत्तु सन्तमसं यदि ॥ ५९ ॥
 परितोऽथावतमसं लघ्वन्धतमसं महत् ।
 छदो व्यवधिरन्तर्धिर्वरणं चापवारणम् ॥ ६० ॥
 अपिधानतिरोधानपिधानाच्छादनानि च ।
 दिनादौ प्राहपूर्वाहौ ततः संगतसंगवौ ॥ ६१ ॥
 मध्यन्दिनं तु मध्याह्न उच्छ्रस्तु विकालकः ।

सायाह्नोऽप्यपराह्नोऽस्त्री प्रदोषो मैथिलः समौ ॥ ६२ ॥
 साम्बाधिकः परस्तस्मान्निशीथस्त्वर्धरात्रकः ।
 मध्यरात्रो महारात्र उच्चन्द्रोऽपररात्रकः ॥ ६३ ॥
 ब्राह्मोऽप्येते क्रमाद्यामा यामे प्रहरयातुकौ ।
 पुण्याहमहि पुण्योऽशस्त्रिसन्ध्यं तूपवैणवम् ॥ ६४ ॥
 विहानोऽस्त्री प्रविसरो गोसर्गप्रत्युषावुषः ।
 व्युष्टं विभातं प्रत्युषं संयात्रिकमहर्मुखम् ॥ ६५ ॥
 काल्यं प्रभातं स्त्री वोषः सन्धा सन्ध्या पितृप्रसूः ।
 तिथिर्न षण् कर्मवाटी प्रतिपत्त्वेकपक्षतिः ॥ ६६ ॥
 पक्षतिश्चाथ पाटूरो भूतेष्टा च चतुर्दशी ।
 निष्पक्षतिर्द्वितीया स्याद्दर्शोऽमावास्यमावसी ॥ ६७ ॥
 अमावस्याऽप्यमावास्याऽप्यमामस्याऽप्यमामसी ।
 सा दृष्टेन्दुः सिनीवाली नष्टचन्द्रकला कुहूः ॥ ६८ ॥
 पित्र्या तु पूर्णिमा चान्द्री चन्द्रमाता निरञ्जना ।
 पूर्णा तु पूर्णमासी च पौर्णमासी च पूर्णिका ॥ ६९ ॥
 चन्द्रे कलोनेऽनुमतिः सैव राका तु पूरिते ।
 पर्वणी पञ्चदश्या द्वे पक्षान्तौ नन्दिवर्धनौ ॥ ७० ॥
 आग्रायणी शङ्कमूली पौर्णमास्याग्रहायणी ।
 पौषी तु महिषी माता माषी स्यादग्निपूर्णिमा ॥ ७१ ॥
 फाल्गुनी दण्डपाता स्याच्चैत्री तु मदनध्वजा ।
 विश्वविस्ता तु वैशाखी ज्यैष्ठी तूपनिवेशिनी ॥ ७२ ॥
 आषाढी कृत्तिमाचारी श्रावणी तु द्विवेदिनी ।
 अथ प्रौष्ठपदी गाङ्गी स्यादाश्विन्यवराविला ॥ ७३ ॥
 वत्सरान्ता त्वरिग्रेणी धैनुकी चापि कार्तिकी ।
 मासाख्याकूर्चनक्षत्रयोगश्च गुरुणा यदा ॥ ७४ ॥
 महाग्रहायणीत्याद्यास्त एव तिथयः क्रमात् ।
 जयन्तीत्यादिकाः संज्ञाः पुराणे तिथिषूदिताः ॥ ७५ ॥
 पक्षोऽर्धमासः पूर्वस्तु शुक्लाख्योऽन्योऽसिताह्वयः ।
 क्षीयमाणतिथिप्रायः पक्षो रिक्तोऽपरस्त्वणिः ॥ ७६ ॥
 अणिकूर्चस्त्वमावास्या भूतेष्टा प्रतिपक्ष्यात् ।
 मासः सांवत्सरस्तान्तः संक्रान्त्या तु स तारणः ॥ ७७ ॥
 ज्यौतिषः पुनराचारात् सावनो दिनसंख्यया ।
 आग्रहायणिको मार्गशीर्षो वर्षमुखः सहाः ॥ ७८ ॥

सहस्ये स्युस्तैषपौषसैधा माघे तु शानकः ।
 शातरश्च तपाश्चाथ द्वौ फाल्गुनिकफाल्गुनौ ॥ ८२ ॥
 तपस्ये फल्गुनालश्च चैत्रे मौहनिको मधुः ।
 चैत्रिको मन्मथसखो वैशाखो राध उच्छुनः ॥ ८३ ॥
 ज्येष्ठामूलीय ईजानो ज्यैष्ठश्च खरकोमलः ।
 ते शुके स्युरथाषाढे शुचिः श्रावणिको नभाः ॥ ८४ ॥
 श्रावणश्च नभस्ये तु भाद्रो भाद्रपदोऽपि च ।
 अपि प्रौष्ठपदस्तस्मिन्नाश्विनाश्वयुजाविषे ॥ ८५ ॥
 कार्तिके स्यात् कार्तिकिको बाहुलः शैलकौमुदौ ।
 कृबेऽप्येषु सकारान्ता ऋतुर्बीजं सतेरकम् ॥ ८६ ॥
 हेमन्तः प्रसवो लोभः शैखस्तु शिशिरोऽस्त्रियाम् ।
 मधुर्वसन्तः सुरभिर्वलाङ्गः पुष्पसारणः ॥ ८७ ॥
 पुष्पकालोऽपीष्ममस्त्री ग्रीष्मस्त्वाखोर ऊष्मकः ।
 शुचिरुष्णागमः पात्म उष्ण ऊष्माऽप्यथ क्षरी ॥ ८८ ॥
 प्रावृड् वार्षी भूम्नि वर्षाः कालोक्षी च घनागमः ।
 घनात्ययः शरत् स्त्री स्याद्विसर्गो दक्षिणायनम् ॥ ८९ ॥
 उत्तरायणमाग्नेयं विषुवान् विषुवोऽस्त्रियौ ।
 संवत्सरोऽब्द आग्नेयो वत्सरः परिवत्सरः ॥ ९० ॥
 वत्सवायव्यसौर्याश्च वर्षोऽस्त्री स्त्री शरत् समाः ।
 कृतं सत्ययुगं सौम्यं त्रेताग्नेयी द्विसर्गिका ॥ ९१ ॥
 द्वापरे यज्ञियाग्नेयी पुण्यो भर्भरकः कलिः ।
 त्रियुगं तु युगासारं द्वायायोगं तु युगद्वयम् ॥ ९२ ॥
 मन्वन्तरं त्वन्तरं स्यात् कल्पभागे चतुर्दशे ।
 चतुर्युगसहस्रं तु कल्पस्तद् ब्रह्मणो दिनम् ॥ ९३ ॥
 तद्वात्रौ तु महासुप्तिः समसुप्तिर्जगत्क्षयः ।
 महाप्रलयकल्पान्तौ युगान्तो भूतसम्प्लवः ॥ ९४ ॥
 प्रतिसर्गस्तु संहारः प्रलयः प्रतिसञ्चरः । ९४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या-
 मन्तरिक्षकाण्डे ज्योतिरध्यायः ॥ १ ॥

मेघाध्यायः ॥ २ ॥

मेघोऽब्दो जलदो नभ्राट् तटित्वान् जलमुग्धनः ।
 धाराधरो वारिधरो धूमयोनिर्बलाहकः ॥ १ ॥
 तटित्पतिः पयोगर्भो नदनुर्मुदिरोऽम्बुभृत् ।
 कादम्बिनी मेघमाला काली कृष्णनवाम्बुदः ॥ २ ॥
 इन्द्रायुधं त्विन्द्रधनुस्तदीर्घमृजु रोहितम् ।
 ऐरावतं च विद्युत्तु चञ्चला चपला चला ॥ ३ ॥
 आकालिकी शतावर्ता जलदा जलपालिका ।
 क्षणांशुः क्षणिका चम्पा ताटहीप्ता शतहृदा ॥ ४ ॥
 सौदामिन्यैरावती च तद्भेदेऽप्यन्तिमत्रयम् ।
 गर्जितं स्तुतिं शीर्णं वज्रे ह्यादुनयः स्त्रियः ॥ ५ ॥
 वज्रपातस्तु निर्घातश्चण्डकोऽप्यशान्तिर्न षण् ।
 स्फूर्जथुर्वज्रनिष्पेषो न स्त्री वज्रोऽशान्तिर्न षण् ॥ ६ ॥
 वर्षोऽस्त्री वर्षणं वृष्टिः शीकरोऽस्त्र्यम्भस्तः कणः ।
 घनोपलस्तु करकः पुष्पिका मचटीति च ॥ ७ ॥
 विप्रुट् स्त्री पृषतो बिन्दुः स्तोको द्रप्सः पृषन्न पुम् ।
 अनावृष्टिरवग्राहो मेघच्छन्नेऽहि दुर्दिनम् ॥ ८ ॥
 अवश्यायस्तु नीहारस्तुपारस्तुहिनं हिमम् ।
 प्रालेयं मिहिका चाथ हिमानी हिमसंहतिः ॥ ९ ॥
 कुहिदोऽस्त्री कुहेलिः स्त्री कुहेडिर्धूमिका त्रयी ॥ १० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे मेघाध्यायः ॥ २ ॥

खगाध्यायः ॥ ३ ॥

पक्षी पत्ररथः पत्री पित्सन् पिपतिषन् पतन् ।
 पतङ्गः पतगः प्लावी पतत्र्यङ्गुपतत्रयः ॥ १ ॥
 विहङ्गमो विविहङ्गो विहङ्गो नभसङ्गमः ।
 नीडोद्भवः शुको नीडी मल्लको विप्रुषो भस्मन् ॥ २ ॥
 वशाकुर्मदनः पीतुर्मशाको मदुरो द्विजः ।
 ऊकः शकुन्तः शकुनिः शकुन्तिः शकुनः खगः ॥ ३ ॥
 शलको विकिरस्तुण्डी नीडजो वातगाम्यपि ।
 पक्षिपोतस्तु चित्ताकश्चम्पुकः पीलुकावटौ ॥ ४ ॥
 गृह्याश्लेकाश्च गेहेषु संसक्ता मृगपक्षिणः ।
 हंसो मरालो नीलाशश्चक्रपक्षः सितच्छदः ॥ ५ ॥
 मानसौकाः परिप्लावी वक्राङ्गो जालपादकः ।
 सूतिः सङ्कुचितः शङ्कुर्ज्येष्ठः प्रास्थितधोरणी ॥ ६ ॥
 क्षीराश्राप्यसौ राजहंसो रक्तैः पदाननैः ।
 मलिनैर्मल्लिकाश्चस्तैर्धातिराष्ट्रः सितैरैः ॥ ७ ॥
 कादम्बः कलहंसश्च हंस आधूसरच्छदः ।
 वरटा हंसकान्ता स्याद् वरालाव रलाऽपि च ॥ ८ ॥
 हंससाचिः क्षुद्रहंसः क्षयिस्तु कुवलायिकः ।
 चक्रवाको रथः कोकश्चक्रश्चक्राह्वयाह्वयः ॥ ९ ॥
 बको बकोटः कङ्कोऽथ बलाका विसकण्ठिका ।
 बकजातिर्दर्वितुण्डो दर्विः क्रौञ्चश्च दर्विदा ॥ १० ॥
 मदुस्तु जलकाकः स्यादातिस्त्वाटिः शराटिका ।
 कारण्डवो महापक्षो जलरङ्गुस्तु वञ्जुलः ॥ ११ ॥
 दात्यूहश्चाथ शकटाबिले प्लवपरिप्लवौ ।
 अन्वर्थनामधेयौ द्वौ जालपादाम्बुकुटौ ॥ १२ ॥
 कुक्कुटो दीर्घवाग्दक्षः शिखी चूलिक आरणी ।
 कृकवाकुर्विवृत्ताक्षस्ताम्रचूडः शिखण्डिकः ॥ १३ ॥
 मयूरश्चटकः शौण्डः पादायुधनखायुधौ ।
 पारावतः कलरवो रक्तदृष्टिर्मदोत्कटः ॥ १४ ॥

काकस्तु द्विक एकाक्षश्चिरजीवी दिवाटनः ।
 आत्मघोषो महानेभिः कण्टको मौकलिः कुणः ॥ १५ ॥
 बलिपुष्ट उल्लकारिर्नाडिजङ्घोऽप्रहृष्टकः ।
 धूलिजङ्घोऽन्यवापश्च परभृद्वायसोऽन्यपुट् ॥ १६ ॥
 द्रोणः सकृत्प्रजोऽरिष्टो ध्वाङ्गः करट इत्यपि ।
 कृष्णकाको वृद्धकाक ऐन्द्रिः काकोल आसुरः ॥ १७ ॥
 धूङ्गणा तु श्वेतकाकोऽथ चटको वर आटकः ।
 बलिभुक् कलविङ्कश्च सेव्यस्तिलककण्टकः ॥ १८ ॥
 कलविङ्कस्त्वसौ पीतमुण्डः श्यामा तु पोतकी ।
 व्याघ्राटस्तु भरद्वाजः क्षिप्रः श्येन सुपर्णकः ॥ १९ ॥
 श्येनायां प्राचिका चित्रपक्षे शरुकपिञ्जलौ ।
 वाचाला मुखरा शारिः कोयष्टिः शिखरी समौ ॥ २० ॥
 कुलालकुक्कुटो गर्तकुक्कुटः पेचिका पुनः ।
 उल्लकेटी हिका स्यात् कनकाक्षी च पिङ्गला ॥ २१ ॥
 उल्लकः पेचकः कोण्टः काकारिर्हरिलोचनः ।
 नक्तञ्जरो घर्घरको निशादर्शी बहुस्वनः ॥ २२ ॥
 महापक्षी च कृष्णोऽसौ नक्तकः कृतमालकः ।
 कपोतो बालवत्सः स्यात् खञ्जरीटस्तु खञ्जनः ॥ २३ ॥
 मिथुनी चञ्चलश्चाथ सुमोऽस्मिन् कृष्णवक्षसि ।
 गोलनिका खञ्जरीटी शार्ङ्गः कीर्शा च पिप्पिका ॥ २४ ॥
 शुक्लिकेतुर्मेधावी श्रीमान् वाग्मी फलाशनः ।
 दरणो दण्डिकीरौ च लोपालोपायिके समे ॥ २५ ॥
 पात्रं तु कुण्डूणाची स्त्री कण्ठपालस्तु वञ्जुलः ।
 काकपुष्टस्त्वन्यभृतस्ताम्राक्षः कोकिलः पिकः ॥ २६ ॥
 वसन्तघोषो मधुवाक् कलकण्ठो वनप्रियः ।
 भृङ्गः कलिङ्गो धूम्राटो राजभृङ्गस्तु बुद्धिमान् ॥ २७ ॥
 मान्धीरी वाग्गुदस्तुल्यः स तु मान्धीलवो महान् ।
 आतापी चिल्लिकोऽथ स्यात् स्वस्तिकः पुष्टिवर्धनः ॥ २८ ॥
 किकिदीविः स्वर्णचूडश्चापो राजविहङ्गमः ।
 मणिकण्ठश्चित्रवाजो विशोकः पूर्णकूटकः ॥ २९ ॥
 गृध्रस्तु पुरुषव्याघ्रो दूरदर्शी सुदर्शनः ।
 दाक्षाय्यश्चाप्यथ श्येनो वर्तुलाक्षः शशादनः ॥ ३० ॥
 कङ्कस्तु कर्कटस्कन्धः पर्कटः कमलच्छदः ।

दीर्घपादः प्रियापत्यो लोहपृष्ठश्च मल्लकः ॥ ३१ ॥
 पूर्णकूटे कुटपुरिः शकुन्ते भासकुक्कुटौ ।
 चातकस्त्वम्बुजोऽनम्बुः पौरेन्द्रः स्तोककः खगः ॥ ३२ ॥
 सारसो मैथुनी कामी गोनर्दः पुष्कराह्वयः ।
 दार्वाघाटे शतपत्रो लक्ष्मणा सारसप्रिया ॥ ३३ ॥
 क्रौञ्चस्तु क्रुद्धोऽक्रोशः कुररो मत्स्यनाशनः ।
 टिट्ठिभस्तु कटुकाण उत्पादशयनोऽण्डुकः ॥ ३४ ॥
 तित्तिरिस्तु खरकाणो वरिष्ठश्चेश्वरप्रियः ।
 चकोरस्तु चलच्चचुरुत्पिषधश्चन्द्रिकाप्रियः ॥ ३५ ॥
 कृकरो त्वर्धकृकणौ दात्यूहे कालकण्ठकः ।
 मयूरो बर्हिणो बर्ही शुक्लापाङ्गः शिखावतः ॥ ३६ ॥
 वर्षामदः शिखी केकी शिखण्डी चित्रपत्रकः ।
 भुजङ्गारिः शापटिको मयूकश्चित्रपिङ्गलः ॥ ३७ ॥
 मार्जारकण्ठः केकालिर्विष्किरो वर्तनप्रियः ।
 मेघनादानुलासी च दार्वण्डश्चन्द्रकीति च ॥ ३८ ॥
 शब्दोऽस्य केका बर्हस्तु प्रचलाककलापकौ ।
 शिखण्डः पिच्छमप्यस्य मेचको बर्हचन्द्रकः ॥ ३९ ॥
 पक्षिमेदाः खिलिखिलश्रीकर्णायकवर्तकाः ।
 लावकुक्कुटहारीतजीवस्त्रीवादयोऽपि च ॥ ४० ॥
 हंसादयो जलचरा ग्राम्याः स्युः कुक्कुटादयः ।
 वनजाः पीतमुण्डाद्या भृङ्गाद्याः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४१ ॥
 भृङ्गे भ्रमरभृङ्गाणमधुलिणमधुपालिनः ।
 अलिद्विरेफो लोलम्बो भसलः पुष्पलोलुपः ॥ ४२ ॥
 इन्दिन्दिरो मधुकरश्चञ्चरीको मधुव्रतः ।
 शित्पुटः षट्पद्मश्चाथ पतङ्गः शलभः समौ ॥ ४३ ॥
 जतुकाऽजिनपत्रा स्यात् परोष्णी तैलपायिका ।
 मलिम्लुचास्तु मशका भम्भराली तु मक्षिका ॥ ४४ ॥
 चर्वणा मक्षिका नीला सरघा मधुमक्षिका ।
 अरण्यमक्षिका दंशो दंशी तज्जातिरल्पिका ॥ ४५ ॥
 कषायिका तु जलजा घोणा कुम्भीरमक्षिका ।
 गण्डोली वरटा न ह्री गृहिणी गृहकारिका ॥ ४६ ॥
 अन्वर्थाख्या कोष्ठकारी कण्टका कण्टकानना ।
 निशामणिर्ध्वान्तमणिः खद्योतो ज्योतिरिङ्गणः ॥ ४७ ॥

भृङ्गारी मीरिका चीरी मिङ्गिकाऽथ प्लुषिः पुमान् ।
 पुस्तिका च पतङ्गी च पूत्यण्डाः क्षुद्रपक्षिणः ॥ ४८ ॥
 छदः पत्रो गरुडाजश्छदनं च तनूरुहम् ।
 पतत्रं च कुलायस्तु पञ्जरं नीडमस्त्रियाम् ॥ ४९ ॥
 पेशी कोशश्च डिम्बोऽण्डं त्रोटिश्चञ्चुः स्तृपाटिका ।
 डयनं गतिरुद्धीनसण्डीनादि विशेषकम् ॥ ५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यमन्तरिक्षकाण्डे खगाध्यायः ॥ ३ ॥

शब्दाध्यायः ॥ ४ ॥

शब्दो व्योमगुणस्वानस्वननिस्वाननिस्वनाः ।
 निर्हादो रवणो नादो दवेडो ध्वानो ध्वनिः कवः ॥ १ ॥
 कणिर्हादो रसो ध्रूणा घोषो गुञ्जनमुञ्जने ।
 गञ्जनं मशनं कानं गानं कोरणरेभणे ॥ २ ॥
 कूजनं कूजितं गर्जा न क्लीबे गर्जना न ना ।
 क्रोश उच्चस्वने प्राणिस्वने त्वाराव आरवः ॥ ३ ॥
 रवो विरावः संरावो रुतं चेत्यथ वाशनम् ।
 वाशितं च तिरश्चां स्यात् ध्वाङ्गो ह्रीं घोरवाशितम् ॥ ४ ॥
 घोरितं तुरगादीनां नासापुटभवे ध्वनौ ।
 तन्दनं रम्भणं रम्भा रम्भितं च गवां ध्वनिः ॥ ५ ॥
 बुक्कनं श्ववृकध्वाने भषणं भषितं शुनः ।
 वृकस्य रेषणं रेषा हेषा हेषा च वाजिनाम् ॥ ६ ॥
 बृंहितं करिणां शब्दो राणोऽस्त्री मणितं रतेः ।
 काकुः स्त्री भिन्नकण्ठोत्थः शोककोपादिवैकृतात् ॥ ७ ॥
 डक्कनं हात्कृते पत्रवस्त्रादीनां तु मर्मरः ।
 पर्दनं गुदजे शब्दे कर्दनं कुक्षिकूजिते ॥ ८ ॥
 विष्फारो धनुषः स्वानो भूषादीनां तु शिञ्जितम् ।
 प्रणादस्वनुरागोत्थश्चित्कृतं स्यन्दनध्वनौ ॥ ९ ॥
 स्रोतसां खरको युद्धध्वाने कन्दनयोधने ।
 माजना मुरजध्वाने गुन्दिलो मर्हलध्वनौ ॥ १० ॥
 वाणं हुडुकहिक्कायां भेरीनादे तु टट्टरः ।
 कणनं कणितं क्वाणो निक्वाणो निक्कणः कणः ॥ ११ ॥
 वीणायाः कणतेः प्रादेः प्रक्वाणप्रक्कणादयः ।
 स्त्री प्रतिश्रुत् प्रतिध्वाने तुमुलो व्यकुले भृशम् ॥ १२ ॥
 गम्भीरे मन्द्र उच्चे तु तारो रम्यास्फुटे कलः ।
 समाहितस्तु निर्दोषवर्णे दोषयुताः परे ॥ १३ ॥
 अत्युच्चारणगर्वेण पीडितोऽपि समाहितः ।
 एणीकृतः प्रतिध्वानदन्तुरो माहिषश्च सः ॥ १४ ॥
 कल्हस्तु गलमूलस्थो गद्गदः स मनाक् स्फुटः ।

लालको बालानुकृतौ लल्लरो जिह्वया हतः ॥ १५ ॥
 शिथिलोऽस्पष्टसंयोगस्तुम्बुकः सानुनासिकः ।
 सान्त्वं स्यान्मधुरं वाक्यं स्यादवाच्यमनक्षरम् ॥ १६ ॥
 अनिर्बद्धं तूष्णावचमक्लिष्टार्थं तु सङ्कुलम् ।
 अनृते वितथालोकावाहतं तु मृषार्थकं ॥ १७ ॥
 अम्बूकृतं सनिष्ठीवं स्यादबद्धमनर्थकम् ।
 कल्या तु वाचि कल्याण्यां रुशती तद्विपर्यये ॥ १८ ॥
 छलवाक्तु निरानन्दा शोकभारे तु तीरिता ।
 क्रोधगर्भा तु वैद्योता दैन्यगर्भा तु नश्वरी ॥ १९ ॥
 निर्वेदगर्भा निस्सङ्गा स्नेहगर्भा तु मालुकी ।
 विरहे खण्डिता मोहे शून्या लोभे तु जाङ्गली ॥ २० ॥
 निष्ठुरा परुषा क्षेपे त्रिषु स्युस्तुमुलादयः ।
 अस्त्रियौ वर्णमर्णं च वाक्यं तु वचनं वचः ॥ २१ ॥
 आम्नेडितं द्विस्त्रिरुक्तं गुणितं घोषितं समे ।
 अराणर्णा मुहुः प्रोक्तमनुलापश्च वर्तनम् ॥ २२ ॥
 सम्भाषणं त्वाभाषणमालापः कुरुकुञ्चिका ।
 उपसम्भाषणं साम्नि तत्तत्पच्छन्दनं यदि ॥ २३ ॥
 धनादि स्यात् प्रतिज्ञातं गुह्ये तदुपमन्त्रणम् ।
 विभाषणं विवादे स्यादनुवादोऽनुभाषणम् ॥ २४ ॥
 आख्यायनी तु सन्देशो दिष्टं संवदनं च तत् ।
 संवादनं वाचिकं च बलना त्वतिचाटुवाक् ॥ २५ ॥
 लुञ्जना पिञ्जना चेति सूत्रिते वचनद्वयम् ।
 भञ्जना स्याद्विवरणे पोटना तूत्कटं वचः ॥ २६ ॥
 कोलाहलः कलकलः कुञ्जनाऽस्मिन्नपक्रुधि ।
 चर्चरी चर्भटिस्तुल्ये रथ्यावादे तु कोहलम् ॥ २७ ॥
 उद्धूमस्तु कौरकव्या विगर्वा गर्वहारिका ।
 लोचना तु विचारोक्तिर्लोटना सानुसारवाक् ॥ २८ ॥
 विप्रलापो विरोधोक्तिः संलापो भाषणं मिथः ।
 काका वर्णनमुल्लापो विलापः परिदेवनम् ॥ २९ ॥
 प्रलापोऽनर्थकं वाक्यमपलापस्त्वपह्वः ।
 अपठ्ययोऽप्यवज्ञाऽपि हूतिस्त्वाकारणा हवः ॥ ३० ॥
 हकारामन्त्रणाह्वानं संहृतिर्बहुभिः कृता ।
 अभिधानं नामधेयं नामाख्याऽऽह्वाऽभिधाऽऽह्वयः ॥ ३१ ॥

मिथ्याऽभियोगोऽभिरुह्यान्मभिशापोऽभिशंसनम् ।
 शापोऽधिष्ठेप आक्रोशः परिवादोऽप्यवर्णवत् ॥ ३२ ॥
 अवर्णवादो निर्वादोऽप्यपवादो विरुक्षणम् ।
 क्षारणं गर्हणं निन्दा जुगुप्सागालिकुत्सनाः ॥ ३३ ॥
 जनवादस्तु वचनं भर्त्सनं प्रतितर्जनम् ।
 आक्षारणं विधुवनमाक्रोशो मैथुलं प्रति ॥ ३४ ॥
 उत्साहः स्यादुपालम्भः परिवाग्भाषणीति च ।
 श्लाघा शंसा प्रशंसा च स्तवः स्तोत्रं स्तुतिर्नुतिः ॥ ३५ ॥
 यशो जयोदाहरणं साधुवादो गुणावली ।
 ख्यातिः कीर्तिः समज्ञा च सन्देशगिरि वाचिकम् ॥ ३६ ॥
 अर्थवादः परार्थोक्तिः प्रश्नः पर्यनुयोगवत् ।
 अनुयोगश्च पृच्छा च प्रतिवाक्यं तदुत्तरम् ॥ ३७ ॥
 कथा त्वाख्यानिकाऽऽख्यानं पुराणं पञ्चलक्षणम् ।
 इतिहासः पुरावृत्तमैतिह्यमितिहाऽव्ययम् ॥ ३८ ॥
 वार्तोदन्तोऽपि वृत्तान्तः किंवदन्ती जनश्रुतिः ।
 प्रवल्हिका प्रहेलिका प्रजल्पनं बहूदितम् ॥ ३९ ॥
 विकल्पना पृथक्क्रियाऽवधारणाऽन्यनिहुतिः ।
 समस्या तु समासः स्यात् सङ्क्षेपः स्यादविस्तरः ॥ ४० ॥
 उपोद्धात उदाहार उपन्यासः पुरोवचः ।
 प्रस्तावः पुनरुद्धातः सोऽधिकार उपक्रमः ॥ ४१ ॥
 गद्यपद्यमयी चम्पूः सारणी पद्यमात्रिका ।
 शृङ्गाराद्यधिकं काव्यं समासाढ्यं तु दण्डकम् ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यामन्तरिक्षकाण्डे शब्दाध्यायः ॥ ६ ॥

द्वितीयोऽन्तरिक्षकाण्डः समाप्तः ॥ २ ॥

३. अथ भूमिकाण्डः

देशाध्यायः ॥ १ ॥

भूमिरुर्वी घनश्रेणी स्थगणा गिरिकर्णिका ।
 क्षोणी सर्पभृता दक्षा कुः क्षमा क्षान्तिः क्षमा क्षरिः ॥ १ ॥
 धरित्री धरणी धात्री भूतधात्री धरा स्थिरा ।
 वसुन्धरा वसुमती वसुधा विपुला रसा ॥ २ ॥
 रमा विश्वा पृथिवी पृथ्वी हेमा सर्वसहा मही ।
 अधिवक्त्रा नगाधारा मेदिनीला गिरिस्तनी ॥ ३ ॥
 अचला कीलिनी पेरा बीजसू रत्नसूः स्वसूः ।
 रत्नगर्भा काश्यपी भूः कुह्यवनिर्बरा ॥ ४ ॥
 द्यावापृथिव्यावेकोक्तौ रोदस्यौ रोदसी इति ।
 नाभीदं भारतं वर्षं हिमाद्रेस्तच्च दक्षिणम् ॥ ५ ॥
 तेन हैमवतं नाम पराण्यप्येवमुन्नयेत् ।
 हेमकूटं किम्पुरुषं हरिवर्षं तु नैषधम् ॥ ६ ॥
 इलावृत्तं सौमेरवं सुमेरुं परितो हि तत् ।
 भद्राश्वं तु ततः पूर्वं केतुमालं तु पश्चिमम् ॥ ७ ॥
 वर्षावेतौ क्रमात् पूर्वगन्धिकापरगन्धिकौ ।
 उदक् तु रम्यकं नैलं नीलाद्रेरुत्तरं हि तत् ॥ ८ ॥
 ततो हिरण्यं श्वेतं तच्च श्वेताद् गिरेरुदक् ।
 कुरुवर्षं शार्ङ्गवतं कुरवश्च त उत्तराः ॥ ९ ॥
 जम्बूद्वीपः कुमारी स्याद्यत्रेमे भारतादयः ।
 लावणो लवणोदः स्याद्येनासौ वेष्टितोऽब्धिना ॥ १० ॥
 प्लक्षद्वीपादयोऽप्येवं वृता इक्षूदकादिभिः ।
 मन्थोदधिस्तु क्षीराब्धिः क्षीरोदः कलशोदधिः ॥ ११ ॥
 अथाप्यन्येऽन्तरद्वीपा भारतात् सप्त दक्षिणाः ।
 एको वैद्युत्वतो नाम विद्युत्वान् यत्र पर्वतः ॥ १२ ॥
 मालं मैनं व्रतं जालं नारासङ्गे पराणि षट् ।
 अनुद्वीपाश्च षट् तेषामङ्गद्वीपादयो यथा ॥ १३ ॥
 अङ्गद्वीपं यवद्वीपं मलयद्वीपमित्यपि ।

शङ्खद्वीपं कुशद्वीपं वराहद्वीपमित्यपि ॥ १४ ॥
 अङ्गद्वीपं चाक्रगिरं मध्ये पश्चिमवारिधिः ।
 पूर्वाब्धौ तु यवद्वीपं यत्र कालोदकोऽर्णवः ॥ १५ ॥
 मलयद्वीपमब्धौ स्यादक्षिणे तच्च दार्दरम् ।
 मालयं माहामलयं तत्पार्श्वे तु चतुर्थकम् ॥ १६ ॥
 अतः पूर्वं कुशद्वीपं चम्पकद्वीपमप्यदः ।
 यतः पुरो रक्तवहो लोहित्यो नाम वारिधिः ॥ १७ ॥
 अथ प्रतीच्यां वाराहं वराहद्वीपमायतम् ।
 यत्र यज्ञवराहोऽसौ हरिरद्यापि तिष्ठति ॥ १८ ॥
 बर्हिणं सिंहलं हेमकुण्डं द्वारवतीपदम् ।
 पारसीकुलं स्वर्णद्वीपं वैद्युतमार्षभम् ॥ १९ ॥
 अयोमुखं तार्णसौमं स्यात्तार्णं ग्रामणीकुलम् ।
 इत्याद्या भारते वर्षे क्षुद्रा द्वीपाः सहस्रशः ॥ २० ॥
 नीवृज्जनपदो देशस्तद्भेदाः पुंसि भूमिनि च ।
 स्त्रियो वरेन्द्री स्त्रावस्तीराढाद्या नैव भूमिनि ॥ २१ ॥
 प्राग्दक्षिणः शरावत्याः प्राच्योऽस्याः पश्चिमोत्तरः ।
 उदीच्यो मध्यदेशस्तु देशो यो मध्यमस्तयोः ॥ २२ ॥
 आर्यावर्तो ब्रह्मवेदिर्मध्यं विन्ध्यहिमागयोः ।
 अथोदीच्या जनपदास्तत्र चीनाः खरम्भराः ॥ २३ ॥
 गान्धारास्तु दिहण्डाः स्युर्यवनास्तु हुरुण्डराः ।
 सम्भालाः स्युः शूरसेना अपि ते शूरसेनयः ॥ २४ ॥
 मध्ये तु शूरसेनानां मधुरा नाम वै पुरी ।
 लम्पाकास्तु मुरुण्डाः स्युस्तोक्षारास्तु युगालिकाः ॥ २५ ॥
 जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युर्होलाः स्युः खरटी स्त्रियाम् ।
 प्रत्यग्रथास्त्वहिच्छत्रास्तैतुलास्तु कलिङ्गकाः ॥ २६ ॥
 टर्कवादीककाश्मीरतुरुष्केषु ससिन्धुषु ।
 बाह्लीका बाह्लिकाः कीराः शाखयो दारदाः क्रमात् ॥ २७ ॥
 कुमालकास्तु सौवीरा यौधेयास्तु नृगालिकाः ।
 अप्यन्ये पारदाः किञ्जाः कुल्या इत्यादिनीवृतः ॥ २८ ॥
 अथ प्राच्या जनपदास्तत्र मुद्रकाः कुजाः ।
 प्राग्येतिषाः कामरूपास्तथा प्राग्जालिका अपि ॥ २९ ॥
 विदेहास्तीरभुक्तिः स्त्री स्त्रावस्ती तु परञ्जका ।
 राढा तु मुखाः पुण्ड्रास्तु वरेन्द्री पुण्ड्रलक्षणा ॥ ३० ॥

भौरिकाः स्युः समतटा अङ्गाश्चम्पूपलक्षणाः ।
 वङ्गास्तु हरिकेलीया मगधाः कीकटाः स्मृताः ॥ ३१ ॥
 अप्यन्येऽन्ध्रा व्रताः सात्वा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ।
 विन्ध्यास्तु दक्षिणा देशा दक्षिणापथसंज्ञिताः ॥ ३२ ॥
 तत्र पाण्ड्याः पाण्डियाः स्युः कुन्तलाः स्तूपहालकाः ।
 चोलाः स्युरुत्पलावर्ता महाराष्ट्रास्तु दण्डकाः ॥ ३३ ॥
 अप्यन्ये केरलाः कुल्याः सेतुजाः कुलकालकाः ।
 इषीकाः शबरारट्टा इत्याद्या नीवृतः पृथक् ॥ ३४ ॥
 अपरान्तास्तु पाश्चात्यास्ते च सूर्यारकादयः ।
 अथेमे मलदाद्याद्या विन्ध्यपर्वतवासिनः ॥ ३५ ॥
 तत्र स्युर्मलदाः स्थौराः करुशास्तु बृहद्गृहाः ।
 त्रैपुरास्तु दहालाः स्युश्चैद्यास्ते चेदयश्च ते ॥ ३६ ॥
 दाशाणीः स्युर्वेदिपरा मालवाः स्युरवन्तयः ।
 अप्यन्ये मेकला भोजाः कोसलाद्याश्च नीवृतः ॥ ३७ ॥
 अथ देशा मध्यदेशे मरवस्तु दशेरकाः ।
 सात्वास्तु कारकुत्सीयास्तेषां त्वघयवाः परे ॥ ३८ ॥
 उदुम्बरास्तिलखला महाकारा युगन्धराः ।
 हुलिङ्गाः शरदण्डाश्च षट् सात्वावयवा इमे ॥ ३९ ॥
 अप्यन्ये कुन्तलाः कुल्याः कलिङ्गाः काशिकोसलाः ।
 मेकलाः कुसटाः सैरा जाङ्गलाः पृथवो वृकाः ॥ ४० ॥
 पटञ्चरादयश्चान्ये मध्यदेशस्य नीवृतः ।
 उक्तानामन्तरालेषु बहवः क्षुद्रनीवृतः ॥ ४१ ॥
 मरवः पुंसि धन्वान आसारी तु स्थली स्थलम् ।
 कचङ्गला तु नीलिङ्गी भूर्नानाजन्तुसंयुता ॥ ४२ ॥
 पङ्किलः पङ्कवान् देशो वेतस्वान् बहुवेतसः ।
 शाद्वलः शादहरितः कुमुद्वान् कुमुदाधिकः ॥ ४३ ॥
 सनलो नडवल्लो नड्वाब्धकारः शर्कराधिकः ।
 देशः शर्करिलोऽप्येवमुन्नेयौ सिकतावति ॥ ४४ ॥
 कृष्णभूमः पाण्डुभूमः कृष्णा पाण्डुश्च यत्र मृतः ।
 अनूपः साम्बुरन्यस्तु जाङ्गलः शून्य उच्चटः ॥ ४५ ॥
 स्फुटिते सारणारट्टौ राजन्वास्तु सुराजनि ।
 अन्यत्र राजवान् वृष्टिजीवनो देवमातृकः ॥ ४६ ॥
 स्यान्नदीमातृको देशो नद्यम्बूत्पादसस्यकः ।
 पथः पदाङ्गयोग्यः स्यात् त्रिष्वेते पङ्किलादयः ॥ ४७ ॥

श्मशानं स्यात् पितृवनं स्त्रीवासः क्रिमिपर्वतः ।
 शतमूर्धा वामद्वरो नाकुर्वल्मीकमस्त्रियाम् ॥ ४८ ॥
 मार्गोऽध्वा पदवी पन्थाः पथा चैकपदी सृतिः ।
 सुपन्था अतिपन्थाश्च सत्पथश्च शुभे पथि ॥ ४९ ॥
 विपथः कापथो व्यध्वो दुरध्वश्च कदध्वनिः ।
 अपन्थास्त्वपथं दूरशून्ये प्रान्तरमध्वनिः ॥ ५० ॥
 वृतिमार्गस्त्वर्धपदः प्राग्वंशः पदिकोऽपि च ।
 संक्रमस्तित्तिरिस्तुत्यौ शृङ्गाटं तु चतुष्पथः ॥ ५१ ॥
 जङ्घापदं चतुष्पादस्त्रिपादस्तु गृहान्तरम् ।
 अङ्गुलोऽस्त्री यवा अष्टौ समस्तु चतुरङ्गुलः ॥ ५२ ॥
 धनुर्महश्च दिष्टिश्च स्यातामष्टाङ्गुलावुभौ ।
 दशाङ्गुलः क्रकचिको वितस्तिर्द्वादशाङ्गुलाः ॥ ५३ ॥
 किष्कुः स्यादवटो हस्तश्चतुर्विंशतिरङ्गुलाः ।
 बद्धेन मुष्टिना हस्तः स्याद्विंशतिर्मुष्टिको वसुः ॥ ५४ ॥
 अरविर्निष्कनिष्ठोऽसौ स प्रजापतिहस्तकः ।
 कुत्सश्चाप्यथवाकुत्सः सधनुर्मुष्टिरेव सः ॥ ५५ ॥
 अथ वर्धकिहस्तः स्याद् द्वाचत्वारिंशदङ्गुलः ।
 तस्मिन् विकिष्कुः क्रकचः किष्कुःक्रकचिकोऽपि च ॥ ५६ ॥
 हस्तद्वयं तु सत्किष्कुर्हस्तत्रयमलीमकम् ।
 चतुर्हस्तो धनुर्दण्डो धनुर्धन्वन्तरं युगम् ॥ ५७ ॥
 ऐश्वरं नालिका चाथ पञ्चहस्तोऽर्धहस्तकः ।
 अष्टहस्ता तु रज्जुः स्यान्नवहस्ता तु नालिका ॥ ५८ ॥
 दशहस्तः पितृनत्वो दीर्घदण्डो निदेशकः ।
 स प्राणेशानिकश्चाथ परिवेषो द्विरज्जुकः ॥ ५९ ॥
 निवर्तनं तु तिसृभौ रज्जुभिर्बलिशं च तत् ।
 नल्विकः किष्कुभिः षष्ट्या नल्वः किष्कुचतुश्शतम् ॥ ६० ॥
 दशधन्वन्तरं स्तोमो दशस्तोमस्तु वंशिकः ।
 दशवंशिक आनाहो दशानाहो नलान्तरः ॥ ६१ ॥
 धन्वन्तरसहस्रं तु क्रोशो गव्या तु तद् द्वयम् ।
 स्त्री गव्यूतिश्च गव्यूतं गोरुतं गोमतं च तत् ॥ ६२ ॥
 गव्यूतानि तु चत्वारि योजना कोसलादिषु ।
 गव्यूतिद्वयमेव स्याद्योजनं मगधादिषु ॥ ६३ ॥
 इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां
 वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे देशाध्यायः ॥ १ ॥

शैलाध्यायः ॥ २ ॥

शैलोऽगः पर्वतः दमाभृत् सानुमान् दुर्गमोगिरिः ।
 अर्धार्थगोत्रकुट्टीरकुट्टारा भूधरोऽचलः ॥ १ ॥
 बन्धाकिः फालकः कुध्रः प्रपात्यद्रिः शिलोच्चयः ।
 सुवेलः स्याच्चित्रकूटस्त्रिकूटस्त्रिककुच्च सः ॥ २ ॥
 लोकालोकश्चक्रवालो लोकान्ताद्रिः पराचलः ।
 मलये त्रिकलापाटो विन्ध्यस्तु जलवालकः ॥ ३ ॥
 हिरण्यनाभो मैनाकः सुदारुः पारियात्रकः ।
 मायवांस्तु प्रस्रवणो हिमाचलस्तु हिमाचलः ॥ ४ ॥
 रजताद्रिस्तु कैलासो दराद्रिर्महितश्च सः ।
 वेङ्कटो वृषभः सिंहः केशरः केशवप्रियः ॥ ५ ॥
 उदयस्तूदयाद्रिः स्यादस्तस्त्वस्तमयाचलः ।
 दरी गुहा कन्दरोऽक्ली प्रपातस्तु तटो भृगुः ॥ ६ ॥
 उत्सः प्रस्रवणं तोयप्रवाहे भरनिर्भरौ ।
 स्तुर्वप्रोऽस्त्री सानुरस्त्री पादाः पर्यन्तपर्वताः ॥ ७ ॥
 कूटोऽस्त्री शिखरं शृङ्गं नितम्बः कटकोऽस्त्रियाम् ।
 पाषाण उपलोऽश्मा च प्रस्तरश्च शिला दृप्तः ॥ ८ ॥
 गण्डशैलास्तु पाषाणाः स्थूलाः प्रगलिता गिरेः ।
 उपत्यका त्वधोभूमिगिरेरुर्ध्वमधित्यका ॥ ९ ॥
 कुडङ्गोऽस्त्री निकुञ्जोऽस्त्री कुञ्जो वृक्षवृत्तान्तरे ।
 आकरः स्त्री खनिर्गञ्जा रुमा तु लवणाकरः ॥ १० ॥
 गैरिकं पीतधातुः स्यात् कुनटी तु मनःशिला ।
 रोचनी रज्जनी हृद्या रसनेत्री महासना ॥ ११ ॥
 करवीरा कला विद्युन्नागमाता विगन्धिका ।
 शिला मनोऽभिधा काला नागजिह्वा च ताः समाः ॥ १२ ॥
 शुक्रधातौ पाक्शुक्रा कठिनी कक्खटी खटी ।
 हरितालं तु खर्जूरं पिञ्जरं नटभूषणम् ॥ १३ ॥
 तालमालं वंशपत्रं पीतनं रोमहृद्वरम् ।
 सौगन्धिकस्तु पामारिः पीतो गन्धाश्मगन्धकौ ॥ १४ ॥
 बोलो गोलः शशः पिण्डः प्राणो गन्धरसो रसः ।

अभ्रकं व्योममेघाख्यं चक्रसंज्ञं तु माक्षिकम् ॥ १५ ॥
 शिलाजतु तु गौरेयमर्थ्यमश्मजमद्रिजम् ।
 सौराष्ट्री पार्वती काक्षी कालिका पर्पटी सती ॥ १६ ॥
 आढकी तुवरी काली भूनामा च मृदाह्वया ।
 सुराष्ट्रजाऽप्यथो गोला नैपाली कुनटीति च ॥ १७ ॥
 रुक्मं कार्तस्वरं स्वर्णं महारजतमोजसम् ।
 चामीकरं जातुरूपं तपनीयं शिलोद्भवम् ॥ १८ ॥
 लोभनं कनकं शुक्रं सुवर्णं चन्द्रकाञ्चने ।
 दाक्षायणं श्रीमकुटं गारुडं तारजीवनम् ॥ १९ ॥
 अग्निबीजं रत्नवरं गैरिकं हेम कर्बुरम् ।
 जाम्बूनदं शातकुम्भं हाटकं भूरिराख्यौ ॥ २० ॥
 वैष्णवं कर्णिकाराभं वेणूतटजकाञ्चनम् ।
 सुवर्णद्वीपजाः स्वर्णशुक्तिकाभ्रकसन्निभाः ॥ २१ ॥
 रसविद्धं तु देवार्हं पवित्रं वज्रधारणम् ।
 अलङ्कारसुवर्णं तु शृङ्गीकनकमाशु च ॥ २२ ॥
 रूप्यहेम्नी तु संश्लिष्टे घनगोलकमस्त्रियाम् ।
 रजतं त्रापुषं रूप्यं चन्द्रभीरु यवीयसम् ॥ २३ ॥
 सौधं सुभीरुकं शुभ्रं खर्जूरं वङ्गजीवनम् ।
 ताम्रं शुल्बं मर्कटास्यं रक्तं व्यष्टं कनीयसम् ॥ २४ ॥
 म्लेच्छं वरिष्ठं म्लेच्छास्यं श्रेष्ठं काम्यमुदुम्बरम् ।
 रिरि तु रीतिरुत्साहा पातलोहं सुलोहकम् ॥ २५ ॥
 लोह्यमप्यारकूटोऽस्त्री पित्तलं त्वारमस्त्रियाम् ।
 राजरीत्यां ब्रह्मरीतिः स्वर्णरीतिर्महेश्वरी ॥ २६ ॥
 काञ्चनी कपिला राज्ञी ब्राह्मणी कपिलोहकम् ।
 मीलिकायां तु सरटी निष्ठुरं दारुकण्टकम् ॥ २७ ॥
 गुरुव्येष्टं सिंहमलं पञ्चलोहान्यलोहके ।
 कांस्यं तु कृत्रिमं नाट्यं प्रभासमसुराह्वयम् ॥ २८ ॥
 घण्टास्वनं भूरिलोहं रवणं लोहजं मलम् ।
 सौराष्ट्रं चाथ सीसोऽस्त्री योगेष्टं भुजगाह्वयम् ॥ २९ ॥
 यवनेष्टं समोलुकं हेमघ्नं भूतलोद्भवम् ।
 त्रपु नागं चीनपट्टं रङ्गमप्यथ पिच्छटम् ॥ ३० ॥
 रङ्गं वङ्गं त्रपु क्षोभ्यं मृदङ्गं नागजीवनम् ।
 परासं सिंहलं व्येष्टं वक्राख्यं मुखभूषणम् ॥ ३१ ॥

कस्तीरं शोभनं नागमरिजं हेमजं शठम् ।
 गुरुपत्रं तमरकं घनं सलवणं रजः ॥ ३२ ॥
 अयः कृष्णायसं चीनं शस्त्राख्यं विषमायुधम् ।
 धीवरं धीमकं लोहं लौहकालद्वानि च ॥ ३३ ॥
 स्त्री कुटिर्ना पारशवो गिरिसारोऽश्मसारकः ।
 अथ कालायसं तीक्ष्णं सुलोहं रुक्ममासुरम् ॥ ३४ ॥
 वैकृन्तः स्याद् रसवरो रसज्ञो व्योमधारणः ।
 रसकम्त्वयसः सारो विकारो लोहजः कुशी ॥ ३५ ॥
 धूर्तमण्डूरसिंहाणविष्टाख्यानि त्वयोमले ।
 लोहं तु तैजसं सर्वं वसु रत्नं मणिनं षण् ॥ ३६ ॥
 स्फटिकोऽर्को रविग्रावा सूर्यकान्तोऽनलोपलः ।
 चन्द्रकान्तश्चन्द्रमणिः सुतामोऽथ त्वयोमणिः ॥ ३७ ॥
 अयस्कान्तस्तद्विशेषाश्चम्बकभ्रामकादयः ।
 गारुत्मतं मरकतमश्मगभं हरिन्माणः ॥ ३८ ॥
 शोणरत्नं लोहितकं पद्मरागोऽरुणोपलः ।
 विद्रुमो ना प्रवालोऽस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकः पुमान् ॥ ३९ ॥
 इन्द्रनीलं महानीलं वैद्युर्यं बालवायजम् ।
 कुरुविन्दास्तु कुलमापा रत्नभेदास्तु मौक्तिकम् ॥ ४० ॥
 माणिक्यं पौष्पकं शङ्खः पुलको विमलादयः ।
 रसाञ्जनं तादर्यशैलं शैलेयं रसगर्भकम् ॥ ४१ ॥
 स्त्रोतोऽञ्जनं तु सौवीरं कपोताञ्जनयामुने ।
 तुल्याञ्जनं शिखिग्रीवं वितुन्नकमयूरके ॥ ४२ ॥
 रीतिपुष्पं पुष्पकेतुः पौष्पकं कुसुमाञ्जनम् ।
 तुत्थं तु दार्विका काथसम्भवं कर्परीति च ॥ ४३ ॥
 कुलत्थिका तु चक्षुष्या कुम्भकारी कुकालिका ।
 रसस्तु पारतः सूतो हिङ्गुलो दारदो रसः ॥ ४४ ॥
 हिङ्गुलं हंसपादं च कुरुविन्दं च के चन ॥ ४५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां

वैजयन्त्यां भूमिकाण्डे शैलाध्यायः ॥ २ ॥

वनाध्यायः ॥ ३ ॥

अटवी काटिकाऽरण्यं विपिनं काननं वनम् ।
 कद्वयकं कुन्दिलं वार्क्षं वनी गहनमित्यपि ॥ १ ॥
 महाटवी त्वरण्यानी प्रस्तारस्तु तृणाटवी ।
 कृत्रिमं वनमारामोऽपवनोपवने अपि ॥ २ ॥
 तदेव राज्ञ उद्यानमाक्रीडश्चाथ तस्य तत् ।
 सान्तःपुरस्य प्रमदावनं गेहस्य लिङ्कुटः ॥ ३ ॥
 पुष्पवाटी त्वमात्यादेख्यी वाटी फलाय चेत् ।
 वृक्षो द्रुमो भूरुहो द्रुविटपी विप्ररोऽङ्घ्रिपः ॥ ४ ॥
 अलोकहो लघो भूरुट् तरुः शाखी कुटः कुजः ।
 वसुः करालिकोऽगच्छो जर्णो रूक्षः पुलाक्यपि ॥ ५ ॥
 बानस्पत्यः पुष्पफली फली त्वेव वनस्पतिः ।
 ओषधिः फलपाकान्ता ह्रस्वशाखाशिफः क्षुपः ॥ ६ ॥
 अप्रकाण्डे स्तम्बगुल्मावुलपस्तु प्रतानिनी ।
 गुमिन्यपि च वल्ली तु व्रततिव्रतती लता ॥ ७ ॥
 बन्ध्यो वृक्षोऽवकेशी स्यादबन्ध्यस्तु फलेग्रहिः ।
 पुष्पितः स्यात् कुसुमितः फलितः फलिनः फली ॥ ८ ॥
 फुल्ले प्रफुल्लसम्फुल्लव्याकोचविकचस्फुटाः ।
 उत्फुल्लोन्मिषितोन्मिद्रा उद्बुद्धोन्मिलितस्मिताः ॥ ९ ॥
 फलमामं शलाढुः स्याद् वानं शुष्कतरं फलम् ।
 त्रिपु बन्ध्यादयोऽथ स्यादङ्कुरोऽङ्कुरमस्त्रियौ ॥ १० ॥
 प्ररोहश्चाथ वंशः स्याद् योऽङ्कुरः पर्वसूत्थितः ।
 परुः पर्व पुमान् ग्रन्थिर्निर्यासः खपुरो लशः ॥ ११ ॥
 शिफाजटाऽवरोहस्तु सा शाखाजा वटादिषु ।
 मूलं बुध्नोऽङ्घ्रिनामास्मादास्कन्धात् स्यात्प्रकाण्डकम् ॥ १२ ॥
 स दारुमात्रः स्थाण्वस्त्री दारु काण्डमथ त्रयी ।
 छल्ली त्वक् स्त्री त्वचा न क्री वल्कलं चोलकोऽस्त्रियौ ॥ १३ ॥
 चोचं वल्कं च सारस्तु मज्जा सारः किनाटकम् ।
 निष्कुटः कोटरो न स्त्री विदलं दारु पाटितम् ॥ १४ ॥
 स्कन्धः प्रघाणोऽथ शिखा शाखाऽथ शिखरं शिरः ।
 स्कन्धशाखा तु शाला स्यात् प्रवालः पल्लवाङ्कुरः ॥ १५ ॥

विस्तारो विटपः स्तम्ब उच्छ्रायस्तु समुन्नतिः ।
 छदस्तु छदनं पत्रं पलाशं पतनं दलम् ॥ १६ ॥
 पर्णं बर्हं पतत्रं च त्रयी शुङ्गास्य कोशिका ।
 पल्लवोऽस्त्री किसलयं किसलोऽपि नवे दले ॥ १७ ॥
 पत्रमध्यशिरा माढिः पुष्पोऽस्त्री कुसुमं सुमम् ।
 मणीचकं प्रसूनं च सूनं सुमनसः स्त्रियः ॥ १८ ॥
 मकरन्दो मरन्दोऽस्य रसे जालं तु जालकम् ।
 कलिका कोरकश्चाथ कुट्मलो मुकुलोऽस्त्रियौ ॥ १९ ॥
 गुच्छो गुलुब्धः स्तम्बको मन्ड्यां मञ्जरिवज्जरी ।
 प्रसवः पिप्पलं सस्यं फलं वृन्तं तु बन्धनम् ॥ २० ॥
 पण्डास्त्वाम्रादयः शब्दा आम्रादिफलपुष्पयोः ।
 हरीतक्यादिकं स्त्री स्यादश्वत्थादिफले पुनः ॥ २१ ॥
 आश्वत्थमैङ्गुदं प्लाक्षं नैयग्रोधं च बार्हतम् ।
 वैणवं शैप्रवं चाथ जम्बूः स्त्री जम्बु जाम्बवम् ॥ २२ ॥
 जात्यादयः स्वलिङ्गाः स्युः पुष्पार्थे त्रीहयः फले ।
 विदार्याद्यास्तु मूलेऽपि पाटला कुसुमे न ना ॥ २३ ॥
 सप्तम्यन्तपदारम्भाः पर्याया इह कुत्रचित् ।
 सप्तम्यन्तं च पुंलिङ्गं विज्ञेयं संशये सति ॥ २४ ॥
 आम्ने कामाङ्गमाकन्दौ चूतो वेलोऽङ्गनाप्रियः ।
 करको बलयश्चाथ श्रेष्ठेऽत्र सहकारकः ॥ २५ ॥
 अथ श्यामलके लाला लवली लावली फला ।
 केसरे वकुलो मद्यलालसः सिंहकेसरः ॥ २६ ॥
 द्राक्षाफलो गुडश्चाथ न्यग्रोधो बहुपाट्टः ।
 श्रीवृत्ते पिप्पलोऽश्वत्थः प्लक्षश्चलदलोऽङ्गुलः ॥ २७ ॥
 उदुम्बरे प्राणिफलो मशकी हेमदुग्धकः ।
 प्लक्षस्तु पर्कटिजटिकलापिगिरिलक्ष्मणाः ॥ २८ ॥
 पलाशे किशुकः पर्णो वातपोथस्त्रिपर्णकः ।
 आस्फोटो ब्रह्मवृक्षश्च इस्तिकर्णदले कृती ॥ २९ ॥
 बिल्वे माखूरमङ्गल्यौ श्रीफलो गोहरीतकी ।
 परिव्याघ्रे बालभीरुभीरुबालोऽम्बुवेतसः ॥ ३० ॥
 शीतेऽभ्रपुष्पो वानीरो वञ्जुलो वेतसो रथः ।
 विदुले प्रिय आम्राते द्वौ पीतनकपीतनौ ॥ ३१ ॥

कपित्थे स्युर्दधिफलो दधित्थग्राहिमन्मथाः ।
 हृद्यो दन्तशठः पुष्पफलोऽरिष्टे तु फेनिलः ॥ ३२ ॥
 मातुलुङ्गे तु रुचको वराम्लः केसरी शठः ।
 बीजपूरे मातुलुङ्गो लुङ्गः सुफलपूरकौ ॥ ३३ ॥
 देविकायां महाशल्का दूष्याङ्गी मधुकुण्ठी ।
 अथात्यम्ला मातुलुङ्गी पूतिपुष्पी घृकाम्लिका ॥ ३४ ॥
 छागे तु करुणो लक्षो मल्लिकाकुसुमप्रियः ।
 जम्बीरे जम्भको दन्तशठो जम्भीरजम्भलौ ॥ ३५ ॥
 नागरङ्गे तु नारङ्गो नार्यङ्गस्तक्रवासनः ।
 त्वग्गन्ध एलको योगी मुचुलिन्दे तु निम्बकः ॥ ३६ ॥
 न्युब्जे कर्मफलो भव्यः कर्मरङ्गः शठेश्वरी ।
 महीपतिर्दन्तशठः कर्ता नेता च कर्म च ॥ ३७ ॥
 विकङ्कते ग्रन्थिलः स्याद्द्वयाघ्रपात्र मधुच्छदः ।
 सर्जेश्वकर्णः साले तु कार्प्यकः सस्यसंवरः ॥ ३८ ॥
 पीतसाले गौरसर्जप्रियकासनपीवराः ।
 रक्तपुष्पोऽप्यथो सिन्धुसर्ज बाणः खरोऽर्जुनः ॥ ३९ ॥
 रोहिते रौहिषो रोही रक्तो रौहितकोऽपि च ।
 स्त्रीप्रिये वज्रुलोऽशोकः कङ्कलिः कर्णपूरकः ॥ ४० ॥
 हेमपुष्पोऽप्यथाङ्गोले निचोलोऽङ्गोदशोधनौ ।
 रसाले वरणः सेतुस्तिकताकोऽश्मरीरिपुः ॥ ४१ ॥
 दोषग्रहे तु कतको द्रावणः स्ववणः सरः ।
 उल्लेखनीयो लक्ष्मीवांस्तेरस्तोयप्रसादनः ॥ ४२ ॥
 राजादने फलाध्यक्षः प्रियकश्च मधुस्रवः ।
 मधुपुष्पे मधुष्ठीलो वानप्रस्थो मधूकवत् ॥ ४३ ॥
 गुडपुष्पोऽप्यद्रिजेऽस्मिन् गौरशाको मधूलकः ।
 पारिभद्रस्य भेदे च मन्दारः पारिजातकः ॥ ४४ ॥
 भूर्जपत्रे भुजो भूर्जो मृदुत्वक् चर्मचर्मिकौ ।
 पीलौ गुडफलः स्रंसी श्यामश्चाथान्न शैलजे ॥ ४५ ॥
 अक्षोडः कर्परालश्च नेमीये त्वतिमुक्तकः ।
 चित्रकृत् तिमिशो नेमी वज्रुलोऽथायुगच्छदे ॥ ४६ ॥
 सप्तपर्णी विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।
 कोविदारे चमरिको रक्तपुष्पो युगच्छदः ॥ ४७ ॥
 काञ्चनारोऽप्यार्ग्वधे तु व्याघातश्चतुरङ्गुलः ।
 आरग्वध आरेवतः शम्याकः प्रग्रहोऽर्ग्वधः ॥ ४८ ॥

कृतमालः सुपर्णश्च मदने तु फणी रसः ।
 पिण्डीतके मरुवक इक्ष्वाकुर्गालवामनौ ॥ ४९ ॥
 विचुलः पिचुलो रात्रः कैडर्यो विषपुष्पकः ।
 काकर्दश्छदनश्चीनो गरलः कण्टकीति च ॥ ५० ॥
 कालस्कन्धे तिन्दुकोऽक्ली स्फूर्जकः शितिसारकः ।
 काकेन्दौ कालपीलुः स्यात् कुलकः काकतिन्दुकः ॥ ५१ ॥
 सिते लोध्रे महालोध्रः शवरश्चाथ लोहिते ।
 तिरीटो मार्जनश्चिल्वः कृष्णेऽस्मिन् लोध्रगालवौ ॥ ५२ ॥
 गुग्गुलौ कालनिर्यासो देवधूपो महेश्वरः ।
 श्रीमान् स्निग्धः सर्वसहः श्लेष्मी तिक्तः कटुर्लघुः ॥ ५३ ॥
 कामः पुरो जटायुश्च कुम्भोल्बलकं वरम् ।
 रज्जुदाले नीचुदारः कच्छुदारो गृहद्रुमः ॥ ५४ ॥
 गूढवृक्षः श्लेष्मफलो विषघ्नो द्विजकुत्सितः ।
 उद्दालो बहुवारो ना सेलुः श्लेष्मातकी न षण् ॥ ५५ ॥
 शोभाञ्जने तीक्ष्णगन्धः शिग्रुः काक्षीवमोचकौ ।
 उष्णो मुरुङ्गी रक्तेऽस्मिन् मधुशिग्रुः सुभञ्जनः ॥ ५६ ॥
 गृञ्जनः स्वादुःसन्धा च प्रियालुस्तु धनुः पटः ।
 काष्मर्ये गोपभद्रा स्यात् काष्मरी कृष्णवृन्तिका ॥ ५७ ॥
 श्रीपर्णी कुमुदा गृष्टिर्गम्भारी भद्रपर्णिका ।
 कैडर्यं कटफलः कुम्भी श्रीपर्णी कुमुदेति च ॥ ५८ ॥
 सुपार्श्वे स्यात् कन्दरालो गर्दभाण्डः कपीतनः ।
 ताम्रपाकी फलेपाकी प्लक्षको गन्धमुण्डकः ॥ ५९ ॥
 कदम्बे पुलकी श्रीमान् प्रावृषेण्यो हलीमकः ।
 महाकदम्बके नीपो धूर्तो धूर्तारदीपनौ ॥ ६० ॥
 वासन्ते स्यात् कुरुवकस्तिलकः कुवको मधुः ।
 शुक्लपुष्पः कुरुवको मदनो धूर्तनागरौ ॥ ६१ ॥
 करञ्जे स्यान्नक्तमालः प्रकीर्यश्चरिबिल्वकः ।
 कालिङ्गे पूतिकरजः पूतिके कलिकारकः ॥ ६२ ॥
 बालपत्रे तिक्तसारः खदिरो दन्तधावनः ।
 सिते तु तस्मिन् कदरः शल्यकश्च मरुन्धवः ॥ ६३ ॥
 मरुद्भवे विट्खदिरोऽप्यरिमोऽप्यरिमेदकः ।
 कण्टकी चाप्यथैरण्डे हस्तपर्णोऽप्यलम्बकः ॥ ६४ ॥

रुवुः पञ्चाङ्गुलश्चक्षुरामण्डस्तरुणोऽम्बुकः ।
 गन्धर्वहस्तो रुवुको वातघ्नो व्याघ्रपुच्छकः ॥ ६५ ॥
 प्रियके तु प्रियङ्गुवाख्या कारम्भा फलिनी फली ।
 विष्वक्सेना बला वृन्ता गुन्दा गोबन्दिनी लता ॥ ६६ ॥
 भावज्ञा सर्षपी स्याख्या वृत्ताङ्गी सुयमावनी ।
 कन्या चापि कदम्बस्तु निचुलोऽम्बुज इज्जलः ॥ ६७ ॥
 स्योनाके शोणकटवाङ्गौ दीर्घवृन्तः कुटन्नटः ।
 मण्डूकपर्णः पत्रोर्णो भल्लुकः शुकनाशकः ॥ ६८ ॥
 भूतपुष्पो नटो ढङ्क ऋक्षण्डुण्डुक आरलुः ।
 तिलके फलकः श्रीमान् सुगन्धो मुखमण्डनः ॥ ६९ ॥
 कर्णपूरोऽल्पपुष्पश्च पुन्नागे सुरवल्लभः ।
 किदिरे दीनकम्बोजौ तद्भेदे सुरपर्णिका ॥ ७० ॥
 पारिभद्रे दुकिलिमं देवदारु सुराह्वयम् ।
 पूतिकाष्ठं भद्रदारु पीतदारु च दारु च ॥ ७१ ॥
 वृक्षोत्पले कर्णिकारः परिव्याधोऽथ भण्डिले ।
 कपीतनः शिरीषश्च करके दाडिमी त्रयी ॥ ७२ ॥
 कुटजे कुटचो वत्सः शक्राख्यो गिरिमल्लिका ।
 एतस्यैवास्त्रियाविन्द्रयवभद्रयवौ फले ॥ ७३ ॥
 पनसे कण्टकिफलः पयोऽण्डो जघनेफलः ।
 कर्कशी मधुबीजश्च सरले पूतिकाष्ठकम् ॥ ७४ ॥
 निम्बे पार्वतकैड्यद्वेषिच्छर्दनमाधिकाः ।
 रोमशः पिचुमन्दश्च लकुचे लिङ्कुचो डहुः ॥ ७५ ॥
 पिचुले भ्रातुकः शाके पृथुच्छदहलीमकौ ।
 उन्मत्ते धूर्तधुत्तूरधुस्तूरकितवाः शठः ॥ ७६ ॥
 धूर्धूरः काञ्चनाहोऽथ त्रिपुरे मदमत्तकः ।
 प्रेतालये तु तिक्तीकः शाखोटो गन्धमालहा ॥ ७७ ॥
 कूसरे भीरुमार्जारकिशुका इङ्गुदी न षण् ।
 पिण्डारके तु पिण्डीकः कृष्णे त्वस्मिन् वलाहकः ॥ ७८ ॥
 पुत्रजीवे त्वक्षफलो रुद्रादे तु महामुनिः ।
 एकास्ये त्वत्र माभीदो द्विमुखे तु वरार्गलः ॥ ७९ ॥
 चतुर्मुखे ब्रह्मसंज्ञः पञ्चवक्त्रे हराह्वयः ।
 षण्मुखे तु गुहाख्योऽथ किम्पाके काकमर्दकः ॥ ८० ॥
 तिन्तुलीकेऽम्लिका चिञ्चा शुक्तिनारी कपिप्रिया ।
 तिन्त्रिणी चाप्यथो हेमपुष्पे चाम्पेयचम्पकौ ॥ ८१ ॥

हरणः शीतलः कान्तः कमनीयः पचम्पचः ।
 हीने त्वङ्गिः कुम्भफलश्चाम्पेयो नागकेसरः ॥ ८२ ॥
 करमर्दे वशश्चोलः कृष्णपाकफलैः पदैः ।
 व्यस्तैः समस्तैर्युग्मैश्च पुंसि पञ्चदशाभिधाः ॥ ८३ ॥
 शुषेणो विप्रकोऽप्यल्पफलेऽस्मिन् करमर्दिका ।
 वन्दाके वृक्षको वन्दा जीवन्त्यपदरोहिणी ॥ ८४ ॥
 वृक्षादनी वृक्षरुहा सेव्यास्मिन् क्षीरवृक्षजे ।
 तनुस्तुष्टो जयः कान्तः कुणिः कातुलको द्रुमः ॥ ८५ ॥
 अग्निमन्थे हविर्मन्थोऽप्यरणिः पावको वशा ।
 गणिकार्यप्यथो देवताडे वेणी खरागरी ॥ ८६ ॥
 कालस्कन्धे तमालोऽस्त्री तापिच्छे काकतुण्डिका ।
 बदर्या कुवली कोलिः कूली क्रूरा तिरीटिका ॥ ८७ ॥
 लताकोलौ तु खलकी गिरिकोलौ तु सौरसा ।
 हस्तिकोलौ महाघोष्ठा गोपघोष्ठा महाफला ॥ ८८ ॥
 जलकोलौ तु सङ्गाली नरकोलौ तु कर्कशी ।
 स्तृगालकोलौ हिंसाऽथ शमी सक्तुफला जया ॥ ८९ ॥
 काकस्थाल्यां कुबेराक्षी कृष्णवृन्ता फलेरुहा ।
 आमोघा पाटलिर्न क्ली पूरण्यां शालमलिर्न षण् ॥ ९० ॥
 काष्ठीला तूलिनी तूलफलाऽथ कूटशाल्मलौ ।
 रोचनः शिशपायां तु तीक्ष्णधूमावसादनी ॥ ९१ ॥
 कपिला पिच्छिला भस्मगर्भा मण्डलपत्रिका ।
 जम्बवां त्रिसारा विरजा महाजम्बवां महाफला ॥ ९२ ॥
 सुरसाथो राजजम्बवां सुफलः सुरभिच्छदः ।
 काकजम्बवां तु मेघाभः शिवेष्टः शीतपल्लवः ॥ ९३ ॥
 जम्बूटनीलजम्बूटौ शफर्या श्लक्ष्णपत्रकः ।
 शिलीन्द्राश्मन्तकान्लोटा धवे गौरधुरन्धरौ ॥ ९४ ॥
 भस्मातक्यां त्रिलिङ्गायामग्निमुख्यप्यरुक्करः ।
 कम्पिले रोचनी गुण्डा रक्ताङ्गश्चन्द्रकर्कशौ ॥ ९५ ॥
 सल्लक्यां सुरभिर्हस्तिप्रिया हस्त्यशना ध्रुवा ।
 वैजयन्त्यां तु तर्कारी नादेयी च जयन्त्यपि ॥ ९६ ॥
 घातक्यामनलज्वाला सुभिक्षा धातुपुष्पिका ।
 स्तुष्पां समन्तदुग्धा स्तुग्वा नन्दासिपत्रिका ॥ ९७ ॥

सिद्धगुण्डः सिन्धुरण्यस्यां विपत्रायां त्रिकण्टकः ।
 वज्री गण्डर्यथो घण्टारवायां शणपुष्पिका ॥ ६८ ॥
 तुण्डिकेया रवा शीरा केसरा बदराफला ।
 कार्पास्यकल्यत्र वन्यायां भारद्वाज्यपि कुष्ठनुत् ॥ ६९ ॥
 विषह्न्यां भञ्जिका भाञ्जी विष्टा ब्राह्मणयष्टिका ।
 ब्रह्मदण्डी च पद्मा च सारपण्यां स्थिरा ध्रुवा ॥ १०० ॥
 कोकिलाक्षस्तु काण्डेश्वरिभुरः क्षुरकः क्षुरः ।
 वासके त्वाटरूपः स्यात् सिंहास्यो वाजिदन्तकः ॥ १०१ ॥
 वाशा सिंही वैद्यमाता वार्ताक्यां दुग्धघर्षिणी ।
 वातिङ्गनस्तु भण्डाकी वार्ताकुर्हिङ्गुलुः स्त्रियाम् ॥ १०२ ॥
 गोष्ठवातिङ्गने त्वेला परुका जलजम्बुका ।
 हस्तिवातिङ्गने त्विभ्या विशाला ददुनाशिनी ॥ १०३ ॥
 बृहत्यां प्रसहा काली वार्ताकी हिङ्गुदी कुली ।
 लतावृहत्यां सुस्निग्धा धन्या प्रसहनी लता ॥ १०४ ॥
 निदिग्धिकायां सन्धानी महासन्धा गिरिप्रिया ।
 कण्टकाल्यां परिकूरा कुल्या कुल्यस्पृशी वरा ॥ १०५ ॥
 दुःस्पर्शा राष्ट्रिका सिंही कण्टकाली निदिग्धिका ।
 दण्डोत्पले सहा देवा तलपोटे प्रमेहनुत् ॥ १०६ ॥
 हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा ।
 मार्कवे भृङ्गराजः स्यात् पर्पणस्तु श्वपामनः ॥ १०७ ॥
 कालमेघ्यां कृष्णफला वागूची वसुवञ्जिका ।
 सोमवञ्जी पूतिफली सोमराजिरवत्गुजः ॥ १०८ ॥
 पारित्राण्यां त्रायमाणा त्रायन्ती बलभद्रिका ।
 रेवत्यां रामदूती स्याद्धारुणी नागदन्त्यपि ॥ १०९ ॥
 श्रीफलयां क्लीतकी नीली नीलकेशी महारसा ।
 ग्रामीणा रञ्जनी तुत्था कारवाही च नीलिनी ॥ ११० ॥
 फल्गुः काकोदुम्बरिका बलयूर्जघनेफला ।
 दास्यां षडश्रा शार्ङ्गष्टा काकजङ्घा विलोमिका ॥ १११ ॥
 काकनासा तु काकाङ्गी जीवनीया शिरोरुहा ।
 तृङ्घ्न्यां वयस्या काकोली काकमाची तु वायसी ॥ ११२ ॥
 प्रत्यक्छ्रेण्यां सुतश्रेणी द्रवन्ती शम्बरी वृषा ।
 चित्रोपचित्रा न्यग्रोधी रण्डा मूषिकपर्ण्यपि ॥ ११३ ॥
 देव्यां मूर्वा धनुश्रेणी गोकर्णी पीलुपर्णिका ।
 मधूलिका तिक्तवल्का पीलुनी तेजनी स्रवा ॥ ११४ ॥

प्रत्यक्पर्णी तु शिखरी किणिही खरमञ्जरी ।
 अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ ॥ ११५ ॥
 अजशृङ्गायां विषाणी स्याद् गोजिह्वादाविके समे ।
 शङ्खिनी चोरपुष्पी स्यात् केशिनी चाप्यथो लघु ॥ ११६ ॥
 वर्षा लङ्कायिका स्पृका मरुमाला लता मरुत् ।
 कच्छुरके द्राविडकः काल्यको वेधमुख्यकः ॥ ११७ ॥
 निर्गुण्ड्यामिन्द्रसुरसः सिन्धुवारश्च सिन्दुकः ।
 कुठेरके तु पर्णासो मालोर्जरकठिञ्जरौ ॥ ११८ ॥
 सितेऽस्मिन् मञ्जरी तीक्ष्णस्तीक्ष्णगन्धोऽर्जकोऽत्रः तु ।
 सुगन्धौ श्वेतमुरसा भारती तुलसी शिवा ॥ ११९ ॥
 अल्पपत्रस्तु जम्बीरः फणिर्जकसमीरणौ ।
 अस्मिन् सुगन्धौ सौवासो मञ्जरीकमयूरकौ ॥ १२० ॥
 तीक्ष्णे तीक्ष्णार्जको गौरी भूतघ्नी देवदुन्दुभिः ।
 अल्पमात्रे तु वैकुण्ठो बिल्वगन्धो वचाच्छदः ॥ १२१ ॥
 कालपर्ण्यां तु सुरभिः करालः कालमालकः ।
 मालो ब्रह्मजटायां तु सलज्जं दानवाञ्जनम् ॥ १२२ ॥
 पुण्डरीकं दमनकं कान्तं दान्तं मुनिः पुमान् ।
 विष्णुकान्ता तु सुमुखी गवसी स्यान्महारसा ॥ १२३ ॥
 ऋषणी द्रोणिका छत्रा चक्षुष्या द्रोणपुष्पिका ।
 सूर्यावर्ते पणिकायां मोरटा मूलपुष्पिका ॥ १२४ ॥
 मुण्ड्यां मुण्डितिका मुण्डा श्रमणी श्रमणी बुधा ।
 रोदन्यां कच्छुरानन्ता ताम्रमूला दुरालभा ॥ १२५ ॥
 यासो यवासो दुस्पर्शो धन्वयासः कुनाशकः ।
 वृश्चिकाल्यामुष्ट्रधूम्रपुच्छिका नागवृन्तिका ॥ १२६ ॥
 सर्पदंष्ट्रमरा काली विषघ्नी वृश्चिकच्छदा ।
 वाटपुण्यां बला वाट्या सम्मासा चान्नसंज्ञिका ॥ १२७ ॥
 वाट्यालोऽतिबलायां तु पुष्पवीर्या जनी सहा ।
 अश्वकन्दस्त्वश्वगन्धी तिक्ते तु कटुपर्पटौ ॥ १२८ ॥
 ऋषभी त्वजहाध्यण्डा कण्डूरा प्रावृषायणी ।
 कपिकच्छूः शूकशिम्बरात्मगुप्ता च कच्छुरा ॥ १२९ ॥
 अस्थिमांस्त्वस्थिसङ्घातोऽप्यस्थिसन्नहनोऽपि च ।
 एकाष्टीला पापचेली स्थापनी वनतिक्तिका ॥ १३० ॥

पाठाम्बुषा विद्धकर्णी प्राचीना श्रेयसी रसा ।
 गुह्य्यां कुण्डली धीरा छन्ना छिन्नरुहा धरा ॥ १३१ ॥
 वत्सादनी सोमवल्ली विशल्या चक्रलक्षणा ।
 जीवन्ती खरुहा देवी विषघ्न्यमृतवल्लिका ॥ १३२ ॥
 दीर्घवल्ल्यां वेत्रवन्यौ कुरुवेत्रश्च भूरदः ।
 गवाक्ष्यां किणिही जैत्री प्रत्यक्छेप्यपराजिता ॥ १३३ ॥
 विष्णुकान्ता परास्फोताश्वखुरी शीतलात्र तु ।
 श्वेतायां चारिणी सूर्या गिरिकर्णी गवादिनी ॥ १३४ ॥
 नीलायां तु भहाश्वेता निष्ठयान्ता स्थूलपुष्पिका ।
 जिह्वायां समङ्गा विकला मञ्जिष्ठाञ्जनवल्लिका ॥ १३५ ॥
 पृथिनपर्ण्या पृथक्पर्णी लाङ्गली पदपर्णिका ।
 गुहा कलशिधावन्यौ दीर्घा सा चित्रपर्णिका ॥ १३६ ॥
 सिंहपुष्पी फेरुविन्ना चित्राङ्गी क्रोष्टुमेखला ।
 नागर्षा केशिका त्र्यशना त्रिपुटा त्रिपुटी त्रिवृत् ॥ १३७ ॥
 रेचनी महती आसा माया कुठरुणात्र तु ।
 कृष्णायां रोचनी श्यामा काला चित्रा सुषेण्यपि ॥ १३८ ॥
 गोपा तु शारिवा भद्रा नागजिह्वा सुगन्धिका ।
 ज्योतिष्मत्यां पीतरसा लगणा कटभीकुदी ॥ १३९ ॥
 पारावतपदी पिण्या जीवन्ती स्फुटवल्लिकी ।
 नागवल्ली तु ताम्बूली तथा ताम्बूलवल्लिका ॥ १४० ॥
 क्षुरे तु कण्टकिफलः स्त्रीगोभ्यां कण्टकः परः ।
 गोक्षुरः स्थलशृङ्गाट इक्षुगन्धा पलङ्कषा ॥ १४१ ॥
 श्वदंष्ट्रा भीरुपर्ण्या तु शतमूली शतावरी ।
 इन्दीवरी बहुसुताप्यहेरुः पीवरीति च ॥ १४२ ॥
 सुदर्शनायां चक्राङ्का दध्याली वृषपर्ण्यपि ।
 जीवन्त्यां जीवनी जीवा जीवनीया मधुश्च सा ॥ १४३ ॥
 चर्मपर्ण्या तु शार्ङ्गाष्टा सुताहायामुपोदिका ।
 ब्रह्म्यां सत्यवती ब्राह्मी मत्स्याक्षी सोमवल्ली ॥ १४४ ॥
 मण्डूकपर्ण्या भण्डीरी भाण्डी योजनवल्ल्यपि ।
 शोफघ्न्यां पूरणा पूरी वर्षाभ्वी जीवबोधिनी ॥ १४५ ॥
 पुनर्नवा च रक्तायां तस्यां योग्या कटिल्लिका ।
 श्वेतायां वृश्चिकोऽल्पायां दीर्घपत्री विटाटिका ॥ १४६ ॥
 अस्या जात्यन्तरे स्वल्पे पूरणी हस्तिपूरणी ।
 तुण्डिकेयां रक्तफला बिम्बोष्ठी पीलुपर्ण्यपि ॥ १४७ ॥

लज्जालुस्तु नमस्करी वदर्यञ्जलिकारिका ।
 गण्डकाली खदिर्या तु लज्जालुः स्याच्छमीफला ॥ १४८ ॥
 कलम्व्यां शतपर्वा स्यात् कलम्बूर्वायसी वधा ।
 पटुस्त्रिकायां तु शिवः शान्तः स्वस्तिककुट्टौ ॥ १४९ ॥
 निद्रालुः करुणो मानी वनालुः सुनिषण्णकः ।
 मारिषे जीवशाकः स्यादत्राल्पे तण्डुलीयकः ॥ १५० ॥
 मेघनादो विगण्डीरमथ स्युर्देवमारिषे ।
 विभाजनो रसोत्सृष्टौ काणमारिष ओलकः ॥ १५१ ॥
 लतामारिषतुवरौ वरशाकोलताटिकाः ।
 जलजोऽसौ चञ्चटकः कुकुण्डे कबकोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
 भूवल्लूरमहिच्छत्रं भूस्फोटं भूमिकन्दकम् ।
 छत्राकश्च सिलिन्धश्च मुकुलेऽस्मिन् पलाण्डुकम् ॥ १५३ ॥
 सृगालवास्तुके त्वारुर्वास्तुके क्षारपत्रकः ।
 प्रवालो वीरशाकश्च श्रूषायां कासमर्दकः ॥ १५४ ॥
 हरिणें मल्लकोऽस्त्री सेकिमं बुस्तिका न षण् ।
 नीलकण्ठोऽथ मरुजे शिवं चाणक्यमूलकम् ॥ १५५ ॥
 मत्स्याक्ष्यां शालशालीनौ पत्तरो लोहमारकः ।
 अगस्त्ये मुनिमार्जारात्रैगस्तिर्धङ्गसेनकः ॥ १५६ ॥
 शुक्रनासोऽप्यथो पश्चात् सुन्दरो ग्रीष्मसुन्दरः ।
 कपित्थपत्र्यधःपुष्पी व्रणघ्नी भरसी भरा ॥ १५७ ॥
 प्रपुष्पाडे त्वेडगजो दद्रुघ्नश्चक्रमर्दनः ।
 घोषे कोशफला घण्टा घण्टाला फलिनी फली ॥ १५८ ॥
 जाली पटोली भण्डाली कोशातक्यपि चात्र तु ।
 पृथौ महाकोशातकी मृदङ्गः कृतवेधनः ॥ १५९ ॥
 ज्योत्स्न्यां स्वल्पफला ग्राम्या मृदङ्गः कृतवेधनः ।
 अथ जिह्वा दीर्घफला मागधी मलनोत्तमा ॥ १६० ॥
 बहुजाल्यां कोशफला वन्या तिक्तपटोलिका ।
 कर्कोटक्यां कोशफला राजकोशातकी फला ॥ १६१ ॥
 महाजाली पीतघोषा क्षोडो धामार्गवोऽपि च ।
 हस्तिघोषे तरङ्गोऽल्पे त्वादाली देवदाल्यपि ॥ १६२ ॥
 चाङ्गेयां चुक्रिका दन्तशाठाम्बुष्ठांल्लोप्यपि ।
 सुषण्यां तिक्तच्छदनः कारवेल्लः कटिल्लकः ॥ १६३ ॥

राजवल्ल्युरुधल्ल्यम्बुवल्ली रञ्जनवल्ल्यपि ।
 सुगन्धके तु कर्कोटः किलासन्नः पटुच्छदः ॥ १६४ ॥
 बृहत्कर्कोटके त्वेहो हस्तिकर्कोटको बली ।
 पटोलके तु राजीवान् रवणः कर्कशः पटुः ॥ १६५ ॥
 राजी राजामृतापाण्डुभूतेभ्यश्च फलः परः ।
 तित्के राजपटोलश्च भीरुस्त्विर्वारुकर्कोटः ॥ १६६ ॥
 चोदन्युर्वारुवालकयोऽप्यल्पा सा राजकर्कोटिः ।
 तुम्ब्यां पिण्डफलालाबूः कटुतुम्ब्यां नृपात्मजा ॥ १६७ ॥
 इक्ष्वाकुर्वासनी निम्ना वृन्ततुम्ब्यां तु तुम्बुका ।
 अल्पतुम्ब्यां कुक्कुटाक्षो वृन्ते कर्कोलिचित्रलौ ॥ १६८ ॥
 कालिङ्गोऽल्पेऽत्र चेष्टाणचेष्टालौ क्रोष्टुकर्कोटिः ।
 कालिङ्ग्यां छत्रकः सोमः कर्कारुर्धनवासकः ॥ १६९ ॥
 कूश्माण्डकः पुष्पफलः पीतपुष्पो नृपात्मजः ।
 महाफला शाकफला सुभद्रा शङ्कुलापि च ॥ १७० ॥
 सुखवासे शीर्णयुन्त उग्रगन्धः सुवासकः ।
 त्रिलिङ्गे त्रपुषे तालुः छर्दनी हस्तिपर्णिनी ॥ १७१ ॥
 चिद्रिटे पुनरुर्वारुर्मुगाद्यां गजचिद्रिटा ।
 विटङ्कोऽतिमृगेर्वारुर्विशालैन्द्रीन्द्रवारुणी ॥ १७२ ॥
 अथो गवाक्ष्यां गोडुम्बा चित्रा च कदले पुनः ।
 वृषा वारवुषा रम्भा काण्ठीलान्शुमत्फला ॥ १७३ ॥
 कदली दीर्घपर्णी च रम्भा सा गौरपर्णिका ।
 कृष्णा तु लम्पा कदली माहेन्द्री तु बृहत्फला ॥ १७४ ॥
 सुगन्ध्यल्पफला मोचा साण्ठी काण्ठी कदल्यसौ ।
 बिभीतकखिलिङ्गः स्यात् कलिस्तिष्ठ्यः कलिद्रुमः ॥ १७५ ॥
 बिभीदकः कर्षफलो भूतवासो वहेटकः ।
 वैत्यः पापस्तुषः कल्पः कालेयस्तुमुलाक्षकः ॥ १७६ ॥
 संवर्तश्च षडश्रायां त्रिलिङ्ग्यामलकी शिवा ।
 धात्री कर्षफला तिष्ठ्या सेठ्याध्यण्डा भट्टा दृढा ॥ १७७ ॥
 हरीतक्यां शुक्रसृष्टा नन्दिनी साधिकाभया ।
 अव्यथा चेतकी पथ्या धारणी कालकूणिका ॥ १७८ ॥
 गुञ्जायां कृष्णला ताम्रा शार्ङ्गश रक्तिका वरा ।
 षूडामणिः कपिक्रोडा कालवृन्ती परा नव ॥ १७९ ॥
 काकशब्दात् पीलुपीथ्यौ चिश्चाणन्यदनी नखी ।
 जङ्गा तिका च वक्षा च सा शुङ्गा चेन्मधुसूता ॥ १८० ॥

द्राक्षायां कृष्णिका स्वाद्वी प्रियाला कालमेषिका ।
 हारभूरा दारुफला मृद्वीका गोस्तनी रसा ॥ १८१ ॥
 मालत्यां रेवती जातिर्यूथिकायां मनोज्वला ।
 मानवी चात्र पीतायां वासन्ती हेमपुष्पिका ॥ १८२ ॥
 मल्लिकायां विचकिलो भूपदी मुक्तबन्धना ।
 शीतभीरुर्मदयन्ती गवाक्षी तृणशून्यकम् ॥ १८३ ॥
 देवमाल्यां वरारोहा गोधामाल्यां तु सेवनी ।
 सुरुपायां तृणं वेश्यं काकमाल्यां वनोद्भवा ॥ १८४ ॥
 आस्फोता चैकपटलमाल्यां बालाऽथ रक्तकः ।
 बन्धूको बन्धुजीवश्च सप्तलायां विभावनी ॥ १८५ ॥
 सुगन्धा प्रैष्मिकाताना मालिका नवमालिका ।
 शोफालिका तु निर्गुण्डी नीलिका निवहात्र तु ॥ १८६ ॥
 सितायां श्वेतसुरसा वासन्त्यां माधवी लता ।
 निस्सङ्गजा कान्तनाला प्रहसन्ती कुटुम्बिका ॥ १८७ ॥
 अतिमुक्तश्च कन्यायां कुमारी तरुणी सहा ।
 महासहायामम्लानः पीताम्लाने कुरण्डकः ॥ १८८ ॥
 शोणे बली कुरवको भाटेऽस्मिन् कलशोदकः ।
 किङ्किराते किङ्किराटः प्रलोही चापि लातकः ॥ १८९ ॥
 सैरेयके तु फिण्टी स्त्री तस्मिन् कुरवकोऽरुणे ।
 वासी सहाऽप्यार्तगलः कुरण्डश्च सनीलकः ॥ १९० ॥
 पीतेऽठ्ययः कुरवकः सहा स्त्री सहचर्यषण् ।
 कुन्दे माष्यः शुक्रपुष्पो वासोऽथ करवीरकः ॥ १९१ ॥
 प्रतिहासः शतप्रासः शितिकुम्भोऽश्वमारकः ।
 चण्डातोऽश्वरिपुः श्वेते मरालोऽत्रातिलोहिते ॥ १९२ ॥
 भुज उग्रविषः काकनासायां शिवमल्लिका ।
 बकपुष्पस्तूलपुष्पः काकशीर्षः शिवप्रियः ॥ १९३ ॥
 वसुभट्टः पाशुपत एकाग्रिलोऽम्बुको वसुः ।
 नन्द्यावर्ते तु तगरस्तारावटनभोऽङ्गणौ ॥ १९४ ॥
 जपायामोदपुष्पं स्यादत्र पद्मादयोऽपि च ।
 विदार्या भूमिकुष्माण्डः सा तु कृष्णा पलाशिका ॥ १९५ ॥
 कोष्ठिका क्षीरशुक्लेक्षुगन्धिके क्षुविदारिका ।
 श्वेता क्षीरविदारी सा महाश्वेतर्क्षगन्धिका ॥ १९६ ॥

शारदां लाङ्गली तोयपिप्पली शकुलादनी ।
 गोलोभ्यां जटिलोभोग्रगन्धा तीक्ष्णा जया वचा ॥ १६७ ॥
 मङ्गल्या चाथ शुक्ला सा षडग्रन्था जललम्बिका ।
 श्यामा तु सा घुणाभीष्टा काशमीरी देवदुन्दुभिः ॥ १६८ ॥
 कैवर्ती मुस्तकेत्वासौ गुन्द्रायां भद्रमुस्तकः ।
 महोदरी वरारोहा नादेयी बलयो वरम् ॥ १६९ ॥
 मुस्तायां मुस्तकं न स्त्री सुगन्धः कर्णपूरकः ।
 शकुलाक्षः श्वेतमध्ये हंसः पीठरदुन्दुभे ॥ २०० ॥
 जलमुस्ते तु प्लवनं गोदर्भं परिपेलवम् ।
 कुटन्नटं दशपुरं गोपुरं वर्तकं प्लवम् ॥ २०१ ॥
 बालं तु पिङ्गलं वज्रं ह्रीवेरं दीर्घरोमकम् ।
 चामरं चमकं व्येष्टं बहिष्टं जटिलं जटा ॥ २०२ ॥
 शैलमूलं तु कञ्जोरं पलाशो हिमजा जटी ।
 अशोभ्यां मुसली ताली तालमूली फलिन्यपि ॥ २०३ ॥
 खड्गेऽरिष्टो गुहोच्छिष्टो रसोनो गृञ्जनः कटुः ।
 कायाङ्गं लशुनं दिव्यं महाकन्दामृतोद्भवे ॥ २०४ ॥
 जीर्णकञ्जं पलाण्डुस्तु श्वेतकन्दो मुकुन्दकः ।
 हरितेऽस्मिन् लतार्कः स्यात् फण्डो दुद्रुमो रसः ॥ २०५ ॥
 स्वल्पकन्दे हरिद्रक्ते गृञ्जनो गर्जनो गुजः ।
 लशुनं दीर्घपत्रं च पिच्छनद्धो महौषधः ॥ २०६ ॥
 फण्डश्च पलाण्डुश्च लतार्कश्च परारिका ।
 गृञ्जनो यवनेष्टश्च पलाण्डोर्दश जातयः ॥ २०७ ॥
 कन्दं त्वक्नी चित्रदण्ड उत्लङ्घः कण्डूरसूरणौ ।
 अशोभो दैत्यमदनः कचूस्तु दलकूर्चिका ॥ २०८ ॥
 शकटश्चाथ कालार्चं नूतनं वेष्टितं दलम् ।
 शोथशत्रौ महापद्मो मोहो माणो बृहच्छदः ॥ २०९ ॥
 वराहकन्दे वाराही चक्रोष्ठ्यां मालुवा स्त्रियाम् ।
 मध्वालुको मधुरसः कन्दलः कन्दली समौ ॥ २१० ॥
 गौर्या हरिद्रा रात्र्याख्या हेमघ्नी काञ्चनी परा ।
 रोषनी रञ्जनी पीता पिप्पला पिण्डा मनश्शिला ॥ २११ ॥
 तोषणी वर्णिनी बाला विटकान्ता तरङ्गिणी ।
 दाव्या दारुहरिद्रा स्यात् पीतदारुश्च पर्जनी ॥ २१२ ॥
 पचम्पचा कर्कटिनी पर्परा पर्पटी वरा ।
 कटकुटेरी कालेयः प्रकोट्यां तु कटुकटम् ॥ २१३ ॥

कटुशृङ्गं शृङ्गिवेरमाद्रमाद्रकमस्त्रियौ ।
 वेणौ तु वंशकर्मारौ मृत्युपुष्पस्तृणध्वजः ॥ २१४ ॥
 त्वचिसारो यवफलः खेलस्तेतनमस्करौ ।
 चपञ्च तेषु पवनोद्धूतध्वनिषु कीचकाः ॥ २१५ ॥
 निस्सुषौ विषमो वेणौ क्षुद्रे लगुडवंशिका ।
 तृणराजे तलस्तालो महापत्रः फलेरुहः ॥ २१६ ॥
 क्रमुके वाटिका घोण्टा गुवाकः क्रूर आसवः ।
 कषयो रागवान् पूगः फले पर्कटमस्य तत् ॥ २१७ ॥
 पकं जोडं खरं शुष्कं चिक्कणे चक्कचक्कणे ।
 दीर्घवृन्ते रामपूगो लतापूगो तु योजनः ॥ २१८ ॥
 भूपूगो लघुकः क्षुद्रफले पाधोवकापि च ।
 पूगो गैरेयकः शैलजातेऽथ स्याल्लताङ्कुरः ॥ २१९ ॥
 हिन्तालस्तृणराजश्च नालिकेरे तु लाङ्गली ।
 दाक्षिणात्योऽफलोऽबालः सुतङ्गः कूर्चकेसरः ॥ २२० ॥
 सदाफलो बली चास्मिन् ह्रस्वे स्यात् खुडुकोऽत्र तु ।
 रक्ते स्वर्णोऽम्बिकश्चाथ परिकोणास्य पट्टके ॥ २२१ ॥
 खपुरः पूगपट्टोऽथ मधुक्षीरो महारसः ।
 परुषः पाण्डुखर्जूरौ तस्मिन् खर्जूरिकाऽल्पके ॥ २२२ ॥
 हलीमे केतकी न क्ली दीनो व्यञ्जनजम्बुलौ ।
 स्त्रीभूषणो रजःपुष्पो गुप्तरागो वलीनकः ॥ २२३ ॥
 ताल्यां वृद्धदला ताडी पत्रताली वराङ्गना ।
 पत्रला फलपाकान्ता तालाद्याः स्युस्तृणद्रुमाः ॥ २२४ ॥
 सवेणवस्ते त्वक्सारास्तृणानीक्षुयबादयः ।
 इक्षुवृष्टयो मधुतृणो मृत्युपुष्पो महारसः ॥ २२५ ॥
 खड्गपत्रोऽप्यथानिक्षुर्वायसालीक्षुपालिका ।
 इक्षुभेदास्तु कान्तारवंशपुण्ड्रादयो नरि ॥ २२६ ॥
 दर्भोऽश्ववालः काशिर्ना काशोऽस्त्री स्त्रीक्षुगन्धिका ।
 कुशो मुनिः कुथो दर्भो वीनाहो यज्ञजागरः ॥ २२७ ॥
 लताङ्कुरो तु शीरी स्त्री धमने शुषिरो नलः ।
 शरो मुखो भद्रमुञ्जो गुन्द्रस्तेजनकः खरः ॥ २२८ ॥
 मुञ्जस्तु यज्ञियो मेथ्यो मृदुत्वग्रन्धमेखलः ।
 उत्लङ्कस्तूलपो दर्भ ऊर्ध्वमूलः खरच्छदः ॥ २२९ ॥

बालकेश्यां दृढदला जूर्णा कृकणपत्रिका ।
 पुंभूम्नि बल्वजा वात्यां त्विल्कटः स्यात् पराशकः ॥ २३० ॥
 स्याद्वीरणं वीरवृणं मूलेऽस्योशीरमस्त्रियाम् ।
 सेव्या मृणालनलदलामज्जानि जलाशयम् ॥ २३१ ॥
 नियुतस्तम्बजट्टदैत्यगौरकुदानवम् ।
 अभयं चावदाहं च दूर्वा तु हरितालिका ॥ २३२ ॥
 वरा सहस्रवीर्या च भार्गवी चाथ सा सिता ।
 गोलोमी शतवीर्या च गोऽर्गलस्त्वेरका वृणम् ॥ २३३ ॥
 सौगन्धिकं देवजग्धं ध्यामकं कत्तुणं पुरम् ।
 छत्रातिच्छत्रापालघ्नौ मालावृणकभूस्तृणे ॥ २३४ ॥
 पुञ्जीलस्तु वृणस्तम्ब इषीका तूलिका समे ।
 शष्पं बालवृणं शादः सर्वं तु वृणमर्जुनम् ॥ २३५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या
 भूमिकाण्डे वनाध्यायः ॥ ३ ॥

पशुसङ्गहाध्यायः ॥ ४ ॥

सिंहो मृगेन्द्रः पञ्चास्यः पारीन्द्रः श्वेतपिङ्गलः ।
 व्यादीर्णास्यो महानादः शार्दूलस्तुल्यविक्रमः ॥ १ ॥
 कण्ठीरवो मृगरिपुः सुगन्धिहरितो हरिः ।
 हलीचणस्तृणसिंहः स्यात् कूटरुमृगर्हिसकः ॥ २ ॥
 व्याघ्रो मृगारिः शार्दूलो हिंसारश्चन्द्रकी मृगात् ।
 हुण्डश्चाल्पस्त्वयं द्वीपी चुलुको भेलमेहिनौ ॥ ३ ॥
 तरक्षुस्तु मृगाजीवस्तिर्लित्सकमृगादनौ ।
 पिण्डारकस्तु चित्राङ्गो महादंष्ट्रो वरोत्कटः ॥ ४ ॥
 वराहः सूकरो घोणी वक्रदंष्ट्रो जलप्रियः ।
 पीनस्कन्धः स्तब्धरोमा कामरूपी तलेक्षणः ॥ ५ ॥
 भूदारः कुमुखो घृष्टिः स्थूलनासो बहुप्रजः ।
 पङ्कक्रीडनकः पोत्री किटिराखनिकः किरिः ॥ ६ ॥
 भङ्गूको दीर्घरोमर्क्षो भङ्गाटो वृकधूर्तकः ।
 विकरालोऽच्छभङ्गश्च गण्डके खड्गखड्गिनौ ॥ ७ ॥
 वार्ध्वाणसो गणोत्साहः कोकस्त्वीहामृगो वृकः ।
 महिषः सैरिभोऽश्वारिर्जलात्मा गद्रवस्वरः ॥ ८ ॥
 लुलायः कासरः शृङ्गी हेरम्बः कृष्णशृङ्गकः ।
 जरन्तः कलुषः पोत्री वीरस्कन्धो रजस्वलः ॥ ९ ॥
 स्कन्धशृङ्गो यमरथः कटाहो दंशालालिकः ।
 हंसकालीसुतश्चाथ सृजया महिषोऽसितः ॥ १० ॥
 गवलश्च परस्वांश्च महिषः स्यादरण्यजः ।
 मृगः प्लावी भीरुचेता वननो मरुको लिगुः ॥ ११ ॥
 नित्यशङ्की च कृष्णस्तु कृष्णसारो निरञ्जनः ।
 यक्षाङ्ग एणस्ताम्रस्तु हरिणस्तृणसंवरः ॥ १२ ॥
 राजीवस्त्वेष राजीमान् सितक्रोडः स चीनकः ।
 शम्बरस्त्वल्पहरिणः पृषतस्तु स बिन्दुमान् ॥ १३ ॥
 रुरुर्महान् कृष्णसारः कुरङ्गो हरिणो महान् ।
 रोहिदृश्यो हरिणवन्मृदुशृङ्गः प्रतापसः ॥ १४ ॥

न्यकुस्तु शम्बराकारस्त्रिकेण विपुलोन्नतः ।
 परम्परस्तु गोकर्णः पोटरूपस्तु तत्समः ॥ १५ ॥
 रौहिषो गर्दभाभासो रोहितः श्वेतराजिमान् ।
 वातायुः स्याद्वातमृगो जवी वातप्रमीः शिवः ॥ १६ ॥
 प्रियको रोमभिर्युक्तो मृदूश्चमसृणैर्घनैः ।
 नीलः स श्वेतरखावानथवा श्वेतचन्द्रकः ॥ १७ ॥
 कदली तु बिले शेते मृदुरूक्षोश्चकर्वुरैः ।
 नीलाग्रै रोमभिर्युक्ता सा विशत्यङ्गुलायता ॥ १८ ॥
 श्यामिका तु श्वेतबिन्दुः श्यामला षोडशाङ्गुला ।
 चतुरा तु घनस्निग्धरोमा श्यामा सचन्द्रका ॥ १९ ॥
 कालिका त्वसिता यद्वा कपोता पिङ्गबिन्दुका ।
 सामूना तु समूरुर्ना सार्धहस्तसमायता ॥ २० ॥
 गोधूमाभाऽथवा कृष्णा स्निग्धोश्चमदुरोमिका ।
 चीनस्तु चीनसी स्त्रीत्वे कपोता त्रिंशदङ्गुला ॥ २१ ॥
 मरुजा तूचमसृणमृदुपाण्डुरोमिका ।
 रोमराजीमती मध्ये द्वादशाङ्गुलसमिता ॥ २२ ॥
 चनका तु चमूरुर्ना सिताभा यदि वासिता ।
 कृष्णरोमानुविद्धा वा पुच्छोऽस्या न भवत्यपि ॥ २३ ॥
 सेलिमस्तु मृदुश्वेतरूक्षोश्चघनरोमकः ।
 चमूरुस्तु महाग्रीवः सितः केसरवान् जवी ॥ २४ ॥
 कदली तु श्यामवर्णा हस्तायामा महोदरी ।
 एते स्युः कृष्णसाराद्या मृगा अजिनयोनयः ॥ २५ ॥
 शशतुल्या विजातिश्च रक्ताभा मृगमातृका ।
 बिलेशया तु कृमिरा कुमारी तु हिमद्युतिः ॥ २६ ॥
 कुचारुश्चारुपुच्छः स्यात् सुविषाणो वृषाकृतिः ।
 कृतारुस्तु न निष्पुच्छो जायते हिमवत्तटे ॥ २७ ॥
 रुचुस्तु शुद्धो मेषाभः स पीतः सूकराकृतिः ।
 कृष्णे शृङ्गे च तस्याथ कृतमालो वृकाकृतिः ॥ २८ ॥
 सृमरः स्याद्वालमृगः परुर्ना चमरी न षण् ।
 कालपुच्छस्तु तत्प्रायो नामार्थेनैव भिद्यते ॥ २९ ॥
 चारुकस्तु किशोराभः कन्दरस्तूश्चजानुकः ।
 मृगाः स्युः कृष्णसाराद्यास्त एव पशवः सह ॥ ३० ॥
 सिंहाद्यैश्च शशाद्यैश्च ग्राम्यैश्चैव गवादिभिः ।
 शशस्तु रोमकर्णः स्यान्मृदुरोमा च शूलिकः ॥ ३१ ॥

गन्धर्वः स्याद्गोलपुसो रामस्तु वृकधोरणः ।
 शरभस्तु गजारातिरुत्पादश्चाष्टपादपि ॥ ३२ ॥
 गवयः स्याद् वनगवो गोवाही वाहवारणः ।
 कोलाङ्गकस्तु जलको भालुको भल्लुकाकृतिः ॥ ३३ ॥
 पुरोही स्यात् कुलचरो ललनाक्षो वृकाकृतिः ।
 कोटङ्गः स्याज्जन्तुधरो मार्जारी चमराकृतिः ॥ ३४ ॥
 शालिजातस्तु खट्वासः पूतिः खट्वासिकापि च ।
 शिवेव स्याद् गन्धमृगः कस्तूरी मृगपालिका ॥ ३५ ॥
 अण्डौ तु तस्याः कस्तूरी राजाहं शितिचन्दनम् ।
 मार्जारिका वेधमुख्या मदनी गन्धचेलिका ॥ ३६ ॥
 श्वाविच्छललशल्यौ तल्लोम्यना शलली शलम् ।
 सृगालो भरुजः क्रोष्टा श्वभीरुर्मृगमत्तकः ॥ ३७ ॥
 शयालुः सूचको घोरः फेरुफेरुण्डफेरवाः ।
 मृगधूर्तो भूरिमायो गोमायुर्वृकधूर्तकः ॥ ३८ ॥
 किखिः स्त्री क्रोष्टुभेदेऽल्पे पृथौ लोपाशगृण्डिवौ ।
 वानरो मर्कटः कीशः कपिः शाखामृगो हरिः ॥ ३९ ॥
 महावेगो दधिमुखः कुरङ्गो भल्लुकः पृथुः ।
 वलीमुखो वनौकाः स गोलाङ्गुलोऽसिताननः ॥ ४० ॥
 नीलशीर्षोऽप्यथ द्विवङ्को वानरो रोहिताननः ।
 शृङ्गिणी सौरभेयी गौरर्घ्या माहेय्युषा शुभा ॥ ४१ ॥
 अनड्वाह्यनड्डुह्युस्त्रा तम्बा तम्पा निलिम्पिका ।
 रजःपूता च कृष्णाऽसौ बहुला क्षितिसम्भवा ॥ ४२ ॥
 सिता तु धवला पुण्ड्रा सुनन्दा जलसम्भवा ।
 कपिला त्वग्निजा दाक्षी सुरभिः कामरूपिणी ॥ ४३ ॥
 रक्तवर्णा रोहिणी स्याच्छीतला वायुसम्भवा ।
 शबली तु प्रक्षराङ्गी सुमना व्योमसम्भवा ॥ ४४ ॥
 वराङ्गा तु चतुर्वर्षा द्विवर्षा तु द्विहायनी ।
 एकहायन्येकवर्षा बहुक्षीरा तु वज्रुला ॥ ४५ ॥
 नैचिकी गौर्गवां श्रेष्ठा भद्रा गौर्गोमतल्लिका ।
 काल्योपसर्या प्रजने पलिकनी बालगर्भिणी ॥ ४६ ॥
 पष्ठौहान्या वशा वन्ध्या वेहद्रर्भोपघातिनी ।
 अवतोका स्रवद्रर्भा वत्सकामा तु वत्सला ॥ ४७ ॥

चिरसूता वक्त्रयणी गृष्टिः सूतवती सकृत् ।
 समांसमीना सा गौर्या प्रतिवर्षं प्रसूयते ॥ ४८ ॥
 पीनस्तनी तु पीनोद्धनी सुखदोह्या तु सुव्रता ।
 दुःखदोह्या तु करटा प्रस्तुता प्रसवोन्मुखी ॥ ४९ ॥
 द्रोणक्षीरा द्रोणदुग्धा बहुसूतिः परेषुका ।
 वेनुर्नवप्रसूता गौर्धेनुष्या बन्धके स्थिता ॥ ५० ॥
 अभिवान्यान्यवत्सा गौर्वृषाकान्ता तु सन्धिनी ।
 आपीनमूधो वृन्तं तु स्तनो वत्सस्तु तर्णकः ॥ ५१ ॥
 विषाणी वृषभः शृङ्गी बाहो गौरक्षधूतिलः ।
 उक्षा गौर्वृषलोऽनड्वान् बाह्यः स्कन्धवहो वही ॥ ५२ ॥
 सौरभेयो बलीवर्दो बाडवेयश्च शाकरः ।
 षण्डस्तु गोपतिः श्रीमान् डङ्क इट्वर ईश्वरः ॥ ५३ ॥
 ककुदी गोवृषो घोणः ककुद्धान् मदकोहलः ।
 जातोक्षो जातमात्रोक्षा दस्यो वत्सतरः समौ ॥ ५४ ॥
 महोक्षः स्यादुक्षतरो वृद्धोक्षस्तु जरद्वरः ।
 आर्षभ्यः षण्डतायोग्यो नैचिक्याः प्राक् परे त्रिषु ॥ ५५ ॥
 भग्नशृङ्गपशुः कूटः प्रष्टवाड् युगपार्श्वगः ।
 स्थूरी पृष्ठयः पृष्ठवाह्यः स्कन्धिकः स्कन्धवाहकः ॥ ५६ ॥
 नस्योतो नस्तिते षोडन् षड्देऽथो धुरन्धरे ।
 धुरीणधुर्यधौरेयाः प्रासङ्गादेस्तु वोदृषु ॥ ५७ ॥
 प्रासङ्ग्यः शाकटो युग्यो हालिकः सैरिकादयः ।
 एवं सर्वधुरीणैकधुरीणैकधुरा अपि ॥ ५८ ॥
 कर्णः कर्णविहीनः स्यात् षण्डस्तु च्छिन्नपुच्छकः ।
 गोमान् गोमी च गोस्वामी गोविन्दोऽधिकृतो गवाम् ॥ ५९ ॥
 नैचिकी गोः शिरोदेशः सास्ना तु गलकम्बलः ।
 गोशकृद्गोमयो न स्त्री गोमन्थिः शुष्कगोमयः ॥ ६० ॥
 दोहलं तु करीषोऽस्त्री गोकुलं गोधनं समे ।
 गोमहिष्यादिकं जीवधनं स्यात् पाशबन्धनम् ॥ ६१ ॥
 छगस्तु छगलश्छागो लम्बकर्णः स्तभः पशुः ।
 बस्तोऽजश्च छगी मल्ली सर्वभक्षा गलस्तनी ॥ ६२ ॥
 चुलुम्पा चित्रला हृद्या पर्णादा पलिकिन्यजा ।
 श्लिकस्तु वनच्छागो वालवीज्यो निरायसः ॥ ६३ ॥

मेधे शृङ्गिणसम्फालवृष्णिपेत्वहुलुहदाः ।
 एडकोऽप्युरणो मीढ उरभ्रो रोमशोऽप्यविः ॥ ६४ ॥
 मेधी तु कुररी वेणी जालकिन्यविला रुजा ।
 खररासभचक्रीवद्वाहवालेयगर्दभाः ॥ ६५ ॥
 रुक्षस्वरो धूळकर्णो नेमिर्भोरसहः शलः ।
 चिरमेही गोर्दनकः कोलिण्टो बडबापतिः ॥ ६६ ॥
 करभश्च मयस्तूष्ट्रो महाप्रीवः क्रमेलकः ।
 दाशेरकश्च रवणः करभः स्यादसौ शिशुः ॥ ६७ ॥
 करभाः स्युः शृङ्खलका दारवैः पादबन्धनैः ।
 श्वा सारमेयः शुनको भषणो मृगदंशकः ॥ ६८ ॥
 दीर्घनादी गृहमृगः कुकुरः क्रोधनः शुनिः ।
 यक्ष इन्द्रमहश्चालः कपिलो मण्डरः शुनः ॥ ६९ ॥
 जिह्वापानः पुरोगामी कृतज्ञो रात्रिजागरः ।
 कौलेयकोऽस्थिखादश्च भवनो भलुहोऽपि च ॥ ७० ॥
 शुनी तु सरमा श्वाली विट्चारो ग्रामसूकरः ।
 ओतुर्बिडालो मार्जार आखुमुक् पृषदंशकः ॥ ७१ ॥
 जाडको गात्रसङ्कोची मण्डली नखरायुधः ।
 पशुस्तु मलुको मोकः कपः शुद्धो जडश्चरिः ॥ ७२ ॥
 बाले तु बर्करः सूता तूबरः शृङ्गवर्जितः ।
 हिंस्रो व्याघ्रादिको व्यालः श्वापदो मरुलः शरिः ॥ ७३ ॥
 पुच्छोऽस्त्री लूम लाङ्गूलं बालहस्तश्च बालधिः ।
 खुरः शफः शको विष्टा घासस्तु यवसः शरिः ॥ ७४ ॥
 रोमन्थनन्तु रोमन्थो रोमोर्णोर्णास्तुकोऽपि च ॥ ७५ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे पशुसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ४ ॥

मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

मनुष्या मानुषा मर्त्या मनुजा मानवा नरः ।
 द्विपादो नहुषा गोधा व्राताः पञ्चजना नराः ॥ १ ॥
 ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रा इति वर्णाश्चतुष्टये ।
 उपवर्णास्तु सङ्कीर्णा विवर्णास्त्वन्यजातयः ॥ २ ॥
 एकवर्णाः सवर्णाः स्युर्हीनवर्णास्तु जङ्गिताः ।
 सवर्णं ब्राह्मणाद्राज्ञी सूते मूर्धावसिक्तकम् ॥ ३ ॥
 वैश्याऽम्बष्ठं निषादं तु शूद्रा पारशवश्च सः ।
 एते विवाहजाः पुत्रा व्यभिचारसुताः पुनः ॥ ४ ॥
 अभिषिक्तः कुम्भकारः शूलिकश्च यथाक्रमम् ।
 विप्रादावृतमुग्रस्त्री निषादी तु मनोजवम् ॥ ५ ॥
 अम्बष्ठकन्या त्वाभीरं खञ्जमन्तावसायिनी ।
 आयोगवी धिग्वनकं कुक्कुटी तु पराजकम् ॥ ६ ॥
 भृज्जकण्ठी तु सौधातं शनकी तु बहिर्गरम् ।
 वैदेहकी कारुविन्दं मैत्री रन्ध्रं भटी सटम् ॥ ७ ॥
 चण्डाली तु श्वचण्डालं शबरी तु परिच्छदम् ।
 कालकिञ्चं तु करणी यवनी यावशादनम् ॥ ८ ॥
 नटी भटं खवी द्रोहं मागधी तु दमण्डकम् ।
 पराजकी तु सिद्रुण्डं कारुविन्दी कुविन्दकम् ॥ ९ ॥
 रथकारी रथाश्मानमावृती तु खरुञ्जकम् ।
 सूता पारावतं सूते श्वपाकी पालुखञ्जनम् ॥ १० ॥
 पुलकसी भर्मिणं सूते धीवरी तीवरं ततः ।
 एते ब्राह्मणपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ११ ॥
 सूते विप्रा नृपाद्वैश्या माहिष्यं यवनश्च सः ।
 अश्वपण्यमनूढा सा शूद्राऽनूढैव शूलिकम् ॥ १२ ॥
 उग्रमूढा निषादी तु वेणुकं कुक्कुटी कुटम् ।
 तीवरी महिषं वेनी रट्टासं पुलकसी बकम् ॥ १३ ॥
 चण्डाली रुचिटं मल्ली पल्लमुग्री मूषा परम् ।
 श्वपाकी कलुषं सूता कीलुषं घर्घरी मिषम् ॥ १४ ॥
 सिद्रुण्डी डिण्डिकं जल्ली भ्रुकुञ्चं शनकी कचम् ।
 कची भ्रेणं भ्रुकुञ्ची तु पागलं पागली गिलम् ॥ १५ ॥

एते क्षत्रियपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ।
 वैश्याद्वैदेहकं विप्रा क्षत्रकन्या तु मागधम् ॥ १६ ॥
 शूद्रा तु करणं सैव जारात् कटकरं ततः ।
 कटकर्मा स वेनी तु वागुरं वेणुकी वटम् ॥ १७ ॥
 अम्बष्ठी कोहलं रन्ध्री घर्घरं विन्दकी भ्रषम् ।
 कारुविन्दी पराविद्धमुग्रीवेशं कुटी सटम् ॥ १८ ॥
 कुक्कुटी पलिनं मेदी मालुकं मालुकी मकम् ।
 चण्डाली नीलिकं वाटी मेणकं करणी वशम् ॥ १९ ॥
 रथकारी सनालिङ्गं वैदेही वानवासिकम् ।
 श्वपाकी पाणिशं मल्ली विबुक्कं डिण्डिकी कशम् ॥ २० ॥
 मैत्री वाटं नटी भोलं प्रसूते कीलुषी किटम् ।
 घर्घरी धिर्मिणं घोलमित्येते वैश्यसूतवः ॥ २१ ॥
 चण्डालं ब्राह्मणी शूद्रात् क्षत्रिया पारघेनुकम् ।
 वेलवं सैव चौर्येण वैश्या त्वायोगवं ततः ॥ २२ ॥
 चौर्यात् सा चाक्रिकं वेनी वंशिकं फलिनी कुथम् ।
 निषादी कुक्कुटं भिल्ली शबरं कोहली नसम् ॥ २३ ॥
 पुलकसी कवटं वाटी मञ्जनं मालुकी मलम् ।
 वैदेहकी नीबलकं धीवरी कलशीनकम् ॥ २४ ॥
 भृज्जकण्ठी कुवादुष्कं करणी कालशीनकम् ।
 सूता मालसुपर्णाण्डौ सैरन्ध्री रथवारकम् ॥ २५ ॥
 नटी भ्राणञ्जकं वाटी विभण्डं द्रमिडी द्रुहम् ।
 कैवर्ती धीवरं रन्ध्री कलशं यवनी क्षुदम् ॥ २६ ॥
 कारावती सुललिकं कुवादुष्की वशामखम् ।
 चण्डाली पाण्डुकं द्रोही छाणकं महिषी पुरम् ॥ २७ ॥
 वरुटी रुण्डकं घोली वीलकं कवटी पुटम् ।
 एते शूद्रस्य पुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ २८ ॥
 निषादाब्राह्मणी भेकं क्षत्रिया कालकुण्डकम् ।
 वैश्या सूचि हरिं शूद्रा सोऽपि चायोगवः कचित् ॥ २९ ॥
 कैवर्ती वुरुलं भिल्ली शनकं शनकी रसम् ।
 श्वपाकी गर्मुटं घोली घर्घरं द्रमिडी कणम् ॥ ३० ॥
 वैदेही कलशं द्रोही भ्रेणकं छाणकी लुषम् ।
 रथकारी मन्दुपालं मागधी मड्डुकैरिकम् ॥ ३१ ॥

आयोगवी तु कैवर्त निषादान्मार्गरश्च सः ।
 एते निषादपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३२ ॥
 जालं वैदेहकादिप्रा क्षत्रिया रथकारकम् ।
 वैश्या धन्ववनं शूद्रा गौरुषं करणी कृमिम् ॥ ३३ ॥
 अम्बष्ठी वेनमुग्री तु गर्गरं शनकी हनुम् ।
 आयोगवी तु मैत्रेयं पुलकसी कणकुक्कुटम् ॥ ३४ ॥
 निषादी मेदमन्धं तु सैव चेन्नान्यपूर्विका ।
 एते वैदेहपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३५ ॥
 मैत्रेयाद् ब्राह्मणी लालं क्षत्रिया जालभूषणम् ।
 वैश्या छण्डकटं शूद्रा निषादी लोहमालकम् ॥ ३६ ॥
 आयोगवी तु मधुकं घण्टिकं नान्यपूर्विका ।
 एते मैत्रेयपुत्राः स्युर्नानायोषित्समुद्भवाः ॥ ३७ ॥
 विप्रा नाविकमम्बष्ठादस्मिन् कापि श्वपाकवाक् ।
 वैणवं सैव माहिष्याद्रजकं पारधेनुकात् ॥ ३८ ॥
 श्वपचं सैव चण्डालाश्चर्मकञ्चुकजीवनम् ।
 मागधात्ताम्रजीवं सा तक्षार्णं करणादसौ ॥ ३९ ॥
 आयोगवाश्चर्मकारं राक्षी वार्मिकसूचकौ ।
 माहिष्याश्चर्मकारं सा खनकं मागधादसौ ॥ ४० ॥
 उद्बन्धं खनकाच्छूद्रा स्पृश्यमम्बरनेजकम् ।
 अधोनापितमम्बष्ठी करणान्मत्स्यबन्धकम् ॥ ४१ ॥
 वैश्या सामुद्रमाजीवेत् पण्यं सामुद्रमेव सः ।
 निषादी धिग्बनाश्चर्मकारं कारावरोऽपि सः ॥ ४२ ॥
 कारावरो निषादेन वैदेह्यामिति केचन ।
 वैदेही पाण्डुसोपाकं चण्डालात् कुक्कुणश्च सः ॥ ४३ ॥
 आहिण्डिकं निषादात् सा कवटी तु हुरिज्जकम् ।
 निष्ठयाच्छूद्रा मधुश्रेणि शौण्डिकं मण्डहारकम् ॥ ४४ ॥
 उग्री क्रमेलकं तस्माभिर्णक्ता रजकश्च सः ।
 सोपाकं पुलकसी निष्ठयाश्चण्डालादिति केचन ॥ ४५ ॥
 अन्ध्री तु शबराभिष्टयं भिन्नं सा निष्ठयपूर्विका ।
 किरातं पर्णशबरी शबराभिष्टयपूर्विका ॥ ४६ ॥
 पुलिन्दपर्णशबरौ किराती निष्ठयपूर्विका ।
 पुलिन्दश्वपचौ निष्ठयात् किराती नान्यपूर्विका ॥ ४७ ॥
 रथकारं तु माहिष्यात् करणी माहिषाडुकम् ।
 पुलकसं सैव चण्डालात् किरातात् पलगण्डकम् ॥ ४८ ॥

चण्डालात् पुलकसी डोम्बं निषाद्यन्तावसायिनम् ।
 डोम्बी खषं सैव निष्ठयाद् विभेणं हड्डिकं खषी ॥ ४९ ॥
 तीवरी धीवरात् पौण्ड्रं बबरं यवनादसौ ।
 पुलकसात् पामरं वेनाच्छुषं डोम्बाद्वाराणकम् ॥ ५० ॥
 श्वपाकं क्षत्रुग्रन्थी केचिदाहुविपयम् ।
 चूचु किराती शबराद्वैदेहात् पुलकसात् कचित् ॥ ५१ ॥
 निष्ठयात् वरुटी मदगुं बल्लारं तु किरातिका ।
 निषादपुलकसाद्यास्तु पूर्वोक्ता इह नोत्तरे ॥ ५२ ॥
 विप्रा ब्रात्याद् भृजकण्ठमावन्त्यं विप्रपूर्विका ।
 अभ्यूढा वाटधान्यं सा शैखं सा नान्यपूर्विका ॥ ५३ ॥
 सा पुष्पवं पुष्पवती सम्यगूढा द्विजन्मना ।
 लिच्छिवि क्षत्रिया ब्रात्याज्जलं सा विप्रपूर्विका ॥ ५४ ॥
 ब्रात्यपूर्वा तु सा मल्लं क्षत्रपूर्वा तु सा नटम् ।
 प्राक्प्रसूतस्वजातिः सा वरुटं करणश्च सः ॥ ५५ ॥
 सा वैश्यपूर्वा द्रमिडं शूद्रपूर्वा तु सा खषम् ।
 वैश्या ब्रात्यात् सुधन्वानमाचार्यं विप्रपूर्विका ॥ ५६ ॥
 सुधन्वाचार्य एको वा मैत्रं सा वैश्यपूर्विका ।
 शूद्रपूर्वा द्विजन्मानं सात्त्वतं क्षत्रपूर्विका ॥ ५७ ॥
 अपूर्वा भारुषं कारं ब्रह्मक्षत्रविशाममी ।
 ब्रात्यानां क्रमशः पुत्राः शूद्रा ब्रात्याच्छुकण्टकम् ॥ ५८ ॥
 कुर्वन्त्यनुपनीता ये विवाहं ब्राह्मणादयः ।
 ब्रात्या ब्राताश्च ते सर्वे तत्सुताश्चावृतासु ये ॥ ५९ ॥
 अवरेटः सवर्णायां जाराज्जातः सवर्णकात् ।
 पत्यौ जीवति कुण्डोऽसौ भर्तार्यसति गोलकः ॥ ६० ॥
 अविवाह्यासु जाताश्च तथा स्युः कुण्डगोलकाः ।
 ये च प्रव्रजितापुत्रास्तथा प्रव्रजितस्य ये ॥ ६१ ॥
 क्षत्रकुण्डः पट्टबन्धो भोजः क्षत्रियगोलकः ।
 देवप्रैष्यो विप्रकुण्डो ग्रामप्रैष्यस्तु गोलकः ॥ ६२ ॥
 मणिकारो वैश्यकुण्डः शङ्करास्तु गोलकः ।
 शूद्रकुण्डो मालवको वासहारस्तु गोलकः ॥ ६३ ॥
 एषां लक्षणसिद्ध्यर्थं केषाञ्चिद् वृत्तिरुच्यते ।
 उक्ता प्रागेव केषाञ्चिन्मन्ना केषाञ्चिद्दूयते ॥ ६४ ॥

मूर्धावसिक्तः सेनेशो धनुर्वेद्यस्त्रधारकः ।
 मणिमन्त्रौषधिज्ञश्च सोऽम्बष्ठो यानशिक्षया ॥ ६५ ॥
 चिकित्सागणितज्योतिर्ज्ञानी स्यादभिषक्तकः ।
 अम्बष्ठो भृजकण्ठोऽस्य चिकित्सा शस्त्रसाधना ॥ ६६ ॥
 कट्याजीवात्स दौष्पन्तो निषादो भवजघोषणात् ।
 कुम्भकारो भाण्डवृत्तिरेष स्यादूर्ध्वनापितः ॥ ६७ ॥
 नाभेरूर्ध्वं वपन् पुंसां सूतकप्रेतकादिषु ।
 चित्रमर्हलनृत्तज्ञः कालीं पारशवोऽर्चयेत् ॥ ६८ ॥
 शूलिको दण्डयेदण्ड्यान् शूलारोपादिकर्मणा ।
 निषादो मृगघातात् स माहिष्यो नृत्तगीतवित् ॥ ६९ ॥
 स एव मङ्कुशोऽथासौ निषादः सस्यरक्षया ।
 जीवन् सवर्णा नक्षत्रैः सोऽम्बष्ठो वैद्यशास्त्रवित् ॥ ७० ॥
 महानर्मा च मद्गुरश्च स श्रेष्ठी वैश्यवृत्तितः ।
 अश्वपण्यस्त्वाश्विकाख्यः सोऽश्वव्यापारजीवनः ॥ ७१ ॥
 उग्रो दण्ड्यान् दण्डयेत् स दौष्पन्तो मत्स्यघातनात् ।
 निषादो व्यालादिवधाद्यवनः कुस्त्ररभहात् ॥ ७२ ॥
 पुरो धावन् पारशवो राज्ञः शस्त्रञ्च धारयन् ।
 धनान्तःपुररक्षश्च शूलिकः शूलिकोपमः ॥ ७३ ॥
 करणो लेखको राज्ञां वारकः शकनामकः ।
 चुचूकः शाकताम्बूलक्रमुकादिकविक्रयात् ॥ ७४ ॥
 रथकारो निधिप्रभृद्यूतापणनिरूपणात् ।
 रथकारो व्यालमृगहिसावृत्तिरिति कचित् ॥ ७५ ॥
 उग्रः पारशवो दुर्गधनान्तःपुरपालनात् ।
 अन्वर्थः स्यात् कटकरो द्वादशैतेऽनुलोमजाः ॥ ७६ ॥
 इतिहासपुराणज्ञः सूतो देवांश्च पूजयेत् ।
 सूत उढासुतः पक्ता स्थानालङ्कारादिकृत् ॥ ७७ ॥
 सोऽनूढाजो रथाश्वानां वाहको रथकारकः ।
 वैदेहकस्य स्त्रीरक्षा स वन्दी स्तुतिजीवनात् ॥ ७८ ॥
 मौकल्यो रामको वस्त्रस्यूतिरञ्जनजीवनात् ।
 मागधोऽसावन्ढाजो जङ्घाकरिकवृत्तिकः ॥ ७९ ॥
 वाप्याद्यवतरेच्छुद्धयै क्षालयेन्मलिनाम्बरम् ।
 वणिक्पथे मागधस्य वाग्भी राजप्रबोधनम् ॥ ८० ॥

चूचुको वेधनेनासौ स वन्दी स्तुतिकर्मणा ।
 वैतालिको बोधनया वेणुवीणादिवादनैः ॥ ८१ ॥
 धीवरो मार्गसन्त्राणाद् रामको दौत्यजीवनात् ।
 आयोगवः पुलकसश्च स वासःकांस्यजीवनात् ॥ ८२ ॥
 चौर्याज्जातः पुलिन्दोऽसौ स हन्ता दुष्टसत्त्वकान् ।
 चण्डालो भल्लरीकक्षो वद्ध्रीकण्ठो मलं हरेत् ॥ ८३ ॥
 स्यात् पारधेनुको वेनो गोधादिवधबन्धकृत् ।
 स निषादो मत्स्यघातान्मद्गुराघोषणेन सः ॥ ८४ ॥
 क्षत्ता दौत्यद्वारपाल्यात् पुलकसो मद्यविक्रयात् ।
 पेलवः पुनरस्पृश्यो जम्भको नृत्तगानवित् ॥ ८५ ॥
 आयोगवस्तैजसकृद्भूमिजम्भमणिवेधकृत् ।
 स तक्षा तक्षणाजीवन् स्थपतिर्नगराधिकृत् ॥ ८६ ॥
 अन्तावसायी वपनान्मागधश्चित्रकर्मणा ।
 स वैदेहः पाशुपाल्यात् तद्रसानां च विक्रयात् ॥ ८७ ॥
 पुलकसस्तान्तवेनासौ चाक्रिकस्तैलविक्रयात् ।
 लवणक्रीतकोऽसौ स्याल्लवणस्यैव विक्रयात् ॥ ८८ ॥
 एवमेकादश प्रोक्ता वर्णानां प्रतिलोमजाः ।
 गोधादिवधबन्धास्तु हरीणां पुलकसाश्च ते ॥ ८९ ॥
 रथकारो वास्तुवृत्तिरिज्याधानोपनीतिमान् ।
 आवृतानां तु हस्त्यश्वस्यन्दनेष्वधिकारिता ॥ ९० ॥
 शूर्पच्छत्रादिकर्माणि सूचीनां ते च पुलकसाः ।
 कैवर्तानां पक्षिपशुमृगघातनजीवनम् ॥ ९१ ॥
 आन्ध्राणां तु गृहद्वाररथ्यावस्करशोधनम् ।
 मेदानां चक्रवृत्तित्वं विष्णुमूत्रग्रहणोज्झनम् ॥ ९२ ॥
 आहिण्डिकानां कारासु बहिः स्थित्वाऽभिरक्षणम् ।
 मेदान्मृचूचुमद्गूनामारण्यपशुहिसनम् ॥ ९३ ॥
 मैत्रेयकः प्रशंसेन्नृन् घण्टाताडोऽरुणोदये ।
 पारावरश्छत्रधरो दीपधृद्वाहको नृणाम् ॥ ९४ ॥
 कुर्यादासनरक्षां च चर्मच्छेदनसीवनम् ।
 कुक्कुटानां शस्त्रकृती राज्ञां कुक्कुटखेलनम् ॥ ९५ ॥
 मागधादपि शूद्रायां कुक्कुटो नाम जायते ।
 योऽन्वेष्टोद्यानवप्रादेवैश्याज्जातोऽपि कुक्कुटः ॥ ९६ ॥

निषाद्यां तन्तुवायोऽसौ वृक्षच्छेदावरोपकृत् ।
 धिग्वनानां तु कार्मार्यं वेनानां भाण्डवादनम् ॥ १७ ॥
 वेणः कुशीलवश्चासौ लङ्घनप्लवनादिभिः ।
 वेणो राज्ञीसुतोऽप्युग्रान्मायासम्मोहनादिकृत् ॥ १८ ॥
 वैदेह्यम्बष्ठजो वेनो नाट्यरङ्गावतारकृत् ।
 आभीराणां जीवधनं कूटानामश्मतक्षणम् ॥ १९ ॥
 नौवाहो मार्गरो नद्यां नाविकस्त्वन्धिनौगमः ।
 शैखोऽभिचारं कुर्वीत कार्मणं भृजकण्ठकः ॥ २० ॥
 मन्त्रौषधैर्द्विषत्सेनां वशीकुर्वीत पुष्पवः ।
 आवन्त्यो वाटधानश्च स्वसेनाचित्तवृत्तिवित् ॥ २१ ॥
 ब्राह्म्याः क्षत्रसुताः शत्रुकोशमन्त्रादिवेदिनः ।
 खषाणां तोयाहरणं द्रमिलानां प्रपाकान्तः ॥ २२ ॥
 नटानां करणानां च चारवृत्तिः स्फुटास्फुटा ।
 भारुषस्त्वर्चयेन्मातृः श्मशानादि चतुष्पथम् ॥ २३ ॥
 सुधन्वाचार्य ईशानं शाक्यचैत्यादि मैत्रकः ।
 भूतप्रेतपिशाचांस्तु विजन्मा सूतिवेश्म च ॥ २४ ॥
 सात्त्वतः पूजयेद्विष्णुमुक्तो भागवतश्च सः ।
 सन्ति भागवताश्चान्ये ब्राह्मणा भगवत्पराः ॥ २५ ॥
 श्वकण्ठकस्य शूद्रादि मालवस्याश्वपालनम् ।
 वैणवी पाण्डुसोपाकः सोपाको मूलवृत्तिकः ॥ २६ ॥
 श्मशानचेलरक्षादिवृत्तयोऽन्तावसायिनः ।
 वनश्मशानरक्षा तु चण्डालान्तावसायिनाम् ॥ २७ ॥
 गरानलप्रयोगाश्च प्रोच्यन्ते दस्युजातयः ।
 ब्राह्मणस्य त्रयः पुत्रा वर्णस्त्रीधनुलोमजाः ॥ २८ ॥
 शूद्रस्य च त्रयः पुत्रास्तास्वेव प्रतिलोमजाः ।
 त्रयस्त्रयः क्षत्रविशोः प्रतिलोमानुलोमजाः ॥ २९ ॥
 एते द्वादश वर्णानां पुत्रा एकैकशस्तु ते ।
 चातुर्वर्ण्ये प्रसूयन्ते चतुरश्वतुरः सुतान् ॥ ३० ॥
 ते चत्वारिंशदष्टौ च पूर्वैर्द्वादशभिः सह ।
 ब्राह्मणाद्यैश्चतुर्भिश्च चतुष्पाष्टर्हि जातयः ॥ ३१ ॥
 ते सर्वे दस्यवो दोषैश्चौर्याद्यैः सद्बहिष्कृताः ।
 आसाविकस्तु सैरिन्द्रो दस्योरायोगवीसुतः ॥ ३२ ॥

दस्यूनां बहुजातित्वाद् बह्वयः सैरिन्द्रजातयः ।
 प्रसाधनोपचारज्ञा मृगादिवधजीवनाः ॥ ३३ ॥
 शाकपुष्पफलानां च विक्रेतारो बहिष्कृताः ।
 राजस्त्रीणां सूतिकानां द्वार्थ्याः प्रेताम्बरावृताः ॥ ३४ ॥
 विक्रेतारः सुरां कृत्वा सैरिन्द्राः स्युर्यथोचितम् ।
 दस्युस्लेक्षणानां तु कृषिशस्त्रोपजीवनम् ॥ ३५ ॥
 स्लेच्छाः स्युर्विप्रकृष्टा ये स्लेच्छवाचो वनौकसः ।
 कार्या क्षत्रुप्रवैदेहैरन्या वृत्तिरगर्हिता ॥ ३६ ॥
 मेदान्ध्रैर्गर्हिता वृत्तिरनुक्ताः कुलवृत्तयः ।
 तत्रापि मातृकी वृत्तिर्गर्हितामनुलोमजाः ॥ ३७ ॥
 भजेरन् प्रतिलोमास्तु पैतृकं कर्म गर्हितम् ।
 अनुलोमा निकृष्टायामुत्कृष्टादुद्भवन्ति ये ॥ ३८ ॥
 प्रतिलोमा विपर्यस्ता ब्राह्म्यास्तत्प्रतिलोमजाः ।
 आनुलोमप्रतिलोम्यादान्तरालिकसंज्ञिताः ॥ ३९ ॥
 वर्णमात्रानुलोमा ये षट् तेऽपशदसंज्ञिताः ।
 षडपध्वंसजा ये स्युर्वर्णानां प्रतिलोमजाः ॥ ४० ॥
 रजकश्चर्मकारश्च वेनो बुरल एव च ।
 कैवर्तमेदभिज्ञाश्च सप्तैता अन्यजातयः ॥ ४१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे मनुष्याध्यायः ॥ ५ ॥

ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

ब्राह्मणो मुखजो विप्रो भूदेवो मैत्र एतशः ।
 अग्रजन्मा वेदगर्भो वाडबश्च त्रयीपुषः ॥ १ ॥
 संस्कारास्तु निषेकाद्याः श्मशानान्ता द्विजन्मनाम् ।
 गर्भाधानं तु यौनं स्यात् प्राजापत्यं च मौलिकम् ॥ २ ॥
 आधानिकं पुंसवनं पौस्नमप्यथ गार्भिणम् ।
 सीमन्तोन्नयनं नामकर्मा मन्त्रणिके समे ॥ ३ ॥
 चौले तु चूडाकरणं क्षुरकर्म तु मुण्डनम् ।
 मौण्डिकं भद्राकरणं वपनं परिवापणम् ॥ ४ ॥
 सशिखं वपनं तोडं निशिखं भिक्षुलोचकम् ।
 ओद्वितं त्वतिघृष्टं स्यात् पञ्चचीरोद्वितं पुनः ॥ ५ ॥
 आडिण्डिकं त्रिषु परे मुण्डः स्यान्मुण्डितोऽशिखः ।
 शिखावानवमुण्डः स्यात् पञ्चचूडस्तु सारणः ॥ ६ ॥
 उपनायस्तूपनय आनायश्च वदकृतिः ।
 ब्रह्मचारी व्रती वर्णी नैष्ठिकस्तु स आश्रमी ॥ ७ ॥
 गायत्रस्तूपकुर्वाणो वैदिकोऽधीतवेदकः ।
 प्राजापरयः कृतोद्वाहः स एवौदुम्बरायणः ॥ ८ ॥
 वर्णिलिङ्गी लिङ्गवृत्तिर्निस्स्वाध्यायो निराकृतिः ।
 वान्ताशी भोजनार्थं यो गोत्रादि वदति स्वकम् ॥ ९ ॥
 उच्छिष्टभोजनो देवनिवेद्यबलिभोजनः ।
 जातिमात्रोपजीवस्तु यः स स्याद् ब्राह्मणव्रतः ॥ १० ॥
 अजपस्त्वसदध्येता देवाजीवस्तु देवलः ।
 अधायवो वधरता विगीताः ख्यातगर्हणाः ॥ ११ ॥
 अवगीताश्च हन्ता तु गुरुणां नरकीलकः ।
 शिशिवदानो दुराचारो निषिद्धैकरुचिः स्वरुः ॥ १२ ॥
 त्यक्तात्मा त्यक्तसंवासो ह्यवकीर्णी क्षतव्रतः ।
 शाखारण्डोऽन्यशाखास्थो वर्णिलिङ्गयादयस्त्रिषु ॥ १३ ॥
 वानकं तु ब्रह्मचर्यं नियमप्रथमौ व्रते ।
 अग्नीन्धनं त्वग्निकार्यमाग्नीध्री चार्त्तिकारिका ॥ १४ ॥
 प्रासे तु पावनी भिक्षा पुष्कलस्तुष्टयम् ।
 ते चत्वारो हन्तकारो हन्तकारद्वयं घनः ॥ १५ ॥

मुष्ट्यष्टकेऽन्ययं किञ्चित् पुष्कलं तु तदष्टके ।
 पुष्कलानि तु चत्वारि पूर्णपात्रकमस्त्रियाम् ॥ १६ ॥
 भिक्षाचारः कौक्कुटिकस्त्रिषु स्यादौर्ध्वरथ्यकः ।
 मौञ्जी तु मेखला क्षोणी मौर्वी त्वेकलमात्रिका ॥ १७ ॥
 सौत्री तु धटिनी रम्भा दण्डस्तु दमयन्तिका ।
 पालाशो दण्ड आषाढो व्रते राम्भस्तु वैणवः ॥ १८ ॥
 बैल्वः सारस्वतो रौच्यः पैलवस्त्वौपरोधिकः ।
 आश्वत्थस्त्वजितनेमिरौदुम्बर उल्लखलः ॥ १९ ॥
 द्विजायनी ब्रह्मसूत्रं सूत्रं यज्ञोपवीतकम् ।
 पवित्रञ्चोपवीतं तु प्रोद्धृते दक्षिणे भुजे ॥ २० ॥
 प्राचीनावीतमन्यस्मिन्निवीतं कण्ठलम्बितम् ।
 कृष्णाजिनं कर्णिकं स्यात् कृत्तिः स्त्री चर्म चाजिनम् ॥ २१ ॥
 गुरुर्दिशानो बोधानः क्षाणी च ब्राह्मिकोऽथ सः ।
 (देशिकः परमाप्तः स्यादात्मलाभकरो गुरुः ।)
 मन्त्रव्याख्यादिनाऽऽचार्य उपाध्यायस्तु पाठनात् ॥ २२ ॥
 पाठके तु पठिर्वेदपठिता कलपाठकः ।
 पाठको धर्मशास्त्राणां धार्मिको धर्ममाणवः ॥ २३ ॥
 एकतीर्थी सतीर्थ्यैकगुरु स ब्रह्मचार्यपि ।
 धर्मभ्राता सहाध्यायी शैक्षाः प्राथमकल्पिकाः ॥ २४ ॥
 छात्रस्तु शिष्यो मोकः प्राहुपज्ञा ज्ञानमादिमम् ।
 समौ सिद्धान्तराद्धान्तौ ज्ञात्वाऽऽरम्भ उपक्रमः ॥ २५ ॥
 पाठे बिन्दुर्ब्रह्मबिन्दुर्ब्रह्माञ्जलिरिहाञ्जलिः ।
 ऋक् स्त्री साम यजुश्चेति वेदास्ते तु त्रयस्त्रयी ॥ २६ ॥
 आथर्वणं पौरोहितं वेदाश्चत्वार एव ते ।
 छन्दो ब्रह्म श्रुतिर्वेदोऽप्यथ विद्याश्चतुर्दश ॥ २७ ॥
 शिक्षा कल्पो व्याकरणं निरुक्तं छन्दसां चयः ।
 ज्योतिषामयनं चेति वेदाङ्गान्यङ्गिभिः सह ॥ २८ ॥
 सीमांसया पुराणेन स्मृत्या न्यायगणेन च ।
 आयुर्वेदो वैद्यशास्त्रं गान्धर्वं गीतिशासनम् ॥ २९ ॥
 अर्थशास्त्रं दण्डनीतिर्धनुर्वेदोऽस्त्रशासनम् ।
 चत्वार उपवेदास्ते विद्याश्चाष्टादशोदिताः ॥ ३० ॥
 आन्वीक्षिकी तर्कविद्या निरुक्तं पदमञ्जना ।
 नामशास्त्रे निचण्डुर्नो सर्वविद्या कदन्निका ॥ ३१ ॥

अध्यायः कामिकः काव्ये तूच्छासः सर्ग इत्यपि ।
 प्रपाठकस्त्वाह्निकोऽथो अनुवाकश्च खण्डिका ॥ ३२ ॥
 ब्राह्मणश्चेत्यवच्छेदा एकग्रन्थस्तु फक्किका ।
 विध्यर्थवादमन्त्रास्तु खिलान्युपखिलानि च ॥ ३३ ॥
 छन्दोभेदास्तु गायत्रीप्रमुखा एकविंशतिः ।
 स्त्रियस्तासु क्रमात् क्लीबे स्युर्गायत्रौष्णिहादयः ॥ ३४ ॥
 मुखशोभा वेदशालिमुखे चित्रावनिश्च सा ।
 विधा ह्युच्चारणाभेदाः स्पृष्टसंवृततादयः ॥ ३५ ॥
 कादयो व्यञ्जना क्ली वा स्पर्शास्ते मावसानकाः ।
 स्त्रियोऽन्तस्स्था यरलवा ऊष्माणः शषसाः सहाः ॥ ३६ ॥
 विसर्गस्त्वभिनिष्ठानः परे त्रिष्वनुनासिकः ।
 नीचोऽनुदात्तो निहत उदात्तः स्वरितोऽपि च ॥ ३७ ॥
 वरिवस्या तु शुश्रूषा सेवा भक्तिरुपासना ।
 परिचर्याऽऽराधनश्च सेवनश्च प्रसादनम् ॥ ३८ ॥
 पूजाऽर्चना नमस्याऽर्चा सपर्येज्याऽर्हणाऽञ्जनम् ।
 नमस्या तु नमस्कारो वन्दनं चाभिवादनम् ॥ ३९ ॥
 उपसङ्ग्रहणं पादग्रहणेनाभिवादनम् ।
 गृहस्थः स्नातकश्चक्री गृहमेधी गृहीति च ॥ ४० ॥
 तस्मिन् सावित्रशालीनौ यः कुसूलेन धान्यभृत ।
 पृथुचित्रः कुण्डधान्यो विघ्नसाशी दिनत्रयी ॥ ४१ ॥
 यायावरश्चक्रचरः सद्यःप्रक्षालितान्नकः ।
 परिवेत्ताऽग्रजेऽनूढे कृतदारपरिग्रहः ॥ ४२ ॥
 परिवित्तस्तु तज्ज्यायान् परिवित्तिः कुरी च सः ।
 भ्रातुर्मृतस्य जायायां संसक्तो दिधिषूपतिः ॥ ४३ ॥
 स तु स्यादग्रदिधिषुर्योऽनुजो रमते तथा ।
 स्यादग्रदिधिषुश्चासौ स्यादग्रदिधिषूरपि ॥ ४४ ॥
 या ज्येष्ठायामनूढायामूढाऽग्रेदिधिषूरसौ ।
 पुनरूढा पुनर्भूः स्यादूर्मिला त्यक्तभर्तृका ॥ ४५ ॥
 देवरे विनियुक्ता या यात्यन्यं साऽभिसारिका ।
 प्रसभा निरिणा मीढा निर्लज्जा धर्षणी च सा ॥ ४६ ॥
 विस्तीर्णजानुर्विकटा नतजानुस्तु सिंहिका ।
 दूषिका क्रोधविवशा पृषता श्वेतबिन्दुका ॥ ४७ ॥

अन्यानुरक्ता विगता नष्टा संस्पृष्टमैथुना ।
 कन्याप्रसतिजा जारी हारी नाम्नैव दूषिता ॥ ४८ ॥
 हारिता पतितोत्पन्ना कोहली मुखरा भृशम् ।
 जडा तु पाली कुब्जा तु दुर्दर्शा कालिकापि च ॥ ४९ ॥
 धृष्टा प्रापणिका व्यङ्गा निघृष्टा कुत्सिता हता ।
 अरणिर्निस्स्पृहा पालिर्हर्षुला विकला सरुक् ॥ ५० ॥
 शरभा तु विशीर्णाङ्गी स्वल्पदेहा मङ्गषिका ।
 द्योता पिङ्गलकेशाक्षी ऋषभा वृषलक्षणा ॥ ५१ ॥
 वर्षकारी स्रवत्पाणिपादा राता विहारिणी ।
 साङ्कारिका तु पित्रादिगृहेष्वग्न्यादिदायिनी ॥ ५२ ॥
 वैधव्यलक्षणोपेता पतिघ्नी खण्डनाऽपि च ।
 सुता त्वजीववत्साया मातुर्या सा विदूषिका ॥ ५३ ॥
 विकटाद्यास्तु नोद्वाह्याः कन्यकाः सप्तविंशतिः ।
 उपयामः परिणयो विवाहो दारसङ्ग्रहः ॥ ५४ ॥
 उद्वाहोपयमौ पाणिग्रहो जम्बूलमालिका ।
 कन्यादाने तु यदत्तं यौतकं यौतुकं च तत् ॥ ५५ ॥
 गोपाली वर्णके शान्तियात्रावरनिमन्त्रणे ।
 दौन्दुभी वरयात्रायां धूलिभक्ते तु वार्तिकम् ॥ ५६ ॥
 स्यादिन्द्राणीमहे हेलिरुल्लुर्मुङ्गलध्वनिः ।
 धोरी हुलिहुली चासौ सैव मङ्गलमालिका ॥ ५७ ॥
 क्लीबे स्वस्त्ययनं पूर्णकलशे मङ्गलाह्निकम् ।
 नन्दिकौ तोरणस्तम्भौ शुक्रकूटस्तयोः स्रजि ॥ ५८ ॥
 सैव वन्दनमालाऽपि कुहलिः पूगपुष्पिका ।
 हस्तसूत्रं प्रतिसरस्तद्वन्धे हस्तकोहलिः ॥ ५९ ॥
 तद्ग्रन्थिस्त्ववका धानी कर्णं हस्तलेपनम् ।
 उत्सवेषु सुहृद्भिर्हृद् बलादाकृष्य गृह्यते ॥ ६० ॥
 वस्त्रमाल्यादि तत् पूर्णपात्रं पूर्णानकं च तत् ।
 उत्सवो मह उद्धर्ष उद्धवो दर्षवेणुकः ॥ ६१ ॥
 क्षणः पर्व च कल्याणं भोज्यं तु जठरोत्सवः ।
 मधुपर्कस्तु निष्ठङ्कः शङ्खपात्रं तु पाटली ॥ ६२ ॥
 यज्ञाध्ययनदानानि याजनाध्यापनग्रहाः ।
 षट्कर्माणि महायज्ञा देवयज्ञादिपञ्चकम् ॥ ६३ ॥

निवापः पितृदानं स्यादामपात्रं तु वापिमम् ।
 मृतस्नानमपस्नानं श्राद्धं तु पितृभोजनम् ॥ ६४ ॥
 दशाहे श्राद्धमाग्नेयं साज्यमेकादशेऽहनि ।
 सम्प्रेषणी द्वादशेऽहि मासप्राप्तौ तु मासिकम् ॥ ६५ ॥
 एवं त्रिपक्षी षाण्मासी ज्ञेया सांवत्सरीति च ।
 गयायां पिण्डदानं यत् पितृकार्यं तदार्यकम् ॥ ६६ ॥
 आम्रसेकस्तु यस्तत्र सा चारी सा पितृप्रपा ।
 त्रिष्वतिथ्यमतिथ्यर्थं विघसो विप्रशोषतम् ॥ ६७ ॥
 आवेशिकः स्यादागन्तुरातिथ्यः प्राहुणोऽतिथिः ।
 सूर्योदस्तु स सम्प्राप्तो यः सूर्येऽस्तं गतेऽतिथिः ॥ ६८ ॥
 अथान्याधानमाघेयमाधानं चाग्निसङ्ग्रहः ।
 होमस्तु सवनं होत्रं हवनं हुतिराहुतः ॥ ६९ ॥
 अग्निहोत्रं नित्यहोमः कुत्सितास्त्वग्निहोत्रिणः ।
 वीरोज्ज्वलप्रमुखास्तत्र वीरोज्ज्वलो न जुहोति यः ॥ ७० ॥
 अग्निहोत्रं स्वयं वर्षमुत्सन्नाग्निस्तु वीरहा ।
 अग्निहोत्रच्छलाद् याच्वापरो वीरोपजीवकः ॥ ७१ ॥
 वीरविप्लावको जुह्वद् धनैः शूद्रसमाहृतैः ।
 जातमात्रगृहीताग्निः स जातारणिर्द्विजः ॥ ७२ ॥
 यस्यौपासन एवाग्निरेकाग्निः काल्पिकश्च सः ।
 अग्न्याहितस्त्वाहिताग्निर्नमः पुनरनग्निकः ॥ ७३ ॥
 पर्याधाताऽप्रजेऽनमौ कृताधानोऽप्रजस्त्वसौ ।
 पर्याहितस्तथा न्यायः परियष्टृपरीष्टयोः ॥ ७४ ॥
 इज्याशीलो यायजूकः सोमपीथी तु सोमपः ।
 सुत्वा त्वभिषवादूर्ध्वं चितवानग्निमग्निचित् ॥ ७५ ॥
 यष्टा तु यजुरादेष्टा यजमानश्च होत्ववत् ।
 सोमे तु दीक्षितः सोत्वो यज्वा स्यादिष्टवानसौ ॥ ७६ ॥
 सर्ववेदाः स यो यागे दत्तसर्वस्वदक्षिणः ।
 यज्ञत्यागी वृथाजातोऽपञ्चयज्ञो मलिम्लुचः ॥ ७७ ॥
 याजका भरता यज्ञलिहः कुरव ऋत्विजः ।
 यत्सुचो देवयवो वाधतो वृक्तबहिषः ॥ ७८ ॥
 अर्ध्वयूद्वातृहोतारो ब्रह्मा चेति महत्विजः ।
 मन्त्राणां दैवतं छन्दो निरुक्तं ब्राह्मणान्यवीन् ॥ ७९ ॥

कृत्तस्त्रितादि चाज्ञात्वा यजन्तो यागकण्टकाः ।
 याजयन्तो लैङ्गधूमाः कौटास्तूभयकारिणः ॥ ८० ॥
 प्रसर्पको दृशीकुश्च दर्शनायाध्वरं गतः ।
 उपद्रष्टा सदस्यः स्याच्छान्दसश्रोत्रियौ समौ ॥ ८१ ॥
 अधीतसाङ्गवेदो यः सोऽनूचानो युगी गणिः ।
 यज्ञो यागोऽध्वरः स्तोमः सप्ततन्तुर्मखः सवः ॥ ८२ ॥
 सहसानुर्यजः सानुर्वसुनो विश्वहर्षकः ।
 पाकयज्ञाः पार्वणाद्या हविर्यज्ञास्त्वसोमकाः ॥ ८३ ॥
 पशुबन्धास्तु पशवः सोमाः सौम्याश्च सोमिनः ।
 सवनैस्त्रिभिरेकाहास्तैरावृत्तैरहर्गणाः ॥ ८४ ॥
 ते दीक्षितैः कृताः सत्राण्यहीना याजकैः कृताः ।
 अहीना द्वादशाहात् प्राक् सत्राण्यूर्ध्वं स तु द्वयः ॥ ८५ ॥
 सर्वेऽग्नी यज्ञकृतवस्त एवेन्द्राः प्रजागमाः ।
 ज्योतिष्टोमश्चतुष्टोमो ज्योतिरानृण्यमित्यपि ॥ ८६ ॥
 अग्निष्टोमादयः संस्थाभेदाः सप्तास्य तन्तवः ।
 सौमिकी दीक्षणीयेष्टिर्दीक्षा तु व्रतसङ्ग्रहः ॥ ८७ ॥
 प्रायणीयोदयनीयौ त्रिष्वाद्येऽन्त्ये च कर्मणि ।
 पुरोडाशस्य प्रथमे प्रणिकं प्रथिकैरुके ॥ ८८ ॥
 प्रोक्षण्यासादनं दैष्टं पत्नीसन्नहनं स्पशा ।
 सुचां सम्मार्जनं शुद्धिः सुगासादनमाहुतिः ॥ ८९ ॥
 हुतिराज्याधिश्रयणमाज्यावेक्षणमक्षतिः ।
 स्यादिधमप्रोक्षणं काष्णञ्चैत्यमाज्याधिवासनम् ॥ ९० ॥
 वेद्यास्तरणमाप्रासः प्रस्तरः स्तरणं छदिः ।
 त्रैहोत्रं समिदाधानमदितिस्तासु सेचनम् ॥ ९१ ॥
 पावकं सोमपानं स्यान्मिश्रकं तु घृताञ्जनम् ।
 उपांशुस्तु प्राणिकः स्यादन्तर्यामस्त्वपानिकः ॥ ९२ ॥
 श्यैतनौधसयोगानं सान्नोरुपनिमन्त्रणम् ।
 व्यञ्जनाः पशुमंस्काराः सामिकं त्वभिमन्त्रणम् ॥ ९३ ॥
 परम्पराकं शमनं प्रोक्षणं च पशोर्वधे ।
 अथ यज्ञोपकरणं यजत्रं यजनं च तत् ॥ ९४ ॥
 होमधेनुस्त्वग्निहोत्री होमकाष्ठी तु नालिका ।
 होमधूमस्तु निगणो होमभस्म तु वैष्णुतम् ॥ ९५ ॥

होमेन्धने स्यादिध्मोऽस्त्री पुमानेधः समित् स्त्रियाम् ।
 इन्धनं त्वेध आलाद्यमहोत्रं तु तृणेन्धनम् ॥ ६६ ॥
 काष्ठेन्धनं तु गरहं गोकरीषेन्धनं बुसा ।
 यवादि त्वकृतं हव्यं तण्डुलास्तु कृताकृतम् ॥ ६७ ॥
 अन्नादि कृतमामिक्षा दध्मोष्णं संयुतं पयः ।
 पयस्या च क्षीरशरस्तन्मस्तुनि तु वाजिनम् ॥ ६८ ॥
 सान्नाद्यं तु दधिक्षीरं पृषदाज्यं पृषातकः ।
 पृषतोऽपि च दध्याज्ये पुरोडाशस्तु तृप्रकः ॥ ६९ ॥
 हवनी सुक् सुचो भेदाः स्युर्जुह्वरुपभृद्भुवा ।
 अथामिहोत्रहवणी श्रपण्याधारणः सुवः ॥ १०० ॥
 चमसोऽस्त्री त्रिपात्राणि वायव्यं सौमिके त्रिषु ।
 परिप्लवार्थदण्डा सुक् दर्वी तु घृतलेखनी ॥ १०१ ॥
 चमूः स्त्री चर्म सुत्यार्थं प्रावाणस्त्वध्नयोऽश्मसु ।
 विघ्नो घ्नो मुद्ग्रे नरः फयोद्धननन्दनाः ॥ १०२ ॥
 यूपोऽस्त्री संस्कृतः स्तम्भो होमयूपस्तु शौभिकः ।
 यूपावग्निषु पार्श्वस्थावुपस्थाविति संज्ञितौ ॥ १०३ ॥
 अग्निष्ठं त्रिषु यूपादि यदग्नेः सम्मुखे स्थितम् ।
 यूपमध्यं समादानं यूपाग्रं तर्भं न स्त्रियाम् ॥ १०४ ॥
 कटकेऽस्य चषालोऽस्त्री मूले तूपरमक्षते ।
 वेष्टनं तु परिव्याणं कुम्बा सुगहना वृत्तिः ॥ १०५ ॥
 यूपे सप्तदशारत्नावरत्निर्मेथिकोऽधरः ।
 उत्तरेषां क्रमादाख्या उत्त्रासत्वरुमोचनः ॥ १०६ ॥
 तथाञ्जनो वैयतिथः क्षालनः शवशीर्षकः ।
 सुधन्वो रथगरुतः शैखालीकरञ्जकौ ॥ १०७ ॥
 वासवो वैष्णवस्त्वाष्ट्रः सौम्यो माधुरवेजनौ ।
 संघातिकारणिर्न क्ली कुशा वरुणकाष्ठिका ॥ १०८ ॥
 खर्जनी कृष्णविषाणा वेदिर्भूमिः परिष्कृता ।
 कुण्डं हवित्री हवनी कुण्डे स्याद्वर्तुले परम् ॥ १०९ ॥
 वेदिः स्त्रियां चतुष्कोणे त्रिकूटं तु त्रिकोणके ।
 तस्मिन्नास्तावसंस्तावौ स्तुवते यत्र सामभिः ॥ ११० ॥
 चात्वालोऽस्त्री मृत्वनः स्यादुत्करोऽवकरालयः ।
 शस्त्राण्युक्तानि सामानि स्तोत्राणि स्तुतयोऽपि च ॥ १११ ॥

याज्या पुरोऽनुवाक्या च याज्यापुटमिति द्वयम् ।
 सौविष्टकृत्यौ संयाज्ये कूर्चोलोलस्फुटी पशुः ॥ ११२ ॥
 स्त्र्यावित् क्रमो विधिः कल्प उपकल्पोऽनुकल्पकः ।
 पौर्वापर्यं त्वानुपूर्व्यं पर्यायोऽनुक्रमः क्रमः ॥ ११३ ॥
 अनुपात्यय आवृत् स्त्री परिपाठ्यानुपूर्व्यपि ।
 पर्ययस्त्वतिपातः स्यादतिक्रम उपात्ययः ॥ ११४ ॥
 इष्टं यागात्मकं कर्म पूर्तं खातादिकर्मणि ।
 आचारो वृत्तचारित्रचरित्रचरणानि च ॥ ११५ ॥
 वृत्तस्याध्ययनस्यापि सम्पत्तिर्ब्रह्मवर्चसम् ।
 पतनं सत्पथाद् भ्रंशश्चर्या त्वीर्योपथस्थितिः ॥ ११६ ॥
 हिसाकर्माभिचारः स्यान्मूलकर्म तु कार्मणम् ।
 वशीकारः संवननं विकर्माकार्यसेवनम् ॥ ११७ ॥
 त्यागो दानं वितरणं विश्राणनविसर्जने ।
 विहापनं निर्वपणं स्पर्शनं प्रतिपादनम् ॥ ११८ ॥
 उत्सर्जनं प्रादेशनमपवर्जनमंहतिः ।
 अतोयं सात्त्विकं दानमुदपूर्वं तु पौष्टिकम् ॥ ११९ ॥
 आशिषा शान्तिकं दानं काम्यदानं प्रवापणम् ।
 आशासनेऽर्थना याचना याचनाऽध्येषणाऽर्दना ॥ १२० ॥
 भिक्षा च सनिरङ्गी स्यान्मार्गणा तु गवेषणा ।
 पर्येषणा परीच्छा च मृगणाऽन्वेषणा मृगः ॥ १२१ ॥
 यस्तु नीलवृषोत्सर्गः स षण्डो वृषपूतनः ।
 उद्धन्धवृषभश्चायमापिङ्गलक इत्यपि ॥ १२२ ॥
 लोहितः स्यान्नीलवृषः पुच्छशृङ्गसुरे सितः ।
 यष्टिर्न ह्री स्त्रियां मीना खनित्री तु विशाखिका ॥ १२३ ॥
 बद्धदर्भो वेदयष्टिः कुण्डिका ना कमण्डलुः ।
 वैखानसो वनेवासी वानप्रस्थश्च तापसः ॥ १२४ ॥
 कापोतो वर्षमात्रस्य स वन्याहारसङ्ग्रहात् ।
 औदुम्बरस्तु षण्माससंग्रही तुर्यकालभुक् ॥ १२५ ॥
 परे त्रिषु तपस्वी स्यात्तापसः पारिकाङ्क्षिकः ।
 चतुर्थकालिको भिक्षुर्व्यष्टिरष्टमकालभुक् ॥ १२६ ॥
 चान्द्रायणरतश्चन्द्रव्रतिकः सौमिकश्च सः ।
 षष्ठकाली तु बलिको नौसो नक्षत्रकालिकः ॥ १२७ ॥

पुष्पाढ्यस्तु स्वयंशीर्णपुष्पमूलफलाशनः ।
 भुङ्क्ते पक्षान्तयोरेव यो यवान् स द्विकालिकः ॥ १२८ ॥
 शीर्णकः शीर्णपर्णाशी वृक्षमूली तु मूलिकः ।
 भूमौ विपरिवृत्त्यास्ते यः स पातालमूलिकः ॥ १२९ ॥
 वर्षवातातपानङ्गे विभ्रदभ्रावकाशिकः ।
 शिवव्रती स यो विप्रः पादेनैकेन तिष्ठति ॥ ३० ॥
 रुद्रव्रती क्षत्रियश्चेद् वाताहारस्त्वहिव्रती ।
 मत्स्यव्रती जलाचारस्तृणशय्यस्तु पर्णशः ॥ १३१ ॥
 तथैव स्यात् स्थण्डिलश औलकोऽङ्गारशाकटे ।
 पाणिपात्रस्तु खपुटो दन्तोल्लखलको व्युपः ॥ १३२ ॥
 पिबत्यधोमुखो धूमं यः स धुर्यावकतिकः ।
 जानुभ्यां जानुकस्तिष्ठन्नष्टप्रासो मुनिव्रती ॥ १३३ ॥
 पद्मासनी तु वसिकः क्षीराहारस्तु लोचकः ।
 नीवारपिष्टकानष्टावशनाति मुनिपिष्टकी ॥ १३४ ॥
 एकान्तर्येकान्तरिती तथा कालावलोलकः ।
 और्वव्रती जलाहारो घृताशी घृतभुग् घृती ॥ १३५ ॥
 तपो व्रतोऽस्त्री कृच्छ्रोऽस्त्री तच्च चान्द्रायणादिकम् ।
 चान्द्रायणं चन्द्रव्रतं प्राजापत्यं तु कृच्छ्रकम् ॥ १३६ ॥
 प्राजापत्यं तु गोकृच्छ्रं कृतं गोमूत्रयावकैः ।
 शिशुकृच्छ्रं कृतं पच्छः कच्छ्रमद्रिस्तु यः कृतः ॥ १३७ ॥
 कृच्छ्रः कृच्छ्रातिकृच्छ्रोऽसौ स्याद्वाहान्येकविंशतिम् ।
 शिशुकृच्छ्रातिकृच्छ्रं तत्त्रिसन्ध्यं चेदपः पिबेत् ॥ १३८ ॥
 प्राजापत्यं पाणिपात्रं पूर्णान्नेनातिकृच्छ्रकम् ।
 तप्तकृच्छ्रं तदस्नानात् क्षीरसर्पिर्जलैः कृतम् ॥ १३९ ॥
 एकैकं त्र्यहमभ्युष्णैः शीतैस्तैः शीतकृच्छ्रकम् ।
 बिल्वेन मासं श्रीकृच्छ्रं मूलकृच्छ्रं बिसाशनात् ॥ १४० ॥
 पानेन साम्बुसक्तूनां मासं वरुणकृच्छ्रकम् ।
 त्रिस्सप्ताहं पयःपानं क्वचित् कृच्छ्रातिकृच्छ्रकम् ॥ १४१ ॥
 पिण्याकाचामतक्राम्बुसक्तून् भुक्त्वा क्रमादहः ।
 उपोष्य सौम्यकृच्छ्रं स्याज्जलाचामौ विनैव वा ॥ १४२ ॥
 स्यात् तुलापुरुषोऽभ्यासादेकैकस्य दिनत्रयम् ।
 सौम्यस्य तु द्विरभ्यासात् स्यात्तुलापुरुषः शिशोः ॥ १४३ ॥

वपवासस्तूपवस्तुः सन्यासः स्यादनाशकम् ।
 द्वादशाहे पराको ना षोडशाहे तुरायणम् ॥ १४४ ॥
 तुरायणद्वये सौम्यं चातुर्मास्ये परायणम् ।
 पारायणं जलेनैतत् क्षीरेणैतत् परावसु ॥ १४५ ॥
 एकान्तरितमर्धांशं षष्ठकालेषु षाष्टिकम् ।
 गोमूत्रयावकैर्मासो वज्रोऽस्त्री यावकैः पुनः ॥ १४६ ॥
 त्र्यहं वज्राभिषवणं पयसा तु पयोव्रतम् ।
 पञ्चरात्रं पयःपानं सङ्गमः सङ्गतश्च सः ॥ १४७ ॥
 मासं गोष्ठे पयःपानं गोव्रतं ब्राजिकं च तत् ।
 पिबेद् ब्रह्मसुवर्चलामुपोष्योपस्करव्रतम् ॥ १४८ ॥
 कणान्नस्यैव भोजनं द्वादशाहं वसुव्रतम् ।
 कुशापीडः कुशवटो व्रतिनामासनं व्रसी ॥ १४९ ॥
 योगपट्टस्तु चीना स्यात् पर्यस्तिरवसक्थिका ।
 ऋषिस्त्रिकालदर्शी स्यान्मौनी वाचंयमो मुनिः ॥ १५० ॥
 अगस्त्यः कलशीपुत्रस्तपनः पीतसागरः ।
 और्वशेयः कुम्भयोनिरगस्तिर्विन्ध्यकूटकः ॥ १५१ ॥
 मैत्रावरुणिराग्नेयो मुनिर्वातापिसूदनः ।
 दक्षिणाशारतः काथिः सत्याग्निश्चाग्निमारुतः ॥ १५२ ॥
 तस्य कौषीतकी भार्या लोपामुद्रा वरप्रदा ।
 प्राचेतसस्तु वाल्मीकिर्वाल्मीकश्च कुशी कविः ॥ १५३ ॥
 सालातुरीयको दाक्षीपुत्रः पाणिनिराहिकः ।
 हलभूतिस्तूपवर्षः कृतकोटिकविश्च सः ॥ १५४ ॥
 याज्ञवल्क्यस्तु योगाञ्जिर्योगेशो ब्रह्मरात्रिकः ।
 आपवस्तु वसिष्ठः स्याद्यज्ञाढ्यस्तु पराशरः ॥ १५५ ॥
 गौतमस्तु शतानन्दो यवक्रीतस्तु रोहितः ।
 यायावरो जरत्कारुर्दुर्वासास्तु कुंशारणिः ॥ १५६ ॥
 अष्टावक्रस्तु गर्भाजिर्दृढच्युत्स्विधमवाहकः ।
 मत्स्यगुश्चयवनोऽथ स्याद् गोनर्दीयः पतञ्जलिः ॥ १५७ ॥
 अथ व्यालिर्विन्ध्यवासी नन्दनीनन्दनोऽपि च ।
 कात्यायनो वररुचिर्मेघजिष्णु पुनर्वसुः ॥ १५८ ॥
 चात्स्यायनस्तु कौटिल्यो विष्णुगुप्तो वराणकः ।
 द्राविलः पक्षिलः स्वामी मल्लनागोऽङ्गुलोऽपि च ॥ १५९ ॥

यतिः पाराशरी भिक्षुः परिव्राट् पाररक्षिकः ।
 अनाशकी प्रव्रजितः कर्मन्दी मस्करी यती ॥ १६० ॥
 परमात्मा परो ब्रह्म जीवः क्षेत्रज्ञ आविशः ।
 शक्तिस्तु माया प्रकृतिर्व्योमाख्यं मूलकारणम् ॥ १६१ ॥
 असदक्षरमव्यक्तं तमः सदसदात्मकम् ।
 अलिङ्गं गुणसामान्यं गुणाः सत्त्वं रजस्तमः ॥ १६२ ॥
 महान्तु लैङ्गिको ब्रह्मा लिङ्गज्येष्ठश्च चेतना ।
 मनीषा शेमुषी बुद्धिर्धीः पूः ख्यातिर्विदा बुधा ॥ १६३ ॥
 ज्ञप्तिः पण्डोपलब्धिस्तु संवित्तरनुभूश्चितिः ।
 अवगत्यनुभूती चिज्ज्ञप्तिर्ज्ञानं च बोधनम् ॥ १६४ ॥
 षोढा धीस्तत्त्वधीः पण्डा मेधा धीर्धारणक्षमा ।
 ऊहापोहक्षमा चार्वी गृहीतिर्ग्रहणक्षमा ॥ १६५ ॥
 शुश्रूषाबहुला श्रौषिः श्रवणज्ञा तु चत्वंरी ।
 धृतिस्तु तुष्टिः सन्तोषः प्रौढिस्तु कियदेतिका ॥ १६६ ॥
 यत्नोत्साहोद्यमायामास्तरिषोऽध्यवसायवत् ।
 बैराग्यं मर्दमुद्वेगो निर्वेदश्च विरागवत् ॥ १६७ ॥
 धर्मोऽस्त्री सुकृतं पुण्यं पाप्माधर्मौ तु दुष्कृतम् ।
 दुरितं पातकं पापं त्रस्तमंहोऽघकल्मषे ॥ १६८ ॥
 स्मयोऽभिमानोऽहङ्कारो गर्वः स्त्री गर्विरस्मिता ।
 शौटीर्यञ्चाथ शृङ्गारगर्वे घङ्गोरवेङ्करो ॥ १६९ ॥
 आहोपुरुषिका सा यद् गर्वादात्मनि गौरवम् ।
 अहं पूर्यमहं पूर्वमित्यहम्पूर्विकोज्ञतिः ॥ १७० ॥
 सा स्यादहमहमिका योऽहङ्कारः परस्परम् ।
 अत्याकारः परिभवस्तिरस्कारोऽप्यनादरः ॥ १७१ ॥
 रीढाऽवमाननाऽवज्ञाऽप्यवहेलमसूक्ष्मम् ।
 उच्चलं मानसं चेतश्चित्तमुच्चलितं मनः ॥ १७२ ॥
 स्वान्तं गूढपदं हृष सङ्कल्पो मानसी क्रिया ।
 मनो बुद्धिरहङ्कार इत्यन्तःकरणं त्रिधा ॥ १७३ ॥
 आकृतिर्मतमाकृतं भावोऽभिप्राय आशयः ।
 चित्ताभोगो मनस्कार उत्प्रेक्षा स्वमनीषिका ॥ १७४ ॥
 मीमांसा तु विजिज्ञासा प्रत्यगृष्टिर्विकुण्ठना ।
 तर्कमूलिकसम्मर्श ऊहो न कल्यूहना न ना ॥ १७५ ॥

सम्भाषना स्यादाशङ्का वितर्कस्तर्कमस्त्रियाम् ।
 प्रतिभा प्रतिभासः स्यान्निर्णयोऽन्तश्च निश्चयः ॥ १७६ ॥
 विचिकित्सा तु सन्देहः संशयो विशयो भ्रमः ।
 विस्मरणं प्रस्मरणमुन्मादश्चित्तविभ्रमः ॥ १७७ ॥
 तन्द्रा कौसीद्यसालस्यं प्रमादोऽनवधानता ।
 स्यादायल्लकमौत्सुक्यमुत्कण्ठोत्कलिका रतिः ॥ १७८ ॥
 हृल्लेखो रणरणकोऽप्यभिध्या विषमस्पृहा ।
 तृषिः काङ्क्षा स्पृहेहेच्छा वाञ्छा कामो मनोरथः ॥ १७९ ॥
 अभिलाषश्च लिप्सा तु धनायेप्सा च गर्धना ।
 गर्भिण्याः पुनरिच्छायां श्रद्धा दोहलदौहृदे ॥ १८० ॥
 रागोऽनुरागोऽनुरतिर्वीक्षायां मोहविस्मयौ ।
 शोषुर्ना शुषकोदन्या पिपासाऽप्यपलासिका ॥ १८१ ॥
 क्षुभुचेच्छाऽशनाया क्षुज्जिघत्साऽशिशिषा पचिः ।
 रावयलौल्यं तु कौहोलं तपसीच्छा प्रशान्तिकम् ॥ १८२ ॥
 शोकस्तु मन्युहृत्वेदः शुक् स्त्री दैन्यानुशोचने ।
 क्रोधः कोपोऽमर्षरोषौ रुषा रुट्क्रुतक्रुधाः स्त्रियः ॥ १८३ ॥
 मर्षः क्षमा तितिक्षा स्यादसूया दोषहृत्पुणे ।
 वैरं विरोधो विद्वेष ईर्ष्या मात्सर्यमुन्नते ॥ १८४ ॥
 तङ्कोऽस्त्री भीर्भिया भीतिः साध्वसं भयनं भयम् ।
 विप्रतिसारेऽनुशयः पश्चात्तापोऽनुतापवत् ॥ १८५ ॥
 स्नेहोऽस्त्री प्रेम सौहार्दमजय्यं हार्दसौहृदे ।
 आनन्दनं सङ्गतं स्यादप्रच्छन्नं सभाजनम् ॥ १८६ ॥
 सख्यं सात्प्रपदीनं स्यात् कौतुकं तु कुतूहलम् ।
 कौतूहलं विनोदश्च दुःखं पीडान्यथाऽऽर्तयः ॥ १८७ ॥
 सम्भरस्तु मदो हर्षः प्रमोदो मोदसम्मदौ ।
 आनन्दो नन्दशुद्धादस्तृप्तिमुन्नन्दिहृष्टयः ॥ १८८ ॥
 शर्म शातं सुखं सौख्यमयः शुभफलो विधिः ।
 विधौ दैवं दिष्टभाग्ये विपाको भवितव्यता ॥ १८९ ॥
 उपलिङ्गं त्वरिष्टं स्यादजन्यं डिम्बविप्लवौ ।
 डमरोपप्लवोत्पाता उपसर्ग उपद्रवः ॥ १९० ॥
 सम्पत् सम्पत्तिलक्ष्यौ श्रीर्विपत्तिर्विपदापदौ ।
 अवसादस्तु सादः स्याद्विषादश्च श्लिक्कुर्न ना ॥ १९१ ॥

उमता तूष्प्रिका रौद्री करुणा तु दया कृपा ।
 घृणाऽनुकम्पाऽनुक्रोशः कारुण्यं चाथ कौकुटे ॥ १६२ ॥
 क्लेशायासौ जुगुप्सा तु हृणीया हृणिया घृणा ।
 ऋतिः कुत्साऽप्युपक्रोशो गर्हा दोषश्च गर्हणा ॥ १६३ ॥
 मन्दाक्षं ह्रीक्षपा लज्जा ब्रीला साऽपत्रपाऽन्यतः ।
 हासिका तु हसो हासो हसनं हास्यघर्घरे ॥ १६४ ॥
 व्याजो मिषं छलं छद्म निभं च कपटोऽस्त्रियाम् ।
 दम्भो दण्डाजिनं कूटं दौन्दुभिश्छन्दनोपधा ॥ १६५ ॥
 रेभटिः कुक्कुटिर्मिथ्याचर्या च परिकल्पना ।
 जागरितं जागरणं जागर्या जागरा न षण् ॥ १६६ ॥
 प्रमीला तामसी तन्द्रा स्वापस्तु स्वप्नसंशयौ ।
 निद्रा गुडाका सुप्तं च स्वप्नस्त्वेवात्र दर्शनम् ॥ १६७ ॥
 संस्कारमात्रजः स्वप्नः कामिको रसकोऽपि च ।
 अट्टष्टजस्त्वत्र चाप्रो दोषजस्त्वाङ्गलौकिकः ॥ १६८ ॥
 प्रदोषे बलकः स्वप्नो निशीथे लोचमालकः ।
 नचकोऽपररात्रे स्यात् सद्यःपाको निशात्यये ॥ १६९ ॥
 नन्दीमुखी आसहेतिः सुषुप्तिः सुखसुप्तिका ।
 मूर्च्छा तु मूर्च्छना मौढ्यं वैचित्त्यं कश्मलं लयः ॥ २०० ॥
 कालधर्मस्तु दिष्टान्तो निपातो गमिरन्धकः ।
 कटमोर्षो भूमिलाभो दीर्घनिद्रा निमीलनम् ॥ २०१ ॥
 पञ्चत्वं मरणं मृत्युरक्ली स्यादमृतोऽस्त्रियाम् ।
 सर्वलोकतते मृत्यौ मारिः स्त्री मारकोऽस्त्रियाम् ॥ २०२ ॥
 हृषीकमिन्द्रियं प्राणः प्राणा ना भूम्नि चासवः ।
 प्राणापानादयस्त्वस्य वृत्तयः पञ्च वायवः ॥ २०३ ॥
 आसस्तु आसितं सोऽन्तर्मुख उच्छ्वास आहरः ।
 आनश्चाथ बहिर्वृत्तो निश्वासः पान एतनः ॥ २०४ ॥
 स्थिरस्त्वाश्वास एती च स्यादूवद्धयं गुदानिले ।
 तन्मात्राण्यविशेषाः स्युर्विशेषाः पञ्च खादयः ॥ २०५ ॥
 महाभूतानि भूतानि लोको भुवनविष्टपे ।
 मर्त्यलोको जीवलोको मर्त्योऽप्यथ भुवोऽव्ययम् ॥ २०६ ॥
 स्वर्महश्च क्रमाल्लोका महरेव महानपि ।
 प्राजापत्यो जनस्तस्माद् गोलोकस्तु तपो न पुम् ॥ २०७ ॥

ब्रह्मलोकः सत्यलोकस्तत्र पुर्यपराजिता ।
 योगस्त्वाध्यात्मिकोऽथासावष्टाङ्गोऽङ्गैर्यमादिभिः ॥ २०८ ॥
 अहिंसा सत्यमस्तेयं ब्रह्मचर्यमसङ्गप्रहः ।
 यमाः स्युर्नियमाः शौचसन्तोषतपआदयः ॥ २०९ ॥
 आसनं करणं तस्य भेदाः पद्मासनादयः ।
 उत्तानौ चरणावूर्वोन्यस्येन्नाभौ करद्वयम् ॥ २१० ॥
 दक्षिणोत्तरमुत्तानं प्राणदृक् पद्मकासनी ।
 अर्धपद्मासनं त्वेकपाद उरोरधःस्थिते ॥ २११ ॥
 निगूढचरणं तूर्वोरधश्चेन्नरावुभौ ।
 पादौपवेशस्त्वन्वर्थः संयुज्य पदयोस्तले ॥ २१२ ॥
 ते चत्वारोऽपि पर्यङ्का पृष्ठवंशशिरोधरम् ।
 नियम्य मीलिताक्षश्चेत्पर्यस्तकरणेन वा ॥ २१३ ॥
 नागदन्तकमूर्ध्वज्ञोर्जानुस्थौ प्रसृतौ भुजौ ।
 सूचीमुखमिदं पाणितलौ चेत्संहतौ मिथः ॥ २१४ ॥
 अर्धसूची तु तौ द्वौ चेत् प्रादेशान्तरतो मुखात् ।
 कुट्मलं मुकुलीभूतौ तौ चेदूर्ध्वमुखौ स्थितौ ॥ २१५ ॥
 अस्पृष्टौ नागदन्तस्य स्फिचौ चेद् भुवमुत्कटम् ।
 वहित्रकर्णः संयुज्य जङ्गायुग्मप्रसारणात् ॥ २१६ ॥
 एष पादप्रसारोऽपि स्यादथो मरणालसम् ।
 वस्तिशुण्डकमप्यस्य जङ्घिका चेत्प्रसारिता ॥ २१७ ॥
 अर्धनाकुलमूर्ध्वज्ञोर्जङ्घे बद्धे भुजेन चेत् ।
 द्वाभ्यां चेन्नाकुलं दोर्भ्यामथ वज्रासनं यदि ॥ २१८ ॥
 जङ्घे पद्मासनावस्थे तत्सन्धिनिहितौ करौ ।
 ताभ्यामेव स्थितौ भूमावन्तरिक्षासनं च तत् ॥ २१९ ॥
 गोधासनं तदेकेन स्थितश्चेत् पाणिना भुवि ।
 पद्मासनस्य पदयोः पाणिना पृष्ठगामिना ॥ २२० ॥
 वामेन दक्षिणाङ्गुष्ठं वामं चान्येन पीडयेत् ।
 वेतालासनमित्येतदेकाङ्गुष्ठप्रहात् किणः ॥ २२१ ॥
 कर्णयोर्जानुपार्श्वोभ्यां स्पर्शं जानुनिकुञ्चनम् ।
 भुजवेष्टितजङ्घोरोश्चूलिकाश्लेषितावनेः ॥ २२२ ॥
 पृष्ठतो भुजपाशश्चेन्मृत्युसंयमनोऽपि सः ।
 बिन्दुभेदोऽप्यथो जानुसन्ध्योः पादप्रवेशनात् ॥ २२३ ॥
 स्वास्तिकोऽथ समस्थानं पादौ कुञ्चितसम्पुटौ ।
 आसीनस्यासनान्येतान्यथ सुप्तस्य साम्यतः ॥ २२४ ॥

गवादीनां निषण्णानां स्याद्वोनिषदनादिकम् ।
 उत्तानस्योर्ध्वपादत्वमित्येतद्विद्विभासनम् ॥ २२५ ॥
 दण्डासनादिभेदेन पञ्चधा स्यात् स्थितासनम् ।
 दण्डासनं स्यादन्वर्थं यत्र दण्डवदुत्थितः ॥ २२६ ॥
 स्याद्वीरासनमुत्पादः कृत्वा भूमौ शिरः स्थितः ।
 दुर्योधनासनमपि मृत्युसंयमनोऽपि सः ॥ २२७ ॥
 दण्डपद्मासनं तस्मिन् जङ्घे पद्मासनोचिते ।
 त्रिविक्रमासनं तादर्यासनमित्यपि साम्यतः ॥ २२८ ॥
 प्राणायामः प्राणयम उत्त्वातो मानमस्य यत् ।
 छोटिकास्त्रिः परामृश्य जानुस्फोटक्रियाऽथ ताः ॥ २२९ ॥
 षट्त्रिंशन्मन्द उत्त्वातो द्विगुणत्रिगुणौ पुनः ।
 मध्यमश्चैवोत्तमश्च प्रथमो द्वादशैव वा ॥ २३० ॥
 प्रत्याहारस्त्विन्द्रियाणां विषयेभ्यः समाहृतिः ।
 धारणा तु कचिद्धये चित्तस्य स्थिरबन्धनम् ॥ २३१ ॥
 ध्यानं तु विषये तस्मिन्नेकप्रत्ययसन्ततिः ।
 समाधिर्ना तदेवार्थमात्राभासनरूपकम् ॥ २३२ ॥
 प्रयुक्तं धारणाद्येतत्त्रयमेकत्र संयमः ।
 ओङ्कारः प्रणवस्तारस्तारकं सर्वविन्मतिः ॥ २३३ ॥
 विद्वान् सन् कोविदः सूरिर्मेधावी पण्डितो बुधः ।
 सुधीर्विपश्चित् सङ्ख्यावान् प्राज्ञो धीमान् विचक्षणः ॥ २३४ ॥
 दीर्घदर्शी दूरदर्शी लघ्ववर्णो मनीष्यपि ।
 त्रिवर्गो धर्मकामार्थाश्चतुर्वर्गः समोक्षकः ॥ २३५ ॥
 सबलैस्तैश्चतुर्भद्रः शास्त्रीयं तु फलं गतिः ।
 सान्द्रष्टिकं फलं सद्यः कार्यं कृत्यं प्रयोजनम् ॥ २३६ ॥
 प्राप्तिरैक्येन सायुज्यं सार्ष्टिरैश्वर्यतुल्यता ।
 ब्रह्मभूयं ब्रह्मभावो देवभूयादिकं तथा ॥ २३७ ॥
 अमृतत्वं तु कैवल्यं मुक्तिर्मोक्षोऽपुनर्भवः ।
 मोक्षावलम्बिनः प्रायः पाषण्डा बाह्यलिङ्गिनः ॥ २३८ ॥
 ते च हेरुकशोभाद्याः प्रोक्ताः षण्णवतिः क्वचित् ।
 दशोत्तरं शतं कैश्चित् पाषण्डानां प्रदर्शितम् ॥ २३९ ॥
 शतत्रयं षष्ट्यधिकमुक्तं चीनेशसंसदि ।
 वेषाजीवकृतान्ताद्यैस्तेषां भेदः परस्परम् ॥ २४० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्या
 भूमिकाण्डे ब्राह्मणाध्यायः ॥ ६ ॥

क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

क्षत्रं बाहुजराजन्यौ भूशक्रः क्षत्रियो विराट् ।
 राजा तु पार्थिवो भूभुग् राड् भूपो नृपतिर्नृपः ॥ १ ॥
 नरेन्द्रो नरदेवश्च वश्यामात्यस्त्वधीश्वरः ।
 सार्वभौमश्चक्रवर्ती नृपोऽन्यो मण्डलेश्वरः ॥ २ ॥
 स्वाम्यमात्यसुहृत्कोशराष्ट्रदुर्गबलानि च ।
 राज्याङ्गानि प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि च ॥ ३ ॥
 गुणाः साङ्गप्रामिकाः सर्वे स्वामिनस्त्वाभिगामिकाः ।
 इन्द्रव्रतादयश्चाष्टौ सम्पत्तिर्विपदोऽपराः ॥ ४ ॥
 तत्र याः शक्तयस्तिष्ठः प्रभावोत्साहमन्त्रजाः ।
 बाहुगुण्यमस्त्राद्यभ्यासो गुणाः साङ्गप्रामिका इमे ॥ ५ ॥
 षड्गुणा आसनं यानं द्वैधं विग्रह आश्रयः ।
 सन्धिश्चेन्द्रयमादीनां वृत्तमिन्द्रव्रतादिकम् ॥ ६ ॥
 अथ विद्यार्जनं दानमष्टवर्गस्य वर्धनम् ।
 द्विकपञ्चकषट्काणां विजयः सप्तवर्जनम् ॥ ७ ॥
 उपायनैपुणं धर्म इत्याद्याः शोभनाः क्रियाः ।
 दृष्टादृष्टोदयार्था यास्ते गुणा आभिगामिकाः ॥ ८ ॥
 तत्राष्टवर्ग आरम्भः कृषिः सेतुर्वणिक्पथः ।
 खनिस्थानं वनच्छेदो दुर्गं शून्यनिवेशनम् ॥ ९ ॥
 द्विकं तु मनआत्मानाविन्द्रियाणि तु पञ्चकम् ।
 षट्कं कामो मदो मानो लोभो हर्षो रुषाऽपि च ॥ १० ॥
 मृगयाक्षाः स्त्रियः पानं वाक्पारुष्यार्थदूषणे ।
 दण्डपारुष्यमित्येतन्महाव्यसनसप्तकम् ॥ ११ ॥
 मुख्योपायास्तु सामाद्याः क्षुद्रोपायाः पुनस्तयः ।
 मायोपेक्षेन्द्रजालं चेत्येते माया तु शाम्बरी ॥ १२ ॥
 इन्द्रजालं तु कुहकमुपेक्षा त्ववधीरणम् ।
 उपजापस्तु भेदः स्यात् साम सान्त्वं च सान्त्वनम् ॥ १३ ॥
 तन्त्रं स्वराष्ट्रचिन्ता स्यादावापस्त्वरिचिन्तनम् ।
 अदृष्टं वक्षितोयादि दृष्टं स्वपरचक्रजम् ॥ १४ ॥

राज्ञामहिभयं तु स्यात् स्वपक्षप्रभवं भयम् ।
 हैमं सिंहासनं भद्रासनं त्वन्यन्तृपासनम् ॥ १५ ॥
 छत्रं स्यादातपत्रं तन्तृपलक्ष्म नृपस्य चेत् ।
 अभिसारस्त्वनुचरः सहायोऽनुप्लवोऽनुगः ॥ १६ ॥
 सेवकश्चानुजीवी च यस्तु कालेसहायकः ।
 वैहासिकः केलिकिलस्तस्मिन् हासनिकोऽपि च ॥ १७ ॥
 सामन्ता राजसन्धिस्था आरक्षाः पुररक्षिणः ।
 मन्त्र्यमात्यौ तु धीकर्मसहायेऽतः परे त्रिषु ॥ १८ ॥
 अध्यक्षः स्यादधिकृतः स्थाने चेत् स्थानिको ह्यसौ ।
 क्षुद्रोपकरणेषु स्यादध्यक्षः पारिकर्मिकः ॥ १९ ॥
 कुमारोऽमात्यको मन्त्री वर्गे धर्मे तु धार्मिकः ।
 हृष्टे धीकर्मिकः पुर्या चोरिको दण्डपाशिकः ॥ २० ॥
 रजते नैष्किको ग्रामे स्थायुको हेमि भौरिकः ।
 महानसे पौरोगवो दण्डपालोऽखिले णले ॥ २१ ॥
 अन्तःपुरेऽन्तर्बशिको गोपो ग्रामेषु भूरिषु ।
 कालिकोऽधिकृतः शुल्के सौविदस्तु सौविदः ॥ २२ ॥
 स्थापत्यकञ्चुक्यार्याश्च षण्डो वर्षवरः समौ ।
 प्रदेष्टा पञ्चजनीनो भाण्डागारिक इत्यपि ॥ २३ ॥
 दौवारिको वेत्रधरो द्वास्थः क्षत्ता च दर्शकः ।
 द्वारपाले पुरोधास्तु सौवस्तिकपुरोहितौ ॥ २४ ॥
 मौहूर्तिकमौहूर्तज्यौतिषिकज्ञानिगणकदैवज्ञाः ।
 सावत्सर आदेशी कार्तान्तिक इत्यमी तुल्याः ॥ २५ ॥
 यथार्हवर्णो मन्त्रज्ञो भीमरो गूढपूरुषः ।
 चारोऽप्यथ वणिग्भिक्षुश्चात्रो लिङ्गी कृषीवलः ॥ २६ ॥
 इति संस्थाचराः पञ्च तत्र भिक्षुरुदास्थितः ।
 कृषीवलो गृहपतिश्चात्रे कापटिकश्चरे ॥ २७ ॥
 सञ्चारास्त्वपरे चाराः स्थिताः संस्थाचरेषु ये ।
 तीक्ष्णोऽतिहिंसनः शूरश्छत्री छद्मप्रधारवान् ॥ २८ ॥
 अपसर्पाः कर्मकरव्याजात् स्थाने वसन्ति ये ।
 वार्तिकः सन्देशहरो दूतः सान्देशिको रभूः ॥ २९ ॥
 वैतालिको बोधकरो वन्दी तु स्तुतिपाठकः ।
 मागधो मधुको घण्टाताडे घण्टिकचातिकौ ॥ ३० ॥

कृताभिषेका महिषी महादेव्यप्यथापरा ।
 देवी राजकुलोत्था चेत् परिवृत्ती तु पूजिता ॥ ३१ ॥
 वावाता तु प्रियतमा स्वामिनी त्वनृपात्मजा ।
 फालाकली युद्धजिता नृपस्योढाः प्रिया इमाः ॥ ३२ ॥
 अनूढास्तु प्रिया राज्ञः कलाज्ञा गणिकाः स्मृताः ।
 गणिका सा प्रगणिका यानाप्तपरिचारिका ॥ ३३ ॥
 आज्ञा स्यादाज्ञागणिका या राज्ञाप्तपरिच्छदा ।
 अथालगन्धिकाऽप्याज्ञागणिका कुलसम्भवा ॥ ३४ ॥
 या तु भोगाय वेश्यात्वं गता वैषयिकीति सा ।
 बन्धकी तु गता वेशमर्थयानाप्तसत्कृतिः ॥ ३५ ॥
 शय्यास्त्रभूषणादौ तु निधुक्ता परिचारिका ।
 सञ्चारिका महाकार्ये कथायां द्रविणादिषु ॥ ३६ ॥
 विचारिका तूपवनकक्षान्तरविचारिणी ।
 आशीस्स्वस्त्ययनाभिज्ञा या वृद्धा सा महत्तरी ॥ ३७ ॥
 प्रतिहारी तु राजानं सम्भावयति या सदा ।
 आयुक्तिविनियुक्ता या सा ताम्बूलकरङ्गिका ॥ ३८ ॥
 असिकन्यन्तःपुरप्रेष्याऽनाप्तभोगा कुमारिका ।
 विषयानन्तरो राजा शत्रुमित्रमतः परम् ॥ ३९ ॥
 उदासीनः परस्तस्मात् पाष्णिग्राहस्तु पृष्ठतः ।
 शत्रुर्दस्युरमित्रारी अरातिरहितो द्विषन् ॥ ४० ॥
 द्वेषणः प्रत्यनीको द्विद् जिघांसुर्हिसनो रिपुः ।
 सपत्नोऽसहनो वैरी दूषकः शात्रवः परः ॥ ४१ ॥
 प्रत्यर्थी पर्यवस्थाता प्रतिपक्षो विपक्षकः ।
 दुर्हृद् द्वेष्यभियातिश्च परिपन्थी विरोध्यपि ॥ ४२ ॥
 मित्रं नपुं त्रिषु स्निग्धवयस्येष्टहितप्रियाः ।
 निजात्मीयाप्तसुहृदः सहायः सदुचिः सखा ॥ ४३ ॥
 कोशोऽर्थसञ्चयो राज्ञां भाण्डान्यर्था हि कोशगाः ।
 आयोदयौ धनोत्पत्तौ तत्क्षयेऽपचितिव्ययः ॥ ४४ ॥
 पर्याहारः प्रजास्वायो भागधेयो बलिः करः ।
 उपदा तूपहारः स्यादुपग्राह्यमुपायनम् ॥ ४५ ॥
 प्रदेशनं प्राशृतं च लम्बा तृकोच आमिषः ।
 दण्डो दमः साहसोऽस्त्री द्विपाद्यो द्विगुणो दमः ॥ ४६ ॥

अपराधो मन्तुरेनः खसृमं विप्रियागसी ।
 अपवादस्तु निर्देशो निदेशः शासनं तथा ॥ ४७ ॥
 शिष्टिराज्ञाऽप्यथ न्यायो देशरूपं समञ्जसम् ।
 राष्ट्रं तु विषयः सोऽपि युक्तो ग्रामैः शताधिकैः ॥ ४८ ॥
 उपवर्त्तनमप्यस्मिन्मण्डलं तैः शताधिकैः ।
 दुष्प्रापं तु पुरं दुर्गं यन्त्रशैलजलादिभिः ॥ ४९ ॥
 वारकादीनि यन्त्राणि परिखाया बहिभवि ।
 पादुका कण्टकी गर्तः पांसुच्छन्नो महापथे ॥ ५० ॥
 तलयन्त्रं क्षुराकारं यदि वा क्रकचोपमम् ।
 श्वदंष्ट्रागलशृङ्गाटमण्डूकाद्यन्वितार्थकम् ॥ ५१ ॥
 शरभा जानुमात्री दा दारुजा जानुभञ्जिनी ।
 अवपातस्तु हस्त्यर्थो गर्तश्छन्नस्तृणादिना ॥ ५२ ॥
 स्यात् कण्टकप्रतीसारा रज्जुः कण्टकसञ्चिता ।
 अहिपृष्ठं तु निर्मासपृष्ठास्थ्याभमयोमयम् ॥ ५३ ॥
 उपस्करप्रस्त्रलिनी भूमिः स्थपुटपिच्छिला ।
 छन्नैरेतैश्छन्नपथं सुरुङ्गादिः कृतश्च यः ॥ ५४ ॥
 सैन्यं चक्रं बलं सेना चमूर्वाहिन्यनीकिनी ।
 पताकिनी च पृतना ध्वजिनी च वरूथिनी ॥ ५५ ॥
 सैन्यं तु भिन्नकूटं तन्नष्टावान्तरनायकम् ।
 शून्यमूलं तदस्थानमन्तश्शल्यं तदोषकम् ॥ ५६ ॥
 त्रिहयं पञ्चपादात् यदेकरथकुञ्जरम् ।
 सैन्यं सा पत्तिरेतस्यास्त्रैर्गुण्यात् स्युर्यथाक्रमम् ॥ ५७ ॥
 सेनामुखं गुल्मगणौ वाहिनी पृतना चमूः ।
 अनीकिनीत्यनीकिन्यः पुनरक्षौहिणी दश ॥ ५८ ॥
 प्रत्यासारश्चमूपाणिः सज्जनं तूपरक्षणम् ।
 हस्त्यश्चरथपादात् बलं स्यात्तुरङ्गकम् ॥ ५९ ॥
 इभो मतङ्गजो हस्ती दन्ती कुम्भी करी रदी ।
 सम्बेरमो गजो गर्जो द्विरदोऽनेकपो द्विपः ॥ ६० ॥
 दन्तावलो महाकायो वारणः कुञ्जरोऽसुरः ।
 महामृगः शूर्पकर्णः सामजः सिन्धुरः कपिः ॥ ६१ ॥
 मदवृन्दः कुपी कम्बुः शुण्डालः षष्टिहायनः ।
 भद्रो मन्द्रो मृग इति गजाः सङ्करजास्तथा ॥ ६२ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गभद्रत्वं संक्षिप्तं भद्रलक्षणम् ।
 पृथुत्वं श्रुतता स्थौल्यं संक्षिप्तं मन्द्रलक्षणम् ॥ ६३ ॥
 तनुप्रत्यङ्गदीर्घोच्चप्रायो मृगगणो मृगः ।
 भद्रमन्द्रो भद्रमृगो भद्रमन्द्रमृगोऽपि च ॥ ६४ ॥
 मन्द्रभद्रादयोऽप्येवमिति सङ्करजा नव ।
 ऊर्ध्वाधःकायभेदात्ते द्विधेत्यष्टादशोदिताः ॥ ६५ ॥
 पञ्चवर्षो गजो बालः पोतस्तु दशवर्षकः ।
 त्रिंशद्वर्षस्तु कलभो विक्को विंशतिवर्षकः ॥ ६६ ॥
 कालेऽप्यजातदन्तश्च स्वल्पाङ्गोऽपि च मकणः ।
 आज्ञाकृद्विनयग्राही यूथनाथस्तु यूथपः ॥ ६७ ॥
 लग्नो मदकलो मत्तः प्रभिन्नोऽप्यथ निर्मदः ।
 उद्धान्तोऽसौ परिणतस्तिर्यग्दन्तप्रहारकः ॥ ६८ ॥
 औपवाह्यो राजवाह्यः सन्नाह्यः समरोचितः ।
 स्थूलह्रस्वरदोऽसोढ ईषादन्त उदमदन् ॥ ६९ ॥
 करेणुः करिणी धेनुः कल्पना सज्जना घटा ।
 गण्डूषको बहिष्कर्षः सम्भोगश्चातिहस्तकः ॥ ७० ॥
 स्थूलहस्तः फलीहस्तः पृथुहस्त इति क्रमात् ।
 उपर्येते गजाङ्गुल्याः प्रदेशाः सा तु कर्णिका ॥ ७१ ॥
 आकर्षः परिकर्षश्च बहिष्कर्षस्य पार्श्वयोः ।
 किरीटी दन्तमूलं स्यात् प्रवेष्टस्तु ततः परम् ॥ ७२ ॥
 मध्येमुखं तु वाहित्थं पिलाटी तस्य पार्श्वयोः ।
 कर्णमूले पीतलिका चूलिका पिप्पलीति च ॥ ७३ ॥
 तस्यास्तु पर उद्धात आरक्षः कुम्भयोरधः ।
 उरःपार्श्वौ तु विशोभौ दर्दरौ गलपार्श्वयोः ॥ ७४ ॥
 कटोऽस्य कटो गण्डो गात्रं पूर्वोऽङ्घ्रिरस्य तु ।
 मूलेधोऽधः प्रदेशास्तु क्षयश्च पलिपादकः ॥ ७५ ॥
 कूर्मः सन्दानभागश्च ग्रीह उत्सङ्ग इत्यपि ।
 विशेषभागो जघनभागो वैशाख्यपि क्रमात् ॥ ७६ ॥
 गात्रे सप्त नखादूर्ध्वं पिण्डकान्तमवस्थिताः ।
 पुच्छवंशोऽपवंशः स्यान्निष्कोशः कुक्षिमध्यकम् ॥ ७७ ॥
 अवरं पश्चिमः पादस्तत्राधोऽधः स्थिताः क्रमात् ।
 कालभागो बहिष्पार्श्वस्तथा जघनपिण्डिका ॥ ७८ ॥

मण्डुकी शकुटा पाणिस्तलप्रोहश्च सक्थि च ।
 सन्दानभागः कूर्मश्च प्रदेशाः स्युर्नखावधेः ॥ ७१ ॥
 अत्यूहः ककुदं मेढ्रे क्षीरिका चूचुकान्तरम् ।
 अथ पुच्छे स्थिता किङ्गी संवालो बालपुष्कलम् ॥ ८० ॥
 बालपाशक इत्येवमधोऽधः स्युर्यथोत्तरम् ।
 दन्तभागः पुरोभागः पुच्छभागस्तु पार्श्वतः ॥ ८१ ॥
 मुखे पृषन्ति पद्मानि वमथुः करशीकरः ।
 प्रवृत्तिर्मद आलानं स्तम्भस्तोत्रं तु वेणुकम् ॥ ८२ ॥
 अन्दुको निगलो न स्त्री भिदुरं शृङ्गला त्रयी ।
 कलापकः कण्ठबन्धस्त्रिपदी पादबन्धनम् ॥ ८३ ॥
 चूषा कक्ष्या वरत्रा स्यादकुशोऽस्त्री सृणिर्न षण् ।
 अपष्टं त्वकुशस्याग्रं सूना दण्डोऽर्पिताकुशः ॥ ८४ ॥
 सूनापष्टान्तरं मन्या वक्रकीलो हुरुट्टकः ।
 कीलस्तु पुष्यलः शकुर्हिस्त्रीरो लोहशृङ्गलः ॥ ८५ ॥
 पश्चाच्चरणशङ्कौ तु पङ्क्तीशो घुटिकोऽपि च ।
 कदलिः करिणां केतुः शृङ्गारो गजमण्डनः ॥ ८६ ॥
 स्थासको नक्षत्रमाला कर्णशङ्कौ तु शङ्किलौ ।
 गजोपचारकुशलो वाहितो मलहारकः ॥ ८७ ॥
 आधोरणा हस्तिपका हस्त्यारोहा निषादिनः ।
 तत्प्रधाना महामात्रा आरोहा गजजीवनाः ॥ ८८ ॥
 पादकर्म यतं तेषां यातमकुशवारणम् ।
 वीतं तदुभयं यच्च निस्सारं हयकुञ्जरम् ॥ ८९ ॥
 अश्वस्तुरङ्गस्तुरगो हयः सप्तिस्तुरङ्गमः ।
 शालिहोत्री व्रती कुण्डी प्रोथी वारुः प्रकीर्णकः ॥ ९० ॥
 कुदरो घोटकस्तार्क्ष्यः क्रमणो ग्रहभोजनः ।
 पाकलः परुलः पीतिर्माषाशी हि सक्थिक्रमः ॥ ९१ ॥
 श्रीवृक्षकी वक्षसि चेद्रोमावर्तो मुखेऽपि च ।
 मङ्गिकाक्षः सितैर्नेत्रैः कृष्णैरिन्द्रायुधो हयः ॥ ९२ ॥
 पञ्चभद्रस्तु हृत्पृष्ठमुखपार्श्वेषु पुष्पितः ।
 पुच्छोरःखुरपुच्छास्यैः सितैः स्यादष्टमङ्गलः ॥ ९३ ॥
 आजानेयाः कुलीना स्युः पारसीकादयश्च ते ।
 पारसीकादिसंज्ञास्तु पारसीकादिदेशजाः ॥ ९४ ॥

ये तु काम्बोजवाह्नीकवनायुजमुखा हयाः ।
 ते निहीनकुलाः किञ्चित् (पश्चि)मोत्तरदेशजाः ॥ ९५ ॥
 निहीनास्त्वञ्जलारट्टशम्भला दोषिणः परे ।
 तत्र शृङ्गी शृङ्गपदे मांसबुद्बुदवान् हयः ॥ ९६ ॥
 मुसल्यन्यप्रभैर्काङ्क्षाघ्नः कराली तु जरुर्ददः ।
 शृषभः ककुदावर्तो यमो हीनाधिकाङ्गकः ॥ ९७ ॥
 इन्द्रवृद्धिस्तु निर्मुष्कः स्त्री सरी तु खुरे त्रिके ।
 कृत्तिकापिञ्जरः स स्याद्यः पृषत्पुञ्जपिञ्जरः ॥ ९८ ॥
 अश्वानामागमे संज्ञा वर्णिता वर्णहेतवः ।
 सिते द्वौ कर्ककोकाहौ खोज्जाहः श्वेतपिङ्गलः ॥ ९९ ॥
 आनीलः स्यान्नीलकोशः पुङ्गाहः कृष्णवर्णकः ।
 शोणः कोकनदच्छायस्त्रियूहः कपिलो हयः ॥ १०० ॥
 कियाहो लोहितः पीतरक्तस्तूद्रकलाहकः ।
 उराहस्तु मनाक् पाण्डुः कृष्णं जङ्गाद्वयं यदि ॥ १०१ ॥
 पाटलो वोरुखानः स्याद् गर्दभाभः सुरुहकः ।
 हलाभश्चित्रलो रेखाऽप्यस्य कृष्णाऽस्ति पृष्ठगा ॥ १०२ ॥
 कलाहस्तु मनाक् पीतः कृष्णः स्याद्यदि जानुनि ।
 खेल्गाहः कपिलच्छायः पाण्डुवालधिकेसरः ॥ १०३ ॥
 पीतस्तु हरियाः पीतहरिते हरिहालकौ ।
 पीयूषवर्णे सेराहः पङ्गुलः सितकाचसः ॥ १०४ ॥
 सर्व एवान्यसंज्ञाः स्युः कर्कोद्याः पुण्ड्रके सति ।
 कोकुराहः खुराहो हलुराह इति क्रमात् ॥ १०५ ॥
 कर्कोद्याः खुराहस्तु फाले रेखा च पृष्ठगा ।
 सरुराहः सेरुराहो द्वौ सेराहे सपुण्ड्रके ॥ १०६ ॥
 अश्वपोतः किशोरः स्याद्दाम्यश्वा वडबाऽवती ।
 लुठितोऽश्व उपावृत्तः सुकरो दुर्विनीतकः ॥ १०७ ॥
 अह्नाऽश्वगम्यमाश्वीनं त्रिष्वेतेऽश्वतरः पुमान् ।
 स्याद्वेसरो वेगसरो मूकरण्डौ तु वेसरात् ॥ १०८ ॥
 अश्वो सूतेऽश्वतर्या तु मूकाज्जातः किसिद्रकः ।
 निगालस्तु गलोद्देशे नासाग्रे प्रोथमस्त्रियाम् ॥ १०९ ॥
 आवर्तो रोमजो देवमणिस्त्वेष निगालजः ।
 कश्यमश्वस्य मध्यं स्यादन्तवेष्टस्तु नालिका ॥ ११० ॥

कालिका दन्तरेखा स्यादन्तच्छिद्रमुल्लखली ।
 कर्तनं धूलिलुठितं वर्तनं तूपवर्तनम् ॥ १११ ॥
 लोठभूर्मुखरज्जुस्तु स्यादन्ताल्यवरक्षणी ।
 दामाञ्जनं पादपाशो नासारज्जुस्तु लालिका ॥ ११२ ॥
 कवियोऽस्त्री खलीनोऽस्त्री पञ्चाङ्गी कविका कवी ।
 प्राक्पादरज्जुरातालो बका स्याद् द्विप्रहे द्वयोः ॥ ११३ ॥
 पर्याणं स्यात् पल्ययनं वल्गावक्षेपणी कुशा ।
 कशा कात्रा वक्त्रपट्टे तलिका तलसारकम् ॥ ११४ ॥
 पादपुट्यां पादफली प्रक्षरं प्रखरोऽस्त्रियाम् ।
 युग्याशनप्रसेवे तु द्वौ बाक्काणप्ररोहकौ ॥ ११५ ॥
 आयानं स्यादलङ्कारो ग्रीवाभूषा तु गण्डकः ।
 लवणस्य प्रदानाय कृता लवणलायिका ॥ ११६ ॥
 तैलस्य नालिका सूत्रसङ्ग्रहोऽश्वस्य कर्षकः ।
 केशकारक्षौरकारौ नालिवाहस्तु चासिकः ॥ ११७ ॥
 अश्वानां तु गतिर्धारा विभिन्ना सा तु पञ्चधा ।
 आस्कन्दितं धौरितकं रेचितं वल्गितं प्लुतम् ॥ ११८ ॥
 इत्येतेषाञ्च पञ्चानामेकैकं बहुभेदकम् ।
 गत्यर्थास्तद्वदर्थश्च सर्वे ते बाच्यालङ्काराः ॥ ११९ ॥
 तत्रास्कान्दतकं कोपादिव सर्वैः पदैर्मुहुः ।
 उत्प्लुत्योत्प्लुत्य गमनमुपकण्ठापराभिधम् ॥ १२० ॥
 अथ धौरितकं धौर्यं धौरितं धौरणं च तत् ।
 तच्च कङ्कशिखिक्रोडनकुलानां गतैः समम् ॥ १२१ ॥
 रेचितं स्याद्भारवहं तच्चावक्रगतिर्द्रुता ।
 वल्गितं बल्गनं पद्भिर्भेदाश्चाष्टौ यमादयः ॥ १२२ ॥
 प्लुतं तु लङ्घनं पक्षिमृगधर्मेण भिद्यते ।
 यानं सांयात्रिकं युग्यं वाहनं बाह्यधोरणे ॥ १२३ ॥
 योग्यं चास्मिंश्चक्रयुते शताङ्गः स्यन्दनो रथः ।
 वहित्रं वहनं चास्मिंश्चतुरश्रे सकूबरे ॥ १२४ ॥
 दीर्घद्विपक्षवहनमनः क्ली शंकटोऽस्त्रियाम् ।
 प्रवाहिनी वृत्तमध्ये पक्षकूबरवर्जिते ॥ १२५ ॥
 देवतार्थो देवरथो युद्धार्थः साम्परायिकः ।
 क्रीडार्थः स्यात् पुण्यरथः कृतः कर्णीरथो मृदा ॥ १२६ ॥

कर्णीरथं प्रवहणं हयनं रथगर्भके ।
 गन्त्री स्त्री कूबरं न स्त्री रथे कम्बलिवाहचके ॥ १२७ ॥
 रथस्तु जयकृजैत्रो यात्रार्थः पारियाणकः ।
 रथेऽत्र द्वैपवैयाघ्रौ प्रावृते व्याघ्रचर्मणा ॥ १२८ ॥
 वृते रथे पाण्डुभिः स्यात् कम्बलैः पाण्डुकम्बली ।
 एवं काम्बलवाह्याद्याः कम्बलादभिरावृते ॥ १२९ ॥
 योग्यारथो वैनयिको जैत्रप्रभृतयस्त्रिषु ।
 धूः स्त्री धूर्वा यानमुखं युगमीषान्तबन्धनम् ॥ १३० ॥
 कस्तम्भि युगमध्येऽस्त्री स्यादक्षश्चक्रधारणम् ।
 अक्षकीले त्वर्णिर्न क्ली ध्रुवः कीलोऽप्यनिर्न पण् ॥ १३१ ॥
 रथलीडो रथस्यान्तं बन्धुरा तनुकूबरम् ।
 रथगुप्तिर्वरूथो ना कूबरो ना युगन्धरः ॥ १३२ ॥
 अनुकर्पो रथस्याधोधरणन्दर्वथान्न सः ।
 युगो द्वितीयः प्रासङ्गः पताका तु ध्वजोऽस्त्रियाम् ॥ १३३ ॥
 अस्योच्चूडावचूडौ द्वावूर्ध्वाधोमुखचूडकौ ।
 अरि चक्रं रथपदं रथाङ्गं केशवायुधम् ॥ १३४ ॥
 स्त्री नेमिर्ना प्रधिश्चक्रप्रान्ते तुम्बा तु नाभिका ।
 अरास्तयोः स्थिता मध्ये रथाङ्गानि त्वपस्कराः ॥ १३५ ॥
 शिबिका याप्ययानं स्याद्दोला हेलार्थरूपणम् ।
 प्रेङ्खोलनं तु प्रेङ्खोलं प्रेङ्खो रिङ्खोलनाद्यपि ॥ १३६ ॥
 आन्दोलनं स्यादान्दोलो दोला स्याद्दोलिकाऽपि च ।
 परम्परावाहनं यत्तद्वैनीतकमस्त्रियाम् ॥ १३७ ॥
 नियन्ता प्राजिता क्षत्ता यन्ता सूतश्च सारथिः ।
 सव्येष्टो दक्षिणेस्थश्च स्यन्दपाणिसारथिने ॥ १३८ ॥
 सेवका युधि योद्धृणां भटा यौधाश्च यौधकाः ।
 पदातिपत्तिपादातपदातिकपदाजयः ॥ १३९ ॥
 पातिकः पादिकः पट्टो रथिको रथिनो रथी ।
 सेनास्थाः सैनिकाः सैन्याः सेनारक्षास्तु सैनिकाः ॥ १४० ॥
 पार्ष्णिग्राहास्तु पृष्ठस्थाः साहस्रास्तु सहस्रिणः ।
 परिधिस्थाः परिचराः सेनानीर्वाहिनीपतिः ॥ १४१ ॥
 दंशिते स्युः कवचित्तसज्जसन्नद्धवमिताः ।
 आबद्धः पुनरामुक्तः प्रतिमुक्तः पिनद्धवत् ॥ १४२ ॥

काण्डप्रपञ्चवायुधिक आयुर्धायोऽस्त्रजीवनः ।
 धन्वी धनुष्मान् धानुष्को निषङ्गयस्त्री धनुधरः ॥ १४३ ॥
 चर्मि शाक्तीकयाष्टीकपारश्वधिककौन्तिकाः ।
 काण्डीरखाङ्गिकाद्याश्च चर्मशक्त्यादधारिणः ॥ १४४ ॥
 छायाकरश्छत्रधरः पताकी वैजयन्तिकः ।
 पुरस्सरः पुरोगोऽग्रेसरः प्रष्टोऽग्रतस्सरः ॥ १४५ ॥
 पुरोगमः पुरोगामी यस्त्वलं यात्यरीन् प्रति ।
 सोऽभ्यमित्रोऽभ्यमित्रिणोऽप्यभ्यमित्रिय इत्यपि ॥ १४६ ॥
 शूरो वीरश्च विक्रान्तः पटुश्चारभटोऽपि च ।
 अशूरो हतकः क्लीबो जिष्णौ तु जयिजित्वरौ ॥ १४७ ॥
 शक्ये तु जेतुं जयः स्याज्जेयो जेतव्यमात्रके ।
 जैत्रो जेता जितो भग्नः कृतहस्तस्तु शिक्षितः ॥ १४८ ॥
 लघुदस्तः सुदस्तश्च कृतास्त्रः कृतपुङ्गवः ।
 सायुगीनो रणे साधुरत्यन्तीनो भृशं गते ॥ १४९ ॥
 कामङ्गाम्यनुकामीनो जवी तु जवनो जवः ।
 जङ्घालोऽतजवे धीरमन्थरौ मन्दगामिनि ॥ १५० ॥
 स्यादुरस्वानुरसिल ऊर्जस्वयूर्जस्वलोजितौ ।
 बली प्रबल ओजस्वी वाच्यवद्रथिकादयः ॥ १५१ ॥
 संशप्तकास्तु संग्रामात् समयेनानिवर्तिनः ।
 त्वक्त्रं तु दंशनं वर्म तनुत्रं कवचोऽस्त्रियाम् ॥ १५२ ॥
 माठिः स्त्री जागरो वक्षश्छदः सन्नाहकङ्कटौ ।
 तत्सूत्रकं सूत्रमयं जालिका स्यादयोमयी ॥ १५३ ॥
 नागोदर्युदरत्राणं जङ्घात्राणं तु मत्कुणम् ।
 पटुस्तु लिपिसन्नाहः प्रकोष्ठादौ कृतो यथा ॥ १५४ ॥
 बाहुलं बाहुरक्षा च मर्दनी पादरक्षणी ।
 गोधा तला च न नरौ हस्तज्जो ज्यानिवारणे ॥ १५५ ॥
 अङ्गलित्रे कपी शीर्षत्राणे शीर्षण्यशीर्षके ।
 अधिकाङ्गं सारसनं मध्ये धार्य सकङ्कटैः ॥ १५६ ॥
 सर्वाभिसारः सर्वौघः सर्वसन्नहनार्थकः ।
 न क्ली हेतिः शस्त्रमस्त्रमायुच्छत्रुघ्नमायुधम् ॥ १५७ ॥
 ऋष्टिः खड्गः प्रचारोऽसिर्धर्मपालः प्रजागरः ।
 धर्मो विशसनो देवो मनुष्येष्टः शिवङ्करः ॥ १५८ ॥

श्रीगर्भो विजयः शास्ता कृपाणासङ्गरिष्टयः ।
 कौक्षेयको भद्रसुतो ह्रस्वनिर्वशकस्त्वसिः ॥ १५९ ॥
 स्नुहीदलाभो निखिंशो मण्डलाग्रोऽन्वितार्थकः ।
 चन्द्रहासोऽर्धचन्द्राग्र इली तु करवालिता ॥ १६० ॥
 जम्बूगतेस्तु खड्गास्त्रु न्यस्ततैलरुचिर्यदि ।
 वराभोऽनिल एरण्डबीजाभपुलकावलिः ॥ १६१ ॥
 हुण्डुतः पुत्रकैरण्डः सितदीर्घानवस्थिनैः ।
 हरकस्तरवारिः स्त्री यष्टिश्चापि मृदौ पृथौ ॥ १६२ ॥
 कुण्डलो दीर्घनिर्वशो पुलकास्त्वपराजयः ।
 अथासिपुत्री क्षुरिका शस्त्रिका चासिधेनुका ॥ १६३ ॥
 साऽतिदीर्घा पत्रफला कुट्टन्ती हुलमात्रिका ।
 पटुसो लोहदण्डो यस्तीक्ष्णधारः खुरोपमः ॥ १६४ ॥
 कण्टकच्छेदनोऽप्येवं द्विमुखश्च भवत्यसौ ।
 प्रासः कुन्तो हाटकस्तु स त्रिकण्टकसंज्ञितः ॥ १६५ ॥
 भिण्डपालः क्षेपणीयः सृगो दीर्घे महाफले ।
 तोमरोऽस्त्री लोहहुलदण्डे कासूश्च सर्वला ॥ १६६ ॥
 कणयो लोहमात्रोऽथ शङ्कुर्ना शल्यमस्त्रियाम् ।
 वराहकर्णकोऽन्वर्थः क्षुरिकाद्याः हुलाग्रकाः ॥ १६७ ॥
 हुलं द्विफलपत्राग्रं मुनयोऽस्त्र्यस्य शेखरम् ।
 प्रत्याकारपरीवारौ कोशो मुष्टौ त्सरुः पुमान् ॥ १६८ ॥
 शतग्री तु चतुस्ताला लोहकण्टकसञ्चिता ।
 अयःकण्टकसंज्ञना शतघ्न्येव महाशिला ॥ १६९ ॥
 भुसुण्डी स्याद्धारुमयी वृत्तायःकीलसञ्चिता ।
 हस्तिचारो गजत्रासहेतुः शरभसन्निभः ॥ १७० ॥
 देवदण्डोऽरन्निमात्रो दीर्घा मुसलयष्टिकः ।
 दुघणे मुद्गरघनौ परिचः परिघातनः ॥ १७१ ॥
 अस्त्रियौ चापधनुषावासेष्वासौ धनुर्दणम् ।
 कार्मुकं धन्व कोदण्डमायुधामयं शरासनम् ॥ १७२ ॥
 कार्मुकं तु चतुर्हस्तं कोदण्डं त्र्यङ्गुलं विना ।
 कार्मुकात् तु क्रमात् पञ्च विद्यायुधशरायुधे ॥ १७३ ॥
 गोतमं रथायुधकं कोसलं गाण्डिवोऽस्त्रियाम् ।
 पातनं मार्गणं चेति द्विगुणानि यथोत्तरम् ॥ १७४ ॥

उच्चलं ब्रह्मदण्डश्च वैशिखं बिम्बसारकम् ।
 द्विगुणानि क्रमादाद्यं त्वष्टोत्तरशताङ्गुलम् ॥ १७५ ॥
 केतनं पञ्चविंशत्या पलैर्द्वे द्विगुणे परे ।
 करीरपृष्ठं व्यासञ्च सहितं तु शतैस्त्रिभिः ॥ १७६ ॥
 पत्नानां पञ्चभिस्त्वेष्टां शतैः स्यात् सहितोत्तरम् ।
 लस्तुको धनुषो मध्यमं लुस्तमटन्यपि ॥ १७७ ॥
 अतिरार्तिः किरिः कोटी ज्या जीवा मौर्विका दुणा ।
 तूणी तूण उपासङ्गतूणीरौ विशिखाश्रयः ॥ १७८ ॥
 निषङ्ग इषुधिर्न क्ली पत्री तु विशिखः खगः ।
 पृषत्को रोपणो बाणः कलम्बो मर्मभेदनः ॥ १७९ ॥
 चित्रपुङ्खो वीरशङ्कुः शरो रोध इषुर्न षण् ।
 प्रद्वेलनस्तु नाराच एषणश्चायसे शरे ॥ १८० ॥
 अर्धशल्योऽर्धनाराचः कङ्कपत्रः शिलीमुखः ।
 त्रिभागशल्यनाराचे द्वौ दण्डासनदण्डिकौ ॥ १८१ ॥
 अर्धचन्द्रः क्षुरप्रः स्याद्विकर्णः कर्णिकारलः ।
 स्नुहीदलफलो भल्लश्चिपाटोऽल्पस्तदाकृतिः ॥ १८२ ॥
 पाददण्डोऽन्वितार्थः स्याद् बाणस्तु गतपत्रणः ।
 तीरी त्वल्पा वेगवती त्वग्बलाः शरजालकाः ॥ १८३ ॥
 अयश्शलाका कूटोऽस्त्री पत्रकूटः सपत्रणः ।
 द्विद्विंशत्यङ्गुलिः स्यान्निचोटे द्व्यङ्गुलोत्तराः ॥ १८४ ॥
 स्युरचोटलिङ्गकस्तालः कुलिको बिम्बसारकः ।
 कर्तरी पुङ्ख आराग्रं त्वग्रं बाजश्छदावलिः ॥ १८५ ॥
 पत्रणा पक्षरचना धारा शस्त्रमुखं फलम् ।
 स्थानानि धन्विनां पञ्च तत्र वैशाखमस्त्रियाम् ॥ १८६ ॥
 त्रिवितस्त्यन्तरौ पादौ मण्डलं तोरणाकृती ।
 अन्वर्थं स्यात् समपदमालीढं तु ततेऽप्रतः ॥ १८७ ॥
 दक्षिणे वाममाकुञ्च्य प्रत्यालीढं विपर्यये ।
 वैहायसञ्च वेधे तु योगावाप उपक्रमः ॥ १८८ ॥
 हस्तावापः शरादानं प्रमाथो लस्तकग्रहः ।
 मुष्ट्यायोजनमादानमिषोर्ज्यां समूहनम् ॥ १८९ ॥
 वितानं संहितस्येषोः किञ्चिदेव विकर्षणम् ।
 निमित्तग्रहणं लक्ष्यग्रहो बुद्धिदृग्गादिना ॥ १९० ॥

आकर्णकर्षणं 'पूर्णमायामं त्वङ्गुलाधिकम् ।
 ततोऽप्यर्धाङ्गुलाकृष्टसन्धानं तेजनं न ना ॥ १९१ ॥
 मुष्टिमान्द्यं निर्हरणं व्यवच्छेदस्तु मोक्षणम् ।
 कैराती गतिरूर्ध्वाऽधःप्रकर्षस्तु गतेर्लयः ॥ १९२ ॥
 दृढदुष्करचित्राणि कर्माणि हरणानि च ।
 मुचुटी सिङ्कर्णी च पताका चेति मुष्टयः ॥ १९३ ॥
 लक्षं तु लक्षणं लक्ष्यमभिसन्धानमासिकम् ।
 वेध्यं शरव्यं न नरि श्रमस्थानं खल्लुरिका ॥ १९४ ॥
 योगाभ्यासः परिचयो बाणाभ्यास उपासनम् ।
 शक्त्याद्यस्त्रं पाणिमुक्तं यन्त्रमुक्तं शरादिकम् ॥ १९५ ॥
 मुक्तामुक्तं धृतं मुक्तं नागपाशादिदीर्घकम् ।
 अमुक्तं छुरिकादि स्यादिति शस्त्रं चतुर्विधम् ॥ १९६ ॥
 धौते निशातं निशितं क्षणुतं तेजितमर्थवत् ।
 फलं चर्ममयं चर्म फलकं खेटकं समम् ॥ १९७ ॥
 अन्तर्लोहेन बद्धान्ते फलान्ते स्याद्वलाहका ।
 हस्तिकर्णः परोवण्टः फली फलकिकाल्पिका ॥ १९८ ॥
 कावाटो लघुकाष्ठः स्यात् सयष्टिर्यष्टिवारणः ।
 कटिका सूत्रसंयूता शलाकाः परिमण्डलाः ॥ १९९ ॥
 अङ्गुलं सैव वेत्राणैः सङ्ग्राहो मुष्टिरेषु या ।
 लोहाभिसार उद्योने राज्ञां नीराजनाविधिः ॥ २०० ॥
 यत्सेनयाऽभिनिर्योणं पत्युस्तदभिषेकनम् ।
 आसारस्तु प्रसरणी प्रचक्रं चलितार्थकम् ॥ २०१ ॥
 विरतं तु भटोद्योगोऽभिक्रमो यानमभ्यरीन् ।
 वीरपाणं तु यत्पानं वृत्ते भाविनि वा रणे ॥ २०२ ॥
 नासीरोऽस्यप्रयानं स्यादवस्कन्दस्तु सौप्तिकः ।
 मृधमास्कन्दनं युद्धं समिकं साम्परायिकम् ॥ २०३ ॥
 आयोधनं रणं सङ्ग्रहं प्रथनं प्रविदारणम् ।
 सम्प्रहारसमाघातकलिसंस्फोटसंयुगाः ॥ २०४ ॥
 अभिमर्दाभिसम्पातप्रघाताभ्यागमाहवाः ।
 समुदायः समुदयः सम्मर्दः सङ्गरः स्पशः ॥ २०५ ॥
 संग्रामः समरोऽस्त्री स्त्री संयुदायुष्य युत् समित् ।
 वीराशंसनमाजेर्भूर्धोरा लोलो महारणम् ॥ २०६ ॥

नियुद्धं बाहुयुद्धं स्यादवमर्दस्तु पीडनम् ।
 अभयवस्कन्दनं त्वभ्यासादनं स्वलितं चलम् ॥ २०७ ॥
 अविषादो धृतिर्धैर्यमवष्टम्भस्तु सौष्ठवम् ।
 वीराणां यद्रेणे नृतं तस्मिन् वीरजयन्तिका ॥ २०८ ॥
 प्रसभोऽस्त्री बलात्कारो हठश्च विजयो जयः ।
 प्रतीकारो वैरशुद्धिरपदानं पराक्रमः ॥ २०९ ॥
 शौर्यं वीर्यमथ स्थाम बलं शुष्म तरः सहः ।
 नाशस्त्वपक्रमोऽपायो विप्रयाणं पलायनम् ॥ २१० ॥
 सन्द्रोवोद्द्रावसन्द्रावप्रदावद्रवविद्रवाः ।
 विशस्तु घात उन्मथो विशरः प्रमथो वधः ॥ २११ ॥
 निर्वासनं निहननं निबर्हणनिषूदने ।
 निस्तर्हणं निशरणं निकारणनिशुम्भने ॥ २१२ ॥
 निर्वापणं निरसनं निर्ग्रन्थननिर्हिसने ।
 प्रमापणं प्रमथनं प्रवासनमपासनम् ॥ २१३ ॥
 परासनं विशसनं मारणं प्रतिघातनम् ।
 उद्वासनं प्रशसनं क्षणनं परिवर्जनम् ॥ २१४ ॥
 उज्जासनं संज्ञपनं काथनं प्रविसारणम् ।
 व्यापादनं च हिंसा च कदनं सङ्कुलो वधः ॥ २१५ ॥
 रुण्डोऽशिराः कबन्धोऽस्त्री कुणपस्तु शवोऽस्त्रियाम् ।
 शवयानं कटः खाटिश्चिता चित्या चित्तिः स्त्रियाम् ॥ २१६ ॥
 अरुः क्षतं ना क्षणितुर्व्रणोऽपीर्मोऽपि न स्त्रियौ ।
 किणो रुढं व्रणस्थाने तुमुलं रणसङ्कुलम् ॥ २१७ ॥
 जितकाशी जितरणः कान्दिशीको भयद्रुतः ।
 अपराद्धशरोऽसौ स्याद्यस्य लक्ष्याच्छयुतः शरः ॥ २१८ ॥
 पराजितः पराभूतः प्रणष्टस्त्वगृहीतदिक् ।
 प्रस्कन्नपतितौ ध्वस्ते मूढे मूर्छालमूर्छितौ ॥ २१९ ॥
 परासुरपसम्पन्नः प्रमीतः संस्थितो मृतः ।
 जीवो जीवन् किणादूर्ध्वं त्रिषु जीवस्तु जीवितम् ॥ २२० ॥
 आयुर्जीवितकाले स्त्री जीवातुर्जीवितागदः ॥ २२० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन ।वरवितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे क्षत्रियाध्यायः ॥ ७ ॥

वैश्याध्यायः ॥ ८ ॥

अर्यो भूमिस्पृशो वैश्या ऊरुव्या ऊरुजा विशः ।
 आजीवो जीविका वृत्तिर्वार्ता वर्तनजीवने ॥ १ ॥
 मृतं क्ली याचितं भैक्षममृतं स्यादयाचितम् ।
 उच्छ्रो धान्यश आदानं कणिशाद्यर्जनं सिलम् ॥ २ ॥
 ऋतं तदुभयं स्त्री तु कृषिः क्ली प्रमृतानृते ।
 सत्यानृतं तु वाणिज्यं वणिज्या वणिजा स्त्रियौ ॥ ३ ॥
 पाशुपाल्यं जीववृत्तिः स्यादृणं पर्युदञ्चनम् ।
 तदवृद्धिकमुद्धारः कुसीदं तु सवृद्धिकम् ॥ ४ ॥
 वार्धुष्यं वार्धुषं धान्यवृद्धिर्वृद्धिः पुनः कला ।
 सा कायिकान्वहं देया प्रतिमासं तु कालिका ॥ ५ ॥
 कारिका तु स्वयं दृष्टा चक्रवृत्तिस्तु वृद्धिजा ।
 परिवर्तेन निर्वृत्तं वस्तु स्यादापमित्यकम् ॥ ६ ॥
 सेवा श्ववृत्तिरेताश्च याजनाद्याश्च वृत्तयः ।
 त्रिष्वालेखात् कुडुम्बी तु क्षेत्राजीवः कृषीवलः ॥ ७ ॥
 कर्षकोऽथ द्वैगुणिको वृद्ध्याजीवः कुसीदिकः ।
 वार्धुषी स्याद्वार्धुषिके प्रयोक्त्युत्तमर्णकः ॥ ८ ॥
 गृहीतर्यधमर्णः स्यादाप्तः प्रत्ययितः समौ ।
 मध्यस्थः प्राशिनकः साक्षी मूली स्याद्दुष्टसाक्षिणि ॥ ९ ॥
 कूटसाक्षी मृषासाक्षी प्रतिभूलग्नकोऽन्तरः ।
 अभियोक्ता शिरोवर्ती शिरस्थोऽथाभियुक्तके ॥ १० ॥
 सन्दंशितोऽभिशास्तश्च वसुराक्षारिकोऽपि च ।
 सदेवासत्कृतं सभ्यैस्तिरितं साक्षिणा तु चेत् ॥ ११ ॥
 अनुशिष्टमथो लेखो लेख्यं दिव्यं तु दैविकम् ।
 न्यासस्तूपनिधिस्थाप्यनिक्षेपा न्यस्तकोऽस्त्रियाम् ॥ १२ ॥
 सदस्या देशिकाः स्थेयाः सभास्ताराः सभासदः ।
 सभ्याः सामाजिकाश्चाथ गोष्ठ्यास्था परिषत् सभा ॥ १३ ॥
 समव्या तारणी संसद् घटा स्थानं सदोऽप्यना ।
 द्रष्टरि व्यवहाराणां प्राड्वपकोऽक्षदर्शकः ॥ १४ ॥
 न्यायोऽक्षो व्यवहारोऽथ सम्प्रश्नः सम्प्रधारणम् ।
 समर्थनं च संस्था तु मर्यादा धारणा स्थितिः ॥ १५ ॥

अर्थिनो वचनं भाषा स्यात् प्रत्यर्थिन उत्तरम् ।
 कारणं त्वभ्यवस्कन्दः प्रत्यवस्कन्द इत्यपि ॥ १६ ॥
 अवस्कन्दश्च भाषार्थमङ्गीकृत्य विशेषीः ।
 केदारः केदारः क्षेत्रमुर्वरा सर्वसस्यभूः ॥ १७ ॥
 भूमिच्छिद्रं कृष्ययोग्या प्रहतं नालमुत्थितम् ।
 खिलं त्वप्रहतं स्थानमूषवत्यूषरेरिणौ ॥ १८ ॥
 मौद्गीनकौद्रवीणाद्याः क्षेत्रे मुद्रादिसम्भवे ।
 यव्यत्रैहेयशालेयषष्टिक्याः सयवक्यकाः ॥ १९ ॥
 यवादेस्तिलतैलीनौ तिलस्योमाणुभङ्गतः ।
 माप्राचैवं द्विरूपत्वं शाकाच्छाकिनशाकटौ ॥ २० ॥
 एवं वास्तुकवार्ताकबालकाशेक्षुमूलकात् ।
 द्रोणाढकादिवापेषु द्रौणिकाढकिकादयः ॥ २१ ॥
 खारीवापे तु खारीकं हल्यं सीत्यं च कृष्टके ।
 तृतीयाकृतं त्रिसीत्यं त्रिहल्यं त्रिगुणाकृतम् ॥ २२ ॥
 त्रिष्कृष्ट एवं द्विष्कृष्टे शम्बाकृतमिहाधिकम् ।
 बीजाकृतं तूमकृष्टं प्रहतप्रमुखाक्षिषु ॥ २३ ॥
 लोष्टोऽस्त्री दरिणिर्न क्ली लेष्टुर्ना मृत्तु मृत्तिका ।
 पुरीषं मृत्तिकाचूर्णं मृत्सा मृत्सना प्रशस्तमृत् ॥ २४ ॥
 भ्रुकका त्विष्टकाया विद्वषस्तु क्षारमृत्तिका ।
 धूलिः स्त्रियां रजः पांसू रेणुः पुंस्यथ कर्दमे ॥ २५ ॥
 दारिपत्परिपत्पक्वचिकिलाश्च निषद्वरः ।
 शादावकीलजम्बाला वप्रोऽस्त्री पालिराल्यपि ॥ २६ ॥
 क्षेत्रमध्ये कृता सालपा स्थाला स्यादथ लाङ्गलम् ।
 हलं गोदारणं सीरमीषा सीरादिदण्डकः ॥ २७ ॥
 निरीषः कृषकः फालः शम्या तु युगकीलकम् ।
 योक्त्रं तु योत्रमाबन्धः खनित्रमवदारणम् ॥ २८ ॥
 गोदारणं तु कुन्दालमभिः स्त्री त्णूस्तु तन्मुखे ।
 प्रतोदः प्राजनं तोत्रं कोटिशो लोष्टभञ्जनः ॥ २९ ॥
 दात्रं लवित्रमसिदो योऽस्य मुष्टिः स वण्टकः ।
 स्यात्समीकरणं मत्स्यं सीता लाङ्गलपद्धतिः ॥ ३० ॥
 न स्त्री मेथिः खले पाली खलधानं पुनः खलः ।
 ग्रीहिर्वरेणुको बीज्यो धान्यं सस्यं लवेटिका ॥ ३१ ॥

ग्रीह्यः स्तम्बकरयः शालयः श्वेततण्डुलाः ।
 सुगन्धिको महाशाली रक्तशालिः सलोहितः ॥ ३२ ॥
 सांवत्सरः कृष्णशालिर्बालकश्चावरोहकः ।
 श्वेतशालोऽपौरशूरचपलाः करसूकरौ ॥ ३३ ॥
 षष्टिको गर्भपाकी स्यात् प्रवरः शालियष्टिकः ।
 कलापकास्तु कलमा हायनास्तु महाबुसाः ॥ ३४ ॥
 माषस्तु मलदो नन्दी घरी बीजवरो बली ।
 वृष्यो महावृषो गुच्छा कुलिङ्गाटी फलाङ्कुरा ॥ ३५ ॥
 मुद्रस्तु प्रथनो लोभ्यो बलाङ्गो हरितो हरिः ।
 पीतेऽस्मिन् वसुखण्डीरप्रवेलजयशारदाः ॥ ३६ ॥
 सुराष्ट्रीचनचक्षुष्या हरिमन्थार्धरूपकौ ।
 कृष्णे प्रवरवासन्तौ हरिमन्थजशिम्बिकौ ॥ ३७ ॥
 वनमुद्रे तु वरकनिगूढककुलीमकाः ।
 खण्डी च राजमुद्रो तु मरिष्टकमयष्टकौ ॥ ३८ ॥
 जर्तिलोऽरण्यजतिलो जालकश्चूलिकस्तिलः ।
 कृष्णेऽस्मिस्तिलके (षण्डे) पिञ्जपेजौ तिलात्परौ ॥ ३९ ॥
 तिलपुष्पं वज्रपुष्पं मसुरस्तु मसूरकः ।
 मङ्गल्यं पृथुसूत्यश्च ग्रीहिकङ्को मसूरिका ॥ ४० ॥
 कदम्बकस्तु शुभकः सर्षपोऽस्मिन् पुनः सिते ।
 त्रिष्टुभन्नातरक्षोष्नाः शठः सिद्धार्थतोटकौ ॥ ४१ ॥
 पत्तिका त्रिष्टुभा चास्मिन् गौरेऽथो राजसर्षपे ।
 क्षुधा क्षुधाभिजननस्त्वाष्ट्रको राजिकासुरी ॥ ४२ ॥
 वंशवर्णे कृष्णवर्णः संवर्तो वातुलश्चणः ।
 कलायः स्यात् कालपूरः खण्डिकः कालपूरकः ॥ ४३ ॥
 पूरकोऽप्योलहा जाड्यो वर्तुलेऽत्र सतीनकः ।
 खुडारे त्रिपुटः खेलौ रङ्कुटी तु हरेणुकः ॥ ४४ ॥
 स्नेहपूरे तु फलकः कर्षायौ पाकचूडकौ ।
 सुवर्चलामसृण्यौ च क्षुमा चोमाऽप्यतस्यपि ॥ ४५ ॥
 खल्वे तु पवनिष्पावौ शिम्बिकाऽस्य प्रियैलिका ।
 अलसान्द्रे राजमाषो निष्पावः श्वेतशिम्बिका ॥ ४६ ॥
 काकाण्डः स्याच्चोदनिका कृष्णशिम्बिर्विचक्षणा ।
 कृष्णवृन्ते खलकुलं ताम्रवृन्तः कुलस्थकः ॥ ४७ ॥

प्रचूडकः कफहरी प्रवृत्तिश्च कुलुत्थिका ।
 आढकी तुवरी बल्ला सौराष्ट्री करवीरिका ॥ ४८ ॥
 पतङ्गना च पृथ्वी सा वर्णा स्यात् पाटलिङ्गिका ।
 छत्रा कुस्तुम्बरी धान्या धन्या धाना धनीयिका ॥ ४९ ॥
 कुमारी मुसली वंश्या गुडुची कटुकैषणा ।
 सुचरित्रा च धन्याकधन्येयकतकानि च ॥ ५० ॥
 कुस्तुम्बुरु च धान्यं च भृङ्गा स्यान्मातुलानिका ।
 यवे रूढो दीर्घशूकः शितशूकः महाबुसः ॥ ५१ ॥
 आरूढश्च पवित्रश्च याज्ञिकोऽश्वप्रियोऽपि च ।
 महायवे प्ररूढोऽल्पे वनाशोऽतियवोऽपि च ॥ ५२ ॥
 यावके बलकुलमाधौ यवके तोयपर्णिका ।
 गोधूमस्तु म्लेच्छभोज्यः सुमनः श्लेष्मलो गुरुः ॥ ५३ ॥
 शतपर्वा बहुवक्रः कोद्रवे कोरदूषकः ।
 बालनाटकवात्र्यालौ वरकः कूरदूषकः ॥ ५४ ॥
 विरूक्षकोद्रवोन्नालमदनाः वनकोद्रवे ।
 चिककाणकङ्गुनी कङ्गुः प्रियङ्गुः पीततण्डुला ॥ ५५ ॥
 शीतकङ्गुस्तु मुसुटी पीतकङ्गुस्तु मागवी ।
 श्यामकङ्गुस्तु मधुका यवनालस्तु जोनलः ॥ ५६ ॥
 जूर्णाह्वयो देवधान्यं जोन्नाला बीजपुष्पिका ।
 नीवारस्तु वृषावाहः प्रतीचो मुनिसेवतः ॥ ५७ ॥
 अव्यादा लोलिका सेव्या जलजा तृणधान्यकम् ।
 श्यामाको नीलपुष्पः स्यात् स्मयाकश्च मुनिप्रियः ॥ ५८ ॥
 स्त्री काककङ्गुश्चीनः स्यात् तृणकोलोऽप्युदारकः ।
 गर्मुत् पुनर्गर्मुटिका धुलुञ्छस्तु गवीधुका ॥ ५९ ॥
 ज्योतिष्मती सुलवणा गोजिह्वा भक्षिणी शिवा ।
 गुन्द्रा कुत्रफला गुच्छा क्षेत्रिया बालनायिका ॥ ६० ॥
 रूक्षणीया जन्तुफला गवेथुश्च गवेथुका ।
 गाङ्गेरुकी नागबला ऋषा हस्त्रगवेथुका ॥ ६१ ॥
 गोरक्षतण्डुलश्चाथ शाको मर्कटकः समौ ।
 माषादयः शमीधान्ये शूकधान्ये यवादयः ॥ ६२ ॥
 कोद्रवाद्याः कुधान्यानि व्रीहयः शालिकादयः ।
 स्तम्बे गुचक्षुपौ काण्डे नाली त्रय्यफला तु सा ॥ ६३ ॥

पलालोऽस्त्री कर्णिका स्त्री पूलोऽस्त्री तृणपञ्चिका ।
 कडङ्गरो बुसोऽथ स्यात् कर्णिका धान्यमञ्जरी ॥ ६४ ॥
 पीनकोशी शमी शिम्बा तीक्ष्णाग्रे शूकमस्त्रियाम् ।
 धान्यराशिस्तु बलजा वरण्डस्तृणसञ्चयः ॥ ६५ ॥
 गृहार्थोऽसौ कपोलः स्त्री विक्षिप्तः स्वस्तरो ह्यसौ ।
 समौ प्रयामनीवाकौ कपुकात्प्राक् परे त्रिषु ॥ ६६ ॥
 ऋद्धमावसितं धान्यं पूतं तु बहुलीकृतम् ।
 खलपूः स्याद्बहुकरश्छादिपेयं छदिस्तृणम् ॥ ६७ ॥
 क्रायिकः क्रयिकः क्रेता विपूर्वाः क्रेयवस्तुदे ।
 क्रये प्रसारितं क्रय्यं क्रेयं क्रेतव्यमात्रकम् ॥ ६८ ॥
 विक्रेयं पणितव्यं च पण्येऽथ कपुकः क्रयः ।
 भेटकः प्रक्रयः क्रेणी विक्रयो विपणः पणः ॥ ६९ ॥
 वस्नोऽर्घोऽवक्रयो मूल्यं बन्धः प्रणय आधिकः ।
 नीवी परिपणं मूलं धनं लाभोऽधिकं फलम् ॥ ७० ॥
 परिवर्तो विनिमयो वैमेयो निमयोऽपि च ।
 सत्यङ्कारः पुनः सत्याकृतिः सत्यापनं च तत् ॥ ७१ ॥
 पण्याजीवः सार्थवाहो नैगमो वाणिजो वणिक् ।
 वैदेहकः प्रापणिकः क्रयविक्रयिकोऽपि च ॥ ७२ ॥
 विटपोऽर्थः स्वापतेयं रिक्थं पृक्थं धनं वसु ।
 वित्तं च द्रविणं दृष्टं हेमरूप्यात्मकं तु तत् ॥ ७३ ॥
 अकुप्यं कुप्यमन्यत् स्याद्भूष्यं तद्द्वयमाहतम् ।
 कोशमस्त्री हिरण्यं च हेमरूप्यं कृताकृतम् ॥ ७४ ॥
 ओषध्यो जातिमात्रे स्युरजातौ सर्वमौषधम् ।
 स्त्री शुण्ठिरूषणं विश्वभेषजं सिंहलं कटम् ॥ ७५ ॥
 शृङ्गिबेरं महाकन्दं हंसच्छत्रं कलापकम् ।
 पिप्पली मागधी शौण्डी वृषलं चोषणा बला ॥ ७६ ॥
 श्यामोपकुल्या वैदेही ग्रन्थिनी तीक्ष्णतण्डुला ।
 जालिनी तण्डुला तन्वी काल्यम्बष्ठा मनोहरी ॥ ७७ ॥
 कपिवल्त्यां कोलवल्ली गण्डीरी हस्तिपिप्पली ।
 काण्डी वसीरकाण्डीरौ गृहकाण्डः शिरः पुमान् ॥ ७८ ॥
 मरीचं तु विरावृत्तमुषणं धर्मपत्तनम् ।
 (मरिचं) पलितं श्यामं वेङ्गनं पेन्नवं कटु ॥ ७९ ॥

लोहाख्यं श्यामवल्ली च द्यूषणं (तूषणादिकम्) ।
 कावेरं त्रिकटु व्योषमप्यं कोलं कटूत्कटम् ॥ ८० ॥
 ग्रन्थिकान्तलचव्यैस्तु चतुष्पञ्चषड्वयम् ।
 चव्यं तु चविकं कोला भार्गी पद्मा च विष्टिका ॥ ८१ ॥
 त्रिफला तु मदोदका भूतसारी फलत्रिका ।
 बलकाली बलारोहा चित्रकस्त्वग्निसंज्ञकः ॥ ८२ ॥
 पञ्चकोलं कणाशुण्ठीचव्यग्रन्थिकचित्रकाः ।
 अजाजी तु जया दीप्यो जीरको जीरणः सितः ॥ ८३ ॥
 मागधश्चाथ सूक्ष्मोऽसौ कणजीरण ओसरः ।
 अग्निमन्थो हृद्यगन्धः सुगन्धिः कालिका कणा ॥ ८४ ॥
 कृष्णे तु जीरके पृथ्वी पृथुः कालोपकुञ्चका ।
 सुषवी कारवी फारी पृथ्विका पृथुशालिका ॥ ८५ ॥
 कटुः कटुम्भराऽशोका रोहिणी कटुरोहिणी ।
 कृष्णभेदी मत्स्यपित्ता चक्राङ्गी शकुलादनी ॥ ८६ ॥
 निष्कुट्यां चन्द्रबालैला पृथ्वीका त्रिदिवाऽत्र तु ।
 सूक्ष्मायां त्रिपुटा कुन्तिस्त्रुटिस्तुत्थोपकुञ्चिका ॥ ८७ ॥
 कोराङ्गी नन्दिनी शाला कलुषी संयतोऽपि च ।
 काश्मीरं पौष्करे मूले पद्मपत्रं च पुष्करम् ॥ ८८ ॥
 अव्यथाऽतिचरा पद्मा चारटी पद्मचारिणी ।
 जन्या जतूका रजनी जतुकृष्णवर्तिनी ॥ ८९ ॥
 शृङ्गी विषा प्रतिविषाऽतिविषोपविषाऽरुणा ।
 शिप्रुत्तं श्वेतमरिचं त्वक्क्षीरा वंशरोचना ॥ ९० ॥
 पद्मोत्तरं वह्निशिखं महारजतमित्यपि ।
 कुसुम्भे पिप्पलीमूले ग्रन्थिकं चटिका शिरः ॥ ९१ ॥
 वह्निपुष्पे ग्रन्थिपर्णं स्थौणेयं कुक्कुरं शुक्लम् ।
 शतपर्वं च मित्रश्च कमलश्च शिलश्च तत् ॥ ९२ ॥
 समृद्धिः प्राणदा सिद्धिर्लक्ष्मीः सर्वजनप्रिया ।
 ऋश्यप्रोक्ता श्रोत्रकान्ता श्रावणी हस्तिपादिका ॥ ९३ ॥
 ऋषिः सृष्टा वृषा वृष्या हृद्या योज्या युगाह्वया ।
 अथ वृद्धिर्बोधनीया महाश्रावणिका बुधा ॥ ९४ ॥
 हरेणू रेणुका कौन्ती कपिला भस्मगन्धिनी ।
 प्लावालुकमैलेयं सुगन्धि हरिवालुकम् ॥ ९५ ॥

वालुकं चाथ शैलेयं वृद्धं गिरिशिलाह्वयम् ।
 कालानुसार्य पाषाणपुष्पं शितशिवं शिवम् ॥ ९६ ॥
 क्रिमिघ्नस्तुण्डुलो वेष्टममोघा चित्रतण्डुला ।
 विडङ्गोऽस्त्री सुगन्धा तु सुरसा गन्धनाकुला ॥ ९७ ॥
 नाकुली सुवहा रास्ना छत्राकी सर्वलोचना ।
 गन्धिनी स्यात्तालपर्णी दैत्या गन्धकुटी मुरम् ॥ ९८ ॥
 कुष्ठं वाप्यं पारिभाष्यं रोगाख्यं पाकलोत्पले ।
 व्यालायुधं व्याघ्रनखं करञ्जं चक्रकारकम् ॥ ९९ ॥
 सुषिरा विद्रुमलता कपोताङ्घ्रिर्नटी नली ।
 जटिला लोमशी मांसी तपस्विन्यामिषी जटा ॥ १०० ॥
 धमन्यञ्जनकेश्यौ तु हनुर्हृद्विलासिनी ।
 अपि शुक्तिः सुरः शङ्खो नखं कालदलं समाः ॥ १०१ ॥
 अजमोदा तूष्पगन्धा ब्रह्मदर्भा यवानिका ।
 कारवी च खराश्वोष्ट्रा दीप्यका लोचमस्तकः ॥ १०२ ॥
 मधुं क्लीतकं यष्टिमधुका मधुयष्टिका ।
 लवङ्गं देवकुसुमं श्रीसंज्ञं च वरालकम् ॥ १०३ ॥
 त्वक्पत्रं तु त्वचं चोचं वराङ्गं शृङ्गमुत्कटम् ।
 मृगनाभिर्मृगमदो नगः कस्तूरिकाऽपि च ॥ १०४ ॥
 घनसारस्तु कर्पूरः सिताङ्गो हिमवालुका ।
 चन्द्रनामानि चाथ स्यात् तक्कोलं कोलकं परम् ॥ १०५ ॥
 अपि कोशफलं फालं कार्पासकृतमालकौ ।
 जातीकोशं कोशफलमथागर नृपार्हकम् ॥ १०६ ॥
 लोहाख्यं कृमिजं शृङ्गं जोङ्गकं जाङ्गलं मतम् ।
 वंशकं वंशिकं शीर्षं प्रकरं मृदुलं लघु ॥ १०७ ॥
 वनमायः पुरमदः काकतुण्डो वनहुमः ।
 कालागरु तु मङ्गल्या मङ्गिकासमगन्धि चेत् ॥ १०८ ॥
 श्रीवेष्टः पायसं अथाख्यं श्रीवासो रक्तशीर्षकः ।
 वेष्टः श्रीवत्सपिण्याको दधिश्च सरलद्रवे ॥ १०९ ॥
 वृकधूपश्च तूणस्तु पिण्डकश्चपलश्चलः ।
 कप्याख्यः कपिलः सिंहः कृत्रिमः क्षेत्रिको वरः ॥ ११० ॥
 तुरुष्कः पावनश्चाथ सर्जनो लालनो रसः ।
 बहुरूपो यक्षधूपोऽप्यरालोऽप्यथ कृत्रिमे ॥ १११ ॥

वृकधूपोऽङ्गुलालस्तु महिषाक्षः पलङ्कषः ।
 चन्दनोऽस्त्री मलयजो भद्रश्री रोहणद्रुमः ॥ ११२ ॥
 श्रीखण्डो गन्धसारश्च ताम्रसारं तु चन्दनम् ।
 पीतचन्दनमर्कष्टं गोशीर्षं हरिचन्दनम् ॥ ११३ ॥
 किरातजं बला हार्या पिञ्जनं तैलपर्णिकम् ।
 तथा कुचन्दनं पीतदारु रक्ते तु चन्दने ॥ ११४ ॥
 पत्राङ्गं रञ्जनं सेव्यं धूर्तमैरावतं लसम् ।
 कुचन्दनं जघन्यञ्च रक्तं च तिलपर्ण्यपि ॥ ११५ ॥
 कुङ्कुमं घुसृणं वर्ण्यं रक्तं लोहितचन्दनम् ।
 करटं चितकावेरं गौरवं वासनीयकम् ॥ ११६ ॥
 काश्मीरजं पुष्परजः सङ्कोचं पीतनं वरम् ।
 घोरं चाग्निशिखं चापि जपापुष्पं प्रियङ्गु च ॥ ११७ ॥
 नागोद्भवं तु सिन्दूरं कुङ्कुमेन समप्रभम् ।
 गवलं माहिषं शृङ्गं शशोणं शशलोमनि ॥ ११८ ॥
 अब्धिजे लवणे खण्डं त्रिकूटं त्रिकुटं कुटम् ।
 भोजनीयं कटकटमणु प्रवरवारिजे ॥ ११९ ॥
 अक्षीवं बिसिरं सेव्यं सैन्धवं तु नदीभवम् ।
 माणिमन्थं शितशिवं नादेयं वेधकं पटु ॥ १२० ॥
 विशुन्धलवणं सङ्गं सिन्धि सिन्दूद्भवं मुखम् ।
 सम्भरी पुनरेतद्वद्रौमकं तु रुमाभवम् ॥ १२१ ॥
 वस्नं चाथो भूलवणं कनिष्ठं पाक्यमुद्भिदम् ।
 क्षुद्रकं पांसुलवणं कुप्यं पानीयसम्भवम् ॥ १२२ ॥
 ऊषमूषरजं सेव्यं पांशुजं यवनं पटु ।
 शूलिका तु महाजाली वेष्टावारं महाविडम् ॥ १२३ ॥
 विडं तु पाक्यं बहुलं कृत्रिमद्राविणासुराः ।
 घटिकालवणं तृणं विडवद्धनकालकम् ॥ १२४ ॥
 सौवर्चलं तु रुषकं दुर्गन्धं शूलनाशकम् ।
 अक्षं तादर्यं रुचिष्यं च तिलकं त्वत्र कृष्णके ॥ १२५ ॥
 सौवर्चलं द्रवस्तु स्याज्जारणं लोहितोऽस्त्रियाम् ।
 दशेत्थं लवणानि स्युरथोपलवणास्त्रयः ॥ १२६ ॥
 तत्र क्षारो यवक्षारो निपीती कासनुद्धरः ।
 श्वेतक्षारस्तीक्ष्णरसो विपाकी च स तु द्विधा ॥ १२७ ॥

यवाग्रजो यावशूकस्तत्रान्त्यो बहुसारकः ।
 रसाढ्यो रसको योगी पत्रकः पत्रसारकः ॥ १२८ ॥
 वीज्योऽसुवर्चिका क्षारः कापोतः सुखवर्चकः ।
 स्नुघ्निका स्वर्जिका स्वर्जियोगवाही सुवर्चिका ॥ १२९ ॥
 टङ्कणस्तु क्रामणको लोहसंश्लेषकः कटुः ।
 रसयोनिः पावनको मालतीतीरसम्भवः ॥ १३० ॥
 परशुः शस्त्रकण्टकः शस्त्रक्षारो महाबलः ।
 सहस्रवेधि बाह्लीकं जतुकं हिङ्गु रामठम् ॥ १३१ ॥
 पत्रेऽस्य करवी बाष्पी पृथ्विका कारवी पृथुः ।
 तिन्त्रुणीके तु वृक्षाम्लं चुक्रं शुक्ती रुचिः स्त्रियाम् ॥ १३२ ॥
 सहस्रवेधी चुक्रोऽम्लवेतसः शतवेध्यपि ।
 गूथः क्षारस्य विकृतौ मत्स्यण्डी खण्डशर्करा ॥ १३३ ॥
 फाणितं क्षुद्रकं खण्डं न स्त्रियथो शर्करा सिता ।
 मधूलं तु मधुर्न स्त्री मधुकं तत्पुरातनम् ॥ १३४ ॥
 भ्रामरं तु भ्रमरकं क्षौद्रं सारघमाक्षिके ।
 अन्वर्थं पौत्तिकं दालं दद्रुजं रूक्षबालुकम् ॥ १३५ ॥
 औदालकं तु शालाकं विषजिन्मधुराम्लकम् ।
 छात्रं सर्वौघमत्यर्थस्वाद्विमा मधुजातयः ॥ १३६ ॥
 मदनस्तु मधुच्छिष्टं स्नेहोऽस्त्री पिच्छिले रसे ।
 स्नेहे तिलानां तैलं स्यादन्येषां नामपूर्वकम् ॥ १३७ ॥
 घृतमाज्यं हविः सर्पिः कौम्भं त्वाज्यं दशाब्धिकम् ।
 हैयङ्गवीनं पीथं च नवनीतं तु तक्रजम् ॥ १३८ ॥
 दधि विप्रप्रियं हृद्यं क्षीरजं श्रीघनं गुरु ।
 स्थूलं श्वेतं च मङ्गल्यं कट्वारः शण्डगोरसौ ॥ १३९ ॥
 सञ्जावने तूपमात्रे प्राङ्मन्दात् सर्जकं दधि ।
 मन्दन्तु मण्डजातं तद् बालजातं तु बालकम् ॥ १४० ॥
 अम्लजुण्डी तु गर्भोत् प्राग्गर्भस्तु मुखबन्धनम् ।
 वलीमुखं तु गाढास्यं तत्स्थं तु सशरं दधि ॥ १४१ ॥
 छिन्नं दधि वुसं रूक्षं खलं सेव्यं च निशशरे ।
 बहुसुदनमप्यस्मिन् द्रव्यं स्यादघनं दधि ॥ १४२ ॥
 पत्रलं चाथ पक्वं स्यात् सञ्जातं पयसः शृतात् ।
 घुक्षिमं तूद्धृतस्नेहान्मथितात् प्रमाथितम् ॥ १४३ ॥

तक्रपिण्डं चाथ मस्तु प्राग्राहं दधिमण्डके ।
 आतञ्चनं सञ्जावनं प्रतीवापञ्च मूतकम् ॥ १४४ ॥
 पयो दुग्धं च पीथं च स्तन्यं पुंसवनं सरम् ।
 गव्यं ज्येष्ठं मधु क्षीरं योग्यं सोमरसोद्भवम् ॥ १४५ ॥
 ऊधस्यं जीवनीयं च धारोष्णं त्वमृतं पयः ।
 आसप्ताहात्तु पीयूषं ततो मोरटमोरके ॥ १४६ ॥
 अविसोढाविमरीसे अविदूंसमवेः पयः ।
 सन्तानिनी क्षीरशरः शरोम्रद्रवसंहतिः ॥ १४७ ॥
 तिलाटः कूर्चिका चेति क्षीरस्य विकृती उभे ।
 घोलं तृप्तं कालशेयं दण्डाहतरसायने ॥ १४८ ॥
 मोरटं गोरसश्चाथ घोलः पादाम्बुसंयुते ।
 तक्रं कट्वरमशोघ्नं श्वेतच्छाणं च सारणम् ॥ १४९ ॥
 निरम्बु घोलं मथितमुदश्चित्तु जलार्धकम् ॥ १५० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे वैश्याध्यायः ॥ ६ ॥

शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

शूद्रोऽन्त्यवर्णो वृषलो द्विजपोतो जघन्यजः ।
 पञ्जः पद्योऽप्येकजातिः शूद्राः सङ्करजा अपि ॥ १ ॥
 दासे भृत्यः परिस्कन्दः परजातः परैधितः ।
 नियोज्यचेटकप्रेष्यभुजिष्यपरिचारकाः ॥ २ ॥
 लाडीककिङ्करप्रेङ्गपाळकपरिकर्मिणः ।
 सञ्चारिते धीकरश्च गोण्याः स्युर्दाससूतवः ॥ ३ ॥
 बन्धके स्थित आयत्तो भक्त्यायैव स्थितः कृतः ।
 स्वस्कन्दो भिन्नकुम्भश्च भुजिष्यो दासमोचितः ॥ ४ ॥
 भृतके भृतिभुक्कर्मकरो वैतनिकश्चिषु ।
 भरणं भरणं भर्म वेतनं निष्कयो भृतिः ॥ ५ ॥
 कर्मण्या तुलिका भृत्या भारवाहस्तु भारिकः ।
 वार्त्ताहरो वैवधिको भारयष्टिर्विहङ्गिका ॥ ६ ॥
 शिष्यं तल्लम्बि काचश्च पाथेयं शम्बलोऽस्त्रियाम् ।
 कारवः शिल्पिनः सर्वे कुलिकास्ते कुलोत्तमाः ॥ ७ ॥
 कला शिल्पं च कर्माथ तन्तुवायः कुविन्दकः ।
 वाणिर्व्यूतिश्च वानं स्याद् वेमा ना वानदण्डकः ॥ ८ ॥
 तर्कुः कर्तनभाण्डे ना त्रसरः सूत्रवेष्टनः ।
 धराः कार्पासतूलाः स्युस्तूलमल्ली पिचुः पुमान् ॥ ९ ॥
 पिञ्जनं स्याद्विहननं घराणां प्रविसारणम् ।
 कल्पनं कर्तनं तुल्ये त्रिवृतं तु त्रिवित् त्रिषु ॥ १० ॥
 आवर्तनं तु वलनं सूत्राणि नरि तन्तवः ।
 सौचिकस्तुन्नवायः स्यात् सूचिः सूचा च सीवनी ॥ ११ ॥
 सूचिसूत्रं पिप्पलकमोतं प्रोतमुभे त्रिषु ।
 सीवनं सेवनं स्यूती रङ्गाजीवस्तु चित्रकृत् ॥ १२ ॥
 लेखनी तुलिका कूर्ची पुस्तं लेप्यादिकर्मणि ।
 या तु लेप्यमयी नारी सा स्यादञ्जलिकारिका ॥ १३ ॥
 पाञ्चालिका तु वस्त्रादिपुत्रिका सालभञ्जिका ।
 पलगण्डो लेपकारः कल्पाणिः समलेपनी ॥ १४ ॥
 संवाहकोऽङ्गमर्दी स्याच्छस्त्रमार्जोऽसिधावकः ।
 मणिकारो वैघटिकः शौलिकस्ताम्रकुट्टकः ॥ १५ ॥

नाडिन्धमः स्वर्णकारः कलादो 'मौष्टिकः समाः ।
 कर्मारः स्यादयस्कारो व्योकारो लोहकारकः ॥ १६ ॥
 शाङ्गिकः स्यात् काम्बविको भस्त्रा चर्मप्रसेविका ।
 सन्दंशः स्यात् कङ्कमुखः काणा मूका वुषा स्मृता ॥ १७ ॥
 विध्यते येन मण्यादिराविधोऽसौ निघोऽपि च ।
 आस्फोटनी वेधनिका भ्रमः कुन्दश्च यन्त्रकम् ॥ १८ ॥
 नाराची स्यादेषणिका शाणस्तु निकषः कषः ।
 रोषाणस्तु घृषिघृष्वो हेमादिनिकषाश्मनि ॥ १९ ॥
 यत्र निक्षिप्य कूटेन हन्यते सा निघानिका ।
 प्रतिच्छाया प्रतिकृतिः प्रतिमा प्रतियातना ॥ २० ॥
 प्रतिच्छन्दः प्रतिनिधिर्वैरं च प्रतिरूपकम् ।
 प्रतिबिम्बोपमाने च सादृश्ये सन्निभं निभम् ॥ २१ ॥
 हरिणी हेमप्रतिमा सूर्मिः स्थूणान्यलोहजा ।
 कूटोऽश्मकुट्टकोऽथ स्यादृक्कः पाषाणदारकः ॥ २२ ॥
 कायस्थः स्याल्लिपिकरः करणोऽक्षरजीवनः ।
 लेखकोऽक्षरचञ्चुश्च लिबिलेखाक्षरस्य या ॥ २३ ॥
 लिपिस्त्वालेख्यलेखा स्याद्रेखा तु स्यादकृत्रिमा ।
 वर्णान्तरस्य सर्पादौ लाजिलेखा तु कृत्रिमा ॥ २४ ॥
 मेलामन्दो मषिघटी मेलाम्बु मलिनाम्बु च ।
 मेला (मणिर्न घणं तस्या लेखन्या) कणिकोद्धृता ॥ २५ ॥
 चण्डिलः क्षुरमर्दी स्यान्नापितोऽन्तावसायपि ।
 क्षुरोऽस्य वपनं शस्त्रं कर्त्रिका कर्तनी कृवी ॥ २६ ॥
 कुम्भकारः कुलालोऽस्य पचनं पाकमण्डलम् ।
 धूसरश्चाक्रिकस्तैली पिण्याको ना खलिः स्त्रियाम् ॥ २७ ॥
 आभीरस्तु महाशूद्रो गोपो गोसङ्घग्रगोदुहौ ।
 गोपालो वल्लवश्चाथ वत्सीयस्त्रिषु तद्धिते ॥ २८ ॥
 जाबालः स्यादजाजीवः कोणोऽक्ली लगुडो नरि ।
 सन्दानं दामनी दामा न ना दाम पशोस्तु या ॥ २९ ॥
 रज्जुः सा बन्धनी तन्त्री त्वल्पा पाशस्तु कर्णिका ।
 गुणो वराटो रज्जुः स्त्री न ना शुल्बा वटी त्रयी ॥ ३० ॥
 ग्रन्थिबन्धो व्रजो गोष्ठो गौष्ठीनं तु पुरा व्रजः ।
 मन्थस्तु मन्था मन्थानो वैशाखः खजकोऽपि च ॥ ३१ ॥

कुठारो मन्थविष्कम्भो मन्थपात्रं तु गर्गरी ।
 घोष आभीरपल्ली स्यात् पक्कणोऽस्त्रयन्त्यजालयः ॥ ३२ ॥
 मालाकारो माल्यजीवी मालिकः प्रातिहारकः ।
 ऊर्णा स्नावः कदल्यादेः करण्डी तु पुटी त्रयी ॥ ३३ ॥
 तक्षा तु वर्धकिस्त्वष्टा रथकारश्च काष्ठतट् ।
 ग्रामाधीनो ग्रामतक्षः कौटतक्षोऽनधीनकः ॥ ३४ ॥
 स उद्हनो यत्र काष्ठे काष्ठं निक्षिप्य तद्ध्यते ।
 व्रश्चनः पत्रपरशुः परशुस्तु परश्वधः ॥ ३५ ॥
 स्वधितिर्ना कुठारोऽक्ली वासी स्याद्धारुतक्षणी ।
 क्रकचोऽस्त्री करपत्रं स्वधितिः कर्तनः समौ ॥ ३६ ॥
 जीवान्तको मांसिकश्च कौटिको मांसविक्रयी ।
 सूनातटिवर्धस्थानं कृपाणीली च कर्तरी ॥ ३७ ॥
 मृगयुर्लुब्धको व्याधो द्वौ वागुरिकजालिकौ ।
 आच्छोटनं खेटनञ्च मृगव्यं मृगयाऽपि च ॥ ३८ ॥
 आखेटश्च वराधिश्च वागुरा मृगबन्धिनी ।
 श्वा विश्वकदुर्मुगयादक्षोऽलर्कस्तु योगितः ॥ ३९ ॥
 दक्षिणेर्मा तु स मृगो यो लुब्धैर्दक्षिणे हतः ।
 वैतंसिकः शाकुनिक उन्माथः कूटयन्त्रकम् ॥ ४० ॥
 शल्यमस्त्री शलाका स्याद् वितंसः पक्षिबन्धनम् ।
 पक्षिणा येन गृह्यन्ते पक्षिणोऽन्ये स दीपकः ॥ ४१ ॥
 कैवर्तो धीवरो दाशो नौजीवी जालिमार्गरी ।
 मत्स्यधानी कुवेणी स्याद् बलिशं मत्स्यवेधनम् ॥ ४२ ॥
 जालमानाय उद्दालस्तूत्रतो मुकुलाकृतिः ।
 पादकृष्णमकारः स्यादारा चर्मप्रभेदनी ॥ ४३ ॥
 वद्धी नद्धी वरत्रा च शौण्डिकस्त्वासुतीवलः ।
 कल्यापालो ध्वजी चाथ मद्यं स्यात् कपिशायनम् ॥ ४४ ॥
 शीघ्रु कश्यमिरा कल्या शुण्डा देवी परिस्तुता ।
 परिस्तुन्माधवी हाला प्रसन्ना मदिरा सुरा ॥ ४५ ॥
 मदना मोहकलिका मदिष्टा काचमालिका ।
 कादम्बरी वारुणी च मधूलैस्तु मधूलिका ॥ ४६ ॥
 पकैस्त्वक्षुरसैरक्षो शीघ्रुः पङ्कुरसः शिवः ।
 शीतपङ्को रुक्षणीयोऽप्यपक्वै रसिकासवौ ॥ ४७ ॥

मधुमद्ये तु माध्वीकं कामिकान्तं मदोत्कटम् ।
 विक्रान्तं कपिशं हृद्यं मुखवासः सुखोदयः ॥ ४८ ॥
 मध्वासवोऽसितः सेव्यः शार्करो माधवोऽस्त्रियाम् ।
 मैरेयमासवो धात्रीधातकीगुडवारिभिः ॥ ४९ ॥
 काकोली पैष्टिकी श्वेताऽप्यापानं पानगोष्ठिका ।
 नग्नहूर्ना मद्यबीजं किण्वमप्यथ मेदकः ॥ ५० ॥
 जगलोऽथ सनिस्सारो मर्कसो मासरोऽपि च ।
 आसूतिर्मद्यसन्धानमासवोऽभिषवोऽपि च ॥ ५१ ॥
 कारोत्तरः सुरामण्ड आसवोऽप्यथ भक्षणम् ।
 उपदंशोऽपदंशश्च मधुवारा मधुक्रमाः ॥ ५२ ॥
 शुण्डापानं मदस्थानं सपीतिः सहपानकम् ।
 सरकं चषकं चास्त्री गल्बर्तोऽप्यनुकर्षणम् ॥ ५३ ॥
 पानगोष्ठीषु यन्तृत्तं तत्र स्यादुच्चतालकम् ।
 प्लवचाण्डालचण्डालमातङ्गास्तु जनङ्गमे ॥ ५४ ॥
 विष्टिर्ना कारितं कर्म हठाद्येऽपि च तत्कृतः ।
 अथैकागारिकश्चोरः परिमोषी मलिग्लुचः ॥ ५५ ॥
 प्रतिरोधी परास्कन्दी तस्करः प्रतिरोधकः ।
 स्तेनो रात्रिचरो दस्युर्मोषकः पारिपन्थिकः ॥ ५६ ॥
 पश्यतो यो हरत्यर्थं स चोरः पश्यतोहरः ।
 पटञ्चरः पटञ्चरो वन्दी स्त्री प्रग्रहो ग्रहः ॥ ५७ ॥
 लोप्त्रं हृतोऽर्थश्चौर्यं तु स्तेयं स्तैन्यं च चौरिका ।
 धूर्तोऽक्षधूर्तः कितवो द्यूतकृत् कृष्णकोहलः ॥ ५८ ॥
 चौरिकश्चाक्षजीवी च सभिका द्यूतकारकाः ।
 द्यूतोऽस्त्रियामक्षवती तद्भेदाः पञ्चकादयः ॥ ५९ ॥
 समाधिश्च समङ्गश्च परिवी रञ्जनं च तत् ।
 पणो ग्लहो देवनस्तु पाशकोऽक्षोऽथ शारयः ॥ ६० ॥
 शाराः स्युः परिणायस्तु तेषां सञ्चारणेऽभितः ।
 अक्षपाता अयास्ते तु चतुस्त्रिव्येकयोगिनः ॥ ६१ ॥
 कृतं त्रेता द्वापरं च कलिश्चेति यथाक्रमम् ।
 जायाजीवस्तु शैलूषः शैलाली भरतो नटः ॥ ६२ ॥
 रङ्गाजीवो नृतुर्नग्नो नण्डो रङ्गावतार्यपि ।
 सर्वकेशी कृशाधी च नर्तकस्त्वभ्रफुल्लकः ॥ ६३ ॥

यो यष्टिरञ्जुखड्गेषु प्रनृत्यति स पूरकः ।
 केलकः प्रवकश्चासौ चारणास्तु कुशीलवाः ॥ ६४ ॥
 नर्तको भूमिकां प्राप्तो देवानामर्धमानुषः ।
 रङ्गावतारी रुद्रस्य (कृष्णस्य) त्वर्धमानवः ॥ ६५ ॥
 रामस्य स्याद्देवरथः शक्रस्य तु शचीबलः ।
 रावणस्य तु रङ्गोपमर्दी कंसस्य भूमिकाम् ॥ ६६ ॥
 प्राप्तः फालगलालेपो यस्तु स्त्रीभूमिकां गतः ।
 स भ्रुकुंसो भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसश्च भ्रुकुंसवत् ॥ ६७ ॥
 तत्तद्वेषो भूमिका स्यात् तद्वारी भूमिकागतः ।
 पात्राणि नाट्येऽधिकृताः सूत्रधारस्तु सूचकः ॥ ६८ ॥
 नान्दी तु पाठको नान्द्याः पार्श्वस्थाः पारिपाथिकाः ।
 विदूषकः केलिकिलः प्रहासी प्रतिभोऽपि च ॥ ६९ ॥
 वेश्याचार्यः पीठमर्दः शिद्रो वातसुतो विटः ।
 मार्दङ्गिको मौरजिको वीणावादास्तु वैणिकाः ॥ ७० ॥
 वेणुधमाः स्युर्वैणविकाः पाणिवादास्तु पाणिघाः ।
 नृत्तं गीतं वाद्यमिति नाट्यं तौर्यत्रिकं त्रिकम् ॥ ७१ ॥
 सङ्गीतकं प्रेक्षणार्थं नाट्योक्ते नाट्यधर्मिका ।
 उत्तमोत्तमिकं श्लोकैः सैन्धवं प्राकृतोक्तिभिः ॥ ७२ ॥
 ताण्डवोऽस्त्री नृत्तलास्यनटनाक्षजनर्तनम् ।
 नटितिर्नाटकी रासो नृत्तं बाह्यं स्वकल्पितम् ॥ ७३ ॥
 रसभावाङ्गहारार्थैः शास्त्रोक्तै रूपकाश्रयम् ।
 नृत्तमाभ्यन्तरं नाम स्थायिभावात्मको रसः ॥ ७४ ॥
 शृङ्गारहास्यबीभत्सवीराद्भुतभयानकाः ।
 रौद्रश्च करुणश्चाष्टौ रसाः शान्तोऽपि च कश्चित् ॥ ७५ ॥
 स्थायिभावाः क्रमादेशां रतिर्हासो जुगुप्सनम् ।
 उत्साहो विस्मयो भीतिः क्रोधः शोकः शमोऽपि च ॥ ७६ ॥
 बीभत्समाने बीभत्सो विस्मेतर्थाद्भुतो रसः ।
 भयानको रसो भीते हास्यो हसितरि स्थितः ॥ ७७ ॥
 बीभत्सो विक्रतिश्चित्रं त्वाश्रयं फुल्लमद्भुतम् ।
 भयानकं प्रतिभयं भीमं भीष्मं भयङ्करम् ॥ ७८ ॥
 मैरवं भीषणं घोरमाभीलं दारुणं च तत् ।
 करुणः सकृपो रौद्रस्तमोऽमी विरातिस्त्रिषु ॥ ७९ ॥

भावो मनोविकारः स्यादनुभावोऽस्य सूचकः ।
 विभावो हेतवस्तस्य भावस्य हृदि वत्स्यतः ॥ ८० ॥
 स्थायिसञ्चारिभेदेन द्विधा भावो व्यवस्थितः ।
 स्वेदो घर्मो निदाघः स्यात् कालिका तु विवर्णता ॥ ८१ ॥
 रोमोद्गमो रोमहर्षो रोमाञ्चः कण्ठकोऽपि च ।
 रोमाङ्क उल्लसनकमप्युल्बणकमित्यपि ॥ ८२ ॥
 स्मितं त्वदृष्टदशने हासो वक्रोष्ठिका न ना ।
 रुचिः स्त्री हसितं दृष्टदन्ते विहसितं श्रुते ॥ ८३ ॥
 सोत्प्राप्ते त्वाच्छुरितकं तथोपहसितं भवेत् ।
 निकुञ्चितशिरोगात्रमट्टहासो महाहसे ॥ ८४ ॥
 अतिहासस्त्वनुस्यूतोऽपहासोऽकारणात् कृते ।
 स्वरभेदस्तु कल्कत्वं स्वरकम्पस्तु वेपथुः ॥ ८५ ॥
 आकारगोपनायामपटीकाप्यवकटापि स्त्री ।
 न पुमानवहित्था स्यादक्ली गृहजालिकाप्यस्याम् ॥ ८६ ॥
 क्रन्दितं रुदितं क्रुष्टं लोतोऽश्रु नयनोदकम् ।
 अश्रु रोदनमास्रं च क्रीडा खेला च कुर्वन्म् ॥ ८७ ॥
 न स्त्री केलिः परीहासः क्रीडा लीला च नर्म च ।
 जृम्भणं तु त्रयी जृम्भा मुखभेदस्तु जृम्भिका ॥ ८८ ॥
 एजनं वेपथुः कम्पः प्रलयोऽस्पन्दनस्थितिः ।
 आटोपावेगसंरम्भसम्भ्रमास्तु त्वरा त्वरी ॥ ८९ ॥
 असौम्येऽक्षण्यदृष्टिः स्यादवलोकस्त्वधः कृतः ।
 उन्मीलनं स्यादुन्मेषो निमिषस्तु निमीलनम् ॥ ९० ॥
 स्फुरितं स्पन्दितमथ भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः स्त्रियाम् ।
 भ्रुकुटिर्भ्रुकुटिः सारी काली तीरतरङ्गिका ॥ ९१ ॥
 चतुरं त्वल्पा भ्रुकुटी रेचितं त्वेकया भ्रुवा ।
 चेष्टाः शृङ्गारजाः स्त्रीणां हावा लीलादयो दश ॥ ९२ ॥
 वल्लभानुकुतिलीला विलासः श्लिष्टविक्रिया ।
 विच्छित्तिर्वस्त्रमाल्यादेर्न्यासोऽनास्थोपशोभितः ॥ ९३ ॥
 सकृत्सुश्लिष्टरुदितस्मितादि किलिकिञ्चितम् ।
 बिम्बोकोऽहङ्कृतेनैव प्राप्तेऽभीष्टेऽप्यनादरः ॥ ९४ ॥
 विकृतं तूचितस्यापि लज्जादिभिरभाषणम् ।
 मोट्टायितं वल्लभस्य चिन्ता कुट्टमितं पुनः ॥ ९५ ॥

स्तनोष्ठादेर्दृढस्पर्शाद् (दुःखवत्) सुखसम्भ्रमः ।
 विभ्रमो दृग्विपर्यासो ललितं कोमलक्रमः ॥ ९६ ॥
 सत्त्वाद्भावस्ततो हावो लीला हावात् समुत्थिता ।
 अङ्गहारोऽङ्गविक्षेपो नानाकरणसंहतिः ॥ ९७ ॥
 करणान्यङ्गचेष्टाः स्युर्हरणं करणं समे ।
 व्यञ्जकोऽभिनयो यस्तु सूच्योऽर्थोऽभिनयः स च ॥ ९८ ॥
 भूषणाद्यैर्गिराऽङ्गेन सत्त्वेनाभिनयाः कृताः ।
 त्रिषु क्रमात् स्युराहार्यवाचिकाङ्गिकसात्त्विकाः ॥ ९९ ॥
 नाटकं नाटिका भाणो वीथिः प्रहसनं डिमः ।
 ईहामृगः प्रकरणमङ्कः समवकारकः ॥ १०० ॥
 व्यायोगश्चेति रूपाणि नाट्यस्यैता विकल्पनाः ।
 भारती सात्त्वती चैव कैशिक्यारभटीति च ॥ १०१ ॥
 चतस्रो वृत्तयो भाषाः संस्कृताद्या विकल्पिताः ।
 भारती संस्कृता वाणी शेषाश्चेष्टा इति क्वचित् ॥ १०२ ॥
 अथ नाट्योक्तयो राजा देवो भट्टारकोऽपि च ।
 महाराजश्च राज्ञी तु स्वामिनी महिषी तु चेत् ॥ १०३ ॥
 देवो स्याद्भट्टिनी त्वन्या गणिका पुनरञ्जुका ।
 भट्टारिका राजमाता तत्पुत्री भर्तृदारिका ॥ १०४ ॥
 तनयस्त्वस्य गोस्वामी (स्वामी) चाप्यथ राष्ट्रियः ।
 स्यालोऽस्य युवराजस्तु कुमारो भर्तृदारकः ॥ १०५ ॥
 पतिस्त्वार्य आर्यपुत्र आर्यौ मारिषमार्षकौ ।
 आबुक्तस्तु पिताऽम्बा तु माता व्येष्टा स्वसौप्तिका ॥ १०६ ॥
 बला दुसा कनिष्ठा स्यादाबुक्ता भगिनीपतिः ।
 बाला वासूर्भदन्ताः स्युः शाक्यक्षपणकादयः ॥ १०७ ॥
 आर्यभ्राता क्षुल्लतातो देवरस्त्वार्यपुत्रकः ।
 हण्डे हज्जे हलाऽऽह्वाने नीचां चेटीं सखीं प्रति ॥ १०८ ॥
 अत्रहण्यमवद्यं स्यान्निष्ठा निर्वहणं समे ।
 गीतं गेयं च गानं च यत्तु तन्त्रीसमुद्भवम् ॥ १०९ ॥
 तन्निर्गीतं बहिर्गीतं गान्धर्व दिव्यमैश्वरम् ।
 सप्त स्वरास्त्रयो ग्रामा मूर्च्छना एकविंशतिः ॥ ११० ॥
 तानान्येकोनपञ्चाशदित्येष स्वरविस्तरः ।
 स्थानान्युरः शिरः कण्ठः आवकः कण्ठजो गुणः ॥ १११ ॥

यो दूराच्छ्रावयत्यन्ये त्वन्वर्था मधुरादयः ।
 काकीत्याद्याः कण्ठदोषास्तत्र काकी नृलिङ्गकः ॥ ११२ ॥
 अगम्भीरः स्वरोऽथ स्यात्तम्बिकी घ्राणनिर्गतिः ।
 सन्दष्टो भेदसम्मिश्रः कफिलो घर्घरः कफात् ॥ ११३ ॥
 काकली तु कले सूक्ष्मे रागा गीतेर्विधाः पृथक् ।
 वादित्रं वादनं वाद्यमोतोद्यं तच्चतुर्विधम् ॥ ११४ ॥
 ततं वीणादिकं वाद्यं तालाद्यं विततं घनम् ।
 वंशादिकं तु सुषिरमानन्दं मुरजादिकम् ॥ ११५ ॥
 घनं चाथाद्यवाद्ये द्वे विततं सहकीर्तने ।
 विपञ्ची वल्लकी वीणा घोषवत्यनुवादिनी ॥ ११६ ॥
 स्यात् कण्ठकूणिका चाथ स्याच्चित्रा परिवादिनी ।
 तन्मयश्चेत् सप्त ताश्चेत् स्युश्चतुर्दश चतुर्दशी ॥ ११७ ॥
 एकादशेकादश चेदेवं वीणा त्रयोदशी ।
 वीणा स्थाणोरनालम्बी गणानां तु प्रभावती ॥ ११८ ॥
 विश्वावसोस्तु बृहती तुम्बुरोस्तु कलावती ।
 महती नारदस्य स्यात् सरस्वत्यास्तु कच्छपी ॥ ११९ ॥
 कोलम्बकस्तु कायोऽस्याः ककुभस्तु प्रसेवकः ।
 वीणा वंशशलाका तु कणिका कूणिका च सा ॥ १२० ॥
 परिवादो वादनार्थ उपनाहस्तु बन्धनम् ।
 तन्त्रीष्वङ्गुष्ठसंस्पर्शः कलस्तासां तु ताडनम् ॥ १२१ ॥
 निष्कोटितोऽस्त्री सव्येन तलस्त्वन्येन पाणिना ।
 लयस्तु साम्यं दशभिश्छन्दोऽक्षरपदैः सह ॥ १२२ ॥
 विलम्बितं द्रुतं मध्यं तत्त्वमोघो घनं क्रमात् ।
 तालः कालक्रियामानं क्रियाङ्गुलिकरोद्भवा ॥ १२३ ॥
 ताली त्रयी कांस्यताली विताली तालपत्रिका ।
 मिङ्गिल्लस्तु पयोऽथ स्याद् दर्दरः कलशीमुखः ॥ १२४ ॥
 वंशे तु वंशिका पूरी मुरली वेणुका च सा ।
 शृङ्गवाद्ये खरमुखं स्यादाघट्टलिकेति च ॥ १२५ ॥
 तोट्टभी चाथ पिच्छोला पाली तु जतुकाहला ।
 काहला तु कहाला स्याच्चण्डकोलाहलेति च ॥ १२६ ॥
 नालिका सुषिरच्छेदे मुरली पुष्पिकेति च ।
 वाण्डालिका तु कण्डोलवीणा चण्डालवल्लकी ॥ १२७ ॥

काण्डवीणा कुवीणा च ढकारी किन्नरीति च ।
 सारिका कुङ्कुणी चाथ यो दण्डोऽल्पकलस्वनः ॥ १२८ ॥
 दण्डिका कारवी सृष्टा किङ्गिरो जर्जरश्च सः ।
 मुरजास्तु मृदङ्गास्ते त्वङ्ग्यालिङ्गयोर्ध्वकाक्षयः ॥ १२९ ॥
 पूर्वः पूर्वो महानेषामेतत्पुष्करमण्डले ।
 व्यापारस्त्वङ्गुलीनां यो मार्जना सा त्रिधा त्वियम् ॥ १३० ॥
 मायूरी चार्धमायूरी तथा कर्मारवीति च ।
 घर्घरी स्याद् घर्घरिका वादने मूर्च्छना न ना ॥ १३१ ॥
 स्युः षड्जर्षभगान्धारमध्यमाः पञ्चमस्तथा ।
 धैवतश्च निषादश्च तन्त्रीकण्ठोद्भवाः स्वराः ॥ १३२ ॥
 ते केकिचातकाजक्रुष्पिकभेकगजस्वराः ।
 दुन्दुभिस्त्वानको भेरी भम्भा नासृश्च नान्यपि ॥ १३३ ॥
 स्याद् यशःपटहो ढक्का पटहस्त्वानकोऽस्त्रियौ ।
 हुडुकस्तु हडकोऽस्त्री समौ पणवमर्हलौ ॥ १३४ ॥
 वाद्यप्रभेदा डमरुमड्डुडिण्डिममर्कराः ।
 तिमिलाट्टरीवेध्यालुम्बिकाकुञ्जिकादयः ॥ १३५ ॥
 वादित्रलगुडे कोणो न नपुं शारिका स्त्रियाम् ।
 तूर्योऽस्त्री वाद्यनिर्घोषे वादित्रं वादनञ्च तत् ॥ १३६ ॥
 तूरकामध्वजौ चाथ सायन्तूर्येऽक्षताडनम् ।
 संवेशने तु भ्रुकुटः प्रकटः प्रतिबोधने ॥ १३७ ॥
 पटहाडम्बरौ युद्धे मङ्गले प्रियवादिका ।
 देवतार्चनतूर्ये तु धूमलोऽस्त्री बलिर्न घण् ॥ १३८ ॥
 क्षुण्णकं मृतयात्रायामर्धतूरो रणोद्यमे ।
 नटोत्साहनमङ्के स्यात् पूर्वङ्गास्त्वतः परे ॥ १३९ ॥
 प्रत्याहारोऽत्र कुतपविन्यासे कुतपः पुनः ।
 वाद्यवादकसामग्र्यामारम्भः गीत्युपक्रमे ॥ १४० ॥
 निवेशने गायिकानां न पुमानवतारणम् ।
 लोकपालार्चने दिक्षु करणीपरिवर्तनम् ॥ १४१ ॥
 नन्दी चारी महाचारी कथा सूत्रं प्ररोचना ॥ १४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

भूमिकाण्डे शूद्राध्यायः ॥ ९ ॥

तृतीयो भूमिकाण्डः समाप्तः ॥ ३ ॥

४. अथ पातालकाण्डः

सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

पातालं बलिसद्माधोभुवनं वडबामुखम् ।
 रसातलं तलं नागलोको दैत्यक्षयो रसा ॥ १ ॥
 अगाधो भुवनं रोकं रन्ध्रं निर्व्यथनं बिलम् ।
 कुहरं सुषिरं छिद्रं श्वभ्रोऽस्यक्ली सुषिर्वपा ॥ २ ॥
 गर्तः पतेरो भूश्चभ्रमवखातोऽवटोऽवधिः ।
 शेषोऽनन्तो नागराजः सर्पराजस्तु वासुकिः ॥ ३ ॥
 नागा बहुफणाः सर्पास्तेषां भोगवती पुरी ।
 सर्पो द्विरसनो व्यालो दन्दशूकः सरीसृपः ॥ ४ ॥
 उरगो भुजगो जिह्वो भुजङ्गोऽहिर्भुजङ्गमः ।
 फुल्लरीको लेलिहानः कुण्डल्याशीविषः फणी ॥ ५ ॥
 दीर्घपृष्ठो विषधरः पन्नगो दृक्प्रवा हरिः ।
 बिलौका गूढपाञ्चक्री नाकुसद्धानिलाशनः ॥ ६ ॥
 दर्वीकरा मण्डलिनो राजिमन्तश्च पन्नगाः ।
 रथाङ्गलाङ्गलच्छत्रस्वस्तिकाकुशलाञ्छनाः ॥ ७ ॥
 फणिनः शीघ्रगतयः सर्पा दर्वीकराभिधाः ।
 दीर्घा मन्दा मण्डलिनो मण्डलैर्विविधैर्युताः ॥ ८ ॥
 राजिमन्तो राजियुता राजीला राजिलाश्च ते ।
 वैकरञ्जाः सङ्करजास्त्रयाणां व्यन्तरास्तथा ॥ ९ ॥
 षड्विंशतिर्मण्डलिनस्तथा दर्वीकराभिधाः ।
 त्रयोदश च राजीला वैकरञ्जाभिधास्त्रयः ॥ १० ॥
 निर्विषा द्वादशेत्येवमशीतिः सर्पजातयः ।
 दर्वीकरा महासर्पः फुल्लः पुष्पाभिकीर्णकः ॥ ११ ॥
 कुम्भीनसो लोहिताहिः कृष्णसर्पः कुलस्थकः ।
 शङ्खपालो महापद्मः काकोदर इतीदृशाः ॥ १२ ॥
 आशीविषाश्च सर्वेऽथ कृष्णसर्पो वलाहकः ।
 अथ मण्डलिनस्तन्तुर्गोनसो वृद्धगोनसः ॥ १३ ॥
 किशुकः पीनसः पिङ्गो देवभिन्न इतीदृशाः ।
 गोनसस्तु तिलित्सः स्याद् गोनसो घोणसोऽपि च ॥ १४ ॥

राजिलाः स्युः पुण्डरीकश्चित्रको लोहिताक्षकः ।
 दिव्येलकः सर्पराजः किकीसादः इतीदृशाः ॥ १५ ॥
 अथ पुष्करसादः स्यात् सर्पराजश्च सर्पभुक् ।
 वैकरञ्जाः पोटगलस्तथा पुष्पाभिकीर्णकः ॥ १६ ॥
 दिव्योऽलकोऽप्यथो सर्पा निर्विषा दिव्यकालिनी ।
 पैङ्गराजोऽप्यजगरः शुकपोत्रो वलाहकः ॥ १७ ॥
 वर्षाभीः शकलज्योतिः कोलकः पादवाहिकः ।
 पुष्पकोऽहिपताकश्च गन्धाहिक इतीदृशाः ॥ १८ ॥
 अलगद्धो जलव्यालो वाहसोऽजगरः शयुः ।
 मालुधानो मातुलाहिः पुण्डरीकस्तु डुण्डुभः ॥ १९ ॥
 राजिलः क्षीरकश्चाथ नानीपातः स्वजः समौ ।
 अहीरिणिः स्त्री द्विमुखी निर्मुक्तो मुक्तकञ्चुकः ॥ २० ॥
 सर्पाश्चरस्तु निर्मोकः कञ्चुको नित्वयन्यपि ।
 अहिनित्वयनी चाथ स्फटा भोगः फणा न षण् ॥ २१ ॥
 गरलं तु विषं द्वेलो गरस्तु कृतकं विषम् ।
 द्वेलास्तु कालकूटाद्या मूलपुष्पफलात्मकाः ॥ २२ ॥
 कालकूटः कटोऽथ स्याद् गौरार्द्रो ब्रह्मबालुकम् ।
 ब्रह्मघोषश्च घौषश्च पुण्डरीकं तु बालुकम् ॥ २३ ॥
 एवमन्येऽपि काकोलो वत्सनाभो हलाहलः ।
 सौराष्ट्रिको ब्रह्मपुत्रशौक्लिकेयेन्द्रदारदाः ॥ २४ ॥
 मुस्तः कुष्ठो मेषशृङ्ग इत्याद्याश्चाथ वातिकः ।
 विषवैद्यो जाङ्गलिको व्यालमाह्याहितुण्डिकः ॥ २५ ॥
 गोधा निहाका मुसली वृक्षजा सा शयण्डकः ।
 अथ गौघेरगौधारौ भुजगीगोधयोः सुते ॥ २६ ॥
 गौघेयश्चाथ चिक्रोडस्तालको रोमशीति च ।
 नकुलः पिङ्गलोऽथैष कर्शो रोमशपुच्छकः ॥ २७ ॥
 नकुलस्तु महान् बभ्रुर्धरीको नकुलाकृतिः ।
 कृकलासः प्रतिरबिः शयानः सरटः शयः ॥ २८ ॥
 स कामरूपी बिम्बः स्यात् कृकवाकुः सुदुष्प्रभः ।
 हालाहलस्त्वञ्जिका ब्राह्मणी रक्तपुच्छिका ॥ २९ ॥
 सृजया चाथ दैवज्ञा ज्येष्ठा स्याद् गृहगौलिका ।
 टट्टनी मुसली पल्ली माणिक्या गृहगोधिका ॥ ३० ॥

कुड्यमत्स्या सुरश्वेता कुण्डणाची सुराजिका ।
 उन्दुर्मुषिकः काण्डमाखुस्तु खनकः क्रमः ॥ ३१ ॥
 चुचुन्दरी तु गन्धाखुगिरिका बालमूषिका ।
 वृश्चिके त्वात्यलिद्रूणा मलं तत्पुच्छकण्टकः ॥ ३२ ॥
 खर्जुरो वृश्चिका न क्ली शूककीटोऽपि वृश्चिकः ।
 आढा शतपदी कर्णजलका ढारिकापि च ॥ ३३ ॥
 मूषिका लृतिका लृता तन्तुवायश्च जालिकः ।
 ऊर्णनाभस्तन्तुनाभः कृमिर्मर्कटकोऽपि च ॥ ३४ ॥
 ऊर्णाबहिश्चोर्णवाहीराशाबन्धोऽस्य जालकम् ।
 लृतापट्टस्तु तत्कोश उद्देशो मत्कुणः समौ ॥ ३५ ॥
 घुणः कृमिः काष्ठभवा लृतातः स्यात् पिपीलिका ।
 ब्राह्मणी स महान् पिङ्गः कपिशा तु गृहेडिका ॥ ३६ ॥
 उलङ्कलो महान् कृष्णः सा मर्कोटपिपीलिका ।
 या कृष्णाऽल्पाऽथ सूत्रमाऽन्या जातिः कन्यापिपीलिका ॥ ३७ ॥
 वज्रो वज्रचुपदीकोपजिह्विका चोपदेहिका ।
 तत्प्राया शिथिली पिङ्गा यूकस्तु शिरसि क्रिमिः ॥ ३८ ॥
 नीलाङ्गा कृमिरन्तर्जः क्षुद्रः कीटो बहिर्भवः ।
 पुल्लकास्तूभयेऽपि स्युः कीकसाः कृमयोऽणवः ॥ ३९ ॥
 सरीसृपास्तु सर्पाद्या दन्दशूकास्तु दंशकाः ।
 शलभाद्याः पतङ्गाः स्युर्यादांसि जलजन्तवः ॥ ४० ॥
 पृथुरोमा मूषो मत्स्यो मीनो वैसारिणस्तिमिः ।
 जलपिप्पिक आत्माशी शकुली स्वकुलक्षयः ॥ ४१ ॥
 स्थिरजिह्वः सङ्गचारी विसारः शम्बरोऽण्डजः ।
 अथो सहस्रदंष्ट्रः स्याद् गलेवालोऽपदालकः ॥ ४२ ॥
 वदालस्त्वहिकश्चित्रः पाठीनो मृदुकण्टकः ।
 फलकी स्याच्चित्रफली लोहितस्त्वावतारिकः ॥ ४३ ॥
 एत्थालः स्याच्चाननको महाशल्कः सितायुधः ।
 शृङ्गी तु सर्पशफरी प्रोष्ठी तु शफरी न षण् ॥ ४४ ॥
 नलमीनश्चिलिचिमो गण्डकाः शकुलार्भकाः ।
 क्षुद्राण्डो मत्स्यसङ्घातः पोताधानं नपुंसकम् ॥ ४५ ॥
 उदण्डपालनदलद्वेकराजीवकोत्पलाः ।
 कुलीरः कर्कटः पृष्ठचक्षुः पार्श्वोदरप्रियः ॥ ४६ ॥

बिल्वकोऽण्डप्रहरणः षोडशाङ्घ्रिद्विधागतिः ।
 भेके शालुः प्लवव्यङ्गशाखुराण्डुककेण्डुकाः ॥ ४७ ॥
 मण्डूकश्चैष गृहजो म्लानः कोणेपिशाचकः ।
 पीतेऽस्मिन् कूलमण्डूको वारिपिण्डोऽश्ममध्यजः ॥ ४८ ॥
 कृष्णास्या कृतभीः श्वेता कोटिका तद्विपर्यये ।
 चित्रे चित्राणुकः कूपे भवः कूपेपिशाचकः ॥ ४९ ॥
 कूर्मः कच्छप ओहारः पञ्चगूढश्चतुर्गतिः ।
 गुहाशयस्तूपपृष्ठः कश्यपो जीवथो भृथः ॥ ५० ॥
 दुली दुणी च तत्कान्ता मकरो मत्स्यराट् मूषः ।
 खड्गनामा खड्गपुच्छस्तिमिशत्रुस्तिमिङ्गिलः ॥ ५१ ॥
 तद्भेदो हस्तिमकरोऽथ स्याद् वारुणपाशकः ।
 ग्राहस्तन्त्रस्तन्तुनागस्तन्द्रश्चामोघतन्तुकौ ॥ ५२ ॥
 नके तु कुम्भी कुम्भीरो गोमुखश्च महामुखः ।
 तालुजिह्वः शङ्खमुख आलास्यस्त्वम्बुसूकरः ॥ ५३ ॥
 उद्रस्तु जलमार्जारः पारी परकुलो वशी ।
 शिशुमारस्त्वम्बुकपिरुणवीर्यो महावसः ॥ ५४ ॥
 असिप्लवोऽम्बुलकी स्त्री वीरलस्तु महाभूषः ।
 त्रयी तु कम्बुः शङ्खोऽस्त्री सुग्रीवो मधुरस्वनः ॥ ५५ ॥
 त्रिरेखः षोडशावर्तः स तु शङ्खनखोऽल्पकः ।
 मुक्तास्फोटोऽब्धिमण्डूकी शुक्तिर्युक्ता तु मौक्तिकम् ॥ ५६ ॥
 मुक्ताफलं शौक्तिकेयं गङ्गेष्टिः कटशर्करा ।
 शम्बूकः क्षुल्लकः शङ्खः कपर्दस्तु वराटकः ॥ ५७ ॥
 स्त्री चूर्णिरथ शुक्तिः स्याद् दुर्नामा दीर्घकोशिका ।
 जलका तु जलालोका स्रक्था भूम्नि जलौकसः ॥ ५८ ॥
 या जलौका तृणचरी सा स्यात् तृणजलायुका ।
 गण्डूपदः किञ्चुलको भूलता तत्प्रिया शिली ॥ ५९ ॥
 स्थले करिनराश्याद्या यावन्तः सन्ति जन्तवः ।
 ते जलेऽपि जलारूपाः स्युर्जलपर्यायपूर्वकाः ॥ ६० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे सरीसृपाध्यायः ॥ १ ॥

जलाध्यायः ॥ २ ॥

सलिलं मलिनं तोयं मरुतं मेघजं कतम् ।
 नीरं वारि पयोऽम्भोऽर्णो मेघपुष्पं कुलीनसम् ॥ १ ॥
 पानीयं जीवनीयं कं जलमम्बूदकं दकम् ।
 विषं पाथो घनपदं भुवनं जीवनं वनम् ॥ २ ॥
 वार्नं पुंसि स्त्रियो भूमन्यापो घनरसः पुमान् ।
 वल्लरं तु सितं तोयमतिक्षारं तु किट्टिमम् ॥ ३ ॥
 काचिमं स्यादतिस्वच्छमूतं कलुषमाविलम् ।
 शीतलं स्वादुर्नि जले द्रागभृतं तत्क्षणोद्धृतम् ॥ ४ ॥
 जलाशया जलाधारास्ते त्वगाधजला ह्रदाः ।
 अखातं देवखाते स्यात् पुष्करिण्यां तु खातकम् ॥ ५ ॥
 आधारस्तु तटाकोऽस्त्री कासारः सरसी सरः ।
 आवाहो दीर्घिका वापी वेशन्तस्त्वल्पपल्वले ॥ ६ ॥
 अन्धुरब्धः प्रहिः कूपश्चुण्डी चौण्डश्च चूतकः ।
 अवखातस्तु कीर्णः स्यादुत्कीर्णश्च पुरी स्त्रियाम् ॥ ७ ॥
 विकिरः स्यात् कीर्णजल उद्भिदस्तु जलोद्भ्रमः ।
 पीनाहस्तु स्त्रियां नेमिः कूपस्य मुखबन्धनम् ॥ ८ ॥
 आहावश्च निपानश्च कूपपार्श्वजलाश्रयः ।
 प्रदरस्तूदपानोऽस्त्री बद्धाम्बु स्रोतसो धृतम् ॥ ९ ॥
 आवालमालवालं स्यात् सेतौ वारणसंवरी ।
 उदधिः सागरोऽपारो जलराशिरपांपतिः ॥ १० ॥
 रत्नाकरो जलनिधिः समुद्रो मकरालयः ।
 उदन्वान् वरुणावासः सरितांपतिरुत्पतिः ॥ ११ ॥
 सरित्पतिरूपारः पारावारोऽब्धिधरण्वः ।
 मितद्रुः संवरः पेरुः स्तम्भी स्तम्भिमहोदधिः ॥ १२ ॥
 कूजेऽस्य वेला मर्यादा पूर्णर्वेलाम्बुवर्धनम् ।
 डिण्डीरोऽम्बुकफः फेनो बुद्बुदस्थासकौ समौ ॥ १३ ॥
 भङ्गस्तरङ्गो वीचिः स्त्री तस्मिन्स्त्वेव महत्यषण् ।
 ऊर्मिः कल्लोल उल्लोलो लहर्युत्कलिकेति च ॥ १४ ॥

पोहित्थं तु प्रवहणं पोथश्चाप्यथ मङ्गिनी ।
 नौस्तरिस्तरणी वेटी द्रोणी काष्ठाम्बुवाहिनी ॥ १५ ॥
 उडुपं तु प्लवो भेल आरोह्योऽसौ तरण्डकः ।
 केनिपातास्त्वरित्राणि पोलिन्दास्तु पुलिन्दकाः ॥ १६ ॥
 कर्णं पृष्ठस्थितारित्रं नौशिरो मङ्गमस्त्रियाम् ।
 नावो दण्डः क्षेपणी स्त्री कूपस्तु गुणवृक्षकः ॥ १७ ॥
 आतरस्तरपण्यं स्यात् सेकपात्रं तु सेचनम् ।
 सांयात्रिकः पोतवणिक् पोतवाहो नियामकः ॥ १८ ॥
 कर्णधारस्तु निर्यामो नावारोहास्तु नाविकाः ।
 अगाधमतलस्पर्शमस्थानञ्च गभीरकम् ॥ १९ ॥
 गम्भीरञ्चाथ नौतार्यं नाव्यं स्यान्ते नव त्रिषु ।
 घट्टोऽवतारस्तीर्थोऽस्त्री प्रणाल्यङ्की पयोवहा ॥ २० ॥
 सरणी हरणिर्भूणिर्निर्मगद्धारि तु भ्रमः ।
 उद्घाटनं घटीयन्त्रं पादावर्तोऽरघट्टकः ॥ २१ ॥
 नदी स्रोतस्विनी कुल्या स्रवन्ती निम्नगा सरित् ।
 हिरण्यवर्णा गिरिजा रोधोवक्त्रा पयस्विनी ॥ २२ ॥
 तरङ्गिणी शैवलिनी तटिनी ह्लादिनी धुनी ।
 अब्धा कूलङ्कषा सिन्धुरापगा वाहिनी वहा ॥ २३ ॥
 त्रिस्रोता जाह्नवी गङ्गा देवसिन्धुस्त्रिमार्गगा ।
 भागीरथी विष्णुपदी स्वर्वापी हरशेखरा ॥ २४ ॥
 धर्मद्रवी त्रिमार्गा च पाताले भोगवत्यसौ ।
 यमस्वसा तु यमुना कालिन्धिकात्मजा यमी ॥ २५ ॥
 नर्मदा स्यात् सोमभवा रेवा मेकलकन्यका ।
 बाहुदा त्वर्जुनी सैता श्यामाङ्गी सैतवाहिनी ॥ २६ ॥
 टापी तु तापिनी शैव्या चन्द्रभासा तु चन्द्रिका ।
 शतद्रूस्तु शुतुद्री स्याद्विपाशा तु विपाट् स्त्रियाम् ॥ २७ ॥
 गोदावरी तु गोदा स्यात् कावेरी त्वर्धजाह्नवी ।
 शरावती वेत्रवती तुङ्गभद्रा सरस्वती ॥ २८ ॥
 ताम्रपर्णी कृष्णवर्णा गोमत्याद्याश्च निम्नगाः ।
 नदः सरस्वान् भियोद्धयौ कुल्या कर्षूः कृता नदी ॥ २९ ॥

वेणिर्धारा प्रवाहौघौ पूरस्तु जलबृंहणम् ।
 चक्राणि पुटभेदाः स्युरावर्तः पयसां भ्रमः ॥ ३० ॥
 जलोच्छ्वासाः परीवाहाः कूपकास्तु विदारकाः ।
 सञ्छेद्यं सङ्गमो नद्योः सम्भेदोऽप्यथ रोधसि ॥ ३१ ॥
 तीरं कूलं प्रपातश्च प्रान्ते कच्छस्तटी त्रयी ।
 पारावारे परात्रत्ये कूले पात्रं तदन्तरम् ॥ ३२ ॥
 अस्त्री द्वीपोऽन्तरीपं ह्री पुलिनं तज्जलोत्थितम् ।
 सैकतं सिकताप्रायं सिकता भूमिन् बालुकाः ॥ ३३ ॥
 उत्पल स्यात् कुवलयं कुवेलं कुवलं कुवम् ।
 नीलोत्पलश्च कन्दोष्ठं कन्दोब्जं कर्णभूषणम् ॥ ३४ ॥
 इन्दीवरश्च नीलाब्जं रक्तपाणिकमुत्पले ।
 धरोत्पलं तु कल्हारं सौगन्धिकशिशुप्रिये ॥ ३५ ॥
 कंसोत्पलं विगन्धि स्याद् वनजं वन्यकं जले ।
 पद्मोऽस्त्री पङ्कजं कञ्जं कुविलीनं सरोरुहम् ॥ ३६ ॥
 सरसीजं सरसिजं सारसं सरसीरुहम् ।
 सरोजमब्जमप्युष्पमरविन्दं महोत्पलम् ॥ ३७ ॥
 सहस्रपत्रं नलिनं शतपत्रं कुशेशयम् ।
 बिसप्रसूनं राजीवं निर्लेपं बिसनाभिजम् ॥ ३८ ॥
 पङ्केरुहं तामरसं कमलं दारदोलके ।
 रक्ते तु पद्मे कण्डारं बिसखण्डमथोऽम्बुजम् ॥ ३९ ॥
 चारुनालं कोकनदं श्वेते तु शुचिकर्णिकम् ।
 पुण्डरीकं महापद्मं पवित्रं पुण्यगन्धिकम् ॥ ४० ॥
 श्रीपुष्पं स्वर्णराजश्च कुमुदं गर्दभाङ्गयम् ।
 गन्धसोमं कुमुबन्धं कैरवश्चाथ लोहिते ॥ ४१ ॥
 अस्मिन् कोकनदं जारं सुनालं रक्तकुण्डलम् ।
 करहाटः शिफा कन्दं नाला नालमथ त्रिषु ॥ ४२ ॥
 मृणाली शतपर्व ह्री बिसश्च नलिनी पुनः ।
 बिसिनी पद्मिनीत्याद्याः पद्मस्तम्बे सरस्यपि ॥ ४३ ॥
 भवेत् पुटकिनी पद्मस्तम्बमात्रे प्रकीर्तिता ।
 कुमुद्वती कुमुदिनी शास्त्रिकं कन्दमौत्पलम् ॥ ४४ ॥

संवर्तिका नवदलं पद्म ह्री कुसुमच्छदः ।
 किञ्जल्कः केसरो न स्त्री बीजकोशो वराटकः ॥ ४५ ॥
 कर्णिका कर्णिकं चाथ पद्माक्षं पद्मकर्कटी ।
 हठः कुम्भी वारिपर्णी किञ्चोलस्त्वङ्गलोढ्यकः ॥ ४६ ॥
 शुक्लकारं तु कृसरं वृष्यकन्दं कशेरु च ।
 शृङ्गाटकस्तु गरुलो दन्तबीजस्त्रिकण्टकः ॥ ४७ ॥
 क्षीरबीजः क्षीरशुक्लस्तर्पणो जलकण्टकः ।
 चिञ्चोटिका स्यादवका स्वादुमुस्ता गरोलिका ॥ ४८ ॥
 शैवलो जलशूरः स्यादवका जलनील्यपि ।
 शैवालश्चाथ शेवालं चूर्णाभं लोहितं जले ॥ ४९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 पातालकाण्डे जलाध्यायः ॥ १ ॥

पुराध्यायः ॥ ३ ॥

पुर्यना नगरी पूः स्त्री स्थानीयं नगरं पुटः ।
 पुर्याः शाखापुरी गृह्या पुरेऽल्पे खेटमस्त्रियाम् ॥ १ ॥
 ग्रामः पर्युपसन्निभ्यः प्रतेश्च वसथः परः ।
 स्थानीयं तु महाग्रामो ग्रामाः क्षुद्राः परे क्रमात् ॥ २ ॥
 स्युः कर्वटं कार्वटिकं कार्वटं नृङ्गपट्टने ।
 कर्वटोऽस्त्री द्रोणमुखं पट्टनं पुटभेदनम् ॥ ३ ॥
 पत्तनं चाप्यथानृङ्गे नृङ्गो द्रङ्गं विवेशिका ।
 कटकोऽस्त्री संवासः स्कन्धावारश्च राजधानी स्यात् ॥ ४ ॥
 शिबिरं मार्गनिवेशो गामार्थं वाटकोऽस्त्री स्यात् ।
 साकेतं स्यादयोध्यायां कोसलानन्दिनीति च ॥ ५ ॥
 द्वारका तु द्वारवती मधुरा तु मधूषिका ।
 मथुरा च मधूपद्मा कौशं तु स्यात् कुशस्थली ॥ ६ ॥
 वाराणसी शिवपुरी वारणास्यपि काशिका ।
 मिथिला पूर्वदेहेषु कन्याकुब्जो महोदयः ॥ ७ ॥
 हस्तिनी हास्तिनपुरं नागाहं हस्तिनापुरम् ।
 अथास्त्री खाण्डवप्रस्थं जयन्तीपुरमाहुकम् ॥ ८ ॥
 अवन्ती स्यात्तक्षशिला काकुन्दी वारणावतम् ।
 देवीकोटः कोटिवर्षं माहिष्मत्यां वृकस्थली ॥ ९ ॥
 ग्रामादिभूमिर्वास्त्वस्त्री सन्दंशस्त्वस्य कोणभूः ।
 ब्रह्मस्थली वास्तुमध्यं ब्रह्मधारा तदन्तभूः ॥ १० ॥
 प्रशस्ता वास्तुभूमिर्या प्रवीरा नन्दिनी च सा ।
 सीमा तु सीमा मर्यादा ग्रामसीमोपशल्यकम् ॥ ११ ॥
 प्रान्तरं ग्रामयोर्मध्यमुपग्रं त्वन्तिकाश्रयः ।
 पर्यन्तभूः परिसरः कटो ग्रामेयकः पुनः ॥ १२ ॥
 ग्रामीणं च त्रिषु ग्राम्ये ग्रामधान्यं तु खेटकम् ।
 खेयं तु परिखाऽथास्त्री वप्रः प्राकारमूलिकः ॥ १३ ॥
 प्राकारो वरणः सालः प्राचीरं त्वेष सच्छदिः ।
 आवेष्टकस्तु वाटोऽस्त्री विवृतश्च वृतिद्रुमैः ॥ १४ ॥

वारिकूटो हस्तिमुखो नगरद्वारकुट्टके ।
 गोपुरं तु पुरद्वारं दिक्तु निस्सारणं मुखम् ॥ १५ ॥
 रथ्या प्रतोली विशिखाऽप्युपरथ्या तु दर्शनी ।
 राजमार्गे संसरणं श्रीघण्टाभ्यां पथः परः ॥ १६ ॥
 स एव पुरि दिङ्मार्गो वाहनी चोपविष्करम् ।
 अगारं भवनं धाम वस्तं वस्त्यं निकेतनम् ॥ १७ ॥
 शय्यं निवसनं सद्म बुन्दिरं वेश्म मन्दिरम् ।
 निकार्यवासावसथनिकायनिलयालयाः ॥ १८ ॥
 न नोदवसितं न स्त्री गोहं पुम्भूम्नि वा गृहम् ।
 महाकीर्तनमोकश्च केतरं केतनं क्षयः ॥ १९ ॥
 आथर्वणं शान्तिगृहमास्थानगृहमिन्द्रकम् ।
 वासागारं तल्पगृहमरिष्टं सूतिकागृहम् ॥ २० ॥
 कुथशाला तु सन्धानी पक्षिशाला कुनालिका ।
 चतुरं हस्तिनां शाला वाजिशाला तु मन्दुरा ॥ २१ ॥
 सन्दानिनी तु गोशाला हविशाला विषाणिका ।
 आवेशनं शिल्पिशाला तन्त्रशाला तु गर्तिका ॥ २२ ॥
 कुम्भशाला पाकपुटी चित्रशाला तु जालिनी ।
 संवासनं कर्मशाला प्रपा पानीयशालिका ॥ २३ ॥
 वेशनी मुखशाला च पक्षशाला तु पक्षकः ।
 तैलिशाला यन्त्रगृहं पोटकी कटकी च सा ॥ २४ ॥
 इक्षुपीडनयन्त्रस्य शालिका त्विक्षुसूनिका ।
 वपनी स्यात् खरकुटी शिल्पा चाप्यथ कुण्डिनी ॥ २५ ॥
 क्षणा बुशाल्याश्रमे तु पर्णशालोटजोऽस्त्रियाम् ।
 चतुश्शालं सज्जनं सत्रशाला शुभा स्थली ॥ २६ ॥
 मठावसथ्यौ छात्रादिवासो वेणुं विटाश्रये ।
 कुटीरस्तु कुटी पल्ली क्षेत्रपल्ली तु गर्गरी ॥ २७ ॥
 सन्यासपल्ली निर्बीरा मण्डपोऽस्त्री जनाश्रयः ।
 देवतायतनं चैत्यं विहारो लयनालिकः ॥ २८ ॥
 सौधोऽस्त्री सुधया श्वेतं मेटो हर्म्यं च मालिका ।
 तदेव राजदेवानां स्यात् प्रासादः प्रसादनः ॥ २९ ॥
 राजवेश्मोपकार्यो स्यादुपकार्योपकारिका ।
 स्वस्तिकः सर्वतोभद्रो नन्दावर्तादयोऽपि च ॥ ३० ॥

पिच्छन्दिना राजधान्यां सन्निवेशो निकर्षणम् ।
 कूटागारं तु बलभी निर्यूहो मत्तवारणम् ॥ ३१ ॥
 कुट्टिमोऽस्त्री बलभूमिः कोद्रङ्गस्तु तमङ्गकः ।
 इन्द्रकोशोऽप्यथो मञ्च उद्घातो हुण्डुरोऽपि च ॥ ३२ ॥
 वेश्यागृहे कायमानं तथेदं केलिमण्डपे ।
 अट्टालयोऽट्टः क्षौमोऽस्त्री तलिन्यट्टालिके समे ॥ ३३ ॥
 चन्द्रशाला शिरोगेहं पणिकस्तु वणिग्गृहम् ।
 आपणस्तु निषद्या स्यान्माटङ्को लवणापणः ॥ ३४ ॥
 संवासो विपणिः पण्यवीथी हट्टस्तु पण्यभूः ।
 आवालिहट्टवेश्माली वेशो वेश्याजनाश्रयः ॥ ३५ ॥
 अवरोधः पराविद्धः शुद्धान्तोऽन्तःपुरं वृषम् ।
 अङ्कणस्त्वजिरं चारं वेदिका तु वितर्दिका ॥ ३६ ॥
 कुड्योऽस्त्री भित्तिका कन्धाऽप्येड्ढकं त्वन्तरस्थिकम् ।
 नीत्रं बलीकं चोलान्ते चोलोऽस्त्री पटलं छदिः ॥ ३७ ॥
 सन्धिस्तु कुड्यच्छदिषोः कावातायनिका कला ।
 अपशाला तु संहारी विटका तु विटाटिका ॥ ३८ ॥
 गोपानसी तु बलभी छादने वक्रदारुणि ।
 वेश्मस्थूणा गृहस्थूणमुल्बस्थूणा तु पादिका ॥ ३९ ॥
 मेढी तु पादिकाशीर्षे स्थूणाशीर्षे शिली शिला ।
 नासा धारकदारु स्यात् पालिकाष्ठं तु धारणा ॥ ४० ॥
 कोणप्रतिमाहि शिरोविष्टब्धिकरमाढकम् ।
 सूकरी तूपरिस्थूणा सन्धिकाष्ठं तु वासिकम् ॥ ४१ ॥
 द्वाः स्त्री द्वारं पक्षकं तु पक्षद्वारं खड्गिका ।
 तोरणोऽस्त्री बहिर्द्वारं प्रच्छन्नद्वारमान्तरम् ॥ ४२ ॥
 कवाटं द्वारबन्धोऽस्य धारके व्याघ्रकोऽस्त्रियाम् ।
 उत्तराङ्गं तूर्ध्वदारु द्वारस्यैरुण्डकः पुनः ॥ ४३ ॥
 गृहावग्रहणी देहल्यम्भरोदुम्बरोम्बुरा ।
 सट्टं सपट्टी तत्पार्वे धृक्वाला परालिनी ॥ ४४ ॥
 नासा तु द्वार्यधोदारु शिला नासाविधारिणी ।
 प्रघाणप्रघणालिन्दाः पिण्डकोऽलिन्दवासनौ ॥ ४५ ॥
 बहिर्द्वारप्रकोष्ठे स्युर्गृहश्रेणी तु वीथिका ।
 अथ त्रय्यौ कवाटोऽपि कुवाटोऽप्यरं न पुम् ॥ ४६ ॥

पार्श्वद्वयस्थं तद्युग्ममनीरिति निगद्यते ।
 विष्कम्भकेऽस्य गुडको द्रुमशोऽप्यर्गला न वण् ॥ ४७ ॥
 सूचिस्त्वयोऽर्गलैषा चेद् द्वारोर्ध्वे तूर्ध्वसूचिका ।
 मर्कटं मर्कटी सूची विष्कम्भार्थमथाङ्कटः ॥ ४८ ॥
 साधारणी कुञ्चिका च द्वारयन्त्रं तु तालकम् ।
 एतस्योद्घाटनं यन्त्रं ताल्यपि प्रतिताल्यपि ॥ ४९ ॥
 अर्गलं द्वारपटलं विदण्डस्त्वर्गला त्रयी ।
 अस्त्री तु घर्घरोऽट्टादेरधोद्वारकवाटिका ॥ ५० ॥
 गर्भागारोऽपवरको भ्रमन्तो गृहकोऽल्पकः ।
 आरोहणं स्यात् सोपानं निश्रेणिस्त्वधिरोहणी ॥ ५१ ॥
 कोणाश्रौ नर्यणिनं क्ली स्त्रियोऽश्रस्त्रिक्तिकोटयः ।
 सम्मार्जनी शोधनी तन्मलेऽवकरसङ्करौ ॥ ५२ ॥
 दन्तिका नागदन्ताः स्युर्लङ्गनी वल्लधारणी ।
 कपोतपाली स्त्री न स्त्री विटङ्कोऽथ गवाक्षकम् ॥ ५३ ॥
 वातायनं गवाक्षश्च रसवत्यां महानसम् ।
 उद्धानमश्रमन्तमधिश्रयणी चुल्लिरन्तिका ॥ ५४ ॥
 हसन्यङ्गारशकटी हसन्यङ्गारधान्यपि ।
 पिठरः स्थाल्युखा कुम्भिः पिधानं स्यादुदञ्चनम् ॥ ५५ ॥
 कंटाहः कर्परो लट्ठो मणिकः स्यादलिञ्जरम् ।
 भ्राष्ट्रः पुंस्यम्बरीषोऽस्त्री कन्दुर्ना स्वेदनी स्त्रियाम् ॥ ५६ ॥
 शृङ्गीषं पिष्टपचनं मल्लो मल्ली च कोशिका ।
 वर्धनी तु गलन्त्यालुः कर्करी करकोऽपि च ॥ ५७ ॥
 शृङ्गारो हेमकरकः करङ्को नालिकेरजः ।
 निपो घटः कुटः कुम्भः करीरः कलशी त्रयी ॥ ५८ ॥
 घटी पारी कपाली तु त्रयी घोलश्च कर्परः ।
 शालाजिरो वर्धमानः शरावोऽस्त्री दृतिस्तु ना ॥ ५९ ॥
 खल्वं क्लीबे चर्ममयी त्वालुः करकवर्तिका ।
 स्नेहपात्रं कुतूः कृत्तिः सैवालपा कुतुपः पुमान् ॥ ६० ॥
 अवगाहो जलद्रोणिरुष्टिका काञ्चिकादिभृत् ।
 भद्रकुम्भः पूर्णकुम्भः स्थालं स्यात् कांस्यपात्रकम् ॥ ६१ ॥
 भाण्डमावपनेऽमत्रं भाजने पात्रमित्युभे ।
 चर्मकोशं तु कललं करालं तरलं च तत् ॥ ६२ ॥

पेटकः पिटकः पेटा मञ्जूषा सा तु चर्मणा ।
 वृता तरिः स्त्री तमतो वस्त्रकोशं करोटकम् ॥ ६३ ॥
 स्यूतः प्रसेवकोऽथ स्यात् समुद्रगः सम्पुटः पुटः ।
 धान्यकोष्ठे कुसूलोऽथ कण्डोलः पिटकः पिटः ॥ ६४ ॥
 प्रस्फोटनं शूर्पमस्त्री न स्त्री तितउ चालनी ।
 अयोनिर्मुसलोऽस्त्री स्यादुदूखलरुलूखलम् ॥ ६५ ॥
 प्रस्फोटनं तु पवनमवघातस्तु कण्डनम् ।
 फलीकृतस्तण्डुलः स्याद्धान्यानां तु तुषस्त्वचि ॥ ६६ ॥
 शम्बूकास्तु कणाः सूदमास्तण्डुलस्य च यो मलः ।
 शम्बूकः कण्डनं चासौ ज्येष्ठाम्बु तु तदम्बुनि ॥ ६७ ॥
 गोधूमचूर्णे शमिता चिक्षसो यवचूर्णके ।
 पृथुकाश्चिपिटो लाजाः पुंभूम्नि परिवारकः ॥ ६८ ॥
 खदिका तु गुडाद्याह्यलाजसक्तुषु तर्पणम् ।
 सुस्विन्नभृष्टमृदिता उत्कुञ्चः कल्कपिण्डिकाः ॥ ६९ ॥
 पिण्डिर्ना पिष्टधानादिचूर्णे गौडी तु ममरा ।
 उलुम्बं बुम्बिका बुम्बी चक्षुष्या सक्तवः कणाः ॥ ७० ॥
 ते घृतादियुता मन्थः करम्भो दधिसक्तवः ।
 धानाः स्त्रियो भृष्टयवा दारपत्रस्तु पोलिकः ॥ ७१ ॥
 पूपस्तु पिष्टकोऽपूपः कोकुन्दाः पिष्टपिण्डिकाः ।
 उत्कारिका चूर्णपूपे कुलमाषा यवपिष्टकाः ॥ ७२ ॥
 शमिता त्वम्लदुग्धार्द्रा पका खण्डे घृतोत्तरे ।
 संयावोऽयं युतश्चूर्णैः खण्डैलामरिचार्द्रकैः ॥ ७३ ॥
 क्षीराह्यः शमितापिण्डो घृतपुरो घृते शृतः ।
 फेनकः शमिता शुक्ला घृतपक्वालपशर्करा ॥ ७४ ॥
 शङ्कुली त्वायता पिष्टगुडतैलतिलैः कृता ।
 जीवनाम्नाशनान्धांसि कूरं भक्तं प्रसादनम् ॥ ७५ ॥
 पाजो वाजोऽप्योदनोऽस्त्री भिस्सा स्त्री दिदिविर्न षण् ।
 पुन्नपुंसकयोश्चोरं करमाहार्यमित्यपि ॥ ७६ ॥
 दग्धान्नं भिस्सिटा मिङ्गी परमान्नं तु पायसम् ।
 क्षैरेयी चाथ मण्डोऽस्त्री रसामोऽथ करोटिका ॥ ७७ ॥
 व्यागुल्या स्याद्वानाम्लायां व्यागुली मण्डिका समे ।
 मासरायामनिस्त्रावप्रस्त्रावा भक्तमण्डके ॥ ७८ ॥

वाट्यमण्डो यवैर्भृष्टैर्लाजमण्डोऽन्वितार्थकः ।
 तिलतण्डुलमाषैस्तु त्रिरसा कृसरान् त्रयी ॥ ७९ ॥
 यवागुरुष्णिका श्राणा पिच्छा सा तु घनाद्रवा ।
 विलेपी स्याद्विलेप्या च सा पेया तरणान्यथा ॥ ८० ॥
 खलिः स्त्री तण्डुलैः पिष्टैर्जले पका घनद्रवा ।
 सौवीरं काञ्चिकं कुण्डमारनालं गृहोदकम् ॥ ८१ ॥
 अवन्तिसोमं रक्षोघ्नं शुक्ताभिपुतकुञ्जलम् ।
 गोलकुलमाषसन्धानान्यौदरो मधुरा न षण् ॥ ८२ ॥
 तद्धान्ययोनि धान्याम्लं तुषाम्बु तुषसंहितम् ।
 मूलकाद्यैः संहिते स्यान्मूलकादिसुतं न ना ॥ ८३ ॥
 मूलकच्छदसन्धानं शिण्डाकी स्वादुसुद्रवा ।
 यन्मस्त्वादि शुचौ भाण्डे सक्षौद्रगुडकाञ्चिकम् ॥ ८४ ॥
 त्रिरात्रं धान्यराशिस्थं तच्छुक्तं शुद्धमित्यपि ।
 निष्ठानं तेमनं तच्च व्यञ्जनं स्याद् घृतादि च ॥ ८५ ॥
 सूपोऽस्त्री प्रहितं सूदोऽप्युपदंशोऽपदंशकः ।
 स्त्री पक्वभृष्टे भरुटा सगुडाज्योषणैः पुनः ॥ ८६ ॥
 वेशवारः पिष्टमांसे पके भूतिस्ततोऽन्यथा ।
 रसको मांसनिष्काथः पिष्टमांसकृतो रसः ॥ ८७ ॥
 सोरावासो निर्लवणः परिशुष्कं पुनर्घृते ।
 सिक्त्वा मांसे मृदूष्णाम्बुपक्वं युक्तं कणादिभिः ॥ ८८ ॥
 उत्तमं शुष्कमांसं स्याद्वल्लूरा त्रय्यथ स्त्रियाम् ।
 पेशिः शुण्ठः पिचिण्डस्तु निष्ठुतोऽवयवः पशोः ॥ ८९ ॥
 शाकोऽस्त्री हरितं शिम्रः स्त्री तन्नाले कडम्बकः ।
 कन्दमस्त्री मूलसस्यं वेशवार उपस्करः ॥ ९० ॥
 लेहं पेयञ्च चूष्यञ्च खाद्यमास्वाद्यमित्यपि ।
 पञ्चामृतमिदं स्वाद्यं मुक्त्वा त्वन्नं चतुर्विधम् ॥ ९१ ॥
 त्रिष्वानुताद्वयकारे द्वौ कान्दविकपौपिकौ ।
 सूपकारे त्वारालिकसूदान्धसिकवज्जवाः ॥ ९२ ॥
 गुणौदनिकसूपाश्च लवणो लवणोत्कटः ।
 पक्वं तु रन्धितं सिद्धं भृष्टं पक्वं विनाम्बुना ॥ ९३ ॥
 प्रणीतमुपसम्पन्नं प्रयस्तं स्यात् सुसंस्कृतम् ।
 शूलाकृतं भट्टित्रं च शूल्यमुख्यं तु पैठरम् ॥ ९४ ॥

सार्पिष्कदाधिकाद्यं स्यात्सर्पिर्दध्यादिसंस्कृते ।
 शीनं स्त्यानं शृतं पक्वं विलीनं विद्रुतं द्रुतम् ॥ ११५ ॥
 तक्रं कपित्थचाङ्गेरीमरीचाजाजिचित्रकैः ।
 यत्पक्वं गुडजूषोऽसावलकाम्बलिकोऽपरः ॥ ११६ ॥
 दध्यम्लो लवणस्नेहतिलमाषविपाचितम् ।
 अपक्वतक्रं सन्धोषचतुर्जातगुडार्द्रकम् ॥ ११७ ॥
 सजीरकं रसालः स्यान्मार्जिता शिखरिण्यपि ।
 सा जाजी डाडिमव्योषं पटे घृष्टं च सट्टकम् ॥ ११८ ॥
 बलकं स्याद् गुडक्षीरं यमकं तैलसर्पिषी ।
 त्रिस्नेहं त्रैवृतं मार्जा चतुस्नेहं वसाम्बितम् ॥ ११९ ॥
 मधु सर्पिश्च मिथुनं यूषोऽस्त्री यूः पुमान् रसे ।
 परिवेषणं वर्धनं च प्रतीच्छा पततो ग्रहः ॥ १२० ॥
 कबलः कबतो प्रासो गुडः पिण्डो गुडेरकः ।
 गण्डोरश्च गडोलश्च चर्वणं चूषणं रदैः ॥ १२१ ॥
 जग्धिस्तु निघसो न्यादो लेपोऽप्यभ्यवहारवत् ।
 प्रत्यवसानमशनं भोजनं जेमनादने ॥ १२२ ॥
 स्वदनं परिपत्रं च सग्धिः स्त्री सहभोजनम् ।
 चूषणं तु रसादानं जिह्वास्वादस्तु लेहनम् ॥ १२३ ॥
 धीतिस्तु धयनं पानं जक्षा खादनभक्षणे ।
 कामं निकामं पर्याप्तं प्रकामं च यथेप्सितम् ॥ १२४ ॥
 पर्याप्तं तु परित्राणं हस्तवारणमित्यपि ।
 वृत्तिः सुधा च सौहित्यं वृत्तं तु सुहितं त्रिषु ॥ १२५ ॥
 करम्बः सेकमिश्रान्ने फेला पिण्डेऽधिकोऽस्मिन्ने ।
 खण्डपक्वमुद्वेगं ताम्बूलं मुखभूषणम् ॥ १२६ ॥
 अम्बलोर्णं चर्वितेऽस्य चूर्णेऽस्य त्वम्बला रसे ।
 करङ्को वेडादिकृते पूगताम्बूलभाजने ॥ १२७ ॥
 स्यात् पूगावपनी गन्त्री कर्त्तर्युद्वेगकर्त्तरी ।
 भवेत् क्षुरसमुद्गं तु त्रिष्वकण्ठकरन्धके ॥ १२८ ॥
 अस्त्री तु पुस्तकं सिन्दूरादेर्दारवभाजने ।
 चातुरीकं त्रिषु भवेच्चन्दनद्रवभाजने ॥ १२९ ॥
 नागवल्लीपलाशानां तैलाक्तानां रसातलः ।
 निष्ठानं वीतकं प्रोक्तं चन्द्रमन्दारचूर्णधृतम् ॥ १३० ॥

वीरस्त्राका या तु शरशलाकायन्त्रनिमिता ।
 पाठार्थमुद्गृहीता स्यात् कबली पत्रपञ्चिका ॥ १११ ॥
 परिकर्माङ्गसंस्कारः कङ्कतस्तु प्रसाधनः ।
 प्रसाधनं स्यादभ्यङ्गः सोत्पाताच्छुरिते समे ॥ ११२ ॥
 उद्धर्तनं तूत्सादनं स्नानं त्वाप्लाव आप्लवः ।
 उपस्पर्शोऽभिषेकश्च गोसव्यं गोमयेन तत् ॥ ११३ ॥
 सुगन्धामलकैः स्नानं यत्तल्लक्ष्मीनिकेतनम् ।
 यत्तु सर्वौषधिस्नानं तन्मङ्गल्यमलोचकम् ॥ ११४ ॥
 यन्मुक्तिकाऽम्भसा स्नानं दिष्टं देशनिकं च तत् ।
 ऋषीणां तर्पणं यत्तत् कौलकुल्यं कुलं च तत् ॥ ११५ ॥
 सिक् स्त्री पटोऽस्त्री सिचयो वासो वसनमंशुकम् ।
 आच्छादनं निवसनं वसितं वस्त्रमम्बरम् ॥ ११६ ॥
 चेलं च तच्चतुर्धा स्यात् त्वक्फलकिमिरोमजम् ।
 बालकं क्षौमादिके वस्त्रे फाले कार्पासवादरौ ॥ ११७ ॥
 कौशेयं कृमिकोशोत्थे राक्कवं मृगरोमजे ।
 पत्रोर्णं धौतकौशेयं महामूल्यं महाधनम् ॥ ११८ ॥
 अग्निगौचं वक्रवल्लीपदे वज्रांशुकं तथा ।
 राजावर्तं चित्रपटे राजवर्तो नवश्रियाम् ॥ ११९ ॥
 अहतं निष्प्रवाणिः स्यात् तन्त्रकं च नवांशुके ।
 निवीतं प्रावृते धौतयुग्मं तूद्गमनीयकम् ॥ १२० ॥
 आप्रपदीनं प्रपदव्यापि बालकादयस्त्रिषु ।
 अन्तरीयोपसंव्यानपरिधानान्यधोऽशुके ॥ १२१ ॥
 चण्डातकं वरस्त्रीणां स्यादधोरुकमम्बरम् ।
 संव्यानमुत्तरीयं क्षौमं सूदमं दुक्कलं स्यात् ॥ १२२ ॥
 बैकत्यं तु बृहतिका प्रावारश्चोतरासङ्गः ।
 चन्द्रोदय उल्लोचः कदरश्चन्द्रातपो वितानोऽस्त्री ॥ १२३ ॥
 मशकहरी तु चतुष्की शिरसि सिगुष्णीषमस्त्री स्यात् ।
 काण्डपटः स्यादपटी प्रतिसारायवनिका तिरस्करिणी ॥ १२४ ॥
 दूष्यं स्थूलं पटकुटी गुणलयनी केणिका तुल्याः ।
 नालकं नलकं चापि नलिकं चेत्यपि त्रयः ॥ १२५ ॥
 पर्याया धनुरादीनां कवचेऽप्राणिनामसी ।
 निचोलः प्रच्छदपटो वरासी स्थूलशाटका ॥ १२६ ॥

चोली तु शाटिका शाटो वरकोऽस्त्री द्विखण्डकः ।
 निशारो हिमसम्पातत्राणे जीर्णे पटश्चरम् ॥ १२७ ॥
 निचोलः कञ्चुकश्चोलः कूर्पासश्चाङ्गिकोऽस्त्रियाम् ।
 चीवरं भिक्षुसङ्घाटी कन्थाकन्थटिके समे ॥ १२८ ॥
 कद्यापटस्तु कौपीनं समौ रत्नककम्बलौ ।
 विशालस्त्वाविकौरभ्रौ हस्तिकर्णस्तु रोचकः ॥ १२९ ॥
 शाणी गोणी छिद्रवस्त्रेश्चिरं खण्डलमस्त्रियाम् ।
 नक्तकः कर्पटो वस्त्रप्रन्थोऽस्त्री नीविरुच्यः ॥ १३० ॥
 कक्षः कच्छो गुह्यबन्धः कद्या पृष्ठे कृतोऽञ्चलः ।
 वस्त्रान्तस्त्वञ्चलो वस्तिस्त्वक्ली भूम्नि दशा न षण् ॥ १३१ ॥
 पुष्कलस्तुम्बिका चाथ प्रान्तत्रसरकेसराः ।
 आकल्पवेषौ नैपथ्यं प्रतिकर्म प्रसाधनम् ॥ १३२ ॥
 अलङ्कारस्त्वाभरणं भूषणं मण्डनं पुनः ।
 विभूषणं परिष्कारः कर्णिका कर्णभूषणम् ॥ १३३ ॥
 उत्क्षिप्तिका तु कर्णाकस्तालपत्रं तु तालकम् ।
 कर्णपूरस्तु पुष्पाद्यैस्ताडङ्गो दन्तकादिभिः ॥ १३४ ॥
 वालिका कर्णपुष्टस्था कुण्डलं कर्णवेष्टनम् ।
 मौलिः कोटीर उष्णीषं किरीटं मकुटोऽस्त्रियाम् ॥ १३५ ॥
 चूडामणिः शिरोरत्नं स्वस्तिकस्तु त्रिकोणकः ।
 बालपाश्या पारित्य्या पत्रपाश्या ललाटिका ॥ १३६ ॥
 ग्रैवेयकं कण्ठभूषा लम्बनं तु ललन्तिका ।
 स्वर्णैः प्रालम्बिकाऽथोरस्सूत्रिका मौक्तिकैः कृता ॥ १३७ ॥
 हारो मुक्तावली स्त्री स्यात्तद्भेदा यष्टिसङ्ख्यया ।
 देवच्छन्दः शतं साष्टमिन्द्रच्छन्दः सहस्रकम् ॥ १३८ ॥
 तस्यार्धं विजयच्छन्दो हारस्त्वष्टोत्तरं शतम् ।
 अर्धं रश्मिकलापोऽस्य द्वादशस्त्वर्धमाणवः ॥ १३९ ॥
 द्विर्द्वादशोऽर्धगुच्छोऽथ पञ्च हारफलं लताः ।
 अर्धहारश्चतुष्पष्टिर्गुच्छमाणवमन्दराः ॥ १४० ॥
 अपि गोस्तनगोपुच्छावर्धमर्धं यथोत्तरम् ।
 एकावत्यनुकण्ठी च हारः स्यादेकयष्टिकः ॥ १४१ ॥
 यष्टिर्नक्षत्रमालैका सप्तविंशतिमौक्तिका ।
 गुडकैर्मणिसोपानं चाटुकारश्च हेमजैः ॥ १४२ ॥

हारमध्यस्थितं रत्नं तरलो नायकोऽपि च ।
 केयूरमङ्गदं भूषा दोर्मूले कङ्कणं करे ॥ १४३ ॥
 आवापकः पारिहार्यं वलयं कटकोऽस्त्रियाम् ।
 पादेऽसौ हंसकः स्त्रीणामङ्गुलीयकमूमिका ॥ १४४ ॥
 साक्षराऽङ्गुलिमुद्रा सा क्षुद्रघण्टा तु किङ्किणी ।
 शिङ्गिनी ना तुलाकोटिर्मञ्जीरो नूपुरोऽस्त्रियौ ॥ १४५ ॥
 कटिसूत्रं सारसनं मेखला रशनाऽथ सा ।
 स्त्रीकट्यां सप्तकी काञ्ची पुंस्कट्यां शृङ्खला त्रयी ॥ १४६ ॥
 स्त्री चर्त्तिर्वर्णकालेपावनुबोधः प्रबोधनम् ।
 मार्ष्टिश्चर्चा च चर्चिक्यं समालम्भनमित्यपि ॥ १४७ ॥
 स्थासको हस्तबिम्बः स्यात् पत्तिच्छेदास्तु राजयः ।
 चित्रं तमालपत्रं क्ली तिलकोऽस्त्री विशेषकम् ॥ १४८ ॥
 पत्तिस्तु पत्रकं लेखा बाहुगण्डस्तनादिषु ।
 पत्राङ्गुलिः पत्ररेखा सा ललाटे ललाटिका ॥ १४९ ॥
 राढा शोभा छवी रुक् त्विट् सुषमा परमा छविः ।
 त्रिगन्धमेलात्वक्पत्रैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम् ॥ १५० ॥
 चतुर्जातं तदेव स्यान्नागकेसरकेसरैः ।
 सर्वगन्धमिदं सेन्दुतक्कोलागरुसिलहकम् ॥ १५१ ॥
 लवङ्गपूगतक्कोलजातीफलहिमांशवः ।
 पञ्च पञ्चसुगन्धं स्यादथ तक्कोलकुङ्कुमैः ॥ १५२ ॥
 कस्तूर्यगरुकर्पूराः सुगन्धो यक्षकर्दमः ।
 यावो द्रुमामयोऽलक्तो लाक्षा रक्ता जतु क्रिमिः ॥ १५३ ॥
 कालानुसार्य कालेयं जावकं चाप्यथ स्रजि ।
 मालाङ्किलिरधापीडे वतंसोत्तंसशेखराः ॥ १५४ ॥
 केशेषु गर्भकं माल्यं प्रालम्बं कण्ठलम्बितम् ।
 प्रभ्रष्टकं शिखालम्बि पुरोन्यस्तं ललामकम् ॥ १५५ ॥
 वैकट्यं तिर्यगुरसि स्थितं निर्माल्यमुष्मिते ।
 संस्कारो गन्धधूपाद्यैरपुमानधिवासनम् ॥ १५६ ॥
 अञ्जनं त्वक्षिसंस्कारः कज्जलं धूमयोनि तत् ।
 चूर्णानि वासयोगाः स्युः पिष्टातः पटवासकः ॥ १५७ ॥
 रचना स्यात् परिस्कन्धो भावना वासना समे ।
 अथोपकरणं सर्वं परिवर्हः परिच्छदः ॥ १५८ ॥

व्यजनं तालवृन्तं स्याद् धवित्रं चर्मणा कृतम् ।
 आलावर्तस्तु वस्त्रेण चामरं तु प्रकीर्णकम् ॥ १५६ ॥
 पन्तद्वहः प्रतिग्राहो वालोऽस्त्री दारुणा कृतः ।
 आसन्दी स्त्री नरि प्रेङ्खो दीपवल्ली तु दीपिका ॥ १६० ॥
 दीपवृक्षस्तदाधारो दशा वर्तिरथ स्त्रियाम् ।
 वर्तिर्गृहमणिर्दीपो गिरीयकगुडौ गिरिः ॥ १६१ ॥
 दर्पणो मुकुरादशौ कन्दुको गण्डकः समौ ।
 पादुकाऽनुपदीना स्यादुपानत् पादरक्षिणी ॥ १६२ ॥
 उपला तु दृष्टपुत्रः शिला माता दृष्टसमाः ।
 दर्विस्तु कम्बिस्तर्द्धः स्यात् खजाका दारुहस्तकः ॥ १६३ ॥
 विष्टरं त्वासनं पीठं दारुजं वेत्रजं पुनः ।
 आसन्दी मञ्चकः खट्वापाश्रयो मत्तवारणम् ॥ १६४ ॥
 शय्या पर्यङ्कपल्यङ्कौ शयनं शयनीयवत् ।
 प्रस्तरः संस्तरः शय्या रचिता पल्लवादिभिः ॥ १६५ ॥
 कटः किलिञ्जो वर्णस्तु परिस्तोमः कुथा त्रयी ।
 नमतं चाप्यास्तरणं प्रस्तरस्तूत्तरच्छदः ॥ १६६ ॥
 उपधानं तूपबर्हमुच्छीर्षमुपबर्हणम् ।
 संवापः शयनं स्वापः संवासो वासनं सह ॥ १६७ ॥
 शयने शयसंवेशावुपशायोऽन्तिकेशयः ।
 पर्यादेरथ पर्यायाः परिशायः समन्ततः ॥ १६८ ॥
 कामध्वजः कामोत्सवः शृङ्गारः कामविक्रिया ।
 परिरम्भः परिष्वङ्ग आश्लेष उपगूहनम् ॥ १६९ ॥
 आलिङ्गनमपि क्रोडीकरणं चाङ्गपाल्यपि ।
 ग्राम्यधर्मः कामकेली रतिर्निधुवनं रतम् ॥ १७० ॥
 मेहनं मिथुनत्वं च समे निसनचुम्बने ॥ १७० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 पातालकाण्डे पुराध्यायः ॥ ३ ॥

भूताध्यायः ॥ ४ ॥

भूतानि प्राणिनो जीवा जन्तवो जन्यवोऽङ्गिनः ।
 पुंसः प्राक् त्रिषु गुल्माद्यमुद्भिदुद्भिज्जमुद्भिदम् ॥ १ ॥
 स्वेदजा दंशयूकाद्या नृपश्वाद्या क्षरायुजाः ।
 अण्डजाः पक्षिसर्पाद्याः पुमांस्तु पुरुषो वृषः ॥ २ ॥
 पूरुषो नाऽप्यथ क्लीबः पण्डः षण्डो नपुंसकम् ।
 तृतीयाप्रकृतिश्चाथ पोटा स्त्रीपुंसलक्षणा ॥ ३ ॥
 स्त्री योषिल्ललना योषा वशा सीमन्तिनी वधूः ।
 वनिता महिला नारी तद्भेदास्तु नितम्बिनी ॥ ४ ॥
 प्रतीपदशिनी वामा प्रमदा भीरुरङ्गना ।
 अबला भामिनो कान्ता कामिनी वामलोचना ॥ ५ ॥
 सुन्दरी रमणी रामा वेणिनी चान्वितार्थकाः ।
 कुमारी कन्यका कन्या किञ्चित्प्रौढा महोदया ॥ ६ ॥
 अचिरव्यूढा तु वधूः पतिवरा तु स्वयंवरा वर्या ।
 कुलपालिका कुलस्त्री कुल्याऽथ सती पतिव्रता साध्वी ॥ ७ ॥
 स्त्रीव्यञ्जनकृता श्यामा चीरिणी तु सुवासिनी ।
 प्रातर्तुर्दिकरी राका युवतिस्तलुनी चरी ॥ ८ ॥
 वधूटी च चिरण्टी च द्वितीयवयसि स्त्रियाम् ।
 स्वैरिणी धर्षिणी पुंश्चल्यसती कुलदेवरी ॥ ९ ॥
 बन्धकी पांसुला चर्चा चला नगना तु कोट्टवी ।
 भिक्षुकी श्रमणी मुण्डा तीव्रकोपा तु भामिनी ॥ १० ॥
 विप्रशिनका त्वीक्षणिका दैवज्ञा प्रश्नवादिनी ।
 कामुकेच्छुः कामुकी तु वृषस्यन्ती रतार्थिनी ॥ ११ ॥
 वरारोहोत्तमा नारी सैव स्यान्मत्तकाशिनी ।
 कामात् कान्तं याति याऽसावविनीताऽभिसारिका ॥ १२ ॥
 अध्यूढा चाधिविन्ना च कृता यस्याः सपत्निका ।
 वीरपत्नी वीरभार्या वीरमाता तु वीरसूः ॥ १३ ॥
 पतिव्रती जीवपतिर्विश्वस्ता विधवाऽथ सा ।
 कात्यायनी द्वितीयं चेद्वयः काषायमम्बरम् ॥ १४ ॥

उदक्या मलवद्वासा आत्रेयी पुष्पवत्यपि ।
 रजस्वला च मलिना स्त्रीधर्मिण्यृतुमत्यपि ॥ १५ ॥
 ऋतुः पुंस्यार्तवं रक्तं पुष्पं चाथानृतुर्वधूः ।
 निष्कलाऽऽपन्नसत्त्वा तु स्यन्तर्वद्वी च गर्भिणी ॥ १६ ॥
 अद्यश्चोना तु सा या स्याद्य श्वः प्रसवोन्मुखी ।
 विजाता तु प्रजाता च प्रसूता च प्रसूतिका ॥ १७ ॥
 जनुर्जननजन्मानि जनिरुत्पत्तिरुद्भवः ।
 गर्भाशयो जरायुः स्यादुल्बं च कललोऽस्त्रियाम् ॥ १८ ॥
 बालस्य नाभिनालायाममरा कालिनीति च ।
 सूतिमासो वैजननो जीवतोका तु जीवसूः ॥ १९ ॥
 बिन्दुर्नश्यत्प्रसूतिः स्यादशिष्वी शिशुवर्जिता ।
 अवीरा निष्पतिसुता किमिला बहुसूतिका ॥ २० ॥
 कुटुम्बिनी तु गृहिणी पुरन्ध्री मातृकेति च ।
 वृद्धा पलिकनी प्राज्ञी तु प्रज्ञा प्राज्ञा तु धीमती ॥ २१ ॥
 उपाध्यायान्युपाध्यायी शूद्रार्थी क्षत्रियीति च ।
 आचार्यानी च पुंयोगादर्थोर्ण्यौ तु जातितः ॥ २२ ॥
 क्षत्रिया क्षत्रियाणी च शूद्रा चेत्यपि जातितः ।
 स्यादुपाध्याय्युपाध्यायाऽप्याचार्या च स्वयंकृता ॥ २३ ॥
 पण्यस्त्री गणिका वेश्या वारस्त्री रूपजीवना ।
 वारमुख्या सत्कृताऽसौ दूती सञ्चारिणी समे ॥ २४ ॥
 कुट्टिनी शम्फली चुन्दी वयस्याली सखी सुहृत् ।
 सैरन्ध्री परवेशमस्था स्वतन्त्रा शिल्पकारिणी ॥ २५ ॥
 दासी तु चेटिका चेटा वडबा कुम्भधारिका ।
 जनयित्री जनन्यम्बा माताऽथ भगिनी स्वसा ॥ २६ ॥
 सा ज्येष्ठाम्बाऽप्यवन्ती च कनिष्ठा कन्यसाम्बिका ।
 ननान्दा तु स्वसा पत्युः ननन्दा नन्दिनीति च ॥ २७ ॥
 पत्न्यास्तु भगिनी ज्येष्ठा ज्येष्ठश्वश्रूः कुलीति च ।
 कनिष्ठा स्थालिका हाली पत्रिणी केलिकुञ्चिका ॥ २८ ॥
 बीजी तु जनको वप्ता तातो जनयिता पिता ।
 पितामहः पितृपिता तत्पिता प्रपितामहः ॥ २९ ॥
 मातुर्मातामहाद्येवं तदूर्ध्वं वृद्धपूर्वकाः ।
 दम्पत्योर्व्यत्ययान्माता श्वश्रूः स्यात् श्वशुरः पिता ॥ ३० ॥

सहजः स्वसरो भ्राता कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
 पूर्वजस्त्वग्रजो ज्येष्ठः पितृव्याः सहजाः पितुः ॥ ३१ ॥
 ज्येष्ठतातः पितृज्येष्ठः क्षुल्लतातोऽनुजः पितुः ।
 स्यालः स्यादनुजः पत्न्यास्तस्याः स्यादबलोऽग्रजः ॥ ३२ ॥
 देवरो देवदेवानौ मातुर्भ्राता तु मातुलः ।
 दम्पत्योराजिकोऽन्योन्यो वैमात्रेयो विमातृजः ॥ ३३ ॥
 समानोदर्यसोदर्यौ सगर्भः सोदरः समाः ।
 भार्या जाया सहचरी द्वितीया सहधर्मिणी ॥ ३४ ॥
 सधर्मचारिणी पाणिगृहीती पालुषी बधूः ।
 पत्नी क्षेत्रं कलत्रं च गृहाः पुंभूमिं दारवत् ॥ ३५ ॥
 जाया प्रजावती मातुर्ज्येष्ठभ्रातुः प्रिया बधूः ।
 स्नुषा वधूर्जनी सूनोर्मातुलानी तु मातुली ॥ ३६ ॥
 भ्रातृवर्गस्य या भार्या यातरस्ताः परस्परम् ।
 रुच्यः प्रियः पतिर्भर्ता सेक्ता वरयिता धवः ॥ ३७ ॥
 पतिर्ननान्दुः कौतूलो नशिको भगिनीपतिः ।
 जारस्तु स्यादुपपतिर्जामाता दुहितुः पतिः ॥ ३८ ॥
 वेश्यापतौ विद्गकुम्भभुजङ्गविटपल्लवाः ।
 पुत्रस्तु तनयः सूनुरात्मजो नन्दनोऽङ्गजः ॥ ३९ ॥
 सुतः पोतश्च पुङ्गवे नरो दुहितरि स्त्रियः ।
 द्वयोश्च गर्भसन्तानौ प्रसवश्च नरः सदा ॥ ४० ॥
 तोकापत्ये नपुं स्त्री तु प्रसूतिः सन्ततिः प्रजा ।
 जामेयभागिनेयौ तु स्वस्त्रीयोऽथ पितृष्वसुः ॥ ४१ ॥
 पुत्रे पैतृष्वसेयश्च पितृष्वस्त्रीय इत्यपि ।
 एवं मातृष्वसुश्च द्वौ भ्रात्रीयो भ्रातुरात्मजः ॥ ४२ ॥
 सौभागिनेयकानीनौ सुभगाकन्ययोः सुतौ ।
 दास्या दासेयदासेरौ पौत्रलेयोऽसतीसुते ॥ ४३ ॥
 बन्धुलबान्धकिनेयौ च कौलदेयश्च कौलदेरश्च ।
 साध्वी तु भिक्षुकी चेत् कौलदिनेयश्च कौलदेयश्च ॥ ४४ ॥
 पौनर्भवः पुनर्भूज उरस्यस्वौरसः स्वजः ।
 नप्तरौ पौत्रदौहित्रौ प्रतिनप्ता प्रपौत्रकः ॥ ४५ ॥

परम्परस्तु तत्पुत्रस्तत्पुत्रोऽपि परम्परः ।
 अयं पत्न्ययनोऽपि स्यात् कल्पनस्तु तदात्मजः ॥ ४६ ॥
 सह प्रवाच्यौ भगिनीभ्रातरौ भ्रातराविति ।
 मातापितरौ पितरौ मातरपितराविति प्रसूतातौ ॥ ४७ ॥
 श्वश्रूश्चशुरौ श्वशुराविति पुत्राविति सुतापुत्रौ ।
 जायापती तु मिथुने जम्पती दम्पती इति ॥ ४८ ॥
 पितरस्तु पितुर्वश्या मातुर्मातामहाः कुले ।
 अन्ववायोऽन्वयो वंशः सन्तानो जननं कुलम् ॥ ४९ ॥
 राजबीजी राजवंश्यो बीज्यो वंश्यश्च वंशजः ।
 स्युर्जातयः सगोत्राश्च सपिण्डास्तु सनाभयः ॥ ५० ॥
 स्वजनो बान्धवो बन्धुः कुटुम्बन्तु सुतादिकम् ।
 परिवारः परिजनः परिस्पन्दः परिग्रहः ॥ ५१ ॥
 देहोऽस्त्री स्त्री तनुर्गात्रं क्षेत्रमङ्गं कलेबरम् ।
 चतुश्शाखं संहननं शरीरं करणं सिनम् ॥ ५२ ॥
 बन्धः प्रजानुकः कायो भूषणः सञ्चरोऽपि च ।
 प्राया वयांस्यस्य दशास्तारुण्यं यौवनं वयः ॥ ५३ ॥
 ज्यानिर्जीर्णिः स्थाविरं तु पात् स्त्री विस्त्रंसजा जरा ।
 शिशुत्वं शैशवं बाल्यं सामुद्रं देहलक्षणम् ॥ ५४ ॥
 गात्राण्यङ्गानि चास्यांशाः प्रतीकापघनावपि ।
 अंशस्त्ववयवो भाग एकदेशः कलेति च ॥ ५५ ॥
 भित्तं शकलखण्डे वा पुंस्यर्धोऽर्धं समेऽशके ।
 अस्त्री चरणमङ्घ्रिर्ना पत् पादः क्रमणं पदम् ॥ ५६ ॥
 तद्वन्थी घुटिकौ गुल्फौ प्रपदं चरणाग्रकम् ।
 गुल्फशीर्षस्त्विन्द्रवस्तिः कूर्चस्त्वङ्गुष्ठाकान्तरम् ॥ ५७ ॥
 पादाङ्गुष्ठाङ्गुलीमध्ये क्षिप्रं क्षेपणमस्त्रियाम् ।
 प्रसृता जाघनी जङ्घा पिण्डिका स्यात् पिचिण्डिका ॥ ५८ ॥
 नलतीरं तूरुपर्व जानुरष्टीवदस्त्रियौ ।
 सक्थि क्लीबं पुमान् वोरुरुरुमूलानि वङ्गणाः ॥ ५९ ॥
 अङ्गस्तूपस्थ उत्सङ्गः पीठीवं त्वण्डमूलकम् ।
 पायुस्तु ना गुदापाने त्रिवलीकं बुलिश्च्युतिः ॥ ६० ॥

शङ्कुर्मेढः शोफकोशौ शिशनं मेहनशोफसी ।
 पुषो भगं कामपदमक्ली योनिश्च्युतिर्बुलिः ॥ ६१ ॥
 उक्तद्वयमुपस्थोऽस्त्री गुह्यप्रजनने नपुम् ।
 सीवन्यस्मादधःसूत्रं गुह्यमध्यं गुडो मणिः ॥ ६२ ॥
 धारका गुह्यधारायां पुष्फिका गुह्यजे मले ।
 अस्त्रियो मुष्ककोशाण्डाः फेलुको वृषणोऽण्डुकः ॥ ६३ ॥
 काञ्चीपदं कलत्रं च कटिः श्रोणिः ककुद्मती ।
 पुरोभागोऽस्य जघनो नितम्बोऽपरभागकः ॥ ६४ ॥
 ऊखौ पुंसि कटिप्रोथौ पूलकौ च स्फिचौ स्त्रियौ ।
 कुकुन्दरे कटीकूपौ कटौ तु कटिशीर्षकौ ॥ ६५ ॥
 वंशस्तु पृष्ठमध्यास्थि (मूलभागोऽस्य तु त्रिकम्) ।
 मूत्राशयो वस्तिरक्ली नाभिर्नाभी प्रतारिका ॥ ६६ ॥
 कुक्षिको मलुकस्तुन्दं जठरं चोदरं न ना ।
 अवलग्रवलग्रौ तु मध्यमो मध्यमस्त्रियाम् ॥ ६७ ॥
 हृदयं हृदुरो वक्षः स्तनो वक्षसिजः कुचः ।
 स्तनाग्रे पिप्पलं वृन्तं चूचुकं मेचकं शिखा ॥ ६८ ॥
 न ह्री कक्षा बाहुमूलं पार्श्वमस्त्री तयोरधः ।
 पश्चिमाङ्गं तनोः पृष्ठमंससन्धी तु जश्रुणी ॥ ६९ ॥
 उल्लखलं तु सन्धिः स्यात् कक्षाया वङ्गणस्य च ।
 कण्ठेगुडः कण्ठमणिरंसान्तौ पीठबन्धनौ ॥ ७० ॥
 स्कन्धो दोशिशखरोऽसोऽस्त्री बाहा बाहुभुजौ न षण् ।
 दोर्न स्त्री करपोणिर्ना हरणः करणः प्लवः ॥ ७१ ॥
 प्रवेष्टश्च कफोण्यां तु कूर्परः कफणिर्न षण् ।
 प्रगण्डः कूर्परादूर्ध्वं प्रकोष्ठः कूर्परादवाक् ॥ ७२ ॥
 मणिबन्धो मणिः पाणिमूले पाणौ करः शयः ।
 पञ्चशाखस्तलो हस्तस्तर्जनी तु प्रदेशिनी ॥ ७३ ॥
 अनामिका तु सावित्री कनिष्ठा तु कनीनिका ।
 व्येष्टा तु मध्यमाऽङ्गुष्ठस्त्वङ्गुलोऽथाङ्गुलिः स्त्रियाम् ॥ ७४ ॥
 करशाखाऽथ करभो मध्यं मणिकनिष्ठयोः ।
 तीर्थानि हस्तावयवा नखरस्तु नखोऽस्त्रियाम् ॥ ७५ ॥

पुनर्भवः पाणिरुहो महाराजः पुनर्भवः ।
 खरूलः करजश्चाथ स प्रवृद्धः स्मराङ्कुशः ॥ ७६ ॥
 चपेटश्चर्पटस्तालः प्रहस्तः प्रतलस्तलः ।
 षट् ते तताङ्गुले हस्ते न्युञ्जेऽस्मिन् प्रसृते करे ॥ ७७ ॥
 तौ संहतौ संहतलः सोऽञ्जलिः करभावपि ।
 प्रसृते तु द्रवाधारे गण्डूषश्चुलकश्चुलः ॥ ७८ ॥
 पताकः कुञ्चिताङ्गुष्ठे संश्लिष्टप्रसृताङ्गुलौ ।
 अक्लीबौ मुष्टिमुस्तू द्वौ सङ्ग्राहो मुचुटिः स्त्रियाम् ॥ ७९ ॥
 घण्टाङ्गुष्ठेन भिन्ना सा खेटकस्त्वर्धमुष्टिकः ।
 प्रदेशतालगोकर्णा वितस्तिः स्त्री यथाक्रमम् ॥ ८० ॥
 तर्जन्यादिभिरङ्गुष्ठे वितते विततैः सह ।
 अवटोमनहस्तः स्यात् सप्रकोष्ठं तताङ्गुलिः ॥ ८१ ॥
 दन्नद्वयसमात्रास्तु जान्वादेस्तत्तदुन्मिते ।
 व्यायामो न्यग्रोधो व्यासश्च भुजौ प्रसारितौ तिर्यक् ॥ ८२ ॥
 त्रिषु तु परे चत्वारः पौरुषमुद्गाहुपुम्माने ।
 गलो निगरणः कण्ठो गरो ग्रीवा तु कन्धरा ॥ ८३ ॥
 शिरोधरावशुषिरा शिरोधिव्यापलण्डिका ।
 कम्बुग्रीवा त्रिरेखा सा शिरःपीठः कृकाटिका ॥ ८४ ॥
 घाटाऽप्यवदुरक्लीब उत्तमाङ्गं पुनः शिरः ।
 उष्णीषं शीर्षमक्षत्रं पुंसि मूर्ध्ना च मस्तिकः ॥ ८५ ॥
 मुण्डोऽस्त्री मस्तकोऽप्यस्त्री मुखं तु वदनं घनम् ।
 तेरं तुण्डं वक्त्रमास्यमाननं च द्विजालयम् ॥ ८६ ॥
 ओष्ठस्याधस्तु चिबुकं चुबुकं चबुकं च तत् ।
 अधरस्त्वधरोष्ठः स्यादोष्ठो दन्तच्छदोऽपि च ॥ ८७ ॥
 दन्तवर्णं च तत्प्रान्तौ सूकणी दशनाः पुनः ।
 रदनाः खादना दन्ता दंशा मल्ला रदा द्विजाः ॥ ८८ ॥
 मध्यदन्ता राजदन्ता दंष्ट्रा तत्पार्श्वयोर्द्वयोः ।
 तत्पार्श्वयोः स्थिता दन्ता जम्भास्तालु तु काकुदम् ॥ ८९ ॥
 रसज्ञा रसना जिह्वा राजिः सूनाऽप्यधः स्थिता ।
 गण्डो गल्लः कपोलश्च तत्परा तु हनुर्न षण् ॥ ९० ॥

वक्रो नकुटकं घ्राणं घोणा नासा विधूणिका ।
 शिङ्गाणी नासिका चाथ धमनौ नासिकापुटौ ॥ ९१ ॥
 नासाग्रे दृष्टिबन्धोऽथ शिङ्गाणो नासिकामलः ।
 पिण्डूषः कर्णजमलः कर्णः शब्दग्रहः श्रवः ॥ ९२ ॥
 पैण्डूषोऽस्त्री श्रुतिः श्रोत्रं श्रोतश्च श्रवणं श्रवः ।
 पालिस्तु कर्णलतिका वेष्टनं कर्णशङ्कुली ॥ ९३ ॥
 ईक्षणं नयनं चक्षुरक्षि लोचनमम्बकम् ।
 दृष्टिर्दृक् चाथ न पुमांस्तारकादणः कनीनिका ॥ ९४ ॥
 बल्लु पद्म च दृग्लोमिन् दृक्छदो वर्त्मवर्त्मनी ।
 बिडालको नेत्रपिण्डो दूषिका त्वक्षिजं मलम् ॥ ९५ ॥
 ललाटमलिकं गोधिः स्त्री तत्प्रान्तौ तु शङ्खकौ ।
 भ्रूमिल्लिकाऽथ शिरसः पृष्ठे नापितकोलिका ॥ ९६ ॥
 जटुले कालकः पिप्लुस्तिलके तिलकालकः ।
 तनूरुहं रोम लोम केशाः शिरसिजाः कचाः ॥ ९७ ॥
 बालाः कञ्जास्तीर्थवाहाः कुन्तलाश्च शिरोरुहाः ।
 कुञ्चितास्ते कर्कराला बर्बरा अलका अपि ॥ ९८ ॥
 ते ललाटे भ्रमरकाः कुरुला भ्रमरालकाः ।
 पर्पर्या स्याद्वल्लरीका मल्लर्या मम्पटिः क्षुवः ॥ ९९ ॥
 केशकूटस्तु धन्मिल्लः कबरी कर्परी समे ।
 चोचुस्तु बालकूर्चालः सीमन्तः केशपद्धतिः ॥ १०० ॥
 तद्वन्धिः सन्धितोऽथ प्ता जालिनी गरुडा जटा ।
 प्रलोभ्यं तु शिरस्यं च शीर्षण्यं चामलाः कलाः ॥ १०१ ॥
 चूडा केशी केशपाशी शिखण्डी कमुजा शिखा ।
 बालानां सा काकपक्षः शिखण्डश्च शिखण्डकः ॥ १०२ ॥
 श्मश्रु तु व्यञ्जनं चोटः समे शिङ्गाणशिङ्गिनी ।
 त्वक् स्त्री छदिस्तनुः कृत्तिः संछादन्यप्यसृग्धरा ॥ १०३ ॥
 रसस्तु घनधातुः स्यादात्रेयः षड्रसासवः ।
 मूलधातुर्वहिसुतो महाधातुरसृक्करः ॥ १०४ ॥
 रुधिरं लोहितं रक्तमस्रं क्षतजमासुरम् ।
 राक्यं शोध्यं मांसकरं रसतेजो रसोद्भवम् ॥ १०५ ॥

आग्नेयं प्राणदं विस्रं वासिष्ठं शोणितासृजी ।
 मांसं तु काश्यपं क्रव्यं तरसं पललं पलम् ॥ १०६ ॥
 रक्ततेजो रक्तभवं पिशितं कीनमामिषम् ।
 मेदस्करं च मेदस्तु पलतेजः पलोद्भवम् ॥ १०७ ॥
 विस्रमस्थिकरं स्नेहवरं गौतममित्यपि ।
 अथास्थि कीकसं विडुं कललं कूरमादिकम् ॥ १०८ ॥
 कुल्यं मेदोभवं मेदस्तेजो मज्जाकरं बलम् ।
 भारद्वाजं श्वदयितं सारसङ्घातकर्कराः ॥ १०९ ॥
 मज्जा स्त्री कौशिकं सूक्ष्ममस्थितेजोऽस्थिसम्भवम् ।
 अस्थिस्नेहो वीर्यकरो मज्जतेजस्विनौ बली ॥ ११० ॥
 रेतो बीजं वरं वीर्यं हर्षजं स्नेहु पौरुषम् ।
 शुक्लं प्रधानधातुश्च धातवोऽमी नवाष्ट वा ॥ १११ ॥
 तिलकं ह्योम गोर्दं तु मस्तिष्को मस्तुलुङ्गकः ।
 पेशिर्मांसलताऽथ द्वौ वृक्यौ पार्श्वगतौ गुडौ ॥ ११२ ॥
 अस्त्री परीतदान्त्रं स्यात् कालखण्डं पुनर्यकृत् ।
 गुल्मः ग्रीहा च डिम्बः स्यादष्ट्रीला गर्भसम्पुटः ॥ ११३ ॥
 अग्रमांसं तु हृदयं हृदसा त्वामिषो रसः ।
 कङ्कालोऽस्त्री तनोरस्थि करङ्कोऽप्यस्थिपञ्चरम् ॥ ११४ ॥
 पार्श्वस्य वङ्किः पश्वस्त्री पृष्ठस्यास्थि कशेर्बना ।
 कर्परो ना करोटिः स्त्री कपालोऽस्त्री शिरोऽस्थिनि ॥ ११५ ॥
 शाखास्थि नलकं जानोरष्टी स्यात् कूर्परस्य च ।
 धमनी त्वीलिका नाली सिरा दोषप्रणालिका ॥ ११६ ॥
 ग्रीवायास्तु शिरा मन्या महास्नायुस्तु कन्धरा ।
 नखारुस्तु स्नसा स्नावः स्नायवना सन्धिबन्धनम् ॥ ११७ ॥
 लसीका लसिका रक्तसमांसविपाकजाः ।
 पूयं तु कुणपं दूष्यं पुरीषं शमलं शकृत् ॥ ११८ ॥
 उच्चारो विणन ना गूथो वर्चस्को मलमस्त्रियाम् ।
 विण्ठा चाप्यथ लण्डोऽस्त्री विण्ठा राजियुता दृढा ॥ ११९ ॥
 प्रस्रावो देहवारि स्थान्मूत्रमेकाङ्कुलं च तत् ।
 सृणिका स्यन्दिनी लाला मलं किट्टं च न स्त्रियाम् ॥ १२० ॥

पित्तं मायुर्नरि श्लेष्मा बलासः खेटकः कफः ।
 क्षुत् स्त्री क्षुतः क्षवः पुंसि प्रतिश्यायस्तु पीनसः ॥ १२१ ॥
 दबधुः परितापः स्याद् रत्नानिः स्त्री ग्लवधुः पुमान् ।
 शोफोऽस्त्री श्वयधुः शोथः पादस्फोटो विपादिका ॥ १२२ ॥
 स्फोटकः कीलको गण्डो विस्फोटः पिटका त्रयी ।
 खसः पुमान् स्त्रियः कच्छूपामपामाविचचिकाः ॥ १२३ ॥
 कण्डूकण्डूतिकण्डूयाः खर्जुः कण्डूयने स्त्रियः ।
 यक्ष्मा यक्ष्मः क्षयः शोषः कोठः कुष्ठं च मण्डलम् ॥ १२४ ॥
 श्वित्रं श्वेतेऽत्र चक्रं तु ददुः स्त्री मुखजः पुनः ।
 पुंहलोऽपि वरण्डोऽपि व्यङ्गो नीलं पृष्णमुखे ॥ १२५ ॥
 मङ्कुस्तु सिद्धमसिध्मं च केशघ्नं त्विन्द्रलुप्तकम् ।
 उद्गालो वमथूद्गारौ वान्तिः प्रच्छदिका वमिः ॥ १२६ ॥
 भ्रिणिका वातसञ्चारो हिक्का हेका च हिक्किका ।
 उच्छ्वासरोधो योऽकस्मात् क्राथोऽसौ कथनं क्षणम् ॥ १२७ ॥
 अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं स्यात् प्रमेहस्त्वतिमूत्रतः ।
 आनाहो मलविष्टम्भ उत्थानं तु मलस्रुतिः ॥ १२८ ॥
 नातिभिन्नस्त्वतीसारो ग्रहणी स्त्री प्रवाहिका ।
 गलगण्डो गण्डमालो रोहिणी तु गलाङ्कुरः ॥ १२९ ॥
 गुल्मः स्यादुदरग्रन्थिः सीवनीजो भगन्दरः ।
 शम्बूकावर्त एष स्यात् त्रिदोषोत्थोऽथ पित्तजः ॥ १३० ॥
 स्यादुष्ट्रग्रीवकोऽथ स्त्री परिस्त्रावी कफोद्भवः ।
 अशौ दुर्नाम वृद्धिस्तु कुरण्डश्चाण्डवर्धने ॥ १३१ ॥
 उपदंशो लिङ्गशोफ उदावर्तो गुदग्रहः ।
 नेत्ररुक् कामला ह्रीबं कुम्भः स्यात् सा महत्तरा ॥ १३२ ॥
 श्रीपदः पदवल्मीको गतिर्नोडीव्रणः पुमान् ।
 अर्बुदो मांसकीलः स्यात् पृष्ठग्रन्थिर्गुडो गडुः ॥ १३३ ॥
 सुप्तः कुक्कुट एकाङ्गग्रहश्च वरुणग्रहः ।
 गजे व्वरस्य नामानि सिंहे तोये च सोऽण्डिकः ॥ १३४ ॥
 उष्ट्रे लसोऽभितापोऽश्वे व्याघ्रे पोतो गवीश्वरः ।
 बिडाले कणकः पोत्रिण्यलसः छर्दनः शुचिः ॥ १३५ ॥

कमाद्धारिद्रेन्द्रमदौ मृगरोगौ पपा ततः ।
 महिषे मत्स्यमृगयोः खगे चाक्षेपकोऽनिले ॥ १३६ ॥
 धरण्यां करकोत्पाटावुद्भिजे पाण्डुवर्णकः ।
 मारिर्मसूरी रुग्भेदाः शूलाद्या विद्रधिर्न षण् ॥ १३७ ॥
 व्याधिव्याप्यामया माथरोगामा देहमर्दनः ।
 सन्तापोऽपाटवं मान्यमाकुल्यं रुद्रुजे स्त्रियौ ॥ १३८ ॥
 उपचर्या चिकित्सा स्याल्लङ्घनं त्वपतर्पणम् ।
 कुशी भस्मास्थिवन्धः स्यादरिष्टो दंशवन्धनम् ॥ १३९ ॥
 पट्टस्तु व्रणवन्धः स्यान्नस्यं नस्तं च नावनम् ।
 अङ्गुल्यग्रेण चूर्णौघैर्घर्षणं प्रतिसारणम् ॥ १४० ॥
 जायुः पुंस्यगदस्तन्त्रं भैषज्यौषधभेषजम् ।
 काथः कषायो निर्यूहः फाण्टोऽत्तिकाथजो रसः ॥ १४१ ॥
 काथादेस्तु पुनः काथाद् घनीभावो रसक्रिया ।
 वार्त पाटवमारोग्यं सङ्गन्धं स्वास्थ्यमनामयम् ॥ १४२ ॥
 त्रिष्वतः पटुरुल्लाघो वार्तः कल्यो निरामयः ।
 रोगहार्यगदङ्कारो भिषग्वैद्यश्चिकित्सकः ॥ १४३ ॥
 निदानज्ञस्तु दोषज्ञ आयुर्वेदी तु शास्त्रवित् ।
 आतुरोऽभ्यमितोऽभ्यान्तो विकृतो व्याधितोऽपटुः ॥ १४४ ॥
 आमयावी समौ ग्लास्नुग्लानौ पामनकच्छुरौ ।
 वाताशोदद्रुमन्तः स्युर्वीतलार्शसदद्रुणाः ॥ १४५ ॥
 श्लेष्मसूः श्लेष्मलः खेटी सातिसारोऽतिसारकी ।
 किलासी सिध्मलो वृद्धनाभौ तुन्दिभतुन्दिनौ ॥ १४६ ॥
 खलवाटः खलतिर्बध्नुः शिपिविष्टैन्द्रलुप्तिकौ ॥ १४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

पातालकाण्डे भूताध्यायः ॥ ४ ॥

चतुर्थः पातालकाण्डः समाप्तः ॥ ४ ॥

५. अथ सामान्यकाण्डः

गणाध्यायः ॥ १ ॥

पूगप्रकरसङ्घातविसरव्रातसञ्चयाः ।
 वारस्कन्धगणस्तोमसमवायचयव्रजाः ॥ १ ॥
 सन्दोहनिवहव्यूहसमूहनिकराकराः ।
 समुदायः समुदयो निकुरुम्बं कदम्बकम् ॥ २ ॥
 वृन्दं जातं चक्रवालं जालकं पेटकं जटा ।
 धान्यादिवृन्दे कूटोऽस्त्री राशिपुञ्जोत्करा नरि ॥ ३ ॥
 वृन्दे तिरश्चां यूथोऽस्त्री निकायस्तु सधर्मणाम् ।
 सङ्घसार्थौ तु जन्तूनां वर्गस्तु सदृशां गणे ॥ ४ ॥
 पशूनां समजोऽन्येषां समाजो धीमतां सभा ।
 उद्भिज्जानां तु षण्डोऽस्त्री स्कन्धोऽश्वनरहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
 पटल्यपुं सुश्लिष्टानां सजातीयगणे कुलम् ।
 शौककापोतशावाद्याः शुकादीनां गणे नपुम् ॥ ६ ॥
 क्ली गोत्रप्रत्ययान्तेभ्यः स्यादौपगवकादिकम् ।
 माणवानां तु माणव्यं बाहव्यं तु द्विजन्मनाम् ॥ ७ ॥
 राजन्यकं मानुष्यकं राजकं च पृथक् पृथक् ।
 गार्भिणं यौवनं तासां गाणिक्यं गणिकागणे ॥ ८ ॥
 जनबन्धुगजग्रामसहायानां गणे स्त्रियः ।
 जनताबन्धुतेत्याद्या बाहव्यं बडबागणे ॥ ९ ॥
 हास्तिकमौष्ट्रकमौक्षकमौरभ्रकमाजकं गजादीनाम् ।
 एवं धैनुकवात्सकमाश्वीयं त्वाश्वमश्वानाम् ॥ १० ॥
 सवर्मणां कावचिकं पादातं पादचारिणाम् ।
 आपूपिकं शाकुलिकमित्यादिकमचेतसाम् ॥ ११ ॥
 कैदारिकं तु कैदार्यं क्षेत्रं कैदारकं समम् ।
 केशानां कैशिकं कैश्यं खलया तु खलिनी समे ॥ १२ ॥
 भैक्षसाहस्रकारीषवार्मणानि च तद्गणे ।
 रथकट्या तु रथ्या स्याद् गोत्रा गव्या च गोगणे ॥ १३ ॥

धूम्या वात्या पाश्या हल्या गल्या नट्या वन्या तृण्या ।
 पृष्ठ्यं तत्तद्वृन्दे सर्वं पार्श्वं वृन्दे पर्शूनां स्यात् ॥ १४ ॥
 मिथुनं द्वितयं द्वैतं द्वयं द्वन्द्वं युगं यमम् ।
 यमलं युगलं युगमं युतकं च द्वयोर्गणे ॥ १५ ॥
 त्रयं त्रयाणां त्रितयं मिथुनं तद्वैति त्रिषु ।
 स्त्रीपुंसयोस्तु मिथुनं कशिपुः स्यन्नवस्त्रयोः ॥ १६ ॥
 औशीरं शय्यासनयोलिङ्गं बुद्ध्यादिसङ्गतौ ।
 मामः परोऽन्नादिषयाद् (गुणाद्) भूतेन्द्रियार्थकात् ॥ १७ ॥
 पक्षः पाशश्च हस्तश्च केशार्थेभ्यः परो गणे ।
 पशूनां गोयुगं युग्मे तत्तदाह्वयपूर्वकम् ॥ १८ ॥
 गणपूरणं गणतिथं पूगतिथं चैवमेव सङ्गतिथम् ।
 बहुतिथसंवत्सरतममासतमान्यर्धमासतमम् ॥ १९ ॥
 यावतिथैतावतिथे तावतिथं कतिथमपि च कतिपयथम् ।
 पञ्चमसप्तमनवमान्यष्टमदशमद्वितीयानि ॥ २० ॥
 षष्ठं प्रथमतृतीये तुरीयतुर्ये चतुर्थञ्च ।
 द्वादशमेकादशमिति रूपं स्याद् विंशतेरर्वाक् ॥ २१ ॥
 विंशं विंशतितममेकविंशमिति वत्परं द्विधा सर्वम् ।
 षष्टितममिति वदेकं रूपमसङ्ख्यादिषष्ट्यादेः ॥ २२ ॥
 शततममेकशततमं सहस्रतममिति च सर्वमेकविधम् ।
 ओजमयुगमं युगमं युगिति द्वितीयतुर्यादि ॥ २३ ॥
 त्रिष्वेते पूरणार्थाः स्युः शब्दा गणतिथादयः ।
 आवलिः पद्धतिः पङ्क्तिरालिलेखा च मालिका ॥ २४ ॥
 एकादयश्च सङ्ख्येये शब्दाः प्राग्विशतेस्त्रिषु ।
 द्वित्रा द्वौ वा त्रयो वा स्थुरेवं त्रिचतुरा अपि ॥ २५ ॥
 चतुःपञ्चाः पञ्चषाश्च षट्सप्ताद्याश्च तादृशाः ।
 स्त्री पङ्क्तिर्विंशतिस्त्रिंशच्चत्वारिंशच्च पञ्चाशत् ॥ २६ ॥
 षष्टिः सप्तत्यशीतिश्च नवतिश्च दशोत्तराः ।
 क्रमेणाथ परेणाथ परे दशगुणोत्तराः ॥ २७ ॥
 शतं सहस्रमयुतं नियुतं प्रयुतार्बुदे ।
 न्युबुधं बुन्दस्त्रवे च निस्त्रयं शङ्खमम्बुजम् ॥ २८ ॥

समुद्रो मध्यमन्तं च परार्धं च यथाक्रमम् ।
 परं परार्धाद् द्विगुणमथ स्त्री कोटिरर्बुदे ॥ २९ ॥
 व्यत्यासेन च दृश्येते नियुतप्रयुते क्वचित् ।
 वृन्दादिषु तु षट्स्वन्ये निस्त्रयं वद्धमक्षितम् ॥ ३० ॥
 व्योम चान्तश्च सर्वश्च समुद्राद्यास्तु वा त्रिषु ।
 अन्ये त्वाहुः शतं कोटिः शङ्खवृन्दं महागुणः ॥ ३१ ॥
 पद्मं महाम्बुजं चेति क्रमाक्षगुणोत्तरम् ।
 सहस्राणां शते लक्षा लक्षं च नियुतञ्च तत् ॥ ३२ ॥
 पङ्क्यादयः स्युः संख्यायां संख्येयेषु च वस्तुषु ।
 संख्यायां द्वयेकबहुताः संख्येयेषु सदैकता ॥ ३३ ॥
 तद्यथा विंशतिर्गावः स्वावृत्तौ जातु नैकता ।
 तद्यथा विंशतिर्विप्रास्तिस्रो विंशतयो भटाः ॥ ३४ ॥
 बहुव्रीहौ बहुवचो वाच्यलिङ्गं च तद्यथा ।
 उपविशैर्भुजैर्भुक्तमुपत्रिंशा अजा इति ॥ ३५ ॥
 कला गणनसंख्याने हननं ताडनं समे ।
 वर्गस्तावत्कृतिश्चेति तावत्कृत्वः कृतेर्द्वयम् ॥ ३६ ॥
 तन्मूले तु पुमान् हेतुर्गच्छा बाह्वितराशयः ।
 गण्डः कपर्दाश्चत्वारस्ते बोधी पञ्च तद्द्वयम् ॥ ३७ ॥
 बिन्दुकोऽस्त्री तद्द्वये तु पणपाणिकपादिकाः ।
 क्रमात्ततोऽङ्गजो रुच्यः कार्षिकश्च चतुर्गुणाः ॥ ३८ ॥
 कार्षापणः कार्षिकः स्यात् स षोडशपणः क्वचित् ।
 लोहे विंशतिमाषोऽसौ कार्षिके ताम्रिके पणः ॥ ३९ ॥
 ताम्रकर्षकृता मुद्रा क्वचित् कार्षापणः पणः ।
 स एव चाधिकेत्युक्ते धानका तच्चतुष्टयम् ॥ ४० ॥
 ता द्वादश सुवर्णोऽस्त्री निष्को दीनार इत्यपि ।
 साशीतिपणसाहस्रो दण्ड उत्तमसाहसः ॥ ४१ ॥
 त्रसरेणुभिरष्टाभिलिङ्गा सैव मरीचिका ।
 रथरेणुश्च रेणुश्च तास्तिस्त्रो राजसर्षपः ॥ ४२ ॥
 धुरणश्च यवाग्रश्च ते त्रयो गौरसर्षपः ।
 तेऽष्टौ यवः षोडश तु यवा माषोऽथवा त्रिभिः ॥ ४३ ॥

यवैर्गुञ्जा पञ्च गुञ्जा माषः कुप्ये तु सप्त ताः ।
 रूप्यमाषो द्विगुञ्जो वा धरणं षोडशैव ते ॥ ४४ ॥
 शतमानं तु दशभिर्धरणैः पलमेव च ।
 माषस्तण्डुलमात्रो वा हेम्नस्तैरष्टभिः पणः ॥ ४५ ॥
 निष्कोऽस्त्री विंशतिपणस्तेऽष्ट वा दश वा पलम् ।
 यः पञ्चकृष्णलो माषः कुप्ये वा सप्तकृष्णलः ॥ ४६ ॥
 तौ द्वौ भाषावर्णिका स्याज्जोहितीकं त्रिमाषकम् ।
 शाणो मण्डः पिचूलं च भाषाः स्युश्चतुरादयः ॥ ४७ ॥
 मधुणं सप्तमाषं स्यादण्डिका तच्चतुर्यवा ।
 द्रक्षुणं द्रक्षुमं कोलं वटकं चाष्टमाषके ॥ ४८ ॥
 तृतीये ध्वानका शाणभागे मापास्तु षोडश ।
 सुवर्णोऽक्षः पिचुः पाणिः कर्षोऽस्त्री क्रोडबिन्दुके ॥ ४९ ॥
 बिडालपादकं हंसपदं प्रासग्रहं तलम् ।
 शतमानं तु कर्षे द्वे शुक्तिरष्टमिका न ना ॥ ५० ॥
 ते द्वे चतुर्थिका वा क्ली निकुञ्चयाज्यपलानि च ।
 बिल्वः प्रकुञ्चं मुष्टिश्च हेम्नोऽक्षे विस्तवारटौ ॥ ५१ ॥
 पादिकं ताम्रकर्षं स्यादिन्दुः स्याद्रजते पले ।
 कुरुविस्तः पले हेम्नः प्रसृतोऽस्त्री द्विमुष्टिके ॥ ५२ ॥
 प्रसृतौ द्वावञ्जलिः स्यात् कुडपो वाहिकोऽध्युषः ।
 तौ द्वौ मान्यष्टमानं च ते द्वे प्रस्थः स कुप्यके ॥ ५३ ॥
 द्वात्रिंशत्पलकोऽन्येषां द्वादशैव पलानि सः ।
 चतुष्प्रस्थः पुना राशिर्महोद्रेको बृहानकः ॥ ५४ ॥
 पात्रं शूर्पावरं पिष्टं सेहिका द्वाढकोऽस्त्रियाम् ।
 कंसं चाथ चतुष्के स्युर्द्रोणोऽस्त्री कलशो घटः ॥ ५५ ॥
 अमर्णं नल्वलं शौर्पमुन्मानं तद्द्वयं पुनः ।
 कुम्भः शूर्पोऽस्त्रियां तौ द्वौ गोणी वाहस्तु तद्द्वयम् ॥ ५६ ॥
 तौ द्वौ खारी परे त्वेनां विदुः कुम्भी परे पुनः ।
 खारीं कंसयुगेनान्ये मानी वाहं परे विदुः ॥ ५७ ॥
 वाहं केचिच्चतुःखारीं खारीभागं च गोणिकाम् ।
 वाहं प्रस्थद्वयं केचित् कुम्भानां विंशतिर्जटी ॥ ५८ ॥

दश कुम्भाः पाञ्चमिकः कुम्भोऽयमिति केचन ।
 धारणं तु पलान्यष्टौ हेम्नस्ताम्रस्य सप्ततिः ॥ ५९ ॥
 दशान्येषां शतं मानं साधै रूप्यपलैस्त्रिभिः ।
 तुला पलशतं तास्तु दशार्धं घटिकोऽस्त्रियाम् ॥ ६० ॥
 तौ तु द्वौ शाकटो भारः शाकटीनः शलाटवत् ।
 भारा दश समं सङ्गं धारभारं च शाकटम् ॥ ६१ ॥
 आचितं द्वाचचितं होढं हेलकं समकं समम् ।
 वाहितं भारितं चाष्टावृक्षादशगुणाः क्रमात् ॥ ६२ ॥
 माषः शाणस्तलं मुष्टिरञ्जलिः प्रस्थ आढकः ।
 द्रोणो गोणी च खारी च क्रमादेतच्चतुर्गुणम् ॥ ६३ ॥
 पाट्यं हस्तादिभिर्मानं दुवयं कुडबादिभिः ।
 पौतवं तुलया तस्य सूत्रं स्याद्रागसूत्रकम् ॥ ६४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गणाध्यायः ॥ १ ॥

धर्मकर्मध्यायः ॥ २ ॥

रूपं तत्त्वं सतत्त्वं च स्वरूपं च सलक्षणम् ।
 सहजं निजमाजानं धर्मसगौ निसर्गवत् ॥ १ ॥
 स्वभावः प्रकृती रीतिरवस्था तु दशा स्थितिः ।
 प्रभावः प्रभवन्ती स्यात् प्रभुता प्रभविष्णुता ॥ २ ॥
 परभागो गुणोत्कर्षः प्राग्भारोऽतिशयो भरः ।
 विस्तारो विग्रहो व्यासः स तु शब्दस्य विस्तरः ॥ ३ ॥
 अनायासार्थकं फाण्टं दौर्मत्यं तु करैरकम् ।
 विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहो रोषे त्वादीनवाश्रवौ ॥ ४ ॥
 दैर्घ्यमायाम आनाहः परिणाहो विशालता ।
 वैपरीत्यं विपर्ययो व्यत्ययश्च विपर्ययः ॥ ५ ॥
 व्यत्यासो व्यतिहारः स्यादन्तर्गडु निरर्थकम् ।
 तत्क्षणं स्यादेकपदं यदृच्छा नियमोऽस्मिन् ॥ ६ ॥
 वण्टो विभागो भागोऽशः पादस्त्वंशश्चतुर्थकः ।
 कला तु षोडशो भागो वारस्त्ववसरः क्षणः ॥ ७ ॥
 प्रतिकूलानुकूलार्थे अपष्टुरमपष्टु च ।
 पृष्ठमांसादनं पश्चाद् गतस्यार्थस्य गर्हणम् ॥ ८ ॥
 आग्नेडनं ऋटप्पः स्याज्जम्पः सम्पातपाटवम् ।
 कर्म क्रियाऽप्यनुष्ठानं तद्भेदा गमनादयः ॥ ९ ॥
 यात्रा ब्रज्या च गमनं प्रस्थानं च गतिर्गमः ।
 चक्रावर्तो भ्रमो भ्रान्तिर्भ्रमिर्घूर्णिश्च घूर्णनम् ॥ १० ॥
 ईहनं शीघ्रगमनं सारणं छद्मना गतिः ।
 ब्रज्याऽटाटया पर्यटनमल्पेऽध्वनि गतागतम् ॥ ११ ॥
 सविकारा गतिः सोरो भेलनं तरणं प्लवः ।
 कादाचित्कस्तु भेयोऽसौ क्षेपो लङ्गनलङ्घने ॥ १२ ॥
 निर्याणं स्यान्निर्गमनमंहनं वक्षसा गतिः ।
 प्रतिबन्धः प्रतिष्ठम्भः सम्बन्धः प्राप्तिरापनम् ॥ १३ ॥
 निर्बन्धोऽभिनिवेशः स्यात् प्रवेशोऽन्तरगाहनम् ।
 आस्यासनोपवेशश्च निवेशो रचना स्थितिः ॥ १४ ॥

अथाभ्यादानमारम्भः प्रक्रमः स्यादुपक्रमः ।
 प्रत्युत्क्रमः प्रयोगः स्यादारोहणमभिक्रमः ॥ १५ ॥
 आक्रमोऽभिक्रमः क्रान्तिर्व्युत्क्रमस्तूक्रमो मृतम् ।
 विक्रमः शौर्यकरणमत्याधानमतिक्रमः ॥ १६ ॥
 भूमानं विक्रमः पद्भ्यां निर्हारोऽभ्यवकर्षणम् ।
 अनुहारोऽनुकारः स्यात् परिहारो निवर्तना ॥ १७ ॥
 प्रत्याहार उपदानमभिहारस्त्वभिग्रहः ।
 समास उपसंहारः समाहारः समुच्चयः ॥ १८ ॥
 अपहारस्त्वपादानं प्रहारस्त्वभिताडनम् ।
 उपलम्भस्त्वनुभवो विलम्भस्त्वतिसर्जनम् ॥ १९ ॥
 विप्रलम्भो विसंवादः प्रतिलम्भस्तु लम्भनम् ।
 स्वतन्त्रवृत्तिर्व्युत्थानमभ्युत्थानं तु गौरवम् ॥ २० ॥
 संस्थानं सन्निवेशः स्यादुपस्थानं तु सङ्गतिः ।
 धान्योत्तेपणमुत्कारः पराकारस्तु धिक्क्रिया ॥ २१ ॥
 विकारो विप्रकारः स्यादाकारस्त्वङ्ग इङ्गितम् ।
 उपक्रियोपकारः स्यादपकारोऽन्यतः कृतिः ॥ २२ ॥
 प्रकार इत्थम्भावः स्यादपकारोऽन्यपीडनम् ।
 प्रत्याख्यानं निराकारः प्रत्यादेशो निरासवत् ॥ २३ ॥
 परिणामोऽन्यथाभावः सन्नामस्त्वन्यथाकृतिः ।
 प्रणामः प्रणिपातः स्यादुन्नामस्तुङ्गतोन्नतिः ॥ २४ ॥
 उद्योगोऽस्त्री समुत्थानं विनियोगोऽर्पणं फले ।
 विधिर्नियोगः सम्प्रेष लपयोगः फलक्रिया ॥ २५ ॥
 संयोगसम्प्रयोगौ सम्भेदः सन्निपातसंश्लेषौ ।
 सम्पाते विश्लेषे तु विप्रयोगविरहवियोगाः ॥ २६ ॥
 विगमोऽपगमोऽपायो मेलने सङ्गसङ्गमौ ।
 शमथस्तु शमः शान्तिर्दान्तिस्तु दमथो दमः ॥ २७ ॥
 बन्धनं प्रसितिर्बन्धः क्लान्तिस्तु क्लमथः क्लमः ।
 परिसर्यो परीसारः परिसर्पः परिक्रमः ॥ २८ ॥
 लवे विलावो लवनं तेमः स्तेमः समुन्दनम् ।
 प्रतिश्रवः प्रतिख्यातिरपेक्षा प्रतिजागरः ॥ २९ ॥
 संयामसंयमौ यामो वियामो वियमो यमः ।
 संवाहनं मर्दनं स्यात् पर्यवस्था विरोधनम् ॥ ३० ॥

संस्तवः स्यात् परिचय उदजः प्रेषणे पशोः ।
 पवनं पवनिष्पावौ जूतिस्तु जवनं जवः ॥ ३१ ॥
 प्रेजनं स्यादपसरो रन्धनं पचनं पचा ।
 क्षयः क्षिया नयो नायो मदो मादः स्तवः स्तवः ॥ ३२ ॥
 उद्वेग उद्वेगः श्रायः श्रयणं प्रमितिः प्रमा ।
 स्फातिस्तु वृद्धिः स्फुरणं स्फुलनं क्षेपणं क्षिपा ॥ ३३ ॥
 उद्यमो गुरणं श्रयोतिः प्रघारः प्रथनं प्रथा ।
 भङ्गिस्तु व्याकृतिः खेदो निर्वेदो घटना घटा ॥ ३४ ॥
 यत्प्रेषणं समाहूय तस्मिन् स्यात् प्रतिशासनम् ।
 वञ्चनं त्वतिसन्धानं व्यलीकं च प्रतारणम् ॥ ३५ ॥
 निष्ठीवोऽस्त्री निष्ठीवनमपि निष्ठीवनं च निष्ठीयूतिः ।
 उपरत्यारत्यपरतिविरतय उपरमण उपरामः ॥ ३६ ॥
 संविदागूः प्रतिज्ञाऽऽस्थाऽऽप्यभ्युपायः प्रतिश्रवः ।
 अङ्गीकाराभ्युपगमनियमाश्रवसंश्रवाः ॥ ३७ ॥
 प्रणीतिः स्यादनुनयः प्रश्रयः सान्त्वनं तथा ।
 सपत्राकृतिनिष्पत्राकृती त्वत्यन्तपीडने ॥ ३८ ॥
 वर्णनं स्याद्विभजनं प्रवाहस्तु परम्परा ।
 श्रन्धनं प्रन्धनं गुम्फः सन्दर्भो रचना न ना ॥ ३९ ॥
 विधूननं विधुवनं त्यागो हानं च वर्जनम् ।
 आवर्जनं द्रवक्षेपे निधानं क्षेपणासने ॥ ४० ॥
 सम्मूर्छनं व्यापनं स्याद् विदरः स्फुटनं भिदा ।
 आवर्तनं कथनं स्यात् कथनं पाकवर्तनम् ॥ ४१ ॥
 संवीक्षणं चिचथनं लोटनं तु विवेष्टनम् ।
 इत्यादयः क्रियाशब्दा लक्ष्या धातुषु लक्षणैः ॥ ४२ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 सामान्यकाण्डे धर्मकर्मशास्त्रायः ॥ २ ॥

गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

गुणो जसुर्द्रव्यपदो द्वौ स्नेहे मार्जमार्जनौ ।
 मसृणत्वे तु मारुङ्गकासनौ द्रवणे द्रुतिः ॥ १ ॥
 खादीनां तु गुणाः शब्दः स्पर्शो रूपं रसः क्रमात् ।
 गन्धश्चेतीन्द्रियार्थास्ते विषया गोचराश्च ते ॥ २ ॥
 सत्यं तथ्यमृतं सम्यक् समीचीनं तथार्थवाक् ।
 कर्कशे परुषो रूक्षो मठरः खोरणः खरः ॥ ३ ॥
 उक्षुद्रलोऽथ मसृणे श्लक्ष्णसोमालचिकणाः ।
 पिच्छिले स्याद् विजविलः कठिने खरटः खटः ॥ ४ ॥
 कठोरनिष्ठुरकूरुदृढदारुणकक्खटाः ।
 खरश्च सुकुमारे तु कोमलो मृदुलो मृदुः ॥ ५ ॥
 शीतले शीकरः शीतः सुषिकः सुषिमो जडः ।
 समीकः सोलिकः सोलः स्कन्दोलो मेकलस्तलः ॥ ६ ॥
 तुषारः शिशिरः स्फीतः सेभ्यः सीमो हिमोऽपि च ।
 उष्णं बलः खरः क्रूरो बालस्तिग्मः कृशश्चुपः ॥ ७ ॥
 सोमलो वह्निको व्यक्तस्तालको जलशीनकः ।
 अङ्गारो दहनस्तप्तः प्रूषो धूमः प्रतापनः ॥ ८ ॥
 तीक्ष्णश्चण्डोत्तणप्रोन्द्रकरालिविकारालिनः ।
 मन्दोष्णमोष्णं कोष्णं च कवोष्णं च कदुष्णवत् ॥ ९ ॥
 शुक्ले शुभ्रशुचिश्वेताः पुण्ड्रको धवलोऽर्जुनः ।
 अवदातः सितो गौरो विशदश्येतपाण्डराः ॥ १० ॥
 काले कृष्णासितश्यामनीलश्यामलमेचकाः ।
 रोहिते लोहितो रक्तो हारिद्रे पीतपीतले ॥ ११ ॥
 उत्पिशस्तु सितश्यामे हरिणे पाण्डुपाण्डरौ ।
 कपोतस्तु कपोताभः पद्मः पीतसितासितः ॥ १२ ॥
 पिङ्गो नीलसितश्यामः सोवालः कृष्णधूमलः ।
 सितकाचस्तु पिङ्गाणः कण्डारः सितकाचरः ॥ १३ ॥
 वरालः सितपिङ्गाणः स्तोकपाण्डुस्तु धूसरः ।
 कोसलः पाण्डुलः श्यामश्चाटः कृष्णहरिः सितः ॥ १४ ॥

बलक्षस्तु सितश्यामः सैराभः श्वेतपीतलः ।
 सितपीतहरित्रीलस्तरलो वृद्धपत्रवत् ॥ १५ ॥
 रक्तपीतासितश्वेते बोलः कारीषभस्मवत् ।
 उत्पिशाद्यास्त्वमी मिश्रवर्णाः शुक्रप्रधानकाः ॥ १६ ॥
 शोणोऽरुणश्च सन्ध्याभः श्वेतरक्तस्तु पाटलः ।
 मरालोऽल्पः पीतरक्तः पीतरक्तस्तु पिञ्जरः ॥ १७ ॥
 बभ्रुः कडारः कपिलो विदग्धो दुष्टरक्तवत् ।
 श्यावे तु कपिशः पिङ्गे पिशाङ्गः कटुपिङ्गलौ ॥ १८ ॥
 नीलपीतारुणः शारो जोणालो नीललोहितः ।
 इति लोहितवर्गीणा अथ पीतप्रधानकाः ॥ १९ ॥
 सेरालोऽल्पसितः पीतः पेरालः पीतधूमलः ।
 पीतश्यामल ओरालो गौरः स्यात् पीतलोहितः ॥ २० ॥
 कीनाशः पीतहरितो हरितो नीलपीतलः ।
 कृष्णवर्ग्याः पुनर्धूमधूमलौ कृष्णलोहिते ॥ २१ ॥
 पीतकृष्णहरिद्राभः काचरः कृष्णधूमलः ।
 कृष्णपीतस्तु काचोऽथ पालाशो हरितो हरित् ॥ २२ ॥
 तारावतारकिर्मीरशबलैतास्तु चित्रके ।
 स चान्योन्यानवष्टम्भान्नावर्णसमुन्नयः ॥ २३ ॥
 कर्बुरः शुक्रहरित आरुः स्यात् कृष्णपिङ्गलः ।
 सितकृष्णस्तु कल्माषः पिञ्ज्रूषः सितकाचरः ॥ २४ ॥
 कृष्णरक्तसितः शारः किमिरः सितलोहितः ।
 मधुरस्तु रसज्येष्ठो गुली स्वादुर्मधूलकः ॥ २५ ॥
 अम्लस्तु पाचनः शुक्तो लवणस्तु पटुः सरः ।
 ऊषणस्तु कटुस्तीक्ष्णस्तित्तस्तु विसरः कटुः ॥ २६ ॥
 कषायोऽस्त्री स्वप्रतिष्ठस्तुवरो मधुराङ्गकः ।
 मधुराम्लौ सलवणौ कटुतिक्तकषायकाः ॥ २७ ॥
 षट् ते मूलरसाः शेषा रसका योगयोनयः ।
 स्युः शाडवराश्रयूषाः श्रयूष आसोऽपि च क्रमात् ॥ २८ ॥
 अम्लाद्या मधुरोपेताः साम्लास्तु लवणादयः ।
 चाटसस्तीक्ष्णचो रूपः शुक्तश्च लवणेन तु ॥ २९ ॥
 युक्ता वैखारकः क्षारः स्वाद्यश्च कटुकादयः ।
 तिक्तिकः कटुतिक्ते स्यात् कुल्या कटुकषायके ॥ ३० ॥

तैलित्सस्तित्तकषाय एवं पञ्चदश द्विकाः ।
 क्रमेण शोणिकः श्यावो रातपं रागशालवः ॥ ३१ ॥
 सस्वादम्लता लवणाद्याः सस्वादुलवणेषु ते ।
 कटुकादिषु कट्वारो माधुरो मधुकः क्रमात् ॥ ३२ ॥
 तिक्तकषायौ सस्वादुकटू मधुमधूलिकौ ।
 स्वादुतिक्तकषाये तु मधुलोऽमी दश त्रिकाः ॥ ३३ ॥
 कट्वाद्याः साम्ललवणा बोसरः खलुषः क्रमात् ।
 कोलश्चाथो साम्लकटू कलुषत्रिखरौ क्रमात् ॥ ३४ ॥
 कषायतिक्तौ सोलस्तु शुक्ततिक्तकषायके ।
 अम्लतिक्तकषायेऽस्मिन् बालाम्लो बालचूतकः ॥ ३५ ॥
 कषायतिक्तौ सपटुकटू वेलानवेलजौ ।
 कषायतिक्तलवणेऽसोलोऽथैलारसालकः ॥ ३६ ॥
 कटुतिक्तकषाये स्यात् तदेवं विंशतिस्त्रिकाः ।
 स्वाद्वम्ललवणोपेता कट्वाद्या मधुमालकः ॥ ३७ ॥
 मधुबोलः सोरणश्च क्वचिदन्त्यः करोलकः ।
 सस्वाद्वम्लकटौ तिक्ते लीसुषः परुषः पुनः ॥ ३८ ॥
 कषायेऽत्रैव कलुषाकषायौ जालनः पुनः ।
 स्वाद्वम्लतिक्ततुवरे सस्वादुलवणोषणे ॥ ३९ ॥
 रसकोपशाडविकौ कषाये बलजः पुनः ।
 तिक्ते तिक्तपटुस्वादुकषाये फलसोऽथुसौ ॥ ४० ॥
 सस्वादुकटुतिक्ते तु कषाये स्यात् कलापकः ।
 जलोलकः साम्लपटुकटौ तिक्ते कषायके ॥ ४१ ॥
 तुवरः स्यात् कुवेलश्च खरस्तु लवणे युते ।
 अम्लतिक्तकषायैस्तैः संयुते पलुषः कटौ ॥ ४२ ॥
 कट्वाद्यालोडकास्त्वेवं चतुष्का दश पञ्च च ।
 स्वादुमेकं विहायान्ये युक्ताः पञ्च स्युरोलकः ॥ ४३ ॥
 आलुकस्तु विहायाम्लं पटुं हित्वा पराञ्जनः ।
 ओलकः कटुकं हित्वा विना तिक्तेन चोलकः ॥ ४४ ॥
 समोलकः कषायेण षडेवं पञ्चका रसाः ।
 षट्कस्त्वेकः षड्रसः स्यात् त्रिषष्टिः स्युस्ततो रसाः ॥ ४५ ॥
 मधुराम्लादिसंज्ञाश्च शाडवादौ समुन्नयेत् ।
 न स्यात् पूर्वसस्याख्या परावररसाह्वयात् ॥ ४६ ॥

सुरभ्यसुरभी गन्धौ विभिन्नौ तौ च योगतः ।
 बहुधा तत्र सुरभिः कटुस्तिक्तः कषायकः ॥ ४७ ॥
 समष्टिरप्यतोऽन्यो यो गन्धोऽसुरभिरित्यसौ ।
 मल्लिकायां स्थितो गन्धो मङ्गल्या मङ्गलश्च सः ॥ ४८ ॥
 जात्यां सौमनसो नागकेशरे गन्धसारणः ।
 चम्पके सुरभिः पद्मे वासनः कुटजे घुणः ॥ ४९ ॥
 कस्तूरिकायामामोदः कुङ्कुमे पलशीनकः ।
 पारिहाव्यो मरुवके पाटले तृणशोणकः ॥ ५० ॥
 चन्दने चन्द्रिकः साले शोणो गन्धिक उत्पले ।
 केतके शोणितं सर्जधूपे सरलशोणिकः ॥ ५१ ॥
 वकुले स्यात् परिमलो बलनोऽगरुधूपके ।
 सहकारे सरलिको गुग्गुलौ त्ववलोलुकः ॥ ५२ ॥
 कुन्दोपरालो मदने दुलो जम्बीर(के स्थितः) ।
 मल्ल्यां (स्थितस्तु) खवुकः कर्पूरे मुखवासनः ॥ ५३ ॥
 आज्ये समशनोऽशोके सुरवस्तिलके कुलः ।
 गात्रे गन्धो गन्धके तु गन्धिकः पित्तले लसः ॥ ५४ ॥
 गुदवायौ तु दुर्गन्धः किट्टे कोलः कफे घनः ।
 मस्त्यत्वच्यामिषो निम्बे तिक्तको गोमुखे सणिः ॥ ५५ ॥
 उद्दंशे देहलिर्गोविण्मूत्रयोर्मुकमुर्मुरौ ।
 शुक्ले मांसिर्मदे रूक्षो मूत्रिते त्वन्धमेहलः ॥ ५६ ॥
 स्नेहदोषे मेचटिको गूषे स्थालिकवैणिकौ ।
 चिन्नो यकृति पूये तु पूतिर्मूत्रे तु मेहलः ॥ ५७ ॥
 दुष्टव्रणे तु कथितो रुधिरं त्वाममांसकः ।
 गन्धशब्दास्त्वमी योज्याः साम्याद् द्रव्यान्तरेष्वपि ॥ ५८ ॥
 एते सत्यादयः शब्दाः शब्दस्पर्शादिगोचराः ।
 उक्तलिङ्गा गुणार्थास्ते सर्वेऽपि गुणिनि त्रिषु ॥ ५९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

सामान्यकाण्डे गुणाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवह्निङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

गुणयुक्तं क्रियायुक्तं द्रव्ययुक्तं च वक्ति यः ।
 स शब्दो वाच्यवह्निङ्गो बालो वक्ता धनी यथा ॥ १ ॥
 बालो हिम्भोऽर्भकः शावः कुमारो दारकः शिशुः ।
 अप्युत्तानशयो वत्सः स्तनपस्तु स्तनन्धयः ॥ २ ॥
 वटुर्माणवकोऽथ स्याद् वयस्थस्तरुणो युवा ।
 जीनो जीर्णो वृद्धवयाः प्रवयाः स्थविरो जरन् ॥ ३ ॥
 वर्षीयान् दशमी व्यायान् कनिष्ठोऽवरजोऽनुजः ।
 जघन्यजो बवीयांश्च पूर्वजे त्वग्निजोऽग्रजः ॥ ४ ॥
 पितुर्विभक्तः संसृष्टी भ्रात्रार्थेनैकतां गतः ।
 पृथिः किरातोऽल्पतनुर्दुर्बलस्तु कृशस्तनुः ॥ ५ ॥
 पीनस्तु पीवरः पीवा प्रबलो मांसलोऽसलः ।
 सिंहसंहननः स्वङ्गस्तुण्डिरुन्नतनाभिकः ॥ ६ ॥
 पिचण्डिलस्तूद्रिलस्तुन्दिलस्तुन्दितुन्दिकौ ।
 वलिनो वलिभो बिभ्रद्वली राजीस्तु राजिलः ॥ ७ ॥
 एवं सिरालमणिलौ प्रलम्बाण्डस्तु मुष्करः ।
 केशवः केशिकः केशी रोमशो लोमशः समौ ॥ ८ ॥
 शमश्रुलो जटिलश्चैवं दन्तुरः स्यादुदग्रदन् ।
 किरिभस्तद्विपर्यासे मिर्मिरः स्तब्धलोचनः ॥ ९ ॥
 आसीन उपविष्टः स्यादूर्ध्वस्तूर्ध्वजानुकः ।
 संजुः संहतजानुः स्यात् प्रजुः प्रगतजानुकः ॥ १० ॥
 विकलाङ्गस्तु पोगण्डो गडुले न्युब्जकुब्जकौ ।
 खुरणाः स्यात् खुरणसो नःक्षुद्रः क्षुद्रनासिकः ॥ ११ ॥
 खरणाः स्यात् खरणसो विप्रो विगतनासिकः ।
 नतनासेऽवटीटः स्यादवनाटोऽप्यवभटः ॥ १२ ॥
 केकरो वलिरोऽनेडमूकोऽन्धः काण एकहक् ।
 एडस्तु वधिरः कण्व एडमूकस्त्ववाक्कुतिः ॥ १३ ॥
 अनेडमूकस्तु जडो जलो मूकः कलोऽप्यवाक् ।
 पङ्गुः श्रोणे खञ्जकोलौ खोडेऽथ कुकरे कुणिः ॥ १४ ॥

शिपिविष्टस्तु दुश्कर्मा दुर्बलश्च द्विनम्रकः ।
 क्षपणश्रमणौ नम्रो नम्राटश्च दिगम्बरः ॥ १५ ॥
 आजीवो जीवको जैनो निर्ग्रन्थो मलवार्यपि ।
 हृदयालुः सुहृदयो महेच्छस्तु महाशयः ॥ १६ ॥
 प्रौढः प्रगल्भः प्रतिभायुक्तोऽन्यस्त्वपगल्भकः ।
 धृष्टो धृष्णुर्विजातश्च शालीनस्तु विपर्यये ॥ १७ ॥
 अधीरे कातरत्रस्तुभीरुभीरुकभीलुकाः ।
 दरिते भीतचकितत्रस्ताः स्निग्धस्तु वत्सलः ॥ १८ ॥
 प्रवीणोऽभिजनोऽभिज्ञो विज्ञो वैज्ञानिकः कृती ।
 कृतकृत्यः कृतमुखो निष्णातो दक्षशिक्षितौ ॥ १९ ॥
 अग्राम्ये सरलोदारविदग्धच्छेकदक्षिणाः ।
 गविते स्तब्ध उद्रीवो बाहो धीरः स इत्यपि ॥ २० ॥
 मूर्खे त्वनेडो देवानांप्रियो यो नामवर्जितः ।
 अपि वैधेयमूढाज्ञा मातृशिष्टयथोद्भूतौ ॥ २१ ॥
 नीचे तु हीनापशदपामरेतरबबेराः ।
 नैकृतः स्यान्नैकृतिकः शठः कौन्तृतिकोऽनृजुः ॥ २२ ॥
 कुहकः स्यात् कापटिको दाण्डाजिनिकजालिकौ ।
 दौण्डुको दण्डुकश्चाथ कोलाकोऽर्यरतः सदा ॥ २३ ॥
 क्रूरो नृशंसोऽप्यदये धूर्ते व्यसकवञ्चकौ ।
 कौकृतो मायिको मायी मायावी प्रातिहारिकः ॥ २४ ॥
 ना दुर्जनः खले कर्णेजपः पिशुनसूचकौ ।
 कद्वदः कुत्सितोऽत्यर्थं परिभोक्ता गुरुस्वभृत् ॥ २५ ॥
 नीलीरागः स्थिरप्रेमा हरिद्रारागकः पुनः ।
 अस्थिरप्रेमिण गोष्ठश्वः पुनः स्थाने स्थितो द्विषन् ॥ २६ ॥
 अन्वेष्टा स्यादनुपदी चिद्रूपस्तु सुमानसः ।
 स्वच्छन्दोऽपावृतः स्वैरी स्वतन्त्रो निरवग्रहः ॥ २७ ॥
 परच्छन्दः पराधीनः परवान् परतन्त्रकः ।
 निम्नः प्रसव्य आयत्तो विधेयो गृह्यको वशः ॥ २८ ॥
 अहंयुः स्यादहङ्कारी शुभंयुस्तु शुभान्वितः ।
 सूक्ष्मदर्शी कुशाग्रीयधीर्विलक्षः सविस्मयः ॥ २९ ॥
 यद्भविष्यो दैवपरो यद्वदः स्यादनुत्तरः ।
 परीक्षकः कारणिक उद्युक्ते प्रसितोत्सुकौ ॥ ३० ॥

अन्तर्वाणिः शास्त्रवित् स्यादविनीतः समुद्धतः ।
 प्रत्युत्पन्नमतिस्तु स्यात् तत्कालोत्पन्नधीर्नरः ॥ ३१ ॥
 प्रणेत्यः प्रश्रितो वश्यो विधेयो निभृतो यतः ।
 क्रोधनः कोपनोऽमर्षी चण्डस्तु भृशकोपनः ॥ ३२ ॥
 सहिष्णुः सहनः सोढा तितिक्षुः क्षमिता क्षमी ।
 हर्षमाणो विकुर्वाणः प्रमना मुदितः समुत् ॥ ३३ ॥
 दुर्मना विमना अन्तर्मनाः स्यादुत्क उन्मनाः ।
 दोषदर्शी पुरोभागी कमनः कामनोऽनुकः ॥ ३४ ॥
 कामुकः कमिताऽभीकः कम्पः कमयिताऽभिकः ।
 तृष्णक् तु गर्धनो गृध्नुर्लिप्सुर्लब्धोऽभिलाषुकः ॥ ३५ ॥
 लोलुपे लोलुभो लोलो लम्पटो लालसोऽपि च ।
 लुसुङ्गः क्षुधितः श्रान्तो जिघत्सुरशनायितः ॥ ३६ ॥
 पिपासितस्तु तृषितः पिपासुस्तृषितः सत् ॥
 मत्ते शौण्डोत्कटक्षीबा श्राद्धः श्रद्धालुरास्तिकः ॥ ३७ ॥
 नास्तिकस्तद्विपर्यासे गृह्यालुर्ग्रहीतरि ।
 संशयालुस्तु सन्देग्धा पतयालुस्तु पातुकः ॥ ३८ ॥
 दयालुः स्यात् कारुणिकोऽनुकम्प्यः कारुणः समौ ।
 स्वप्नक् शयालुर्निद्रालुर्निद्राणः शयितः समः ॥ ३९ ॥
 लज्जाशीलोऽपत्रपिष्णुर्वतिष्णुर्वर्तनः समौ ।
 निराकरिष्णुः क्षिप्तुः स्याद् वर्धिष्णुर्वर्धनः समौ ॥ ४० ॥
 उन्मदिष्णुस्तु सोन्मादोऽलङ्कारिष्णुस्तु मण्डनः ।
 भूष्णुर्भविष्णुर्भविता प्रजनिष्णुस्तु भावुकः ॥ ४१ ॥
 उत्पतिष्णुस्तुत्पतिता रोचिष्णू रोचनः समौ ।
 स्यास्तुस्तु स्यायुकः स्थायी शरारुर्हिंस्रघातुकौ ॥ ४२ ॥
 वेदिता विदुरो विन्दुः सान्द्रः स्निग्धस्तु मेदुरः ।
 आशंसुराशंसितरि वन्दारुर्भवादकः ॥ ४३ ॥
 जागरूको जागरिता ऋक्षवाक् तु प्रियंवदः ।
 शङ्को मधुरवाक् चाथ रूक्षो लूक्षो विपर्यये ॥ ४४ ॥
 वदो वदावदो वक्ता वागीशो वाक्पतिः समौ ।
 वाचोयुक्तिपटुर्वाग्मी वावदूकश्च दक्षवाक् ॥ ४५ ॥
 जल्पपाकस्त्वपि वाचालो वाचाटो बहुगर्हवाक् ।
 मुखरो दुर्मुखोऽबद्धमुखो मातृमुखोऽपि च ॥ ४६ ॥

कद्वदो गर्हवादी स्याल्लोहलोऽस्फुटभाषणः ।
 अधरो दीनवादी स्यात् सम्मुखः प्रतिभातवाक् ॥ ४७ ॥
 नालीकरस्तु नालीकवाक् स्वनोऽशोभनस्वरः ।
 कुवदे कुचरः शब्दकारे रवणशब्दनौ ॥ ४८ ॥
 व्युत्पन्नः प्रहतः क्षुण्णो वचनेस्थित आश्रवः ।
 पराजः परपिण्डादः परजातपरैधितौ ॥ ४९ ॥
 सर्वाङ्गीनः सर्वभक्ष आमिषादी तु शौलिकः ।
 आत्मम्भरिः कुक्षिम्भरिर्भक्षको घस्मरोऽद्भरः ॥ ५० ॥
 आद्यूनः स्यादौदरिको विमुक्तो विजिगीषया ।
 ह्रीणो ह्रीतो लज्जितः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ५१ ॥
 अद्भुते धीरविस्त्रब्धावुत्तालः कर्मणि द्रुतः ।
 कुटुम्बव्यापृते तु द्वावभ्यागारिक उत्थितः ॥ ५२ ॥
 दीर्घदृष्टिस्तु यो दूरादर्थानर्थौ निरीक्षते ।
 आमुष्यायण उत्पन्नः प्रख्यातकुलतः पितुः ॥ ५३ ॥
 वैरङ्गिको विरागार्ह उत्पश्यः पुनरुन्मुखः ।
 चतुरः पेशलो दक्षः सूत्थानः पटुरुष्णकः ॥ ५४ ॥
 मन्दस्तुन्दपरिमृज आलस्यः शीतकोऽलसः ।
 क्षेमङ्करोऽरिष्टतातिः शिवतातिः शिवङ्करः ॥ ५५ ॥
 लक्ष्मीवान् लक्ष्मणः श्रीलो महामात्रोऽधिकर्षिकः ।
 उदारोदीर्घधन्यास्तु महात्मा सुकुतीति च ॥ ५६ ॥
 समृद्धः स्यादुपचितो धनवानस्तिमान् समौ ।
 आढ्यस्त्विम्यो धनी नेता त्वीश्वरो नायकः प्रभुः ॥ ५७ ॥
 अधिभूरधिपोऽधीश ईशिताऽधिपतिः पतिः ।
 ईशः परिवृढः स्वामी स्थूललक्षो बहुव्यये ॥ ५८ ॥
 कदर्ये कृपणक्षुद्रकिम्पचानमितम्पचाः ।
 आशयश्चाप्यदाता च दरिद्रे स्यादकिञ्चनः ॥ ५९ ॥
 अपि दुस्स्थकूरदीननीचदुर्गतदुर्विधाः ।
 मार्गणः स्याद् याचनको याचकोऽर्थी वनीपकः ॥ ६० ॥
 आर्यः कौलेयको जात्यः कुलीनः कुलजोऽभिजः ।
 जगत्त्रसचरप्राणमिषदिङ्गश्च जङ्गमम् ॥ ६१ ॥
 स्थावरं तस्थिवच्चान्यदुभयं तु चराचरम् ।
 वा ह्री प्रधानं प्रमुखप्रबर्हप्रवरोत्तमाः ॥ ६२ ॥

मुख्यवर्गवरेण्याश्च प्रवेकोऽनपराध्यवत् ।
 श्रेष्ठः प्राग्रहरं प्राग्रमग्रमग्रीयमप्रियम् ॥ ६३ ॥
 परार्थ्यं ग्रामणीः स्पर्ध्यं जात्यं च वरमग्रणीः ।
 उपाग्रस्तु गुणः पुंसि ह्रीवे स्यादुपसर्जनम् ॥ ६४ ॥
 तत्तु स्यादासेचनकं न तृप्तिर्यस्य दर्शनात् ।
 पवित्रं प्रयतं पूतं मेध्यं शुद्धं शुचीति च ॥ ६५ ॥
 निर्णिक्तं शोधितं मृष्टं निश्शोध्यमनवस्करम् ।
 विमले वीदध्रं मलिने द्वौ कश्चरमलीमसौ ॥ ६६ ॥
 आत्तगन्धोऽभिभूतः स्याद् बद्धे कीलितसंयतौ ।
 आक्षिप्तो हतकः क्षिप्तो विह्वलो विह्वलः समौ ॥ ६७ ॥
 विहस्तो व्याकुलो व्यग्रश्चले सङ्कुसुकोऽस्थिरः ।
 व्यसनार्तस्तूपरक्त आततायी बधोद्यतः ॥ ६८ ॥
 शत्रूणां तापयितरि द्विषन्तपपरन्तपौ ।
 द्वेष्यस्त्वक्षिगतोऽनिष्टो दुर्भगोऽपि च विप्रिये ॥ ६९ ॥
 चक्षुष्यः सुभगः कान्तो दयितो वल्लभः प्रियः ।
 गेहेनर्दी गृहेशूरः पिण्डीशूरो गृहे प्रभुः ॥ ७० ॥
 बध्यो विध्यो विषेण स्यान्मुसल्यो मुसलेन च ।
 निष्कासितोऽपकृष्टः स्यादपध्वस्तस्तु धिक्कृतः ॥ ७१ ॥
 कर्मक्षमोऽलङ्कर्मिणः कर्मशूरस्तु कर्मठः ।
 कर्मस्तु कर्मशीलः स्याद्दीर्घसूत्रश्चिरक्रियः ॥ ७२ ॥
 कर्मण्यकृत् कर्मकरः कर्मकारस्तु तत्क्रियः ।
 निर्वार्यः कार्यकृद्यः स्याद्युक्तः सन् सत्त्वसम्पदा ॥ ७३ ॥
 क्रियावान् कर्मवान् कर्मी कुण्ठो मन्दः क्रियासु यः ।
 स आयश्शूलिको यः स्यादन्वेष्टा तीक्ष्णसाधनैः ॥ ७४ ॥
 गर्होऽपकृष्टचेलावरेफयाप्याधभावमाः ।
 प्रतिकृष्टावद्यत्वेनिकृष्टाणककुत्सिताः ॥ ७५ ॥
 जघन्यं तु कुपूयं स्यादसारं लघु फल्गु च ।
 पुंस्यादिराद्यपौरस्त्यप्रथमप्रमुखादिमाः ॥ ७६ ॥
 अग्रथं त्वग्रिममग्रस्थं मध्यमीयं तु मध्यमम् ।
 अन्त्ये जघन्यपाश्चात्यचरमान्तिमपश्चिमाः ॥ ७७ ॥
 करम्बः कम्बरो मिश्रः सम्पृक्तः खचितः समाः ।
 चलाचलं तु प्रचलं चपलं चञ्चलं चलम् ॥ ७८ ॥

चिकुरं चटुलं कम्प्रं पारिप्लवपरिप्लवौ ।
 स्थास्नैकरूपं कूटस्थं स्थेयान् स्थेष्टोऽप्यतिस्थिरे ॥ ७६ ॥
 विशालमुरु विस्तीर्णं विपुलं पृथुलं पृथु ।
 स्फारं भद्रं बृहद् व्यूढमुदूढं बहुलं बहु ॥ ८० ॥
 प्रांशुश्चमुन्नतं तुङ्गमुदग्रं तूच्छिताग्रकम् ।
 न्यङ्नीचह्रस्वखर्वास्तु वामने दीर्घमायते ॥ ८१ ॥
 विशालं विकरालं स्याद् विकटं च विशङ्कटम् ।
 वर्तुलं निस्तलं वृत्तं सुवृत्तं परिमण्डलम् ॥ ८२ ॥
 चिपिटः पिच्छितो व्यूढे स्थपुटं विषमोन्नतम् ।
 आनतं तु नतं नम्रं बन्धुरं तून्नतानतम् ॥ ८३ ॥
 क्षीणं क्षामं विलिष्टं स्यात् स्थूलं तु वहलं दृढम् ।
 प्रभूतं प्रचुरं प्राज्यं बहलं बहुलं बहु ॥ ८४ ॥
 अदभ्रमधिकं भूरि भूयिष्ठं पुरुहं पुरु ।
 समग्रं सकलं सर्वं समस्तं निखिलाखिले ॥ ८५ ॥
 अखण्डकृत्स्ननिशेषपूर्णविश्वसमानि च ।
 खण्डनेमोनविकलाः पूर्णे भरितपूरितौ ॥ ८६ ॥
 सम्पूर्णश्चाथ वशिकं शून्यं तुच्छं च रिक्तकम् ।
 पुराणे प्राक्तनप्रत्नपुरातनचिरन्तनाः ॥ ८७ ॥
 नूतने त्वभिनवो नव्यो नवीनो नूतनो नवः ।
 शाश्वते त्वमृतो नित्यः सनातनसदातनौ ॥ ८८ ॥
 सद्यस्तने तु साद्यस्कप्रत्यग्राभ्यग्रशारदाः ।
 ह्यस्तनश्चस्तनाद्याः स्युर्ह्यआदिस्थेषु वस्तुषु ॥ ८९ ॥
 कालवाच्यव्ययेभ्यः स्यादन्येभ्योऽपि तथा तनः ।
 न्यक् स्यादधोमुखं न्युवजमुदुब्जोत्तानमुन्मुखे ॥ ९० ॥
 उदक् प्रत्यक् परागर्वाक् प्राक् च तिर्यग्वागपाक् ।
 विष्वक् चैवमुदीचीनप्रमुखाः स्युर्यथाक्रमम् ॥ ९१ ॥
 दिग्देशकालवचनमुदगादिकमव्ययम् ।
 दिग्देशकालसम्बन्धिपदार्थेष्वभिधेयवत् ॥ ९२ ॥
 यः सहाञ्चति सप्रथङ् स विष्वद्यङ् विष्वगञ्चति ।
 देवानञ्चति देवद्रथङ् सधीचीनादि चोन्नयेत् ॥ ९३ ॥
 अविलम्बितमुच्चण्डं संशितं तु सुतेजितम् ।
 उत्पिञ्जलं समुत्पिञ्जमिति द्वे भृशमाकुले ॥ ९४ ॥

अनादृते त्ववज्ञातमवतीर्णापहस्तितम् ।
 चलितप्रेङ्खिताधूतवेङ्खिताकम्पिता धृते ॥ ९५ ॥
 रुचिते हृद्यलषितवाञ्छितेष्टेडितेहिताः ।
 संवीतं स्याद् बलयितं वेष्टितं रुढमावृतम् ॥ ९६ ॥
 नुन्नास्तनुत्तप्रहितक्षिप्रविद्धाः स्युरीरिते ।
 बद्धे सन्नाहितं नद्धं मुद्रितं सन्दितां सितम् ॥ ९७ ॥
 सन्तापितं धूपायितं दूनं तप्तञ्च धूपिते ।
 मार्गिते मृगितान्विष्टावन्वेषितगवेषितौ ॥ ९८ ॥
 लब्धाप्रासादितप्राप्तभूतविन्नास्तु भाविते ।
 प्रयत्ने मुदितप्रीतहृष्टाः सुहितवृत्तवत् ॥ ९९ ॥
 आबर्हिते तूद्वृहितोन्मूलितोत्पाटितोदधृताः ।
 उल्लगोपायितत्रातत्राणगुप्तास्तु रक्षिते ॥ १०० ॥
 मनिते विदितज्ञातौ बुधिते बोधबुद्धवत् ।
 त्यक्ते तु विधुतोत्सृष्टहीनधूतसमुष्मिताः ॥ १०१ ॥
 कृत्ते लूनच्छिन्नदातवृक्कणच्छातच्छितार्दिताः ।
 स्रस्ते भ्रष्टध्वस्तपन्नगलितस्कन्नविच्युताः ॥ १०२ ॥
 प्रेङ्खोलितं तरलितं लुलितं प्रेङ्खितं च तत् ।
 भजमाने प्राप्तयुक्तन्याय्यान्यौपयिकोचिते ॥ १०३ ॥
 न्यस्ते त्वारोपितोऽध्यस्तो निहितोऽपहितो हितः ।
 उपसन्नं तूपनतमुपप्राप्तमुपस्थितम् ॥ १०४ ॥
 शुश्रूषितं परिवसितमुपासितञ्च वरिवसितञ्च समम् ।
 अपचायितं नमसितं नमस्यितं सममपचितञ्च ॥ १०५ ॥
 पणितपणायितपनिताः पनायितस्तुतनुतेडिताः शस्ते ।
 वर्णितगीर्णौ च तथा सङ्गीर्णौपश्रुतौ प्रतिज्ञाते ॥ १०६ ॥
 उन्नोत्ततिमितक्लिन्नस्नपितार्द्राणि सार्द्रवत् ।
 स्युः प्रत्यवसिते प्सातजग्धान्नाशितखादिताः ॥ १०७ ॥
 प्रस्तग्लस्ताभ्यवहृतभुक्तभक्षितजक्षिताः ।
 परिक्षिप्तं तु निवृतं निदिग्धोपचितौ समौ ॥ १०८ ॥
 प्राप्ते प्रणिहितापन्नौ विस्मृतोऽन्तर्गतेऽस्मृते ।
 सङ्गूढं स्यात् सङ्कलितं स्यन्नं रीणं स्तुतं स्तुतम् ॥ १०९ ॥
 अवरीणो धिक्कृतः स्याद् हवे प्रथितमुद्रितौ ।
 सङ्कीर्णे सङ्कुलाकीर्णौ विस्तृते विस्तृतं ततम् ॥ ११० ॥

सिद्धे निर्वृत्तनिष्पन्नौ भिन्ने भेदितदारितौ ।
 वेधितच्छिद्रतौ विद्धे तष्टत्वष्टौ तनूकृते ॥ १११ ॥
 उतं स्यूतमुतं तन्तुसन्तते प्रार्थितेऽर्दितम् ।
 उद्धृतं समुदस्तं स्यान्मर्मस्पृक् स्यादरुनुदम् ॥ ११२ ॥
 गुण्डितं रुषिते क्लिष्टे क्लेशितं पूजितेऽञ्जितम् ।
 ज्ञप्तं तु ज्ञापिते हन्नं गूने मीढं तु मूत्रिते ॥ ११३ ॥
 पुषिते पुष्टमुद्गूणोद्यत(यत्ताः प्रयत्नवान्) ।
 दमिते दान्तं शमिते शान्तमुद्धान्तमुद्गते ॥ ११४ ॥
 पन्नं प्रपतिते सन्नं लिष्टे तुन्नं तु पीडिते ।
 निष्पके कथितं सोढे क्षान्तं निचितमाचिते ॥ ११५ ॥
 मुषिते लुण्ठितं यस्ते निसृष्टं वृद्धमेधिते ।
 काचितं शिक्थिते दिश्यं दिग्भवेऽध्रभवेऽध्रिथम् ॥ ११६ ॥
 यज्ञियं यज्ञकर्माहं चक्षुष्यं चक्षुषे हितम् ।
 तत्तद्वात्रभवे दन्त्वं हस्त्यमोष्ठ्यमितीदृशाः ॥ ११७ ॥
 पुंसः पौंसं स्त्रियाः स्त्रौणमग्नेराग्नेयमित्यपि ।
 दण्डवान् दण्डिको दण्डीत्येवं नेयमदन्ततः ॥ ११८ ॥
 ब्रीहिणो ब्रीहिमन्तः स्युर्यवमन्तो यवान्विताः ।
 निर्जने स्थान एकान्तं विविक्तं विजनं तथा ॥ ११९ ॥
 छन्नं गुह्यं निश्शलाकं रहः क्लीबोऽथवाऽव्ययम् ।
 गुह्यं रहस्यमित्येतावप्रकाशयेऽपि वस्तुनि ॥ १२० ॥
 समं समानं सविधं सदृशं सदृशं सदृक् ।
 तुल्यं सवर्णं शब्देभ्यः परे स्युः प्रतिमा प्रभा ॥ १२१ ॥
 आभा प्रख्योपमाभिरूपा प्रकारः सन्निभं निभम् ।
 निकाशाद्याश्च साम्यार्थाः समे स्युः शब्दतः पराः ॥ १२२ ॥
 परस्परं स्यादन्योन्यमितरेतरमित्यपि ।
 वक्रं वृजिनमाविद्धमूर्मिमत् कुञ्चितं नतम् ॥ १२३ ॥
 अरालं कुटिलं भुग्नमवक्रे प्रगुणोऽप्यजुः ।
 सत्वरं त्वरितं तूर्णमरं क्षिप्रं लघु द्रुतम् ॥ १२४ ॥
 अजिरं चपलं शीघ्रमविलम्बितमाशु च ।
 विरलं तनु विश्लिष्टमघनं तलिनं तथा ॥ १२५ ॥

निबिडं निबिरीसं स्याद् घनं सान्द्रं निरन्तरम् ।
 विकटं तु विरूपं स्यात् सम्बाधः सङ्कटः समौ ॥ १२६ ॥
 प्रतीपं प्रतिकूलं स्यादनुकूलं विपर्यये ।
 अनुलोममनूचीनं प्रतिलोमं विपर्यये ॥ १२७ ॥
 अव्ययीभावोऽनुपदमन्वगन्वक्षमित्यपि ।
 एकसर्गोऽनन्यवृत्तिरेकाग्रिकायनैकगम् ॥ १२८ ॥
 अयेकतान एकान्तोऽप्येकायनगतोऽपि च ।
 साधारणं तु सामान्यं मोघं व्यर्थमपार्थकम् ॥ १२९ ॥
 नित्यानवरताजस्रसतताश्रान्तसन्तताः ।
 अनारतं चाविरतमसक्तं चानिशं नपुम् ॥ १३० ॥
 अतिमात्रेऽतिमर्याद मतिवेलातिमानकम् ।
 भृशमत्यन्तमत्यर्थमधिकोद्गाढनिर्भरम् ॥ १३१ ॥
 तीव्रं तु गाढमेकान्तं नितान्तं दृढबाढवत् ।
 वशोऽनर्गलमुद्दाममुच्छृङ्खलमयन्त्रितम् ॥ १३२ ॥
 परोक्षेऽतीन्द्रियोऽध्यक्षप्रत्यक्षौ तु समक्षवत् ।
 सकाशं स्यात् सन्निहिते समन्तं तु समन्तिकम् ॥ १३३ ॥
 प्रकाशं प्रकटं स्पष्टमुल्बणं विशदं स्फुटम् ।
 सुन्दरं रुचिरं रुच्यं मनोज्ञं मञ्जु मञ्जुलम् ॥ १३४ ॥
 शोभनं सुषमं चारु हृद्यं चौक्षं मनोहरम् ।
 न्युङ्गं हारि प्रियं साधु लडहं च मनोरमम् ॥ १३५ ॥
 अल्पं सूक्ष्ममणु स्तोकं दहं दहरमर्हकम् ।
 किञ्चिन्मात्रं मितं दध्रं श्लक्ष्णं तनु च पेलवम् ॥ १३६ ॥
 अतिरिक्तोऽतिशयितो दृढः समधिकोऽधिकम् ।
 चतुरं पेशलं दक्षं कटु तूल्बणमुत्कटम् ॥ १३७ ॥
 विशेषणं क्रियाया स्युः समाद्याः क्ली च तद्यथा ।
 पुत्रं धत्ते सममिति नित्याद्यास्तु गुणस्य च ॥ १३८ ॥
 नित्यं धत्ते सितो नित्यमिति द्रव्ये पुनस्त्रिषु ।
 उभयेऽपि यथा धत्ते समो नित्योऽर्थवानिति ॥ १३९ ॥

प्रथमं चरमं पूर्वमित्याद्यप्येवमुन्नयेत् ।
समीपनिकटाभ्यग्राभ्यर्णाभ्याशान्तिमा इव ॥ १४० ॥

सदेशसविधासन्नसन्निकृष्टसवेशवत् ।
उपकण्ठसमर्यादसवेधानि सनीडकम् ॥ १४१ ॥

उपान्ते विप्रकृष्टे तु दूरं व्यवहितं परम् ।
भासुरं भविकं भव्यं कल्याणं श्रवणीयसम् ॥ १४२ ॥

श्वश्रेयसं शिवं भद्रं कुशलं सूनृतं शुभम् ।
श्रेयश्चैते समीपाद्या धर्मे क्ली तद्वति त्रिषु ॥ १४३ ॥

सुखं दुःखं मलं छिद्रं किलासं सिद्धमर्मरौ ।
रभसः पलितं श्वित्रमेतेऽपि त्रिषु धर्मिणि ॥ १४४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां सामान्यकाण्डे

अर्थवर्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

पञ्चमः सामान्यकाण्डः समाप्तः ॥ ५ ॥

६. अथ व्यत्तरकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अथ काण्डैरनेकार्थाः प्रोच्यन्तेऽत्र परैस्त्रिभिः ।
द्वयक्षरास्त्रयक्षराः शेषा इति काण्डेषु ते क्रमात् ॥ १ ॥
अकारादिहकारान्तं नाम्नामाद्यक्षरक्रमात् ।
संग्रहो द्वयक्षरादीनां प्रोक्तान् प्रायो विना पुरा ॥ २ ॥
अर्थः स्याद्विषये मोक्षे शब्दवाच्ये प्रयोजने ।
व्यवहारे धने शास्त्रे वस्तुहेतुनिवृत्तिषु ॥ ३ ॥
अर्कोऽर्कपर्णे स्फटिके ज्येष्ठभ्रातरि भास्वति ।
अवयः शैलमेषार्का अद्रयोऽर्कगिरिद्रुमाः ॥ ४ ॥
अट्टावतिशयक्षौमावधौ पूजाप्रतिक्रयौ ।
अर्योः शास्त्रस्वामिवैश्याः सर्पे वृत्रासुरेऽप्यहिः ॥ ५ ॥
अंशुः सूत्रादिसूक्ष्मांशेऽप्यङ्कुश्रिहेऽन्तिकोरसोः ।
आत्मा जीवे धृतौ देहे स्वभावे परमात्मनि ॥ ६ ॥
यत्नेऽर्केऽग्नौ मतौ वातेऽप्याखू सूकरमूषिकौ ।
आधिस्तु व्यसने चित्तदुःखेऽधिष्ठानबन्धयोः ॥ ७ ॥
इन्द्रो विषात्मशक्रार्केष्वीश्वरे नामतः परः ।
इष्वोऽभिलाष आचार्य ऊमो व्योम्नि पुरेऽपि च ॥ ८ ॥
ग्रीष्मोष्णमाष्पा ऊष्माण ऊर्जावुत्साहकार्तिकौ ।
ऋषिस्तु वेदे भृगवादौ ज्ञानवृद्धे दिगम्बरे ॥ ९ ॥
ओषः परम्परायां स्याज्जलस्रोतसि सञ्चये ।
करो घनोपले हस्ते प्रत्याये रश्मिशुण्डयोः ॥ १० ॥
दातुं भूषितकन्यायां कूपो गर्ते प्रहावपि ।
क्षणो व्यापारवैकल्ये कालभेदाल्पकालयोः ॥ ११ ॥
उत्सवे परतन्त्रत्वे मध्यावसरपर्वसु ।
कन्तू कुसूलकन्दपौ प्राज्ञकाव्यकृतौ कवी ॥ १२ ॥

कण्ठो गलेऽन्तिके शब्दे कपयोऽर्केभवानराः ।
 गुडभस्मरसाः क्षाराः क्षोदो रजसि पेषणे ॥ ११ ॥
 ऋतू अश्वरसङ्कल्पौ कल्पान्तेऽपचये क्षयः ।
 कुक्षौ वासे च कच्छस्तु पार्श्वे गुह्याम्बरे तटे ॥ १४ ॥
 कारुस्तु विश्वकर्मापि धान्यांशे शीकरे कणः ।
 कालो दिष्टे यमे काचो मृद्भेदे शिख्यद्वजोः ॥ १५ ॥
 उत्पातेऽङ्के ध्वजे केतुः क्लेदौषधिशशाङ्कयोः ।
 कोणाः शब्दाश्रितगुडा कल्पो न्याये सुरद्रुमे ॥ १६ ॥
 विकल्पेऽपि च कक्षस्तु गुल्मे स्पर्धापदे तृणे ।
 काम्यस्पृहास्मराः कामाः कलहेऽन्त्ययुगे कलिः ॥ १७ ॥
 कुम्भो गजशिरोऽन्तेऽपि पद्मकेऽवनिलाः खगाः ।
 खरुः पुंस्मररुद्रेषु गर्मुदुक्मे खगे रवौ ॥ १८ ॥
 गणाः प्रमथसङ्ख्यौघाः ग्रावाणौ पर्वतोपलौ ।
 तन्तुनागाग्रहौ ग्राहौ गुल्मो व्यूढा च बाहिनी ॥ १९ ॥
 गण्डो गर्वेऽप्यथार्कादिसत्त्वादानाग्रहा ग्रहाः ।
 गुणस्त्वावृत्तिशब्दादिज्येन्द्रियामुख्यतन्तुपु ॥ २० ॥
 ग्रन्थो द्रव्यं वचश्शास्त्रं द्वात्रिंशद्वर्णसञ्चयः ।
 गर्भोऽपधरकेऽन्नेऽग्नौ सुते पनसकण्टके ॥ २१ ॥
 कुक्षौ कुक्षिस्थजन्तौ च गन्धो लेशे महीगुणे ।
 घृणिर्ज्वालांशुवीचीषु चरुः स्थाल्यां हविष्यपि ॥ २२ ॥
 चटुश्चाटुश्च राजादिस्तुतौ पशुपिचिण्डके ।
 चक्री विष्णौ कुलालेऽहौ च्युपौ पवनसङ्क्रमौ ॥ २३ ॥
 वशाभिप्राययोश्छन्दो जूर्णी रविहविर्भुजौ ।
 टङ्कौ प्रमाणगर्वौ च डिम्बः ग्रीहखगाण्डयोः ॥ २४ ॥
 तर्काः काङ्क्षावितर्कोहास्त्वष्टा तदिण युशिल्पिनि ।
 मणिदोषे भये त्रासस्तिष्यः पुष्ये कलौ युगे ॥ २५ ॥
 द्वारपाले यमे दण्डी दन्तोऽद्रिकटके रदे ।
 दायो दाने यौतकादिधने वित्ते च पैतृके ॥ २६ ॥
 दवदावौ वनारण्यबह्वयोः खगार्कयोर्द्युवा ।
 धवो वृत्ते नरे पत्यौ ध्वाङ्कः स्याद् वायसे बके ॥ २७ ॥
 धातुर्वातादिशब्दादिगैरिकादित्वगादिषु ।
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु शब्दयोनिस्वभावयोः ॥ २८ ॥

लोहेऽर्थे गैरिकस्वर्णरेतोऽस्थिषु विशेषतः ।
 नरोऽर्जुने मनुष्ये च नाकः स्वर्गान्तरिक्षयोः ॥ २९ ॥
 ग्राहाभ्राहिगजा नागा नाभिः क्षत्रे महानुपे ।
 न्यङ्कुरुकुलेवासी शिष्यो मुनिमृगावपि ॥ ३० ॥
 नाशः पलायने मृत्यौ परिध्वंसेऽप्यदर्शने ।
 नग्रा वेतालिकाद्याश्च पिण्डो वृत्ते तनौ गुडे ॥ ३१ ॥
 पीयुः काल उल्लूके च पीलुः काण्डे गजे द्रुमे ।
 पुष्टाः कृमीक्षुतिलकाः पत्री श्येने शरे खगे ॥ ३२ ॥
 प्रेषणे मर्दने प्रैषः पुङ्खः श्वेतशराङ्गयोः ।
 पवी वातास्त्रधारे च पाकपोतौ शिशावपि ॥ ३३ ॥
 पट्टो नेत्रेऽपि शाणे स्यात् पिण्डिः कल्केऽपि तैलजे ।
 पणो मूल्ये ग्लहे माने कार्पिकव्यवहारयोः ॥ ३४ ॥
 घृते विक्रयशाकादिबद्धमुष्टौ भृतौ धने ।
 पक्षः पार्श्वगरुत्साध्यसहायबलभित्तिषु ॥ ३५ ॥
 पार्श्वद्वारे विरोधेऽर्धमासे चुल्लिबिलेऽन्तिके ।
 प्रायो वयसि बाहुल्ये तुत्यानशनमृत्युषु ॥ ३६ ॥
 पाशो रज्जौ कर्णशब्दात् परः कर्णेऽतिशोभने ।
 क्रमनिम्नमहीभागकपिप्लुतिखगाः प्लवाः ॥ ३७ ॥
 प्राणस्तु प्रणवे जीवे जीविते परमात्मनि ।
 इन्द्रिये वायुभेदे च बलान्तर्यामिणोरपि ॥ ३८ ॥
 श्वेतार्के डाडिमे फालो बन्धाः सीसाधियन्त्रणाः ।
 बलिः पूजोपहारे च दैत्यभेदे करेऽपि च ॥ ३९ ॥
 बाष्पोऽश्रण्यम्बुधूमे च भानवोऽर्कहरांशवः ।
 भृणोऽर्भके स्त्रैणगर्भे गर्भिण्यां श्रोत्रियद्विजे ॥ ४० ॥
 भवो भद्रे हरे प्राप्नौ रुत्तासंसारजन्मसु ।
 भागा भाग्यांशतुर्यांशा भरभारौ गरिम्ण्यपि ॥ ४१ ॥
 भरवीवधयोश्चान्त्यौ भूस्पृशौ वैश्यमानवौ ।
 विश्लेषे दारणे भेदो भेनः सूर्ये निशाकरे ॥ ४२ ॥
 भावो लीलाक्रियाचेष्टाभूत्यभिप्रायजन्तुषु ।
 पदार्थमात्रे सत्तायामात्मयोनिस्वभावयोः ॥ ४३ ॥
 भोगो राज्ये धने सौख्ये पालनाभ्यवहारयोः ।
 फणे देहे च सर्पस्य वेश्यादीनां भृतावपि ॥ ४४ ॥

मन्त्रावृणादिगुह्योक्ती मन्युर्देव्येऽध्वरे क्रुधि ।
 मर्को मनसि वायौ च मोहाः क्रुन्मौर्त्यमूढताः ॥ ४५ ॥
 मार्गो मृगपदे मासि सौम्यर्क्षेऽन्वेषणेऽध्वनि ।
 मूत आतश्चने व्रीहौ व्रीह्यादेर्बन्धने तृणैः ॥ ४६ ॥
 मृगस्तु मृगशीर्षेऽपि मोक्षो मृत्यौ मरुद्गिरौ ।
 यन्ता हस्तिपके सृते यक्षोऽग्न्यात्महरीष्टिषु ॥ ४७ ॥
 ययुरश्वेऽश्वमेधाश्वे योगो विस्त्रब्धघातिनि ।
 प्राप्ती सन्नहनोपायध्यानसङ्गतिर्युक्तिषु ॥ ४८ ॥
 रसो राने विषे वीर्ये तिक्तादौ पारदे द्रवे ।
 रेतस्यास्वादाने हेम्नि निर्यासेऽमृतशब्दयोः ॥ ४९ ॥
 रश्मी ज्वालाप्रग्रहौ च रदो दन्तविलेखयोः ।
 राजा तु क्षत्रिये चन्द्रे लताभेदे नृपे प्रभौ ॥ ५० ॥
 रागोऽनुरागे लाक्षादौ त्विषि राकस्तु पूष्णि च ।
 रङ्गौ तु स्थानरागौ च भूप्रदेशे मृगे लिङ्गः ॥ ५१ ॥
 भोजने लेपने लेपो लोकः स्याद् विष्टपे जने ।
 वंशः पृष्ठास्त्रिंशो गोहोर्ध्वकाष्ठे वेणौ गणे कुले ॥ ५२ ॥
 नासोर्ध्वोऽश्वोर्ध्वे च बहिरुत्तिष्ठ ह्येऽनले ।
 बलो धान्येऽसुरे काके गवां आसेऽनिले वहः ॥ ५३ ॥
 वेणू बेदसहस्रांशू गोष्ठाध्वनिवहा प्रजाः ।
 वालौ पुच्छाश्चपुच्छौ च व्याजश्छद्वापदेशयोः ॥ ५४ ॥
 विधी तु दैवकालौ च वाजी त्वश्वे शरे खगे ।
 विधुर्निशाकरे काले विष्णौ वातेऽग्निरक्षसोः ॥ ५५ ॥
 वृन्दविन्यासयोर्व्यूहो वृषोऽप्यग्रये पुमिन्द्रयोः ।
 वृत्राः शत्रुतमोदैत्या वेगः किम्पाकरंहसोः ॥ ५६ ॥
 वेधसो विष्णुधातृज्ञाः शादः कर्दमशष्पयोः ।
 शम्भुर्धातृहरार्हसु शक्रः कुटजवज्रिणोः ॥ ५७ ॥
 शम्भो वज्रे लोहमयवलये मुसलाग्रये ।
 शरो रसाग्रसारेऽपि शूकोऽनुकोशशुङ्गयोः ॥ ५८ ॥
 शब्दोऽक्षरे यशोगीत्योर्वाक्ये खे श्रवणे ध्वनौ ।
 शङ्कुः पत्रसिराजाले कीलेऽस्त्रे मेढ्रसङ्ख्ययोः ॥ ५९ ॥
 कुक्कुटेऽसौ मयूरैऽशौ वृत्ते केतुग्रहे शिखी ।
 पद्ये यशसि च श्लोकः षण्डौ विट्चरपण्डकौ ॥ ६० ॥

पुत्र्यमसूमा जले चन्द्रे तन्तुमङ्गलरश्मिषु ।
 सम्राजोऽग्नीन्द्रविष्णवर्का यश्च स्यान्मण्डलेश्वरः ॥ ६१ ॥
 राजसूयेन येनेष्टं राज्ञः शास्त्याज्ञया च यः ।
 सर्गास्तु सर्जनाध्यायस्वभावोत्साहनिश्चयाः ॥ ६२ ॥
 सन्धिः श्लेषे सुरुङ्गायां नाट्याङ्गे योनिरन्ध्रयोः ।
 स्वरोऽकाराद्युदात्ताद्योः षड्जादौ प्राणिनां स्वने ॥ ६३ ॥
 सरटौ पक्षिजलदौ स्पशौ तु चरसंयुगौ ।
 स्तम्भौ स्थूणाजडीभावौ यूपांशे कुलिशे स्वरुः ॥ ६४ ॥
 स्कन्दो धाता नदीकूलं साद्यश्चरोहसूतयोः ।
 सालो मत्स्ये वृक्षभेदे प्राकारद्रुममात्रयोः ॥ ६५ ॥
 सिक्थो ना भक्तपूलाके मधूच्छिष्टे कचिन्नपुम् ।
 सुतः पुत्रे सोमरसे सोमौ व्योमनिशाकरौ ॥ ६६ ॥
 स्तूपा वायुरणोच्छ्वाया आज्ञाऽऽह्वानाध्वरा हवाः ।
 हर्तुर्मृत्यौ महारागे हरा रुद्राग्निगर्दभाः ॥ ६७ ॥
 हंसोऽश्वेऽर्के हरे विष्णौ खगे निर्लोभभूभुजि ।
 जीवे श्वेतवृषे भिक्षौ पार्श्विकाप्रसभौ हठौ ॥ ६८ ॥
 वारिपर्णी च हेतुस्तु कारणे कर्मजन्मनोः ।
 हीरः सर्पे हरे सिंहे हेलिरालिङ्गने रवौ ॥ ६९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चा पूजाप्रतिमयोरर्तिश्चापाग्रपीडयोः ।
 अन्दूस्तु शृङ्खला पादभूषाऽप्यष्टी फलास्थयपि ॥ १ ॥
 आस्था गोष्ठ्यां प्रतिज्ञायां तत्परत्वेऽवलम्बने ।
 आशीरुगदंष्ट्रायां शुभवाक्याभिलाषयोः ॥ २ ॥
 आलिः सेतौ सखीपङ्कचोराशा दिगतिवृष्णयोः ।
 आजिः समेऽपि भूभागे गोनाडीभूद्युवाचिवडा ॥ ३ ॥
 इलाऽप्येतासु चार्धे च स्याद्विज्या यागपूजयोः ।
 इष्टिः स्पृहायजनयोरिरा भूवाक्सुराम्बुषु ॥ ४ ॥
 अन्ने च स्यादथो ईतिरुपसर्गप्रवासयोः ।
 ईहा तु लिप्सोद्यमयोरुतिः सूर्यभिरक्षयोः ॥ ५ ॥
 ऊर्णा भ्रूमध्यगावर्ते तन्तौ मेघादिलोमसु ।
 हिंसाविक्षेपयोः कीणिः कीर्तिः पङ्के यशस्यपि ॥ ६ ॥
 कक्ष्या कच्छे वरत्रायां काञ्च्यां गेहप्रकोष्ठके ।
 कर्म हाटकपुण्यां स्यादपि शालापलालयोः ॥ ७ ॥
 कासूर्बुद्धौ कुवाच्यस्त्रे कान्तिः शोभाभिकामयोः ।
 काष्ठोत्कर्षे सीम्नि दिशि क्षोण्यां वासे क्षये क्षितिः ॥ ८ ॥
 क्रिया तु निष्कृतौ शिक्षाचिकित्सोपायकर्मसु ।
 करणारम्भपूजासु चेष्टायां सम्प्रधारणे ॥ ९ ॥
 काले शिल्पे वित्तवृद्धौ चन्द्रांशे कलने कला ।
 महाभूतेष्विन्द्रियेषु ज्ञानावयवयोरपि ॥ १० ॥
 कोटिस्त्वष्ट्रौ प्रकर्षेऽग्रे दशोपायगमे गतिः ।
 गुप्तिः क्षितिव्युदासेऽपि गुञ्जा भाण्डेऽपि वादने ॥ ११ ॥
 घृणा जुगुप्साकृपयोर्घोणाऽपि रथकणिका ।
 चिन्ताचचिक्ययोश्चर्चा चूर्णिग्रन्थे कपर्दके ॥ १२ ॥
 चापाग्रे पिष्टके चूलिशृङ्गिर्द्वान्तिरेतसोः ।
 छाया त्वनालुपे कान्तौ प्रतिबिम्बार्कजाययोः ॥ १३ ॥

जनिर्वरस्त्रीपत्योश्च जामिः स्वसृकुलस्त्रियोः ।
 जातिश्छन्दसि मालत्यां सामान्ये जन्मगोत्रयोः ॥ १४ ॥
 अलक्ष्म्यग्रजयोर्ज्येष्ठा गृहगोत्र्यक्षभेदयोः ।
 जिह्वा वाग्रसनाचिष्णु तन्द्रा निद्राप्रमीलयोः ॥ १५ ॥
 तन्त्रीगुण्डीचीसिरयो रज्ज्वां वीणादिगे गुणे ।
 तन्दूर्द्रोणिप्लवे दर्व्या वाद्ये काले लवे तुटिः ॥ १६ ॥
 तुला साम्ये स्तम्भपीठे लेशशंशययोस्तुटिः ।
 तूली शय्याकूर्चिकयोस्त्रेता त्वमित्रये युगे ॥ १७ ॥
 दरदो भीतिहृद्गूढा दृष्टिर्धीदर्शनादिषु ।
 द्रोणी स्यादम्बुवाहिन्यां द्रवभाण्डे गिरिप्लवे ॥ १८ ॥
 दिष्टिः सुखे च दाने च धात्री भूयुपमातरि ।
 धनुः सुखीधनुर्ज्यासु धाना बीजेऽपि भूरुहाम् ॥ १९ ॥
 धारास्त्राग्रेऽम्बुसन्तत्यां सैन्याग्रेऽश्वगतिष्वपि ।
 धीता सुतायां बुद्धौ च धृतिः सौख्येऽपि धारणे ॥ २० ॥
 निष्ठोत्कर्षे व्यवस्थायां नाशेऽन्ते व्रतयज्ञयोः ।
 भित्तिमूले प्रधौ नेमिर्निन्दा कुत्साऽपवादयोः ॥ २१ ॥
 पालिरश्रिः प्रदेशोऽङ्कः सशमश्रुः स्त्री त्सरुश्छदः ।
 छन्दः सङ्ख्यावली पङ्क्तिः पक्तिगौरवपाकयोः ॥ २२ ॥
 क्षुद्रग्रामेऽपि पल्ली स्यात् प्रभाऽर्चिषि च भासि च ।
 प्रज्ञा प्राज्ञस्त्रियां बुद्धौ प्रजा तु जनपुत्रयोः ॥ २३ ॥
 प्रसूर्जनन्यामश्वायां पारिः सृणिगुणेऽपि च ।
 पादुकोपानहोः पादूः प्राप्ती अभिगमोदयौ ॥ २४ ॥
 पीडाऽवमर्दकृपयोः प्रीतिः प्रेमप्रमोदयोः ।
 प्रेक्षा नृत्तेक्षणे बुद्धौ बाधा दुःखनिषेधयोः ॥ २५ ॥
 भसदौ गुह्यवित्कोष्ठौ भक्तिर्भागे निषेवणे ।
 भिक्षा तु भिक्षितान्नादौ याच्यायां धृतिसेवयोः ॥ २६ ॥
 भूमिः क्षितौ स्थानमात्रे भूतिः श्रीजन्मभस्मसु ।
 मतिः काङ्क्षा शेमुषी च मल्लिर्मृत्पात्रपीठयोः ॥ २७ ॥

माता तु गव्यकारादौ ब्राह्मणाद्यासु प्रसूतयोः ।
 मूर्तिर्देहप्रतिमयोः काककाठिन्ययोरपि ॥ २८ ॥
 पुंश्चल्यां मौक्तिके मुक्ता कारासंयमयोर्यतिः ।
 गमने जीवने यात्रा रुजा रुग्भृङ्गमृत्यवः ॥ २९ ॥
 राजिः पङ्क्तौ राजसर्पे क्षेत्रेऽधो रसनस्य च ।
 रीतिर्दग्धसुवर्णादिमले स्थित्यारकूटयोः ॥ ३० ॥
 प्रचारे श्रवणे पङ्क्तौ रण्डा स्याद्विधवाऽपि च ।
 रुचिः कान्त्यर्चिषोर्भासि तिन्त्रिडीके स्पृहाश्रियोः ॥ ३१ ॥
 रेटिर्वहेश्च रटितं वाणी चासंयतोऽकटा ।
 रेखायामावलौ रेखा लङ्का पूर्वेदशाखयोः ॥ ३२ ॥
 लीला क्रिया विलासश्च वपा गोण्डो बिलं तथा ।
 बलिर्मध्यगरेखोर्मिजीर्णत्वग्गृहदारु च ॥ ३३ ॥
 वर्ध्री स्नायुनि नध्र्या च ब्रज्या पर्यटने गतौ ।
 विधा विधाने हस्त्यन्ने भृत्यामृद्धिप्रकारयोः ॥ ३४ ॥
 वीरुधौ गुल्मगुल्मिन्यौ वीथी पङ्क्त्यध्वनोरपि ।
 वीचिः पङ्क्त्यूमिलेशेषु व्युष्टी फलसमृद्धते ॥ ३५ ॥
 वृत्तिर्ग्रन्थाजीवयोश्च वेलाऽन्विजलवर्धने ।
 काले सीमि च वेणी तु केशबन्धे जलस्रुतौ ॥ ३६ ॥
 वृद्धिः सुखेऽपि जङ्घापि वारुः शुक्तिस्तु ह्रस्वि ।
 अश्ववर्ते च शाला तु गृहाङ्गस्कन्धशाखयोः ॥ ३७ ॥
 शक्तिः कासूर्वलं लक्ष्मीः शारदावृतुवत्सरौ ।
 शङ्का वितर्कभययोः श्रद्धाऽऽस्तिक्याभिलाषयोः ॥ ३८ ॥
 शाखा वेदप्रभेदेषु बाहौ पाददुमाङ्गयोः ।
 श्यामा कन्या निशा चाथ शान्तिः प्रशममङ्गले ॥ ३९ ॥
 शिखा ष्वालाकेकिमौल्योः शिफा शाखाप्रमौलिषु ।
 शुण्डा करिकरे मद्ये श्रुतिर्वेदे श्रवस्यपि ॥ ४० ॥
 शय्या तल्पे ग्रन्थगुम्फे शंसा तु स्तववाक्ययोः ।
 संविद् युद्धे प्रतिज्ञायां सङ्केताचारनामसु ॥ ४१ ॥

सम्भाषणे क्रियाकारे विज्ञाने तोषणेऽपि च ।
 सभा तु संसदि द्यूते गृहे सामाजिकेषु च ॥ ४२ ॥
 संज्ञाऽर्कभार्या चैतन्यं हस्ताद्यैः सूचनाऽभिधा ।
 संस्था व्यवस्थाप्रणिधिसमाप्त्याकारमृत्युषु ॥ ४३ ॥
 सन्धाऽवधौ प्रतिज्ञायां सातिर्दानावसानयोः ।
 सीमसीमे तु कूलेऽपि स्थानमर्यादयोः स्थितिः ॥ ४४ ॥
 गङ्गेष्टिमूर्वयोः स्नुह्यां लेपभेदेऽमृते सुधा ।
 राश्ममेखलयोः स्यूना सीता सस्ये हलाध्वनि ॥ ४५ ॥
 स्थूणा सूर्या गृहस्तम्भे हिंसा चौर्यादिके वधे ।
 हेलाऽवज्ञाभावचारौ हेतिर्वालांशुरायुधम् ॥ ४६ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे स्त्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभ्रं सलिलदे व्योमन्यस्त्रं कोदण्ड आयुवे ।
 अभ्रं पुरःशिखामानशैष्ट्याधिक्यफलेषु च ॥ १ ॥
 मुष्के पद्यादिकोशोऽण्डं दुःखेनोव्यसनेष्वघम् ।
 अर्शसी व्याधिदुर्नाम्नी आञ्ज्ये श्रीवाससर्पिषि ॥ २ ॥
 वर्षार्थजीवितेष्वायुरास्यं मुखविले मुखे ।
 उरस्तु वक्षसि श्रेष्ठ ऋतं तथ्यशिलोऽद्भयोः ॥ ३ ॥
 ओजोऽवष्टम्भबलयोरोकसी मन्दिराश्रमौ ।
 क्रियायजनयोः कर्म क्षीरं दोहजमम्बु च ॥ ४ ॥
 कुण्डं स्थात्यां जलाधारविशेषेऽनलगर्तके ।
 पिण्याको नम्रहः किण्वं कूलं तीरे चमूकटौ ॥ ५ ॥
 क्षेत्रं गृहे पुरे देहे केदारे योनिभार्ययोः ।
 पुण्यस्थाने समूहे च घृतं त्वाञ्ज्येऽम्बुसर्पिषोः ॥ ६ ॥
 चक्रं सैन्ये जलावर्ते रथाङ्गे चयराष्ट्रयोः ।
 संसारे मण्डले वृत्ते छद्मभेदास्त्रभेदयोः ॥ ७ ॥
 चैत्यं चिताङ्के बुद्धाण्डे उद्देशेऽद्रौ सुरालये ।
 चिह्नमङ्के पताकायां छद्म सद्धानि कैतवे ॥ ८ ॥
 छन्दः श्रुतीच्छापद्येषुच्छिद्रं रन्ध्रापराधयोः ।
 जालं गवाक्ष आनाये क्षारके कपटे गणे ॥ ९ ॥
 जीलं चर्मपुटः कोशो दृतिः करकपत्रिका ।
 ज्योतिस्ताराग्निभाज्वालाहक्पुत्रार्थाध्वरात्मसु ॥ १० ॥
 तन्त्रं स्वराष्ट्रव्यापारे तन्तुवाने परिच्छेदे ।
 शास्त्रौषधान्त्रमुख्येषु प्रयोगेऽध्वरकर्मणम् ॥ ११ ॥
 एकस्यैवोभयार्थत्वे कुङ्कुम्बव्यापृतावपि ।
 तल्पं शय्याट्टजायासु तनुषी तनुविस्वृती ॥ १२ ॥
 त्रपु सीसे च रङ्गे च तरसी बलरंहसी ।
 तीर्थ मन्त्राद्युपाध्यायशास्त्रेष्वम्भसि पावने ॥ १३ ॥
 पात्रोपायावतारेषु स्त्रीपुष्पे योनियज्ञयोः ।
 तेजो बले प्रभावेऽन्ने ज्योतिष्यर्चिषि रेतसि ॥ १४ ॥

नवनीतेऽनले धर्मे दानं हस्तिमदेऽपि च ।
 द्वयं गुणानामाधारे भेषजे योगवित्तयोः ॥ १५ ॥
 द्वन्द्वं युग्मं हिमोष्णादि मिथुनं कलहो रहः ।
 धाम जन्मप्रभावान्नभाःसु खे भोजने गृहे ॥ १६ ॥
 नेत्रं नाड्यां तरोर्मूले वस्त्रे दृशि मथो गुणे ।
 नाट्यं तौर्यत्रिके नृत्ते नालं विवरशेषसोः ॥ १७ ॥
 पदं स्थाने शरे त्राणे पादाङ्के पादचिह्नयोः ।
 शब्देऽशुवस्तुवाक्येषु व्यवसायापदेशयोः ॥ १८ ॥
 पर्व ग्रन्थौ पञ्चदश्यां प्रस्तावे विषुवादिके ।
 पक्ष्म सूत्राद्यवयवे किञ्चल्के नेत्रलोमसु ॥ १९ ॥
 पत्रं तु वाहने पर्णे क्षुरिकागरुतोरपि ।
 पयोऽम्भसि च दुग्धे च पाथसी सलिलौदनौ ॥ २० ॥
 पात्रं तु भाजने योग्ये वित्ते कूलद्वयान्तरे ।
 पार्थीपि स्वर्गचन्द्रार्का पिच्छं बर्हे खगच्छदे ॥ २१ ॥
 पोत्रं मुखाम्रदेशे स्यात् सूकरस्य हलस्य च ।
 नवनीतं पयः पीथं बर्हं पर्णशिखण्डयोः ॥ २२ ॥
 बीजं शुक्ले फलास्थन्यन्ने भर्मणी स्वर्णवेतने ।
 वणिङ्मूलधने पात्रे भाण्डं भूषाश्वभूषयोः ॥ २३ ॥
 भाग्यं कर्मण्यन्यजन्मकर्मण्यपि शुभाशुभे ।
 भर्गसी रेतआलोकौ महसी तेजउत्सवौ ॥ २४ ॥
 माल्यं पुष्पे पुष्पदाम्नि मूल्यं वेतनवस्त्रयोः ।
 मुखं तु वदने मुख्ये ताम्रे द्वाराभ्युपाययोः ॥ २५ ॥
 मूलं वशीकृतौ स्वीये शिफातारान्तिकादिषु ।
 गमने वाहने यानं रत्नं श्रेष्ठे मणावपि ॥ २६ ॥
 रहो रहस्ये सुरते रिष्टं नाशे शुभेऽशुभे ।
 रुक्मं हेम सुलोहं च रेतसी शुक्लमम्बु च ॥ २७ ॥
 रूपं शब्दे पशौ श्लोके ग्रन्थावृत्तौ सितादिषु ।
 सौन्दर्ये च स्वभावे च शरद्रेण्वार्त्तवे रजः ॥ २८ ॥
 ललं पल्लव उद्याने लक्ष्म चिह्नवरिष्ठयोः ।
 स्यादुपच्छन्दने लालं गुह्यार्थपरभार्ययोः ॥ २९ ॥
 लिङ्गं शेषसि वेषेऽशे चिह्ने बुद्ध्यादिसंहतौ ।
 वयः खगेऽन्ने वर्षेऽर्थे शुभाकारे तनौ वपुः ॥ ३० ॥

वर्चोऽर्चिरूपविड्भाःसु वनं भास्यप्सु कानने ।
 व्रतं विष्णुवृत्तुवर्षेज्यातपोमासाग्निभुक्तिषु ॥ ३१ ॥
 वीर्यं पराक्रमे रेतस्यन्नमाहात्म्ययोरपि ।
 वेष्टं ब्रह्मणि नाके च शल्के शकलवल्कले ॥ ३२ ॥
 शास्त्राण्यस्त्रमयःशंसा शास्त्रं ग्रन्थनिदेशयोः ।
 शार्ङ्गं चापे हरेश्चापे शीलं वृत्तस्वभावयोः ॥ ३३ ॥
 शुल्बं ताम्रे यज्ञकर्मण्याचारे जलसन्निधौ ।
 शोचिः शोकांशुपैङ्गल्यशुद्धत्वेषु सरोऽप्सु च ॥ ३४ ॥
 यज्ञभेदे सदादाने सत्रमाच्छादने वने ।
 सर्पिर्धृते च तोये च सान्त्वे दाक्षिण्यसान्त्वने ॥ ३५ ॥
 स्नानीयेऽभिषवे स्नानं स्थानं स्यादाश्रये स्थितौ ।
 सूत्रं तन्तौ सङ्ग्रहोक्तौ सुखमानन्दतोययोः ॥ ३६ ॥
 स्रोतोऽम्बुनिर्गमद्वार इन्द्रियेऽप्सु जलस्रुतौ ।
 हविर्हव्ये घृते तोये हेम्नी काञ्चनवेतने ॥ ३७ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्थवलिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अर्थोऽर्थयुक्तात्मवतोरन्त्योऽन्त्यजनिकृष्टयोः ।
 क्लृप्तेऽर्घ्यार्घ्यमर्घाहेऽप्यदस्त्वत्र परत्र च ॥ १ ॥
 अन्यौ विभिन्नसदृशावार्यः साधुकुलीनयोः ।
 आद्यमादिभवे भक्ष्येऽप्युत्पत्तिरहितेऽप्यृजुः ॥ २ ॥
 मुख्यान्यकेवलेष्वेकः कष्टौ गहनदुःखितौ ।
 कल्या नीरुदक्षसज्जा योग्ययुक्ताः क्षमाः ॥ ३ ॥
 कटुस्तिक्ताप्रियाकार्यसुरभ्यूषणमत्सरे ।
 क्रूरो भयङ्करे कुद्धे नृशंसे कठिनोष्णयोः ॥ ४ ॥
 गौरोऽरुणे सिते पीते गृह्यस्त्वस्वैरिपक्षयोः ।
 छिन्नाक्षे छिन्ननेत्रे च चिल्लं चुल्लं च पिब्लवत् ॥ ५ ॥
 चोद्यं चित्रे चोदनाहं चारु चित्रवचस्यपि ।
 जडो जालमश्च निर्बुद्धौ स्तब्धेऽनालोच्यकारिणि ॥ ६ ॥
 ज्यायान् ज्येष्ठश्चाग्रजन्मन्यतिवृद्धातिशस्तयोः ।
 जात्यः श्रेष्ठे कुलीने च डिम्भो बालिशबालयोः ॥ ७ ॥
 द्रुतं शीघ्रे शीघ्रगतेऽप्यवदीर्णविलीनयोः ।
 दृढं गाढेऽधिके स्थूले धूतं त्यक्ते प्रकम्पिते ॥ ८ ॥
 धृष्णुर्धृष्टे प्रगल्भे च कुटिले बन्धुरे नतम् ।
 न्यक्षं छिष्टे निकृष्टे च निजमात्मीयनित्ययोः ॥ ९ ॥
 नीचं खर्वं निकृष्टे च समर्थेऽधिपतौ प्रभुः ।
 प्राप्तं न्याय्ये च लब्धे च विपुलानेकयोर्बहु ॥ १० ॥
 बालो मूर्खे शिशौ भव्यो भावी योग्यः शुभोऽपि च ।
 मिश्रेऽपि भिन्नं म्लिष्टं तु म्लानाविस्पष्टवाक्ययोः ॥ ११ ॥
 मुग्धं सौम्ये नवे मूढे मूढो मोहिनि तन्द्रिते ।
 मृद्वतीक्षणे कोमले च बद्धोपरतयोर्यतः ॥ १२ ॥
 याप्यं गह्वं यापनीये पृथक्संयुक्तयोर्युतम् ।
 न्याय्यसंयुक्तयोर्युक्तं रूक्षो निष्प्रेम्ण्यचिक्कणे ॥ १३ ॥
 रथ्यो रथहितेऽमुष्य स्वीयेऽस्याश्वे च बोद्धरि ।
 रागवद्रोहितौ रक्तौ रामश्चारौ सितेऽसिते ॥ १४ ॥

न्याय्यलब्धव्ययोर्लभ्यं लितो भक्षितदिग्धयोः ।
 लघु त्वसारागुरुणोरिष्टे क्षिप्रमनोज्ञयोः ॥ १५ ॥
 लोलं चले लोलुपे च व्यभो व्यापृत आकुले ।
 वल्गु मञ्जौ च वामस्तु सौम्ये सव्यप्रतीययोः ॥ १६ ॥
 विडं विदारिते तुल्ये विन्नं लब्धे विचारिते ।
 शितिः श्वेते च नीले च शुभो मञ्जुप्रशस्तयोः ॥ १७ ॥
 शुभ्रं शुक्ले भास्वरे च शुक्तं तु परुषाम्लयोः ।
 सभ्यः सामाजिके साधौ सव्यो दक्षिणवामयोः ॥ १८ ॥
 सन्नमल्पे विशीर्णादौ स्वादुर्मधुरमृष्टयोः ।
 स्फुटाः स्पष्टव्याप्तकुलाः स्थूलौ तु जडपीवरौ ॥ १९ ॥
 मन्त्रिण्यपि सुहृत्स्निग्धे प्रतिज्ञावत्यपि स्थितः ।
 मन्दस्वच्छन्दयोः स्वैरो हीनो मुक्तविगर्हयोः ॥ २० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 द्वयक्षरकाण्डे अर्थवलिज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

नानालिङ्गेषु सर्वत्र स्वयमेव क्वचित् क्वचित् ।
 उन्नेयमर्थवलिङ्गं गुणद्रव्यक्रियार्थकम् ॥ १ ॥
 अक्षो रथाङ्ग आधारे व्यवहारे विभीतके ।
 शकटे पाशके कर्षे द्यूतभेदेऽक्षमिन्द्रिये ॥ २ ॥
 अब्जो धन्वन्तरौ शङ्खे चन्द्रे क्ली तवणेऽम्बुजे ।
 प्रदेशेऽश उपायेऽङ्गमङ्गो देशेऽङ्गशालिनि ॥ ३ ॥
 अविर्भूषणवत्योः स्त्री वायुप्राकारभाः सु ना ।
 अजः पितामहेऽनादौ छागे विष्णौ हरे रवौ ॥ ४ ॥
 अन्तोऽश्च्यवसिते मृत्यौ स्वरूपे निश्चयेऽन्तिके ।
 नार्धमासेऽणिरकल्यश्रौ रूप्येऽक्षामध्रुवे ध्रुवे ॥ ५ ॥
 अर्हन्तौ जिनसम्मान्यावर्वन्तौ हयकुत्सितौ ।
 अन्धोऽचक्षुस्तमोऽप्यन्धमर्चिर्भाज्जालयोर्न ना ॥ ६ ॥
 अस्त्र आस्त्रश्च पुंलिङ्गौ क्लेशे क्ली रुधिरेश्शुणि ।
 आद्यो मुख्ये धातृपूर्वेऽवामोऽपकेऽपि रुज्यपि ॥ ७ ॥
 इनास्त्वात्माधिपार्काह्या उष्णोऽग्नौ चतुरेऽपि च ।
 उशिर्नागनावुशीरेऽस्त्री न नोषः कल्यसन्ध्ययोः ॥ ८ ॥
 उन्नः किरण उन्ना गौर् ऋक्षं निर्लोमनीन्द्रिये ।
 कम्ब्वस्त्री वलये शंखे शम्बूके कणसंख्ययोः ॥ ९ ॥
 कल्को ना सिंहके न स्त्री किट्टे दम्भेऽघपिष्टयोः ।
 कारा बन्धनगोहे स्त्री करे ना बन्धने न षण् ॥ १० ॥
 कांस्यं कंसोऽस्त्रियां पानपात्रे तैजस आढके ।
 काण्डोऽस्त्रीषौ बले नाले गर्ह्येऽवसरवर्गयोः ॥ ११ ॥
 ग्रन्थौ स्तम्बे प्रकाण्डेऽप्सु कश्यं मद्यकशार्हयोः ।
 क्षुद्रो दरिद्रे कृपणे नृशंसेऽल्पनिकृष्टयोः ॥ १२ ॥
 क्षुद्रा व्यङ्गा नटी वेश्या सरघा कण्टकारिका ।
 कूटोऽस्त्री पुञ्जमायाघेष्वाद्रिशृङ्गेषुभेदयोः ॥ १३ ॥
 अयोधनेऽनृते फाले दम्भे निश्चलयन्त्रके ।
 कृष्णं सीसाघलोद्देषु कृष्णो नीले नले कलौ ॥ १४ ॥

शूरे काके पिके व्यासे ध्वान्तपक्षेऽर्जुने हरौ ।
 कोशोऽस्त्री कुड्मले दिव्ये शास्त्रेऽर्थोऽपि गृहे तनौ ॥ १५ ॥
 गृह्येऽण्डे वेष्टके पेश्यां पुस्तकासिपिधानयोः ।
 कोलं बदरतकोलशुण्ठीव्योषेऽर्धकर्षके ॥ १६ ॥
 कोला चव्येऽस्त्रपिप्लयोः कोलः खञ्जे प्लवे कटौ ।
 कायो लक्ष्ये तनौ वृन्दे पुंमांस्त्रिषु कदैवते ॥ १७ ॥
 कर्षूः स्त्री तुषकोष्ठे कुल्यायां ना च ना करीषारनौ ।
 श्रोण्यां भृशे कलिञ्जे गजगण्डे शवरथे शवे च कटः ॥ १८ ॥
 किङ्कुर्वितस्तावनपुं सप्रकोष्ठकरे पुमान् ।
 कीलोऽस्त्री कफणौ ज्वाले बाहौ ना शङ्कुशर्वयोः ॥ १९ ॥
 पीठे श्मश्रुणि कूर्चोऽस्त्री भ्रूमध्ये कल्हने कुशे ।
 कृत्या क्रियादेवतयोः कार्ये स्त्री कुपिते त्रिषु ॥ २० ॥
 युगेऽक्षपाते पर्याप्ते कृतं स्त्री विहितेऽर्थवत् ।
 दवेडा वेणुशलाकायां सिंहनादे विषे तु ना ॥ २१ ॥
 क्षेमो ना प्राप्तरक्षायां मोक्षेऽप्यस्त्री तु मङ्गले ।
 स्वीयेऽन्तःकुक्षि कोष्ठोऽस्त्री कुसूलेऽन्तर्गृहे पदे ॥ २२ ॥
 क्रोडं स्त्री कर्ष उत्सङ्गे सूकरे ना न नोरसि ।
 औषधे रुजि कुष्ठोऽस्त्री कुब्जोऽस्त्री गह्वरे हनौ ॥ २३ ॥
 दर्भे कुशोऽस्त्री तोये क्ली कुटिवेके गृहे नषण् ।
 कृष्टिर्विलेखे प्राज्ञे ना खेटो ग्रामे कफेऽधमे ॥ २४ ॥
 अर्धे गुडविकारे च खण्डोऽस्त्री खण्डिते त्रिषु ।
 खलं भूस्थानकल्केषु खलो नीचः खलेत्वरी ॥ २५ ॥
 गव्यूतौ गोगणे गव्या व्यायागद्रव्ययोर्नपुम् ।
 भाण्डागारे पुमान् गजः स्त्री तु खन्यां सुरागृहे ॥ २६ ॥
 गुडौ पिण्डेऽक्षुविकृती स्नुहीगुलिकयोर्गुडा ।
 गुरुगोष्पतिपित्राद्योः पौरोहित्यकरे च ना ॥ २७ ॥
 मात्रादौ स्त्री वृहत्खातदुर्भरालघुषु त्रिषु ।
 गोत्रा गोनिचये भूम्यां गोत्रं नास्ति कुलेऽचले ॥ २८ ॥
 गङ्गः पृष्ठगुडे कुब्जे गदो रोगो गदायुधम् ।
 गोप्यो रक्ष्ये दाससुते प्राणमाघ्रातनासयोः ॥ २९ ॥
 घनाः कठिनसङ्घातमेषकाठिन्यमुद्गराः ।
 चित्रा सुभद्रा तारा च चित्रमालेख्यमिश्रयोः ॥ ३० ॥

चेलं वासोऽक्षमं काम्यं गहितं बहिचन्द्रकः ।
 चुम्बो नाशे विषण्णे च चोक्षो गीतमनोज्ञयोः ॥ ३१ ॥
 छेको विदग्धे गृह्ये च जिह्वां मन्देऽघवक्रयोः ।
 जन्यं रणे जनितरि विगीतजननीययोः ॥ ३२ ॥
 ज्ञातिभृत्या नवोढाया जन्याः स्निग्धा वरस्य च ।
 जीवः प्राणे त्रयी ना तु जन्तवात्मनि गीष्पतौ ॥ ३३ ॥
 त्रिषु जीवति मौर्व्या स्त्री स्याज्जीर्णो वज्रवृद्धयोः ।
 भ्रूषा नागबलायां स्त्री ना मत्स्ये मकरे वने ॥ ३४ ॥
 तनुः स्त्री त्वचि देहे च त्रिष्वल्पे विरले कृशे ।
 तमा राहुस्तमोऽघं शुक् स्वरूपेऽधस्तलोऽस्त्रियाम् ॥ ३५ ॥
 क्ली तुल्यदेशे तारस्तु मुक्ताशुक्लौ समौक्तिके ।
 उडुहृद्ध्ययोरक्ली तुच्छं त्वसुखशून्ययोः ॥ ३६ ॥
 ताम्रं शुल्बे शुल्बनिभे तिग्मास्तीक्ष्णोष्णभास्कराः ।
 तीक्ष्णमुष्णे क्षण्ते युद्ध आत्मत्यजि विषेऽयसि ॥ ३७ ॥
 कर्णमूलेऽभ्रहरितोस्तोक्मं तोक्मो हरिद्यवः ।
 दण्डोऽस्त्री शासने राज्ञां हिंसायां लगुडे दमे ॥ ३८ ॥
 मिथ्याऽऽज्ञायां सैन्यभेदे दलो भागे दलं छदे ।
 दरोऽस्त्री शङ्खभीगर्तेऽवत्पार्थे त्वव्ययं दरम् ॥ ३९ ॥
 दंष्ट्री प्राहे सदंष्ट्रेऽहौ शार्दूले मूषिके कटौ ।
 परिमाणे दारुपात्रे द्रोणोऽस्त्री वायसे पुमान् ॥ ४० ॥
 दिग्धो विषप्रलिप्तेषौ लिप्ते स्नेहप्रवृद्धयोः ।
 दुर्गो राष्ट्रे वने दुर्गं दुर्गमे नरके पुरे ॥ ४१ ॥
 दृश्या स्यात् पृतना दृश्यं दर्शनीये विभूषणे ।
 धर्मोऽस्त्री सुकृते साम्ये स्वभावे ना तु सोमपे ॥ ४२ ॥
 न्यायाचारयमाहिंसास्वस्त्री मेढ्राङ्कयोर्ध्वजः ।
 धिष्ण्यौ शुक्रानलौ धिष्ण्यमृत्ते स्थाने बले गृहे ॥ ४३ ॥
 ध्रुवो धात्रीशकीलर्क्षनित्येषु स्त्री तु भूस्त्रयोः ।
 स्त्री तर्के निश्चिते व्योम्नि धीरोऽब्धौ मन्थरे बुधे ॥ ४४ ॥
 निष्कोऽस्त्री हेम्नि दीनारे साष्टे कर्षशते पले ।
 वक्षोविभूषणे कर्षे नाथस्त्वन्द्रे प्रभावपि ॥ ४५ ॥
 न्युब्जं कुब्जे कर्मरङ्गे न्युब्जो व्याधावधोमुखे ।
 नेमः पुरोहिते तुल्ये प्रस्थोऽस्त्री सानुमानयोः ॥ ४६ ॥

बन्धने दूरमार्गे च प्राध्वं क्ली प्रवणे त्रिषु ।
 पूर्वोऽर्थलिङ्गः प्राच्यादौ पूर्वजेषु नृभूमवान् ॥ ४७ ॥
 पद्मोऽस्त्रयब्जेऽष्टकायां क्ली सङ्ख्यायां गजबिन्दुषु ।
 ना तु नागे निधौ व्यूहे पङ्कोऽस्त्री कर्दमैनसोः ॥ ४८ ॥
 परं दूरान्यमुख्येषु परोऽरिपरमात्मनोः ।
 पार्श्विणरुन्मत्तनार्या स्त्री पादग्रन्थेरधोऽपि च ॥ ४९ ॥
 पुमांस्तु प्रतनाकट्यां पापं स्यात् कूरपाप्मनोः ।
 पुण्यं धर्मे जले हेम्नि पुष्पे क्ली सुन्दरेऽर्थवत् ॥ ५० ॥
 पार्श्वमस्त्री समीपेऽपि पूज्यः श्वशुरमान्ययोः ।
 स्नेहे केलौ प्रेम न स्त्री पीतिः पाने हये तु ना ॥ ५१ ॥
 स्यात् परेत इव प्रेतो मृतप्राणिविशेषयोः ।
 लाभनिष्पत्तिभोगेषु बीजे फाले धने फलम् ॥ ५२ ॥
 फली ताम्रादिफलके बहिर्नाऽग्नौ नपुं कुशे ।
 ब्रह्मा रुद्रेन्द्रभृगवादिविप्रविग्यज्ञधातृषु ॥ ५३ ॥
 अर्केऽग्नौ क्ली तु वेदेऽन्ने स्वाध्यायात्मतपःसु च ।
 बलं रूपेऽस्थनि स्थौल्ये शक्तिरेतश्चमृषु च ॥ ५४ ॥
 बलो रामे बलाढ्ये च बाढं त्वनुमते दृढे ।
 बिम्बोऽस्त्री मण्डलसमप्रतिमामुखलक्ष्मसु ॥ ५५ ॥
 प्रतिबिम्बे तत्प्रकृतौ क्ली तु स्याद् बिम्बिकाफले ।
 साज्ये मधुनि तक्कोले बोलं बोलोऽम्भसां भ्रमः ॥ ५६ ॥
 बोधिरर्थे सुविज्ञाने कुक्कुटाश्वत्थयोस्तु ना ।
 बालोऽक्ली नीलभिण्ड्यां च भेलौ तूडुपभीरुको ॥ ५७ ॥
 भगं योन्यां भगो यत्ने यशोवीर्याकभूतिषु ।
 कान्तीच्छाज्ञानवैराग्यधर्मैश्वर्यतपःसु च ॥ ५८ ॥
 खादौ जन्तौ च भूतं क्ली समातीतोचिते त्रिषु ।
 भास्वानिन्दौ भास्वरेऽर्के भेको वर्षाभिव कातरे ॥ ५९ ॥
 अन्नतत्परयोर्भक्तं भद्रं कल्याणसौख्ययोः ।
 मन्दाः सरोगनिर्भाग्यस्वल्पाज्ञापदुसूर्यजाः ॥ ६० ॥
 क्षौद्रादौ तद्रसेऽप्यस्त्री ना वसन्ते रसेऽसुरे ।
 चैत्रे मधूके क्ली त्वप्सु मद्ये पुष्परसे मधु ॥ ६१ ॥
 अक्ली मणिरजाकण्ठस्तने रत्नेऽप्यलिङ्गरे ।
 मात्रा परिच्छदेऽर्थेशे प्रवृत्तौ कर्णभूषणे ॥ ६२ ॥

अक्षरावयवे माने मात्रं कात्स्न्येऽवधारणे ।
 मध्यं युक्तेऽन्तराले च महद्राज्यविशालयोः ॥ ६३ ॥
 मोचा कदल्यां स्त्री वृक्षरसे ना पाटले नषण् ।
 मौलिः संयतकेशेषु चूडायां मुकुटेऽप्यषण् ॥ ६४ ॥
 मलं किट्टाघयोश्चास्त्री यमजान्तकयोर्यमः ।
 ययुर्ना मोक्षमार्गेऽश्वे स्त्री त्वाप्तौ दीर्घयष्टिके ॥ ६५ ॥
 युगोऽस्त्री स्यन्दनाद्यङ्गे क्ली तु युग्मे कृतादिके ।
 योनिः स्त्रीणां भगे स्थाने कारणे ताम्रकेऽप्यषण् ॥ ६६ ॥
 योग्यं यन्त्रक्षमापूपयानोपायिषु चन्दने ।
 योग्याभ्यासः क्षमापुण्ये रोको रश्मौ बिले नपुम् ॥ ६७ ॥
 राजते भूषणे रूप्यं रजते हेम्नि चाहते ।
 त्रिषु प्रशस्तरूपेऽथ रणोऽस्त्री युधि ना ध्वनौ ॥ ६८ ॥
 राष्ट्रेऽस्त्री विषये जन्तौ लोहोऽस्त्री तैजसायसोः ।
 लक्षं नपुं शरव्ये ना स्त्री व्याजे नियुते न ना ॥ ६९ ॥
 वर्णो नीलादिविप्राद्योः कीर्तौ गीतिक्रमे स्तुनौ ।
 कुथे वृतेऽक्षरे त्वस्त्री प्रकारे लेपशोभयोः ॥ ७० ॥
 वशा करिण्यां वन्ध्यायां रामायां दुहितर्यपि ।
 वशो जनस्पृहायत्तेष्वायत्तत्वप्रभुत्वयोः ॥ ७१ ॥
 वरो ना रूपजामात्रोर्देवादेरीप्सिते वृत्तौ ।
 त्रिष्वयमे क्ली मनागिष्टे व्यक्तं स्पष्टे बुधे तु ना ॥ ७२ ॥
 वत्सो ना कुटजे वर्षे तर्णके तनयादिके ।
 बाले च वक्षसि त्वस्त्री वज्रोऽस्त्री हीरकास्त्रयोः ॥ ७३ ॥
 व्यालो दुष्टगजे सर्पे श्वापदे च पुमांस्त्रिषु ।
 शठेऽथ वित्तमर्थे क्ली त्रिषु ख्याते विचारिते ॥ ७४ ॥
 वीतं शान्ते दुर्गजाश्वे वधो हिसितृहिसयोः ।
 वार्ता वातिङ्गणोदन्तवाणिज्यादिषु वर्तने ॥ ७५ ॥
 निःसारारोग्ययोः षण्डो वृत्तिमन्त्रीरुजोस्त्रिषु ।
 वृत्तं स्वरूपे चरिते वृत्तौ छन्दोविधासु च ॥ ७६ ॥
 त्रिष्वतीतदृढाधीतवर्तुलेष्वथ गीष्पतौ ।
 श्रेष्ठोक्षाश्वाखुरेतःसु पुंघर्मेन्द्रबले वृषः ॥ ७७ ॥
 वसुर्हृदेऽग्नौ योक्त्रेऽशौ वसु तोये धने मणौ ।
 विश्वं जगति सर्वस्मिन्त्रिषु शुण्ड्यां पुनर्न ना ॥ ७८ ॥

वप्रः पितरि ना न स्त्री क्षेत्रे रोधसि सानुनि ।
 वर्षोऽस्त्री भारताद्यब्दवृष्टिषु प्रावृष्टि स्त्रियः ॥ ७६ ॥
 वास्त्वस्त्री गृहभूपूर्योगृहे सीमसुरुङ्गयोः ।
 वानं शुष्के गतौ व्यूतौ गन्धे वृद्धौ सुधीयमौ ॥ ८० ॥
 वर्ष्म न स्त्री शुभाकारे सौम्ये देहप्रमाणयोः ।
 विभुः सर्वगते पत्यौ चन्द्रे रविकुबेरयोः ॥ ८१ ॥
 वीरो राहौ हरे शक्रे शूरे स्कन्दकुबेरयोः ।
 गजग्रहणभूमौ स्त्री वारिः स्यात् सलिलं नपुम् ॥ ८२ ॥
 शङ्खऽस्त्री वलये कम्बौ संख्यायां च निधौ तु ना ।
 अमावस्यां च नागे च शितौ बाणतनूकृतौ ॥ ८३ ॥
 शिवा हरीतकी क्रोष्टा शमी नद्यामलक्युमा ।
 शिवो घोले पद्मरागे हरे कीले शिवं जले ॥ ८४ ॥
 भद्रे चाथोपधा शुद्धसचिवेऽग्नौ हरौ शुचिः ।
 चन्द्रेऽर्के च त्रिषु त्वेष शुद्धेऽनुपहते शिते ॥ ८५ ॥
 शुक्रः सिते कवौ चन्द्रे मासभेदेऽनले द्विजे ।
 शुक्रं मेध्येऽप्सु पुण्येऽर्थे रुक्मेऽक्षिरुजि रेतसि ॥ ८६ ॥
 क्रीडाम्बुयन्त्रे शृङ्गोऽस्त्री पर्वताग्रप्रभुत्वयोः ।
 पञ्चङ्गे चाथ शेषस्त्रिष्वन्यस्मिन्नुपयुक्तः ॥ ८७ ॥
 माल्याक्षतादिदाने स्त्री ना नागेशाप्रधानयोः ।
 ना पर्याणे विहङ्गे स्त्री शारिर्गूते गुडे नषण् ॥ ८८ ॥
 पथि देये शुल्कमस्त्री जामात्रा यच्च दीयते ।
 श्रुतं शास्त्रावधृतयोर्नपुमाकर्णितेऽर्थवत् ॥ ८९ ॥
 सजातिशिल्पसंहत्यामषण्डः श्रेणिरावलौ ।
 शौण्डी जलदमालायां शौण्डी समदकुक्कुटौ ॥ ९० ॥
 शको विष्ठा पशूनां स्यादेशे च गवये शकाः ।
 शबले मारुते शारः शुद्धाः पूतार्ककेवलाः ॥ ९१ ॥
 शुभ्रिर्नार्केऽर्थवत्सौम्ये शूरो विक्रान्तकुक्कुटौ ।
 शूलोऽस्त्री रुजि शस्त्रे च श्वेतं धवलरूपयोः ॥ ९२ ॥
 शीतो ना वेतसे शैलौ शैत्ये क्ली तद्वति त्रिषु ।
 सत्त्वोऽस्त्री जन्तुषु क्ली तु व्यवसाये पराक्रमे ॥ ९३ ॥
 आत्मभावे पिशाचादौ द्रव्ये सत्तास्वभावयोः ।
 प्राणे बलेऽन्तःकरणे स्वामी पत्यौ षडानने ॥ ९४ ॥

समा स्त्री वत्सरे साधुसर्वतुल्येषु वाच्यवत् ।
 परमार्थेऽर्थवत् सत्यं षण्डः शपथतथ्ययोः ॥ ९५ ॥
 स्पर्शः संस्पर्शने स्पर्ष्टर्युपतापप्रदानयोः ।
 साधुस्त्रिषुचिते सौम्ये सज्जने वार्धुषौ पुमान् ॥ ९६ ॥
 सारो बले स्थिरांशेऽर्थे पुमान् न्याये वरेऽर्थवत् ।
 स्त्री नद्यां ना नदे सिन्धुदेशभेदेऽम्बुधौ गजे ॥ ९७ ॥
 सौम्यो विप्रे सोमजेऽब्दे सुन्दरे सोमदैवते ।
 सखा सहाये बन्धौ ना सूक्ष्ममध्यात्मदभ्रयोः ॥ ९८ ॥
 सूनं पुष्पे सुतायां स्त्री स्नेहोऽस्त्री द्रवहार्दयोः ।
 विष्णुचन्द्रेन्द्रवातार्कयमाश्वांशुशुक्राग्निषु ॥ ९९ ॥
 कपिभेकाहिसिंहेषु हरिर्ना कपिले त्रिषु ।
 हयो वशीक्रिया मन्त्रे ह्वयं दध्न्युपलेपने ॥ १०० ॥
 हत्प्रिये हृद्धिते हज्जे ह्रीकौ नकुललाजितौ ।
 यमेऽल्पे वामने ह्रस्वो हरित् स्त्री दिशि षण् तृणे ॥ १०१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

द्वयक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

द्वयक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ६ ॥

७. अथ त्र्यक्षरकाण्डः

पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अविनौ विहगाध्वर्यु अरन्त्री हस्तकूर्परौ ।
 अत्यथोऽतिक्रमे कृच्छ्रे मरणे दण्डदोषयोः ॥ १ ॥
 आसारः स्यात् प्रसरणे वेगघृष्टौ सुहृद्वले ।
 आम्रहः स्यात् स्वीकरणे निर्बन्धेऽनुग्रहेऽपि च ॥ २ ॥
 आम्नायोऽध्ययने वेदे सम्प्रदाये कुलेऽपि च ।
 आकर्षः शारिफलको द्यूत आकृष्टिपाशकौ ॥ ३ ॥
 गन्धमाल्योपहारे स्यादायोगो व्यावृतावपि ।
 आनर्त्तो नृत्तशालायां देशभेदे जने युधि ॥ ४ ॥
 आक्रन्दः क्रन्दने रावे नाथे घोररणेऽपि च ।
 आधार आलवालेऽम्बुबन्धेऽधिकरणेऽपि च ॥ ५ ॥
 आशिरः क्षीरविकृतौ भोजने पावके रघौ ।
 आवापो न्यास आवाले स्मरे धातरि चात्मभूः ॥ ६ ॥
 श्रोण्याञ्चारोह आकारस्त्वाकृतावात्मवैकृते ।
 आमोदौ हर्षसौगन्धे आभोगौ यत्नपूर्णते ॥ ७ ॥
 आघातौ घातसीमानावाहारौ भक्षणान्धसी ।
 आलोकौ दर्शनोद्योतावागमौ शास्त्रमागतिः ॥ ८ ॥
 रुभीतितापेष्वातङ्क आशुगोऽर्के शरेऽनिले ।
 तदात्वे पात आपात आकरो निकरे खनौ ॥ ९ ॥
 अग्न्याकर्षणमात्सेप आलम्भः स्पर्शहिंसयोः ।
 ईशानौ हरिधातारावुत्सेधौ वपुरुन्नती ॥ १० ॥
 उपाधिर्धर्मचिन्तायां कुडुम्बव्यापृतेऽपि च ।
 उत्सवस्त्विच्छाप्रसर उत्सेधामर्षयोर्महे ॥ ११ ॥
 उदर्क उत्तरे काले यच्च स्यात् फलमुत्तरम् ।
 उदान उदरावर्त्ते सर्पवायुप्रभेदयोः ॥ १२ ॥
 ऊर्णायुर्णनाभे स्यान्मेषतल्लोमकम्बले ।
 ऋषभोऽप्रये मत्तगजे श्रोत्ररन्ध्रे स्वरे वृषे ॥ १३ ॥

कुम्भीरपुच्छे च जलस्थाने त्वृक्षर ऋत्विजि ।
 वेणौ दुमाङ्गे रोमाञ्चे क्षुद्रशत्रौ च कण्टकः ॥ १४ ॥
 कञ्चुकः सर्पनिर्मोके कवचे वारवाणके ।
 कलापो भूषणे काञ्च्यां सङ्घाते बर्हतूणयोः ॥ १५ ॥
 क्षारको मत्स्यपद्यादिपिटके पुष्पजालके ।
 दैवे कृतान्तः सिद्धान्ते यमाकुशलकर्मणोः ॥ १६ ॥
 कौशिको गुग्गुलुत्कशक्रषिष्वाहितुण्डिके ।
 कलङ्कोऽङ्केऽपवादे च कलहो द्वन्द्वयुद्धयोः ॥ १७ ॥
 कलमोऽङ्कुरलेखन्योः कठाकुः खगशिल्पिनोः ।
 कारुजः कलभे नाके क्षवथुः क्षुतकासयोः ॥ १८ ॥
 कर्परोऽमौ कपालेऽपि करभोऽपि खरोष्ट्रयोः ।
 शरे किशारुकादम्बौ कुरण्डस्तु ऋषेऽपि च ॥ १९ ॥
 कुटीरस्तु कुलीरेऽपि कुम्भीलस्तस्करेऽपि च ।
 कपोतः पारावतेऽपि कोकिलस्तूल्मुकेऽपि च ॥ २० ॥
 वायौ वसन्ते क्षिपणुः क्षिपणो वायुकालयोः ।
 कुषाकुः पावके सूर्ये केसरी हयसिंहयोः ॥ २१ ॥
 किङ्किरौ क्रोष्टुखट्वाङ्गौ खेचरः पवनेऽपि च ।
 खपुरः पूगवेष्टेऽपि पूगनिर्योसयोरपि ॥ २२ ॥
 खोलकः पूगकोशे स्याद् भग्नभाण्डे शिरस्त्रके ।
 गोलको मणिके पिण्डे कम्बले विधवासुते ॥ २३ ॥
 अन्तराभवसत्त्वे स्याद् गन्धर्वो गायने हये ।
 गरुत्मान् विहगे तार्क्ष्ये शृषार्केन्द्रेषु गोपतिः ॥ २४ ॥
 चङ्कुरः स्यन्दने दैत्ये चाक्रिकौ तैलघाण्टिकौ ।
 चिकिरोऽहौ गेहवभ्रौ जसुरिः पावके शनौ ॥ २५ ॥
 जम्बुकौ क्रोष्टुवरुणौ जम्बालौ पङ्कशैवलौ ।
 श्वेतस्तिलोऽपि जामाता जीमूतौ मेघपर्वतौ ॥ २६ ॥
 जगलो मेदके पिष्टमद्येऽपि कितवेऽपि च ।
 जनिमा मातापितरावुत्पत्तिस्तनयोऽपि च ॥ २७ ॥
 त्रिवर्गस्त्रिफला व्योषं स्थितिवृद्धिक्षया अपि ।
 तमोनुदोऽग्निचन्द्रार्कास्तक्षकौ नागवर्धकी ॥ २८ ॥
 तपनो भास्करो ग्रीष्मे त्रिदिवो व्योम्नि दिव्यपि ।
 त्रिशङ्कू तार्क्ष्यमार्जारौ त्रिधामा केशवेऽनले ॥ २९ ॥

सपिण्डपुत्रौ दायादौ द्वापरौ युगसंशयौ ।
 दिवौकाश्चातके देवे द्रुघणौ धातुमुद्गरौ ॥ ३० ॥
 दरथो विवरे भीत्यां दिक्षु चापि प्रसारणे ।
 द्विजातिश्च द्विजन्मा च ब्राह्मणादिपतत्रिणोः ॥ ३१ ॥
 दुहिणौ हरिधातारौ शास्त्रोदाहरणयोस्तु दृष्टान्तः ।
 दोषज्ञौ बुधभिषजौ धरुणाः स्तनधातुलोकार्काः ॥ ३२ ॥
 धाराटश्चातकेऽश्वे च नभसौ व्योमसागरौ ।
 निवेशौ शिबिरोद्वाहौ निरोधौ रोधसंक्षयौ ॥ ३३ ॥
 निदेशावाज्ञाकथने विग्रहः सीम्नि भर्त्सने ।
 निवहो वायुभेदेऽपि निषङ्गस्तूणसङ्गयोः ॥ ३४ ॥
 ऊर्णाविकारे नमतो धूमे दिनकरेऽपि च ।
 निगमो निश्चये वेदे पुरे पथि वणिक्पथे ॥ ३५ ॥
 नितम्बः पश्चिमश्रोणिभागेऽद्रिकटके कटौ ।
 निष्क्रमो बुद्धिसामर्थ्ये निगतौ चाथ भूपतौ ॥ ३६ ॥
 नरेन्द्रो विषवैद्ये च नैगमस्तु श्रुतावपि ।
 निकारस्तु तिरस्कारे धान्यस्योत्क्षेपणेऽपि ॥ ३७ ॥
 द्वार्यापीडे काथरसे निर्यूहो नागदन्तके ।
 निषधोऽद्वौ देशभेदे कठिने तस्य राजनि ॥ ३८ ॥
 निहवः स्यादविश्वासेऽपहवे निकृतावपि ।
 निर्वेशः सम्मूर्च्छने स्यात् कर्मश्रुत्युपभोगयोः ॥ ३९ ॥
 प्रतिज्ञायन्त्रणाऽऽज्ञासु नियमो निश्चये व्रते ।
 पतङ्गः शलभे शालौ मार्जारेऽग्नौ रवौ खगे ॥ ४० ॥
 परिधिर्यज्ञिये काष्ठे प्राकारे परिवेषणे ।
 परिघाते मूढगर्मे परिघोऽर्गलदण्डयोः ॥ ४१ ॥
 परागः पुष्परेणौ च स्नानीयादौ रजस्यपि ।
 पर्जन्यो गर्जदध्रेऽभ्रध्वाने शक्रेऽख्यन्त्रके ॥ ४२ ॥
 प्रलयो मरणे श्लेषे मूर्च्छासंवर्तयोरपि ।
 प्रवहो वायुभेदे स्याद् वायुमात्रे बहिर्गतौ ॥ ४३ ॥
 प्रयोगो ग्राम्यधर्मे स्यात् कुसीदे कर्मणां विधौ ।
 प्रणयः स्यात् परिचये याच्वायां सौहृदेऽपि च ॥ ४४ ॥
 प्रवाहस्तु प्रकृष्टाश्वे जलवेगे प्रवर्तने ।
 पादपः पादपीठे स्यात् पादयाने द्रुमेऽपि च ॥ ४५ ॥

पिण्याकः सिंहके किण्वे श्रीवासतिलकल्कयोः ।
 पुरुषो धातुपुन्नागपुंस्त्वात्मपरमात्मनोः ॥ ४६ ॥
 पुलकोऽस्त्रे रत्नराज्यां रोमास्त्रे हीरके क्रिमौ ।
 पुलाकस्तुच्छधान्ये स्यात् सङ्क्षेपे भक्तसिक्थके ॥ ४७ ॥
 प्रसवो जननानुज्ञापुत्रेषु फलपुष्पयोः ।
 पारम्पर्यं प्रसङ्गेऽपि प्राणिनां गर्भमोचने ॥ ४८ ॥
 तुलासूत्रेऽश्वादिश्मौ प्रग्राहः प्रग्रहः पुनः ।
 तयोश्च संयमोद्योतपूलाबन्धगर्वधेषु च ॥ ४९ ॥
 प्रभवः स्यादपां मूले विक्रमे जन्मकारणे ।
 आद्योपलब्धिस्थाने च पुद्गलो देह आत्मनि ॥ ५० ॥
 प्रत्ययस्तु ख्यातिरन्ध्रविश्वासाधीनहेतुषु ।
 विज्ञाने शपथे शब्दे प्रस्तरोऽश्मा मणिः कुशः ॥ ५१ ॥
 पर्यस्त्यामपि पर्यङ्कः प्रकोष्ठोऽलिन्दकेऽपि च ।
 गजस्कन्धेऽपि पणवः प्रघणौ लोहमुद्गरौ ॥ ५२ ॥
 प्रियकः कृकलासेऽपि पेचकस्त्वचि हस्तिनाम् ।
 पुच्छमूले प्रपातस्तु पाते रोधसि सौप्तिके ॥ ५३ ॥
 पदाजिर्युधि मार्गे च रक्षोवृक्षौ पलाशिनौ ।
 प्रतिघौ रुद्रप्रतीघातौ प्रतापौ पौरुषातपौ ॥ ५४ ॥
 प्रसादौ स्वाच्छानुरोधौ पर्यायोऽवसरे क्रमे ।
 प्रदोषौ दोषराज्यशौ प्रणिधिः प्रार्थने चरे ॥ ५५ ॥
 वरुणेऽनले प्रचेताः प्रतापमाहात्म्ययोः प्रभावः स्यात् ।
 भेदसमते प्रकारौ विपर्यये विस्तरे प्रपञ्चः स्यात् ॥ ५६ ॥
 रुग्भङ्गबाणाः प्रदराः श्रेष्ठोक्षाणौ तु पुङ्गवौ ।
 पिशाचौ सत्त्वमार्जारौ पिचण्डः कुक्षिशय्ययोः ॥ ५७ ॥
 पृथुक्श्चिपिटे बाले पृदाकुर्व्याघ्रसर्पयोः ।
 भासन्तावर्कनक्षत्रे सूर्यश्चामिश्च भास्करो ॥ ५८ ॥
 भ्रातृव्यौ भ्रातृजामित्रौ भुरण्यु विष्णुभास्करो ।
 भूमिस्पृशौ वैश्यनरौ भुवन्यौ वह्निभास्करो ॥ ५९ ॥
 भूतात्मा पवने देहे यश्च कर्तुं तनौ पुमान् ।
 राजभेदाहिमार्जारश्चार्कशुकेषु मण्डली ॥ ६० ॥
 धुतूरे सर्पभेदे च मातुलो मदनः पुनः ।
 सिक्थे वसन्ते धुतूरे कन्दर्पेऽप्यथ माधवः ॥ ६१ ॥

विष्णौ वसन्ते वैशाखे मरुकौ भेककेकिनौ ।
 मिहिः वायुमेघार्का यज्वरौ तु हयाध्वरौ ॥ ६२ ॥
 युञ्जानः सारथौ विप्रे रभसो विषवेगयोः ।
 रक्ताक्षौ रक्षोमहिषौ रमती स्वर्गमन्मथौ ॥ ६३ ॥
 रुचको भूषणे दन्ते रुवथः कुक्कुटे ध्वनौ ।
 वज्रथः कोकिले काले वर्तकोऽश्वसुरे खगे ॥ ६४ ॥
 व्यवायो मैथुनेऽन्तर्धौ चित्रे दर्पे च विस्मयः ।
 वाहसौ वह्नयजगरौ दुप्रवालौ तु विद्रुमौ ॥ ६५ ॥
 विस्मभौ स्नेहविश्वासौ विबुधौ सुरपण्डितौ ।
 विकारौ रोगविकृती विष्किरी शिखकुक्कुटौ ॥ ६६ ॥
 रहःप्रकाशौ वीकाशौ विपाकः स्वेदपाकयोः ।
 विश्वात्माकेऽपि विष्कम्भो विस्तारप्रतिबन्धयोः ॥ ६७ ॥
 स्पर्धायां पौरुषे व्यामे व्यायामोऽथ परिक्रमे ।
 विहारः सौगतावासे क्रीडायां चाथ विग्रहः ॥ ६८ ॥
 युद्धे देहे विस्तरे च कुशमुष्टौ च विष्टरः ।
 विभ्रमः संशये भ्रान्तौ शोभायां चाथ वालुका ॥ ६९ ॥
 विकीर्णोऽर्थश्च विकिरी विसर्गौ मुक्तिवर्चसी ।
 विनयो धर्मविद्याधीशिक्षाचारप्रशान्तिषु ॥ ७० ॥
 विवधो वीवधश्च द्वौ पर्याहारेऽध्वभारयोः ।
 वृत्तान्तः स्यात् प्रकरणे कात्स्न्ये वार्ताप्रकारयोः ॥ ७१ ॥
 वासरौ नागदिवसौ वैकुण्ठाविन्द्रकेशवौ ।
 विषयो यस्य यो ज्ञातस्तत्र शब्दादिकेष्वपि ॥ ७२ ॥
 शपथः कर आक्रोशे शपने च सुतादिभिः ।
 बालके शिशुमारे च शिशुकोऽथाध्वरे पशौ ॥ ७३ ॥
 अध्वर्यौ च श्रपायः स्याच्छकुन्तौ भासपक्षिणौ ।
 कक्ष्यान्तरेऽपि शुद्धान्तः श्वशुर्यौ स्यालदेवरौ ॥ ७४ ॥
 मन्त्री सहायः सचिवः सहुरी वृषभास्करो ।
 स्यमीकौ वृक्षबल्मीकौ समीकौ मिथुनार्णवौ ॥ ७५ ॥
 सरण्यू वायुजलदौ संस्तरौ प्रस्तराध्वरौ ।
 क्षये रोवे च संरोधः संवर्तोऽब्दे जगत्क्षये ॥ ७६ ॥
 सङ्घर्षौ घर्षणं स्पर्धा शरखड्गौ तु सायकौ ।
 समिको वृक्षबल्मीको सृदाकू व्याघ्रपावकौ ॥ ७७ ॥

सविता सारथौ रुद्रे पितर्यर्के सुजातिभिः ।
 सन्निवेशे गणे गेहे संस्त्यायः संग्रहाः पुनः ॥ ७८ ॥
 स्वीकारोच्छ्वायसङ्क्षेपाः सम्भ्रमोऽत्यादरे भये ।
 सम्भवो जन्मसंहयोराधारानतिरेचने ॥ ७९ ॥
 आधेयस्याथ सम्भोगो भोगे करिकरे रते ।
 प्रत्यक्षे सन्निधाने च सन्निधिः स्थपतिः पुनः ॥ ८० ॥
 स्थापत्येऽधिपतौ तद्दिण बृहस्पतिसवी च यः ।
 समाधिर्ध्याननीवाकप्रतिज्ञासु समर्थने ॥ ८१ ॥
 सन्नयः समवाये च पृष्ठस्थायिबलेऽपि च ।
 समयस्तु क्रियाकारे सङ्केते चरिते सताम् ॥ ८२ ॥
 सिद्धान्ते शपथे काले स्वाध्यायो जपवेदयोः ।
 सारसो विहगे चन्द्रे हिमारिः पावके रवौ ॥ ८३ ॥
 हर्यक्षो धनदे सिंहे व्रीह्याब्दाचिष्णु हायनः ।
 महोदरेऽपि हेरम्बो हरिमा मृत्युरोगयोः ॥ ८४ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्रयक्षरकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

ब्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अमनिः पशुवङ्गण्यां जलपात्रे च दारवे ।
 अदितिः शैलकन्यायां पृथिव्यां देवमातरि ॥ १ ॥
 अभिरूपा त्विड्यशोनामस्वम्बिका मातुलान्युमा ।
 अमतिर्मरणे मोहेऽप्याकारे देह आकृतिः ॥ २ ॥
 आयतिर्दीर्घतायां स्यात् प्रभावागामिकालयोः ।
 उपधा सुपरीक्षाऽपि कृपाण्यामपि कर्तरी ॥ ३ ॥
 कल्पना समर्थनाऽपि कषिके सस्यमक्षिके ।
 कणिका तिलकाण्डेऽशो गोधूमे तस्य चूर्णके ॥ ४ ॥
 करिका यातनायां स्याच्छ्लोके विवरणे कृतौ ।
 कूचिका मस्तुपिण्डेऽपि सूचितूलिकयोरपि ॥ ५ ॥
 तुर्थेऽशो मापदण्डस्य माषस्यापि च काकणी ।
 विशतौ च कपर्दानां पादुकैककपर्दयोः ॥ ६ ॥
 गृहिणी काञ्चिकं जाया देहली गृहकारिका ।
 वेश्याकरिण्योर्गणिका वेष्टनेऽपि च गोलका ॥ ७ ॥
 पार्या कालेऽपि घटिका रथ्यायामपि चत्तरी ।
 जुगुप्सा निन्दाघृणयोर्जननी करुणाऽम्बयोः ॥ ८ ॥
 जगती विष्टपे मद्यां वास्तुच्छन्दविशेषयोः ।
 छत्रान्तालाम्बिवस्त्रेऽपि मल्लरी वेशवाद्ययोः ॥ ९ ॥
 चापे तृणत्वे तृणता दारिद्र्येऽपि च दुर्गतिः ।
 पद्माकरेऽब्जे नलिनी स्वास्थ्ये नाशे च निर्वृतिः ॥ १० ॥
 निवृत्तिस्तु मनस्तोषे मोक्षेऽस्तमयबाढयोः ।
 नालिका चुल्लिकारन्ध्रे विवरे वेणुभाजने ॥ ११ ॥
 नाले काले देशमाने नियतिः संयमे विधौ ।
 प्रकृतिः पञ्चभूतेषु स्वभावे मूलकारणे ॥ १२ ॥
 छन्दःकारणगुह्येषु जन्तवमात्यादिमातृषु ।
 पक्षतिर्गरुतो मूले द्वयोः प्रतिपदोरपि ॥ १३ ॥
 अधिकारे प्रकारे च प्रक्रियोत्पादनेऽपि च ।
 गृहादिधिष्ठये पिण्डे च जङ्घामांसे च पिण्डिका ॥ १४ ॥
 परीष्टिर्मार्गणे भक्तौ पङ्क्तौ पथि च पङ्क्तिः ।
 प्रतिष्ठे स्थितिमाहात्म्ये प्रतती ततिवीरुधौ ॥ १५ ॥

बोधे तिथौ च प्रतिपत् प्रवृत्तिर्वृत्त्युदन्तयोः ।
 प्रवेणी तु कुथावेण्योः प्रसूतिः पुत्रजन्मनोः ॥ १६ ॥
 पाताली वागुरा स्थाली बन्धकी तु कार्णयपि ।
 वृत्ती पद्यवार्ताक्योः कण्टकार्या च वाचि च ॥ १७ ॥
 भित्तिका तु शतावर्या वज्रे चाप्यथ मेखला ।
 श्रोणिस्थानेऽद्रिकटके कटिबन्धेऽसिबन्धने ॥ १८ ॥
 महिषी पशुराट्पत्न्योर्मर्यादा सीम्नि धारणे ।
 पेटा पुरी च मञ्जूषा मनाका कामिनी गजी ॥ १९ ॥
 गन्धस्ते रेवती देव्यां शुक्लायां रजनी निशि ।
 रोचना रक्तकल्हारे गवां पित्ते वरस्त्रियाम् ॥ २० ॥
 पथ्यायां गन्धुमाकन्यालोहिनीषु च रोहिणी ।
 नक्षत्रे कण्ठरोगे च वर्तनी वृत्तिमार्गयोः ॥ २१ ॥
 विपणिस्तु निषद्यापि बालुकोमिश्र च बालुका ।
 बडवा स्त्रीविशेषेऽपि वाशिता करिणीस्त्रियोः ॥ २२ ॥
 वसतिस्तु निशि स्थित्यां जैनानामाश्रमे गृहे ।
 वाणिनी तु विदग्धायां नर्तक्यां मत्तयोषिति ॥ २३ ॥
 वीणा विपञ्ची सैवालपदण्डा सा नवतन्त्रिका ।
 वृषत्युतुमती कन्या शूद्रा बन्ध्या मृतप्रजा ॥ २४ ॥
 वनिता स्निग्धनार्याश्च नार्याश्चाप्यथ वेदिका ।
 वेदिश्चाङ्गुलिमुद्रा च काञ्ची छन्दश्च शकरी ॥ २५ ॥
 शङ्कुल्यूपभेदेऽपि शिञ्जिनी नूपुरज्ययोः ।
 शर्करा तु शिलाभेदे रुग्भेदाल्पकपालयोः ॥ २६ ॥
 शर्करावत्प्रदेशेषु सितायां शकले गुडे ।
 समितिः परिषत्स्थाने युद्धे संसदि सङ्गमे ॥ २७ ॥
 सन्ततिस्त्वन्ववाये स्यात् पारम्पर्ये सुतेऽपि च ।
 संहिता वर्णसंयोगे शास्त्रवेदैकदेशयोः ॥ २८ ॥
 सिद्धौ स्वभावे संसिद्धिर्वाञ्छाऽनुज्ञा च सम्मतिः ।
 संविती ज्ञानसंवादौ ह्यादन्यौ वज्रविद्युतौ ॥ २९ ॥
 हरिणी हरिता पाण्डुः सुवर्णप्रतिमा मृगी ॥ २९ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

अक्षरकाण्डे ब्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अयनं निलये मार्गे सूर्योदग्दक्षिणागतौ ।
 अंशुकं केवले वस्त्रे सूत्रमवच्छोत्तरीययोः ॥ १ ॥
 अभीक्ष्णमव्ययं वा स्यात् पौनःपुन्यभृशार्थयोः ।
 अरुलं सलिले पोतेऽप्यलीकं त्वप्रियेऽनृते ॥ २ ॥
 अनुकमन्वये शीलेऽप्यास्पदं स्थानकृत्ययोः ।
 स्तम्भमात्रेऽपि चालानं हस्तिनोऽसेऽपि चासनम् ॥ ३ ॥
 रेतसीन्द्रियमन्त्रे च दर्शनेऽक्षणि चेक्षणम् ।
 उद्यानं सङ्ग्रहोद्गत्योर्वनभेदे प्रयोजने ॥ ४ ॥
 उत्थानमुद्यमे वास्तौ तन्त्रेहापौरुषेषु च ।
 उद्धानमुद्गमे चुल्ल्यामौशीरे दण्डचामरे ॥ ५ ॥
 कटीरं कन्दरे कट्यां कलत्रं श्रोणिभार्ययोः ।
 क्रन्दनं रुदिते ध्वाने कार्मुकं शस्त्रचापयोः ॥ ६ ॥
 कारणं हेतुवधयोः कारकं हिंसकेऽपि च ।
 कीलालं रुधरे तोये कुहरं गह्वरे बिले ॥ ७ ॥
 कुरीरं प्राम्यधर्मेऽब्जे कुन्नानं कुण्डशिक्ययोः ।
 कैतवं कपटे द्यूते कृपीटमुदरे जले ॥ ८ ॥
 करणं कारणे काये साधने बवकादिषु ।
 स्पृष्टाद्युच्चारणाभेदध्यानपद्मासनादिषु ॥ ९ ॥
 रतबन्धे नाड्यभेदे गीतके कर्मणीन्द्रिये ।
 कौतुकं विषयाभोगे हस्तसूत्रे कुतूहले ॥ १० ॥
 कामे ख्याते मङ्गले च हस्तसूत्रेऽपि कङ्कणम् ।
 कटिचर्म चर्म सुस्यूतं कटीवेष्टनचर्म च ॥ ११ ॥
 कोदण्डं तु चतुर्हस्तं धनुर्वेणुधनुर्धरः ।
 केतौ तु केतनं चापे कृत्यार्थोपनिमन्त्रणे ॥ १२ ॥
 कौलीनं प्राणिभिर्द्युते कुलीनत्वापवादयोः ।
 गुणकार्ये च कौपीनं गन्धनं तु प्रकाशने ॥ १३ ॥
 सूचनेऽपि च हिंसायां परस्योत्साहनेऽपि च ।
 ग्रहणं बन्दिरादानमादरोऽर्काद्यपलवः ॥ १४ ॥

गह्वरं कन्दरे दम्भे चलनं पादयन्त्रयोः ।
 जघनं स्यात् कटौ पूर्वश्रोणिभागापराङ्गयोः ॥ १५ ॥
 तलिमं कुट्टिमे तल्पे तर्पणं त्विन्धनेऽपि च ।
 तानितं तूलितपटे गुणवादित्रभाण्डयोः ॥ १६ ॥
 तेमनं व्यञ्जने क्लेदे तोत्रे तोदे च तोदनम् ।
 दर्शनं चक्षुषि स्वप्ने बुद्धिशस्त्रोपलब्धिषु ॥ १७ ॥
 दुकूलं शुक्लवस्त्रेऽपि द्योतनं दीपनेऽक्षिण च ।
 धाराग्रमवतारेऽश्रौ निमित्तं हेतुलक्षयोः ॥ १८ ॥
 नाभीलं नाभिगन्धश्च वङ्कणं च वरस्त्रियाः ।
 निर्याणं हस्तिनेत्रान्ते मरणे निर्गमेऽपि च ॥ १९ ॥
 निर्वाणं निर्वृतौ मोक्षे विनाशे गजमज्जने ।
 निदानमपदाने स्यात् खण्डनेऽप्यादिकारणे ॥ २० ॥
 पललं तिलचूर्णे स्यान्मांसकर्मभेदयोः ।
 प्रयाणं गजहृत्पूर्वप्रदेशे मरणे गतौ ॥ २१ ॥
 प्रज्ञानं लाञ्छने बुद्धौ प्रसूनं फलपुष्पयोः ।
 पातालं लोक और्वरच पतत्रं खं गरुत्याप ॥ २२ ॥
 नवसूतगवीदुग्धे पीयूषममृतेऽपि च ।
 प्रमाणं बोधनेयत्तामर्यादाशास्त्रहेतुषु ॥ २३ ॥
 सम्यग्वक्तरि चाथ स्यात् प्रायणं मरणे गतौ ।
 पुष्करं हस्तिहस्ताग्रे जले वाद्यमुखे युधि ॥ २४ ॥
 खेऽब्जे दिव्यसिधारायां तीर्थभेषजभेदयोः ।
 ब्राह्मण्यं ब्राह्मणत्वे स्याद्विप्रौघे विप्रकर्मणि ॥ २५ ॥
 वाह्नीकं कुङ्कुमं हिङ्गु भण्डनं कवचे रणे ।
 भूतिकं भूमिनिम्बे च भूस्तृणे कत्तणेऽपि च ॥ २६ ॥
 मणीचमग्रहस्तेऽपि पुष्पमौक्तिकयोरपि ।
 मन्दिरं देहपुर्योश्च सम्बन्धे मैथुनं रते ॥ २७ ॥
 यापनं स्यान्निरसने नृत्ते प्रस्थापनेऽपि च ।
 लक्षणं कार्षिके चिह्ने नास्मि मुद्राङ्गसम्पदोः ॥ २८ ॥
 लाङ्गूलं बालधौ मेढ्रे वर्जनं त्यागहिंसयोः ।
 वराङ्गं स्त्रीभगे मूर्ध्निच्छेदे वृद्धौ च वर्धनम् ॥ २९ ॥
 व्यञ्जनं श्मश्रुनिष्ठानचिह्नेष्ववयवेऽक्षरे ।
 वृद्धत्वे वृद्धसङ्गाते वृद्धकर्मणि वार्द्धकम् ॥ ३० ॥

बालकं त्वङ्गुलीये स्याद् बर्हिष्ठे वलयेऽपि च ।
 व्युत्थानं प्रतिकूलत्वे स्वातन्त्र्यकरणेऽपि च ॥ ३१ ॥
 व्यसनं शक्तिविपदोद्वेगानिष्टफलंऽहसि ।
 पैशुन्यादौ च कोपोत्थे मृगयादौ च कामजे ॥ ३२ ॥
 विधानं हस्तिकबले प्रेरणेऽभ्यर्चने धने ।
 वेतने चाप्युपाये च प्रकारे वैरकर्मणि ॥ ३३ ॥
 वेष्टने मकुटोष्णीषौ शकले खण्डवल्कले ।
 शाळुकं पङ्कजे कन्दे जले शमलमप्यघे ॥ ३४ ॥
 शासनं निग्रहे लेख्ये वेदवाक्येषु कर्मणि ।
 वाङ्मनियोगे प्रहरणे शास्त्रे ग्रामे च निष्करे ॥ ३५ ॥
 साधनं शोकास धने सिद्ध्युपायनिवृत्तिषु ।
 मारणे मृतसंस्कारे दापनेऽनुगमे गमे ॥ ३६ ॥
 सेनाङ्गे यातनायाञ्च सेवनं स्यूतिसेवयोः ।
 मृत्यौ समाप्तौ संस्थानं सन्निवेशे चतुष्पथे ॥ ३७ ॥
 मणौ शीधौ शीधुपाने सरकं मद्यभाजने ।
 सामर्थ्ये शक्तिसम्बन्धौ हृदयं तु मनस्यपि ॥ ३८ ॥
 हिरण्यं काञ्चने वित्ते मानभेदेऽप्यकुप्यके ।
 हरणं करणे नृत्ते चापेनान्यास्त्रवारणे ॥ ३९ ॥
 हृतौ कथितशीताप्सु पणने यौतकादिके ॥ ३९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

व्यक्षरकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अर्धवल्लिङ्गाध्यायः ॥ ४ ॥

अधमौ गर्हितन्यूनावभीकौ निर्भयाभीकौ ।
 प्रत्यक्षेऽधिकृतेऽध्यक्षमखिलं गर्हकृत्स्नयोः ॥ १ ॥
 आविद्धौ क्षिप्रकुटिलावाहतौ सादरार्चितौ ।
 विपन्नप्राप्तावापन्नावाभीलौ कष्टभीषणौ ॥ २ ॥
 आप्लुतौ स्नातकस्नातावाहतं गुणिते हते ।
 आयस्तः कुपिते क्षिप्ते क्लेशिते तेजितेऽपि च ॥ ३ ॥
 इरिणं तूषरस्थाने भूभागे च निराश्रये ।
 उदारो महति ख्याते दक्षिणे दानशौण्डिके ॥ ४ ॥
 उद्धृतं भुक्तनिर्मुक्ते तुलिते चाप्यथोच्छ्रितम् ।
 वृद्धे तुङ्गे समुत्पन्नेऽप्युदितौ कथितोद्गतौ ॥ ५ ॥
 उदूढावूढप्रथुलावुत्तमौ प्रवरान्तिमौ ।
 महत्युदात्त उच्चोक्तेऽप्युपोढो निकटोढयोः ॥ ६ ॥
 अभ्यस्तेऽप्युचितं न्याय्येऽप्युषितं स्थितदग्धयोः ।
 उत्तालो हुत उत्तानेऽप्युत्कटो मत्त उद्धटे ॥ ७ ॥
 करालो दन्तुरे तुङ्गे विशाले विकृतेऽपि च ।
 कर्कशः प्रखरस्पर्शे निर्दये साहसिन्यपि ॥ ८ ॥
 द्वौ कनिष्ठकनीयांसौ यूयत्यल्पेऽनुजेऽपि च ।
 क्षुल्लका नीचनिःस्वाल्पाः कलितो ज्ञातबद्धयोः ॥ ९ ॥
 कल्माषौ कृष्णमिश्रौ च कुहकोऽपीर्ष्या युते ।
 क्षेत्रियं दुष्प्रतीकारे व्याधौ क्षेत्रोद्भवे तृणे ॥ १० ॥
 देहान्तरचिकित्सार्हं गरले पारदारिके ।
 चतुरौ दक्षधीमन्तौ जघन्योऽन्त्यकुपूपयोः ॥ ११ ॥
 जरठः कठिने जीर्णे तलिनो विरलाल्पयोः ।
 पशुः कालेऽपि निःशृङ्गो नरोऽश्मश्रुश्च तूपरौ ॥ १२ ॥
 दुर्विधो निर्धने नीचे निहतो न्यक्स्वरे हते ।
 निर्ग्रन्थः श्रमणे निःस्वे निरस्तस्तु निराकृते ॥ १३ ॥
 निष्ठयूते प्रास्तवान्ते च वचने च हुतोदिते ।
 निवातो दृढसन्नाहे निर्वातेऽप्याश्रयेऽपि च ॥ १४ ॥
 निर्दयः परदोषोक्तिपरे निष्ठुरभाषिणि ।
 प्रणाय्योऽसम्भतेऽपि स्यादनभिष्वङ्गवत्यपि ॥ १५ ॥

प्रतीतो भूषिते ख्याते ज्ञाते प्रत्ययिते बुधे ।
 प्रार्थितं त्वभियुक्ते स्यान्निहिते याचितेऽपि च ॥ १६ ॥
 पिण्डिलः स्थूलजङ्घे च गणनाकुशलेऽपि च ।
 प्रतीक्ष्यौ प्रतिपाल्याच्यौ प्रथमौ प्रवरादिमौ ॥ १७ ॥
 प्रहतौ क्षुण्णव्युत्पन्नौ प्रयतौ पूतसंस्कृतौ ।
 सव्यायत्तौ प्रसव्यौ द्वौ प्रवृद्धौ प्रसृतैर्भितौ ॥ १८ ॥
 पिण्डितौ घनसङ्ख्यातौ प्रसिद्धौ ख्यातभूषितौ ।
 पेशलौ चारुचतुरौ पूर्णश्रेष्ठौ तु पुष्कलौ ॥ १९ ॥
 मिश्रास्त्रिधौ च परुषौ प्रगाढौ गहने दृढे ।
 पामरोऽपशदेऽङ्गे च बालशो बालमूर्खयोः ॥ २० ॥
 बीभत्सौ कृरविकृतौ बहलौ सान्द्रपुष्कलौ ।
 बन्धुरौ नम्रसुन्दरौ भङ्गुरौ वक्रनश्वरौ ॥ २१ ॥
 भावितौ लब्धवासितौ भुजिष्यौ स्वैरिक्किङ्करौ ।
 मधुरौ स्वादुसुन्दरौ मूर्च्छितौ मूढसोच्छ्रयौ ॥ २२ ॥
 विधुतौ त्यक्तकम्पितौ विदितौ ज्ञानसंश्रुतौ ।
 विलीनौ लीनविद्रुतौ वेल्लितौ धूतकुञ्चितौ ॥ २३ ॥
 विगतौ वीतनिस्पृहौ विविक्तौ शुद्धनिर्जन्तौ ।
 विवर्णौ मूर्खदुर्वर्णौ व्यायतो व्यापृते दृढे ॥ २४ ॥
 विकृतौ रोगिदूरुपौ विशदो धवले शुचौ ।
 वल्लभौ दयिताभ्यक्षौ वरिष्ठोऽतिवरेऽत्युरौ ॥ २५ ॥
 पृथौ कराले विकटो विसृतं विगते तते ।
 वदान्यो बल्लुगवाग्दात्रोर्वरीयान् सत्तमेऽत्युरौ ॥ २६ ॥
 विवशस्त्वस्वतन्त्रात्माप्यरिष्टेन च दुष्टधीः ।
 विधुरः पत्न्यपेते स्यात् क्षिष्टविशिष्टयोरपि ॥ २७ ॥
 संस्कृतं लक्षणोपेते कृत्रिमे निर्मलीकृते ।
 मिश्रीकृते च संसृष्टं शुद्धे च वमनादिभिः ॥ २८ ॥
 साधीयोऽनुमतेऽत्यर्थं सत्तमे शोभनेऽपि च ।
 तथ्यपथ्यार्थवाक्येऽपि सूनृतोऽथ क्षमे हिते ॥ २९ ॥
 सम्बद्धेऽपि समर्थः स्यात् स्तिमितं स्तम्भवत्यपि ॥ ३० ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

व्यक्षरकाण्डे अर्थवलिज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

गुणार्थेऽर्थलिङ्गत्वमिहाप्युक्तं स्वयं क्वचित् ।
 अन्तरः परिधानीये बाह्ये स्वीयेऽन्तरात्मानि ॥ १ ॥
 क्ली तु मध्येऽवकाशे च तादर्थ्येऽवसरेऽवधौ ।
 विशेषविवरान्तर्धिष्ववसानविनार्थयोः ॥ २ ॥
 अक्षरोऽसौ हरौ धातर्यक्षरं प्रणवे विधौ ।
 धर्मे वर्णे तपःकृत्वोः खे मोक्षे मूलकारणे ॥ ३ ॥
 अनन्तो नागराड्विष्णुरनन्तं खनिरन्तयोः ।
 अनन्ता पूर्णिमा दूर्वा यवाषः शारिबा मही ॥ ४ ॥
 अर्जुनः पाण्डवे पाण्डौ मातुरेकसुते द्रुमे ।
 नेत्ररोगे चाजुनं तु तृणे हेमन्यर्जुनी गवि ॥ ५ ॥
 विषारुणारुणं ताम्रमरुणः सूर्यसारथौ ।
 अव्यक्तराने शशिजे सन्ध्याभ्रे लोहिते रंभौ ॥ ६ ॥
 अमृतं व्योम्नि देवान्ने यज्ञशेषे रसायने ।
 अयाचिते जले जग्धौ मोक्षेऽग्ने हेम्नि गोरसे ॥ ७ ॥
 क्लीबो ना त्वमरे स्त्री तु गुल्फ्यां मद्यभिक्षयोः ।
 आमलक्यां हरीतक्यां त्रिषु तु स्वादुनित्ययोः ॥ ८ ॥
 अरिष्टो वायसे निम्बे गोरसे निरुपद्रवे ।
 क्ली तु वर्णे मृत्युचिह्ने मद्ये ताम्रे शुभेऽशुभे ॥ ९ ॥
 अङ्गजो ना सुतेऽनङ्गे क्ली रोगे रुधिराऽपि च ।
 न ना कयाटे क्ली लोहे सोमे स्यादररः पुमान् ॥ १० ॥
 लाजेऽवभ्योषमभ्योषाः साज्याम्भःपेयसक्तवः ।
 कृकलासेऽण्डजो मत्स्ये खगे कसूरिकाऽण्डजा ॥ ११ ॥
 अविषो निर्विषेऽम्मोधावविषो दिवि पुंसि वा ।
 अपानो देहजो वायुरपानं वृषणे गुदे ॥ १२ ॥
 प्रधानेऽव्यक्तमव्यक्तो ब्रह्मण्यस्पष्टमूर्खयोः ।
 अमरेन्द्रपुरी स्थूणा गुडुची चामराः सुराः ॥ १३ ॥
 कृत्यक्षतं तण्डुले धान्ये न ना लाजेषु ना यवे ।
 अजिरं जर्जरं कामे विषयाङ्कणयोर्दृते ॥ १४ ॥
 अलसौ पादरुङ्मन्दावण्डीरौ शक्तपूरुषौ ।
 विद्युत्पत्न्योरङ्कयशानिरनीकोऽस्त्री चमूयुधोः ॥ १५ ॥

अधरोऽनूर्ध्वहीनोष्ठेऽवनृतं वितथे कृषौ ।
 आश्रमोऽस्त्री मुनिस्थाने ब्रह्मचर्यादिके मठे ॥ १६ ॥
 कोट्टारे कृपणे जीर्णे स्थानेऽभिप्राय आशयः ।
 शर्करायां दृष्टपुत्रे स्त्र्यस्त्र्यश्मन्थुपलो मणौ ॥ १७ ॥
 उत्तरं प्रतिवाक्ये स्यादुदीच्ये प्रवरोर्ध्वयोः ।
 स्त्रीलिङ्गत्वे धनुर्लक्ष्म्यां पुरुषे पावके च ना ॥ १८ ॥
 करीरो ना घटे न स्त्री पादपे वैणवाङ्कुरे ।
 करेणुस्तु करिण्यां स्त्री कर्णिकारे गजे च ना ॥ १९ ॥
 भिक्षापात्रे तु कमठं कमठौ खर्बकच्छपौ ।
 अस्त्री कशिपु शय्यायां वस्त्रेऽन्ने तद्वद्वयेऽपि च ॥ २० ॥
 करटो दुर्दुरुटे स्याद् बिल्वे काकेभगण्डयोः ।
 कल्याणी क्षोमयोः क्ली तु मङ्गलेऽक्षयरुक्मयोः ॥ २१ ॥
 रागे काथे कषायोऽस्त्री निर्यासे सौरभे रसे ।
 कान्तार इक्षुभेदे ना न स्त्री व्यध्वे महावने ॥ २२ ॥
 कीनाशो रक्षसि यमे कदर्ये कर्षकेऽर्थवत् ।
 कुहनो मूषिके सेष्ये कुहना दम्भशोलता ॥ २३ ॥
 कुशलं निपुणे पुण्ये पर्याप्तौ मङ्गले क्षमे ।
 कुकूलं शङ्कुभिः कीर्णे श्वभ्रे ना तु तुषानले ॥ २४ ॥
 कुण्डली चित्रलमृगे सर्पे कुण्डलवत्यपि ।
 कुङ्कुमे महारजने कुसुम्भं ना कमण्डलौ ॥ २५ ॥
 केवलं निश्चिते क्लीवे वाच्यवत्त्वेककृत्स्नयोः ।
 कमलं छुरिकादीनां हेमाद्यैश्चित्रिताजिने ॥ २६ ॥
 रक्ताब्जजेऽप्सु च श्रीस्तु कमला कमलो मृगः ।
 अक्ली कोल्यां क्रोष्टुकोल्यां कर्कन्धूः स्त्री तु संयुगे ॥ २७ ॥
 तथा मध्वाज्यसंसिक्तधवलाजजतर्पण ।
 कुमारः स्याद् गुहे बाले वरणेऽश्वानुचारके ॥ २८ ॥
 युवराजे च ना क्ली तु द्वीपे पुंस्त्री मृगोमयोः ।
 कुतपो भागिनेयेऽर्के विप्रेऽग्नावतिथौ गवि ॥ २९ ॥
 अस्त्री त्वहोऽष्टमे भागे तिलेषु ह्यागकम्बले ।
 दर्भे च केसरस्त्वस्त्री सिंहकेशाश्वकेशयोः ॥ ३० ॥
 कलिलं गहने घृन्दे सैन्येऽपि कटकोऽस्त्रियाम् ।
 किञ्चलकः केसरे स्त्रे क्ली कृषकौ फालकर्षकौ ॥ ३१ ॥

कातरः पण्डके त्रस्नौ क्षेत्रज्ञावात्मशिक्षितौ ।
 कुसीदमृणवृद्धौ क्ली वाच्यवद् वृद्धिजीविनि ॥ ३२ ॥
 कलिङ्गं तु यवे ना तु देशपक्षिशेषयोः ।
 खनको भूमिवित्तज्ञे मूपिकेऽप्यवदारके ॥ ३३ ॥
 गर्जितो मत्तमातङ्गे क्ली तन्नादेऽम्बुध्वनौ ।
 गण्डूषोऽस्त्री गण्डपूर्तौ प्रसृते गजपुष्करे ॥ ३४ ॥
 पार्थचापे चापमात्रे गाण्डीवो गाण्डिवोऽस्त्रियौ ।
 कशेरुहेम्नोर्गाङ्गेयं गाङ्गेयो गुहभीष्मयोः ॥ ३५ ॥
 ग्रामणीः स्वामिनि श्रेष्ठे ग्रामेशे नापिते तु ना ।
 गोमुखोऽस्त्री वाद्यभेदे नक्रे नाले वने नपुम् ॥ ३६ ॥
 गोष्पदं गोखुरश्वभ्रे मानगोगम्ययोरपि ।
 वृत्तैकमक्ते चरणे चरणा बह्वचादयः ॥ ३७ ॥
 स्थण्डिले प्राङ्गणे च क्ली चत्वरं ना चतुष्पथे ।
 चातुरः शकटे चक्रगण्डे नयनगोचरे ॥ ३८ ॥
 चपलः पारदे शीघ्रे दुर्विनीते चले कपौ ।
 चले केशे च चिकुरो जराटवस्त्र्यम्बुजेऽपि च ॥ ३९ ॥
 जृम्भितं जृम्भणोऽङ्गुलविष्टेषु विचेष्टिते ।
 जीवकः प्रवरे जन्तौ श्रमणे वृद्धिजीविनि ॥ ४० ॥
 जर्जरस्त्रिषु जीर्णे स्यात् पुमानिन्द्रध्वजे पिके ।
 टगरष्टङ्गनक्षारे ना केकरदृशि त्रिषु ॥ ४१ ॥
 स्त्री नौनद्योर्ब्रजस्तम्भे तरणिर्नार्णवे रवौ ।
 भुवीन्द्रपुत्र्यां तविषी ताविष्यब्धिदिवोर्नरौ ॥ ४२ ॥
 तमिस्रा स्त्री ध्वान्तनिशि निश्यन्धतमसे न ना ।
 तातगुः शुद्धताते ना ताताय तु हिते त्रिषु ॥ ४३ ॥
 तातलो लोहकूटे ना त्रिषु तप्ते मनोजवे ।
 तरलो भास्वरे हारे चञ्चलेऽप्यथ तारका ॥ ४४ ॥
 न नाक्षिमध्ये नक्षत्रे द्विजिह्वौ सूचकोरगौ ।
 दुर्वर्णं दुष्प्रभे रूप्ये देयभेदे तु दक्षिणा ॥ ४५ ॥
 त्रिष्ववाकृसरलावामेष्वन्यच्छन्दानुवर्तिनि ।
 कनिष्ठपत्न्यामरतौ पुनर्भूपरिविद्ययोः ॥ ४६ ॥
 स्त्री पुनर्भवास्तु पत्यौ ना दिधिषुर्दिधिषूरपि ।
 स्याद् दीपकमलङ्कारे स्वरूपे दीप्तिमत्यपि ॥ ४७ ॥

दुन्दुभिः पुंसि भेर्या स्त्री त्वक्षबिन्दुत्रिकद्वये ।
 धर्षणं सुरते धार्ष्ट्यं कुलटायां तु धर्षणी ॥ ४८ ॥
 चारौ श्रेष्ठे वृषे श्वेते धवलो धवली गवि ।
 धौताञ्जले रजक्याञ्च धावनी धावनं गतिः ॥ ४९ ॥
 धिषणा स्त्री धियां गौर्या स्त्रीचिहे ना तु गीष्पतौ ।
 नागरं पुरजे चुक्रे शुण्ठीराजकशेरुणोः ॥ ५० ॥
 निधनोऽस्त्री कुले नाशे निखिशः क्रूरखड्गयोः ।
 नालीकमञ्जे बाणे ना निशान्तं गृहशान्तयोः ॥ ५१ ॥
 केशादिशौक्ये पलितं शैलेये ना तु कर्दमे ।
 पटलं द्रुमकृद्धिषोः क्ली न ना पटके गणे ॥ ५२ ॥
 पर्याप्तं स्याद्यथाकामे तृप्तौ शक्तौ निवारणे ।
 प्रवणो दक्षिणे प्रहे क्रमनिम्ने चतुष्पथे ॥ ५३ ॥
 प्रकाशोऽर्चिषि दीधित्यां ना तुल्यस्फुटयोस्त्रिषु ।
 मुखे प्रतीकस्त्रिषु तु प्रतिकूलानुरूपयोः ॥ ५४ ॥
 वीणादण्डे प्रवालोऽस्त्री विद्रुमे नवपल्लवे ।
 प्रसूनमर्थवज्जाते पुष्पे क्ली सारथौ पुमान् ॥ ५५ ॥
 प्रमीवमस्त्री कलशे प्रीवाप्रासादयोरपि ।
 पाटला गवि पाटल्यामाशुव्रीहिस्तु पाटलः ॥ ५६ ॥
 पिनाकोऽस्त्री रजोवर्षे शूले शङ्करधन्विन ।
 त्रिषूर्ध्वबाहुपुमात्रे क्ली पुंसो भावकर्मणोः ॥ ५७ ॥
 पौरुषं पल्लवं त्वस्त्री प्रकोष्ठेऽप्यतिविस्तृतौ ।
 पवित्रोऽग्नौ हरौ पूते क्ली तु ताम्रेऽप्सु गोमये ॥ ५८ ॥
 मन्त्रे दधि ब्रह्मसूत्रे हेम्नमर्थे कलशे कुशे ।
 पुलस्त्यवंश्ये पुरुषे पौलस्त्यः क्ली तु संयुगे ॥ ५९ ॥
 फलकी चन्दने स्त्री न स्त्री दार्वासनचर्मणोः ।
 फेनिलं बदरे फेनयुक्तेऽथ ब्राह्मणो द्विजे ॥ ६० ॥
 आमत्से क्ली तु विधिवद्वेदभागतदंशयोः ।
 बहुलः कृष्णपक्षेऽग्नौ पुमांस्त्रिष्वसिते बहौ ॥ ६१ ॥
 स्त्री स्यात् पृथिव्यामुखायामेलायां कृत्तिकासु च ।
 भविलं भवने भव्ये भ्रमरः कामुकेऽलिनि ॥ ६२ ॥
 उद्याने मलयं ना तु गिर्यशगिरिभेदयोः ।
 मत्सरोऽन्योदयद्वये तद्वत्कृपणयोस्त्रिषु ॥ ६३ ॥

मन्थरः सूचके कोपे मन्थाने मन्दगामिनि ।
 मार्गणं मृगणायां स्यान्मार्गणो याचके शरे ॥ ६४ ॥
 दूर्वायां स्त्रीक्षुमूले क्ली गोरसेऽपि च मोरटम् ।
 त्रिलिङ्गं मण्डलं वृन्दे ग्रामौघप्रतिबिम्बयोः ॥ ६५ ॥
 उपसृत्यं कुष्ठरोगे देशे द्वादशराजके ।
 मुचिरौ धर्मदातारौ मोदकौ स्वाद्यहर्षकौ ॥ ६६ ॥
 पित्रादेः कन्वयाऽऽपेऽर्थे क्ली स्वीये त्रिषु यौतकम् ।
 युतकं युगले युक्ते यौतके वसनाञ्जले ॥ ६७ ॥
 संश्रयेऽग्रे च शूर्पस्थे वस्त्रभेदे च योषितः ।
 रसनं क्ली कषायेऽग्ने द्रवे स्नेहे विषे फले ॥ ६८ ॥
 निर्यासे हेम्नि रूप्ये च जिह्वास्वादनयोर्न ना ।
 रेवटं दक्षिणावर्तशङ्खे रेणौ तु रेवटः ॥ ६९ ॥
 वातूले विषवैद्येऽथ रजतं शोणिते हृदे ।
 श्वेते हारेऽप्यथोष्ठेऽलौ रवणः शब्दनेऽर्थवत् ॥ ७० ॥
 रोषाणो रोषणे स्वर्णधर्षणप्राणि पारदे ।
 रौहिषं रक्तकतुणे मत्स्यभेदे मृगे च ना ॥ ७१ ॥
 लालसा तु ना नौत्सुक्ये दौहदाद्यभिलाषयोः ।
 ललामोऽस्त्री ललामापि प्रभावे पौरुषे ध्वजे ॥ ७२ ॥
 श्रेष्ठे भूषापुण्ड्रशृङ्गपुच्छचिह्नाश्वलिङ्गिषु ।
 लोचको मांसपिण्डे स्यान्नोलिन्यां चर्मणि भ्रावि ॥ ७३ ॥
 रक्तांशुके दुष्टबुद्धौ क्रोष्टृधूर्तौ तु वस्त्रकौ ।
 विनीतस्त्रिष्वपि प्राप्ते निश्चृते विजितेन्द्रिये ॥ ७४ ॥
 विनयं ग्राहिते चैव सुखवाहिहये पुमान् ।
 विषयी राक्षि कन्दर्पे विषयस्थजने च ना ॥ ७५ ॥
 अर्थवद्विषयोपेत इन्द्रिये तु नपुंसकम् ।
 अस्त्री वितानमुल्लोचे विस्ताराध्वरयोः क्षणे ॥ ७६ ॥
 त्रिषु शून्ये च मन्दे च विषाण्युक्षेभशृङ्गिषु ।
 भैक्यां पुनर्मवायां स्त्री वर्षाभूर्दुर्दुरे न वण् ॥ ७७ ॥
 वयःस्थाऽऽमलकीपक्ष्याप्राङ्गीषु तरुणे त्रिषु ।
 वलजा वरेनार्या च क्षेत्रे द्वारि च सा न ना ॥ ७८ ॥
 वर्णकोऽस्त्री प्रकारे स्याच्चन्दने स्यञ्जलेपने ।
 दुःखे विलक्षे व्यलीकमप्रियाकार्ययोस्तु ना ॥ ७९ ॥

वातूलो वातसङ्घाते वातले मरुतोऽसहे ।
 विहायाः पुंनपुं व्योम्नि पुमानैव पतत्रिणि ॥ ८० ॥
 विशिखा तु खनित्री च क्ली चित्ते ना त्वसौ शरे ।
 विमानोऽस्त्री देवयाने सप्तभूमे च सद्मनि ॥ ८१ ॥
 विटपोऽस्त्री द्रुविस्तारे पल्लवे स्तम्बशाखयोः ।
 विषाणस्त्रिषु लिङ्गेषु पशवङ्गाजदन्तयोः ॥ ८२ ॥
 वेदना दुःखानुभवे ज्ञाने च स्त्रीनपुंसकम् ।
 स्कन्दे विशाख ऋते स्त्री विहायः स्फुटहासयोः ॥ ८३ ॥
 पापेऽपि वृजिनं केशो पुमान्निन्दुस्तु शर्वरः ।
 स्त्री रात्रिसन्ध्याशर्वर्योर्द्वैत्ये ना शम्बरोऽप्सु षण् ॥ ८४ ॥
 शयथुस्त्रिषु निद्रालौ मृत्यावजगरे च ना ।
 शय्यायां शयनं न स्त्री निद्रासुरतयोर्नपुम् ॥ ८५ ॥
 शरत्पकादिशालीनौ प्रत्यग्रोऽब्जश्च शारदः ।
 गम्भार्या कट्फले श्रीपर्ण्यग्निमन्थाब्जयोर्नपुम् ॥ ८६ ॥
 यमेऽपि शमनो ध्वान्ते क्ली हिंसे त्रिषु शर्वरः ।
 करञ्जभेदे षड्ग्रन्थः षड्ग्रन्था ग्रन्थिकं वचा ॥ ८७ ॥
 समानः प्राणभेदे ना त्रिष्वेकसमसाधुषु ।
 संस्कारो ना संस्कृतिः स्त्री सङ्कल्पप्रतियत्नयोः ॥ ८८ ॥
 स्पर्शनः पवमाने स्यात् स्पर्शनं सृष्टिदानयोः ।
 सारङ्गः शबलो वर्णश्चातकः षट्पदो मृगः ॥ ८९ ॥
 छिद्रे छिद्रान्विते वाद्ये सुपिरं सुषिरो नडः ।
 सुमनाः पुष्पमालत्योः स्त्री देवबुधयोः पुमान् ॥ ९० ॥
 सैन्धवोऽश्वेऽश्वभेदे ना न स्त्री तु लवणोत्तमे ।
 बदरेऽपि च सौवीरं ना नीवृद्रोपघोण्टयोः ॥ ९१ ॥
 सङ्गरो ना क्रियाकारे प्रतिज्ञाविपदोर्युधि ।
 शमीफले तु षण्डोऽथ सम्बाधौ योनिसङ्कटौ ॥ ९२ ॥
 सुरभिर्वाच्यवत् सौम्ये सुगन्धौ स्त्री त्वसौ गवि ।
 पुमांश्चैत्रे वसन्ते च सेवकौ स्यूतभाजकौ ॥ ९३ ॥
 सुकृतं शोभने धर्मे हर्षुलो मृगकामिनोः ॥ ९३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

त्र्यक्षरकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

त्र्यक्षरकाण्डः समाप्तः ॥ ७ ॥

८. अथ शेषकाण्डः

पुंलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

अकारादिक्रमेणादाविहोक्त्वा चतुरक्षरान् ।
 अध्यायान्तेषु सङ्कीर्णाः कृताः पञ्चाक्षरादयः ॥ १ ॥
 अनुबन्धो दोषमावे प्रकृत्यादेर्विनश्वरे ।
 मुख्यानुयायिनि शिशौ प्रकृतस्यानुवर्तने ॥ २ ॥
 अपहारः पुनश्चोरे द्यूतयुद्धादिविश्रमे ।
 निमन्त्रणोपनेतव्यद्रव्ये ग्राह्यव्यादसि ॥ ३ ॥
 अवग्रहो वृष्टिरोधे प्रतिबन्धे गजालिके ।
 अवष्टम्भः समालम्भे स्तब्धिकाञ्चनयोरपि ॥ ४ ॥
 पिशाचादिग्रहे तीर्थेऽप्यवतारोऽवतारणे ।
 अवरोहोऽवतरणं शाखाप्याग्रादुगताङ्घ्रितः ॥ ५ ॥
 अधिवासो निवासे स्याद् गन्धधूपादिसंस्कृतौ ।
 अपवर्गः क्रियासाध्यफलाप्तौ त्यागमोक्षयोः ॥ ६ ॥
 अपभ्रंशोऽपशब्दे स्याद् भाषाभेदप्रपातयोः ।
 अपदेशस्तु लक्ष्णे स्यान्निमित्तव्याजयोरपि ॥ ७ ॥
 अनुभावः प्रभावे स्यान्निश्चये भावसूचके ।
 पश्चात्तापे त्वनुशयो दीर्घद्वेषानुबन्धयोः ॥ ८ ॥
 अनुषङ्गस्तु कारुण्ये प्रकृतस्यानुवर्तने ।
 अभिमानस्तु विज्ञाने प्रणये दर्पहिंसयोः ॥ ९ ॥
 अभिषङ्गस्त्वभिभावे सङ्ग आक्रोशनेऽपि च ।
 अभिहारोऽभियोगे च चौर्यसन्नाहयोरपि ॥ १० ॥
 स्नाने मद्यस्य सन्धानेऽभिषवः सवनेऽपि च ।
 अभिग्रहोऽभियोगे च समन्ताद्ग्रहणेऽपि च ॥ ११ ॥
 संयुगे स्यादभिमरः सबलादपि साध्वसे ।
 कुले त्वभिजनो जन्मभूमौ चाथामरे ऋषे ॥ १२ ॥
 अनिमेपोऽप्यनिमिषोऽप्यथ चण्डालशिष्ययोः ।
 स्यादन्तेवास्यथर्वज्ञे त्वथर्वाणिः पुरोहिते ॥ १३ ॥
 नृपरक्षिष्वनीकस्थो हस्तिशिक्षाविचक्षणे ।
 अपवादौ तु निन्दाज्ञे स्तुतिस्नेहावपह्नवौ ॥ १४ ॥

वह्निवातावपाङ्गभौं गुह्यगूधाववस्करौ ।
 कूर्मेशोऽन्धावकूपारोऽवलेपो लेपगर्वयोः ॥ १५ ॥
 अशिःस्कौ बाहुरुण्डावलोणेऽस्फुटापि वाक् ।
 आशोचनी तु वह्नीन्दू आत्मयोनी स्मरानिलौ ॥ १६ ॥
 ब्रह्माऽप्यथोपचर्यायामुपचार उपायने ।
 उपनाहो वैरबन्धे वीणायाश्च निबन्धने ॥ १७ ॥
 उपक्रमश्चित्सायामुपधाऽऽरम्भयोरपि ।
 उपग्रहस्तु बन्दौ स्याद् ग्रहणेऽप्यनुकूलने ॥ १८ ॥
 उपतापौ रुजातापौ द्वारपालेऽप्युदास्थितः ।
 स्नानाचान्त्योरुपस्पर्शो हरानुच्चैःश्रवा हये ॥ १९ ॥
 दात्यौहाली कलकाणौ खड्गिखड्गौ करालिकौ ।
 कलहंसो राजहंसे कादम्बे श्रेष्ठभूभुजि ॥ २० ॥
 कुरुविन्दो हिङ्गुलेऽपि मुस्तेऽप्यथ गुहाशयः ।
 ऋक्षे सिंहे च कूर्मे च ग्रहराजोऽर्कचन्द्रयोः ॥ २१ ॥
 घनाघनो मत्तगजे वासवे वार्षकाम्बुदे ।
 चक्रपादौ रथगजौ चित्रभानू इनानलौ ॥ २२ ॥
 देशे जने जनपदश्चन्द्रेऽर्केऽग्नौ तमोनुदः ।
 तमोपहोऽप्यथोल्लुके तस्करे कुमुदाकरे ॥ २३ ॥
 दिवाभीतो दिवाकीर्ती पुनश्चण्डालनापितौ ।
 दर्दुरीकोऽनले वाद्ये पार्थाग्नीन्द्रा धनञ्जयाः ॥ २४ ॥
 अग्न्युत्पातौ धूमकेतू धन्वन्तरिरिनाब्जयोः ।
 पर्परीकौ वह्निभक्त्यौ शौर्योद्योगौ पराक्रमौ ॥ २५ ॥
 अमिरुद्रौ पशुपती नाशावज्ञपराभवौ ।
 रक्षःसन्तौ पुण्यजनौ नीचमूर्खौ पृथग्जनौ ॥ २६ ॥
 द्वारद्वास्थौ प्रतीहारौ स्तनाम्भोदौ पयोधरौ ।
 काशे नडे पोटगलः पवमानोऽग्निवातयोः ॥ २७ ॥
 परिमर्वेऽपि परिमलः पितामहौ ब्रह्मपितृतातौ ।
 परिवारः प्राबारेऽपि नृपार्हाथेऽपि परिवर्हः ॥ २८ ॥
 परिवर्तौ जगन्नाशौ निमचेऽब्दे परिभ्रमे ।
 पर्युप्तौ च परीवाव आलबाले परिच्छिन्दे ॥ २९ ॥
 परनीस्वीकारशपथमूलेष्वपि परिग्रहः ।
 परिक्षेपौ हस्तिपादपार्श्वे सम्परिवेष्टने ॥ ३० ॥

प्रतियत्नस्तु संस्कार उपग्रहणलिप्सयोः ।
 स्थाने गोष्ठ्यां सत्रशाले प्रत्याहारे प्रतिश्रयः ॥ ३१ ॥
 प्लवङ्गमः कपौ भेके प्लवङ्गप्लवगाविव ।
 मौक्तिकेऽस्त्रे पारशवो विप्राच्छूद्रासुतेऽयसि ॥ ३२ ॥
 विवेके स्यात् परिकरः पर्यास्तपरिवारयोः ।
 प्रगाढगात्रिकाबन्धे समूहारम्भयोरपि ॥ ३३ ॥
 प्रतिग्रहः क्रियाकारे चमूष्ठे पतद्गृहे ।
 दानद्रव्ये स्वीकृतौ च त्वष्ट्यर्के प्रजापतिः ॥ ३४ ॥
 दक्षादिष्वग्निजामात्रो राज्ञि ब्रह्मणि धातरि ।
 ब्रह्मपुत्रस्तु रुद्रेऽपि बाहुलेयो गुहे वृषे ॥ ३५ ॥
 धूम्याटेऽलौ भृङ्गराजो महाराजौ नृपार्थपौ ।
 महालयो महागेहे विहारे परमात्मनि ॥ ३६ ॥
 महाकालस्तु किम्पाके हरे बाणासुरेऽपि च ।
 रजसानू धर्ममेधौ रौहिणेयो हलीन्दुजौ ॥ ३७ ॥
 लक्ष्मीपुत्रोऽश्व आढ्ये च राज्ञि लक्ष्मीपतिर्हरौ ।
 लोकपालो नृपेन्द्राद्योर्हये वातप्रमीर्मृगे ॥ ३८ ॥
 बाढवेयोऽश्विनोर्विप्रे वासुदेवो हये हरौ ।
 विश्वगोप्ता हरौ शके चन्द्रेऽर्केऽग्नौ विभावसुः ॥ ३९ ॥
 वृषसानुः पुंसि मृत्यौ विष्णौ रुद्रे वृषाकपिः ।
 वानप्रस्थौ मधुष्ठीलपलाशावथ सङ्करे ॥ ४० ॥
 व्यसने च व्यतिकरो विश्वकर्माब्जजो रविः ।
 त्वष्टा च विप्रलापस्तु विप्रलम्भोपमर्दयोः ॥ ४१ ॥
 वारवाणिर्ज्योतिषिके धर्माध्यक्षेऽप्यथो वटे ।
 वनस्पतिर्वृक्षमात्रेऽप्यग्नीन्द्रकौ विरोचनाः ॥ ४२ ॥
 व्यवहारो वाक्प्रयोगे सम्बन्धे द्यूतदण्डयोः ।
 शासने वित्तसंवादे विवादेऽसिवाणिष्ययोः ॥ ४३ ॥
 वर्धमानः शरावे स्यादेरण्डे भूषणेऽपि च ।
 शङ्कुर्णौ गर्दभोष्ठावलिबाणौ शिलीमुखौ ॥ ४४ ॥

श्रीवत्साङ्गौ हरिवृकौ सिंहकाकौ सकृत्प्रजौ ।
 सहसानुर्मयूरेऽहौ सम्प्रयोगो रतेऽन्वये ॥ ४५ ॥
 स्तनयितुर्गर्जितेऽभ्रे विरोधे तु समुच्छ्रयः ।
 उन्नतावप्यथ क्रोष्टौ शुनि सालावृको वृके ॥ ४६ ॥
 समाहारस्तु सङ्क्षेप एकत्र करणेऽपि च ।
 समाह्वयस्तु पद्याद्यैर्द्युते नामनि संयुगे ॥ ४७ ॥
 सम्परायस्तु सङ्ग्राम आपदागामिकालयोः ।
 स्थूलोच्चयस्त्वसाकल्ये गजानां मध्यमे गते ॥ ४८ ॥
 सोमयोनिः सुरे विप्रे हरिरोमान्जजेन्द्रयोः ।
 हस्तिमल्लो गणपतौ महेन्द्रस्य च कुञ्जरे ॥ ४९ ॥
 (इति चतुरक्षराः)

वर्णमात्रेऽभिनिष्ठानो हरीशावपराजितौ ।
 आशुशुक्ष्णिरर्केऽग्नौ यज्वन्यप्यासुतीवलः ॥ ५० ॥
 शौण्डिके चाप्यथानन्ते कुबेरे चैककुण्डलः ।
 आग्ने चामरपुष्पः स्यात् काशकेतकयोरपि ॥ ५१ ॥
 ज्योतिषाम्पतिरर्के च चन्द्रे चाप्यथ चुम्बने ।
 ओष्ठे च दशनोच्छिष्ट उच्छ्वासेऽप्यथ नीपके ॥ ५२ ॥
 धूलीकदम्बो वरुणफलेऽथो नागवारिकः ।
 गणस्थे हस्तिपाले च यमेऽपि पृथिवीपतिः ॥ ५३ ॥
 प्राचीनबर्हिर्निद्राग्न्यो रुद्रेन्द्रौ मेघवाहनौ ।
 मातुलपुत्रस्तून्मत्तफले मातुलसुतेऽपि स्यात् ॥ ५४ ॥
 कुटजेऽपि च यवफलको बडबामुख और्ववह्नौ च ।
 विकङ्कते गोक्षुरे च कोल्यां च स्वादुकण्टकः ॥ ५५ ॥
 निम्बेऽपि हिङ्गुनिर्यासो हिङ्गुवृक्षरसेऽपि च ।
 हिरण्यबाहुः शोणारुये नदे विषमलोचने ॥ ५६ ॥
 (इति पञ्चाक्षराः)

निदाघ ऊष्मणि ग्रीष्मे स्वेदे घर्मस्तु तेषु च ।
 आतपे च दिने चाथ वरुणे यादसांपतिः ॥ ५७ ॥

यादस्पतिश्च तावन्धावप्यथो यक्षगुह्यकौ ।
 धनदेऽप्यथ वृक्षेऽद्रौ शिखर्यगनगागमाः ॥ ५८ ॥
 भ्रमरेष्टालिप्रियाद्या आग्ने जम्बूकनीपयोः ।
 वतंसोत्तंसावतंसाः कर्णपूरेऽपि शेखरे ॥ ५९ ॥
 अंशौ च केतुसूक्ष्माग्रा अप्यद्रौ शृङ्गिभैरवौ ।
 (इति विषमाक्षराः)
 आकाशे दिवसे च द्युर्विः पक्षिपरमात्मनोः ॥ ६० ॥
 पुमांसौ पुरुषात्मानौ मासौ मासनिशाकरौ ॥ ६० ॥
 (इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे पुलिङ्गाध्यायः ॥ १ ॥

श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

अर्चनायामपचितिः प्रक्षये निष्कृतौ व्यये ।
अजमोदा शाल्मलेश्च निर्यासेऽथ गदद्रुहि ॥ १ ॥
धाड्यां पाल्यां चाङ्कपालिरभिशस्तिस्तु दूषणे ।
प्रार्थने चान्तशय्या तु भूमिशय्याश्मशानयोः ॥ २ ॥
अनर्थवाचीतिकथा स्यादश्रद्धेयवाचि च ।
रहस्यार्थे तूपनिषद्धर्मवेदान्तयोरपि ॥ ३ ॥
उपलब्धिस्तु शेमुष्यां प्राप्तिविज्ञानयोरपि ।
ऋश्यप्रोक्ता शतावर्या कण्डूरातिबलधिषु ॥ ४ ॥
फलिनी स्याद् गण्डफली कलिका चम्पकस्य च ।
वाद्यभेदे घर्घरिका वाद्यानां लगुडेऽपि च ॥ ५ ॥
श्रीवेषटे तैलपर्णी स्याद् धवलेऽपि च चन्दने ।
दाक्षायणी भवान्यां भुव्यस्विन्याद्युडुषु श्रियाम् ॥ ६ ॥
गौरीदिशोर्दक्षकन्या प्रतिपत्तिस्तु गौरवे ।
प्रत्याप्तिप्रतिभाज्ञानेष्वथ नीलीविशल्ययोः ॥ ७ ॥
मधुपर्णीत्यथ द्राक्षादूर्वे मधुरसेत्युभे ।
चुच्छन्द्या राजपुत्री राजकन्या पिचिण्डके ॥ ८ ॥
वैजयन्ती पताकायां जयन्त्यां केशवस्रजि ।
गुञ्जायूथ्यौ शिखण्डिन्यौ द्राक्षा स्वादुरसा सुरा ॥ ९ ॥
समुद्रान्ता यवाषे च कार्पासीस्पृक्षयोरपि ।
गौर्योमपि सिनीवाली मदिरापि हरिप्रिया ॥ १० ॥
गङ्गा पथ्या हैमवती गौरी शुक्लवचापि च ।

(इति चतुरक्षराः)

गोरक्षजम्बूगोधूमधान्ये गोरक्षतण्डुले ॥ ११ ॥
चिलिमीलिकातसी स्यात् खद्योते कण्डभूषणे चापि ।
योजनगन्धा सीता कस्तूरी व्यासमाता च ॥ १२ ॥
वृषाकपायी श्रीगौर्योः शोफज्यां प्रावृषायणी ।
हरिद्रावां वरावां च रामायां वरवर्णिनी ॥ १३ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

व्यथने सूचनां सूचां दर्शनेऽभिनयेऽपि च ।
पार्वत्यामपि मातङ्गी रौद्रयुगा कौशिकीति च ॥ १४ ॥

माषपर्ण्या कृष्णवृन्ता सिंहपुच्छी महासहा ।
रात्रावप्यर्जुनी सौम्या शिखा चूडा शिरस्यपि ॥ १५ ॥
(इति विषमाक्षराः)

भूः क्षितौ स्थानमात्रे च वन्निकायोषितोः स्त्रियौ ।
उपायद्वारयोर्द्वीः स्यात् पूः स्यान्नगरदेहयोः ॥ १६ ॥
धूः स्याद्यानमुखे भारे नौस्तु काले तरावपि ।
ज्या पृथिव्यां च मौर्व्या च स्वर्व्योऽन्योर्द्योदिवानुभौ ॥ १७ ॥
ऋशब्दः स्याद्विव्यदितौ त्विड् ज्वालाकान्तिदीप्तिषु ।
उत्साहेऽन्नरसेऽप्यूर्क् स्यात् स्नुक् स्नुवे शोपणे गतौ ॥ १८ ॥
लक्ष्मीरिव लवङ्गे श्रीः पद्मायां कान्तिसम्पदोः ।
रुग्ज्वालाकान्तिवाञ्छासु नृट् तु लिप्सापिपासयोः ॥ १९ ॥
यथा नृष्णा यथा तर्षस्त्वग्गन्धद्रव्यवत्कयोः ॥ १९ ॥
(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
शेषकाण्डे श्रीलिङ्गाध्यायः ॥ २ ॥

नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

आत्याहितं महाभीत्यां प्राणानाकाङ्क्षिकर्मणि ।
 अपादानं कर्मणि स्यादतिवृत्तेऽवखण्डने ॥ १ ॥
 आभ्याधानमभिन्यासे वह्न्यर्थं चेध्मसङ्ग्रहे ।
 अन्वाहार्यममावास्याप्राद्धमिष्टेश्च दक्षिणा ॥ २ ॥
 समूहे स्यादाकलनं कलनज्ञानयोरपि ।
 आच्छादनं संविधाने स्यादावरणवाससोः ॥ ३ ॥
 आतञ्चनं प्रतीवापे जपाप्यायनयोरपि ।
 आराधने तोषणाप्री घात आयोधनं रणे ॥ ४ ॥
 जन्मोद्गमावुत्पत्तने रहोऽन्तिकमुपहरे ।
 उद्भासने वधोद्भासावधुत्सादनमुन्नतौ ॥ ५ ॥
 स्यादुद्धरणमुद्धान्तभक्तेऽप्युत्पाटनेऽपि च ।
 तिन्त्रिडीकं तु वृक्षाम्ले चिञ्चायामम्लवेतसे ॥ ६ ॥
 त्रिवर्णकं त्रिगन्धे स्यात् त्रिफलायां कटुत्रये ।
 निर्यातनं प्रतीकारे दाने न्यासधनार्पणे ॥ ७ ॥
 निर्भर्त्सनमलक्तेऽपि मोक्षे निःश्रेयसं शुभे ।
 शस्त्रे युद्धे प्रहरणं कार्ये हेतौ प्रयोजनम् ॥ ८ ॥
 प्रतिदानं परीवर्ते न्यासद्रव्यस्य चार्पणे ।
 पारायणं कात्स्न्यवचस्यङ्कुशस्य च बन्धने ॥ ९ ॥
 प्राणिद्युतं तु सङ्ग्रामे द्यूते च पशुपक्षिभिः ।
 शुण्ठ्यामतिविषायां च लशुने च महौषधम् ॥ १० ॥
 रतर्धिकं सुखे स्नाने दीनमङ्गलयोरपि ।
 विदारणं तु काष्ठादेर्द्वैधीकारे विडम्बने ॥ ११ ॥
 संसारे स्यात् संसरणमसन्बाधचमूगतौ ॥ १२ ॥
 समापनायां हिंसायां समाप्तौ च समापनम् ।

(इति चतुरक्षराः)

अवतरणं भूतादिग्रहे निवसनाञ्जले ॥ १३ ॥
 स्यादुपस्पर्शनं स्पर्शे स्नानाचमनयोरपि ।
 दुग्धाम्ने दुग्धतालीयं स्यात् फेनेऽपि च दुग्धजे ॥ १४ ॥

निन्दोपालम्भ आलापे नियमे परिभाषणम् ।

(इति पञ्चाक्षराः)

पराक्रमे धने द्युम्नं द्रविणं तु ग्रहेऽपि च ॥ १५ ॥
 आगः किल्बिषमेनश्च त्रीणि पाप्मापराधयोः ।
 शकुनं च निमित्तं च शुमादेः सूचकेऽपि च ॥ १६ ॥
 यज्ञोपवीतोपवीते ब्रह्मसूत्रोत्तरीययोः ।
 गम्भीरं गहनं रत्नं गह्वरं शरणं वपुः ॥ १७ ॥
 स्नेहं सेव्यं महच्छुद्धं धरुणं सर्वतोमुखम् ।
 पातालं स्वादु दिव्यं च तानि पञ्चदशास्वपि ॥ १८ ॥

(इति विषमाक्षराः)

स्वमिन्द्रिये दिवि व्योम्नि रन्ध्रनक्षत्रयोरपि ॥ १८ ॥

(इत्येकाक्षरः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां

शेषकाण्डे नपुंसकलिङ्गाध्यायः ॥ ३ ॥

अभिधेयवलिज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

(अर्थवलिज्ञाध्यायः)

अभिजातः कुलीने च न्याय्यपण्डितयोरपि ।
 अभिनीतः सुयुक्ते स्यादमर्षवति संस्कृते ॥ १ ॥
 अभिपन्ना विपन्नाप्रस्तात्तद्रुतदक्षिणाः ।
 अधिक्षिप्तं प्रणिहिते प्रेषिते भत्सितेऽपि च ॥ २ ॥
 निश्चिते स्यादवसितं समाप्त उषितेऽपि च ।
 अवदातः सिते गौरे शुद्धे चाथावलम्बिते ॥ ३ ॥
 अविदूरेऽप्यवष्टब्धमसम्पृक्तो रहस्यपि ।
 उज्जिते धिक्कृतेऽपि स्यादवध्वस्तोऽवचूर्णिते ॥ ४ ॥
 स्यादभ्यारूढमारूढे सातिरेके च सम्पदा ।
 उत्कीर्णे स्यादुल्लिखितमनुषक्ते तनूकृते ॥ ५ ॥
 उद्ग्राहितमुपन्यस्ते बद्धग्राहितयोरपि ।
 कौक्कुटिको दाम्भिके स्याद् यश्चादूरेरितेक्षणः ॥ ६ ॥
 दशमीस्थस्तु स्थविरे नष्टबीजे मृताशने ।
 परिप्राप्ते परिगतं प्रज्ञाते परिवेष्टिते ॥ ७ ॥
 प्रतिशिष्टप्रतिक्षिप्तावाहूय प्रेषितास्तयोः ।
 विशिष्टे स्यात् प्रतिहतं प्रतिस्खलितवस्तुनि ॥ ८ ॥
 समाहिते प्रणिहितं न्यस्ताभिप्राप्तयोरपि ।
 पुरस्कृतः पूजिते द्विडभियुक्तेऽप्रतः कृते ॥ ९ ॥
 पौरुषेयं वधे पुंसो बृन्दे कार्यविकारयोः ।
 ब्रह्मबन्धुरधिष्ठेये निर्देश्ये ब्राह्मणाधमे ॥ १० ॥
 यातयामं यातयामे जीर्णे भुक्तोज्जितेऽपि च ।
 लालाटिकः प्रभोश्छन्ददर्शी कार्याक्षमश्च यः ॥ ११ ॥
 विशारदो बुधे धृष्टे वञ्चिते तु विलम्बितम् ।
 मन्दे चाथ समुन्नद्धौ पण्डितम्मन्यगर्वितौ ॥ १२ ॥
 (इति चतुरक्षराः)
 कथाप्रसङ्गस्तु विषवैद्ये वाताधिकेऽपि च ।
 (इति पञ्चाक्षरः)

प्रहृष्टो हृषितो हृष्टः प्रहर्षवति विस्मिते ॥ १३ ॥
 सरोमाञ्चे प्रतिहतेऽप्यथ सप्रभदग्धयोः ।
 स्युः प्रदीप्तप्रज्वलितदीप्ता ज्वलित इत्यपि ॥ १४ ॥
 कुत्सिते वाच्यवक्तव्यौ वदितव्यविहीनयोः ।
 प्राप्तरूपोऽभिरूपश्च पण्डिते रूपवत्यपि ॥ १५ ॥

(इति विषमाक्षराः)

सन् सत्येऽभ्यर्हिते श्रेष्ठे साधीयसि भवत्यपि ।
 किं प्रश्नाच्चेपकुत्सानां वितर्कस्य च गोचरे ॥ १६ ॥
 (इत्येकाक्षरौ)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अभिधेयवलिज्ञाध्यायः ॥ ४ ॥

नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

सुखाध्यर्का अय्यथिषा अय्यथिष्यौ निशाक्षिती ।
 अवगीतं मुहुर्दृष्टे निर्वादे गर्हितेऽपि च ॥ १ ॥
 पुमानधिपतिर्मूर्ध्ना आवर्तेऽधीश्वरे त्रिषु ।
 काञ्चने शारिफलके स्यादष्टापदमस्त्रियाम् ॥ २ ॥
 अम्बरीषं रणे वर्षे तृणे नार्ककिशोरयोः ।
 आत्मनीनः सुते स्याले प्राणधारिणि दूषके ॥ ३ ॥
 आडम्बरोऽस्त्री संरम्भे पटहे गजगर्जिते ।
 उदुम्बरो द्रुदेहत्योर्ना स्त्री हेमाक्षताम्रयोः ॥ ४ ॥
 वचाजमोदयोरुग्रगन्धा ना लशुने सिते ।
 कलधौतं रूप्यहेम्नोः षण्डस्त्री तु कलध्वनौ ॥ ५ ॥
 कर्णपूरो वतसे ना स्त्री सौगन्धिक उत्पले ।
 काण्डपृष्ठः क्रीतमुते दत्ते शूद्रासुताम्भसोः ॥ ६ ॥
 शास्त्राजीवे च यश्चान्यकुलं याति स्वकं विना ।
 नासा गन्धवहा गन्धवहो मृगनभस्वतोः ॥ ७ ॥
 जलेशयो जलकपौ मत्स्ये पद्मं जलेशयम् ।
 जीवितेशः प्रेतनाथे दायते द्रविणागमे ॥ ८ ॥
 जैवातृकश्चन्द्रभिषगायुष्मत्सु कृषीवले ।
 अम्ललोण्यां दन्तशठा त्रिष्वम्लेऽम्लगुणे तु ना ॥ ९ ॥
 दुरोदरे नपुं द्यूते पणे द्यूतकरे तु ना ।
 नारायणी शतावर्या लक्ष्म्यां गौर्या च ना हरौ ॥ १० ॥
 निश्चारको निर्गमके पुरीषोत्सर्गिमारुते ।
 निषद्वरी निशा कामकर्दमौ तु निषद्वरौ ॥ ११ ॥
 निरूपणा नपुं स्त्री च निरीक्षणविचारयोः ।
 निशाचर्यसती फेरु रक्षःसर्पौ निशाचरौ ॥ १२ ॥
 यूथभ्रष्टे पक्षचरः स्यादेकचरपक्षिणोः ।
 परायणमभिप्रेते तत्परे परमाश्रये ॥ १३ ॥
 प्रतिष्कशः पुमान् द्यूते त्रिष्वग्रसहाययोः ।
 अस्त्री प्रतिसरो हस्तसूत्रे ना तु चमूकटौ ॥ १४ ॥

आरुत्ते व्रणशुद्धौ च नियोज्ये त्वभिषेयवत् ।
 पारावतः खगातस्योरीषत्पाण्डौ च पारदे ॥ १५ ॥
 नीचे ब्रीहाविन्द्रनीले प्राणनाथो यमे प्रिये ।
 पुण्डरीकं सितच्छत्रे कुष्ठभेदे सिताम्बुजे ॥ १६ ॥
 ना त्वाम्ने दिग्गजे व्याघ्रे राजिलाहौ गजे श्वरे ।
 दीप्त्यां प्रद्योतनं नार्के घोरे प्रतिभयं भये ॥ १७ ॥
 नकुले मूषिकेऽहौ ना गोधायां स्त्री बिलेशयः ।
 वृन्दारकः पुमान् देवे श्रेष्ठसुन्दरयोस्त्रिषु ॥ १८ ॥
 भागधेयं नपुं भाग्ये दायादे ना करे न षण् ।
 मस्तुलुङ्गः शिरःस्नेहे न स्त्री क्ली दधिमण्डके ॥ १९ ॥
 ओतौ चारौ धौतिदेशे मार्जालीयोऽङ्गशोधने ।
 महावीरो यज्ञपात्रे गरुडे सुभटे खगे ॥ २० ॥
 वज्रेऽश्वे तनये हंसे शूरेऽग्नौ प्रवरे हरौ ।
 राजादनं प्रियाले ना क्षीरिकायां पलाशके ॥ २१ ॥
 वारवाणं तु कूर्पासे कवचेऽपि च न स्त्रियाम् ।
 विश्वम्भरा धरित्री स्यादग्रौ विश्वम्भरो हरौ ॥ २२ ॥
 विश्वावसुस्तु गन्धर्वभेदे ना स्त्री पुनर्निशि ।
 वेणौ ना दूर्वावचयोः स्त्री बिले शतपर्व षण् ॥ २३ ॥
 शिपिविष्टस्तु खलतौ दुश्चर्मणि महेश्वरे ।
 पलमाने षोडशिका न ना न स्त्री पलद्वये ॥ २४ ॥
 सनातनो हृषीकेशे चतुर्वक्त्रे सदातने ।

(इति चतुरक्षराः)

आशितम्भवमन्नादि तृप्तिः स्यादाशितम्भवः ॥ २५ ॥
 पर्याप्तावुपसम्पन्नं मृते प्राप्ते सुसंस्कृते ।
 नक्षत्रनेमी रेवत्यां स्त्री ना विष्णौ हिमद्युतौ ॥ २६ ॥
 मूर्धाभिषिक्तो ना राज्ञि क्षत्रिये चार्थवत् प्रभौ ।
 हरिचन्दनमस्त्री स्याच्चन्दने देवपादपे ॥ २७ ॥

(इति पञ्चाक्षराः)

श्रेष्ठे वृषाङ्गे राजाङ्गे ककुदोऽस्त्री ककुभ षण् ।
 तपस्वी शिशिरे शोच्ये चन्द्रे मांसी तपस्विनी ॥ २८ ॥
 द्वीपवत्यौ धरानद्यौ द्वीपवानम्बुधौ नदे ।
 धर्मे वाद्ये प्रसृत्वा ना प्रतिपत्तिः प्रसृत्वरी ॥ २९ ॥

पद्मी गजे पद्मिनी तु नलिन्यां हस्तिनीश्रियोः ।
 ब्रह्मचारी व्रती स्कन्दो दुर्गा तु ब्रह्मचारिणी ॥ ६० ॥
 भगवत्युमा भगवान् बुद्धे पूज्ये हरे हरौ ।
 भोगी ग्रामाद्यधिकृते सर्पे सुखिमहीभुजोः ॥ ६१ ॥
 विहाय महिषीमेकां भोगिन्योऽन्या नृपस्त्रियः ।
 श्रेयोऽत्यन्तं प्रशस्ते स्यात् कल्याणे धर्ममोक्षयोः ॥ ६२ ॥
 श्रेयसी हस्तिपिप्लयामभयाराक्ष्योरपि ।
 सरस्वती सरिद्धेदे सरिन्मात्रे गवि क्षितौ ॥ ६३ ॥
 मत्स्याद्यां वाचि गङ्गायां सरस्वानम्बुधौ नदे ।

(इति विषमसङ्ख्याः)

विभूतिर्भूतिरैश्वर्यमणिमादिकसम्पदोः ॥ ६४ ॥
 ईशेश्वरौ प्रभौ रुद्रे पार्वत्यामीश्वरेश्वरी ।
 स्वभावे स्यान्निर्गमश्च सृष्टिश्चोत्पादनेऽपि च ॥ ६५ ॥
 गेहे कुलायो नीडोऽस्त्री रेतस्यपि रजो मदः ।

(इति विषमाक्षराः)

काश्चित्तात्मार्कधीधातृवाता मूर्ध्नि सुखेऽप्सु कम् ॥ ६६ ॥
 शुपन्धिष्वंशुवज्राम्बुभूवाग्दिग्दक्षु गौर्न षण् ।
 दृक् स्त्री स्यादशने बुद्धौ नेत्रे द्रष्टरि तु त्रिषु ॥ ६७ ॥
 स्वोऽस्त्री धने त्रिषु स्वीय आत्मनि स्वजने तु ना ।
 गूर्गुदे स्त्री प्रयत्ने ना रा न स्त्री धनरुक्मयोः ॥ ६८ ॥
 आत्मनि ज्ञातरि ज्ञः स्यान्ना विड् वैश्ये जने न षण् ।
 तेशब्दः क्रीडने स्त्री स्यात् क्रीडके त्वभिधेयवत् ॥ ६९ ॥
 सेशब्दः सेवने स्त्री स्यात् सेवके त्वभिधेयवत् ॥ ७० ॥

(इत्येकाक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे नानालिङ्गाध्यायः ॥ ५ ॥

पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

घातुः सर्वेऽपि पर्याया रुद्राक्षे स्युश्चतुर्मुखे ।
 तस्मिन् पञ्चमुखे शम्भोः कुमारस्य तु षण्मुखे ॥ १ ॥
 गुग्गुलुलककुटजेष्विन्द्रस्याग्नेश्च चित्रके ।
 भङ्गातकेऽप्यथार्कस्य भङ्गातक्यर्कपर्णयोः ॥ २ ॥
 कर्पूरकम्पिङ्गकयोरिन्दोर्वज्रस्य हीरके ।
 गौर्यास्त्वतस्यां कौबेरा वन्दाके क्षीरवृक्षजे ॥ ३ ॥
 खस्याभ्रके ब्रह्मणि च मेघस्याभ्रकमुस्तयोः ।
 भुवो नामानि सौराष्ट्राणां शैलेये ग्रावशैलयोः ॥ ४ ॥
 शर्वर्यास्तु हरिद्रायां प्रियङ्गुव्रततौ स्त्रियाः ।
 ध्वजधूममृगेन्द्राणां श्वोक्षरासम्बहस्तिनाम् ॥ ५ ॥
 वायसस्य पर्यायाः क्रमात् पूर्वोदिवेश्मसु ।
 हंसेन्दुकुमुदां रूप्ये कुमुदेऽपि खरस्य षण् ॥ ६ ॥
 स्योनाके तु सृगालस्य वानरस्य तु सिंहके ।
 स्पृक्कायां तस्करस्य स्युरुशीरे समरस्य हि ॥ ७ ॥
 वाट्यालकेऽस्य सान्नस्य शोणितस्य तु कुङ्कुमे ।
 कुष्ठाख्यभेषजे व्याघ्रेर्मातुर्गौर्या हृषद्गवोः ॥ ८ ॥
 पिण्डारे त्ववटोः पाणेश्चायुधस्य त्वयस्यपि ।
 अपराघे तु रन्ध्रस्य बदरस्य तु नागरे ॥ ९ ॥
 रुक्मस्याञ्जनभेदे क्ली पुंलिङ्गा नागकेसरे ।
 उन्मत्तेऽपि च बिन्दोस्तु सिध्मादौ देहवैकृते ॥ १० ॥
 रूप्यस्याञ्जनभेदे स्युरटव्यां जलमुस्तके ।
 षण्डाः केशस्य बर्हिष्ठे शिरसः शिखरे तरोः ॥ ११ ॥
 माक्षिके क्ली स्त्रियो लक्ष्म्यां नरः पद्मस्य सारसे ।
 त्वचो लवङ्गे पर्णस्य पक्षे स्त्री किंशुके नरः ॥ १२ ॥
 गणस्यान्धश्च सङ्ख्यायां बर्हिष्ठे मुस्तकेऽप्यपाम् ।
 मकराम्बुजकूर्माणां निधिभेदेषु ते नरः ॥ १३ ॥
 सङ्ख्याभेदेऽपि शङ्खस्य मीनमेषविषाणिनाम् ।
 मिथुनस्य कुलीरस्य सिंहकन्यातुलालिनाम् ॥ १४ ॥

धनुर्मकरकुम्भानां क्रमाद् द्वादशराशिषु ।
 सर्पस्य सीसके नागकेसरे द्विपसर्पयोः ॥ १५ ॥
 अग्रहण्ययसो गुन्द्रे शरस्य मकरे त्वसे ।
 शुभस्य फेनिले पुंसि कार्पासे वाससो नरः ॥ १६ ॥
 धूल्यश्वयोरश्वकन्दे पर्पटे मरिचेऽयसः ।
 इत्यादीन्यन्यनामानि बौद्धव्यान्यन्यवस्तुषु ॥ १७ ॥
 वृक्षस्य गृहनामान्ता नरः पक्षिमयूरयोः ।
 वीरात् परास्ते भङ्गाते ततः शक्राच्च तेऽर्जुने ॥ १८ ॥
 पलाशे ब्रह्मतोऽश्वत्थे श्रीतः कारस्करे विषात् ।
 मुनेः पलाशसरलस्योनाकेक्षुद्यगस्तिषु ॥ १९ ॥
 नौस्तम्भे गुणतश्चैत्यादश्वत्थोद्देशवृक्षयोः ।
 व्याघाते राजतो दीपाहीपमालाविधारके ॥ २० ॥
 नरो भुगन्ताः सर्पस्य राजसर्पमयूरयोः ।
 तार्क्ष्ये चाथारिनामान्ता नकुले केकिताक्षर्ययोः ॥ २१ ॥
 पञ्चपूर्वास्तु वक्त्रस्य व्याघ्रे सिंहे हरे नरः ।
 कण्ठस्य नीलनामभ्यो ग्रीवायाश्चेशकेकिनोः ॥ २२ ॥
 नखस्य शस्त्रनामान्ता नरो मार्जारसिंहयोः ।
 कुचन्दने कुङ्कुमे च रक्तादेश्चन्दनादयः ॥ २३ ॥
 एवं संयोगनामानि सलिङ्गान्युन्नयेत् स्वयम् ।
 पूर्वोक्तेष्वपि शब्देषु योगसम्प्राप्तवृत्तयः ॥ २४ ॥
 स्वयमूहा यथा कन्दः कं ददातीति वारिदः ॥ २४३ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां शेषकाण्डे
 पर्यायसंयोगन्यायप्रदर्शनाध्यायः ॥ ६ ॥

अनेकार्थान्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

उक्ता लिङ्गान्विताः शब्दा निर्लिङ्गान्यवययान्यतः ।
 आङ्गीषदर्थेऽभिविधौ सीम्नि कर्मविशेषणे ॥ १ ॥
 आ प्रगृह्यः स्मृतौ वाक्य आस्तु सन्तापकोपयोः ।
 ऐ दुःखभावेन कोपे प्रत्यक्षे सन्निधावपि ॥ २ ॥
 ओ स्याद् ब्रह्मण्यनुज्ञायां कं सुखेऽऽम्भसि मूर्ध्नि च ।
 प्रश्ने क्षेपे विकल्पे किं कु पापेऽल्पार्थकुत्सयोः ॥ ३ ॥
 चान्वाचये समाहारे मिथोयोगे समुच्चये ।
 तु भेदावधारणयोदुरशोभनदुःखयोः ॥ ४ ॥
 धिग्भर्त्सने कुत्सने च नि न्यग्भावानिकामयोः ।
 नाभावान्यविरोधेषु निर्निर्णयनिषेधयोः ॥ ५ ॥
 प्रश्ने विकल्पे तु स्विच्च प्रादौ यात्राप्रकृष्टयोः ।
 वि निषेधे पृथग्भावे वा विकल्पोपमानयोः ॥ ६ ॥
 समुच्चये च वै पापे वाक्यारम्भप्रसिद्धयोः ।
 स्मृतौ वृत्ते निषेधे स्म स्वः स्वर्गपरलोकयोः ॥ ७ ॥
 समभेदे समीचीने सुष्ठुपूजासुखेषु सु ।
 प्रत्यारम्भे प्रसिद्धौ ह हा विषादशुगतिषु ॥ ८ ॥
 हि स्याद्विशेषणे हेतौ हि हेतावधारणे ।
 धामन्त्रणे भर्त्सने हुं हूं सम्प्रश्नवितर्कयोः ॥ ९ ॥
 उ तापेऽव्ययमीशे ना मा निषेधे श्रियां स्त्रियाम् ।
 अ निषेधे पुमान् विष्णावि विचित्रे स्मरे पुमान् ॥ १० ॥
 तद्धेतौ त्रिष्वमुष्मिन् स्याद्यद्धेतौ प्रगते त्रिषु ।
 ह ह्यु तु स्म च वै पादपूरणेऽपि प्रयुज्यते ॥ ११ ॥
 (इत्येकाक्षराः)

अमा सहाय्ये सामीप्येऽप्यद्धा प्रत्यक्षसत्ययोः ।
 अयि प्रश्ने सानुनये विनियोगे क्रियास्वह ॥ १२ ॥
 यीडेर्ण्याऽनुमतिष्वस्तु स्यादध्यधिक ईश्वरे ।
 अलं तु भूषणे शक्तौ पर्याप्तौ विनिवारणे ॥ १३ ॥
 अपि सम्भावनाप्रश्नगर्हाशङ्कासमुच्चये ।
 अथाथोऽनन्तराऽप्यर्थविकल्पारम्भमङ्गले ॥ १४ ॥

अति स्यादधिकार्थोक्तौ प्रशंसायामतिक्रमे ।
 पश्चाद्वेतूनसाम्येषु भागे वीप्साप्रकारयोः ॥ १५ ॥
 लक्षणेऽप्यनु वीप्सादित्रयेऽप्यभिमुखेऽप्यभि ।
 अतो निन्दाहेतुचित्रेष्वाराद् दूरसमीपयोः ॥ १६ ॥
 इति हेतुप्रकरणप्रकारादिसमाप्तिषु ।
 विस्तारेऽङ्गीकृतावूरी स्यादुर्युररी यथा ॥ १७ ॥
 उपाधिकेऽन्तिके हीनेऽप्युत प्रश्नविकल्पयोः ।
 समुच्चयेऽनुमत्यां चाप्येव साम्येऽवधारणे ॥ १८ ॥
 पादपूरणकृषायमेवं साम्याभ्यनुज्ञयोः ।
 कश्चित् प्रश्ने कामवादे वार्तासम्भाव्ययोः किल ॥ १९ ॥
 निषेधे वागलङ्कारे झीप्सनेऽनुनये खलु ।
 तूष्णीमर्थे मुखे जोषं तर्हि स्यात् प्रश्न उत्तरे ॥ २० ॥
 तथा समुच्चये साम्ये परमार्थाभ्यनुज्ञयोः ।
 तिरोऽन्तर्द्धौ तिरश्चीने दिष्ट्या स्यान्मङ्गलादिषु ॥ २१ ॥
 तर्कनिश्चितयोर्नूनं नानाऽनेकोभयार्थयोः ।
 प्रश्नावधारणैतिह्यसमीहानुमते ननु ॥ २२ ॥
 नाम प्रकाश्यसम्भाव्यक्रोधोपगमकुत्सने ।
 प्रबन्धे निकटेऽतीते पुराणेऽनागते पुरा ॥ २३ ॥
 पुनरप्रथमे प्रश्ने व्यावृत्तावधारणे ।
 प्रतिदाने प्रतिनिधौ तुल्ये मात्राभिमुख्ययोः ॥ २४ ॥
 भागे प्रकारकथने वीप्सायां लक्षणे प्रति ।
 भागादिष्वेषु परि च वर्जनेऽप्यपवत् परि ॥ २५ ॥
 परा निहीनेऽनावृत्तौ बत त्वामन्त्रणेऽदुभुते ।
 तोषे खेदे कृपायाञ्च बाढं त्वनुमते भृशे ॥ २६ ॥
 मुहुः क्षणेऽनुक्षणे च मिथोऽन्योन्यरहस्ययोः ।
 यथा सादृश्ययोग्यत्ववीप्सास्वर्थानतिक्रमे ॥ २७ ॥
 यावत्तावच्च साकल्यमानावध्यवधारणे ।
 वृथा निष्कारणाविध्योः शश्वद् भूयः सदेति च ॥ २८ ॥
 सकृत् सदैकवारे च सामि स्यादर्धनिन्दयोः ।
 स्वस्ति मङ्गलनिष्पापक्षेमेष्वाशीर्वचस्यपि ॥ २९ ॥
 साक्षात् प्रत्यक्षसदृशोः पृथगर्थेऽन्तिके हिरुक् ।
 वाक्यारम्भेऽनुकम्पायां हन्त हर्षविवादयोः ॥ ३० ॥
 (इति द्व्यक्षराः)

अञ्जसा त्वरिते तत्त्वेऽप्यहहाद्भुतखेदयोः ।
 समीपोभयतश्शीघ्रशाकल्याभिमुखेऽभितः ॥ ३१ ॥
 रहस्येऽर्थ उपांशु स्यादश्रुतोच्चारणेऽपि च ।
 परितोऽन्तिके सर्वतोऽर्थे पूर्वद्युः प्रत्युषेऽपि च ॥ ३२ ॥
 पुरस्तात् पूर्वदिश्यमे पुराप्रथमयोरपि ।
 शीघ्रे सपदि सद्योऽर्थे समयाऽन्तिकमध्ययोः ॥ ३३ ॥
 सद्योऽर्थे सहसा हेतुशून्ये युक्तेऽपि साम्प्रतम् ॥ ३३ ॥
 (इति त्र्यक्षराः)

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ७ ॥

अव्ययपर्यायाध्यायः ॥ ८ ॥

शीघ्रार्थे भटिति स्नाद्राक् मरुद्वहाय सपद्यपि ।
 चिरेण चिररात्राय दीर्घकाले चिराच्चिरम् ॥ १ ॥
 विकल्पे किमुताहोस्वित् किमुताहो किमूत च ।
 सम्बोधने ननु प्याट् पाट् हे हे भो अङ्ग हन्त च ॥ २ ॥
 वौषड्वोषड्वषड्वौषड्ववाक्षट् औषड्वषट्कृतौ ।
 परितः सर्वतो विष्वक् समन्ताच्च समन्ततः ॥ ३ ॥
 किमुतातीव बलवत् स्वति सुष्ठु च साधिके ।
 पृथग्विना हिरुङ् नानाऽन्तरेणते च वर्जने ॥ ४ ॥
 कालेऽस्मिन्नधुनेदानीं सम्प्रत्येतर्हि साम्प्रतम् ।
 यदा यर्हि तदा तर्हि तदानीं सर्वदा सदा ॥ ५ ॥
 शश्वत् सनात् सना ज्योक् च युगपत्त्वेकदा सकृत् ।
 द्विस्त्रिश्चतुष्पञ्चकृत्व इत्याद्यावर्तने कृते ॥ ६ ॥
 कदाचिज्जातु सद्यस्तु तत्क्षणेऽन्यक्षणेऽन्यदा ।
 दोषा नक्तं च निश्चहि दिवाद्यैतदहर्निशम् ॥ ७ ॥
 अपरेऽह्यपरेद्युः स्यादेवं पूर्वतराधरे ।
 उत्तरेऽन्यान्यतरयोस्तर्क्याः पूर्वद्युरादयः ॥ ८ ॥
 उभयेद्युस्तूभयद्युः परे त्वहि परेद्यवि ।
 ह्यो गतेऽनागते तु श्वः परश्वस्तु ततः परे ॥ ९ ॥
 सायं साये प्रगे प्रातः काल्ये संवत्तु वत्सरे ।
 अतीतानन्तरे वर्षे परारि परुद्देशमः ॥ १० ॥
 अतीते वर्तमाने च स्यादन्ते रजनेरुषा ।
 मुहुः पुनःपुनः शश्वत् पुरस्तु पुरतोऽप्रतः ॥ ११ ॥
 सङ्कोचे चिच्चन व्यर्थे मुधा शश्वत्तु शाश्वते ।
 किञ्चनेषन्मनाक् किञ्चिद् विकल्पेऽवश्यं तु निश्चिते ॥ १२ ॥
 निष्पमं दुष्पमं दुष्ठु गर्हे सुष्ठु सु शोभने ।
 मिथ्या मृषा च वितथे यथार्थं तु यथातथम् ॥ १३ ॥
 मतप्रदाने यदि चेद् यथास्वं तु यथायथम् ।
 युक्ते स्थाने रुषोक्तावूम् बहिर्बाह्ये नमो नतौ ॥ १४ ॥

मौने तु तूष्णीं तूष्णीकां समया निकषा हिरुक् ।
 साम्ये व वैवमेवेव प्रेत्यामुत्र भवान्तरे ॥ १५ ॥
 प्राप्त्वं स्यादानुकूल्यार्थमशीघ्रे शनकैः शनैः ।
 अहो ही विस्मये प्रायो भूमन्यस्तमदर्शने ॥ १६ ॥
 समकं तु सजुः साकं सार्धं सत्रा समं सह ।
 सुखे दिष्ट्योपजोषं शमेवमां परमं मते ॥ १७ ॥
 हठे प्रसह्य मध्ये स्यादन्तरेणान्तरेऽन्तरा ।
 प्रादुराविः प्रकाशेऽर्वागवरे स्वयमात्मनि ॥ १८ ॥
 उपरिष्ठादुपयूर्ध्वे स्यादधस्तादवागधः ।
 तिरश्चि साच्युच्च उच्चैर्नीचैर्नीच्युच्चकैर्भृशे ॥ १९ ॥
 प्रकारेऽन्यथेतरथा कथमित्थं यथा तथा ।
 द्विधा द्वेधा त्रिधा त्रेधा चतुर्धा द्वैधमादि च ॥ २० ॥
 अर्थे यत्रादि सप्तम्याः पञ्चम्या यत आदिकम् ।
 इतिह स्यात् सम्प्रदाये पारेऽपारे दृशौ पशु ॥ २१ ॥

इति भगवता यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे अनेकार्थाव्ययाध्यायः ॥ ८ ॥

लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥

नाम्नां पूर्वमिहोक्तानामनुक्तानां च कृत्स्नशः ।
 सामान्यैर्लक्षणैः कैश्चित् क्रियते लिङ्गसङ्ग्रहः ॥ १ ॥
 अवधिषते विशेषोक्त्या भवेत् सामान्यलक्षणम् ।
 एकस्वरं हलादीदृद् दृङ् मा श्रीभूरिति स्त्रियाम् ॥ २ ॥
 इच्च सर्वमुदन्तेषु पाकुरञ्ज्वादि किञ्चन ।
 नदीनामाह्वयाः सर्वे प्रायेण च लताह्वयाः ॥ ३ ॥
 णचोऽन्वि व्यवहार्याद्या अङ्ङन्तास्तु पचादयः ।
 अप्रत्यये जुगुप्साद्या युजन्ता भावनादयः ॥ ४ ॥
 क्तिन्नन्तास्ततिगत्याद्याः क्तिन्ताः सम्पदादयः ।
 इन्वि स्युः कारिबोध्याद्या ण्वुलि प्रच्छर्दिकाऽऽदयः ॥ ५ ॥
 क्रीडाप्रहरणे णान्ताः पाञ्चवाद्या घवस्तु ज्ञे ।
 क्रियायां दाण्डपाताद्यास्तलङ्घ्यावृद्ध्यन्धतादयः ॥ ६ ॥
 अके वैरादिवीप्सादौ स्थुः काकोल्लुकादयः ।
 क्यपि तु ब्रह्महत्याद्या दल्ल्याद्यल्पत्वकीर्तने ॥ ७ ॥
 त्रिलोकीत्यादयोऽदन्तैः समाहारार्थकद्विगौ ।
 त्रिपात्रत्रियुगाद्याः षण्णभवन्यादयस्त्वनौ ॥ ८ ॥

(इति स्त्रीलिङ्गाः)

अदन्ताः पुंस्युपान्ताश्चेत् कणौ भरमटास्तथौ ।
 षसौ च सान्ता ये च स्युरुदन्ताः प्रायशो नरः ॥ ९ ॥
 इदन्नेष्वरतिर्विर्वणिर्वीहिर्ग्रहिः प्रहिः ।
 स्तभिः कपिः सनीरालिरर्दनिर्वमतिर्नरः ॥ १० ॥
 अङ्घ्याबन्ताश्च वृक्षार्थाः प्रायो रोहितरत्तथा ।
 शैलानामह्वयाः सर्वे गोत्राख्याश्चरणाह्वयाः ॥ ११ ॥
 कन्यन्ता राजतक्षाद्या ऋदोरपि करादयः ।
 इकस्तिपोः शासिशास्त्याद्याः स्युरेरचि जयादयः ॥ १२ ॥
 अवश्यायादयो णान्ता घान्ता दन्तच्छदादयः ।
 प्रध्याद्याः प्रादितो घोः कौ स्युर्वमध्वादयोऽथुचि ॥ १३ ॥
 प्रशनाद्या नङ्गि पाकाद्या घान्त्व ल्यौ नन्दनादयः ।
 प्रथिमाद्या इमनिचि कुणप्पीलुकुणादयः ॥ १४ ॥

(इति पुल्लिङ्गाः)

त्रान्तद्वयच्छासिसुस्नान्तं लोपधं युक्तयोपधम् ।
 अम्बुपुष्पाणि च क्लीबे रेचकं त्वभयाफले ॥ १५ ॥
 ब्रह्मोद्याद्या भावकृत्यश्लक्ष्णोऽणि त्रिष्टुभादयः ।
 स्मिताद्या भावनिष्ठान्ताः कर्णजाहादि जाहचि ॥ १६ ॥
 समूहकर्मभावार्थतद्धिते वार्धकादयः ।
 सांराविणोपमानदि नोपान्तं भावसंज्ञयोः ॥ १७ ॥
 एकद्वन्द्वान्वययीभावाः स्युरितोऽकर्मधारये ।
 अनवत्तपुरुषे शब्दाः कन्थोशीनरनामसु ॥ १८ ॥
 यथा सौशमिकन्थं स्याद् बाहुल्ये तु समासभाक् ।
 छाया यथा खगच्छायं नृपामर्त्यार्थकात् परा ॥ १९ ॥
 अराजतः सभा भूभृत्सभं रक्षःसभं यथा ।
 न काष्ठादेरशालार्था सैव दासीसभं यथा ॥ २० ॥
 उपज्ञोपक्रमान्तं च तदादित्वे विवक्षिते ।
 पाणिन्युपज्ञाभ्यादि पथस्सङ्ख्याऽव्ययात् परः ॥ २१ ॥
 शशादूर्णा गुहात् स्थूणा क्रियाऽव्ययगुणानुगम् ।
 एकत्वञ्चास्य पुण्यात् सुदिनादप्यहः परः ॥ २२ ॥
 कुटिलं गच्छतीत्यादि क्रियाणां तु विशेषणम् ।
 नपुंसकं तु भद्रं स्वरित्यव्ययविशेषणम् ॥ २३ ॥

(इति नपुंसकलिङ्गाः)

स्त्रीप्राण्यर्थाः स्त्रियां पुंसि पुंप्राण्यर्था विना त्विह ।
 स्त्रीत्वेनोक्तैस्तथाऽपत्येऽणादि ध्वन्नादि शिल्पिनि ॥ २४ ॥
 कचिद्रश्मिमयूलांशुघृणिघृष्टिगभस्तयः ।
 सृपाटी त्रिसरा सूभिः सुषुम्ना यष्टिरिङ्गुदी ॥ २५ ॥
 कलम्बी शङ्खकी मङ्गी वरटा जाटलिः कुटी ।
 शाटी रेणुहरेणूरुजल्लकाकोलिधूलयः ॥ २६ ॥
 उत्कण्ठा कङ्कती कन्दूवितस्ती रथिरञ्जलिः ।
 कूपस्य च त्रिका व्रीडा प्रेङ्खोलिः फलकी कटी ॥ २७ ॥

(इति स्त्रीपुंसलिङ्गाः)

अर्धर्चादिगणे प्रोक्तं सर्वं नृङ्गीबलिङ्गकम् ।
 तच्च लिङ्गान्तरेऽनुक्तं सर्वमुक्तं घृतादि च ॥ २८ ॥

तत्र केचिद् घृतादीनां पुंस्त्वाद्यं वैदिकं विदुः ।
 अत एकेन लिङ्गेन ते पूर्वमिह वर्णिताः ॥ २६ ॥
 पिशाचादिषु भूतोऽस्त्री शङ्कुरप्राणिगोचरः ।
 विशेषकश्च तिलकं पुण्ड्रे ब्रह्मा द्विजेऽञ्जजे ॥ ३० ॥
 दवेडाश्च कन्दलाः कालकूटाद्याः स्युः कमण्डलुः ।
 सक्तः परीतन्महिमा कर्म पर्व च लोम दोः ॥ ३१ ॥
 (इति नृषण्डाः)

अपुंसि चालनी दाम वणिज्याऽशसन्तिका स्थली ।
 शरव्यार्चिचर्गुडा पत्री स्यात् कुथे वर्णतर्णिका ॥ ३२ ॥
 सगरी नटने कृत्या त्वभिचारजदैवते ।
 मये मधूलकं चेति क्वाप्यथाकर्मधारये ॥ ३३ ॥
 अनन्तत्पुरुषे सेनाच्छाया शाला निशा सुरा ।
 नृसेनं पादपच्छायं गोशालं श्वनिशं यथा ॥ ३४ ॥
 नृसेनेत्यादयोऽप्येवं कुत्रचिद्भावकर्मणोः ।
 साहायकं साहायिका मैत्र्यं मैत्री च वृद्धयन्तोः ॥ ३५ ॥
 द्विगुरन्तन्त आबन्तोऽप्येवं नश्चात्र लुप्यते ।
 यथा त्रितक्षं त्रितक्षी क्षिखट्वं च त्रिट्व्यपि ॥ ३६ ॥
 (इति स्त्रीषण्डाः)

त्रिलिङ्गाणां तु कचिच्छुङ्गा कलशी कन्दरी दरी ।
 पेटी पुटी पटी वाटी कवाटी पिटका वटी ॥ ३७ ॥
 अर्गला दाडिमी पात्री विडङ्गा कुवली तटी ।
 मृणाली कन्दली नाली मुस्ता जम्भा हरीतकी ॥ ३८ ॥
 त्रिजातकी गन्धिघना मठी स्थाने तपस्विनाम् ।
 (इति त्रिलिङ्गाः)

गुणद्रव्यक्रियायुक्तं बुवन्तो वाच्यलिङ्गकाः ॥ ३९ ॥
 येनार्थः प्रस्तुतो नाम्ना तल्लिङ्गं वाच्यलिङ्गकम् ।
 न त्रिषु स्युर्विशिष्टार्थस्पर्शिनः पङ्कजादयः ॥ ४० ॥
 भेद्यनिष्ठत्वमेकार्थवृत्तिमात्रैककारणम् ।
 अतन्नीकृत्य भेदोक्तिः कैश्चिदाग्रीयते घुनः ॥ ४१ ॥

ते स्युरर्थसमा यद्वत् सत्त्वाद्या वाक्यगोचराः ।
 मचर्चिका मतल्लिका प्रकण्डमुद्धतल्लजौ ॥ ४२ ॥
 अमीषु नार्थलिङ्गता प्रशस्तवाचकेष्वपि ।
 योनिसम्बन्धवाचिन्यः पुत्राद्याः पुंगिरो नरि ॥ ४३ ॥
 मात्राद्याः स्त्रीगिरः स्त्रीत्वे विद्यासम्बन्धगोचराः ।
 आचार्यत्विगुपाध्यायशिष्या याज्यार्थिकास्तथा ॥ ४४ ॥
 शास्त्रार्था वैदिकार्थाश्च स्थपतिश्रोत्रियादयः ।
 अधिकारकृता मन्त्रिस्थापत्याद्यभिधास्तथा ॥ ४५ ॥
 भट्टारको भट्टारको भट्टस्तत्रभवान् भवान् ।
 भगवान् पूज्यपादश्च देवाश्चार्चार्थिकास्तथा ॥ ४६ ॥
 शत्रुमित्रज्ञशिल्प्यर्थाः प्रायस्तद्वन्न तु त्रिषु ।
 वाच्यवत् स्याद् बहुव्रीहिदिङ्नामसु तु स स्त्रियाम् ॥ ४७ ॥
 कृतः कर्तर्यसंज्ञायां कृत्याद्या ल्युट् च कारके ।
 सर्वनामान्यणाद्याश्च तद्धिताः संज्ञया विना ॥ ४८ ॥
 तद्धिताः चतुर्थ्या ये सङ्केतात् कृतकाङ्क्षयाः ।
 षट्संज्ञा युष्मदस्मच्च त्रिषु लिङ्गेष्वभेदवत् ॥ ४९ ॥
 (इत्यभिधेयवल्लिङ्गाः)

कृतद्धितसमासाख्या प्रसिद्धाख्ये च लिङ्गिनि ।
 तद्यथा चक्रभृद्विष्णुर्लताभेदाभिधा यथा ॥ ५० ॥
 द्वन्द्वस्तत्पुरुषोऽप्यन्त्यलिङ्गोऽश्वबडवौ नरि ।
 तथैवोक्षवशावहरात्राहाश्च टजन्तकाः ॥ ५१ ॥
 क्लीबे सङ्ख्यापरं रात्रमर्धाङ्गा पञ्चस्वार्थना ।
 त्रिष्वर्थः प्राक् चतुर्थ्यन्तस्तद्धितार्थो द्विगुलिषु ॥ ५२ ॥
 प्रादिप्राप्तलमापन्नात् परं च प्रवरो यथा ।
 प्राप्तार्थोऽलङ्कुमारिश्च पुमान् स्त्रीपुंसयोर्युतौ ॥ ५३ ॥
 ग्राम्यानेकशफाबालबहुपञ्चम्वये स्त्रियः ।
 क्लृप्तकलीयुतौ षण्णैक्यं वा व्यक्त्यादि लुपि युक्तवत् ॥ ५४ ॥
 परवद् वानुवादेषु तिङ्गव्ययमलिङ्गकम् ।
 अचः पुंसि हलो दीर्घाः स्त्रियां लोपधनत्रयाः ॥ ५५ ॥

षण्डे सर्वे गुणद्रव्यक्रियायुक्तार्थकास्त्रिषु ।
 बहुत्वमेकता च स्याज्जात्याख्यायां यथा यवाः ॥ ५६ ॥
 यवश्च त्रीहयो त्रीहिरित्यथ स्याद् विशाखयोः ।
 द्वित्वं बहुवचश्चैवं द्वयं प्रोष्ठपदास्वपि ॥ ५७ ॥
 अनेकमिति शब्दस्य तद्विशेषस्य चैकता ।
 सङ्ख्यार्थस्याबहुव्रीह्येयथाऽनेका वधूरिति ॥ ५८ ॥
 विरोधे पूर्वदौर्बल्यं लोकतः शेषमुन्नयेत् ।
 (इति सामान्यन्यायाः)

सर्वे जनाः सहस्रास्या युगपद्वक्तुमुद्यताः ॥ ५९ ॥
 न कलामपि भारत्या ब्रूयुर्वर्षशतैरपि ॥ ६० ॥
 इति भगवता विदितनिखिलनिगमनिचयरहस्यवियेन दिनमणिसमतेजसा
 सकलतत्त्वप्रकाशेन यादवप्रकाशेन विरचितायां वैजयन्त्यां
 शेषकाण्डे लिङ्गसङ्ग्रहाध्यायः ॥ ९ ॥
 अष्टमः शेषकाण्डः समाप्तः ॥ ८ ॥

ग्रन्थोपसंहारः

इति यतिवरसङ्घपूजिताङ्घ्रिः
 प्रथितयशा भुवि यादवप्रकाशः ।
 व्यरचयदभिधानशास्त्रमेतत्
 सह वचनैः सह लिङ्गसङ्ग्रहेण ॥ १ ॥
 एतां शुभामष्टभिरुक्तकाण्डै-
 भूतस्वरूपैरिव नाममालाम् ।
 धत्तां विशाले हृदये मुरारि-
 स्त्वां वैजयन्तीमिव वैजयन्तीम् ॥ २ ॥
 एवं सूक्ष्मैर्न्यायनिर्णीतशब्दैः
 सर्वार्थानां व्यञ्जकोऽसौ निघण्टुः ।
 संवित्तीनां भूषणं सत्कवीनां
 प्राप्तः पारं वैजयन्तीनिघण्टुः ॥ ३ ॥
 [नानाविद्यावेद्यवाप्रज्ञमाला
 मूर्तं वेदं वेदयन्ती त्रिवेद्याः ।
 रोदुं बुद्धिध्वंसकध्वान्तचक्रं
 प्राज्ञैर्ज्ञेया वैजयन्ती जयन्ती ॥ ४ ॥]

(इति वैजयन्ती समाप्ता)

परिशिष्टम्

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाशङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

भिदुरम्	११२१३	भिदिरम्	अमरकोषः (व्याख्यासुधा) १११४७
कृकरः, ककरः	२१३३६	कृकरः, ककणः	२१५९
महलः	२१४१०	मर्दलः	११७१८ (व्याख्यासुधा)
रुशती	२१४१८	उषती	११७१८
फणिर्जकः	३२१२०	फणिज्जकः	२१४७९
पिण्या	३२११४०	पण्या	२१४१५०
बिम्बोष्ठी	३२११४७	बिम्बिका	२१४१३९
वाध्राणसः	३१४१८	वाध्राणसः	त्रिकाण्डशेषः २१५३
		वाधीनसः	२१५३
नैचिकी	३१४४६	नैचिकम्	२१९२२
स्थूरी	३१४५६	स्थूरी	अमरकोषः २१८४६
कुक्कुरः	३१४६९	कुक्कुरः	अभिधानचिन्तामणिः ४३४५
		कुक्कुरः	४३४५
कदलिका	३१६३१	कलिन्दिका	२११७२
		कलिन्दिका	२११७२ (मणिप्रभा)
		कलन्दिका	२११७२
वेणुतम्	३१६९५	वेणुतम्	३१५०१
		वेणुभम्	त्रिकाण्डशेषः २१७७
वृषी	३१६१४९	वृषी	अमरकोषः २१७४६
		वृषी	२१७४६ (व्याख्यासुधा)
क्रियदेहिका	३१६१५६	क्रियदेहिका	त्रिकाण्डशेषः (व्याख्या) ११७४
चूषा	३१७८४	दूषा	अमरकोषः २१८४२
जागरः	३१७१५३	जागरः	अभिधानचिन्तामणिः ३१३३०
		जागरः	अभिधानरत्नमाला २१३०४
भिण्डिपालः	३१७१६६	भिण्डिपालः	अमरकोषः ३१८९१
		भिण्डिपालः	अभिधानचिन्तामणिः ३१४४९

(२२७)

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाशङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

समिकम्	३१७२०३	समीकम्	अमरकोषः २१८१०४
खले पाली	३१८३१	खलेवाली	अभिधानचिन्तामणिः ३१५५८
मरिष्टक-मयष्टकौ	३१८३८	मकुष्ठक-मयुष्टकौ	४२४०
		अमरकोषः	२१९१७
विडङ्गः	३१८९७	विटङ्गम्	२१९१५
यष्टिमधुका	३१८१०३	यष्टीमधुकम्	२१४१०९
		मधुयष्टी	२१४१०९ (व्याख्यासुधा)
		यष्टी	२१४१०९
मणिमन्	३१८१२०	शीतशिवं माणिमन्थम्	२१९४२
		सितशिवम्	२१९४२ (व्याख्यासुधा)
		माणिबन्धम्	२१९४२ (चरस्वामी)
मूका	३१९१७	मूषा	२१९३३
कुठारः	३१९३२	कुठरः, कुटरः	२१९७४
		कुटरः	अभिधानचिन्तामणिः ४१८९
कल्लवम्	३१९८५	कल्लवम्	२१२२०
निकार्यं	४३११८	निकार्यः	अमरकोषः २१२१५
		निकार्यः	२१२१५
		निकार्यः	अभिधानचिन्तामणिः ४१५६
कुण्डनी	४३१२५	कण्डनी	त्रिकाण्डशेषः २१९६
मण्डपः	४३१२८	मण्डपः	अमरकोषः २१२१९
		मण्डपः	अभिधानचिन्तामणिः ४१६९
भिरिसटा	४३१७७	भिरिसटा	३१६०
		भिरिसटा	अमरकोषः २१९४९
मकुटः	४३१३५	मुकुटः	२१६२०२
		मुकुटः	२१६२०२ (व्याख्यासुधा)
		मुकुटः	अभिधानचिन्तामणिः ३१३१४
		मुकुटः	३१३१४ (स्वोपज्ञवृत्तिः)
पिचिण्डिका	४३१५८	पिचण्डिका	२१२७९

वैजयन्तीस्थशब्दाः काण्डाद्यङ्काः कोषान्तरस्थशब्दाः कोषान्तरनामानि स्थलनिर्देशाः

प्रसूतः	४।४।७७	प्रसूतिः	अमरकोषः	२।६।८५
कलाः	४।४।१०१	कचाः	"	२।६।९८
गोर्वम्	४।४।११२	गोदम्	"	२।६।६५
		गोदः	" (मणिप्रभा)	२।६।६५
परीतदान्त्रम्	४।४।११३	पुरीतत्, अन्त्रम्	"	२।६।६६
वातम्	४।४।१४५	वातकी (-किन्)	"	२।६।५९
श्लेष्मसुः	४।४।१४६	श्लेष्मणः	"	२।६।६०
यौवनम्	५।१।८	यौवतम्	"	२।६।२२
निर्धार्यः	५।४।७३	निर्धार्यः	" (व्याख्यासुधा)	३।१।१३

वैजयन्तीकोषस्य शब्दानुक्रमणिका

[इस अनुक्रमणिका में क्रमशः शब्द, लिङ्गादि के अङ्क (१. पुलिङ्ग, २. स्त्रीलिङ्ग, ३. नपुंसकलिङ्ग, ४. अव्यय), ए. = एकवचन, द्वि. = द्विवचन, व. = बहुवचन तथा () इस कोष्ठक के अन्तर्गत ग्रन्थान्तरस्थ पाठान्तर और अन्त में क्रमशः काण्डाङ्क, अध्यायाङ्क, तथा श्लोकाङ्क दिये गये हैं]

अ]

[अगच्छ

शब्दः लिङ्गाङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः	शब्दः लिङ्गाङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः	शब्दः लिङ्गाङ्कः	काण्डाङ्कः अध्यायाङ्कः श्लोकाङ्कः
अ		अकुत्स १.	३।१।५५	अक्षपात १.	३।९।६१
अ ४.	८।७।१०	अकुप्य ३.	३।८।७४	अक्षफल १.	३।३।७९
अंश १.	४।४।५५	अकुप्यसहाय १.	५।१।५४	अक्षर ३.	३।६।१६२
," १.	५।२।६	अकूपार १.	४।२।१२	," १ व.	७।५।३
अंशु १.	२।१।१५	," १.	८।१।१५	अक्षरचुम्बु १.	३।९।२३
," १.	२।१।१६	अकृत १.	३।६।९७	अक्षरजीवन १.	३।९।२३
," १.	२।१।२६	अक्ष १.	३।७।३१	अक्षरपातक १.	२।१।५२
," १.	६।१।६	," १.	३।८।१५	अक्षवती २.	३।९।५९
," १.	८।९।२५	," ३.	३।८।१२५	अक्षि ३.	४।४।९४
अंशुक ३.	४।३।११६	," १.	३।९।६०	अक्षिगत १.२.३.	५।४।६९
," ३.	७।३।१	," ३.	५।१।४९	अक्षित ३.	५।१।३०
अंशुमत् १.	२।१।१५	," १. ३.	६।५।२	अक्षिसंस्कार १.	४।३।१५७
अंस १. ३.	४।४।७१	अक्षकील १.	३।७।३३१	अक्षीव ३.	३।८।१२०
अंसल १. २. ३.	५।४।६	अक्षज ३.	३।९।७३	अक्षोढ १.	३।३।४६
अंससन्धि १.	४।४।६९	अक्षजीविन् १.	३।९।५९	अक्षोहिणी २.	३।७।५८
अंसान्त १.	४।४।७०	अक्षत १. २. ३.	७।५।१४	अक्षण्ड १. २. ३.	५।४।८६
अंहति २.	३।६।११९	अक्षताडन ३.	३।९।१३७	अखात ३.	४।२।५
अंहन ३.	५।२।१३	अक्षति २.	३।६।९०	अखिल १. २. ३.	५।४।८५
अंहस् ३.	३।६।१६८	अक्षत्र ३.	४।४।८५	," १. २. ३.	७।४।१
अकपाय १.	५।३।३९	अक्षदर्शक १.	३।८।१४	अग १.	३।२।१
अकार्यसेवन ३.	३।६।११७	अक्षधूर्त १.	३।९।५८	," १.	८।१।५८
अकिञ्चन १.२.३.	५।४।५९	अक्षधूर्तिल १.	३।४।५२	अगच्छ १.	३।३।५

[अगद]

अगद १.	४११४१
अगदङ्कार १.२.३.	४११४३
अगम १.	८११५८
अगरी २.	३३३८६
अगरु १.	३८८१०६
अगस्ति १.	३३३१५६
," १.	३३३१५१
अगस्त्य १.	३३३१५६
," १.	३३३१५१
अगाध १.	४११२
," १. २. ३.	४१२१९
अगार ३.	४३११७
अगृहीतदिश १. २. ३.	३१७२१९
अग्रायी २.	१२११९
अग्नि १.	१२११५
," १.	८६१२
अग्निक १.	३३३२२१
अग्निकारिका २.	३३३१४
अग्निकार्य ३.	३३३१४
अग्निकौच ३.	४३३११९
अग्नित्त १.	३३३१७५
अग्निका २.	३३३४३
अग्निपूर्णिमा २.	२११७४
अग्निबीज ३.	३३३२०
अग्निमन्थ १.	३३३८६
," १.	३३८८४
अग्निमुखी २.	३३३१५
अग्निविश्व २.	१२३३२
अग्निशिख ३.	३८८११७
अग्निष्टोम १.	३३३८७
अग्निष्ठ १. २. ३.	३३३१०४
अग्निस्थ १.	१२३१९
अग्निस्वर्गह १.	३३३६८
अग्निस्वस्तक १.	३८८८२
अग्निहोत्र ३.	३३३१०
अग्निहोत्रहवणी २.	३३३१००
अग्निहोत्री २.	३३३१५
अग्निधन ३.	३३३१४
अग्न्याधान ३.	३३३६९

वैजयन्तीकोषः

अग्न्याहित १.	३३३७३
अग्न्युत्पात १.	१२३३३
अग्र १.	३३३१९८
," १. २. ३.	५११६३
," ३.	६३३१
," १.	८११६०
अग्रज १.	४१३३१
," १. २. ३.	५११४
अग्रजन्मन् १.	३३३१
अग्रणी १. २. ३.	५११६४
अग्रतः (-स्) ४.	८८८११
अग्रतःसर १. २. ३.	३३३१४५
अग्रदिधिषु १.	३३३१४४
अग्रद्रवसंहति २.	३८८१४७
अग्रमांस ३.	४१११४
अग्रयान ३.	३३३२०३
अग्रसन्धानी २.	१२३३६
अग्रस्थ १. २. ३.	५११७७
अग्राम्य १. २. ३.	५११२०
अग्रिम १. २. ३.	५११७७
अग्रिय १. २. ३.	५११४
," १. २. ३.	५११६३
अग्रीय १. २. ३.	५११६३
अग्नेदिधिषु १.	३३३१४४
अग्नेदिधिषू १.	३३३१४४
," २.	३३३१४५
अग्नेसर १. २. ३.	३३३१४५
अग्रथ १. २. ३.	५११७७
अघ ३.	३३३१६८
," ३.	६३३२
अघन १. २. ३.	५११२५
अघायु १. २. ३.	३३३११
अङ्ग १.	२११२९
," १.	३३३१००
," १.	४११६०
," १.	६३३१६
अङ्गण १.	४३३३६
अङ्गति १.	१२३४८
अङ्गपालि २.	८१२२
अङ्गपाली २.	४३३१७०
अङ्गलि २.	४३३१५४

[अङ्गुल]

अङ्गुट १.	४३३४८
अङ्गुर १. ३.	३३३१०
अङ्गुश १. ३.	३३३४८
अङ्गुर १. ३.	३३३१०
अङ्गोढ १.	३३३४१
अङ्गोल १.	३३३४१
अङ्गुथ १.	३३३१२९
अङ्ग १ व.	३३३१३१
," ३.	३३३२०८
," ३.	४११५२
," ३.	४११५५
," १. २. ३.	६३३३
," ४.	८८८२१
अङ्गचेष्टा २.	३३३१९८
अङ्गज १.	४१३३९
," १.	५१३३८
," १. ३.	७१११०
अङ्गजा २.	४१३३९
अङ्गद ३.	४३३१४३
अङ्गदीप ३.	३३३१३
," ३.	३३३१४
," ३.	३३३१५
अङ्गना २.	२११९
," २.	४११५
अङ्गनाप्रिय १.	३३३२५
अङ्गमर्दिन् १.	३३३१५
अङ्गलोच्यक १.	४३३४६
अङ्गविच्छेप १.	३३३१७
अङ्गसंस्कार १.	४३३११२
अङ्गहार १.	३३३१७
अङ्गार १. ३.	१२३३२
," १.	२१३३१
," १.	५३३८
अङ्गारधानी २.	४३३१५
अङ्गारशकटी २.	४३३१५
अङ्गारशकट १. २. ३.	३३३१३२
अङ्गिन् १.	४१११
अङ्गीकार १.	५१३३७
अङ्गु १.	२३३१
अङ्गुल १. ३.	३३३१५२

[अङ्गुल]

अङ्गुल १.	३३३२७
," १.	३३३१५९
," १.	४११७९
अङ्गुलाल १.	३८८११२
अङ्गुलि २.	४११७४
अङ्गुलित्र ३.	३३३१५६
अङ्गुलिमुद्रा २.	४३३१४५
अङ्गुलीयक ३.	४३३१४४
अङ्गुष्ठ १.	४११७४
अङ्गुष्ठकान्तर १.	४११५७
अङ्गुष्ठि १.	४११५६
अङ्गुष्ठिनामन् १.	३३३१२
अङ्गुष्ठिप १.	३३३४
अचल १.	३३३१
अचला २.	३३३१४
अचिरव्यूढा २.	४११७
अच्छभङ्ग १.	३३३७
अच्युत १.	१११११
अज १.	३३३६२
," १. २. ३.	६३३४
अजगर १.	४१११७
," १.	४१११९
अजगाव ३.	१११५०
अजगाव ३.	१११५०
अजन्य ३.	३३३१९०
अजप १. २. ३.	३३३११
अजमोदा २.	३८८१०२
," २.	८२३१
अजय्य ३.	३३३१८६
अजवीथी २.	२१३४६
अजशृङ्गी २.	३३३१४१
अजस्र १. २. ३.	५११३०
अजहा २.	३३३१२९
अजा २.	३३३६३
आजाजी २.	३८८८३
अजाजीव १.	३३३२९
अजित १.	१११३२
अजितनेमि १.	३३३१९
अजिन ३.	३३३२१
अजिनपत्रा २.	२३३४४
अजिनयोनि १.	३३३२५

शब्दानुक्रमिका

अजिर ३.	४११३६
," १. २. ३.	५११२५
," १. २. ३.	७११४
अजीगव ३.	१११५०
अजुका २.	३३३१०४
अज्ञ १. २. ३.	५११२१
अज्ञति १.	१२३१८
अज्ञन ३.	३३३३९
अज्ञल १.	४३३३३१
अज्ञित १. २. ३.	५१११३
अज्ञन १.	२११८
," १.	३३३१०७
," ३.	४३३१५७
अज्ञनकेशी २.	३८८१०१
अज्ञनवस्त्रिका २.	३३३१३५
अज्ञनावती २.	२११९
अज्ञनिका २.	४११२९
अज्ञलि १.	४११७८
," १.	५११५३
," १.	५११६३
," १.	८११२७
अज्ञलिकारिका २.	३३३१४८
," २.	३३३१३
अज्ञसा ४.	८११३१
अज्ञि १.	३३३८२
अटनी २.	३३३१७७
अटवी २.	३३३११
," २.	८६३११
अटाव्या २.	५११११
अट्ट १.	४३३३३
," १.	६३३१५
अट्टहास १.	३३३८४
अट्टालिका २.	४३३३३
अट्टन ३.	३३३२००
अणक १. २. ३.	५११७५
अणव्य १. २. ३.	३८८२०
अणि १.	२११७९
," १. २.	३३३१३१
," १. २.	४३३५२
," १. २.	६३३५
अणिकूर्च १.	२११८०

[अतिमुक्त]

अणु ३.	३३३११९
," १. २. ३.	५११३६
अणुराजि २.	३३३१३३
अण्ड ३.	२३३५०
," १.	३३३१६२
," १. ३.	४३३६३
," ३.	६३३२
अण्डज १.	४३३४२
," १. २. ३.	४३३२
," १.	७११११
अण्डजा २.	७११११
अण्डप्रहरण १.	४३३४७
अण्डमूलक ३.	४३३६०
अण्डवर्धन ३.	४३३३१
अण्डक १.	४३३३४
अण्डिका २.	५११४८
अण्डीर १.	७१११५
अण्डुक १.	२३३३४
," १.	४३३४७
," १.	४३३६३
अतः (-स्) ४.	८११३६
अतलस्पर्श १. २. ३.	४३३१९
अतसी २.	३८८४५
अति ४.	८१११५
," ४.	८८८४
अतिकृच्छक ३.	३३३१३९
अतिक्रम १.	३३३११४
," १.	५२३१६
अतिचरा २.	३८८८९
अतिचाटुवाच् २.	२३३२५
अतिच्छत्र १.	३३३२३४
अतिजव १. २. ३.	३३३१५०
अतिथि १.	३३३६८
अतिथ्यर्थ १. २. ३.	३३३६७
अतिपथिन् १.	३३३४९
अतिपात १.	३३३११४
अतिबला १.	३३३१२८
अतिमर्याद १. २. ३.	५११३३१
अतिमात्र १. २. ३.	५११३३१
अतिमानक १. २. ३.	५११३३१
अतिमुक्त १.	३३३१८८

अतिमुक्तक]

अतिमुक्तक १.	३१३४६
अतिमृगा २.	३१३१७२
अतियव १.	३१८५२
अतिरिक्त १.२.३.	५१३१३७
अतिविषा २.	३१८१९०
अतिवेल १.२.३.	५१३१३१
अतिशय १.	५१२३
अतिशयित १.२.३.	५१३१३७
अतिसन्धान ३.	५१२३५
अतिसर्जन ३.	५१२१९
अतिसारकिन् १.२.३.	४१३१४६
अतिस्थिर १.२.३.	५१३१७९
अतिहस्तक १.	३१७१७०
अतिहास १.	३१८१८५
अतिहिंसन ३.	३१७२८
अतीन्द्रिय १.२.३.	५१३१३३
अतीव ४.	८१८४
अतीसार १.	४१३१२९
अत्यन्त १.२.३.	५१३१३१
अत्यन्तीन १.२.३.	३१७१४९
अत्यग्ल २.	३१३१३४
अत्यय १.	७१११
अत्यर्थ १.२.३.	५१३१३१
अत्यर्थस्वादु ३.	३१८१३६
अत्याकार १.	३१६१७१
अत्याधान ३.	५१२१६
अत्याहित ३.	८१३१
अत्यूह १.	३१७१८०
अत्रिनेत्रज १.	२११२५
अथ ४.	८१७१४
अथर्वाणि ३.	८१११३
अथो ४.	८१७१४
अदन ३.	४१३१०२
अदभ्र १.२.३.	५१४१८५
अदय १.२.३.	५१४२४
अदस् १.२.३.	६१४१
अदानृ १.२.३.	५१४५९
अदिति २.	३१६१९१
” २.	७१२१
अदितिनन्दन १.	१११३

वैजयन्तीकोषः

अदृष्ट ३.	३१७१४
अदृष्टि २.	३१९१०
अद्धा ४.	८१७१२
अद्भुत १.	११२१७
” १.	३१७७५
” १.	३१७७७
” १.२.३.	३१७७८
अद्वर १.२.३.	५१४५०
अद्य ४.	८१८१७
अद्यध्नीना २.	४१३१७
अद्रि १.	२११११
” १.	३१२१२
” १.	६१११४
अद्रिज ३.	३१२१६
अद्रिजा २.	११११८
अद्रिधत् १.	१११२५
अद्रुत १.२.३.	५१४५२
अद्वयवादिन् १.	१११३४
अधः (-स्) ४.	८१८१९
अधःपुष्पी २.	३१३१५७
अधम १.२.३.	५१४७५
” १.२.३.	७१४११
अधमर्ण १.२.३.	३१८१९
अधर १.	४१४८७
” १.२.३.	५१४४७
” १.२.३.	७१५१६
अधरा २.	२११६
अधरेद्युः (-स्) ४.	८१८१८
अधरोष्ठ १.	४१४८७
अधर्म १.	३१६१६८
अधस्तात् ४.	८१८१९
अधि ४.	८१७१३
अधिक १.२.३.	५१४८५
” १.२.३.	५१४१३१
” १.२.३.	५१४१३७
अधिकधिक १.२.३.	५१४५६
अधिका २.	५११४०
अधिकाङ्ग ३.	३१७१५६
अधिकार १.	२१४४१
अधिकृत १.२.३.	३१७१९
अधिक्षिप्त १.२.३.	८१४२

[अनमिक

अधिक्षेप १.	२१४३२
अधित्यका २.	३१३१९
अधिप १.२.३.	५१४५८
अधिपति १.२.३.	५१४५८
” १.२.३.	८१५२
अधिमू १.२.३.	५१४५८
अधिरोहिणी २.	४१३५१
अधिवास १.	८११६
अधिवासन २.३.	४१३१५६
अधिविज्ञा २.	४१४१३
अधिभ्रयणी २.	४१३५४
अधिष्ठानृत्त्व ३.	१११४८
अधीतवेदक १.	३१६१८
अधीर १.२.३.	५१४१८
अधीश १.२.३.	५१४५८
अधीश्वर १.	३१७२
अधुना ४.	८१८५
अधोऽशुक ३.	४१३१२१
अधोऽञ्ज १.	११११३
अधोनापित १.	३१५४१
अधोभुवन ३.	४१११
अधोमुख १.२.३.	५१४९०
अध्यक्ष १.२.३.	३१७१९
” १.२.३.	५१४३३
” १.२.३.	७१४११
अध्यण्डा २.	३१३१२९
” २.	३१३१७७
अध्ययन ३.	३१६१६३
अध्यवसाय १.	३१६१६७
अध्यस्त १.२.३.	५१४१०४
अध्यापन ३.	३१६१६३
अध्याय १.	३१३१२
अध्युष १.	५११५३
अध्यूढा २.	४१४१३
अध्येषणा २.	३१६१२०
अध्वन् १.	३११४९
अध्वर १.	३१६१८२
अध्वर्यु १.	३१६१७९
अनंशुमत्फला २.	३१३१७३
अनक्षर १.२.३.	२१४१६
अनमिक १.	३१६१७३

अनङ्ग]

अनङ्ग १.	१११२७
अनङ्गह् १.	३१४५२
अनङ्गही २.	३१४४२
अनङ्गवाही २.	३१४४२
अनन्त १.	४११३
” १.२.३.	७१५४
अनन्तशायिन् १.	११११३
अनन्ता २.	२११५
” २.	३१३१२५
” २.	७१५४
अनन्यज १.	१११२८
अनन्यवृत्ति १.२.३.	५१४१२८
अनपराध्य १.२.३.	५१४६३
अनम्बु १.	२१३३२
अनर्गल १.२.३.	५१४१३२
अनर्थक १.२.३.	२१४१८
अनल १.	११२१५
” १.	३१८८१
अनलज्वाला २.	३१३१९७
अनलोपल १.	३१२३७
अनवधानता २.	३१६१७८
अनवरत १.२.३.	५१४१३०
अनवस्कर १.२.३.	५१४६६
अनस् ३.	३१७१२५
अनादर १.	३१६१७१
अनाहत १.२.३.	५१४९५
अनामय ३.	४१४१४२
अनामिका २.	४१४७४
अनारत १.२.३.	५१४१३०
अनालम्बी २.	३१९११८
अनावृष्टि २.	२१२१८
अनाशक ३.	३१६१४४
अनाशकिन् १.	३१६१६०
अनि १.२.	३१७१३१
अनिच्छ १.	३१३२२६
अनिमिष १.	८१११३
अनिमेष १.	८१११३
अनिरुद्ध १.	१११२९
अनिर्वद्ध १.२.३.	२१४१७
अनिर्वाप १.	२११३३

शब्दानुक्रमिका

अनिल १.	११२४७
” १.	३१७१६१
अनिलाशन १.	४११६
अनिश ३.	५१४१३०
अनिष्ट १.२.३.	५१४६९
अनी २.	४१३४७
अनीक १.३.	७१५१५
अनीकवत् १.	११२२५
अनीकस्थ १.	८१११४
अनीकिनी २.	३१७५५
” २.	३१७५८
अनु ४.	८१७१६
अनुक १.२.३.	५१४३४
अनुकण्ठी २.	४१३१४१
अनुकम्पा २.	३१६१९२
अनुकर्ष १.	३१७१३३
अनुकर्षण ३.	३१९५३
अनुकल्पक १.	३१६११३
अनुकामीन १.	३१७१५०
अनुकार १.	५१२१७
अनुकूल १.२.३.	५१४१२७
अनुक्रम १.	३१६११३
अनुक्रोश १.	३१६१९२
अनुग १.	३१७१६
अनुचर १.	३१७१६
अनुज १.	४१४३१
” १.२.३.	५१४४
अनुजीविन् १.	३१७१७
अनुताप १.	३१६१८५
अनुत्तर १.२.३.	४१४२५
अनुदात्त १.२.३.	३१६१३७
अनुद्वीप १.	३१११६
अनुनय १.	५१२१८
अनुनासिक १.२.३.	३१६१३७
अनुपद् ४.	५१४१२८
अनुपदिन् १.२.३.	७१३२७
अनुपदीना २.	४१३१६२
अनुपमा २.	२११९
अनुपात्यय १.	३१६११४
अनुषान १.	३१६१८२
अनूचीन १.२.३.	५१४१२७

[अन्तर्धि

अनूप १.२.३.	३११४५
अनूराध १ व.	२११४४
अनूरुसारथि १.	२११११
अनृङ्ग १.	४१३४
अनृजु १.	११३४
” १.२.३.	५१४२२
अनृत १.२.३.	२१४१७
” ३.	३१८३
” ३.	७१५१६
अनेक १.२.३.	८१९५८
” १.२.३ ए.	८१९५८
अनेकप १.	३१७६०
अनेह १.२.३.	५१४२१
अनेहमूक १.२.३.	५१४१३
” १.२.३.	५१४१४
अनेहस् १.	२११५२
अनोकह १.	३१३५
अन्त १.	३१६१७६
” १.२.३.	५१२९
” १.	५१३१
” १.३.	६१५१
अन्तःकरण ३.	२१६१७३
अन्तःपुर ३.	४१३३६
अन्तक १.	११२३४
अन्तर ३.	२११७
” ३.	२१९३
” १.२.३.	३१८१०
” १.	७१५१
अन्तरगाहन ३.	५१२१४
अन्तरद्वीप १.	३१११२
अन्तरा ४.	८१८१८
अन्तराय १.	५१२४
अन्तराल ३.	२११७
अन्तरिक्ष ३.	२१११
अन्तरिक्षासन ३.	३१६१२९
अन्तरीप ३.	४१३३६
अन्तरीय ३.	४१३१२१
अन्तरेण ४.	८१८४
” ४.	८१८१८
अन्तर्गङ्ग ३.	५१२६
अन्तर्धि १.	२११६३

अन्तर्मनसु]

अन्तर्मनसु १.२.३. पा११३४	अन्तर्गम १. ३१६१२	अन्तर्वर्षिक १. ३१७२२	अन्तर्वर्षी २. ४१४१६	अन्तर्वर्षिणी १.२.३. पा११३१	अन्तर्दृष्ट्या २. ८१२२२	अन्तर्स्था २. ३१६३६	अन्तावसायिन् १. ३१५४९	" १. ३१५८७	" १. ३१५१०७	" १. ३१५१०७	" १. ३१५१०७	" १. ३१५१०७	" १. ३१५१०७	अन्तिका २. ४१५५४	अन्तिकाश्रय १. ४१३१२	अन्तिकेशय १. ४१३१६८	अन्तिम १. २. ३. पा११७७	" १. २. ३. पा११४०	अन्तेवासिन् १. ८१११३	अन्त्य १. २. ३. पा११७७	" १. २. ३. ६१४११	अन्त्यजाति १. ३१५२	" २. ३१५१२१	अन्त्यजालय १. ३१५३२	अन्त्यवर्ण १. ३१५११	अन्दुक १. ३१७८३	अन्दू २. ६१२११	अन्ध १. २. ३. पा११३३	" १. ६१५६	अन्धक १. ३१६२०१	(इन्धक)	अन्धकसूदन १. १११४३	अन्धकार १. ३. २११६२	अन्धकी २. २११४	अन्धतमस ३. २११६२	अन्धता २. ८१५६	अन्धमेहल १. पा११५६	अन्धसू ३. ४१३७५	अन्धु १. ४१२७	अन्ध १ ब. २१३३२	" १. ३१५३५	" १. ३१५२२
--------------------------	-------------------	-----------------------	----------------------	-----------------------------	-------------------------	---------------------	-----------------------	------------	-------------	-------------	-------------	-------------	-------------	------------------	----------------------	---------------------	------------------------	-------------------	----------------------	------------------------	------------------	--------------------	-------------	---------------------	---------------------	-----------------	----------------	----------------------	-----------	-----------------	---------	--------------------	---------------------	----------------	------------------	----------------	--------------------	-----------------	---------------	-----------------	------------	------------

वैजयन्तीकोषः

अन्ध १. ३१५९३	" १. ३१५११७	अन्ध ३. ४१३१७५	" १. २. ३. पा११०७	" ३. ८१६८	अन्धजिका २. ३१३१२७	अन्धाद १. ११२२७	अन्ध १. २. ३. ६१४१२	अन्धतरेणः (-सु) ४. ८१८८	अन्धथा ४. ८१८२०	अन्धथाकृति २. पा१२४	अन्धथाभाव १. पा१२४	अन्धदा ४. ८१८७	अन्धनिहति २. २१४४०	अन्धपीडन ३. पा१२३	अन्धपुष् १. २३१३६	अन्धभुत १. २३१२६	अन्धलोहक ३. ३१२२८	अन्धवाप १. २३१३६	अन्धशाखास्थ १. २. ३. ३१६१३	अन्धानुरक्ता २. ३१६४८	अन्धेयुः (-सु) ४. ८१७४	अन्धोन्य १.२.३. पा११२३	अन्धवत् १. २. ३. पा११२८	अन्धवत् १.२.३. पा११२८	अन्धवय १. ४१४४९	अन्धवाय १. ४१४४९	अन्धाहार्य ३. ८१३२	अन्धाहार्यवचन १. ११२२३	अन्धिष्ट १. २. ३. पा११९८	अन्धेषणा २. ३१६१२१	अन्धेषित १.२.३. पा११९८	अन्धेषट्ट १. २. ३. पा११२७	अप् २ ब. ४१२३	" २. ८१७३३	अप ४. ८१७२५	अपकार १. पा१२२	" १. पा१२३	अपकृष्ट १. २. ३. पा११७१
---------------	-------------	----------------	-------------------	-----------	--------------------	-----------------	---------------------	---------------------------	-----------------	---------------------	--------------------	----------------	--------------------	-------------------	-------------------	------------------	-------------------	------------------	----------------------------	-----------------------	--------------------------	------------------------	-------------------------	-----------------------	-----------------	------------------	--------------------	------------------------	--------------------------	--------------------	------------------------	---------------------------	---------------	------------	-------------	----------------	------------	-------------------------

[अपरान्त

अपकृष्ट १. २. ३. पा११७५	अपक्रम १. ३१७२१०	अपगम १. पा१२७	अपगल्भक १.२.३. पा११७७	अपघन १. ४१४५५	अपचायित १. २. ३. पा११०५	अपचित १.२.३. पा११०५	अपचित २. ३१७४४	" २. ८१२११	अपक्षयज्ञ १. ३१६१७७	अपटी २. ४१३१२४	अपटीका २. ३१९८६	अपटु १. २. ३. ४१४१४४	अपतर्पण ३. ४१४१३९	अपत्य ३. ४१४४१	अपत्रपा २. ३१६१९४	अपत्रपिण्यु १.२.३. पा११४०	अपथ ३. ३११५०	अपथिन् १. ३११५०	अपदंश १. ३१९५२	अपदंशक १. ४१३८६	अपदरोहिणी २. ३१३८४	अपदान ३. ३१७२०९	" ३. ८१३११	अपदालक १. ४११४२	अपदिश ४. २११३	अपदेश १. ८११७	अपध्वंसज १. ३१५१२०	अपध्वस्त १.२.३. पा११७१	अपभरणी २. २११४१	अपभ्रंश १. ८११७	अपरगन्धिक १. ३११८	अपरति २. पा१३६	अपररात्रक १. २११६६	अपराजित १. ८११५०	अपराजिता २. २११५	" २. ३१३१३३	" ३. ३१६२०८	अपराद्धशर १. २. ३. ३१७२१८	अपराध १. ३१७४७	अपराण्त १ ब. ३११३५
-------------------------	------------------	---------------	-----------------------	---------------	-------------------------	---------------------	----------------	------------	---------------------	----------------	-----------------	----------------------	-------------------	----------------	-------------------	---------------------------	--------------	-----------------	----------------	-----------------	--------------------	-----------------	------------	-----------------	---------------	---------------	--------------------	------------------------	-----------------	-----------------	-------------------	----------------	--------------------	------------------	------------------	-------------	-------------	---------------------------	----------------	--------------------

अपराह]

अपराह १. २११६५	अपरुजा २. १११५९	अपरेणः (-सु) ४. ८१८८	अपर्णा २. १११५९	अपलाप १. २१३३०	अपलासिका २. ३१६१८१	अपवंश १. ३१७७७	अपवन ३. ३१३३२	अपवरक १. ४१३५५	अपवर्ग १. ८११६	अववर्जन २. ३१६११९	अपवाद १. २१३३३	" १. ३१७४७	" १. ८१११४	अपवारण ३. २११६३	अपव्यय १. २१३३०	अपशब्द १. ३१५१२०	" १. २. ३. पा१२२	अपशाला २. ४१३३८	अपष्ट ३. पा२८	अपष्टु ३. पा२८	अपसर १. पा२३२	अपसर्प १. ३१७२९	अपसव्य १. ११२२८	अपस्कर १. ३१७१३५	अपस्नान ३. ३१६६४	अपहस्तित १.२.३. पा१४९५	अपहार १. पा२१९	" १. ८११३	अपहास १. ३१९८५	अपहित १.२.३. पा११०४	अपह्व १. २१३३०	" १. ८१११४	अपाङ्गर्भ १. ८१११५	अपाच् ४. पा१९१	अपाचीन १.२.३. पा१४५१	अपाटव ३. ४११३८	अपादान ३. पा२१९	अपान ३. ४१६६०	" १. ७१५१२	अपानिक १. ३१३९२
----------------	-----------------	------------------------	-----------------	----------------	--------------------	----------------	---------------	----------------	----------------	-------------------	----------------	------------	------------	-----------------	-----------------	------------------	------------------	-----------------	---------------	----------------	---------------	-----------------	-----------------	------------------	------------------	------------------------	----------------	-----------	----------------	---------------------	----------------	------------	--------------------	----------------	----------------------	----------------	-----------------	---------------	------------	-----------------

शब्दानुक्रमणिका

अपाञ्जपात् १. ११२२३	अपामार्ग १. ३१३११५	अपास्पति १. ४१२१०	अपास्पित ३. ११२१९	अपाय १. ३१७२१०	" १. पा२२७	अपार १. ४१२१०	अपाथक १.२.३. पा११२९	अपावृत्त १. २. ३. पा१४२७	अपाश्रय १. ४१२१६४	अपि ४. ८१७१४	अपिधान ३. २११६४	अपुञ्ज १. ११२२१	अपुनर्भव १. ३१६२३८	अपूप १. ४१३७२	अपेक्षा २. पा२२९	अपोनपात् १. ११२२३	अपौर १. ३१८३३	अप्पति १. ११२४५	" १. ४१२११	अप्पित्त ३. ११२१९	अप्पुष्प ३. ४१२३७	अप्फल ३. ३१३२२०	अप्य ३. ३१८८०	अप्रकाण्ड १. ३१३७	अप्रच्छन्न ३. ३१६१३६	अप्रहत १. २. ३. ३१८१८	अप्रहृष्टक १. २३१३६	अप्सरसू २. ११३११	अप्सरसास्पति १. ११२१६	अफला २. ३१३९९	अबद्ध १. २. ३. २१४१८	अबद्धमुख १.२.३. पा१४६६	अबल १. ४१४३२	अबला २. ४१४५५	अबाल ३. ३१३२२०	अब्ज ३. ४१२३७	" १. ६१५३	अब्जल १. ३१७९६	अब्जारि १. २११२६	अब्द १. २११९०
---------------------	--------------------	-------------------	-------------------	----------------	------------	---------------	---------------------	--------------------------	-------------------	--------------	-----------------	-----------------	--------------------	---------------	------------------	-------------------	---------------	-----------------	------------	-------------------	-------------------	-----------------	---------------	-------------------	----------------------	-----------------------	---------------------	------------------	-----------------------	---------------	----------------------	------------------------	--------------	---------------	----------------	---------------	-----------	----------------	------------------	---------------

[अभिनिष्ठान

अब्द १. २२२११	अब्ध १. ४१२७	अब्धा २. ४१२३३	अब्धि १. ४१२१२	" १. ८१६१३	अब्धिजा २. ११३३६	अब्धिगण्डकी २. ४११५६	अब्धिवस्त्रा २. ३१३३	अब्धहाण्य ३. ३१९१०९	अभय ३. ३१३३३२	अभया २. ३१३१७८	अभवनि २. ८१९८	अभि ४. ८१७१६	अभिक १. २. ३. पा१३३५	अभिक्रम १. ३१७२०२	" १. पा२१५	" १. पा२१६	अभिव्या २. पा११२२	" २. ७२२२	अभिव्यान ३. २१३३२	अभिग्रह १. पा२१८	" १. ८११११	अभिचार १. ३१६११७	अभिज १. २. ३. पा१६१	अभिजन १.२.३. पा११९	" १. ८११११	अभिजात १. २. ३. ८१४११	अभिज्ञ १. २. ३. पा११९	अभिज्ञान ३. २१३२९	अभितः (-सु) ४. ८१७३१	अभिताडन ३. पा२१९	अभिताप १. ४११३५	अभिधा २. २१३३१	अभिधान ३. २१३३१	अभिध्या २. ३१६१७९	अभिनय १. ३१९९८	" १. ३१९९८	अभिनव १. २. ३. पा१४८८	अभिनवेश १.२.३. पा२११४	अभिनिष्ठान १. ३१६३७	" १. ८११५०
---------------	--------------	----------------	----------------	------------	------------------	----------------------	----------------------	---------------------	---------------	----------------	---------------	--------------	----------------------	-------------------	------------	------------	-------------------	-----------	-------------------	------------------	------------	------------------	---------------------	--------------------	------------	-----------------------	-----------------------	-------------------	------------------------	------------------	-----------------	----------------	-----------------	-------------------	----------------	------------	-----------------------	-----------------------	---------------------	------------

[अभिनित]

अभिनीत १. २. ३. ८४११
अभिपक्ष १. २. ३. ८४१२
अभिप्राय १. ३६१७४
अभिभूत १. २. ३. ५४१६७
अभिमन्त्रण ३. ३६१९३
अभिमर १. ८११२२
अभिमर्द १. ३७१२०५
अभिमान १. ३६११६९
" १. ८११९
अभियाति १. ३७१४२
अभियुक्त १. २. ३. ३६११०
अभियोक्तृ १. २. ३. ३६११०
अभिरूप १. २. ३. ८४११५
अभिलाष १. ३६११८०
अभिलाषुक १. २. ३. ५४१३५
अभिवादक १. २. ३. ५४१४३
अभिवादन ३. ३६१३९
अभिवान्या २. ३६१५१
अभिदांसन ३. २०१३२
अभिदास्त १. २. ३. ३६१११
अभिदास्ति २. ८१२२
अभिदाप १. २०१३२
अभिपक्ष १. ८१११०
अभिषव १. ३७१५१
" १. ८११११
अभिषिक्त १. ३६१५५
अभिषिक्तक १. ३६१६६
अभिषुत ३. ४३१८२
अभिषेक १. ४३११३३
अभिषेणन ३. ३७१२०१
अभिसन्धान ३. ३७११९४
अभिसम्पात १. ३७१२०५
अभिसार १. ३७११६
अभिसारिका २. ३६१४६
" २. ४३११२
अभिहार १. ५१२१८
" १. ८१११०
अभीक १. २. ३. ५४१३५
" १. २. ३. ७४११
अभीषण ३. ७४१२
अभ्यग्र १. २. ३. ५४१८९

वजयन्तीकोषः

अभ्यग्र १. २. ३. ५४११४०
अभ्यङ्ग १. ४३११२
अभ्यन्तर ३. २११७
अभ्यमित १. २. ३. ४३११४४
अभ्यमित्र १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रिण १. २. ३. ३७११४६
अभ्यमित्रिय १. २. ३. ३७११४६
अभ्यर्ण १. २. ३. ५४११४०
अभ्यवकर्षण ३. ५१२१७
अभ्यवस्कन्द १. ३६११६
अभ्यवस्कन्दन ३. ३७१२०७
अभ्यवहार १. ४३११०२
अभ्यवहृत १. २. ३. ५४११०८
अभ्यागम १. ३७१२०५
अभ्यागारिक १. २. ३. ५४१५२
अभ्यादान ३. ५१२१५
अभ्याधान ३. ८३१२
अभ्यान्त १. २. ३. ४३११४४
अभ्यारूढ १. २. ३. ८४१५
अभ्याश १. २. ३. ५४११४०
अभ्यास १. ३७११९५
अभ्यासादन ३. ३७१२०७
अभ्युत्थान ३. ५१२२०
अभ्युपगम १. ५१२३७
अभ्युपाय १. ५१२३७
अभ्योष १. ७५१११
अभ्र ३. ६३११
अभ्रक ३. ३२११५
अभ्रनाग १. १२११२
अभ्रपिशाच १. २११३७
अभ्रपुष्प १. ३३१३१
अभ्रफुल्लक १. ३९१६३
अभ्रभव १. २. ३. ५४११६
अभ्रमु २. २११९
अभ्रमुप्रिय १. १२११२
अभ्रावकाशिक १. २. ३. ३६११३०
अभि १. ३६११०२
" २. ३६१२९

[अमृतांशु]

अभ्रिय १. २. ३. ५४१११६
अमत १. ३. ३६१२०२
अमति २. ७२१२
अमत्र ३. ४३१६२
अमन १. ३३१४९
अमनि २. ७२११
अमर १. ७५११३
अमरा २. ३६११२७
" २. ४३११९
" २. ७५११३
अमरावती २. १२११०
अमरावली २. १२१४३
अमर्त्य १. १७१५
अमर्त्यभवन ३. ५११२
अमर्ष १. ३६११८३
अमर्षिन् १. २. ३. ५४१३२
अमलपालिक १. १२१५३
अमा ४. ८७११२
अमात्य १. ३७१३
" १. ३७११९
अमात्यक १. ३७१२०
अमामस्या २. २११७१
अमामसी २. २११७१
अमावसी २. २११७०
अमावस्या २. २११७१
अमावासी २. २११७०
अमावास्या २. २११७१
अमित्र ३. ३७१४०
अमुक्त ३. ३७११९६
अमुत्र ४. ८६११५
अमृणाल ३. ३३१२३१
अमृत ३. ३६१२
" ३. ३६११४६
" १. २. ३. ५४१८८
(अमृत)
" ३. ७५१७
अमृतत्व ३. ३६१२८
अमृतफल १. ३३११६६
अमृतवल्कि २. ३३११३२
अमृता २ ब. २१११८
अमृतांशु १. २११२६

अमृताशन

अमृताशन १. १११४
अमृतोद्भव १. ३३१२०४
अमोघ १. ४११५२
अमोघा २. ३३१९०
" २. ३६११७
अम्बक ३. ४३१९४
अम्बर ३. २११२
" ३. ४३११६
अम्बरीष १. ३. ४३१५६
" १. ८५१३
अम्बला २. ४३११०७
अम्बलोर्ण ३. ४३११०७
अम्बष्ठ १. ३५१४
" १. ३५१६५
" १. ३५१६६
" १. ३५१७०
अम्बष्टा २. ३३११३१
" २. ३३११६३
" २. ३६१७७
अम्बा २. ३९११०६
" २. ४३१२६
" २. ४३१२७
अम्बिका २. ४३१२७
" २. ७२१२
अम्बु ३. ४३१२
" ३. ८९११५
अम्बुक १. ३३११५
" १. ३३११९४
अम्बुकपि १. ४३११५
अम्बुकफ १. ४३११३
अम्बुकान्तार १. १२१४५
अम्बुकुकुट १. २३१२
अम्बुज १. २३१३२
" १. ३३११७
" ३. ४३१३९
" ३. ५३१२८
" १. ८६११३
अम्बुजा २. १११३६
अम्बुभृत् १. २२१२
अम्बुवर्धन ३. ४३११३
अम्बुवल्ली २. ३३११६४

शब्दानुक्रमिका

अम्बुवास १. २११४५
अम्बुवेतस १. ३३१३०
अम्बुसूकर १. ४३१५३
अम्बुकृत १. २. ३. २३११८
अम्बुस् ३. ४२११
अम्बरा २. ४३१४४
अम्बल १. ५३१२६
अम्बलुण्डी २. ३६११४१
(अम्बलुण्डी)
अम्बलितकपाय १. ५३१३५
अम्बलुण्डी २. ३६११४१
अम्बलोणी २. ३३११६३
अम्बलवेतस १. ३६११३३
अम्बलान १. ३३११८८
अम्बलिका २. ३३१८१
अम्बोट १. ३३११९४
अय १. ३६११८९
" १. ३९१६१
अयन ३. ७३११
अयन्त्रित १. २. ३. ५४१३२२
अयश्शालाका २. ३७११८४
अयस ३. ३२१३
" ३. ८६११६
" ३. ८६११७
अयस्कान्त १. ३२१२८
अयस्कार १. ३९११६
अयाचित ३. ३६१२
अयि ४. ८७११२
अयुगच्छद १. ३३१४६
अयुग्म १. २. ३. ५४१२३
अयुत ३. ५४१२८
अयोध्या २. ४३१५
अयोऽनि १. ४३१६५
अयोमणि १. ३२१३७
अयोमल ३. ३२१३६
अयोमुख ३. ३३१२०
अयोर्जाला २. ४३१४८
अर १. ३७१३५
" १. २. ३. ५४११२४
अरघट्टक १. ४२१२१

[अरुन्ध]

अरणि १. २३१२२
" १. ३३१८६
" २. ३६१५०
" १. २. ३६११०८
अरण्य ३. ३३११
अरण्यजलित १. ३६१३९
अरण्यमणिका २. २३१४५
अरण्यानी २. ३३१२
अरति १. ८९११०
अरति १. ३३१५५
" १. ७३११
अरर ३. ४३१४६
" १. ७५११०
अरविन्द ३. ४२१७
अराति १. ३७१४०
अराल १. ३६११११
" १. २. ३. ५४११२४
अरि १. ३७१४०
अरिचिन्तन ३. ३६११४
अरिज ३. ३२१३२
अरिज ३. ४२११६
अरिज ३. ३७११३४
अरिम १. ३३१६४
अरिमर्दन १. १२११२
अरिमेदक १. ३३१६४
अरिश्रेणी २. २११७७
अरिष्ट १. २३११७
" १. ३३१३२
" १. ३३१२०४
" ३. ३६११९०
" ३. ४३१२०
" १. ४३१३९
" १. २. ३. ७५१९
अरिष्टताति १. २. ३. ५४१५५
अरिष्टनेमि १. ११११२
अरुण १. ५३११७
" १. २. ३. ७५१६
अरुणा २. ३६११०
" २. ७५१६
अरुणोपल १. ३३१२०
अरुन्ध १. २. ३. ५४११२२

[अरुल]

वैजयन्तीकोषः

[अललोहित]

अरुल ३.	७३१२	अर्थ १.	३८१७३	अर्बुद १.	४४१३३
अरुण १.	३१३१५	" १.	६११३	" ३.	५११२८
अरुस ३.	३१७२१७	अर्थना २.	३१६१२०	अर्भक १. २. ३.	५४१२
अक १.	२१११०	अर्थवाद १.	२१६३७	अर्मण ३.	४११५६
" १.	३१२१७	" १.	३१६३३	अर्थ १.	३८११
" १.	५१४४	अर्थशास्त्र ३.	३१६३०	" १.	६११५
" १.	८१६२	अर्थसञ्चय १.	३१७४४	अर्थमन् १.	२१११०
अर्कवन्धु १.	१११३५	अर्थिन् १. २. ३.	५१४६०	अर्थ्या २.	४१४२२
अर्कात्मजा २.	४१२२५	अर्थ्य १.	२१३३६	अर्थ्याणी २.	४१४२२
अर्केष्ट ३.	३८१११३	" ३.	३१२१६	अर्थ्या २.	४१४२२
अगल ३.	३१७५५	" १. २. ३.	६१४१	अर्वन १. २. ३.	६१५६
" १. २. ३.	४१३४७	अर्दना २.	३१६३०	अर्वती २.	३१७१०७
" ३.	४१३५०	अर्दनि १.	८१९१०	अर्वन् १. २. ३.	५१४७५
" १. २. ३.	४१३५०	अर्दित १. २. ३.	५१४१०२	" १. २. ३.	६१५६
" १. २. ३.	८१९३८	" १. २. ३.	५१४११२	अर्वक ४.	८१८१८
अगर्वध १.	३१३४८	अधे १.	४१४५६	अर्वच ४.	५१४९१
अर्घ १.	३८१७०	अर्धचन्द्र १.	३१७१८२	अर्वचीन १. २. ३.	५१४९१
" १.	६११५	अर्धगुच्छ १.	४१३१४०	अर्शस् ३.	४१४१३१
अर्घ्य १. २. ३.	६१४१	अर्धजाह्नवी २.	४१२२८	" ३.	६१३२
अर्घ्या २.	३१४४१	अर्धतूर १.	३१९१३९	अर्शस् १. २. ३.	४१४१४५
अर्चना २.	३१६३९	अर्धनाकुल ३.	३१६२१८	अर्शोन्न १.	३१३२०८
अर्चा २.	३१६३९	अर्धनाराच १.	३१७१८१	" ३.	३१८१४९
" २.	६१२१	अर्धपद १.	३११५१	अर्शोन्नी २.	३१३२०३
अर्चिष्मत् १.	११२१६	अर्धपद्मासन ३.	३१६२११	अर्हक १. २. ३.	५१४१३६
अर्चिस् ३.	११२२९	अर्धमुकुट १.	१११४७	अर्हणा २.	३१६३९
" २. ३.	६१५६	अधमाणव १.	४१३१३९	अर्हत १. २. ३.	१११३५
" २. ३.	७१५३२	अधमानव १.	३१९६५	" १.	६१५६
अर्जक १.	३१३११९	अधमानुष १.	३१९६५	अलक १.	४१४९८
अर्जुन १.	३१३३९	अधमायूरी २.	३१९१३१	अलकाखलिक १.	४१३९६
" ३.	३१३२३५	अधमास १.	२११७९	अलक्त १.	४१३१५३
" १.	५१३१०	अधमासतम १. २. ३.	५१११९	अलक्ष्मी २.	१११४२
" १. २. ३.	७१५५	अधमुष्टिक १.	४१४८०	अलगार्ध १. ३.	४१११९
अर्जुनी २.	४१२२६	अधरात्र १.	८१९१२	अलङ्कारिण १. २. ३.	५१४४१
" २.	७१५५	अधरात्रक १.	२११६६	अलङ्कारिण १. २. ३.	५१४७२
" २.	८१२१५	अधरूपक १.	३१८३७	अलङ्कार १.	४१३१३३
अर्ण १. ३.	२१४२१	अधर्च १. ३.	८१९२८	अलङ्कारसुवर्ण ३.	३१२२२
अर्णव १.	४१२१२	अधर्शत्य ३.	३१७१८१	अलङ्कारि १. २. ३.	५१४५३
अर्णस् ३.	४१२१	अधसूची २.	३१६२१५	अलम् ४.	८१७१३
अर्णिका २.	४१४४३	अधहस्तक १.	३११५८	अलम्बक १.	३१३६४
अर्ति २.	३१७१७८	अधहार १.	४१३१४०	अलर्क १.	३१७३९
" २.	६१२११	अधोत्क ३.	४१३१२२	अललोहित १.	११२४०

[अलस]

शब्दानुक्रमणिका

[अवष्टम्भ]

अलस १.	४१४१३५	अवक्रय १.	३१८१०	अवनाट १. २. ३.	५१४१२
" १. २. ३.	५१४१५	अवक्षेपणी २.	३१७११४	अवनि २.	३११४
" १. २. ३.	७१५१५	अवखात १.	४११३	" २.	३१३६७
अलसान्द्र १.	३१८४६	" १.	४१२७	अवन्ति १ व.	३१३३७
अलसफुटिन् १.	३१६११२	अवगति २.	३१६१६४	अवन्तिसोम ३.	४१३८२
अलात ३.	११२३२	अवगाह १.	४१३६१	अवन्ती २.	४१३९
अलावू २.	३१३१६७	अवगीत १. २. ३.	३१६१२	" २.	४१३७
अलि १.	२१३४२	" १. २. ३.	८१५१	अवन्ध्य १. २. ३.	३१३८
अलि (-न्) १.	४१३३२	अवग्रह १.	८११४	अवपात १.	३१७५२
अलिक ३.	४१४९६	अवग्राह १.	२१२४	अवभ्रत १. २. ३.	५१४१२
अलिङ्ग ३.	३१६१६२	अवघात १.	४१३६६	अवम १. २. ३.	५१४७५
अलिङ्ग ३.	४१३५६	अवचूड १.	३१७१३४	अवमर्द १.	३१७२०७
अलिङ्ग १.	२१३४२	अवच्छेद १.	३१६३३	अवमानना ३.	३१६१७२
" १.	८१६१४	अवज्ञा २.	२१३३०	अवमुण्ड १. २. ३.	३१६६६
अलिन्द १.	४१३४५	" २.	३१६१७२	अवयव १.	४१४५५
अलिप्रिय १.	८११५९	अवज्ञात १. २. ३.	५१४९५	अवर ३.	३१७७८
अलीक १. २. ३.	२१४१७	अवट १.	२१३४	(अपर)	
" ३.	७१३२	" १.	३११५४	अवरक्षणी २.	३१७११२
अलीमक ३.	३११५७	" १.	४१३३	अवरज १.	४१३३१
अलोचक ३.	४१३११४	अवटीट १. २. ३.	५१४१२	" १. २. ३.	५१४४
अल्प १.	११२५३	अवटु १. २.	४१४८५	अवराविला २.	२११७६
" १. २. ३.	५१४१३६	" १. २.	८१६१९	अवरीण १. २. ३.	५१४११०
अल्पतनु १. २. ३.	५१४१५	अवटोमनहस्त १.	४१४८१	अवरंट १.	३१५६०
अल्पतुम्बी २.	३१३१६८	अवतंस १.	८११५९	अवरोध १.	४१३३६
अल्पपच १.	३१३१२०	अवतमस ३.	२११६३	अवरोह १.	३१३१२
अल्पपल्लव ३.	४१२६	अवतरण ३.	८१३१३	" १.	८११५
अल्पपुष्प ३.	३१३७०	अवतार १.	४१२२०	अवरोहक २.	३१८३३
अल्पफला २.	३१३१७५	" १.	५१३२३	अवर्ण १. ३.	२१४३२
अल्पमात्र १.	३१३१२१	" १.	८११५	अवर्णवाद १.	२१४३३
अल्पहरिण १.	३१४१३	अवतारण १. २. ३.	३१९१४१	अवलम्ब १.	४१४६७
अवकटा २.	३१९८६	अवतीर्ण १. २. ३.	५१४९५	अवलेप १.	८१११५
अवकर १.	४१३५२	अवतांका २.	३१४४७	अवलांक १.	३१९९०
अवकरालय १.	३१६१११	अवदात १.	५१३१०	अवलार्ण १.	८१११६
अवका २.	३१६६०	" १. २. ३.	८१४३	अवलोलुक १.	५१४५२
" २.	४१२४८	अवदारण ३.	३१८२८	अवलगुज १.	३१३१०८
" २.	४१३४९	अवदाह १.	३१३२३२	अवरयम् ४.	८१८१२
अवकाश १.	२११७	अवद्य १. २. ३.	५१४७५	अवरयाय १.	२१२९
अवकीर्णिन् १. २. ३.	३१६१३३	अवधारणा २.	२१४४०	" १.	८१९१३
अवकील १.	३१८२६	अवधि १.	४१३३	अवष्टम्भ १. २. ३.	८१४४
अवकेसिन् १. २. ३.	३१३१८	अवधीरण ३.	३१७१३	अवष्टम्भ १.	३१७२०८
अवक्र १. २. ३.	५१४१२४	अवध्वस्त १. २. ३.	८१४४	" १.	८११४

अवसन्धिका]

अवसन्धिका २.	३१६१५०
अवसर १.	५१२१७
अवसाद १.	३१६१९१
अवसादनी २.	३१६१९१
अवसित १. २. ३.	८१४३
अवसुधिरा २.	४१४८४
अवस्कन्द १.	३१७२०३
" १.	३१८१७
अवस्कर १.	८१११५
अवस्था २.	५१२१२
अवहिस्था २. ३.	३१९८६
अवहेल ३.	३१६१७२
अवाक ४.	८८१९९
अवाक्श्रुति १. २. ३.	५१४१३
अवाच् १. २. ३.	५१४१४
" ४.	५१४१९
अवाची २.	२११५
अवाचीन १. २. ३.	५१४१९
अवाच्य १. २. ३.	२१४१६
अवान्तरदिशा २.	२११३
अवार ३.	४१२३२
अवि १.	३१४६४
" १.	५१४३
" १. २.	६१५४
अविदूष ३.	३१८१४७
अविन १.	७११९
अविनीत १. २. ३.	५१४३१
अविनीता २.	४१४१२
अविमरीस ३.	३१८१४७
अविरत १. २. ३.	५१४१३०
अवलम्बित १. २. ३.	५१४१४४
" १. २. ३.	५१४१२५
अविला २.	३१४६५
अविशेष १.	३१६१२०५
अविष १. २. ३.	७१५१२
अविषाद १.	३१७२८
अविषोड ३.	३१८१४७
अविस्तर १.	२१४४०
अवीची १.	११३३७
अवीरा २.	४१४२०
अव्यक्त ३.	३१६१६२
" १. २. ३.	७१५१३

वैजयन्तीकोषः

अव्यय १.	३१३१९१
अव्यथा २.	३१३१७८
" २.	३१८८९
अव्यथिष १. २.	८१५१
अव्यय १. ३.	१११४८
" ३.	८१७१
अव्यादा २.	३१८१५८
अशन ३.	४१३१५
" ३.	४१३१०२
अशनाया २.	३१६१८२
अशनायित १. २. ३.	५१४३६
अशनि १. २.	२१२१६
" १. २.	२१२१६
" १. २.	७१५१५
अशिख १. २. ३.	३१६१६
अशित १. २. ३.	५१४१०७
अशिरस् १.	३१७२१६
अशिरस्क १.	८१११६
अशिशिषा २.	३१६१८२
अशिक्षी २.	४१४२०
अशीतांशु १.	२११११
अशीति २.	५११२७
अशूर १. २. ३.	३१७१४७
अशोक १.	३१३१४०
अशोकवनिता २.	११२१४४
अशोका २.	३१८१८६
अशोभनस्वर १. २. ३.	५१४४८
अश्मकुट्टक १.	३१९१२२
अश्मगर्भ ३.	३१२३८
अश्मज ३.	३१२१६
अश्मन् १.	३१२१८
" १.	३१६१०२
अश्मन्त ३.	४१३१०४
अश्मन्तक १	३१६१९४
अश्मन्तिका २. ३.	८१८३२
अश्मरी २.	४१४१२८
अश्मरीरिपु १.	३१३१४१
अश्ममारक १.	३१२३४
अश्र १.	४१३१५२
अश्रान्त १. २. ३.	५१४१३०

[अष्टावक्र

अश्रि २.	४१३१५२
अश्रु ३.	३१९८७
अश्रुष्टार्थ १. २. ३.	२१४१७
अश्व १.	१११३०
" १.	३१७१०
" १.	८१६१७
अश्वकन्द १.	३१३१२८
अश्वकर्ण १.	३१३३८
अश्वसुरी २.	३१३१३४
अश्वगन्धी २.	३१३१२८
अश्वतर १.	३१७१०८
अश्वस्थ १.	३१३२७
अश्वपण्य १.	३१५११२
" १.	३१५१७१
अश्वपोत १.	३१७१०७
अश्वप्रिय १.	३१८१५२
अश्वबद्ध १ द्वि.	८१९५१
अश्वमारक १.	३१३१९२
अश्वमुख १.	११३३
अश्वयुज २.	२११४२
अश्वरिपु १.	३१३१९२
अश्ववाल १.	३१३१२७
अश्वार २.	३१७१०७
अश्वारि १.	३१४८
अश्विन् १ द्वि.	११३२
अश्विनी २.	२११४२
अषाढा १ ब.	२११४३
अष्टकर्मपरिभ्रष्ट १.	१११३५
अष्टग्रास १. २. ३.	३१६१३३
अष्टपाद १.	३१४३२
अष्टम १. २. ३.	५११२०
अष्टमक १. २. ३.	५११५०
अष्टमकालभुज १. २. ३.	३१६१२६
अष्टमङ्गल १.	३१७१९३
अष्टमान ३.	५११५३
अष्टमिका २.	५११५०
अष्टवर्ग १.	३१७१९
अष्टाङ्ग १.	३१६१२०८
अष्टापद १. ३.	८१५२
अष्टावक्र १.	३१६१५७

अष्टी]

अष्टी २.	३१६११६
" २.	६१२११
अष्टीला २.	४१४११३
अष्टीवत् १. ३.	४१४१५९
असक्त १. २. ३.	५१४१३०
असङ्ग्रह १.	३१६१२०९
असत् ३.	३१६१६२
असती २.	४१४१९
असतीसुत १.	४१४४३
असद्व्येत् १. २. ३.	३१६१११
असन १.	३१६१९९
असगुण १.	११११५
असगुण १. २. ३.	८१४४
असहन १.	३१७४१
असार १. २. ३.	५१४७६
असि १.	३१७१५८
" १.	३१७१५९
" १.	८१६१६
असिक्ती २.	३१७३९
असित १.	२११३५
" १.	२११७९
" १.	३१९४९
" १.	५१३११
असितानन १.	३१४४०
असिद १.	३१८३०
असिधावक १.	३१९१५
असिधेनुका २.	३१७१६३
असिपत्रिका २.	३१३१९७
असिपुत्री २.	३१७१६३
असिप्लव ३.	४११५५
असु १ ब.	३१६१२०३
असुर १.	११३१९
" १.	३१७६१
" १.	३१८१२४
असुरभि १.	५१३४७
" १.	५१३४८
असुराचार्य १.	२११३४
असुराह्वय ३.	३१२१८
असुवर्चिका २.	३१८१२९
असूया २.	३१६१८४
असूर्ण ३.	३१६१७२

शब्दानुक्रमणिका

अस्फुर १.	४१४१०४
असुगधरा २.	४१४१०३
असुज् ३.	४१४१०६
असोड १.	३१७६९
असोल १.	५१३३६
अस्त १.	३१२१६
" १. २. ३.	५१४१९७
अस्तम् ४.	८१८१६
अस्तमयाचल १.	३१२१६
अस्तिमत् १. २. ३.	५१४१५७
अस्तु ४.	८१७१३
अस्त्येय ३.	३१६१२०९
अस्त्र ३.	३१७१५७
अस्त्रग्राम १.	५१११७
अस्त्रजीवन १. २. ३.	३१७१४३
अस्त्रशासन ३.	३१६३०
अस्त्रिन् १. २. ३.	३१७१४३
अस्थान ३.	३१७१५६
" १. २. ३.	४१२१९
अस्थि ३.	४१४१०८
" ३.	४१४१०८
अस्थिखाद १.	३१४४०
अस्थितेजस् ३.	४१४११०
अस्थिपञ्चर ३.	४१४११४
अस्थिमत् १.	३१३१३०
अस्थिर १. २. ३.	५१४१६८
अस्थिप्रेमन् १. २. ३.	५१४२६
अस्थिसङ्घात १.	३१३१३०
अस्थिसङ्ग्रह १.	४१४१३०
अस्थिसम्भव ३.	४१४११०
अस्थिरुनेह १.	४१४११०
अस्पन्दनस्थिति २.	३१९८९
अस्फुटभाषण १. २. ३.	५१४४७
अस्मद् १. २. ३.	८१९४९
अस्मिता २.	३१६१६९
अस्त्र ३.	४१४१०५
" १. ३.	६१५७
अस्तु ३.	३१९८७
अस्वम् १.	१११३

[आ

अह ४.	८१७१२
अहंयु १. २. ३.	५१४२९
अहङ्कार १.	३१६१६९
अहङ्कारिन् १. २. ३.	५१४२९
अहत ३.	४१३१२०
अहन् ३.	२११५६
अहमहमिका २.	३१६१७१
अहमपूर्विका २.	३१६१७०
अहर्गण १.	३१६१८४
अहर्पति १.	२१११२
अहर्मुख ३.	२१६६८
अहस्कर १.	२१११२
अहस्तान १.	११२१२६
अहह ४.	८१७३२
अहार्य १.	३१२११
अहि १.	४११५
" १.	६११५
अहिंसा २.	३१६१२०९
अहिक १.	४११४३
अहिच्छत्र १ ब.	३११२६
" ३.	३१३१५३
अहित १.	३१७४०
अहिनिस्वयनी २.	४११२१
अहिपताक १.	४१११८
अहिपृष्ठ ३.	३१७५३
अहिभय ३.	३१७१५
अहिर्बुध्न्य १.	१११४२
अहिमतिन् १. २. ३.	३१६१३१
अहीन १.	३१६१८५
" १.	३१६१८५
अहीरिणि २.	४११२०
अहेरु २.	३१३१४२
अहो ४.	८१८१६
अहोत्र ३.	३१६१९६
अहोरात्र ३.	२११५५
अह्नाय ४.	८१८११
आ	
आ ४.	८१७११
" ४.	८१७१२

[आ]

बैजयन्तीको

[आक्ष

आ: ४.	८७१२	आख्यान ३.	२१४३८
आकम्पित १.२.३.	५४१९५	आख्यायनी २.	२४१२५
आकर १.	३२११०	आख्यायिका २.	२४१३८
" १.	५११२	आगन्तु १.	३१६६८
" १.	७११९	आगम १.	७११८
आकर्णक १.२.३.	४३११०८	आगस् ३.	३१७४७
आकर्णकषण ३.	३१७१९१	" ३.	८३११६
आकर्ष १.	३१७७२	आगू (-अगुर्) २.	३१८४७
" १.	७११३	आग्निमारुत ३.	३१६१५२
आकलन ३.	८३१३	आग्नीध्री २.	३१६१४
आकल्प १.	४३१३२	आग्नेय ३.	२११९०
आकार १.	५२१२२	" १.	२११९०
" १.	७११७	" १.	२११९२
आकारगोपना २.	३१९८६	" ३.	३१६१५
आकारणा २.	२४१३०	" १.	३१६१५२
आकालिकी २.	२२१४	" ३.	४३११०६
आकाश १. ३.	२११२	" १. २. ३.	५४१११८
आकीर्ण १.२.३.	५४१११०	आग्नेयी २.	२११४
आकुल्य ३.	४३१३८	" २.	२११९१
आकृत ३.	३१६१७४	आग्रह १.	७११२
आकृति २.	३१६१७४	आग्रहायणिक १.	२११८१
आकृति २.	७२१२	आग्रहायणी २.	२११३८
आक्रन्द १.	७११५	" २.	२११७४
आक्रम १.	५२११६	आग्रायणी २.	२११७४
आक्रीड १.	३१३३	आघट्टलिका २.	३१७१२५
आक्रोश १.	१४१३२	आघात १.	७११८
आचारण ३.	२४१३४	आघारण १.	३१६१००
आचारित १.२.३.	३१८११	आङ्गलौकिक १.	३१६१९८
आक्षिप्त १. २. ३.	५४१६७	आङ्गिक १. २. ३.	३१७९९
आक्षेप १.	७१११०	" १. ३.	४३१३२८
आक्षेपक १.	४३१३३	आङ्गिरस १.	२११३३
आक्षोड १.	३१३४६	आचाम १.	४३१७८
आखण्डल १.	१२१६	आचार १.	३१६११५
आखनिक १.	३१४६	आचारा २.	११११६
आखु १.	४११३१	आचार्य १.	३१५५६
" १.	६११७	" १.	३१६२२
आखुभुज् १.	३१४७१	" १. २.	८१९४४
आखुयान १.	१११५४	आचार्या २.	४३१२३
आखेट १.	३१९३९	आचार्यानी २.	४३१२२
आखोर १.	२११८८	आचित ३.	५११६२
आख्या २.	२१४३१	" १.२.३.	५४१११५

(१४)

आच्छादन ३.	२११६४
" ३.	४३१११६
" ३.	८३१३
आच्छुरित ३.	४३११२
आच्छुरितक ३.	३१९४४
आच्छोटन ३.	३१९३८
आजक ३.	५१११०
आजान ३.	५२११
आजानज १.	१११६
आजानेय १.	३१७९४
आजि २.	६२१३
आजीव १.	३१८११
" १. ३. ३.	५४११६
(आजिल)	
आज्ञा २.	३१७३४
" २.	३१७४८
आज्ञागणिका २.	३१७३४
आज्य ३.	३१८१३८
" ३.	५११५१
" ३.	६३१२
आज्याधिवासन ३.	३१६१९०
आज्याधिश्रयण ३.	३१६१९०
आज्यावेक्षण ३.	३१६१९०
आटक १.	३१३१८
आठरूप १.	३१३१०१
आटि ३.	३१३११
आटोप २.	३१९८९
आडम्बर १.	३१९१३८
" १. ३.	८१५४
आडिण्डिक ३.	३१६१६
आडक ३.	४३१४१
" १.	५११६३
आडकिक १.२.३.	३१८२१
आडकी २.	३१२१७
" २.	३१८४८
आढा २.	४११३३
आदिक ३.	४३११०८
आढ्य १. २. ३.	५४१५७

[आणवीन]

शब्दानुक्रमणिका

[आभिगामिकगुण

आणवीन १.२.३.	३१८२०
आनङ्क १.	७११९
आतञ्जन ३.	३१८१४४
" ३.	८३१४
आतनायिन् १.२.३.	५४१६८
आनति २.	२११६२
आतप १.	१२१३१
" १.	२११२२
आतपत्र ३.	३१७१६
आतर १.	४२११८
आताना २.	३१३१८६
आतपिन् १.	२३१२८
आताल १.	३१७११३
आति २.	२३१११
आतिथ्य १.२.३.	३१६१७
" १.	३१६१८
आतिवाहिक १.	१२१३८
आतुर १. २. ३.	४३११४३
आतोद्य ३.	३१९११४
आत्तगन्ध १.२.३.	५४१६७
आत्मगुप्ता २.	३३११२९
आत्मघोष १.	३३११५
आत्मज १. २.	४३१३९
आत्मन् १.	६११६
आत्मनीन १.	८१५३
आत्मभू १.	७११६
आत्मभरि १.२.३.	५४१५०
आत्मयोनि १.	८१११६
आत्मसम्बन्ध १.	१११४८
आत्माशिन् १.	४११४१
आत्मीय १.२.३.	३१७४३
आत्रेय १.	४३११०४
आत्रेयी २.	४३११५
आथर्वण ३.	३१६१७
" ३.	४३१२०
आदर्श १.	४३११६२
आदान ३.	३१७१८९
आदाली २.	३३११६२
आदि १.	५४१७६
आदितेय १.	१११३
आदित्य १.	१११३

आदित्य १.	११११९
" १.	११३१८
" १.	२१११५
आदिदेव १.	१११५
आदिम १. २. ३.	५४१७६
आदीनव १.	५२१४
आहत १. २. ३.	७३१२
आदेशिन् १.	३१७२५
आद्य १. २. ३.	५४१७६
" १. २. ३.	६३१२
" १.	६१५७
आद्यून १. २. ३.	५४१५१
आधान ३.	३१६१९
आधानिक ३.	३१६३३
आधार १.	४२१६
" १.	७११५
आधि १.	६११७
आधिक १.	३१८७०
आधूत १. २. ३.	५४१९५
आधेय ३.	३१६१९
आधोरण १.	३१७८८
आध्यात्मिक १.	३१६२०८
आन १.	३१६२०४
आनक १.	३१९१३३
" १. ३.	३१९१३३
आनकदुन्दुभि १. १११२६	
आनत १. २. ३.	५४१८३
आनद्ध ३.	३१९११५
आनन ३.	४३१८६
आनन्द १.	३१६१८८
आनन्दन ३.	३१६१८६
आनन्दना २ ब.	२१११८
आनर्त १.	७११४
आनाय १.	३१६७
" १.	७११४३
आनाह १.	३१६१
" १.	४३१२८
" १.	५२१५
आनील १.	३१७१००
आनुपूर्वी २.	३१६११४
आनुपूर्व्य ३.	३१६११३

(१५)

आन्तरालिक १.	३१५११९
आन्त्र ३.	३१४११३
(अन्त्र)	
आन्दोल १.	३१७१३७
आन्दोलन ३.	३१७१३७
आन्धसिक १.२.३.	४३१९२
आन्वीक्षिकी २.	३१६३१
आपगा २.	४२१२३
आपण १.	४३३३४
आपद् १.	३१६१९९
आपन ३.	५२११३
आपन्न १. २. ३.	५४११०९
" १. २. ३.	७३१२
आपन्नस्त्वा २.	४३११६
आपमित्यक ३.	३१८६
आपव १.	३१६१५५
आपाण्डुफल १.	३३११६६
आपात १.	७११९
आपान ३.	३१९५०
आपिङ्गलक १.	३१६१२२
आपिञ्जन	३१८११४
आपीड १.	४३११५४
आपीन ३.	३१४५१
आपूपिक ३.	५११११
आप्त १. २. ३.	३१७४३
" १. २. ३.	३१८१९
" १. २. ३.	५४१९९
आप्रपदीन १. २. ३.	
	४३११२१
आप्राप्त १.	३१६१९१
आप्लव १.	४३१११३
आप्लाव १.	४३१११३
आप्लुत १. २. ३.	७३१३
आबद्ध १. २. ३.	३१७१४२
आबन्ध १.	३१८२८
आबर्हित १.२.३.	५४११००
आबुक् १.	३१९१०६
आभरण ३.	४३११३३
आभ्रा १. २. ३.	५४११२२
आभाषण ३.	२४१२३
आभिगामिकगुण १.	३१७४
" १.	३१७८

[आभीर]

आभीर १.	३१५६
" १.	३१५९९
" १.	३१९२८
आभीरपल्ली २.	३१९३२
आभील ३.	१२३९
" १. २. ३.	३१९७९
" १. २. ३.	७४१२
आभोग १.	७४१७
आभ्यन्तरवृत्त ३.	३१९७४
आम् ४.	८८१७
आम १.	४४१३८
" १.	६५५७
आमण्ड १.	३३३६५
आमनस्य ३.	१२३९
आमन्त्रण ३.	३४३३१
आमन्त्रणिक ३.	३६३३
आमपात्र ३.	३६३६४
आममांसक १.	५३३७६
आमय १.	४४१३८
आमयाचिन् १. २. ३.	४४१४५
आमलक १. २. ३.	३३३७७
आमिवा २.	३६३९८
आमिष १.	३७३४६
" ३.	४४१०७
" १.	४४११४
" ३.	५३३५५
आमिपाशिन् १. २. ३.	५४१५०
आमिपी २.	३८१००
आमुक्त १. २. ३.	३७१४२
आमुप्यायण १. २. ३.	५४१५३
आमोद १.	५३३५०
" १.	७४१७
आम्नाय १.	७४१३
आम्न ३.	३३३२१
" १.	३३३२५
आम्नात १.	३३३३१
आम्नेहन ३.	५२३९
आम्नेहित १. २. ३.	३४३२२

वैजयन्तीकोषः

आय १.	३७३४४
आयत १. २. ३.	५४३८१
आयति २.	७२३३
आयत्त १.	३१९४४
" १. २. ३.	५४३२८
आयल्लक ३.	३६३७८
आयश्शूलिक १. २. ३.	५४३७४
आयस्त १. २. ३.	७४३३
आयान ३.	३७३१६
आयाम १.	३६३१७
" ३.	३७३९१
" १.	५२३५
आयास १.	३६३९३
आयु १.	१२३२५
आयुध २.	३७३५७
" २.	३७३०६
आयुध ३.	३२३३३
" ३.	३७३५७
" ३.	८६३९
आयुधग्रय २.	३७३७२
आयुधिक १. २. ३.	३७३४३
आयुधीय १. २. ३.	३७३४३
आयुर्वेद १.	३६३२९
आयुर्वेदिन् १. २. ३.	४४३४४
आयुस् ३.	३७३२१
" ३.	६३३५
आयोग १.	७४३४
आयोगव १.	३१३२२
" १.	३१३२९
" १.	३१३८२
" १.	३१३८६
आयोधन ३.	३७३२७
" ३.	८३३४
आर १.	३१३३१
" १.	३२३२६
आरकूट १. ३.	३२३२६
आरक्ष १.	३७३३८
" १.	३७३७४
आरग्वध १.	३३३४८
आरह १. २. ३.	३१३३४

[आर्य]

आरह १. २. ३.	३१३४६
" १.	३७३९६
आरणिन् १.	३३३३३
आरति २.	५२३३६
आरनाल ३.	४३३८१
आरभट १. २. ३.	३७३४७
आरभटी २.	३१३१०१
आरम्भ १.	३१३१४०
" १.	५२३१५
आरलु १.	३३३६९
अरव १.	३४३३
आरा २.	३१३४३
आराग्र ३.	३७३८५
आरात् ४.	८७३१६
आराधन ३.	३६३३८
" ३.	८३३४
आराम १.	३३३३२
आरालिक १. २. ३.	४३३९२
आराव १.	३४३३
आरु १.	३३३१५४
" १.	५३३२४
आरुह १.	३८३५२
आरेवत १.	३३३४८
आरोग्य ३.	४४३४२
आरोपित १. २. ३.	५४३१०४
आरोह १.	३७३८८
" १.	७४३१७
आरोहण ३.	४३३५१
" ३.	५२३१५
आरवध १.	३३३४८
आर्जिक १. २. ३.	४४३३३
आर्तगल १.	३३३१९०
आर्तव ३.	४४३१६
आर्ति २.	३६३८७
" २.	३७३७८
आर्द्र १. ३.	३३३२१४
" १. २. ३.	५४३१०७
आर्द्रक १. ३.	३३३२१४
आर्द्रा २.	२१३४०
आर्य १.	३७३२३
" १.	३१३१०६

[आर्य]

आर्य १. २. ३.	५४३६१
" १. २. ३.	६४३३
आर्यक ३.	३६३६६
आर्यपुत्र १.	३१३१०६
आर्या २.	११३५८
आर्यावर्त १.	३१३२३
आर्यभ ३.	३१३१९
आर्यभी २.	२१३४७
आर्यभ्य १. ३.	३४३५५
आल ३.	३२३१४
आलगन्धिका २.	३७३३४
आलम्भ १.	८१३१०
आलय १.	४३३८
आलवाल ३.	४२३१०
आलस्य ३.	३६३१८
" १. २. ३.	५४३५५
आलान ३.	३७३८२
" ३.	७४३३
आलाप १.	२४३२३
आलावर्त १.	४३३१५९
आलास्य १.	४२३५३
आलि १.	४१३३२
" २.	५१३२४
" २.	६२३३
आलिङ्गन ३.	४३३१७०
आलिङ्ग्य १.	३१३१२९
आलिन्द १.	४३३४५
आली २.	३८३२६
" २.	४४३२५
आलीढ ३.	३७३८७
आलु २.	४३३५७
आलुक १.	५३३४४
आलेख्यलेखा २.	३१३२४
आलेप १.	४३३१४७
आलोक १.	१२३३१
" १.	७४३८
आवतारिक १.	४१३४३
आवन्त्य १.	३५३५३
" १.	३५३१०१
आवपन ३.	४३३६२
आवर्जन ३.	५२३४०

शब्दानुक्रमणिका

आवर्त १.	४२३३०
आवर्तन ३.	३१३११
" ३.	५२३४१
आवलि २.	५१३२४
आवसथ १.	४३३९८
आवसथ्य १.	१२३२५
" १.	४३३२७
आवसित १. २. ३.	३८३६७
आवाप १.	३७३१४
" १.	७४३६
आवापक १.	४३३१४४
आवाल ३.	४२३१०
आवालि २.	४३३३५
आवाह १.	४२३६
आविः (-स्) ४.	८८३१८
आविक १.	४३३१२९
आविद्ध १. २. ३.	५४३१२३
" १. २. ३.	७४३२
आविध १.	३१३१८
आविल ३.	४२३४
आविश १.	३६३१६१
(आवश)	
आवृत्त १.	३१३१०७
आवृत् २.	३६३११३
" २.	३६३११४
आवृत्त १.	३५३५
" १.	३५३९०
" १. २. ३.	५४३९६
आवेग १.	३१३८९
आवेशन ३.	४३३२२
आवेशिक १.	३६३६८
आवेष्टक १.	४३३१४
आशंसितृ १. २. ३.	५४३४३
आशंसु १. २. ३.	५४३४३
आशङ्का २.	३६३१७६
आशय १.	३६३१७४
" १. २. ३.	५४३११४
" १.	७४३१७
आशर १.	१२३४१

[आषाढ]

आशा २.	२१३२
" २.	६२३३
आशाबन्ध १.	४१३३५
आशासन ३.	३६३१२०
आशितम्भव १.	८५३२५
आशिर १.	१२३१९
" १.	७४३६
आशिस २.	६२३२
आशीविष १.	४१३५
" १.	४१३३
आशु ३.	३२३२२
" १. २. ३.	५४३१२५
आशुग १.	१२३४९
" १.	७४३९
आशुशुक्लि १.	८१३५०
आशोचिनि १.	३१३१६
आश्वर्य १. २. ३.	३१३७८
आश्रम १. ३.	४३३२६
" १. ३.	७४३१६
आश्रय १.	३७३६
आश्रयाश १.	१२३१७
आश्रव १.	५२३४
" १.	५२३३७
" १. २. ३.	५४३४९
आश्लेष १.	४३३१६९
आश्लेषा २.	२१३३३
आश्व ३.	५१३१०
आश्वकिनी २.	२१३४२
आश्वस्थ ३.	३३३२२
आश्वयुज १.	२१३८५
आश्वत्थ १.	३६३२०५
आश्विक १.	३५३७१
आश्विन १. द्वि.	१३३६
" १.	२१३८५
आश्विनी २.	२१३७६
आश्विनेय १. द्वि.	१३३६
आश्वीन १. २. ३.	३७३१०८
आषाढ १.	२१३८४
" १.	३२३३

[आषाढ]

आषाढ १.	३१६१८
आषाढी २.	२११७६
आस १.	३१७१७२
" १.	५३२८
आसक्त ३.	२११६२
आसङ्ग ३.	३१११३
" १.	३१७१५९
आसन ३.	३१६२१०
" ३.	३१७१६
" ३.	४३११६४
" ३.	५३१४०
" ३.	७३१३
आसना २.	५२११४
आसन्दी २.	४३११६०
" २.	४३११६४
आसन्न १. २. ३.	५३११४१
आसव १.	३३२१७
" १.	३११४७
" १.	३११४९
" १.	३११५१
" १.	३११५२
आसादित १. २. ३.	५३१९९
आसार १.	३१७२०१
" १.	७११२
आसारी २.	३११४२
आसाविक १.	३१५११२
आसिक ३.	३१७१९४
आसीन १. २. ३.	५३११०
आसुतीवल १.	३११४४
" १.	८११५०
आसुर १.	२३११७
" ३.	३२३३४
" १.	३१८१२४
" ३.	४३११०५
आसुरी २.	३१८४२
आसूति २.	३११५१
आसेचनक १. २. ३.	५३१६५
आस्कन्दन ३.	३१७२०३

वैजयन्तीकोषः

आस्कन्दित १. २. ३.	३१७११८
आस्कन्दितक १. २. ३.	३१७१२०
आस्तरण ३.	४३११६६
आस्ताव १.	३१६११०
आस्तिक १. २. ३.	५३१३७
आस्था २.	३१८१३३
" २.	५२१३७
" २.	६२१२
आस्थान ३.	३१८१४४
आस्थानगृह ३.	४३१२०
आस्थानी २.	३१८१४४
आस्पद ३.	७३१३
आस्फोटनी २.	३१९१८
आस्फोट १.	३३१२९
आस्फोता २.	३३११३४
" २.	३३११८५
आस्थ ३.	४३१८६
" ३.	६३१३
आस्था २.	५२११४
आस ३.	३१९१८७
" १.	६१५७
आस्वाद्य ३.	४३१९१
आहत १. २. ३.	२१११७
" १. २. ३.	७३१३
आहति २.	३१६१८९
आहर १.	३१६२०४
आहव १.	३१७२०५
आहवनीय १.	१२१२४
आहार १.	७११८
आहार्य ३.	३१८११४
" १. २. ३.	३१९९९
" ३.	४३१७६
आहाव १.	४२१९
आहिक १ व.	२११३७
" १.	३१६१५४
आहिण्डक १.	३१५४४
(आहिण्डक)	
" १.	३१५९३

[इच्छु]

आहिताग्नि १	३१६७३
आहितुण्डक १.	४११२५
आहुक ३.	४३१८
आहुति २.	३१६६९
आहोपुरुषिका २.	३१६१७०
आहोस्वित् ४.	८१८२
आहिक १.	३१६३२
आह्वय १.	२११३१
आह्वा २.	२११३१
आह्वान ३.	२११३१
इ ४.	८१११०
इच्छु १.	३३१२२५
इच्छुगन्धा २.	३३११४१
इच्छुगन्धिका २.	३३११९६
(गण्डिका)	
" २.	३३१२२७
इच्छुपालिका २.	३३१२२६
इच्छुभेद १.	३३१२२६
इच्छुर १.	३३११०१
इच्छुविदारिकार. ३.	३३११९६
इच्छुशाकट १. २. ३.	३१८२२
इच्छुशाकिन १. २. ३.	३१८२२
इच्छुसुनिका २.	४३१२५
इच्छुदक ३.	३११११
इच्छुवाकु १.	३३१४९
" २.	३३११६८
इक्ष १.	५२१२२
इक्षत् १. २. ३.	५३१६१
इक्षाल १.	१२१३२
इक्षित ३.	५२१२२
इक्षुद १. २. ३.	३३१७८
इक्षुदी २.	३३१३३९
इक्ष्वा २.	३१६१७९
" २.	३१६१८२
इक्ष्वावसु १.	१२१५८
इच्छु २.	४३१११

[इज्जल]

इज्जल १.	३३१६७
इज्या २.	३३१३१
" २.	६२१४
इज्याशील १.	३३१७५
इज्ज्वर १.	३३१५३
इडा २.	६२१३
इतर १. २. ३.	५३१२२
इतरथा ४.	८१८२०
इतरेतर १. २. ३.	५३१२३
इतरेषुः (—सु) ४.	८१८८
इति ४.	८१७१७
इतिकथा २.	८२१३
इतिह ४.	२११३८
" ४.	८१८२१
इतिहास १.	२११३८
इत्थम् ४.	८१८२०
इत्थम्भाव १.	५२१२३
इत्थरी २.	४३१९
इत्वास १.	३३११९९
इदानीम् ४.	८१८५
इद्ध ३.	२११२२
इध्म १. ३.	२११८८
" १.	३१६१९६
इध्मप्रोक्षण ३.	२१६१९०
इध्मवाहक १.	३३११५७
इन १.	६१५७
इन्दिन्दिर १.	२३१३३
इन्दिरा २.	१११३६
इन्दीवर ३.	४२१३५
इन्दीवरी २.	३३११४२
इन्दु १.	२११२५
" १.	५११५२
" १.	८१६३
" १.	८१६६
इन्द्र १.	१२११
" १.	६११८
" १.	८१६३
इन्द्रक ३.	४३१२०
इन्द्रकोश १.	४३१३२
इन्द्रच्छुद १.	४३१३८
इन्द्रजाल ३.	३१७१३

शब्दानुक्रमणिका

इन्द्रजित् १.	१२१४४
इन्द्रदारद १.	४११२४
इन्द्रधनुस् ३.	२३३३
इन्द्रनील ३.	३२१४०
इन्द्रभगिनी २.	१११६२
इन्द्रमद १.	४३१३६
इन्द्रमह १.	३३१६९
इन्द्रयव १. ३.	३३१७३
इन्द्रलुप्तक ३.	४३१२६
इन्द्रवस्ति १.	४३१५७
इन्द्रवारुणी २.	३३१७२
इन्द्रवृद्धि १.	३१७९८
इन्द्रवृत्तादिक ३.	३१७६
इन्द्रसुरस १.	३३११८
इन्द्रस्वम् २.	१११६२
इन्द्राणी २.	१२१११
इन्द्राणीमह १.	३३१५७
इन्द्रायुध ३.	२३३३
" १.	३१७९२
इन्द्रावरज १.	११११९
इन्द्रिय ३.	३३१२०३
" ३.	७३१४
इन्द्रियग्राम १.	५१११७
इन्द्रियार्थ १.	५११२
इन्धन ३.	३३१९६
इन्वका २ व.	३१३३९
इभ १.	३१७६०
इभ्य १. २. ३.	५३१५७
इभ्या २.	३३११०३
इरम्मद १.	१२१२०
इरा २.	३११४५
" २.	६२१४
इरिण १. २. ३.	३१८१८
" १. २. ३.	७३१४
इर्वारु १.	३३१३६६
" २.	३३१७२
इला २.	३११३
" २.	६२१४
इलावृत्त ३.	३११७
इलिक १.	३३१६३
इली २.	३१७१६०

[ईश्वर]

ईश्वला २ व.	२११३९
इव ४.	८१८१५
इष १.	२११८५
इषीक १ व.	३११३४
इषीका २.	३३१२५
इषु १. २.	३१७१८०
इषुधि १. २.	३१७१७९
इष्ट ३.	३३११५५
" १. २. ३.	३१७१३
" १. २. ३.	५३१९६
इष्टका २.	३१८२५
इष्टि २.	६२१४
इष्टव १.	६११८
इष्टवास १.	३१७१७२
ईक्ष ३.	४३१९४
" ३.	७३१४
ईक्षणिका २.	४३१११
ईक्षान १.	२११८४
ईक्षित १. २. ३.	५३१९६
" १. २. ३.	५३११०६
ईति २.	६२१५
ईहृत् १.	१३११०
ईप्सा २.	३३११८०
ईरित १. २. ३.	५३१९६
ईर्म १. ३.	३१७२१७
ईर्यापथस्थिति २.	३३१११६
ईर्या २.	३३११८४
ईषिका २.	४३१११६
ईली २.	३१९३७
ईश १.	१११४०
" १. २. ३.	५३१५८
" १.	८१५३५
ईशशक्ति २.	१११४९
ईशान १.	१११४०
" १.	७१११०
ईशित् १. २. ३.	५३१५८
ईश्वर १.	१११४०
" १.	३३३३७
" १.	३३१५३

[ईश्वर]

ईश्वर १.	४१४१३५
" १. २. ३.	५१४५७
" १.	७१४३५
ईश्वरप्रिय १.	२१३३५
ईश्वर ४.	८१८१२
ईशा २.	३१८२७
ईषादन्त १.	३१७६९
ईषान्तबन्धन ३.	३१७१३०
ईषिर १.	११२१९
ईहन ३.	५१२११
ईहा २.	३१६१७९
" २.	६१२१५
ईहामृग १.	५१५८
" १.	३१७१००
ईहित १. २. ३.	५१४९६
उ	
उ ४.	८१७१०
" ४.	८१७११
उक्थ ३.	३१६१११
उक्षतर १.	३१४५५
उच्चन् १.	३१४५२
" १.	८१६१५
उच्चवश १.	८१५५१
उखा २.	४१३५५
उख्य १. २. ३.	४१३९४
उग्र १.	१११४६
" १.	३१५१३
" १.	३१५७२
" १.	३१५७६
" १.	३१५११६
" ३.	३१८१२४
" ३.	३१८१४८
" १. २. ३.	३१९७९
उग्रगन्ध १.	३१३१७१
" १.	८१५१५
उग्रगन्धा २.	३१३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१५१५
उग्रता २.	३१६१९२
उग्रधन्वन् १.	११२१६
उग्रविष १.	३१३१९३

वैजयन्तीकोषः

उग्रा २.	३१३१९७
" २.	३१८१०२
" २.	८१२१४
उग्रिका २.	३१६१९२
उचित १. २. ३.	५१४१०३
" १. २. ३.	७१४१७
उच्च १. २. ३.	५१४८१
उच्चकैः (-स्) ४.	८१८१९
उच्चण्ड १. २. ३.	५१४९४
उच्चतालक ३.	३१९१५४
उच्चन्द्र १.	२११६६
उच्य १.	४१३१३०
उच्चल ३.	३१६१७२
" ३.	३१७१७५
उच्चलित ३.	३१७१७२
उच्चस्वन १.	२१४३
उच्चार १.	४१३११९
उच्चारणा २.	३१६३५
उच्चूड १.	३१७१३४
उच्चैः (-स्) ४.	८१८१९
उच्चैःश्रवस् १.	११३११
" १.	८१११९
उच्छिष्टभोजिन् १. २. ३.	
	३१६१०
उच्छीर्ष ३.	४१२१६७
उच्छुन ३.	२११८३
उच्छूर १.	२११६५
उच्छृङ्खल १. २. ३.	
	५१४१३२
उच्छ्राय १.	३१३१६
उच्छ्रित १. २. ३.	७१४१५
उच्छ्रिताग्रक १. २. ३.	
	५१४८१
उच्छ्रास १.	३१५३२
" १.	३१६२०४
उज्जट १. २. ३.	३१३१४५
उज्जासन ३.	३१७२१५
उज्ज १.	३१८१२
उज्ज १. २.	४१३२६
उहु २. ३.	२११३८
उहुप ३.	४१२१६

[उत्तमसाहस]

उहुराज १.	२११२७
उहुन ३.	२१३५०
उहुश १.	१११४५
उत १. २. ३.	५१४११२
" ४.	८१७१८
" ४.	८१८१२
उताहो ४.	८१८१२
उत्क १. २. ३.	५१४३४
उत्कट १.	३१३१३०
(इट्कट, तिक्कट)	
" ३.	३१६२१६
" ३.	३१८१८०
" ३.	३१८१०४
" १. २. ३. ५१४३७	
" १. २. ३. ५१४३७	
" १. २. ३. ७१४३७	
उत्कण्ठ १. २. ३.	८१९२७
उत्कण्ठा २.	३१६१७८
उत्कर १.	३१६१११
" १.	५११३
उत्कलिका २.	३१६१७८
" २.	४१२२४
उत्कार १.	५१२२१
उत्कारिका २.	४१३७२
उत्कीर्ण १.	४१२१७
उत्कुञ्ज १.	४१३६९
उत्कोच १.	३१७४६
उत्क्रम १.	५१२१६
उत्क्रोश १.	२१३३४
उत्क्रिसिका २.	४१३१३४
उत्क्रुद्रल १.	५१३१४
उत्खात १.	३१६२२९
उत्खेद १.	३१६१८३
उत्त १. २. ३.	५१४१०७
उत्तंस १.	४१३१५४
" १.	८११५९
उत्तस ३.	४१३८९
उत्तम १. २. ३.	५१४६२
" १. २. ३.	७१४६
उत्तमर्णक १. २. ३.	३१८१८
उत्तमसाहस १.	५११४१

उत्तमा]

उत्तमा २.	३१३१६०
उत्तमाङ्ग ३.	४१४८५
उत्तमोत्खात १.	३१६२३०
उत्तमोत्तमिक ३.	३१९१२
उत्तर ३.	२१४३७
" ३.	३१८१६
" १. २. ३. ७१५१८	
उत्तरच्छद १.	४१३१६६
उत्तराङ्ग ३.	४१३१३
उत्तरायण १.	२११९०
उत्तरासङ्ग १.	४१३१२३
उत्तरीय ३.	४१३१२२
उत्तरेद्युः (-स्) ४.	८१८१८
उत्तान १. २. ३.	५१४१०
उत्तानशय १. २. ३.	५१४१२
उत्ताल १. २. ३.	५१४१२
" १. २. ३.	७१४३७
उत्त्रास १.	३१६१०६
उत्थान ३.	४१४१२८
" ३.	७१३१५
उत्थित १. २. ३.	३१८१८
" १. २. ३. ५१४५२	
उत्थुस १.	५१३१४०
उत्पतन ३.	८१३१५
उत्पतिवृ १. २. ३. ५१४४२	
उत्पतिपु १. २. ३. ५१४४२	
उत्पत्ति २.	४१४१८
उत्पल ३.	३१८१९९
" १.	४११४६
" ३.	४१२३४
" ३.	४१२३५
उत्पलावर्त १ ब.	३१३३३
उत्पश्य १. २. ३. ५१४५४	
उत्पाट १.	४१४१३७
उत्पाटित १. २. ३.	
	५१४१००
उत्पात १.	३१६१९०
उत्पाद १.	३१४३२
उत्पादशयन १.	२१३३४
उत्पिञ्जल १. २. ३.	
	५१४९४

शब्दानुक्रमणिका

उत्पिब १.	२१३३५
उत्पिषा १.	५१३१२
उत्प्रास १.	२१४३५
उत्प्रेक्षा २.	३१६१७४
उत्फुल्ल १. २. ३.	३१३१९
उत्स १.	३१२१७
उत्सङ्ग १.	३१७७६
" १.	४१४६०
उत्सन्नामि १.	३१६७१
उत्सर्जन ३.	३१६११९
उत्सव १.	३१६६१
" १.	७११११
उत्सादन ३.	८१३१५
उत्साधन ३.	४१३१३३
उत्साह १.	३१६१६७
" १.	३१९७६
उत्साहा २.	३१२२५
उत्सुक १. २. ३. ५१४३०	
उत्सृष्ट १.	३१३१५१
" १. २. ३. ५१४१०१	
उत्सेध १.	७१११०
उदक ३.	४१२२
उदक्या २.	४१४१५
उदग्र १. २. ३.	५१४८१
उदग्रदत् १.	३१७६९
" १. २. ३. ५१४९	
उदच् ३.	२११८
" १. २. ३. ४.	
	५१४९१
उदज १.	५१२३१
उदञ्जन ३.	४१३५५
उदधि १.	४१२१०
उदन्त १.	२१४३९
उदन्त्या २.	३१६१८१
उदन्वत् १.	४१२१०
उदपान १. ३.	४१२९
उदय १.	३१२१६
" १.	३१७४४
उदयनीय १.	३१६१५८
उदयाद्रि १.	३१२१६
उदर ३. २.	४१४६७

[उद्गाल]

उदरग्रन्थि १.	४१४१३०
उदरत्राण ३.	३१७१५४
उदरिल १. २. ३.	५१४७
उदर्क १.	७१११२
उदर्विस् १.	११२१५
उदवसित १. २. ३.	
	४१३१९
उदधित् ३.	३१८१५०
उदात्त १. २. ३.	३१६३७
" १. २. ३.	८१७६
उदान १.	७१११२
उदार १. २. ३.	५१४२०
" १. २. ३.	५१४५६
" १. २. ३.	७१४४
उदारक १.	३१८५९
उदावर्त १.	४१४१३२
उदासीन १.	३१७४०
उदास्थित १.	३१७२७
" १.	८१११९
उदाहार १.	२१४३१
उदित १. २. ३.	७१४५
उदीची २.	२११५
उदीचीन १. २. ३.	
	५१४९१
उदीच्य १.	३१३२२
उदीर्ण १. २. ३.	५१४५६
उदुब्ज १. २. ३.	५१४९०
उदुम्बर १ ब.	३१३३९
" ३.	३१२२५
" १.	३१३२८
" १. ३.	८१५४
उदुम्बरा २.	४१३४४
उदूखल २.	४१३६५
उदूढ १. २. ३.	५१४८०
" १. २. ३.	७१४६
उदूत १. २. ३.	५१४११४
उदूमनीयक ३.	४१३१२०
उद्गाढ १. २. ३.	५१४१३१
उद्गावृ १.	३१६७९
उद्गार १.	४१४१२६
उद्गाल १.	४१४१२६

[उद्गूर्ण]

उद्गूर्ण १. २. ३. पा४११४
उद्वाहित १. २. ३. ८४१६
उद्दीव १. २. ३. पा४१२०
उद्द १. ८११४२
उद्दन १. ३११३५
उद्दाटन ३. ४१२२१
उद्दात १. २४१४१
" १. ३१७२४
" १. ४१३३२
उद्दंश १. ४११३५
उद्दण्ड १. ४१४६
उद्दाम १. १२१४६
" १. २. ३. पा४१३२
उद्दाल १. ३१३६०
" १. ३११४३
उद्द्राव १. ३१७२११
उद्दन १. ३१६१०२
उद्दरण ३. ८३१६
उद्दर्व १. ३१६११
उद्दव १. ३१६११
उद्दान ३. ४११५४
" ३. ७३१५
उद्दार १. ३१८४
उद्धूम १. २४१२८
उद्घत १. २. ३. पा४११००
" १. २. ३. पा४१११२
" १. २. ३. ७३१५
उद्ध्य १. ४१२२९
उद्ध्य १. ३१५४१
उद्ध्यवृषभ १. ३१६१२२
उद्बुद्ध १. २. ३. ३१३१९
उद्बृहित १. २. ३. पा४११००
उद्भव १. ४१११८
उद्भिज १. २. ३. ४१४१
उद्भिद् २. ४१४१
उद्भिद् ३. ३१८१२२
" १. ४११८
" १. २. ३. ४१४१
उद्भ्रम १. पा२१३३

वैजयन्तीकोषः

उद्यत १. २. ३. पा४११४
उद्यम १. ३१६१६७
" १. पा२१३४
उद्यान ३. ३१३३
" ३. ७३१४
उद्युक्त १. २. ३. पा४१३०
उद्योग १. ३. पा२१२५
उद्योत १. २१११६
उद्ग १. ४११५४
(द्र)
उद्गकलाहक १. ३१८१०१
उद्गर्तन ३. ४३१११३
उद्गन्त ३. ३१७६८
" १. २. ३. पा४१११४
उद्गासन ३. ३१७२१४
" ३. ८३१५
उद्गाह १. ३१६१५५
उद्गै १. ३१६१६७
" ३. ४३११०६
" १. पा२१३३
उद्गैकर्तरी २. पा३११०८
उन्दुर १. ४११३१
उज्ज १. २. ३. पा४११०७
उज्जत १. २. ३. पा४१८१
उज्जतनासिक १. २. ३. पा४१६
उज्जतानत १. २. ३. पा४१८३
उज्जति २. पा२१२४
उज्जाम १. पा२१२४
उज्जाल १. ३१८१५५
उज्जिद् १. २. ३. ३१३१९
उन्मत्त १. ३१३७६
उन्मदिष्णु १. २. ३. पा४१४१
उन्मनस् १. २. ३. पा४१३४
उन्मथ १. ३१७२११
उन्माथ १. ३११४०
उन्माद् १. ३१६१७७
उन्मान ३. पा११५६
उन्मिषित १. २. ३. ३१३१९

[उपताप]

उन्मीलन ३. ३१९१०
उन्मीलित १. २. ३. ३१३१९
उन्मुख १. २. ३. पा४१५४
" १. २. ३. पा४१९०
उन्मूलित १. २. ३. पा४११००
उन्मेष १. ३१९१०
उप ४. ८१७१८
उपकण्ठ १. २. ३. ३१७१२०
" १. २. ३. पा४११४१
उपकर्या २. ४३१३०
उपकरूप १. ३१३११३
उपकार १. पा२१२२
उपकारिका २. ४३१३०
उपकार्या २. ४३१३०
उपकुञ्जिका २. ३१८१८५
" २. ३१८१८७
उपकुर्वाण १. ३१६१८
उपकुल्या २. ३१८१७७
उपक्रम १. २४१४१
" १. ३१६२५
" १. पा२११५
" १. ८१११८
उपक्रिया २. पा२१२२
उपक्रोश १. ३१६१९३
उपखिल ३. ३१६३३
उपगूहन ३. ४३११६९
उपग्रह १. ८१११८
उपग्राह्य ३. ३१७४५
उपग्र ३. ४३११२
उपचर्या २. ४४१३९
अपचार १. ८१११७
उपचित १. २. ३. पा४१५७
" १. २. ३. पा४११०८
उपचित्रा २. ३१३११३
उपच्छन्दन ३. २४१२३
उपजाप १. ३१७१३
उपजिह्विका २. ४११३८
उपजोषम् ४. ८१८१७
उपज्ञा २. ३१६२५
उपताप १. ८१११९

उपत्यका]

उपत्यका २. ३१२१९
उपत्रिंश १. २. ३. ब. पा११३५
उपदंश १. ३१९१५२
" १. ४३१८६
" १. ४४१६३२
उपदा २. ३१७४५
उपदीका २. ४११३८
उपदेहिका २. ४११३८
उपद्रव १. ३१६१९०
उपद्रष्टृ १. ३१६१८१
उपधा २. ३१६१९५
" २. ७२१३
उपधान ३. ४३११६७
उपनत १. २. ३. पा४११०४
उपनय १. ३१६१७
उपनाय १. ३१६१७
उपनाह १. ३१९१२१
" १. ८१११७
उपनिधि १. ३१८११२
उपनिमन्त्रण ३. ३१६१९३
उपनिवेशिनी २. २११७९
उपनिषद् २. ८२१३
उपन्यास १. २४१४१
उपपति १. ४४१३८
उपप्राप्त १. २. ३. पा४११०४
उपप्लव १. २११३०
" १. ३१६१९०
उपबर्ह ३. ४३११६७
उपबर्हण ३. ४३११६७
उपभृत् २. ३१६१००
उपमन्त्रण ३. २४१४१
उपमा २. पा४११२२
उपमान ३. ३१९१२१
" ३. ८१९१७
उपयम १. ३१६१५५
उपयाम १. ३१६१५४
उपयोग १. पा२१२५
उपरक्त १. २११३०
" १. २. ३. पा४१६८

शब्दानुक्रमणिका

उपरक्षण ३. ३१७१५९
उपरति २. ४१२३६
उपरध्या २. ४३१३६
उपरमण ३. पा२३६
उपराग १. २११३०
उपराम १. पा२३६
उपरि ४. ८१८१९
उपरिष्ठात् ४. ८१८१९
उपरिस्थूणा २. ४३१४१
उपल १. ३१२८
" १. २. ३. ७१५१७
उपलब्धि २. ३१६१६४
" २. ८२१४
उपलम्भ १. पा२११९
उपलवण १. ३१८१२६
उपला २. ४३११६३
उपलिङ्ग ३. ३१६१९०
उपवन ३. ३१३२
उपवर्ण १. ३१५२
उपवर्तन ३. ३१७४९
" ३. ३१७१११
उपवर्ष १. ३१६१५४
उपवसथ १. ४३२२
उपवस्तु १. ३१६१४४
उपवास १. ३१६१४४
उपविंश १. २. ३. ब. पा११३५
उपविषा २. ३१८१९०
उपविष्कर ३. ४३११७
उपविष्ट १. २. ३. पा४११०
उपवीत ३. ३१६१२०
" ३. ८३११७
उपवेद १. ३१६३०
उपवेश ३. पा२११४
उपवेणव ३. २११६७
उपशक्त्यक ३. ४३१११
उपशाय १. ४३११६७
उपश्रुत १. २. ३. पा४११०६
उपसंव्यान ३. ४३११२१
उपसंहार १. पा२११८
उपसंग्रहण ३. ३१६१४०

[उपानह]

उपसन्न १. २. ३. पा४११०४
उपसम्पन्न १. २. ३. ३१७२२०
" १. २. ३. ४३१९४
" १. २. ३. ८१५२६
उपसम्भाषण ३. २४१२३
उपसर्ग १. ३१६१९०
उपसर्जन ३. पा४१६४
उपसर्था २. ३१४१६
उपस्कर १. ४३१९०
उपस्करस्वल्लिनी २. ३१७१५४
उपस्करव्रत ३. ३१६१४८
उपस्थ १. ३१६१०३
(उपस्थाव)
" १. ४४१६०
" १. ३. ४४१६७
उपस्थान ३. पा२१२१
उपस्थित १. २. ३. पा४११०४
उपस्पर्श १. ४३१११३
" १. ८१११९
उपस्पर्शन ३. ८३११४
उपहसित ३. ३१९१८४
उपहार १. ३१७४५
उपहालक १. ब. ३१११७
उपह्वर ३. ८३१५
उपांशु १. ३१६१९२
" ४. ८१७३२
उपाग्र १. २. ३. पा४१६४
उपात्यय १. ३१६११४
उपादान ३. पा२११८
उपाधि १. ७११११
उपाध्याय १. ३१६२२
" १. २. ३. ८१५४४
उपाध्याया २. ४४१२३
उपाध्यायानी २. ४४१२२
उपाध्यायी २. ४४१२२
" २. ४४१२३
उपानह २. ४३११६२

[उपान्त]

वैजयन्तीकोषः

[ऊरव्य]

उपान्त १. २. ३.	उर्वरा २.	३११४	उपस् २. ३.	२११६९
५४१४२	" २.	३१८१७	" २. ३.	६१५८
उपायन ३.	उर्वारु २.	३१३१६७	उपा २.	२११५७
उपालम्भ १.	" १.	३१३१७२	" २.	३१४११
उपावृत्त १. २. ३.	उर्वी २.	३११११	" ४.	८१८१११
३१७१०७	उलङ्कल १.	४११३७	उपापति १.	१११२९
उपासङ्ग १.	उलन्द १.	१११४६	उषित १. २. ३.	७१४७
उपासन ३.	उलप १.	३१३१७	ऊर् १.	३१४६७
उपासना २.	" १.	३१३२२९	ऊर्जीवक १.	४१४१३१
उपासित १. २. ३.	उलम्ब ३.	४३१७०	ऊर्ध्वपुच्छिका २.	३१३१२६
५४११०५	उलक १.	२३१२२	उष्टिका २.	४३१६१
उपाहित १.	उलकचेटी २.	२३१२१	उष्ण १.	२११८८
उपेक्षा २.	उलकारि १.	२३११६	" १.	३१३१६
उपेन्द्र १.	उलखल १.	३१६१९	(कृष्ण)	
उपोढ १. २. ३.	" ३.	४३१६५	" ३.	५३१७
उपोदिका २.	" ३.	४१४७०	" १. २. ३.	६१५८
उपोद्घात १.	उलखली २.	३१७१११	उष्णक १. २. ३.	५४५५४
उसकृष्ट १. २. ३.	उल्लु १.	३१६१७	उष्णवीर्य १.	४१५५४
उभयद्युः (-स्) ४. ८१८१९	उल्का २.	१११३२	उष्णागम १.	२११८८
उभयद्युः (-स्) ४. ८१८१९	उल्ब ३.	४१४१८	उष्णिका २.	४३१८०
उमा २.	उल्बण १.	५३१९	उष्णीष १. ३.	४३१२४
" २.	" १. २. ३.	५४१३४	" ३.	४३१२५
उमापति १.	" १. २. ३.	५४१३७	" ३.	४४१८५
उमासुत १.	उल्बणक ३.	३११८२	उत्त १.	२१११६
उम्बुरा २.	उल्बस्थूणा २.	४३१३९	" १. २.	६१५९
उम्य १. २. ३.	उल्मुक ३.	१३१३२	उत्तरा २.	३१४४२
उरग १.	उल्मसनक ३.	३११८२	ऊ.	
उरगाशन १.	उल्लाघ १. २. ३.	४११९३	ऊक १.	२३१३
उरण १.	उल्लाप १.	२११२९	ऊख १.	४१४६५
उरभ्र १.	उल्लिखित १. २. ३.	८११५	ऊत ३.	४२१४
उररी ४.	उल्लु १.	३१३२०८	" १. २. ३.	५४११००
उरस् ३.	उल्लुक १.	३१३२२९	" १. २. ३.	५४१११२
" ३.	उल्लेखनीय १.	३१३४२	ऊति २.	६१२५
उरसिल १. २. ३.	उल्लोच १.	४३११२३	ऊधस् ३.	३१४५१
३१७१५१	उल्लोल १.	४२११४	ऊधस्य ३.	३१८१४६
उरस्य १.	उशनस् १.	२११३४	ऊन १. २. ३.	५४१८६
उरस्वत् १. २. ३.	उशि १. ३.	६१५८	ऊम् ४.	८१८१४
उरस्सूत्रिका २.	उशीर १. ३.	३१३२३१	ऊम १.	६११८
उराह १.	उष १.	२११६८	ऊररी ४.	८१७१७
उर १. २. ३.	उयण ३.	३१८१७९	ऊरव्य १.	३१८१
उरुक्रम १.	उयर्बुध १.	१३११५		
उरुवल्ली २.				

[ऊरी]

शब्दानुक्रमणिका

[एकविंशतितम]

ऊरी ४.	८१७१७	ऊषणा २.	३१८१७	ऊषम १.	३१७१७
ऊरु १. २.	४१४५९	(दूषणा)		" १.	३१७१२२
" १. २.	८१९२६	ऊषत् १. २. ३.	३१८१८	" १.	७१११३
ऊरुज १.	३१८१९	ऊषरज ३.	३१८१२३	ऊषभा २.	३१६११
ऊरुपर्वन् ३.	४१४५९	ऊषवत् १. २. ३.	३१८१८	ऊषभी २.	३१३१२९
ऊरुमूल ३.	४१४५९	ऊषमक १.	२११८८	ऊषि १.	१११३०
ऊर्ज २.	८१८१८	ऊषमन् १.	२११८८	" १.	३१६१५०
ऊर्ज १.	६११३	" १.	३१६३६	" २.	३१८१९४
ऊर्जस्वल १. २. ३.	३१७१५१	" १.	५४१९	" १.	६११९
ऊर्जस्विन् १. २. ३.	३१७१५१	ऊह १. २.	३१६१७५	ऊष्टि १. २.	३१८१५८
	३१७१५१	ऊहन ३. २.	३१६१७५	ए	
ऊर्जित १. २. ३.	३१७१५१	ऊ		एक १. २. ३.	५११२५
ऊर्णनाभ १.	४११३४	ऊ २.	८१२१८	" १. २. ३.	६१४३
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऊच्छ १.	३१३६९	एककुण्डल १.	८११५१
ऊर्णा २.	३१४२५	" १.	३१४७	एकग १. २. ६.	५४१२८
" २.	३१९३३	" ३.	५१६०	एकगुरु १.	३१६२४
" २.	६१२६	" १. २. ३.	६१५९	एकग्रन्थ १.	३१६३३
ऊर्णायु १.	७११३३	ऊक्षगन्धिका २.	३१३१९६	एकतान १. २. ३.	
ऊर्णवाहि १.	४११३५	ऊक्षर १.	७१११४	एकतीर्थिन् १.	३१६२४
ऊर्ध्वक १.	३१९१२९	ऊक्ष २.	३१६२६	एकदन्त १.	१११५३
ऊर्ध्वजानुक १. २. ३.	५४११०	ऊक्षीष ३.	४३१५७	एकदा ४.	८१८६
	५४११०	ऊक्षु १. २. ३.	५४१२४	एकदश १. २. ३.	५४१३३
ऊर्ध्वजु १. २. ३.	५४११०	" १. २. ३.	६१४२	एकदेश १.	४१४५५
ऊर्ध्वधन्वन् १.	११२३	ऊक्ष ३.	३१८३	एकधुर १. २. ३.	३१७१८
ऊर्ध्वनापित १.	३१५६७	" १. २. ३.	५३३३	एकधुरीण १. २. ३.	
ऊर्ध्वमूल १.	३१३२२९	" ३.	६३३३		३१४५८
ऊर्ध्वलोक १.	१११११	ऊक्षु १.	२११८६	एकपक्षि २.	२११६९
ऊर्ध्वसूचिका २.	४३१४८	" १.	४१११६	एकपटलमाली २.	
ऊर्ध्वा २.	२११६	ऊक्षुमती २.	४१११५		३१३१८५
ऊर्मि १. २.	४२११४	ऊक्ष ४.	८१८४	एकपद ३.	५३२६
ऊर्मिका २.	४२११४४	ऊक्षिज् १.	३१६१८	एकपदी २.	३१३४९
ऊर्मिमत् १. २. ३.	५४११२३	" १.	८१९४४	एकपर्णा २.	१११६१
	५४११२३	ऊक्ष १. २. ३.	३१८६७	एकपाटला २.	१११६१
ऊर्मिला २.	३१६४५	ऊक्षु १.	१११३	एकपिङ्ग १.	११२५८
ऊवध्य ३.	३१६२०५	ऊक्षुक्षिन् १.	११२४	एकरूप १. २. ३.	५४१७९
ऊष १.	३१८२५	ऊक्षय १.	३१४१४	एकवर्ण १.	३१५३
" ३.	३१८१२३	ऊक्षयकेतु १.	१११२९	एकविंश १. २. ३.	
" १.	५३३२८	ऊक्षयप्रोक्ता २.	३१८३		५४१२२
ऊषण ३.	३१८७५	" २.	८१२४	एकविंशतितम १. २. ३.	५४१२२
" १.	५३३२६	ऊषणी २.	३१३१२४		

[एकशततम]

वैजयन्तीकोषः

[ओषधि]

एकशततम १. २. ३.	एतर्हि ४.	८१८५
पा११२३	एतश १.	३१६१
एकसर्ग १. २. ३.	एतावतिथ १. २. ३.	पा११२०
पा११२८	एतिन् १.	३१६२०५
एकहायनी २.	एत्थाल १.	४११४४
एकाक्ष १.	एध १.	३१६१६
एकानि १.	एधस् ३.	३१६१६
एकाम्र १. २. ३. पा११२८	एधित् १. २. ३. पा१११६	
एकान्न १.	एनस् ३.	३१७१७
एकान्नग्रह १.	" ३.	८३११६
एकान्नल ३.	एरका २.	३१३२३३
एकदश १. २. ३. पा११२१	एरुण्ड १.	३१३१६४
एकदशी २.	एलक १.	३१३३६
एकान्त १. २. ३.	एला २.	३१३१०३
पा१११९	" २.	३१८८७
" १. २. ३.	एलारसालक ३.	पा३३६
पा११२९	एलावालुक ३.	३१८९५
" १. २. ३.	एव ४.	८१७१८
पा११३२	" ४.	८१८१५
एकान्तरित्तिन् १. २. ३.	एवम् ४.	८१७१९
३१६१३५	" ४.	८१८१५
एकान्तरिन् १. २. ३.	" ४.	८१८१७
३१६१३५	एवण १.	३१७१८०
एकायन १. २. ३.	एवणा २.	३१८१५०
पा११२८	एवणिका २.	३१९१९
एकायनगत १. २. ३.	एवमः (-स्) ४.	८१९१०
पा११२९		
एकावली २.	ऐ	
पा११३१	ऐ ४	८१७२
एकाष्टील १.	ऐकागारिक १.	३१९१५५
३१३१९४	ऐङ्गुद ३.	३१३२२
एकाष्टीला २.	ऐतिहा ३.	२१४३८
३१३१३०	ऐन्द्र १.	३१६१६
एकाह १.	ऐन्द्रलुसिक १. २. ३.	४१४१४७
३१६१८४	ऐन्द्रि १.	२१३१७
एजन ३.	ऐन्द्री २.	१११६२
३१९१८९	" २.	२११४
एड १. २. ३.	" २.	३१३१७२
पा११३३	ऐरावण १.	११२१२
एडक १.		
३१६१६४		
एडगज १.		
३१३१५८		
एडमूक १. २. ३. पा११३३		
४१३३७		
एडक ३.		
४१३३७		
एण १.		
३१४१२		
एणीकृत १. २. ३. २१४१४		
२१४१४		
एत १.		
पा३१२३		
एतन १.		
३१६१२०४		

ऐरावत १.	११२१२
" १.	२११८
" ३.	२११४९
" ३.	२१२३
" ३.	३१८११५
ऐरावती २.	२११४६
" २.	२१२५
ऐरुक ३.	३१६१८८
ऐरुण्डक १.	४१३१४३
ऐलविल १.	११२५६
ऐलेय ३.	३१८१९५
ऐश्वर ३.	३११५८
" ३.	३१९११०
ऐश्वर्य ३.	१११४७
" ३.	८१५३४
ऐह १.	३१३१६५
ओ	
ओकस् ३.	४१३१९
" ३.	६१३४
ओष १.	३१९१२३
" १.	४१२३०
" १.	६१११०
ओङ्कार १.	३१६१२३
ओज १. २. ३.	पा११२३
ओजस् ३.	६१३४
ओजस्विन् १. २. ३.	३१७१५१
ओट्टित ३.	३१६५
ओत १. २. ३.	३१९१२
ओतु १.	३१४७१
ओदन १. ३.	४१३७६
ओम् ४.	८१७३
ओराल १.	पा३१२०
ओलक १.	३१३१५१
" १.	पा३१४३
" १.	पा३१४४
" १.	पा३१४४
ओलहन् १.	३१८१४४
ओषक ३.	३१७५६
ओषधि २.	३१३६
" २.	३१८७५

[ओषधीश]

ओषधीश १.	२११२५
ओष्ठ १.	४१४८७
ओष्ठव १. २. ३.	पा१११७
ओष्ण ३.	पा३१९
ओसर १.	३१८१८४
ओहार १.	४११५०
औ	
औलक ३.	पा३११०
औजस ३.	३१२१८
औत्सुक्य ३.	३१६१७८
औदनिक १. २. ३.	४१३१२३
औदर १.	४१३८२
औदरिक १. २. ३.	पा१४५१
औदुम्बर १.	३१६१२५
औदुम्बरायण १.	३१६१८
औदालक ३.	३१८१३६
औपगवक ३.	पा११७
औपयिक १. २. ३.	पा११०३
औपरोधिक १.	३१६१९
औपवाह १.	३१७६९
औसिका २.	३१९१०६
औमीन १. २. ३.	३१८२०
औरञ १.	४१३१२९
औरञ्जक ३.	पा१११०
औरस १.	४१३१४५
और्ध्वरथ्यक १. २. ३.	३१६१७
और्व १.	११२२१
और्वमतिन् १. २. ३.	३१६१३५
और्वशेय १.	३१६१५१
औलक १. २. ३.	३१६१३२
औशीर ३.	पा१११७
" ३.	७१३५
औषध ३.	३१८७५
" ३.	४१४१४१

शब्दानुक्रमणिका

औष्टक ३.	पा११५
औष्णिह ३.	३१६३४
क	
क १.	१११७
" ३.	४१२२
" १.	८१५३६
कवि २.	४१३१२३
कंस ३.	पा११५५
" १. ३.	६१५११
कंसरिपु १.	१११२६
कंसोपल ३.	४१२७२
ककुद् १. २.	८१५२८
ककुद् ३.	३१७८०
" ३.	८१५२८
ककुदावर्त १.	३१७९७
ककुदिन् १.	३१४५४
ककुघत् १.	३१४५४
ककुघती २.	४१४६४
ककुभ् २.	२११२
ककुभ १.	३१९१२०
ककुहा २ ब.	२११२१
कक्खट १.	पा३१५
कक्खटी २.	३१२१३
कक् १.	४१३१३१
" १.	६१३३४
" १. २. ३.	४१४६७
कक्क ३.	३१३११
कक्का २.	३१७८४
" २.	४१३१३१
" २.	६१२७
कक्कापट १.	४१३१२९
कक्क १.	२१३३१
कक्कट १.	३१७१५३
कक्कटीक १.	१११५५
कक्कण ३.	४१३१४३
" ३.	७१३११
कक्कत १.	४१३११२
" १. २. ३.	८१९२७
कक्कपत्र १.	३१७१८१
कक्कमुख १.	३१९१७

कक्काल १. ३.	४१४११४
कक्कलि १.	३१३१४०
कक्क २. ३.	३१८१५५
कक् १.	३१५११५
" १.	पा११९७
कक्कल्ला २.	३११४२
कक्कू १.	३१३२०८
कक्कर १. २. ३.	पा११६६
कक्कित् ४.	८१७१९
कक्कोर ३.	३१३२०३
कक्क १.	४१३३२
" १.	४१३१३१
" १.	६१११४
कक्कप १.	११२६०
" १.	४११५०
कक्कपी २.	४११११९
कक्कुर १. २. ३.	४१४१४५
कक्कुरा २.	३१३१२५
" २.	३१३१२९
कक्क २.	४१४१२३
कक्कदार १.	३१३१५४
(कक्कदार)	
कक्कुरक १	३१३११७
कक्कल ३.	४१३१५७
कक्कुक १.	४१३२१
" १.	४१३१२८
" १.	७१११५
कक्कुकिन् १.	३१७२३
कक्क ३.	४१३३६
" १.	४१४९८
कक्कल ३.	४१३३६
कट १.	३१७७५
" १.	३१७२१६
" ३.	३१८७५
" १.	४१३२३
" १.	४१३१२
" १.	४१३१६६
" १.	४१४६५
" १. २. ३.	६१५१८
" १. २. ३.	८१९२७
कटक १. ३.	३१२८

[कटक]

[कटक]

वैजयन्तीकोषः

[कतृण]

कटक १. ३.	४३१४	कटुका २.	३१८५०	कण्टक १.	७१११४
" १. ३.	४३१४४	कटुकाण १.	२३३३४	कण्टकच्छेदन १.	३१७१६५
" १. ३.	७१५३१	कटुक्ति १.	५३३३०	कण्टकप्रतीसार २.	
कटकट ३.	३१८११९	कटुक्तिप्रकाश १.			३१७५३
कटकर १.	३१५१७		५३३३७	कण्टका २.	२३३३७
" १.	३१५७६	कटुगुम्भी २.	३३३१६७	कण्टकानना २.	२३३३७
कटकर्मन् १.	३१५१७	कटुभङ्ग ३.	३३३२१४	कण्टकारी २.	५३१०५
कटकी २.	४३३२४	कटुम्भरा २.	३१८१६	कण्टकाली २.	५३१०६
कटङ्कटेरी २.	३३३२३३	कटुरोहिणी २.	३१८१६	कण्टकिन् १.	३३३५०
कटम् १.	१११४६	कटुकट ३.	३३३२१३	" १.	३३३६४
कटभी २.	३३३१३९	" ३.	३१८१०	कण्टकिफल १.	३३३७४
कटमोष १.	३३३२०१	कटफल १.	३३३५८	" १.	३३३१४१
कटशर्करा २.	४११५७	कटवङ्ग १.	३३३६८	कण्ट १. २. ३.	४३१८३
कटाटङ्क १.	१११४४	कट्वर ३.	३१८१४९	" १.	६११३३
कटाह १.	३३३१०	कट्वाङ्ग १.	३३३६८	कण्टकूणिका २.	३१९११७
" १.	४३३५६	कट्वार १.	३१८१३९	कण्टदोष १.	३१९११२
कटि २.	४३३६४	" १.	५३३३२	कण्टपाल १.	२३३२६
कटिका २.	३१७१९९	कटाकु १.	७१११८	कण्टभूषा २.	४३३१३७
कटिन्न ३.	७३३११	कठार १.	३१९३२	कण्टमणि १. २.	४३३७०
कटिप्रोथ १.	४३३६५	कठिञ्जर १.	३३३११८	कण्टीरव १.	३३३३२
कटिल्ल १.	३३३१६३	कठिन १.	५३३३४	कण्टकाल १.	१११४५
कटिल्लका २.	३३३१४६	कठिनी २.	३३३१३	कण्टेगुड १.	४३३७०
कटितीर्षक १.	४३३६५	कठोर १.	५३३५	कण्टन ३.	४३३६६
कटिसूत्र ३.	४३३१४६	कडङ्गर १.	३१८१६४	" ३.	४३३६७
कटी २.	८११२७	कडम्बक १.	४३३९०	कडार ३.	४३३३९
कटीकूप १.	४३३६५	कडार १.	५३३१८	" १.	५३३३३
कटीर ३.	७३३६	कण १.	३१५३०	कण्डू २.	४३३१२४
कटु १.	३३३५३	" १.	४३३३७	कण्डूति २.	४३३१२४
" १.	३३३१२८	" १.	४३३७०	कण्डूयन ३.	४३३१२४
" १.	३३३२०४	" १.	६१११५	कण्डूया २.	४३३१२४
" ३.	३३३२१३	कणकुक्कुट १.	३१५३४	कण्डूर १.	३३३२०८
" ३.	३१८७९	कणजीरण १.	३१८१८	कण्डूरा २.	३३३१२९
" ३.	३१८८०	कणय १.	३१७१६७	कण्डोल ३.	४३३६४
" २.	३१८८६	कणा २.	३१८१८	कण्डोलवीणा २.	३१९१२७
" १.	३१८१३०	कणि १.	२३३२	कण्व १. २. ३.	५३३१३
" १.	५३३२६	कणिका २.	३१९२५	कत ३.	४३३११
" १.	५३३२६	" २.	३१९१२०	कतक १.	३३३३२
" १.	५३३३७	" २.	७३३४	" ३.	३१८५०
" १. २. ३.	६१११३७	कणिश ३.	३१८६४	कतिथ १. २. ३.	५३३२०
" १. २. ३.	६३३४	कण्टक १.	२३३१५	कतिपयथ १. २. ३.	५३३२०
कटुकषायक १.	५३३३०	" १.	३१८६४	कतृण ३.	३३३३३४

[कथम्]

शब्दानुक्रमिका

[कपोल]

कथम् ४.	८१८२०	कन्था २.	४३३३७	कपालिनी २.	११३३४
कथा २.	२३३३८	" २.	४३३२८	कपाली २.	४३३५९
" २.	३१९१४२	कन्द १. ३.	३३३२०८	कपि १.	३३३३९
कथाप्रसङ्ग १. २. ३.		" १. ३.	४३३२२	" १.	३३३६१
	८३३१३	" १. ३.	४३३२०	" १.	६११३३
कथित १.	५३३५८	" १.	८३३२५	" १.	८१९१०
कदध्वन् १.	३११५०	कन्दर १. २. ३.	३३३३६	कपिकच्छू २.	३३३१२९
कदन ३.	३३३२१५	" १.	३३३३०	कपिकोडा २.	३३३१७९
कदन्निका २.	३३३३३	" १. २. ३.	८१९३७	कपिञ्जल १.	२३३२०
कदम्ब १.	३३३६०	कन्दराल १.	३३३५९	कपिस्थ १.	३३३३२
" १.	३३३६७	कन्दरी २.	८१९३७	(कृप)	
कदम्बक १.	३१८३१	कन्दल १.	३३३२१०	कपिस्थपत्नी २.	३३३१५७
" ३.	५३३२	" १.	८१९३१	कपिप्रिया २.	३३३८१
कदर १.	३३३६३	" १. २. ३.	८१९३८	कपिल १.	११३३०
" १.	४३३१२३	कन्दली २.	३३३२१०	" १.	११३३१
कदर्य १. २. ३.	५३३५९	" २.	८१९३८	" १.	३३३६९
कदल १.	३३३१७३	कन्दु १.	४३३५६	" १.	३१८११०
कदलि २.	३३७८६	" १. २. ३.	८१९२७	" १.	५३३१८
कदली २.	३३३१७४	कन्दुक १.	४३३१६२	कपिला २.	२३३१९
" २.	३३३१८	कन्दोज्ज ३.	४३३३४	" २.	३३३२७
" २.	३३३२५	कन्दोष्ठ ३.	४३३३४	" २.	३३३९२
कदाचित् ४.	८१८७	कन्धरा २.	४३३८३	" २.	३३३४३
कदुष्ण ३.	५३३९	" २.	४३३११७	" २.	३१८१५५
कदु १.	५३३१८	कन्यका २.	४३३६	कपिलोहक ३.	३३३२७
कद्वद १. २. ३.	५३३२५	कन्यसा २.	४३३२७	कपिवल्ली २.	३१८७८
" १.	५३३९७	कन्या २.	३३३६७	कपिश १.	३१९४८
कनक ३.	३३३१९	" २.	३३३१८८	" १.	५३३१८
कनकाक्षी २.	२३३२१	" २.	४३३६	कपिश २.	४३३३६
कनिष्ठ ३.	३१८१२२	" २.	८३३१४	कपी २.	३३३१५६
कन्दर्प १.	१११२७	कन्याकुब्ज १.	४३३७	कपीतन १.	३३३३१
" ३.	४३३३१	कन्यापिपीलिका २.	४३३३७	" १.	३३३५९
" १. २. ३.	५३३३१	कन्याप्रसूतिजा २.	३३३४८	" १.	३३३७२
" १. २. ३.	७३३९	कप १.	३३३७२	कपोत १.	२३३२३
कनिष्ठा २.	४३३२७	(कृपा)		" १.	३१८१२९
" २.	४३३७४	कपट १. ३.	३३३१९५	" १.	५३३१२
कनीनिका २.	४३३७४	कपर्द १.	१११५०	" १.	७३३२०
" २.	४३३९४	" १.	४३३५७	कपोतपाली २.	४३३५३
कनीयस् १. २. ३.	७३३५९	कपर्दिन् १.	११३४०	कपोताङ्गि २.	३१८१००
कनीयस ३.	३३३२४	कपाल १. २. ३.	४३३५९	कपोताञ्जन ३.	३३३३२
कन्तु १.	६३३१२	" १. ३.	४३३१५	कपोल १.	४३३९०
कथटिका २.	४३३१२८	कपालिन् १.	११३४०	कपोल २.	३१८६६

कप्याख्य]

वैजयन्तीकोषः

[कर्क]

कप्याख्य १.	३१८११०	करक १.	२१२७
कफ १.	४१४१२१	" १.	३१३१५
कफणि १. २.	४१४७२	" १.	३१३७२
कफहरी २.	३१८४८	" १.	४१३५७
कफिल १.	३१९११३	" १.	४१३३७
कफोणि १. २.	४१४७२	करकवर्तिका २.	४१३६०
कबत १.	४१३१०१	करङ्क १.	४१३५८
कबन्ध १. ३.	३१७२१६	" १.	४१३०७
कबरी २.	४१४१००	" १.	४१३१४
कबल १.	४१३१०१	करज ३.	३१८९९
कबली २.	४१३१११	" १.	४१३७६
(कपिली)		करञ्ज १.	३१३६२
कम् ४.	८१७३	करञ्जक १.	३१३१०७
कमठ १. २. ३.	७१५२०	कर्कट १.	२१३१७
कमण्डलु १.	३१६१२४	" १.	३१७७५
" १. ३.	८१९३१	" १.	३१८११६
कमन १. २. ३.	५१३३४	" १.	७१५२१
कमनीय १.	३१३८२	करटा २.	३१४४९
कमल ३.	३१८१२	करण १.	३१५१७
" ३.	४१२३९	" १.	३१५५५
" १. २. ३.	७१५२६	" १.	३१५७४
कमलच्छद् १.	२१३३१	" १.	३१५१०३
कमित् १. २. ३.	५१४३५	" ३.	३१६६०
कमुजा २.	४१४१०२	" ३.	३१६२१०
कम्प २.	३१८८९	" १.	३१९२३
कम्पिल्ल १ ब.	३१३९५	" ३.	३१९९८
कम्प १. २. ३.	५१४७९	" ३.	४१४५२
कम्बर १. २. ३.	५१४७८	" १.	४१४७१
कम्बल १.	४१३१२९	" ३.	७१३९
कम्बु १.	३१७६२	करणीपरिवर्तन ३.	
" १. २. ३.	४११५५		३१९१४१
" १. २.	६१५९	करण्डी २.	३१९३३
कम्बुग्रीवा २.	४१४८४	करपत्र ३.	३१९३६
कम्बोज १.	३१३७०	करपोणि १.	४१४७१
कम् १. २. ३.	५१४३५	करभ १.	३१४६७
कर १.	३१७४५	" १.	३१४६७
" १.	३१८३३	" १.	४१४७५
" ३.	४१३७६	" १.	७१११९
" १.	४१४७३	करमर्द १.	३१३८३
" १.	६१११०	करमर्दिका २.	३१३८४
" १.	८१९१२	करम्ब १.	४१३१०६

कर्कट]

शब्दानुक्रमिका

[कलकण्ठ]

कर्कट १.	४११४६	कर्णिका २.	३१७७१	कर्मयकृत् १. २. ३.	
कर्कटस्कन्ध १.	२१३३१	" २.	३१८६७		५१४७३
कर्कटि १.	३१३१६६	" २.	३१९३०	कर्मण्या २.	२१९६
कर्कटिनी २.	३१३२९३	" २.	४१२४६	कर्मदेव १.	१११६
कर्कट १. २.	७१३२७	" २.	४१३१३३	कर्मन् ३.	३१३३७
कर्क १.	४१३१०९	कर्णिकार १.	३१३७२	(कर्मठ)	
कर्कराल १.	४१३९८	कर्णिकारल १.	३१७१८२	" ३.	३१९१८
कर्करी २.	४१३१७	कर्णिरथ १.	३१७१२६	" ३.	५१२१९
कर्कश १.	३१३९५	" ३.	३१७१२७	" ३.	६१३४
" १.	३१३१६५	कर्णजप १. २. ३.	५१३२५	" १. ३.	८१९३१
" १.	५१३३	कर्तन ३.	३१७१११	कर्मन्दिन् १.	३१६१६०
" १. २. ३.	७१४८	" ३.	३१९१०	कर्मफल १.	३१३३७
कर्कशिन १.	३१३७४	" १.	३१९३६	कर्मभेद १.	५१३९
कर्कशी २.	३१३८९	कर्तनभाण्ड ३.	३१९९	कर्मरङ्ग १.	३३३७
कर्कार १.	३१३१६८	कर्तनी २.	३१९२६	कर्मवत् १. २. ३.	५१४७४
" १.	३१३१६९	कर्तरी २.	३१७१८५	कर्मवादी २.	२१९६९
कर्कोट १.	३१३१६४	" २.	३१९३७	कर्मशाला २.	४१३२३
कर्कोटकी २.	३१३१६१	" २.	४१३१०८	कर्मशील १. २. ३.	
कर्ण १. २. ३.	३१४५९	" २.	७१२३		५१४७२
" ३.	४१२१७	कर्तृ १.	३१३३७	कर्मशूर १. २. ३.	५१४७२
"	४१४९२	कर्त्रिका २.	३१९२६	कर्मसाक्षिन् १.	२१११३
कर्णजमल १.	४१४९२	कर्दन ३.	२१३८	कर्त्तार १.	३१३२१४
कर्णजलका २.	४१३३३	कर्दम १.	३१८२५	" १.	२१९१६
कर्णजाह ३.	८१९१६	कर्पट १.	४१३३०	कर्त्तारवी २.	२१९१३१
कर्णधार १.	४१२१९	कर्पर १.	४१३५६	कर्मिन् १. २. ३.	५१४७४
कर्णपूर १.	३१३७०	" १.	४१३५९	कर्मी २.	६१२७
" १.	५१३१३४	" १.	४१३१५	कर्वट १. ३.	४१३३
" १. ३.	८१५६	" १.	७१११९	कर्वेट ३.	४१३३
कर्णपूरक १.	३१३४०	कर्पराल १.	३१३४६	कर्प १. ३.	५१३४९
" १.	३१३१००	कर्परी २.	३१३४३	कर्पक १.	२११३२
कर्णभूषण ३.	४१२३४	" २.	४१३१००	" १.	३१७११७
" ३.	४१३१३३	कर्पूर १.	३१८१०५	" १. २. ३.	३१८८
कर्णमोटी २.	११३६४	कर्तुर ३.	३१२२०	कर्पफल १.	३१३१७६
कर्णलतिका २.	४१४९३	" १.	५१३२४	कर्पफला २.	३१३१७७
कर्णविहीन १. २. ३.		कर्मकर १. २. ३.	२१९५	कर्पायु १.	३१८४५
		" १. २. ३.	५१४७३	कर्ष १. २.	४१२२९
कर्णवेष्टन ३.	३१७८७	कर्मकार १. २. ३.		" १. २.	६१५१८
कर्णशङ्कुली २.	४१३९३		५१४७३	कल १. २. ३.	२१३१३
कर्णाक १.	४१३१३४	कर्मक्षम १. २. ३.		" १.	३१९१२१
कर्णिक ३.	३१६२१		५१४७२	" १. २. ३.	५१३१४
" ३.	४१२४६	कर्मठ १. २. ३.	५१४७२	कलकण्ठ १.	२१३२७

[कलकल]

कलकल १.	२१४२७
कलकल १.	८११२०
कलकल १.	७१११७
कलकल २.	४४४२५
" २.	४४४६४
" २.	७३३६
कलधौत २. २.	८१५५
कलपाठक १.	२१६२३
(कलपाठक)	
कलभ १.	२१७६६
कलम १.	२१८३४
" १.	७१११८
कलम्ब १.	२१७१७७
" १. २. ३.	८१९२६
कलम्बी २.	२१३१४९
कलम्बू २.	२१३१४९
कलरव १.	२१३१४
कलल ३.	४३३६२
" १. २.	४४४१८
" २.	४४४१०८
कलविक्र १.	२१३१८
" १.	२१३१९
कलश १.	२१५२६
" १.	२१५३१
" १. २. ३.	४३३५८
" १.	५११५५
" १. २. ३.	८१९३७
कलशि २.	२१३१३६
कलशी २.	४३३५८
कलशीनक १.	२१३२४
कलशीपुत्र १.	२१६१५१
कलशीमुख १.	२१५१२४
कलशोदक १.	२१३१८९
कलशोदधि १.	२११११
कलह १.	७१११७
कलहंस १.	२१३१८
" १.	८११२०
कलहप्रिय १.	११३१७
कला २.	२११५३
" २.	२१२१२
" २.	२१८१५

वैजयन्तीकोषः

कला २.	२१९१८
" २.	४३३३८
" २.	४३३५५
" २.	५११३६
" २.	५२१३७
" २.	६२११०
कलाद १.	२१९१६
कलानिधि १.	२११२६
कलाप १.	७१११५
कलापक १.	२१३३९
" १.	२१७०३
" १.	२१८३४
" १.	२१८७६
" १.	५३३४१
कलापिन् १.	२१३२८
कलापिनी २.	१११६०
कलाय १.	२१८७३
कलावती २.	२१९११९
कलाह १.	२१७१०३
कलि १.	२१२१२
" १.	२१३१७५
" १.	२१७२०४
" १.	२१९१६२
" १.	६१११७
कलिका २.	२१३१९
कलिकारक १.	२१३६२
कलिङ्ग १.	२१३२७
" १ ब.	२११४०
" १.	७१५३३
कलिङ्गक १ ब.	२११२६
कलित १. २. ३.	७१४१९
कलिद्रुम १.	२१३१७५
कलिल १. २. ३.	७१५३१
कलुष १.	२१४१९
" १.	२१५१४
" ३.	४३३४३
" १.	५३३३४
" १.	५३३३९
कलुषी २.	२१८१८
कलेवर ३.	४३३५२
कलेवरा २.	११३४९

[कविका]

कलक १. ३.	६१५१०
कलकत्व ३.	२१९१८५
कलिकन् १.	११३३१
कलप १.	२११९३
" १.	२३३१६१
" १.	२३६२८
" १.	२३६११३
" १.	६१११६
कलपन ३.	२१११०
" १.	४३३४६
कल्पना २.	२१७००
" २.	७३३४
कल्पवृक्ष १.	१३३१४
कल्पाणि १.	२१९१४
कल्पान्त १.	२११९४
कल्मष ३.	२३३१६८
कल्माष १.	५३३२४
" १. २. ३.	७३३१०
कल्य १. २. ३.	४३३४३
" १. २. ३.	६३३३
कल्या २.	२३३१८
" २.	२३३४५
कल्याण ३.	२३३६२
" १. २. ३.	५३३४२
" २. ३.	७५३२१
कल्यापाल १.	२१९४४
कल्लोल १.	४३३१४
कलह १. २. ३.	२३३१५
कलहार ३.	४३३३५
कव १.	२३३११
कवक १.	२३३१५२
कवच १. ३.	२३३१५२
कवचित १. २. ३.	२३३१४२
कवट १.	२३३२४
कवाट ३.	४३३४३
" १. ३. ३.	४३३४६
कवि १.	२३३३४
" १.	२३३१५३
" १.	६३३१२
कविका २.	२३३११३

[कविय]

कविय १. ३.	२३३११३
कवी २.	२३३११३
कवोष्ण ३.	५३३१९
कव्यवाहन १.	१३३२२
कश १.	२५३२०
" १.	४३३२७
कशप १.	४३३५०
कशा २.	२३३११४
कशिपु २.	५३३१६
" १. ३.	७३३२०
कशेरु ३.	४३३४७
" २. ३.	४३३१५५
कश्मल ३.	२३३२००
कश्य ३.	२३३११०
" ३.	२३३१४५
" ३.	६३३१२
कष १.	२३३१९
कषाय १.	२३३२१७
" १.	४३३१४१
" १. ३.	५३३२७
" १. ३.	७३३२२
कषायक १.	५३३४७
कषायतिलवण १.	५३३३६
कषायिका २.	२३३४६
कषिका २.	७३३४३
कष्ट १. २. ३.	१३३३९
" १. २. ३.	६३३३
कस्तभिन् १. ३.	२३३३३
कस्तीर ३.	२३३३२
कस्तूरिका २.	२३३१०४
कस्तूरी २.	२३३३५
" २.	२३३३६
कहला २.	२३३१२६
कह्ल १.	२३३१०
कांस्य ३.	२३३२८
कांस्यताली २.	२३३१२४
कांस्यपात्रक ३.	४३३३१
काक १.	२३३१५

शब्दानुक्रमिका

काककङ्क २.	२३३५९
काकचिञ्चा २.	२३३१८०
काकजङ्गा २.	२३३१११
" २.	२३३१८०
काकजम्बू २.	२३३१९३
काकणी २.	७३३३६
काकतित्ता २.	२३३१८०
काकतिन्दुक १.	२३३११
काकतुण्ड १.	२३३१०८
काकतुण्डिका २.	२३३१८७
काकवत्सा २.	२३३१८०
काकनखी २.	२३३१८०
काकनासा २.	२३३११२
" २.	२३३१९३
काकपक्ष १.	५३३१०२
काकपीथी २.	२३३१८०
काकपीलु १.	२३३१५१
" २.	२३३१८०
काकपुष्ट १.	२३३२६
काकमर्दक १.	२३३१८०
काकमाची २.	२३३११२
काकमाली २.	२३३१८४
काकर्द्व १.	२३३१५०
काकली २.	२३३११४
काकशीर्ष १.	२३३१९३
काकाङ्गी २.	२३३११२
काकाणती २.	२३३१८०
काकाणन्ती २.	२३३१८०
काकाण्ड १.	२३३१४७
काकादनी २.	२३३१८०
काकारि १.	२३३२२
काकी २.	२३३११२
काकु २.	२३३१७
काकुद ३.	४३३८९
काकुन्दी २.	४३३१९
काकेन्दु १.	२३३१५१
काकोदर १.	४३३११२
काकोदुम्बरिका २.	२३३१११
काकोल १.	२३३११७
" १.	४३३२४

[कानना]

काकोली २.	२३३११२
" २.	२३३१५०
काकोलिका २.	८३३१७
काक्षी २.	२३३१६
काक्षीव १.	२३३१६
काङ्क्षा २.	२३३१७९
काच १.	२३३१७
" १.	५३३२२
" १.	६३३१५
काचमालिका २.	२३३१४६
काचर १.	५३३२२
काचस्थाली २.	२३३१९०
काचित १. २. ३.	५३३११६
काचिम ३.	४३३१४
काञ्चन ३.	२३३१९
काञ्चनार १.	२३३१४८
काञ्चना १.	२३३१७७
काञ्चनी २.	२३३२७
" २.	२३३२११
काञ्चिक ३.	४३३१८१
काञ्ची २.	४३३१४६
काञ्चीपद ३.	४३३१४४
काटिका २.	२३३११
काण १. २. ३.	५३३१३
काणमारिष १.	२३३१५१
काणा २.	२३३१७
काण्ड १. ३.	२३३१६३
" ३.	४३३३१
" १. २. ३.	६३३११
काण्डपट १.	४३३१२४
काण्डपृष्ठ १. २. ३.	२३३१४३
" १. २. ३.	८३३१६
काण्डवीणा २.	२३३१२८
काण्डी २.	२३३१७८
काण्डीर १. २. ३.	२३३१४४
" १.	२३३१७८
काण्डेडु १.	२३३१०१
कातना २ ब.	२३३११९

[कातर]

कातर १. २. ३.	५४१८
" १. २. ३.	७५३२
कातुलक १.	३३३८५
कात्यायन १.	३६१५८
कात्यायनी २.	१११६२
" २.	४११५४
कादम्ब १.	३३३८
" १.	७१११९
कादम्बरी २.	३११४६
कादम्बिनी २.	२१२२
कान ३.	२१४२
कानन ३.	३३३१
कानीन १.	४१४४३
कान्त १.	३३३८२
" १.	३३३८५
" ३.	३३३१२३
" १. २. ३.	५४१७०
कान्तनाला २.	३३३१८७
कान्ता २.	४१४५
कान्तार १.	३३३२२६
" १. ३.	७५२२
कान्तारवासिनी २.	१११६६
कान्ति २.	६१२१८
कान्दविक १. २. ३.	४३३९२
कान्दशीक १. २. ३.	३३३१७
कापटिक १.	३३३२७
" १. २. ३.	५४१२३
कापथ १.	३३३५०
कापिशायन ३.	३३३४४
कापिशेय १.	१३३४
कापोत १.	३३३२५
" ३.	५११६
कापोताञ्जन ३.	३३३४२
काम १.	१११२७
" १.	३३३५४
" १.	३३३७९
" १.	६१११७
कामकेलि २.	४३३१७०

वैजयन्तीकोषः

कामध्वज १.	२१११३७
" १.	४३३१६९
कामन १. २. ३.	५४३३४
कामपद ३.	४३३६१
कामपाल १.	१११२४
कामम् ४.	४३३१०४
कामयितृ १. २. ३.	५१३५
कामरूप १ ब.	३३३२९
कामरूपिणी २.	३३३५३
कामरूपिन् १.	३३३५
कामल १. २. ३.	४३३३२
कामचक्रियार.	४३३१६९
कामाङ्ग १.	३३३२५
कामारि १.	१११४१
कामिक १.	३३३३२
" १.	३३३१९८
कामिकान्त ३.	३३३४८
कामिन् १.	२३३३६
कामिनी २.	४३३५
कामुक १. २. ३.	५४३३५
कामुका २.	४३३११
कामुकी २.	४३३११
कामोत्सव १.	४३३१६७
काम्बल १. २. ३.	३३३१२९
काम्बविक १.	२१११७
काम्बोज १.	३३३१५
काम्बोजी २.	३३३१०७
काम्य ३.	३३३२५
काम्यदान ३.	३३३१२०
काम्रा २.	३३३११४
काय १.	४३३५३
" १. २. ३.	६१११७
कायमान ३.	४३३३३
कायस्थ १.	३३३२३
कायाङ्ग ३.	३३३२०४
कयिका २.	३३३१
कारक ३.	७३३७
कारकुत्सीय १ ब.	३३३३८

[कार्पासी]

कारण ३.	३३३१६
" ३.	७३३७
कारणा २.	१३३३९
कारणिक १. २. ३.	५४३३०
कारणव १.	२३३११
कारम्भा २.	३३३३६
कारवाही २.	३३३११०
कारवी २.	३३३८५
" २.	३३३१०२
" २.	३३३१३२
" २.	३३३१२९
कारवेष्ट १.	३३३१६३
कारा २. १.	६५१०
कारावर १.	३३३४२
" १.	३३३४३
कारि २.	८३३५
कारिका २.	१३३३२
" २.	३३३६
" २.	८३३५
कारिष ३.	५३३३३
कारु १.	१३३४
" १.	३३३५८
" १.	३३३७
" १.	६३३५
कारुज १.	७३३१८
कारुण १. २. ३.	५४३३८
कारुणिक १. २. ३.	५४३३८
कारुण्य ३.	३३३१९२
कारुविन्द १.	३३३७
कारोत्तर १.	३३३५२
कार्तस्वर ३.	३३३१८
कार्तान्तिक १.	३३३२५
कार्तिक १.	२३३६६
कार्तिकिक १.	२३३६६
कार्तिकी २.	२३३७७
कार्तिकेय १.	१३३५६
कार्पास १.	३३३१०६
" १. २. ३.	४३३११७
कार्पासतुल १.	३३३१९
कार्पासी २.	३३३१९

कार्म]

कार्म १. २. ३.	५४३७२
कार्मण ३.	३३३११७
कार्मुक ३.	३३३१७२
" ३.	७३३६
कार्य ४.	३३३२३६
कार्वट ३.	४३३३
कार्वटिक ३.	४३३३
कार्पाण १.	५३३३९
" १.	५३३४०
कार्पिक १.	५३३३८
" १.	५३३३९
" १.	५३३३९
कार्पण ३.	३३३१०
(कार्प)	
कार्परी २.	३३३५७
कार्पर्य १.	३३३५७
कार्पर्यक १.	३३३३८
काल १.	१३३३५
" १.	२३३५२
" ३.	३३३३३
" १.	५३३११
" १.	६३३१५
कालक १.	४३३१७
कालकण्डक १.	३३३३६
कालका २.	३३३३०
(कालिका)	
कालकिञ्च १.	३३३५८
कालकुण्डक १.	३३३२९
कालकुन्ध १.	१३३१४
" १.	१३३३५
कालकूट १.	४३३२२
" १.	४३३२३
" १.	८३३३१
कालकूणिका २.	३३३१७८
कालखण्ड ३.	४३३११३
कालधर्म १.	३३३२०१
कालनिर्यास १.	३३३५३
कालपर्णी २.	४३३१२२
कालपुच्छ १.	३३३२९
कालपूर १.	३३३४३
कालपूरक १.	३३३४३

शब्दानुक्रमणिका

कालभाग १.	३३३७८
कालमालक १.	३३३१२२
कालमेषिका २.	३३३१८१
कालमेषी २.	३३३१०८
कालरात्री २.	१३३६१
कालवृन्ती २.	३३३१७९
कालशीनक १.	३३३२५
कालशेय ३.	३३३१४८
कालस्कन्ध १.	३३३५१
" १.	३३३८७
काला २.	३३३१२
" २.	३३३३८
" २.	३३३३८
कालागुरु ३.	३३३१०८
कालाची २.	३३३२०९
कालानुसार्य ३.	३३३१६
" ३.	४३३१५४
कालायस ३.	३३३३४
कालावलोक १. २. ३.	३३३३५
कालिक १.	३३३२२
कालिका २.	२३३१६
" २.	३३३४९
" २.	३३३११
" २.	३३३८५
" २.	३३३८१
कालिङ्ग १.	३३३६२
" १.	३३३१६९
कालिङ्गी २.	३३३१६९
कालिनी २.	२३३४०
" २.	४३३१९
कालिन्दी २.	४३३२५
कालिन्दीकर्षण १.	१३३२३
काली २.	१३३४९
" २.	१३३३०
" २.	२३३२
" २.	३३३१७
" २.	३३३१०४
" २.	३३३१२७
" २.	३३३७७

[काष्ठीला]

काली २.	३३३१९१
कालीची २.	१३३३६
कालेय २.	३३३१७६
" २.	३३३२१३
" ३.	४३३१५४
कालोच्चिन् १.	२३३८९
कालोदक १.	३३३१५
कालिपक १.	३३३७३
काल्य ३.	२३३६९
काल्यक १.	३३३११७
कावचिक ३.	५३३११
कावाट १.	३३३१९९
कावातायनिका २.	४३३३८
कावेर ३.	३३३८०
कावेरी २.	४३३२८
काव्य ३.	२३३४२
काश १. ३.	३३३२७
काशशक्त १. २. ३.	३३३२०
काशशक्ति १. २. ३.	३३३२०
काशि १ ब.	३३३४०
" १.	३३३२२७
काशिका ३.	४३३३७
काश्मीर १ ब.	३३३२७
" ३.	३३३८८
काश्मीरज ३.	३३३११७
काश्मीरी २.	३३३१९८
काश्यप ३.	४३३१०६
काश्यपसुत १.	१३३३७
काश्यपी २.	३३३१४
काष्ठ ३.	३३३१३
काष्ठतल १.	३३३३४
काष्ठा २.	२३३१३
" २.	६३३८
काष्ठाशुवाहिनी २.	४३३१५
काष्ठी २.	३३३१७५
काष्ठीला २.	३३३१९१
" २.	३३३१७३

काष्ठेयधन]	वैजयन्तीकोषः	[कुकर	[कुकुण्ड]	शब्दानुक्रमणिका	[कुदर
काष्ठेयधन ३.	३१६१७	किण्व ३.	३१६१७	कुट १.	३१६१७
काष्मरी २.	३१६१७	कितव १.	३१६१७	" ३.	३१६१७
कासनुद् १.	३१६१७	" १.	३१६१७	" १.	३१६१७
कासमर्दक १.	३१६१७	किदिर १.	३१६१७	कुटच १.	३१६१७
कासर १.	३१६१७	किनाटक ३.	३१६१७	कुटज १.	३१६१७
कासार १.	३१६१७	किन्नर १.	३१६१७	कुटजट १.	३१६१७
कासू २.	३१६१७	किन्नरी २.	३१६१७	" ३.	३१६१७
" २.	३१६१७	किन्नरेश्वर १.	३१६१७	कुटपुरि १.	३१६१७
काहला २.	३१६१७	किम् १. २. ३.	३१६१७	कुटर १.	३१६१७
किंवदन्ती २.	३१६१७	" ४.	३१६१७	कुटि २.	३१६१७
किशार १.	३१६१७	" ४.	३१६१७	" १. २. ३.	३१६१७
किशुक १.	३१६१७	किमिला २.	३१६१७	" १. २. ३.	३१६१७
" १.	३१६१७	किमु ४.	३१६१७	कुटिल १. २. ३.	३१६१७
" १.	३१६१७	किमुत ४.	३१६१७	" १. २. ३.	३१६१७
किमीदिवि १.	३१६१७	किम्पचान १. २. ३.	३१६१७	कु. टीर	३१६१७
किमीसाद् १.	३१६१७	किम्पाक १.	३१६१७	" २.	३१६१७
किखि २.	३१६१७	किम्पुरुष १.	३१६१७	कुटीर १.	३१६१७
किङ्कर १.	३१६१७	" १.	३१६१७	" १.	३१६१७
किङ्किणी २.	३१६१७	कियदेतिका २.	३१६१७	कुटुम्ब ३.	३१६१७
किङ्किराट १.	३१६१७	(कियदेहिका)	३१६१७	कुटुम्ब्यापृत १. २. ३.	३१६१७
किङ्किरात १.	३१६१७	कियाह १.	३१६१७	कुटुम्बिका २.	३१६१७
किङ्किर १.	३१६१७	किरण १.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
" १.	३१६१७	किरात १.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किङ्गण ४.	३१६१७	" १. २. ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किङ्गित् ३. ४.	३१६१७	किरातज ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
" ३.	३१६१७	किरि १.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
" ४.	३१६१७	" २.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किङ्गलुक १.	३१६१७	किरिभ १. २. ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किङ्गोल १.	३१६१७	किरीट ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किङ्गण १ व.	३१६१७	किरीटिन् १.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किङ्गणक १.	३१६१७	किमीर १.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
" १. ३.	३१६१७	किल ४.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किट १.	३१६१७	किलास १. २. ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किटि १.	३१६१७	किलासधन १.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किट्ट १. ३.	३१६१७	किलासिन् १. २. ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किट्टिभ ३.	३१६१७	किलिकिञ्चित ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किण १.	३१६१७	किलिञ्ज १.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
" १.	३१६१७	किलिञ्ज ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किणिही २.	३१६१७	किलिञ्ज ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
" २.	३१६१७	किलिञ्ज ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७
किण्व ३.	३१६१७	किलिञ्ज ३.	३१६१७	कुटुम्बिनी २.	३१६१७

[कुदानव]

कुदानव ३.	३१३२३२
कुधान्य ३.	३१८६३
कुध १.	३१२२
कुनटी २.	३१२११
” २.	३१२१७
कुनालिका २.	३१३२१
कुनाशक १.	३१३१२६
कुन्त १.	३१७१६५
कुन्तल १ व.	३१३३३
” १ व.	३१३४०
” १	३१३४९८
कुन्ति २.	३१८८७
कुन्द १.	१३३६१
” १.	३३ ९१
” १.	३१११८
कुन्दाल ३.	३१८२९
कुन्दि ३.	३३३१
कुन्दोपराल १.	३३३५३
कुन्नान ३.	७३३८
कुप्य १. २. ३.	३१३७६
कुप्य ३.	३१८७४
” ३.	३१८१२२
कुप्यप्रस्थ १.	३११५३
कुप्यमाष १.	३११४४
कुप्यशाला २.	३३३२१
कुषेर १.	१२१५५
” १.	८६३३
कुषेराक्षी २.	३३३९०
कुञ्जक १. २. ३.	३१३११
कुञ्जा २.	३३३४९
कुमार १.	१११५४
” १.	३१७२०
” १.	३१९१०५
” १. २. ३.	३१३२
” १. २. ३.	७१३२८
” १.	८६३१
कुमारी २.	३१११०
” २.	३३३१७८
” २.	३३३२६
” २.	३१८५०
” २.	३१३३

वैजयन्तीकोषः

कुमालक १ व.	३११२८
कुमुख १.	३१३६
कुमुद १.	२११८
” ३.	३१३४१
कुमुदवान्धव १.	२१३२५
कुमुदा २.	३३३५८
” २.	३३३५८
कुमुदिनी २.	३१३४४
कुमुद्वत् १. २. ३.	३१३४३
कुमुद्वती २.	३१३४४
कुमुद्वतीशत्रु १.	२१३१२
कुम्बा २.	३३३१०५
कुम्भ १.	३३३५८
” १.	३३३६९
” १.	३३३३२
” १.	३३३५६
” १.	३३३३८
” १.	८६३१५
कुम्भकर्णारि १.	११३२१
कुम्भकार १.	३१५५
” १.	३१५७७
” १.	३१५२७
कुम्भकारी २.	३१३४४
कुम्भधारिका	३१३२६
कुम्भफल १.	३३३८२
कुम्भयोनि १.	३३३५१
कुम्भशाला २.	३३३२३
कुम्भि २.	३३३५५
कुम्भिन् १.	३३३६०
” १.	३३३५३
कुम्भी २.	३३३५८
” २.	३३३४६
कुम्भीनस १.	३३३१२
कुम्भीर १.	३३३५३
कुम्भीरमक्षिका २.	३३३४६
कुम्भील १.	७३३२०
कुम्भोलखलक ३.	३३३५४
कुरङ्ग १.	३३३१४
” १.	३३३४०
कुरण्ड १.	३३३९०
” १.	३३३३१

[कुलिक]

कुरण्ड १.	७१११९
कुरण्डक १.	३३३१८८
कुरर १.	२३३३४
कुररी २.	३३३६५
कुरवक १.	३३३६१
” १.	३३३६१
” १.	३३३१८९
” १.	३३३१९०
” १.	३३३१९१
कुरिन् १.	३३३३३
कुरीर ३.	७३३८
कुरु १.	३३३७८
कुरुकुक्षिका २.	२३३२३
कुरुल १.	३३३९९
कुरुवर्ष ३.	३३३१९
कुरुविन्द १.	३३३४०
” ३.	३३३४५
” १.	८३३२१
कुरुविस्त १.	३३३५२
कुरुवत्र १.	३३३१३३
कुरुन ३.	३३३८७
कुल ३.	३३३११५
” ३.	३३३४९
” ३.	३३३६
” १.	३३३५४
कुलक १.	३३३५१
कुलकालक १ व.	३३३३४
कुलचर १.	३३३३४
कुलज १. २. ३.	३३३६१
कुलटा २.	३३३४९
कुलपालिका २.	३३३४७
कुलस्त्री २.	३३३४७
कुलस्थक १.	३३३४७
” १.	३३३१२
कुलाय १.	२३३४९
” १.	८३३३६
कुलाल १.	२३३२७
कुलालकुट्ट १.	२३३२१
कुलालिका २.	३३३४४
कुलिक १.	३३३१८५
” १.	२३३३७

कुलिङ्गाटी]

कुलिङ्गाटी २.	३१८३५
कुलिश १. २.	१३३१३
कुली २.	३३३१०४
” २.	३३३२८
कुलीन १.	३३३९४
” १. २. ३.	३३३६१
लीनस ३.	३३३११
कुलीरक १.	३३३३८
कुलीर १.	३३३४६
” १.	८३३१४
कुल्लिथिका २.	३३३४४
” २.	३३३४८
कुल्माष १.	३३३४०
” १.	३३३५३
” १.	३३३७२
” ३.	३३३८२
कुल्य १ व.	३३३२८
” १ व.	३३३३४
” १ व.	३३३४०
” ३.	३३३१०९
कुल्यपृष्ठी २.	३३३१०५
कुल्या २.	३३३१०५
” २.	३३३४२
” २.	३३३२९
” २.	३३३४७
” २.	३३३३०
कुव ३.	३३३३४
कुवक १.	३३३६१
(कुरुवक)	
कुवद १. २. ३.	३३३४८
कुवल ३.	३३३३४
” १. २. ३.	८३३३८
कुवल्य ३.	३३३३४
कुवलायिक १.	२३३९
कुवली २.	३३३८७
” २.	८३३३८
कुवाट १. २. ३.	३३३४६
कुवादुष्क १.	३३३२५
कुविन्दक १.	१३३५
” १.	२३३८
कुविलीन ३.	३३३३६

शब्दानुक्रमिका

कुवीणा २.	२११३२८
कुवेणी २.	२११४२
कुवेल ३.	३३३३४
” १.	३३३४२
कुश १.	३३३२७
” १. ३.	३३३२४
कुशद्वीप ३.	३३३१४
” ३.	३३३१७
कुशल १. २. ३.	३३३१३
” १. २. ३.	३३३२४
कुशवट १.	३३३१४९
कुशस्थली २.	३३३६
कुशा २.	३३३१०८
” २.	३३३११४
कुशाग्रीयधी १. २. ३.	३३३२९
कुशापीठ १.	३३३१४९
कुशारणि १.	३३३१५६
कुशिन् १.	३३३१५३
कुशी २.	३३३३५
” २.	३३३३९
कुशीलव १.	३३३५८
” १.	३३३११४
कुशेय ३.	३३३३८
कुषाकु १.	७३३२१
कुषिन् १.	३३३६२
कुष्ट ३.	३३३९९
” १.	३३३२५
” ३.	३३३२४
” १. २.	३३३२३
कुष्ठनुद २.	३३३९९
कुसट १ व.	३३३४०
कुसीद ३.	३३३४८
” १. २. ३.	७३३२२
कुसीदिक १. २. ३.	३३३३८
(कुसीदक)	
कुसुम ३.	३३३१८
कुसुमच्छद १.	३३३४५
कुसुमाञ्जन ३.	३३३४३
कुसुमित १. २. ३.	३३३३८

[कूबर]

कुसुम्भ ३.	३३३९१
” १.	७३३२५
कुसूल १.	३३३३४
कुस्तुम्बरी २.	३३३४९
कुस्तुम्बुर ३.	३३३५१
कुहक १.	३३३३३
” १. २. ३.	३३३२३
” १. २. ३.	७३३१०
कुहन १. २. ३.	७३३२३
कुहर ३.	३३३२
” ३.	७३३७
कुहलि २.	३३३५९
कुहिठ १. ३.	२३३१०
कुहू २.	२३३७१
कुहलि २.	२३३१०
कुहरी २.	३३३१४
कुजन ३.	२३३३
कूजित ३.	२३३३
कूट १. ३.	३३३८
” १. २. ३.	३३३५६
” १.	३३३५९
” ३.	३३३९५
” १. ३.	३३३८४
” १. ३.	३३३२२
” १. ३.	३३३३
” १. ३.	३३३३३
कूटयन्त्रक ३.	३३३४०
कूटशास्त्रमलि १. २.	
” ३३३९१	
कूटसाक्षिन् १. २. ३.	
” ३३३१०	
कूटस्थ १. २. ३.	३३३७९
कूटागार ३.	३३३३१
कूणिका २.	२३३२०
कूप १.	३३३७
” १.	३३३१७
” १.	३३३११
कूपक १.	३३३३१
कूपेपिशाचक १.	३३३४९
कूबर १. ३.	३३३३७

[कृषर]

कृषर १.	३१७१३२
कृषर २.	४३१७५
कृषदूषक १.	३१८५४
कृष १.	४१४५७
” १. ३.	६५५२०
चकेसर १.	३१३२२०
कृर्चाल १.	३१६११२
कृर्चिका २.	३१८१४८
” २.	७२१५
कृर्ची २.	३१९१३
कृर्पर १.	४१४७२
कृर्पास १.	४३१२८
कृर्म १.	३१७७६
” १.	३१७७९
” १.	४११५०
” १.	८६१३३
कृल ३.	४२१३२
” ३.	६३१५
कृलङ्का २.	४३१२३
कृलमण्डक १	४११४८
(स्थूलमण्डक)	
कृली २.	३३१८७
कृरमाण्डक १.	१११५१
” १.	३३११७०
कृकण १.	२३१२६
कृकणपत्रिका २.	३३१२३०
कृकर १.	२३१३६
कृकलास १.	४११२८
कृकवाकु १.	२३१३३
” १.	३३१७९
कृकाटिका २.	४१४८४
कृच्छ्र १ २. ३.	१२३२९
” १. ३.	३३१३६६
कृच्छ्रक ३.	३३१३३६
कृच्छ्रातिकृच्छ्र १.	३३१३३८
कृच्छ्रातिकृच्छ्रक ३.	३३१३४१
कृत ३.	२११९१
” ३.	३३१९८

वैजयन्तीकोषः

कृत ३.	३१९६२
” १. २. ३.	६५५२१
कृतकृत्य १. २. ३.	५४११९
कृतकोटिकवि १.	३३१७७९
कृतज्ञ १.	३३१७०
कृतपुङ्गव १. २. ३.	३१७१४९
कृतभी २.	४११४८
कृतमाल १.	३३१४८
” १.	३३१२८
कृतमालक १.	२३१२३
” १.	४११०६
कृतमुख १. २. ३.	५४११९
कृतवेधन १.	३३११५९
” १.	३३११६०
कृतहस्त १. २. ३.	३१७१४८
कृताकृत ३.	३३१९७
कृतान्त १.	१२३३५
” १.	७१११६
कृतार १.	३३१२७
कृतालक १.	१११५७
कृतारत्र १. २. ३.	३१७१४९
कृति २.	४१३३६
कृतिन् १.	३३१२९
” १. २. ३.	५४११९
कृतोद्वाह १.	३३१८
कृत्त १. २. ३.	५४११०२
कृत्ति २.	३३१२१
” २.	४३१६०
” २.	४११०३
कृत्तिका २ व.	२११४३
कृत्तिकापिञ्जर १.	३३१९८
कृत्तिवासस् १.	१११४२
कृत्य ३.	३३१२३६
” १. २. ३.	६५५२०
” २. ३.	८११३३

[कृष्णधूमल]

कृत्रिम ३.	३२१२८
” १.	३१८११०
” १.	३१८१११
” १.	३१८१२४
कृत्रिमाचारी २.	२११७६
कृस्न १. २. ३.	५४१८६
कृपण १. २. ३.	५४१५९
कृपा २.	३३११९२
कृपाण १.	३१७१५९
कृपाणी २.	३११३७
कृपीट ३.	७११८
कृपीटयोनि १.	१२११६
कृमि १.	३३१३३
” १.	४१३३४
कृमिकोशोत्थ १. २. ३.	४३१११८
कृमिज ३.	३१८१०७
कृवी १.	३३१२६
कृश १ व.	२११३७
” १.	५३१७
” १. २. ३.	५४१५
कृशानु १.	१२११७
कृशानुरेतम् १.	१११४५
कृशारिवन् १.	२११६३
कृपक १.	३१८२८
” १. २. ३.	७५३३१
कृषि २.	२१८३
कृषीबल १.	३१७२७
” १. २. ३.	३१८७
कृष्टक १. २. ३.	३१८२२
कृष्टि २.	६५२४४
कृष्ण १.	११११५
” १.	१११२५
” १.	३३१८३
” १.	५३१११
” १.	६५५१४
कृष्णकाक १.	२३११७
कृष्णकोहल १.	३३१५८
कृष्णद्वैपायन १.	१११३२
कृष्णधूमल १.	५३११३
” १.	५३१२२

[कृष्णनवाम्बुद]

कृष्णनवाम्बुद १.	२२१२
कृष्णपाक १.	३३१८३
कृष्णपाकफल १.	३३१८३
कृष्णपिङ्गल १.	५३१२४
कृष्णपीत १.	५३१२२
कृष्णफल १.	३३१८३
कृष्णफला २.	३३११०८
कृष्णभूमि २.	१११६२
कृष्णभूम १. २. ३.	३११४५
कृष्णभेदी २.	३१८८६
कृष्णरक्तसित १.	५३१२५
कृष्णला २.	३३११७९
कृष्णलोहित १.	५२११
कृष्णवर्ण १.	३१८४३
कृष्णवर्णा २.	४२१२९
कृष्णवर्मन् १.	१२११४
कृष्णविषाणा २.	३३११०९
कृष्णवृन्त १.	३१८४७
कृष्णवृन्ता २.	३३१९०
” २.	८२११५
कृष्णवृन्तिका २.	३३१५७
कृष्णशालि १.	३१८३३
कृष्णशिम्बि २.	३१८४७
कृष्णशृङ्गक १.	३३११९
कृष्णसर्प १.	४१११२
” १.	४१११३
कृष्णसार १.	३३११२
कृष्णस्वस् २.	१११६२
कृष्णाजिन ३.	३३१२१
कृष्णायस ३.	३२१३३
कृष्णिका २.	३३११८१
कृसर १.	३३१७८
” ३.	४३१४७
” १. २. ३.	४३१७९
केकर १. २. ३.	५३११३
केका २.	२३१३९
केकालि १.	२३१३८
केकिन् १.	२३१३७
केणिका २.	४३११२५

शब्दानुक्रमणिका

केण्डुक १.	४११४७
केतक १. २. ३.	३३१२२३
केतन ३.	३१७१७६
” ३.	४३११९
” ३.	७३१२२
केतर २.	४३११९
केतु १ व.	१३१३७
” १.	६१११६
” १.	८११६०
केतुमाल ३.	३११७
केदर १.	३१८१७
केदार १.	३१८१७
केनिपात १.	४२११६
केयूर ३.	४३११४३
केरल १ व	३११३४
केलक १.	३११६४
केलि १. ३.	३११८८
केलिकिल १.	१११५१
” १.	३१७१७
” १.	३१६१७
केलिकुञ्जिका २.	४३१२८
केलिसहायक १.	३१७१७
केवल १. २. ३.	७५२२६
केवलिन १.	१११३५
केश १.	४३१९७
” १.	८६१११
केशकार १.	३१७११७
केशकूट १.	४३११००
केशघ्न ३.	४३१२६
केशपञ्च १.	५३११८
केशपद्धति २.	४३११००
केशपाश १.	५३११८
केशपाशी २.	४३११०२
केशव १.	११११४
” १. २. ३.	५३१८
केशवप्रिय १.	३२१५
केणवायुध ३.	३१७१३४
केशहस्त १.	५३११८
केशिक १. २. ३.	५३१८
केशिका २.	३३११३७
केशिन् १. २. ३.	५३१८

[कोकिल]

केशिनी २.	३३११६
केशी २.	४३११०२
केसर १.	३३१५
” १.	३३१२६
” १.	४३१४५
” १.	४३१३३
” १. ३.	७५३३०
केसरा २.	३३१९९
केसरिन् १.	३३३३३
” १.	७३१२१
कैकसेय १.	१२१४१
कैटभारि १.	११११५
कैटभी २.	१११६२
कैढर्य १.	३३१५०
” १.	३३१५८
कैढर्यद्वेषिन् १.	३३१७५
कैतव १.	७३१८
कैदारक ३.	५३११२
कैदारिक ३.	५३११२
कैदार्य ३.	५३११२
कैरव ३.	४२१४१
कैराती २.	३१७१२२
कैलास १.	३२१५
कैलासनाथ १.	१२१५६
कैवर्त १.	३३१३२
” १.	३३१५९१
” १.	३३१४२
कैवर्तीमुस्तक १.	३३११९९
कैवल्य ३.	३३१२३८
कैशिक ३.	५३११२
कैशिकी २.	३३११०१
कैश्य ३.	५३११२
कोक १.	२३१९
” १.	३३१८
कोकनद ३.	४२१४०
” ३.	४२१४२
कोकहित १.	२३१५६
कोकाह १.	३३१९९
कोकिल १.	२३१२६
” १.	७३१२०

[कोकिलाक्ष]

कोकिलाक्ष १.	३३१०१
कोकुन्द १.	४३१७२
कोकुराह १.	३३१०५
कोटर १. ३.	३३११४
कोटि २.	४३१५२
" २.	५११२९
" २.	५११३१
" २.	६२१११
कोटिका २.	४११४९
कोटिवर्ष ३.	४३१९
कोटिश १.	३३१२९
कोटी २.	३३१३७८
कोटीर १.	४३१३५
कोट्टी २.	४३११०
कोठ १.	४३१२४
कोण १.	२११३५
" १. २. ३.	२११२९
" १. २. ३.	२११३६
" १.	४३१५२
" १.	६१११६
कोणप्रतिग्राहिन् ३.	४३१४१
कोणेशिवाचक १. २.	४११४८
कोण्ठ १.	२३१२२
कोतना २ ब.	२१११९
कोट्ट ३.	३३१७२
" ३.	३३१७३
" ३.	७३११२
कोट्ट १.	३३१३४
कोट्ट १.	४३१३२
कोट्टव १.	३३१५४
कोप १.	३३११८३
कोपन १. २. ३.	५३१३२
कोमल १.	५३१५
कोयष्टि १.	२३१२०
कोरक १.	३३११९
कोरण ३.	२३१२
कोरदूषक १. ३.	३३१५४
कोराङ्गी २.	३३१८८
कोल १.	२११३६
" ३.	३३१८०

[वैजयन्तीकोषः]

कोल ३.	५११४८
" १.	५३१३४
" १.	५३१०५
" १. २. ३.	५३११४
" १. २. ३.	६१११६
" १.	६१११७
कोलक ३.	३३११०५
" १.	४१११८
कोलदल ३.	३३११०१
कोलम्बक १.	२१११२०
कोलवल्ली २.	३३१७८
कोला २.	३३१८१
" २.	६१११७
कोलाक १. २. ३.	२३१२३
कोलाङ्गक १.	३३१३३
कोलाहल १.	२३१२७
कोलि २.	३३१३७
" १. २.	८११२६
कोलिण्ट १.	३३१६६
कोविद १.	३३१२३४
कोविदार १.	३३१४७
कोश १.	२३१५०
" १.	३३१३
" १.	३३१४४
" १.	३३१६८
" १. ३.	३३१७४
" १.	४३१६१
" १. ३.	४३१६३
" १. २. २.	६१११५
कोशफल ३.	२३११०५
" १.	३३११०५
कोशफला २.	३३११५८
" २.	३३११६१
" २.	३३११६१
कोशातकी २.	३३११५८
कोशिका २.	३३११७
" २.	४३१५७
कोष्टिका २.	३३११९६
कोष्ट १. ३.	३३१२२
कोष्टकारी २.	२३१४७

[कौलटिनेय]

कोण ३.	५३१९
कोसल १ ब.	३११३७
" १ व.	३११४०
" ३.	३३१७४
" १.	५३११४
कोसलानन्दिना २.	४३१५
कोहल ३.	३११२७
" १.	३५११८
कोहली २.	३३१४९
कोकुट ३.	३३११२२
" १. २. ३.	५३१२४
कौकुटिक १. २. ३.	३३११७
" १. २. ३.	८३१६
कौलेलेयक १.	३३१५९
कौट १.	३३१८०
कौटतक्ष १.	३११३४
कौटिक १.	३११३७
कौटिल्य १.	३३११५९
कौतुक ३.	६३१८७
" ३.	७३११०
कौतूल १.	४३१३८
कौतूल ३.	३३११८७
कौटवीण १. २. ३.	३३११९
कौटिक १. २. ३.	५३१२२
कौन्तिक १. २. ३.	३३१४४
कौन्ती २.	३३११५
कौपीन ३.	४३१२९
" ३.	७३१३३
कौबेरी २.	२११५
कौमारी २.	१११६५
कौमुद १.	२११८६
कौमुदी २.	२११२८
कौमोदकी २.	११११८
कौम्भ ३.	३३१३८
कौम्भक्या २.	२३१२८
कौकुत्स्य ३.	४३११५
कौलटिनेय १.	४३१४४

[कौलटेय]

कौलटेय १.	४३१४४
" १.	४३१४४
कौलटेर १.	४३१४४
कौलीन ३.	७३११३
कौलेयक १.	३३१७०
" १. २. २.	५३१६१
कौश ३.	४३१६
कौशिक ५.	४३११०
(कौशिक)	
" १.	७३११७
कौशिकी २.	८३११४
कौशेय १. २. ३.	४३११८
कौपीतकी २.	३३१५३
कौसल्यानन्दवर्धन १.	१११२१
कौसीय ३.	३३११७८
कौस्तुभ १.	११११७
कौहोल ३.	३३११८२
क्रकच १.	३३१५६
" १. ३.	३३१३६
क्रकचिक १.	३३१५३
क्रतु १.	५३११४
क्रतुभुज् १.	१११३३
क्रत्वन्नि १.	१११२३
क्रयन ३.	४३१२७
क्रन्दन ३.	२३११०
" ३.	७३१६
क्रन्दित ३.	३३१८७
क्रपुक १.	३३१६९
क्रम १.	३३११३
" १.	३३११३
" १.	४३१३१
क्रमण १.	३३१९१
" ३.	४३१५६
क्रमुक १.	१११३२
" १.	३३१२७
क्रमेलक १.	३३१६७
" १.	३३१४५
क्रय १.	३३१६९
क्रयविक्रयिक १.	३३१७२

[शब्दानुक्रमणिका]

क्रयिक १. २. ३.	३३१६८
क्रय १. २. ३.	३३१६८
क्रय ३.	४३१०६
क्रयाद् १.	१११२२
" १.	१११४०
क्रयाद् १.	१११४०
क्राकचिक १.	३३१५६
क्राथ १.	४३१२७
क्रान्ति २.	५३११६
क्रामणक १.	३३११३०
क्रायिक १. २. ३.	३३१८८
क्रासन १.	५३११
क्रिमि १.	४३११५३
क्रिमिज १.	३३११७
क्रिमिपर्वत १.	३३१४८
क्रिमिर १.	५३१२५
क्रिमिरा २.	३३१२६
क्रिया २.	३३११२३
" २.	५३१२९
" २.	६३१२९
क्रियावत् १. २. ३.	५३१७४
क्रिडा २.	३३१८७
" २.	२३१८८
क्रु १.	२३१३४
क्रुध २.	३३११८३
क्रुधा २.	३३११८३
क्रुष्ट ३.	२३१८७
क्रूर १.	३३१२१७
" ३.	४३११०८
" ३.	५३११५
" ३.	५३१३७
" १. २. ३.	५३१२४
" १. २. ३.	५३१६०
" १. २. ३.	६३१४४
क्रुरा २.	३३१८७
क्रुणी २.	३३१६९
क्रुतय १. २. ३.	३३१६८
क्रुतृ १. २. ३.	३३१६८
क्रुय १. २. ३.	३३१६८
क्रुड १.	२३१३५

[काथन]

क्रोड ३.	५३१४९
" १. २. ३.	६३१२३
क्रोडीकरण ३.	४३११७०
क्रोध १.	३३११८३
" १.	६३१७६
क्रोधन १.	३३१६९
" १. २. ३.	५३१३२
क्रोधविवशा २.	३३१४७
क्रोश १.	२३१३
" १.	३३१६२
क्रोष्टु १.	३३१३२
क्रोष्टुककटि ३.	३३११६९
क्रोष्टुमेखला २.	३३११६७
क्रौञ्च १.	२३११०
" १.	२३१३४
क्रौञ्चारि १.	१११५७
कलम १.	५३१२८
कलमथ १.	५३१२८
कलान्ति २.	५३१२८
विलम्ब १. २. ३.	५३११३
विलम्ब १. २. ३.	५३११३
वलीतक ३.	३३११०३
वलीतकी २.	३३१११०
वलीब १. २. ३.	३३११४७
" १.	४३१३
वलेदन् १.	६३११६
वलेदु १.	२३१२६
वलेश १.	३३११९३
वलेशित १. २. ३.	
	५३११३
वलोमन् ३.	४३११२
कण १.	२३१११
कणक १.	४३११५
कणन ३.	२३१११
कणित ३.	२३१११
कथन ३.	५३१४१
कथित २.	५३११५
काण १.	२३१११
काथ १.	४३११४१
काथन ३.	३३११५
" ३.	५३१४१

[काथसम्भव]

काथसम्भव ३.	३२२४३
काथि १.	३२१५२
काण १.	२११५४
॥ १.	३२६६२
॥ ३.	४४१२७
॥ १.	५२२७
॥ ३.	५४१११
काणदा २.	२११५६
काणन ३.	३२७२१४
काणा २.	४३२६६
(कणा)	
काणांशु २.	२२२४
काणिका २.	२२२४
काणितु १.	३२७२१७
कात ३.	३२७२१७
कातज ३.	४४१७५
कातमत्त १. २. ३.	
	३२६१३
कात्त १.	३२५८५
॥ १.	३२५११६
॥ १.	३२७२४
॥ १.	३२७१३७
कात्त १.	३२७१
कात्तकुण्ड १.	३२५६२
कात्त्रिय १.	२५५२
॥ १.	३२७१
कात्त्रियगोलक १.	३२५६२
कात्त्रिया २.	४४१२३
कात्त्रियाणी २.	४४१२३
कात्त्रियी २.	४४१२२
कापण १. २. ३.	५४११५
कापा २.	२११५६
कास १. २. ३.	६४३३
कासा २.	१११४७
॥ २.	३२११
॥ २.	३२६१८४
कामित् १. २. ३.	५४३३३
कामिन् १. २. ३.	५४३३३
काय १.	३२७७५
॥ १.	४३२१९
॥ १.	४४१२४

वैजयन्तीकोषः

काय १.	५२२३२
॥ १.	५४११४
कायि १.	२३२९
कारि २.	३२११
कारिन् १.	२११८८
काव १.	४४१२१
कावथु १.	७१११८
काणिन् १.	३२६२२
काणिनी २.	२११५
(काणिनी)	
काणी २.	२११५७
कान्त १. २. ३.	५४२१५
कान्ति २.	३२११
कास १.	१२२१
॥ १. २. ३.	५४८४
कास १.	३२८१२७
॥ १.	३२८१२९
॥ १.	५३३३०
॥ १.	५४१३३
कासक १.	७१११६
कासण ३.	२४३३३
कासपत्रक १.	३२३१५४
कासमृत्तिका २.	३२८२५
कासन २.	३२६१८७
कासि २.	६२२८
कासिसम्भवा २.	३२४३२
कासिण १.	७१२१
कासिणु १.	७१२१
कासा २.	५२३३३
कासि १. २. ३.	५४३७
॥ १. २. ३.	५४९७
कासि १. २. ३.	५४४०
कासि १.	२३१९९
॥ ३.	४४१०८
॥ १. २. ३.	५४१२४
कासा २.	५४८४
कास १. २. ३.	५४३७
कासि २.	३२८१४५
॥ ३.	६३३४
कासिक १.	४१२०
कासिज ३.	३२८१३९

(४४)

[कुर]

कीरबीज १.	४२१४८
कीरविदारी २.	३२३१९६
कीरशर १.	३२६९८
॥ १.	३२८१४७
कीरशुक्ल १.	४२१४८
कीरशुक्ला २.	३२३१९६
कीराधि १.	३२१११
कीराश १.	२३२७
कीराहार १. २. ३.	
	३२६१३४
कीरिका २.	३२७८०
कीराद १.	३२१११
कीरोदसुता २.	११३३६
कुण १. २. ३.	५४४४९
कुणक ३.	३२९१३९
कुत्त २.	४४१२१
कुत्त १.	४४१२१
कुद् १.	३२५२६
कुद् १.	४१३३९
॥ १. २. ३.	५४१०९
॥ १. २. ३.	६५१३३
कुद्क ३.	३२८१२२
॥ ३.	३२८१३४
कुद्घण्टा २.	४३१४४५
कुद्नासिक १. २. ३.	
	५४१११
कुद्नीघृत् १. २.	३२१४१
कुद्पत्तिन् १.	२३३४१
॥ १.	२३३४८
कुद्दहंस १.	२३३९
कुद्दाण्ड १.	४११४५
कुद्दोपाय १.	३२७१२
कुध् २.	३२६१८२
कुधा २.	३२८४२
कुधाभिजनन १.	३२८४२
कुधित १. २. ३.	५४३३६
कुप १.	३३३६
॥ १.	३२८६३
कुसा २.	३२८४५
कुर १.	३२३१०१
॥ १.	३२३१४१

[कुर]

कुर १.	३२९२६
कुरक १.	३२३१०१
कुरकर्मन् ३.	३२६४
कुरप्र १.	३२७१८२
कुरमदिन् १.	३२९२६
कुरसमुद्र ३.	४३३१०८
कुरिका २.	३२७१६३
कुलक १. २. ३.	७१४९
कुलतात १.	३२९१०८
॥ १.	४४३२
कुव १.	४४१९९
कुेत्र ३.	३२८१७
॥ ३.	४४३५
॥ ३.	४२५२
॥ ३.	६३३६
कुेत्रज्ञ १.	३२६१६१
॥ १. २. ३.	७५३२
कुेत्राजीव १. २. ३.	३२८४
कुेत्रिक १.	३२८११०
कुेत्रिय १. २. ३.	७५११०
कुेत्रिया २.	३२८६०
कुेत्र्य ३.	३२८१२३
कुेष १.	५२१२
कुेषण १.	४४१५८
॥ ३.	५२३३
॥ ३.	५२४०
कुेषणी २.	४२१७
कुेषणीय १.	३२७१६६
कुेम १.	६५२२
कुेमङ्कर १. २. ३.	५४१५५
कुेत्र ३.	५११२
कुैरैयी २.	४३३७
कुोड १.	३२३१६२
कुोणी २.	३२११
॥ २.	३२६१७
कुोद १.	६११३
कुोभ्य ३.	३२३३
कुोद्र ३.	३२८१३५
कुौम १. ३.	४३३३
॥ १. २. ३.	४३११७

शब्दानुक्रमिका

कुौम ३.	४३१२२
कुौरकार १.	३२७११७
कुणुत १. २. ३.	३२७१९७
कुणू २.	३२८२९
कुसा २.	३२११
कुसाभृत् १.	३२३१
कुिवङ्क १.	३२४३१
कुवेड १.	२४३१
॥ १. २. ३.	६५२१
॥ १. ३.	८१३१
कुवेल १.	४१२२
॥ १.	४१२२
कुव	
कुव ३.	२१११
॥ ३.	८३१९
॥ ३.	८६४
कुवग १.	२११४
॥ १.	२३३३
॥ १.	२३३२
॥ १.	३२७१७८
॥ १.	६१११८
कुवगच्छाय ३.	८११९
कुवचित १. २. ३.	५४१७८
कुवजक १.	३२९३१
कुवजाका २.	४३१६३
कुवज १.	३२३२०८
॥ १.	३२५६
॥ १. २. ३.	५४१४
कुवजन १.	२३३२३
कुवजरीट १.	२३३२३
कुवजरीटी २.	२३३३४
कुवट १.	५३३४
कुवटी २.	३२३१६
कुवहास १.	३२४३५
कुवहासिका २.	३२४३५
कुवट्वा १.	४३१६४
कुवट्वाङ्क १.	१११५९
कुवट्वाङ्किन् १.	१११४६
कुवट्किका २.	४३३४२
कुवट्ग १.	३२४७
॥ १.	३२७१५८

(४५)

[खर]

खड्गनामान् १.	४११५१
खड्गपत्र १.	३२४२२६
खड्गपुच्छ १.	४११५१
खड्गाङ्क १.	१२३३१
खड्गाङ्कु ३.	३२७१६१
खड्गिन् १.	३२४३७
खण्ड ३.	३२८११९
॥ १. ३.	३२८१३४
॥ १. ३.	४४१५६
॥ १. २. ३.	५४१८६
॥ १. २. ३.	६५२५
खण्डना २.	६३५३
खण्डपरशु १.	१११४३
खण्डपर्कट ३.	४३३१०६
खण्डल १. ३.	४३३३०
खण्डशर्करा २.	३२८१३३
खण्डिक १.	३२८४३
खण्डिका २.	३२६३२
खण्डित १. २. ३.	
	२४३२०
खण्डिता २.	२११६०
खण्डिन् १.	३२८३८
खण्डीर १.	३२८३६
खण्डिलक १.	१२३१४
खदरी २.	३२३१४८
(खदरी)	
खदिका २.	४३३६७
खदिर १.	१२३३
॥ १.	३३३३३
खद्योत १.	२३३४७
खनक १.	३२५४०
॥ १.	४३३३१
॥ १. २. ३.	७५३३
खनि २.	३२३१८
खनित्र ३.	३२८२८
खनित्री २.	३२६१२३
खपुट १. २. ३.	३२६१३२
खपुर १.	३२३११
॥ १.	३२३२२
॥ १.	७१२२
खर १.	३२३३९

[खर]

खर ३.	३१३१८	खल १.	३१८३१
" १.	३१३२८	" १. २. ३.	३१८१४२
" १.	३१४६५	" १.	५१४२५
" १.	५१३३	खलकुल ३.	३१८४७
" १.	५१३५	खलति १. २. ३.	
" १.	५१३७		४१४१४७
" १.	५१३४२	खलधान ३.	३१८३१
" ३.	८१६६	खलपू १. २. ३.	३१८६७
खरक १.	२१४१०	खला २.	६१५२५
खरकुटी २.	४१३२५	खलि २.	३१९२७
खरकोमल १.	२११८४	" २.	४१३८१
खरकाण १.	२१३३५	खलिनी २.	५१११२
खरच्छुद १.	३१४२२९	खलीन १. ३.	३१७११३
खरट १.	५१३४	खलु ४.	८१७२०
खरटी २.	३११२६	खलुकी २.	३१३८८
खरणस् १. २. ३.		खलुष १.	५१३३४
	५१४१२	खलुरिका २.	३१७१९४
खरणस १. २. ३.		खलेपाली २.	३१८३१
	५१४१२	खलया २.	५१११२
खरमञ्जरी २.	३१३११५	खलव १.	३१८४६
खरमुख ३.	३१९१२५	" ३.	४१३६०
खरम्भर १ व.	३११२३	खलवाट १. २. ३.	
खरागरी २.	३१३८६		४१४१४७
(खरा, गरी)		खलुक १.	५१३५३
खरारि १.	१११२१	खष १.	३१५४९
खराशवा २.	३१८१०२	" १.	३१५५६
खर १. २. ३.	३१६१२	" १.	५१४५२
" १.	६१११८	खस १.	४१४१२३
खरञ्जक १. ३.	३१५१०	खसुम ३.	३१७४७
खरुहा २.	३१३१३२	खाङ्क १.	२१११४
खरुल १.	४१४७६	खाटि १.	३१७२१६
खर्जनी २.	३१६१०९	खाङ्गिक १. २. ३.	
खर्जू २.	४१४१२४		३१७१४४
खर्जूर ३.	३१२१३	खाण्डवप्रस्थ १. ३.	
" ३.	३१२१४		४१३८
" १.	३१३२२२	खातक ३.	४१२५
" १.	४११३३	खादन ३.	४११०४
खर्जुरिका २.	३१३२२२	" १	४१४८८
खर्व ३.	५११२८	खादित १. २. ३.	
" १. २. ३.	५१४८१		५११०७
		खाद्य ३.	४१३९१

वैजयन्तीकोषः

[खोड]

खाध्वनीन १.	२१११४
खारी २.	५११५७
" २.	५११५७
" २.	५११६३
खारीक १. २. ३.	
	३१८२२
खाषेय १.	११३१
खिल ३.	३१६३३
" १. २. ३.	३१८१८
खिलखिल १.	२१३४०
खुडार १.	३१८४४
खुडुक १.	३१३२२१
(खुडुक)	
खुर १.	३१४७४
" १.	३१८१०१
खुरणस् १. २. ३.	
	५१४११
खुरणस १. २. ३.	
	५१४११
खुरुराह १.	३१७१०५
खेचर १.	११३३
" १.	७११२२
खेट १. ३.	४१३१
" १. २. ३.	५१४७५
" १. २. ३.	६१५२४
खेटक ३.	३१७१९७
" ३.	४१३१३
" १.	४१४८०
" १.	४१४१२१
खेटन ३.	३१९४०
खेटिन् १. २. ३.	
	४१४१४६
खेद १.	५१२३२
खेय ३.	४१३१३
खेल १.	३१३२१५
खेला २.	३१९८७
खेलि १.	३१८४४
खेलाह १.	३१७१०३
खेलाह १.	३१७१९
खोड १.	२१३३५
" १. २. ३.	५१४१४

[खोरण]

खोरण १.	५१३३
खोलक १.	७११२३
ख्यातगर्हण १. २. ३.	
	३१६११
ख्याति २.	२१४३६
" २.	३१६१६३
ग	
गगन ३.	२१११
गङ्गा २.	४१२२४
गङ्गाधर १.	१११४२
गङ्गेष्टि २.	४११५७
गच्छ १.	५११३७
गज १.	३१७६०
गजचिमिता ३१३१७२	
गजच्छाया २.	२१३३१
गजजीवन १.	३१७८८
गजना २.	५११९
गजमण्डन १.	३१७८६
गजवीथिका २.	२११४८
गजानन १.	१११५३
गजाराति १.	३१४३२
गज १. २. ३.	६१५२६
गजम ३.	२१४२
गज्जाः २.	३१२१०
गड १.	४१४३३
" १. २. ३.	६१५२९
गडुल १. २. ३.	५१४११
गडुची २.	३१८४५
गडोल १.	४११०१
गण १.	३१७५८
" १.	५१११
" १.	६१११९
" १	८१६१३
गणक १.	३१७२५
गणतिथ १. २. ३.	
	५१११९
गणन ३.	५१३३६
गणपतिप्रिय १.	१११५१
गणपूरण १. २. ३.	
	५१११९
गणरात्र ३.	२११५९

शब्दानुक्रमिका

गणाधिप १.	१११५४
गणि १.	३१६८२
गणिका २.	३१७३३
" २.	४१४२४
" २.	७१२७
गणिकागण १.	५११८
गणिकारी २.	३१३८६
गणोत्साह १.	३१४८
गण्ड १.	३१७७५
" १.	४१४९०
" १.	४१४१२३
" १.	५११३७
" १.	६१२२०
गण्डक १.	३१४७
" १.	३१७११६
" १.	४११४५
गण्डकली २.	३१३१४८
गण्डफली २.	८१२५
गण्डमाल १	४१४१२९
गण्डमालहन् १.	३१३७७
गण्डरी २.	३१३९८
गण्डशैल १.	३१२९
गण्डरी २.	३१८७८
गण्डुक १.	४१३१६२
गण्डूपद १.	४११५९
गण्डूष १.	४१४७८
" १. ३.	७१३४
गण्डूषक १.	३१७०
गण्डोर १.	४१३१०१
गण्डोली २.	२१३४६
गति २.	३१६२३६
" २.	४१४३३
" २.	५१२१०
" २.	६१२११
" २.	८१९५
गद १. २.	६१५२९
गदाग्रज १.	११३२५
गदापाणि १.	११३३
गद्वद १. २. ३.	२१४१५
गद्वस्वर १.	३१४८
गद्यपद्यमयी २.	२१४४२

[गमन]

गन्त्री २.	३१७१२७
" २.	४१३१०८
गन्ध १.	५१३२
" १.	५१३५४
" १.	६१२२२
गन्धक १.	३१२१४
(गन्धिक)	
गन्धकुटी २.	३१८९८
गन्धचेलिका २.	३१४३६
गन्धन ३.	७१३३३
गन्धनाकुला २.	३१८९७
गन्धमुण्डक १.	३१३५९
गन्धमृग १.	३१४३५
गन्धरस १.	३१२१५
गन्धर्व १.	११३३८
" १.	१३३२
" १.	३१४३२
" १.	७१३२४
गन्धर्वगण १.	१३३११
गन्धर्वहस्त १.	३१३६५
गन्धर्वह १.	११२४७
" १. २.	८१५७
गन्धवाह १.	११२४७
गन्धसार १.	३१८११३
गन्धसारण १.	५१३४९
गन्धसोम ३.	४१२४१
गन्धाखु २.	४१३३२
गन्धाश्मन् १.	३१२१४
गन्धाहिक १.	४१११८
गन्धिक १.	५१३५१
" १.	५१३५४
गन्धिघना २. १. ३.	
	७१३२९
गन्धिनी २.	३१८९८
गभस्ति १.	२१३३३
" १.	२१३३६
" १. २.	८१२२५
गभीरक १. २. ३.	४१२१९
गम १.	५१२१०
गमन ३.	५१२१९
" ३	५१२१०

[गमि]

गमि १.	३१६२०१
(निमि १)	
गम्भारी २.	३३३५८
गम्भीर १. २. ३.	४१२२०
" ३	८३११७
गर १.	४११२२
" १.	४१४८३
गरल १.	३३३५०
" १.	४११२२
गरवायु १.	१२१५३
गरह ३.	३३३५७
गरी २.	३३३८६
गरुड १.	१११३७
गरुडध्वज १.	११११४
गरुडा २.	४१४१०१
गरुत् १.	२३३४८
गरुत्मत् १.	१११३७
" १.	७११२४
गरुल १.	४२१४७
गरोलिका २.	४२१४८
गर्गर १.	३५३३४
गर्गरी २.	३५३३२
" २.	४३३२७
गर्ज १.	२४३३
" १.	३३७६०
गर्जन ३.	२४३३
" ३.	३३३२०६
गर्जना २.	२४३३
गर्जा २.	२४३३
गर्जित २.	२१२५
" १.	७५३३४
गर्त २.	४२३३
गर्तकुङ्कुट १.	२३३२१
गर्तिका २.	४३३२२
गर्वनक १.	३३३६६
गर्वभ १.	३३३६५
गर्वभाण्ड १.	३३३५९
गर्वभाह्वय ३.	४२३४१
गर्वन १. २. ३.	५४३३५
गर्वना २.	३३३१८०
गर्म १.	३३८१४१

वैजयन्तीकोषः

गर्म १	४१४४०
" १.	३११२१
गर्मक ३.	२११५८
(गर्भित)	
" ३.	४३१५५
गर्मपाकिन्	३३३३४
गर्मसम्पुट १.	४१४११३
गर्मगार १.	४३१५१
गर्मजि १.	३३३१५७
गर्मधान ३.	३३३२
गर्मशय १.	४१४१८
गर्मिणी २.	४१४१६
गर्मोपघातिनी २.	३३४४७
गर्मुट १.	३३३३०
गर्मुटिका २.	३३८५९
गर्मुत् २.	३३८५९
" २.	६१११८
गर्व १.	३३३१६९
गर्वहारिका २.	२४३२८
गर्वि २.	३३३१६९
गर्वित १. २. ३.	५४३२०
गर्वण ३.	२४३३३
गर्वणा २.	३३३१९३
गर्वर् २.	३३३१९३
गर्वर् १. २. ३.	५४३७५
गर्वर्वादिन् १. २. ३.	५४३७७
गल १. २. ३.	४१४८३
गलकम्बल १.	३३३६०
गलगण्ड १.	४१४१२९
गलन्ती २.	४३३५७
गलस्तनी २.	३३३६२
गलाङ्कुर १.	४१४१२९
गलित १. २. ३.	५४३१०२
गलेवाल १.	४१४४२
गल्या २.	५१११४
गल्ल १.	४१४९०
गल्वर्त १.	३३३५३
गवय १.	३३३३३
गवल १.	३३३११

[गान्धर्व]

गवल ३.	३३८११८
गवली २.	३३३१२३
गवाक्ष १.	४३३५४
गवाक्षक ३.	४३३५३
गवाक्षी २.	३३३१३४
" २.	३३३१७३
" २.	३३३१८३
गवादिनी २.	३२३१४९
गवीधुका २.	३३८५९
गवेधु २.	३३८६१
गवेधुका २.	३३८६१
गवेधुणा २.	३३३१२१
गवेधित १. २. ३.	५४३९८
गव्य ३.	३३८१४५
गव्या २.	३३३६२
" २.	५१११३
" २. ३.	६११२६
गव्यूत ३.	३३३६२
गव्यूति २.	३३३६२
गहन ३.	३३३११
" ३.	८३३१७
गह्वर ३.	७३३१५
" ३.	८३३१७
गाङ्गी २.	२११७६
गाङ्गेय १.	१११५६
" १. ३.	७५३३५
गाङ्गेरुकी २.	३३८६१
गाढ १. २. ३.	५४३१३२
गाढास्य ३.	३३८१४१
गाणिक्य ३.	५११८
गाण्डव १. ३.	३३७१७४
" १. ३.	७५३३५
गाण्डीव १.	७५३३५
गातु १.	२४३२
गात्र ३.	३३७७५
" ३.	४१४५२
" ३.	४१४५५
गात्रसङ्कोचिन् १.	३३३७२
गान ३.	२४३२
" ३.	३३३१०९
गान्धर्व १.	१३३२

धर्व]

गान्धर्व ३.	३३३२९
" ३.	३३१११०
गान्धार १ व.	३३१२४
" १.	३३११३२
गायत्र १.	३३३८
" ३.	३३३३४
गायत्री २.	३३३३४
गारुड ३.	३३२१९
गारुत्मत् ३.	३३२३८
गार्भिण ३.	३३३३
" ३.	५११८
गार्हपत्य १.	१३२२४
गालव १.	३३३४९
" १.	३३३५२
गालि २.	२४३३३
गिरि २.	१३१९
गिरि १.	३३२११
" ३.	३३८१६
" १.	४३३१६१
गिरिकर्णिका २.	३३१११
गिरिकर्णी २.	३३३१३४
गिरिका २.	४१३३२
गिरिकोलि २.	३३३१७८
गिरिजा २.	४३२२२
गिरिप्रिया २.	३३३१०५
गिरिमल्लिका २.	३३३७३
गिरिलक्ष्मण १.	३३३२८
गिरिश १.	१३३३९
गिरिसार १.	३३३३४
गिरिस्तनी २.	३३३३
गिरीयक १.	४३३१६२
गिरीश १.	१३३३९
गिल १.	३३५१५
गीत ३.	३३११०९
गीतिशासन ३.	३३३२९
गीत्युपक्रम १.	३३११४०
गीर्ण १. २. ३.	५४३१०६
गीर्वाण १.	१३३२
गीर्णपति १.	२३३३३
गुग्गुलु १.	३३३५३
गुच १.	२३८६३

शब्दानुक्रमिका

गुच्छ १.	३३३२०
" १.	४३३१४०
गुच्छा २.	३३८३५
" २.	३३८६०
गुच्छार्थ १.	४३३१४०
गुञ्ज १.	३३३२०६
गुञ्जन ३.	२४३२
गुञ्जा २.	३३३१७९
" २.	५११४४
" २.	६३३११
गुड १.	३३३२७
" १.	४३३०१
" १.	४३३६१
" १.	४३३६२
" १.	४३३३३
" १. २.	६३३२७
" ३. २.	८३३३२
गुडक १.	४३३४७
गुडजूष १.	४३३९६
गुडपुष्प १.	३३३४४
गुडफल १.	३३३४५
गुडा २.	६३३२७
" २.	८३३३३
गुडाका २.	३३३१९७
गुड्डी २.	३३३१३१
गुडेरक १.	४३३१०१
गुण १.	३३३१६२
" १.	३३३३०
" १. २. ३.	४३३९३
" १.	५३३१
" १.	५४३६४
" १.	६३३२०
गुणग्राम १.	५३३३७
गुणलयनी २.	४३३१२५
गुणवृक्ष १.	८३३२०
गुणवृक्षक १.	४३३१७
गुणसामान्य ३.	३३३१६२
गुणावली २.	३३३३६
(गुणापणी)	
गुणित १. २. ३.	२४३२२
गुणोत्कर्ष १.	५३३३

[गुहाशय]

गुण्डा २.	३३३१५५
गुण्डित १. २. ३.	५४३१३३
गुद ३.	४३३६०
गुदग्रह १.	४३३३३२
गुदानिल १.	३३३२०५
गुध १.	३३८३३३
गुन्दिल १.	२४३१०
गुन्द्र १.	३३३२२८
गुन्द्रा २.	३३३६६
" २.	३३३१९९
" २.	३३८६०
गुप्त १. २. ३.	५४३१००
गुप्तराग १.	३३३२२५
गुप्ति २.	६३३११
गुप्फ १.	५३३३९
गुरण ३.	५३३३४
गुरु १.	१३३३४
" ३.	३३३२८
" १.	३३३२२
" १.	३३८५३
" ३.	३३८३३९
" १. २. ३.	६३३२७
गुरुपत्र ३.	३३३३३२
गुरुस्वभृत् १. २. ३.	५४३२५
गुलिन् १.	५३३२५
गुलुच्छ १.	३३३२०
गुल्फ १.	४३३५७
गुल्फशीर्ष १.	४३३५७
गुल्म १.	३३३३७
" १.	५३३१५८
" १.	४३३१३३
" १.	५३३३०
" १.	६३३१९
गुल्मिनी २.	३३३३७
गुवाक १.	३३३२१७
गुह १.	१३३५५
गुहा २.	३३३३६
" २.	३३३३३६
गुहाख्य १.	३३३८०
गुहाशय १.	४३३५०

[गुहाशय]

गुहाशय १.	८११२१
गुहय ३.	४१४६२
„ १. २. ३.	५१४१२०
„ १. २. ३.	५१४१२०
गुहयक १.	११३३
„ १.	८११५६
गुहयकेश्वर १.	११३५७
गुहयधारा २.	४१४६३
गुहयबन्ध १.	४१३१३१
गुहयमध्य १.	४१४६२
गू १. २.	८१५३८
गूलकोश १.	११२६०
गूलपद ३.	३१६१७३
गूलपाद १.	४११६
गूलपूरुष १.	३१७२६
गूलवृक्ष १.	३१३५५
गूध १.	४१४११९
गून १. २. ३.	५१४११३
गुञ्जन १.	३१३५७
„ १.	३१३२०४
„ १.	३१३२०६
„ १.	३१३२०७
गुण्डिव २.	३१३३९
गुण्डु १. २. ३.	५१४३५
गुध्र १.	२१३३०
गुष्टि २.	३१३५८
„ २.	३१४४८
गुह ३.	४१३१९
„ १ ब.	४१४३५
गुहकाण्ड १.	३१८७८
गुहकारिका २.	२१३४३
गुहगोधिका २.	४११३०
गुहगौलिका २.	४११३०
गुहजालक १. २. ३.	३१९८६
गुहदुम १.	३१३५४
गुहपति १.	११२२४
„ १.	३१७२७
गुहमणि १. २.	४१३१६१
गुहमृग १.	३१४६९
गुहमेधिन् १.	३१६४०

वैजयन्तीकोषः

गुहयालु १. २. ३.	५१४३८
गुहश्रेणी २.	४१३४६
गुहस्थ १.	३१६४०
गुहस्थूण ३.	४१३३९
„ ३.	८१९२२
गुहान्तर ३.	३११५२
गुहावग्रहणी २.	४१३४४
गुहिणी २.	२१३४६
„ २.	४१४२१
„ २.	७१२१७
गुहिन १.	३१६४०
गुहीति २.	३१६१६५
गुहेडिका २.	४११३६
गुहेश्वर १.	५१४७०
गुहोच्छिष्ट १.	३१३२०४
गुहोदक ३.	४१३८१
गुह्य १.	२१३५
„ १. २. ३.	६१४५
गुह्यक १.	५१४२८
गेय ३.	११९१०९
गेह १. ३.	४१३१९
गेहेनदिन् १. २. ३.	५१४७०
गैरिक ३.	३१२११
„ ३.	३१२२०
गैरुष १.	३१५३३
गैरेय ३.	३१२१६
गैरेयक ३.	३१३२१९
„ १.	१११२
„ २.	१११९
„ २.	३१३४१
„ १.	३१४५२
„ २.	३१४५२
„ १. २.	८१५३७
गोकण्टक १.	३१३१४१
गोकरीषेन्धन ३.	३१६१७
गोकर्ण १.	३१४१५
„ १.	५११८०
गोकर्णी २.	३१३११४
गोकुल ३.	३१४६१
गोकृच्छ्र ३.	३१६१३९

[गोनस]

गोक्षुर १.	३१३१४१
गोगण १.	११११३
गोग्रन्थि १.	३१४६०
गोगन्धन १.	११२५४
गोचर १.	५१३२
गोजिह्वा २.	३१३११६
„ २.	३१८६०
गोडुम्बा १.	३१३१७३
गोणिका २.	५११५८
गोणी २.	४१३१३०
„ २.	५११५६
„ २.	५११६३
गोतम ३.	३१७१७४
गोत्र १.	३१२११
„ ३. २.	६१५२८
गोत्रभिद् १.	११२३
गोत्रा २.	५१११३
„ २.	६१५२८
गोदर्भ ३.	३१३२०१
(गोनर्द)	
गोदा २.	४१२२८
गोदारण ३.	३१८२७
„ ३.	३१८२९
गोदावरी २.	४१२२८
गोदुह १.	११३१२
„ १.	३१९२८
गोध १.	३१५१
„ २. ३.	३१७१५५
गोधन ३.	३१४६१
गोधा १.	३१५१
„ २.	३१७१५५
„ २.	४११२६
गोधामाली २.	४१११८४
गोधासन ३.	३१६२२०
गोधि २.	४१४९६
गोधूम १.	३१८५३
गोधूमचूर्ण ३.	४१६८८
गोनर्द १.	२१३३३
गोनर्दीय १.	३१६१५७
गोनस १.	४१११३
„ १.	४१११४

[गोनस]

गोनस १.	४१११४
गोनिषदन ३.	३१६२२५
गोप १.	३१७२२
„ १.	३१९२८
गोपघोष्ठा २.	३१३८८
गोपति १.	३१४५३
„ १.	७११२४
गोपभद्रा २.	३१३५७
गोपा २.	३१३१३९
गोपानसी २.	४१३३९
गोपायित १. २. ३.	५१४१००
गोपाल १.	३१९२८
गोपाली २.	३१६५६
गोपुच्छ १.	४१३१४१
गोपुर ३.	३१३२०१
„ ३.	४१३१५
गोप्य १.	३१९३
„ १. २. ३.	६१५२९
गोमत् १. २. ३.	३१४५९
गोमत ३.	३१३६२
गोमतल्लिका २.	३१४४६
गोमती २.	४१२२९
गोमय १. ३.	३१४६०
गोमायु १.	३१४३८
गोमिन् १. २. ३.	३१४५९
गोमुख १.	४११५३
„ १. ३.	७१५३६
गोरक्षजम्बू २.	८१२११
गोरक्षतण्डुल १.	३१८६२
गोरस १.	३१८१३९
„ १.	३१८१४९
गोरुत ३.	३११६२
गोर्गल १.	३१३२३३
(होर्गल)	
गोर्द ३.	४१४११२
गोल १.	३१२१५
„ ३.	४१३८२
गोलक १.	३१५६०
„ १.	३१५६२
„ १.	३१५६३

शब्दानुक्रमणिका

„ १.	३१५६३
„ १.	७१२२३
गोलका २.	७१२१७
गोलसिका २.	२१३२४
गोलपुस १.	३१४३२
गोला २.	३१२१७
गोलाङ्गूल १.	३१४४०
गोलोक १.	३१६२०७
गोलोमी २.	३१३१९७
„ २.	३१३२३३
गोवन्दिनी २.	३१३६६
गोवादिन् १.	३१४३३
गोविन्द १.	११११५
„ १. २. ३.	२१४५९
गोवीथी २.	२११४७
गोवृष १.	३१४५४
गोव्रत ३.	३१६१४८
गोशकृत् ३.	३१४६०
गोशाल १. २. ३.	८१९३४
गोशाला २.	४१३२२
गोशीर्ष ३.	३१८१३३
गोष्ठ १.	३१९३१
गोष्ठवातिङ्गन १.	३१३१०३
गोष्ठश्च १. २. ३.	५१४२६
गोष्ठी २.	३१८१३३
गोष्ठपद १. २. ३.	७१५३७
गोसङ्ख्य १.	३१९२८
गोसर्ग १.	२११६८
गोसव्य ३.	४१३१३३
गोस्तन १.	४१३१४१
गोस्तनी २.	३१३१८१
गोस्वामिन् १. २. ३.	३१४५९
„ ३.	३१९१०५
गोहरीतकी २.	३१३३०
गौतम १.	१११३५
„ १.	३१६१५६
„ ३.	४१४१०८
गौतमी २.	१११५९
गौधार १.	४१३२६
गौधेय १.	४१३२७

[ग्रहराज]

गौधेर १.	४१३२६
गौर १.	३१३९४
„ ३.	३१३२३२
„ ३.	५१३१०
„ ३.	५१३२०
„ १. २. ३.	६१४५
गौरव ३.	३१८११६
„ ३.	५१२२०
गौरशाक १.	३१३४४
गौरसर्ज १.	३१३३९
गौरसर्षप १.	५११४३
गौरार्द्र १.	४१३२३
गौरावस्कन्दिन् १.	११२१७
गौरी २.	१२१४६
„ २.	३१३१२१
„ २.	३१३२११
„ २.	८१६३
गौरेय १.	१११५६
गौष्ठीन ३.	३१९३१
ग्मा २.	३११३
ग्रथित १. २. ३.	५१४११०
ग्रन्थ १.	६११२१
ग्रन्थन ३.	५१२३९
ग्रन्थि १.	३१३११
„ १.	३१९३१
ग्रन्थिक ३.	३१८१९१
ग्रन्थिनी २.	३१८१७७
ग्रन्थिपर्ण ३.	३१८१९२
ग्रन्थिल १.	३१३३८
ग्रस्त १. २. ३.	५१४१०८
ग्रह १.	११२३८
„ १.	२११३०
„ १.	२११५०
„ १.	३१६६३
„ १.	३१९५७
„ १.	६११२०
ग्रहकल्लोल १.	२१३३६
ग्रहण ३.	७१३१४
ग्रहणी २.	४१४१२९
ग्रहभोजन १.	३१७९१
ग्रहराज १.	८१३२१

[ग्रहि]

ग्रहि १.	८१११०
ग्रहीतृ १. २. ३.	३८८९
" १. २. ३.	५४३८
ग्राम १.	३१११०
" १.	४३३२
ग्रामणी १. २. ३.	५४३६
" १. २. ३.	७५३६
ग्रामणीकुल ३.	३११२०
ग्रामतत्त्व १.	३११३४
ग्रामता २.	५११९
ग्रामधान्य ३.	४३३३
ग्रामप्रेष्य १.	३१५६२
ग्रामसीमा २.	४३३११
ग्रामसूकर १.	३१४७१
ग्रामार्थ १.	४३३५
ग्रामीण १. २. ३.	४३३३
ग्रामीणा २.	३३३१०
ग्रामेयक १. २. ३.	४३३१२
ग्राम्य १.	२३३११
" १. २. ३.	४३३३
ग्राम्यधर्म १.	४३३१७०
ग्राम्या २.	३३३१६०
ग्रावन् १.	३३३१०२
" १.	६१११९
" १.	८६३४
ग्रास १.	३३३१५
" १.	४३३१०१
ग्रासग्रह ३.	३३३१५०
ग्राह १.	४११५२
" १.	६१११९
ग्राहिन् १.	३३३३२
ग्रीषा २.	४११८३
ग्रीष्म १.	२११८८
ग्रीष्मसुन्दर १.	३३३१५७
ग्रीवेयक ३.	४३३१३७
ग्रीष्मिका २.	३३३१८६
ग्लवथु १.	४१११२२
ग्लस्त १. २. ३.	५४११०८
ग्लह १.	३११६०
ग्लान १. २. ३.	४४११४५
ग्लानि २.	४४११२२

वैजयन्तीकोषः

ग्लास्तु १. २. ३.	४४११४५
ग्लौ १.	२११२५
घ	
घङ्कोर १.	३३३१६९
घट १.	४३३१५८
" १.	५११५५
घटना २.	५२३३४
घटा २.	३३३७०
" २.	३३८१४
" २.	५२३३४
घटिका १. ३.	५११६०
घटिका २.	२११५४
" २.	७२३८
घटिकालवण ३.	३३८१२४
घटी २.	४३३५९
घटीयन्त्र ३.	४३३२१
घट्ट १.	४३३२०
घण्टा २.	३३३१५८
" २.	४३३८०
घण्टाताड १.	४३३३०
घण्टापथ १.	४३३१६
घण्टारवा २.	३३३१९८
घण्टाला २.	४३३१५८
घण्टास्वन ३.	३३३२९
घन १.	२३३१
" ३.	३३३३२
" १.	३३३१५
" १.	३३३१०२
" १.	३३३१७१
" ३.	३३३११५
" ३.	३३३११६
" ३.	३३३१२३
" ३.	४३३८६
" १.	५३३५५
" १. २. ३.	५३३२६
" १. २. ३.	६३३३०
घनगोलक १. ३.	३३३२३
घनधातु १.	४३३१०४
घनपद ३.	४३३२
घनरस १.	४३३३
घनवासक १.	३३३१६९

[घृणा]

घनश्रेणी २.	३३३११
घनसागर १.	३३८१०५
घनाघन १.	८११२२
घनागम १.	२११८९
घनात्यय १.	२११८९
घनागला २.	४३३७८
घनोपल १.	२३३७
घरिन् १.	३३८३५
घर्घर १.	३३३१८
" १.	३३३३०
" ३.	३३३१९४
" १. ३.	४३३५०
घर्घरक १.	२३३२२
घर्घरिका २.	३३३१३१
" २.	८३३५
घर्वरी २.	३३३१३१
घर्म १.	३३३८१
" १.	८११५७
घस्मर १. २. ३.	५३३५०
घस्त १.	२११५५
घाटा २.	४३३८५
घाण्टिक १.	३३३३७
" १.	३३३३०
घात १.	३३३२११
घातुक १. २. ३.	५३३४२
वारि २.	२११५७
घास १.	३३३७४
घासहार १.	३३३६३
घासि १.	१३३१४
घासिक १.	३३३११७
घिमिण १.	३३३१२१
घुटिक १.	३३३८६
" १.	४३३५७
घुण १.	४३३३६
" १.	५३३४९
घुणाभीष्टा २.	३३३१९८
घुल्लुङ्ग १.	३३८१९
घुसृण ३.	३३८११६
घूर्णन ३.	५३३१०
घूर्णि २.	५३३१०
घृणा २.	३३३१९२

[घृणा]

घृणा २.	३३३१९
(मृणा)	
" २.	६३३१२
घृणि १.	२११५५
" १.	६११२२
" १.	८११२५
त ३.	३३८१३८
" ३.	६३३६
" १.	८११२८
घृतपूर १.	४३३७४
घृतभुज् १. २. ३.	३३३१३५
घृतलेखनी २.	३३३१०१
घृताञ्जन ३.	३३३१२
घृताशिल्प १. २. ३.	३३३१३५
घृतिन् १.	३३३१३५
(घृतिन्)	
घृषि १.	३३३१९
घृष्टि १.	२१११६
" १.	३३३३६
" १.	८११२५
घृष्व १.	३३३१९
घोटक १.	३३३१९१
घोण १.	३३३५४
घोणस १.	४३३१४
घोणा २.	२३३४६
" २.	४३३१९१
" २.	६३३१२
घोणिन् १.	३३३५
घोण्टा २.	३३३२१७
घोर १.	३३३३८
" ३.	३३८११७
" १. २. ३.	३३३७९
घोरवाशिन ३.	२३३४
घोरित ३.	२३३५
घोल १.	३३३२१
" ३.	३३८१४८
" १.	३३८१४९
" ३.	३३८१५०
" १.	४३३५९

शब्दालुक्रमणिका

घोष १.	२३३२
" १.	३३३१५८
" १.	३३३३२
घोषवती २.	३३३११६
घोषित १. २. ३.	२३३२२
घोष १.	४३३२५
घ्राण ३.	४३३९१
" १. २. ३.	६३३२९
च	
च ४.	८३३७
" ४.	८३३११
चकित १. २. ३.	५३३१८
चकोर १.	२३३३५
चक्र ३.	३३३२१८
चक्रण ३.	३३३२१८
चक्र १.	२३३१९
" ३.	३३३१५
" ३.	३३३१३४
" ३.	४३३३०
" ३.	४३३१२५
" ३.	६३३७
चक्रकारक ३.	३३८१९९
चक्रचर १.	३३३४२
चक्रधारण ३.	३३३१३१
चक्रपक्ष १.	२३३५
चक्रपाणि १.	१३३१०
चक्रपाद १.	८३३२२
चक्रप्रान्त १.	३३३१३५
चक्रभृत् १.	८३३५०
चक्रमर्दन १.	३३३१५८
चक्रलक्षणा २.	३३३१३२
चक्रवर्तिन् १.	३३३२
चक्रवर्तिनी २.	३३८८९
चक्रवाक १.	२३३९
चक्रवाल ३.	२३३६
" ३.	३३३३
" ३.	५३३३
चक्रवृत्ति २.	४३३६
चक्रसंज्ञ ३.	३३३१५
चक्राङ्का २.	३३३१४३
चक्राङ्का २.	३३८६

[चण्डातक]

चक्रावर्त १.	५३३१०
चक्राङ्काङ्कय १.	२३३९
चक्रिन् १.	१३३१२
" १.	३३३४०
" १.	४३३१६
" १.	६३३२३
चक्रिवत् १.	३३३६५
चक्रोष्ठी २.	३३३२१०
चक्रस् १.	२३३३३
चक्रुष्य १.	३३८३७
" १.	४३३७०
" १. २. ३.	५३३७०
" १. २. ३.	५३३११७
चक्रुष्या २.	३३३४४
" २.	३३३१२४
चक्रुस् ३.	४३३९४
चक्रूर १.	७३३२५
चक्रुटक १.	३३३१५२
चक्रुरीक १.	२३३४३
चक्रल १.	२३३२४
" १. २. ३.	५३३७८
चक्रला २.	२३३३
चक्रु २.	२३३५०
" १.	३३३६५
चटक १.	२३३१४
(पण्डक)	
" १.	२३३१८
चटिका २.	३३८११
चटिकाशिर १	३३८११
चट्ट १.	६३३२३
चटुल १. २. ३.	५३३७९
चढक १.	२३३६
चण १.	३३८३३
चण्ड १.	५३३९
" १. २. ३.	५३३३२
चण्डकोलाहला २.	३३३१२६
चण्डमुण्डा २.	१३३६३
चण्डांशु १.	२३३१५
चण्डात १.	३३३१९२
चण्डातक ३.	४३३१२९

[चण्डाल]

वैजयन्तीकोषः

[चरणाग्रक

चरम]

शब्दानुक्रमणिका

[चिञ्चा

चण्डाल १.	३१५२२
" १.	३१५८३
" १.	३१५१०७
" १.	३१५५४
चण्डालवहलकी २.	३१५१२७
चण्डिल १.	३१५२६
चण्डी २.	१११६२
चतुर ३.	३१५९२
" ३.	४३२११
" १. २. ३.	५४४५४
" ४.	५४४१३७
" १. २. ३.	७४४११
चतुरङ्गक ३.	३१७५९
चतुरङ्गल १. २. ३.	३११५२
" १.	३१३४८
चतुरा २.	३१४१९
चतुरूषण ३.	३१८८१
चतुर्गति १.	४११५०
चतुर्थ १. २. ३.	५११२१
चतुर्थक १. २. ३.	५११५१
चतुर्थकालिक १. २. ३.	३१६१२६
चतुर्द्व १.	११२१२
चतुर्दशी २.	२११७०
" २.	३१५११७
चतुर्धा ४.	८१८२०
चतुर्भद्र १.	३१६२३६
चतुर्मुख १.	१११७
चतुर्वर्ग १.	३१६२३५
चतुर्विधान्न ३.	४३१९१
चतुर्हस्त १.	३११५७
चतुश्शाल ३.	४३४५२
चतुश्शाल ३.	४३२२६
चतुष्क ३.	५११५५
चतुष्की २.	४३१२४
चतुष्कृतः (स्) ४.	८१८६

चतुष्पञ्च १. २. ३.	५११२६
चतुष्पथ १.	३११५१
चतुष्पाद् १.	१२१४३
" १.	३११५२
चतुष्प्रस्थ १.	५११५४
चतुष्टोम १.	३१६८६
चतुस्स्नेह ३.	४३१९९
चत्वर १.	७५३८
चत्वरि २.	३१६१६६
" २.	७२१८
चत्वारिंशत् २.	५११२६
चन ४.	८१८१२
चनका २.	३१४२३
चन्दन १. ३.	३१८११२
" ३.	३१८११३
चन्दनद्रवभाजन ३.	४३११०९
चन्द्र १.	२११२४
" ३.	३१२१९
" १.	३१३९५
" १.	३१८१०५
" ३.	४२१४१
चन्द्रकान्त १.	३१२३७
चन्द्रकिन् १.	२१३३८
" १.	३१४३
चन्द्रगोलिका २.	२११२८
चन्द्रपाद् १.	२११२८
चन्द्रवाला २.	३१८८७
चन्द्रभासा २.	४२१२७
चन्द्रभीरु ३.	३१२२३
चन्द्रमणि १.	३१२३७
चन्द्रमस् १.	२११२४
चन्द्रमातृ २.	२११७२
चन्द्रमौलि १.	१११३९
चन्द्रव्रत ३.	३१६१३६
चन्द्रव्रतिक १. २. ३.	३१६१२७
चन्द्रशाला २.	४३३३४
चन्द्रहास १.	१२१४३
" १.	३१७१६०

चन्द्रा २ व.	२११२०
चन्द्रातप १.	४३१२३
चन्द्रिक १.	५३१५१
चन्द्रिका २.	२११२८
" २.	४२१२७
चन्द्रिकाप्रिय १.	२३३३५
चन्द्रिमा २.	२११२८
चन्द्रोदय १.	४३१२३
चप १.	३३३२१५
चपल १.	३१४३३
" १.	३१८११०
" १. २. ३.	५४४७८
" १. २. ३.	५४४१२५
" १. २. ३.	७५३९
चपला २.	२२२३
चपेट १.	४४४७६
चलुक ३.	४४४८७
चमक ३.	३३३२०२
चमर १.	३१४२९
चमरिक १.	३३३४७
चमरी २.	३१४२९
चमस १. ३.	३१६१०१
चमू २.	३१६१०२
" २.	३१७५५
" २.	३१७५८
चमूपाणि १.	३१७५९
चमूरू १.	३१४२३
" १.	३१४२४
चम्पक १.	३३३८१
चम्पकद्वीप ३.	३१११७
चम्पा २.	२२२४
चम्पुक १.	२३३४
चम्पू २.	२१४४२
चम्पोपलक्षण १ व.	३१३३१
चय १.	५१११
चर १. २. ३.	५४४६१
चरण ३.	३१६११५
" १. ३.	४४४५६
" १. ३.	७५३७
चरणाग्रक ३.	४४४५७

चरम १. २. ३.	५४४७७
" ४.	५४४१४०
चराचर १. २. ३.	५४४६२
चराशा २.	२११४
चरि १.	३१४७२
चरित्र ३.	३१६११५
चरी २.	४४४८
चरु १.	६११२२
चक्ति २.	४३११४७
चर्च १.	१२१६१
चर्चरी २.	२४२७
चर्चा २.	१११६३
" २.	४३११४७
" २.	४४४१०
" २.	६२१२२
चर्चिक्य ३.	४३११४७
चर्पट १.	४४४७७
चर्भटि २.	२४२७
चर्मकार १.	३१५४०
" १.	३१५४०
" १.	३१५४२
" १.	३१५४३
चर्मकोश ३.	४३३६२
चर्मन् ३.	३१६२१
" ३.	३१७१९७
चर्मपर्णी २.	३३३१४४
चर्मप्रसेदिनी २.	३१५४३
चर्मप्रवेविका २.	३१५१७
चर्ममय ३.	३१७१९७
चर्मिक १.	३३३४५
चर्मिन् १.	१११५२
" १.	३३३४५
" १. २. ३.	३१७१४४
चर्या २.	३१६११६
चवर्ण ३.	४३१५१
चवर्णा २.	२३३४५
चल १.	१२१४९
" ३.	३१७२०७
" १.	३१८११०
" १. २. ३.	५४४६८

चल १. २. ३.	५४४७८
चलच्चञ्च १.	२३३३५
चलदल १.	३३३२७
चलन ३.	७३३१५
चला २.	२२२६
" २.	४४४१०
चलाचल १. २. ३.	५४४७८
चलित ३.	३१७२०१
" १. २. ३.	५४४९५
चविक ३.	३१८८१
चव्य ३.	३१८८१
" ३.	३१८८१
चषक १. ३.	३१५५३
चषाल १. ३.	३१६१०५
चाक्रगिर ३.	३१११५
चाक्रिक १.	३१५२३
" १.	३१५७८
" १.	३१५२७
" १.	७११२५
चाङ्गेरी २.	३३३१६३
चाट १.	५३३१४
चाटस १.	५३३२९
चाटु १.	६११२३
चाटुकार १.	४३३१४२
चाणक्यमूलक ३.	३३३१५५
चाण्डाल १.	३१५५४
चाण्डालिका २.	३१५१२७
चातक १.	२३३३२
चातिक १.	३१७३०
चातुर १. २. ३.	७५३८
चातुरीक १. २. ३.	४३३१०९
चातुर्जात ३.	४३३१५१
चातुर्मास्य १.	३१६१४५
चात्वाल १. ३.	३१६१११
चान्द्रमसायनि १. २. ३.	२११३२
चान्द्रायण ३.	३१६१३६
चान्द्रायणरत १. २. ३.	३१६१२७

चान्द्री २.	२११२८
" २.	२११७२
चाप १. ३.	३१७१७२
चामर ३.	३३३२०२
" ३.	४३३१५९
चामरपुष्प १.	८११५१
चामीकर ३.	३२११८
चामुण्डा २.	१११६३
चाम्पेय १.	३३३८१
" १.	३३३८२
चार १.	३१७२६
" ३.	४३३३६
चारटी २.	३१८८९
चारण १.	३१५६४
चारणी २.	३३३१३४
चारित्र ३.	३१६११५
चारी २.	३१६६७
चारु १.	२११३३
" १. २. ३.	५४४३५
" १. २. ३.	६४४६
चारुक १.	३१४३०
चारुनाल ३.	४२१४०
चार्वी २.	३१६११५
चाल १.	३१४६९
चालन ३. २.	८१५३२
चालनी २.	४३३६५
चाष १.	२३३२९
चिकित्सक १. २. ३.	४४४१४३
चिकित्सा १.	४४४३९
चिकिर १.	७११२५
चिकिल १.	३१८२६
(चिकिच्छल)	
चिकुर १. २. ३.	५४४७९
" १. २. ३.	७५३९
चिकण ३.	३३३१८
" १.	५३३४
चिकल १.	४३३६८
चिकान ३.	३१८५५
चिकोड १.	४११२७
चिञ्चा २.	३३३८१

चित्रलिक]

चित्रलिक १.	११२५१
चित्रोटिका २.	४२१४८
चित् २.	३१११६४
" ४.	८८११२
चितकावेर ३.	३१८११६
चिता २.	३१७२१६
चिति २.	३१६१६४
" २.	३१७२१६
चिक्कत ३.	२४१९
चित्त ३.	३१६१७२
चित्तविभ्रम १.	३१६१७७
चित्ताभोग १.	३१६१७४
चित्तोन्मादकरी २.	१११४९
चित्या २.	३१७२१६
चित्र १. २. ३.	३१९१७८
" १.	४११४३
" ३.	४१११४८
" ३.	६१५३०
चित्रक १.	३१८८२
" १.	४१११५
" १.	५१३२३
चित्रकूट १.	३२१२
चित्रकूत् १.	३१३१६
" १.	३१९१२
चित्रगुप्त १.	११२३६
चित्रतण्डुला २.	३१८१९७
चित्रदण्ड १.	३१३२०८
चित्रपक्ष १.	२१३२०
चित्रपट १.	४१३११९
चित्रपत्रक १.	२१३३७
चित्रपणिका २.	३१३१३६
चित्रपिङ्गल १.	२१३३७
चित्रपुङ्ख १.	३१७१८०
चित्रफलित् १.	४११४३
चित्रभानु १.	८११२२
चित्ररथ १.	११२५
चित्रल १.	३१३१६८
चित्रला २.	३१३१२९
चित्रशाला २.	४१३२३

वैजयन्तीकोषः

चित्रशिखण्डिज १.	२११३३
चित्रशिखण्डिन् १.	२११५०
चित्रा २.	२११६०
" २.	३१३११३
" २.	३१३१३८
" २.	३१३१७३
" २.	४११११७
" २.	६१५३०
चित्राङ्ग १.	३१४१४
चित्राङ्गि २.	३१३१३७
चित्राणुक १.	४११४९
चित्रावनि २.	३१६३५
चित्रोपमा २.	२११६०
चिद्रिट १.	३१३१७२
चिद्रूप १. २. ३.	५१४२७
चिपाट १.	३१७१३२
चिपिट १.	४१३६८
" १. २. ३.	५१४८३
चिबुक ३.	४१४८७
चिरक्रिय १. २. ३.	५१४७२
चिरजीविन् १.	१११७
" १.	२१३१५
चिरण्टी २.	४१४९
चिरन्तन १. २. ३.	५१४८७
चिरम् ४.	८१८११
चिरमेहिन् १.	३१४६६
चिररात्र ३.	२११५९
चिररात्राय ४.	८१८११
चिरसूता २.	३१४४८
चिराल ४.	८१८११
चिरि १.	११२१८
चिरिबिल्वक १.	३१३६२
चिरेण ४.	८१८११
चिलिचिम १.	४११४५
चिलिमीलिका २.	८१२१२
चिल्ल १.	६१४५
चिल्लाक १.	२१३४

[चूचुक

चिल्लिक १.	२१३२८
चिल्व १.	३१३५२
चिल्व १.	५१३५७
चिल्ल ३.	२११२९
" ३.	६१३८
चीन १ ब.	३११२३
" ३.	३१२३३
" १.	३१३५०
" १.	३१४२१
" १.	३१८३७
" १.	३१८५९
चीनक १.	३१४१३
चीननक १.	४११४४
चीनपट्ट ३.	३१२३०
चीनसी २.	३१४२१
चीना २.	३१६१५०
चीर ३.	४१३१३०
चीरिणी २.	४१४८
चीरी २.	२१३४८
चीवर ३.	४१३१२८
चुक्र ३.	३१८१३२
" १.	३१८१३३
चुक्रिका २.	३१३१६३
चुचुन्दरी २.	४१३३२
चुण्डिन् १.	४१२७
चुन्दी २.	४१२५
चुप १.	५१३०
चुबुक ३.	४१४८७
चुम्बक १.	३१३३८
चुम्बन ३.	४१३१७१
चुम्न १. २. ३.	६१५३१
चुल १.	४१४७८
चुलक १.	३१३३
" १.	४१४७८
चुलम्पा २.	३१४६३
चुल्ल १.	६१४५
चुल्लि २.	४१३५४
चूचु १.	३१५५१
" १.	३१५९३
चूचुक १.	३१५७४
" १.	३१५८१

चूचुक]

चूचुक ३.	४१४६८
चूचुक १.	३१८४५
चूडा २.	४१४१०२
" २.	८१२१५
चूडाकरण ३.	३१६४
चूडामणि २.	३१३१७९
" १. २.	४१३१३६
चूत १.	३१३२५
चूतक १.	४१२७
चूर्ण ३.	४१३१५७
चूर्णपूप ३.	४१३७२
चूर्णि २.	४११५८
" २.	६१२१२
चूलि २.	६१२१३
चूलिक १.	२१३१३
" १.	३१८३९
चूलिका २.	३१३२२२
" २.	३१७७३
चूषण ३.	४१३१०३
चूषा २.	३१७८४
चूष्य ३.	४१३९१
चेटक १.	३१९१२
चेटा २.	४१४२६
चेटिका २.	४१४२६
चेत् ४.	८१८१४
चेतकी २.	३१३१७८
चेतना २.	३१६१६३
चेतस् ३.	३१६१७२
चेदि १ ब.	३१३३६
चेन्नाल १.	३१६१६९
चेल ३.	४१३११७
" १. २. ३.	५१४७५
" १. २. ३.	६१५३१
चेरलाण १.	३१३१६८
चेत्य ३.	३१६९०
" ३.	४१३२८
" ३.	६१३८
चेत्यवृष्ट १.	८१६२०
चेत्र १.	२११८३
चेन्नरथ ३.	११२५९
चेन्निक १.	२११८३

शब्दानुक्रमणिका

चैत्री २.	२११७५
चैत्र १ ब.	३११३६
चोक्ष १. २. ३.	६१५३१
चोच ३.	३१३१४
" ३.	३१८१०४
चोचु १.	४१४१००
चोट १.	४१४१०३
चोटलिङ्गक १.	३१७१८५
चोदनिका २.	३१८१४७
चोदनी २.	३१३१६७
चोद्य १. २. ३.	६१४६
चोर १.	३१९५५
" १. ३.	४१३७६
चोरपुष्पी २.	३१३११६
चोरिक १.	३१७२०
चोल १ ब.	२१३३३
" १.	३१३८३
" १. ३.	४१३३७
" १.	४१३१२८
चोलक १. ३.	३१३१३
चोलान्त १.	४१३३७
चोली २.	४१३१२७
चौह १. २. ३.	५१४१३५
चौण्ड १.	४१२७
चौरिक १.	३१९५९
चौरिका ३.	३१९५८
चौर्य २.	३१९५८
चौल २.	३१६४
व्यवन १.	३१६१५७
व्युति २.	४१४६०
" ३.	४१४६१
व्युप १.	६११२३
छ १.	३१४६२
छगल १.	३१४६२
छगी २.	३१४६२
छण्डक १.	३१५३६
छत्त्र ३.	३१६१६
छत्त्रक १.	३१३१६९
छत्त्रधर १. २. ३.	३१७१४५

[छाग

छुत्रा २.	३१३१२४
" २.	३१३२३४
" २.	३१८४९
छुत्राक १.	३१३१५३
छुत्राकी २.	३१८१२४
छुत्रिन् १.	३१७२८
छद १.	२११६२
" १.	२१३४९
" १.	३१३१६
छदन ३.	२१३४९
" ३.	३१३१६
छदावलि ३.	३१७१८५
छदिस ३.	३१६९१
" २. ३.	४१३३७
" २.	४१४१०३
छदिस्तुण ३.	३१८६७
छदमन् ३.	३१६१९५
" ३.	६१३८
छदमप्रधारवत् १.	३१७२८
छन्द १.	६११२४
छन्दना २.	३१६१९५
छन्दस् ३.	३१६२७
" ३.	३१६२८
" ३.	६१३९
छन्दोभेद १.	३१६३४
छन्न १. २. ३.	५१४१२०
छन्नपथ ३.	३१७५४
छन्ना २.	३१३१३१
(छिन्ना)	
छर्वन १.	३१३५०
" १.	३१३७५
" १.	४१४१३५
छर्वनी २.	३१३१७१
छर्दि २.	६१२१३
छल ३.	३१६१९५
छलवाच् २.	२१४१९
छल्ली २.	३१३१३
छवि २.	४१३१५०
छाग १.	३१३३५
(भाग)	
" १.	३१४६२

[छागण]

छागण १.	२११२०
छागणक १	३१५२७
छात १. २. ३.	५११०२
छात्र १.	३१६२५
" १.	३१७२७
" ३.	३१८१३६
छादिषेय १. २. ३.	३१८१३६
छान्दस १.	३१६८१
छाया २.	२११२३
" २.	६१२१३
छायाकर १. २. ३.	३१७१४५
छायापुत्र १.	२११३५
छित १. २. ३.	५११०२
छिद्र ३.	३१८१८
" ३.	४११२
" ३	५११४४
" ३	६१३९
छिद्रित १. २. ३.	५११११
छिन्न ३.	३१८१४२
" १. २. ३.	५११०२
छिन्नपुच्छक १. २. ३.	३१४५९
छिन्नरुहा २.	३१३१३१
छेक १.	२१३५
" १. २. ३.	५११२०
" १. २. ३.	६१५३२
छोटिका २.	३१६२२९
(चोटिका)	
ज	
जहा २.	४१३१०४
जहित १. २. ३.	५११०८
जगत् १.	११२४८
" १. २. ३.	५११६१
जगती २.	७१२९
जगत्तय १.	२११९४
जगत्माण १.	११२४७
जगल १.	३१९५१

वैजयन्तीकोषः

जगल १	५११२७
जग्ध १. २. ३.	५११०७
जग्ध २.	४११०२
जघन १.	४११६४
" ३.	७११५५
जघनपिण्डिका २.	३१७७८
जघनभाग १.	३१७७६
जघनेफल १.	३१३१७४
जघनेफला २.	३१३१११
जघन्य ३.	३१८११५
" १. २. ३.	५११७६
" १. २. ३.	५११७७
" १. २. ३.	७११११
जघन्यज १.	३१९११
" १. २. ३.	५११४४
जङ्गम १. २. ३.	५११६१
जङ्गित १.	३१५३३
जङ्गा २.	४११५८
जङ्गात्राण ३.	३१७१५४
जङ्गापद १.	३११५२
जङ्गल १. २. ३.	३१७१५०
जटा २.	३१३१३२
" २.	३१३२०२
" २.	३१८१००
" २.	४१११०१
" २.	५११३३
जटाश्राट १.	१११४४
जटाटीर १.	१११४४
जटायु १.	३१३१५४
जटिन् १.	३१३२८
जटिल ३.	३१३२०२
" १. २. ३.	५११९
जटिला २.	३१३१९७
" २.	३१८१००
जटी २.	३१३२०३
" २.	५११५८
जटुल १.	४११९७
जठर ३.	४११६७
जठरोत्सव १.	३१६६२
जड १.	५१३१६

[जपा]

जड १. २. ३.	५११५४
" १. २. ३.	६११६
जडा २.	३१६१२९
जटु ३.	४१३१५३
जटुक ३.	३१८१३१
जटुका २.	३१३१४४
जटुकाहला २.	३१९१२६
जटुकृत् २.	३१८१८९
जटुका २.	३१८१८९
जटु ३.	४११६९
जन १.	३१६२०२
जनक १.	४११२९
जनङ्गम १.	३१९५४
जनता २.	५११९
जनन ३.	४१११८
" ३.	४११४९
जननी २.	४११२६
" २.	७१२८
जनपद १.	३११२१
" १.	८११२३
जनयितृ १.	४११२९
जनयित्री २.	४११२६
जनवाद १.	२११३४
जनश्रुति २.	२११३९
जनस १. ४.	३१६२०७
जनाद्वन १.	११११०
जनाश्रय १.	४१३२८
जनि २.	३१११८
" २.	६१२१४
जनिमन् ३.	७११२७
जनी २.	३१३१२८
" २.	४११३६
जनुस् ३.	४१११८
जन्तु १.	४१११
जन्तुधर १.	३११३४
जन्तुफला २.	३१८६१
जन्मन् ३.	४१११८
जन्म १. २. ३.	६१५३२
जन्म्या २.	३१८८९
जन्मु १.	४१११
जपा २.	३१३१९५

जपापुष्प]

जपापुष्प ३.	३१८१६७
जम्पति १ द्वि.	४११४८
जम्बाल १.	३१८२६
" १.	७११२६
जम्बीर १.	३१३३५
" १.	३१३१२०
जम्बु ३.	३१३२२
जम्बुक १.	७११२६
जम्बुल १.	३१३२२३
जम्बू २.	३१३२२
" २.	३१३९२
जम्बुगर्त १.	३१७१६१
जम्बूट १.	३१३९४
जम्बुद्वीप १.	३१११०
जम्बुमालिका २.	३१६५०
जम्भ १.	४११८९
जम्भक १.	३१३३५
" १.	३१५८५
जम्भरिपु १.	११२४
जम्भल १.	३१३३५
जम्भीर १.	३१३३५
जय १.	११२६
" १.	११२८
" १.	३१३८५
" १.	३१७२०९
" १.	३१८३६
" १.	८१९१२
जयदत्त १.	११२८
जयन्त १.	११२८
" १.	२११२६
जयन्ती २.	११२९
" २.	२११०८
" २.	३१३९६
जयन्तीपुर ३.	४१३८
जयवाहिनी ३.	११२११
जया २.	३१३८९
" २.	३१३१९७
" २.	३१८८३
जयिन् १. २. ३.	३१७१४७
जयोदाहरण ३.	२१३३६

(जनोदाहरण)

शब्दानुक्रमणिका

जय्य १. २. ३.	३१७१४८
जरठ १. २. ३.	७११२२
जरत् १. २. ३.	५११३३
जरत्कार १.	३१६१५६
जरदगाव १.	३१४५५
जरन्त १.	३१४९
जरा २.	४११५४
जराभीरु १.	१११२९
जरायु १.	४१११८
" १. ३.	७१५३९
जरायुज १. २. ३.	४११२
जरुदद १.	३१७९७
जर्जर १.	३१९१२९
" १.	५१३४१
जर्ण १.	२११२७
" १.	३१३५
जर्तिल १.	३१८३९
जल ३.	४१२२
" १. २. ३.	५१११४
जलक १.	३१३३३
जलकण्टक १.	४१२४८
जलकरिन् १.	४११६०
जलकाक १.	२१३११
जलकोलि २.	३१३८९
जलचर १.	२१३४१
जलजन्तु १.	४११४०
जलजम्बुका २.	३१३१०३
जलजा २.	३१८५८
जलतस्कर १.	२१११२
जलद १.	२१२१
जलदा २.	२१२४
जलद्रोणि २.	४१३६१
जलनर १.	४११६०
जलनिधि १.	४१२११
जलनीली २.	४१२४९
जलपालिका २.	२१२४
जलपिप्पिक १.	४११४१
जलप्रिय १.	३१३५
जलवृंहण ३.	४१२३०
जलभूषण १.	११२४६
जलमार्जसि १.	४११५४

(५९)

[जागर]

जलमुच १.	२१३१
जलमुस्त ३.	३१३२०१
जलरङ्ग १.	२१३११
जलराशि १.	४१२१०
जललम्बिका २.	३१३१९८
जलवालक १.	३१२३
जलव्याल १.	४१११९
जलशीनक १.	५११८
जलशूर १.	४१२४९
जलसम्भवा २.	३१४४३
जलाचार १. २. ३.	३१६१३१
जलात्मन् १.	३१४८
जलाधार १.	४१२५
जलालोका २.	४११५८
जलाशय १.	३१३२३१
" १.	४१२५
जलाश्व १.	४११६०
जलाहार १. २. ३.	३१६१३५
जलक १. २. ३.	८१२२६
जलका २.	४११५८
जलेशय १.	८१५८
जलोच्छ्वास १.	४१२३१
जलोद्गम १.	४१२८
जलोलक १.	५१३४१
जलौकस् १ ब.	४११५८
जलपाक १. २. ३.	५११४६
जल १.	३१५५४
जव १.	११२५५
" १. २. ३.	३१७१५०
" १.	५१२३१
जवन १. २. ३.	३१७१५०
" ३	५१२३१
जविन् १.	३१३१६
" १. २. ३.	३१७१५०
जसु १.	५१३१
जसुरि १.	७१२५
जागर १. २. ३.	३१६१९६

(५८)

जागर]	वैजयन्तीकोषः	[जीर्णक
जागर १. ३।७।५३	जानुभक्तिनी २. ३।७।५२	जालिका २. ३।७।५३
जागरण ३. ३।६।१९६	जानुमात्र १. २. ३.	जालिन् १. ३।९।४२
जागरित ३. ३।६।१९६	४।४।८२	जालिनी २. ३।८।७७
जागरित् १. २. ३.	जानुमात्री २. ३।७।५२	" २. ४।३।२३
५।४।४४	जाबाल १. ३. ३।९।२९	" २. ४।४।१०१
जागरुक १. २. ३.	जामदग्न्य १. १।१।२०	जाली २. ३।३।१५९
५।४।४४	जामातृ १. ४।४।३८	जाहम १. २. ३. ६।४।६
जागर्या २. ३।६।१९६	" १. ७।१।२६	जावक ३. ४।३।१५४
जागृवि १. १।२।१८	जामि २. ६।२।८	जाहक १. ३।४।७२
जाघनी २. ४।४।५८	जामेय १. ४।४।४१	जाह्वी २. ४।२।२४
जाङ्गल १. २. ३. २।४।२०	जाम्बव ३. ३।३।२२	जिघत्सा २. ३।६।१८२
" १ व. ३।१।४०	जाम्बूनद ३. ३।२।२०	जिघत्सु १. २. ३. ५।४।३६
" १. २. ३. ३।१।४५	जाया २. ४।४।३४	जिघांसु १. ३।७।४१
" ३. ३।८।१०७	जायाजीव १. ३।९।६२	जिङ्गी २. ३।३।१३५
जाङ्गलिक १. ४।१।२५	जायापति १ द्वि. ४।४।४८	" २. ३।३।१६०
जाटलि २. ८।९।२६	जायु १. ४।४।१४१	जित १. २. ३. ३।७।१४८
जाट्य १. ३।८।४४	जार ३. ४।२।४२	जितकाशिन् १. २. ३.
जात ३. ५।१।३	" १. ४।४।३८	३।४।२१८
जातरूप ३. ३।२।१८	जारण ३. ३।८।१२६	जितरण १. २. ३.
जातवेदस् १. १।२।१४	जारद्व ३. २।१।४९	३।७।२१८
जातारणि १. ३।६।७२	जारद्वी २. २।१।४७	जित्वर १. २. ३.
जाति २. ३।३।२३	जारवायु १. १।२।५४	३।७।१४७
" २. ३।३।१८२	जारी २. १।१।५९	जिन १. १।१।३३
" २. ३।५।१११	" २. ३।६।४८	" १. १।१।३५
" २. ६।२।१४	जाल ३. ३।१।१३	जिष्णु १. १।२।४
जातिकोश ३. ३।८।१०६	" ३. ३।३।१९	" १. २. ३.
जालु ४. ८।८।७	" १. ३।५।३३	३।७।१४७
जातोक्ष १. ३।४।५४	" ३. ३।९।४३	जिह्वा १. ४।१।५
जात्य १. २. ३. ५।४।६१	" ३. ६।३।९	" १. २. ३. ६।५।३२
" १. २. ३. ५।४।६४	जालक ३. ३।३।१९	जिह्वा २. १।२।२९
" १. ६।४।७	" १. ३।८।३९	" २. ४।४।९०
जानकीकान्त १. १।१।२०	" ३. ५।१।३	" २. ६।२।१५
जानु १. २. ४।४।५९	जालकिनी २. ३।४।६५	जिह्वापान १. ३।४।७०
जानुक १. २. ३.	जालन १. ५।३।३९	जिह्वास्वाद १. ४।३।१०३
३।६।१३३	जालन्धर १ व. ३।१।२६	जीन १. २. ३. ५।४।३
जानुदधन १. २. ३.	जालपाद १. २।३।१२	जीमूत १. ७।१।२६
४।४।८२	जालपादक १. २।३।६	जीरक १. ३।८।८३
जानुद्वयस १. २. ३.	जालभूषण १. ३।५।३६	जीरण १. ३।८।८३
४।४।८२	जालिक १. ३।९।३८	जीर्ण १. २. ३. ५।४।३
जानुनिकुञ्ज ३.	" १. ३।१।३४	" १. ६।५।३४
३।६।२२२	" १. २. ३. ५।४।२३	जीर्णक ३. ३।३।२०५

जीर्णि]	शब्दानुक्रमणिका	[ज्योतिष्मती
जीर्णि २. ४।४।५४	जीवितेश १. २. ३. ८।५।८	जाति २. ४।४।५०
जील ३. ६।३।१०	जुगुप्सन ३. ३।९।७६	ज्ञान ३. १।३।४७
जीव १. ३।६।१६१	जुगुप्सा २. २।४।३३	" ३. ३।६।१६४
" १. २. ३. ३।७।२२०	" २. ३।६।१९३	ज्ञानिन् १. ३।७।५०
" १. ३।७।२२०	" २. ७।२।८	ज्या २. ३।७।१७८
" १. ४।४।१	" २. ८।९।४	" २. ८।२।१७
" १. २. ३. ६।५।३३	जुहुराण १. १।२।१९	ज्यानि २. ४।४।५४
जीवक १. २. ३. ५।४।१६	जुहु २. ३।६।१००	ज्यानिवारण ३. ३।७।१५५
" १. २. ३. ७।५।४०	जृति २. ५।२।३१	ज्यायस् १. २. ३. ५।४।४
जीवजीव १. २।३।४०	जूर्णा २. ३।३।२३०	" १. २. ३. ६।४।७
जीवत् १. २. ३. ३।७।२२०	जूर्णाद्वय १. ३।८।५७	ज्येष्ठ १. २।३।६
जीवतोका २. ४।४।१९	जूर्णि २. ६।१।२४	" ३. ३।२।२८
जीवथ १. ४।१।५०	जृम्भ १. २. ३. ८।९।३८	" ३. ३।२।३१
जीवधन ३. ३।४।६१	जृम्भण १. २. ३. ३।९।८८	" ३. ३।३।२०२
जीवन ३. ३।८।१	जृम्भा २. ३।९।८८	" ३. ३।८।१४५
" ३. ४।२।२	" २. ८।९।३८	" १. ४।४।३१
" ३. ४।३।७५	जृम्भिका २. ३।९।८८	" १. २. ३. ६।४।७
जीवनी २. १।१।१६	जृम्भित १. २. ३. ७।५।४०	ज्येष्ठिनी २. २।१।४१
" २. ३।३।१४३	जेतु १. २. ३. ३।७।१४८	ज्येष्ठतात १. ४।४।३२
जीवनीय ३. ३।८।१४६	जेमन ३. ४।३।१०२	ज्येष्ठश्वश्रू २. ४।४।२८
" ३. ४।२।२	जेय १. २. ३. ३।७।१४८	ज्येष्ठा २. १।१।४९
जीवनीया २. ३।३।११२	जैत्र १. २. ३. ३।७।१२८	" २. १।२।४२
" २. ३।३।१४३	" १. २. ३. ३।७।१४८	" २. १।३।४१
जीवन्ती २. ३।३।८४	जैत्री २. ३।३।१३३	" २. ४।१।३०
" २. ३।३।१३२	जैन १. २. ३. ५।४।१६	" २. ४।४।२७
" २. ३।३।१४०	जैवातृक १. २. ३. ८।५।९	" २. ४।४।७४
" २. ३।३।१४३	जोङ्गक ३. ३।७।१०७	" २. ६।२।१५
जीवपति २. ४।४।१४	जोटिङ्ग १. १।१।४५	ज्येष्ठामूलीय १. २।१।८४
जीवबोधिनी २. ३।३।१४५	जोड ३. ३।३।२१८	ज्येष्ठाम्बु ३. ४।३।६७
जीवलोक १. ३।६।२०६	जोणाल १. ५।३।१९	ज्यैष्ठ १. २।१।८४
जीववृत्ति २. ३।८।४	जोनल १. ३।८।५६	ज्यैष्ठी २. २।१।७५
जीवशाक १. ३।३।१५०	जोन्नला २. ३।८।५७	ज्योक ४. ८।८।६
जीवसू २. ४।४।१९	जोषम् ३. ८।७।२०	ज्योतिरानृण्य ३. ३।६।८७
जीवा २. ३।३।१४३	ज्ञ १. २. ३. ८।५।३९	ज्योतिरिङ्गण १. २।३।४७
" २. ३।७।१८८	" १. ८।९।४७	ज्योतिश्शास्त्र ३. २।१।५०
जीवातु १. ३।७।२२१	ज्ञपित १. २. ३. ५।४।११३	ज्योतिषामयन ३. २।१।५०
जीवान्तक १. ३।५।३७	ज्ञप्त १. २. ३. ५।४।११३	" ३. ३।६।३३
जीविका २. ३।८।१	ज्ञप्ति २. ३।६।१६४	ज्योतिषारपति १. ८।१।५३
जीवित ३. ३।७।२२०	" २. ३।६।१६४	ज्योतिष्मती २. ३।१।३९
जीवितकाल १. ३।७।२२१	ज्ञात १. २. ३. ५।४।१०१	" २. ३।८।६०
जीवितागद १. ३।७।२२१		

ज्योतिषोम]

वैजयन्तीकोषः

[तथा

तथागत]

शब्दानुक्रमणिका

[तर्क

ज्योतिषोम १.	३१६८६	क्षिलिका २.	४११९६	हारिका २.	४११३३	तथागत १.	१११३३	तन्त्री २.	६१२१६	तमोनुद १.	७११२८
ज्योतिष ३.	६१३१०	क्षिप्ती २.	४१३१७	हौण्डुक १. २. ३.	५११२३	तथार्थवाच् १.	५१३३	तन्दन ३.	२११५	तमोनुद १.	८११२३
ज्योत्स्ना २.	२११२८	क्षीरिका २.	२१३१८	त		तथ्य ३.	५१३३	तन्दू २.	६१२१६	तमोपह १.	८११२३
ज्योत्स्नी २.	३१३१६०	ट		तक्कोल ३.	३१८१०५	तद् १. २. ३.	५११२०	तन्द्र १.	४११५२	तमोरिपु १.	२१११४
ज्योतिष १.	२११८१	टगर १. २. ३.	७१५४१	तक्र ३.	३१८१४९	" ४.	८१७११	तन्द्रा २.	३१६१७८	तम्पा २.	३१४४२
ज्योतिषिक १.	३१७२५	टङ्क १.	३१८१३१	तक्रज ३.	३१८१३६	तदा ४.	८१८५	" २.	३१६१९७	तम्बा २.	२१४४२
ज्योत्स्नी २.	२११५८	" १.	३१९२२	तक्रपिण्ड ३.	३१८१४४	तदानीम् ४.	८१८५	" २.	६१२१५	तम्बिकी २.	३१९११३
ज्वल १.	५१३१७	" १.	६११२४	तक्रवासन १.	३१३३६	तनय १.	४१३३९	तन्मात्र ३.	३१६२०५	तरक्षु १.	३१४४
ज्वलन १.	२१११५	टङ्कण ३.	३१८१३०	तक्तक १.	७११२८	तनु १.	३१३८५	तन्वी २.	३१८१७७	तरङ्ग १.	३१३१६२
ज्वलित १. २. ३.	८१४१४	टङ्कनी २.	४११३०	तक्तन् १.	३१५३९	" २.	४१४५२	तपन १.	२११११	" १.	४१२१४
ज्वाल १.	११२२९	टट्टर १.	२१४११	" १.	३१५८६	" २.	४१४१०३	" १.	३१६१५१	तरङ्गिणी २.	३१३२१२
ज्वाला २.	११२२९	टट्टरी २.	३१९१३५	" १.	३१९३४	" १. २. ३.	५१४१५	" १.	७११२९	" २.	४१२२३
भू		टर्क १ ब.	३११२७	" १	८१९१२	" १. २. ३.	५१४१२५	तपनीय ३.	३१२१८	तरण ३.	५१२१२
क्षन्धानिल १.	११२५२	टिट्ठि १.	२१३३४	तत्तशिला २.	४१३९	" १. २. ३.	६१५३५	तपस् ३.	१११४७	तरणा २.	४१३८०
क्षटप्प १.	५१२१९	टिट्ठिभासन ३.	३१६१२५	तगर १.	३१३१९४	तनुकृवर ३.	३१७१३२	" १.	२११८२	तरणि १. २.	७१५४२
क्षटा २.	३१३१७७	ड		तङ्क १. ३.	३१६१८५	तनुत्र ३.	३१७१५२	" ३.	३१६१३६	तरणी २.	४१२१५
क्षटिति ४.	८१८११	डक्कन ३.	२१४८	तट १.	३१२६	तनुस् ३.	६१३१२	" ३.	३१६२०७	तरण्डक १.	४१२१६
क्षण्डाली २.	३१३१५९	डङ्क १.	३१४५३	" १. २. ३.	४१२३२	तनूकृत १. २. ३.	५१४१११	तपस १.	२११२६	तरत् १.	८१९११
क्षम्प १.	५१२१९	डमर १.	३१६१९०	" १. २. ३.	८१९३८	तनूनपात् १.	११२१४	तपस्य १.	२११८३	तरस्सम १.	११२२१
क्षम्पटि २.	४१४९९	डमरु १.	३१९१३५	तटाक १. ३.	४१२६	तनूरुह ३.	२१३१४९	तपस्विन् १. २. ३.	३१६१२६	तरपण्य ३.	४१२१८
क्षर १.	३१२१७	डयन ३.	२१३५०	तटित् २.	२१२४	" ३.	४१४९७	" १. २. ३.	८१५२८	तरल ३.	४१३६२
क्षरसी २.	३१३१५७	डहु १.	३१३७५	तटित्पति १.	२१२२	तन्तु १.	३१३८७	" १. २. ३.	८१५२८	" १.	४१३१४३
क्षरा २.	३१३१५७	डिण्डिक १.	३१५१५	तटित्वत् १.	२१२१	" १.	३१९११	तपस्विनी २.	३१८१००	" १.	५१३१५
क्षरुका २.	३१८२५	डिण्डिम १.	३१९१३५	तटिनी २.	४१२२३	" १.	४१११३	तपिनी २.	४१२२७	" १.	७१५४४
क्षर्कर १.	३१९१३५	डिण्डीर १.	४१२१३	तटी २.	८१९३८	तन्तुक १.	४११५२	तस १.	५१३८	तरवारि २.	३१७१६२
क्षर्करक १.	२११२९	डिण्डीश १.	१११४५	तण्डुल १.	३१८१७	तन्तुनाग १.	४११५२	" १. २. ३.	५१४९८	तरस् ३.	११२१५
क्षलका २.	११२२९	डिम १.	३१९१००	" १.	४१३६६	तन्तुनाम १.	४११३४	तसकृच्छ्र ३.	३१६१३९	" ३.	३१७२१०
क्षल्लरी २.	४१४९९	डिम्ब १.	२१३५०	तण्डुला २.	३१८१७७	तन्तुवाय १.	३१५९७	तमत १.	४१३६३	" ३.	६१३१३
" २.	७१२९	" १.	३१६१९०	तण्डुलीयक १.	३१३१५०	" १.	३१९१८	तमरक ३.	३१२३२	तरस ३.	४१४१०६
क्षष १.	४११४१	" १.	४१११३	तत ३.	३१९११५	" १.	४११३४	तमस् ३.	२११६२	तरि १.	११२२८
" १.	४११५१	डिम्ब १. २. ३.	५१४२४	तति २.	८१९१५	तन्त्र ३.	३१७१४	" ३.	३१६१६२	" २.	४१२१५
" १. २.	६१५३४	" १. २. ३.	६१४७	तत्क्रिय १. २. ३.	५१४७३	" १.	४११५२	" ३.	३१६१६२	" २.	४१३६३
क्षषा २.	३१८६१	डुण्डुभ १.	३१९१९	तत्त्व १.	३१९१२३	" १.	४११५२	" १. २.	६१५३५	तरीष १.	३१६१६७
क्षषापर १.	३१५१४	डुण्डुर १.	४१३३२	तत्त्वधी २.	३१६१६५	" ३.	४११५२	तमस्विनी २.	२११५७	तरु १.	३१३१५
क्षट १.	३१३१८९	डोम्ब १.	२१५४९	तत्र ४.	३१६२१	तन्त्रक १. २. ३.	६१३११	तमाल १. ३.	३१३८७	तरुण १.	३१३६५
क्षण्ड १.	१११४६	ड		तत्रभवत् १. २. ३.	८१९४६	तन्त्रशाला २.	४१३२२	तमालपत्र ३.	४१३१४८	" १. २. ३.	५१४३
क्षिक्किल १.	३१९१२४	डक्का २.	२१९१३४	तथा ४.	८१७२१	तन्त्री २.	३१९३०	तमिन्ना २.	२११५७	तर्क १. ३.	३१६१७६
क्षिणिका २.	४१४१२७	डक्कारी २.	३१९१२८	" ४.	८१८२०			तमी २.	२११५७	" १.	६१२२५
क्षिण्टी २.	३१३१९०	डङ्क ३.	२१३६९								
क्षिण्टीकान्त १.	१११४४	डण्डुक १. २. ३.	५१४२३								
क्षिलिका २.	२१३१८										

[तर्कविद्या]

तर्कविद्या २.	३१६३२
तर्कारी २.	३१६९६
(तक्कारी)	
तर्कु १.	३१९९
तर्जनी २.	४४७३
तर्ह २.	४३१६३
तर्णक १.	३४५१
तर्पण १.	४२३३
" ३.	४३६९
" ३.	७३१६
तर्मन् ३.	३१६५२
तर्ष १.	८१२०
तर्पित १. २. ३.	५४३७
तर्पु १.	२११३
तर्हि ४.	८७२०
" ४	८८५
तल १.	३३३१६
" १. २. ३.	३७१५५
" १.	३९१२२
" ३.	४११
" १.	४४७३
" १.	४४७७
" ३.	५११५०
" ३.	५१६३
" १.	५३६
" १. ३.	६५३५
तलपोट १.	३३१०६
तलप्रोह १.	३७७८
तलयन्त्र ३.	३७५१
तलसारक ३.	३७११४
तला २.	३७१५५
तलिका २.	३७११४
तलिन १. २. ३.	५४१२५
" १. २. ३.	७४१२
तलनी २.	४३३३
तलिम ३.	७३१६
तलुनी २.	४४८
तलेक्षण १.	३४५
तष ३.	६३१२
तषपगृह ३.	४३२०

वैजयन्तीकोषः

तल्लज १.	८१९४२
तविष १.	७५४२
तष्ट १. २. ३.	६११११
तस्कर १.	३९१५६
" १.	८६७
तस्थिवस् १. २. ३.	५४६२
ताटिक १.	३३१५२
ताडङ्क १.	४३१३४
ताडन ३.	५१३६
ताडी २.	३३२२४
ताण्डव १. ३.	३९७३
तात १.	४४२९
तातगु १. २. ३.	७५४३
तातल १. २. ३.	७५४४
तान १. ३.	३९१११
तानित ३.	७३१६
तान्त १.	२११८०
तापस १. २.	३३१२४
" १. २. ३.	३३१२६
तापिन्ध्र १.	३३१८७
तापी २.	४२२७
तामरस ३.	४२३९
तामसी २.	२११६०
" २.	३३१९७
तामिस्र ३.	२११६२
ताम्बूल ३.	४३१०६
ताम्बूलकरङ्गिका २.	
ताम्बूलवह्निका २.	८१५२८
ताम्बूली २.	८१५२८
ताम्र ३.	३२२४
" १. २. ३.	६५३७
ताम्रकर्ष १.	५१५२
ताम्रकुट्टक १.	३९१५
ताम्रचूड १.	२३१३
ताम्रजीव १.	३५३९
ताम्रधारण ३.	५१५९
ताम्रपर्णी २.	२११९
" २.	४२२९
ताम्रपाकिन् १.	३३१५९

[तालपत्रिका]

ताम्रमूला २.	३३१२५
ताम्रवृन्त १.	३८४७
ताम्रसार ३.	३८११३
ताम्रा २.	३३१७९
ताम्राक्ष १.	२३२६
तार १. २. ३.	२४१३
" १.	३३२३३
" १.	५३२३
" १. २. ३.	६५३६
तारक ३.	३३२३३
" १. २. ३.	४४९४
" १. २. ३.	७५४४
तारकारि १.	११५४
तारजीवन ३.	३२१९
तारण १.	२११८०
तारणी २.	३८१३
तारा २.	२१३८
तारावट १.	३३१९४
तारावर्मन् ३.	२११२
तारुण्य ३.	४४५३
तार्य १.	१३१९
" १.	११३७
" १.	३७९१
" ३.	३८१२५
तार्यशैल ३.	३२१४१
तार्यासन ३.	३३२२८
तार्ण १.	१२२१
" ३.	३१२०
तार्णसौम ३.	३१२०
ताल १.	३२१४
" ३.	३३२१६
" १.	३७१८५
" १.	३९१२३
" १.	४४७७
" १.	४४८०
तालक १.	४१२७
" ३.	४३४९
" ३.	४३१३४
" १.	५३८
तालपत्र ३.	४३१३४
तालपत्रिका २.	३९१२४

तालपर्णी]

तालपर्णी ३.	३८१०८
तालमूली २.	३३२०३
तालवृन्त ३.	४३१५९
तालाङ्क १.	११२३
" १ व.	१३१३
ताली २.	३३२०३
" २.	३३२२४
" २.	३९१२४
" २.	४३१४९
तालु २.	३३१७१
" ३.	४४८९
तालुजिह्वा १.	४१५३
तावन ४.	८७२८
तावतिथ १. २. ३.	५१२०
तावकृति २.	५१३६
तावकृत्वः(-स) ४.	५१३६
ताविष १. २.	७५४२
तिक्त १.	३३१५३
" १.	३३१२८
" १.	३३१६६
" १.	५३२६
" १.	५३४७
तिक्तक १.	५३५५
तिक्तकाषाय १.	५३३१
तिक्तच्छदन १.	३३१६३
तिक्तपटुस्वादुकषाय १.	५३४०
तिक्तपटोलिका २.	
" ३३१६१	
तिक्तवल्का २.	३३११४
तिक्तशाक १.	३३१४१
तिक्तसार १.	३३१६३
तिक्तिक १.	५३३०
तिग्म १.	५३३७
" १.	६५३७
तितउ १. ३.	४३६५
तितिच्चा २.	३३१८४
तितिङ्गु १. २. ३.	५४३३
तितिरि १.	२३३५
" १.	३१५१

शब्दानुक्रमणिका

तिक्तीक १.	३३१७७
तिथि १. २.	२१६९
तिन्तुडीक १.	३३८१
तिन्तुणी २.	३३८१
तिन्तुणीक ३.	३८१३२
तिन्त्रिडीक ३.	८३३६
तिन्दुक १.	३३१५१
तिमि १.	४१४१
तिमित १. २. ३.	५४१०७
तिमिर ३.	२१६४
तिमिङ्गिल १.	४१५१
तिमिला २.	३९१३५
तिमिषा १.	३३१४६
तिमिशत्रु १.	४१५१
तिरश्चीन १. २. ३.	५४९१
तिरस् ४.	८७२१
तिरस्करिणी २.	४३१२४
तिरस्कार १.	३३१७७
तिरित १. २. ३.	३८१११
तिरीट १.	३३१५२
तिरीटिका २.	३३१८७
तिरोधान ३.	२११६४
तिर्यग्गामिन् १.	२१३३
तिर्यच् ४.	५४९१
तिल १.	३८३९
तिलक १.	३३३६१
" १.	३३३६९
" ३.	३८१२५
" १. ३.	४३१४८
" १.	४४९७
" ३.	४४११२
" १. ३.	८१३०
तिलककण्टक १.	२३१८
तिलकालक १.	४४९७
तिलखल १ व.	३१३९
तिलपर्णी २.	३८११५
तिलपिञ्ज १.	३८३९
तिलपुष्प ३.	३८४०
तिलपेज १.	३८३९

[तुङ्गता

तिलाट १.	३८१४८
(किलाट)	
तिलिस्स १.	४१११४
तिलिस्सक १.	३४४४
तिल्य १. २. ३.	३८२०
तिष्य १.	३३१७५
" १.	६१२५
तिष्या २.	३३१७७
तीक्ष्ण ३.	३२३४
" १.	३३११९
" १.	३३१२१
" १. २. ३.	३७२८
" १.	५३१९
" १.	५३२६
" १. २. ३.	६५३७
तीक्ष्णगन्ध १.	३३१५६
" १.	३३११९
तीक्ष्णच १.	५३२९
तीक्ष्णतण्डुला २.	३८७७
तीक्ष्णधूमा २.	३३९१
तीक्ष्णरस १.	३८१२७
तीक्ष्णा २.	३३१९७
तीक्ष्णाग्र ३.	३८६५
तीक्ष्णार्जक १.	३८१२१
तीर ३.	४२३२
तीरतरङ्गिका २.	३९१९१
तीरभुक्ति २.	३१३०
तीरित १. २. ३.	२४१९
तीरी २.	३७१८३
तीर्थ १. ३.	४२२०
" ३.	४४७५
" ३.	३३१३
तीर्थवाह १.	४४९८
तीवर १.	३५१२
तीव्र १. २. ३.	५४३३
तीव्रकोपा २.	४४१०
तु ४.	८७४
" ४.	८७११
तुक १.	३५७५
तुङ्ग १. २. ३.	५४८१
तुङ्गता २.	५२२४

[तुङ्गभद्रा]

तुङ्गभद्रा २.	४२१२८
तुच्छ १. २. ३.	५४१८७
" १. २. ३.	६५१३६
तुटि २.	२११५२
" २	६२११६
तुण्ड ३.	४४१८६
तुण्डि १. २. ३.	५४१६
तुण्डिकेरी २.	३३१९९
" २.	३३१९४७
तुण्डिन् १.	२३१४
तुण्डिभ १. २. ३.	४४१९४६
तुण्डिल १. २. ३.	४४१९४६
तुथ ३.	३२१४३
तुत्वा २.	३३१११०
" २.	३३१८७
तुत्थाञ्जन ३.	३२१४२
तुन्द ३.	४४१६७
तुन्दपरिमृज १. २. ३.	५४१५५
तुन्दिक १. २. ३.	५४१७
तुन्दिन् १. २. ३.	५४१७
तुन्दिल १. २. ३.	५४१७
तुन्न १. २. ३.	५४११५५
तुन्नवाय १.	३९१११
तुमुल १. २. ३.	२४११२
" १. २. ३.	३४७२१७
तुमुलान्तक १.	३३११७६
तुम्बा २.	३४७१३५
तुम्बिका २.	४३११३२
तुम्बी २.	३३११६७
तुम्बुक १. २. ३.	२४११६
तुम्बुका २.	३३११६८
तुरग १.	३४७१९०
तुरङ्ग १.	३४७१९०
तुरङ्गम १.	३४७१९०
तुरायण ३.	३३११४४
तुराषाह् १.	११२७
तुरीय १. २. ३.	५४१२१
तुरुष्क १ ब.	३११२७

वैजयन्तीकोषः

तुरुष्क १.	३१८१११
तुर्य १. २. ३.	५४१२१
तुर्यकालभुज् १.	३३११२५
तुलसी २.	३३१११९
तुला २.	५४१६०
" २.	६२११७
" २.	८३११४
तुलाकोटि १.	४३११४५
तुलापुरुष १.	३३११४३
" १.	३३११४३
तुलिका २.	३९१६
तुल्य १. २. ३.	५४१२१
तुल्यविक्रम १.	३३११
तुवर १.	३३११५२
" १.	५३१२७
" १.	५३१४२
तुवरी २.	३२११७
" २.	३३१४८
तुष १.	३३११७६
" १.	४३१६६
तुपानल १.	१२१२०
तुषाम्बु ३.	४३१८३
तुषार १.	२२१९
" १.	५३१७
तुषित १ ब.	१३१८
तुष्ट १.	३३१८५
तुष्टि २.	३३११६६
तुहिन ३.	२२१९
तूण १.	३४७१७८
" २. (आण)	३४७११०
तूणी २.	३४७१७८
तूणीर १.	३४७१७८
तूपर ३.	३३११०५
" १. २. ३.	७४११२
तूबर १.	३३१७३
तूर १.	३९११३७
तूर्ण १. २. ३.	५४१२४
तूर्य १. २.	३९११३६
तूल १. २.	३९१९
तूलपुष्प १.	३३११९३
(स्थूलपुष्प)	

(६६)

[तृप्त]

तृप्तफला २.	३३१९१
तृप्तिका २.	३३१२३५
" २.	३९११३
तृप्तिनी २.	३३१९१
तृप्ती २.	६२११७
तृष्णीकाम् ४.	८८११५
तृष्णीम् ४.	८८११५
तृड्घ्नी २.	३३१११२
तृण ३.	३३११८४
" ३.	३३१२२५
" २.	३३१२३३
" २.	३३१२३५
तृणकोल १.	३३८५९
तृणजलयुका २.	४११५९
तृणता २.	७२११०
तृणद्रुम १.	३३१२२४
तृणधान्यक ३.	३३८५८
तृणध्वज १.	३३१२१४
तृणपञ्चिका २.	३३८६४
तृणराज १.	३३१२१६
" १.	३३१२२०
तृणशय्य १. २. ३.	३३१२३१
तृणशून्यक ३.	३३११८३
तृणशोणक १.	५३१५०
तृणसंवर १.	३३११२
तृणसञ्चय १.	३३८६५
तृणसिंह १.	३९१५२
तृणस्तम्ब १.	३३१२३५
तृणाटवी २.	३३१२
तृणेन्धन ३.	३३१९६
तृण्या २.	५३११४
तृतीय १. २. ३.	५३१२१
तृतीयाकृत १. २. ३.	३३८२२
तृतीयाप्रकृति १.	४३१३
तृपत् १.	२३१२७
तृपि १.	२३१२७
तृप्त १. २. ३.	४३११०५
" १. २. ३.	५३१९९

[तृप्ति]

तृप्ति २.	३३११८८
" २.	४३११०५
तृप्तक १.	३३१९९
तृप् २.	८२११९
तृप्ति २.	३३११७९
तृप्ति १. २. ३.	५३१३७
तृप्तिज् १. २. ३.	५३१३५
तृप्ति १.	८२११९
ते १. २. ३.	८५३९
तेजन १.	३३१२१५
" २. ३.	३४७१९१
तेजनक १.	३३१२२८
तेजनी २.	३३१११४
तेजस् ३.	१२११९
" ३.	६३११४
तेजस्विन् १.	४३११०
तेजित १. २. ३.	३४७१९७
तेम १.	५२१२९
तेमन ३.	४३१८५
" ३.	७३११७
तेर १.	३३१४२
" ३.	४३१८६
तैतुल १ ब.	३३१२६
तैल ३.	३३११३७
तैलपर्णिक ३.	२३१११४
तैलपर्णी २.	८२११६
तैलपायिका २.	२३१४४
तैलित १.	५३१३२
तैलिन् १.	३९१२७
तैलिशाला २.	४३१२४
तैलीन १. २. ३.	३३८२०
तैष १.	२३१८२
तोक ३.	४३१४१
तोकम १.	६५३६
तोहार १ ब.	३३१२५
तोटक १.	३३८४१
तोडभी २.	३९११२६
तोड ३.	३३१५
तोत्त्र ३.	३४७८२
" ३.	३३८२९
तोदन ३.	७३११७

शब्दानुक्रमणिका

तोमर १. ३.	३४७१६६
तोय ३.	४२११
तोयपर्णिका २.	३३८५३
तोयपिप्पली २.	३३११९७
तोयप्रवाह १.	३२११७
तोयप्रसादन १.	३३१४२
तोरण १. ३.	४३१४२
तोरणस्तम्भ १.	३३१५८
तोषणी २.	३३१२१२
तौर्यत्रिक ३.	३९१७१
त्यक्त १. २. ३.	५३११०१
त्यक्तभर्तृका २.	३३१४५
त्यक्तसंवास १. २. ३.	३३११३
त्यक्तात्मन् १. २. ३.	३३११३
त्याग १.	३३१११८
" १.	५२१४०
त्रपा २.	३३११९७
त्रपु ३.	३२१३०
" ३.	३२१३१
" ३.	६३११३
त्रपुष १. २. ३.	३३११७१
त्रय ३.	५३११६
त्रयी २.	३३१२६
त्रयीतनु १.	२३११३
त्रयीपुष १.	३३११
त्रयोदशी २.	३९१११८
त्रस १. २. ३.	५३१६१
त्रसर १.	३९१९
" १.	४३१३२
त्रसरेणु २.	२३१२३
" १. २.	५३१४२
त्रस्त ३.	३३११६८
" १. २. ३.	५३११८
त्रस्तु १. २. ३.	५३११८
त्राण १. २. ३.	५३११००
त्रात १. २. ३.	५३११००
त्रापुष ३.	३२१२३
त्रायन्ती २.	३३११०९
त्रायमाणा २.	३३११०९

[त्रिधात्मन्]

त्रास १.	६३१२५
त्रिंशत् २.	५३१२६
त्रिः(स्) ४.	८८१३
त्रिक ३.	४३१६६
" १. २.	८९१२७
त्रिकुट्ट १.	११११०
" १.	३२१२
त्रिकुट्ट ३.	३३८८०
त्रिकण्टक १.	३३१९८
" १	३३११४१
" १.	३३११६५
" १.	४२१४७
त्रिकल १.	३२१३
त्रिकालदर्शिन् १.	३३११५०
त्रिकालदृश् १.	१११३५
त्रिकुट ३.	३३८११९
त्रिकूट १.	३२१२
" ३.	३३१११०
" ३.	३३८११९
त्रिकेतु १.	२३१२५
त्रिकोणक १.	४३१३६
त्रिखट्व १. २.	८९१३६
त्रिखर १.	५३१३४
त्रिगन्ध ३.	४३११५०
त्रिगर्त १ ब.	३३१२६
त्रिगुणाकृत १. २. ३.	३३८२२
त्रिचतुर १. २. ३.	५३१२५
त्रिजातक ३.	४३११५०
" १. २. ३.	८९१३९
त्रितत्त्व २. ३.	८९१३६
त्रितय ३.	५३११६
त्रिदश १.	११११४
त्रिदिव १.	१११२
" १.	७३१२९
त्रिदिवा २.	३३८८७
त्रिधा ४.	८८१२०
त्रिधात्मन् १.	१२११५
" १.	७३१२९

(६७)

[त्रिपक्षी]

त्रिपक्षी २.	३१६६६
त्रिपक्षी २.	३१७८३
त्रिपक्षी १.	३१३२९
" ३.	८१३९
त्रिपात्र ३.	८११८
त्रिपाद १.	३११५२
त्रिपुट १.	३१८४४
त्रिपुटा २.	३१३१३७
" २.	३१८८७
त्रिपुटी २.	३१३१३७
त्रिपुर १.	३१३१७७
त्रिपुरारि १.	१११४३
त्रिफला २.	३१८८२
त्रिमार्गा २.	४१२२४
त्रिमार्गा २.	४१२२५
त्रियामा २.	२११५६
त्रियुग ३.	२११९२
" ३.	८११८
त्रियूह १.	३१७१००
त्रिरसा २.	४१३८९
त्रिरख १.	४११५६
त्रिलोकी १.	८११८
त्रिलोचन १.	१११४२
त्रिवर्ग १.	३१६२३५
" १.	७११२८
त्रिवलीक ३.	४१४६०
त्रिविक्रम १.	११११९
त्रिविक्रमासन १.	३१६२२८
त्रिविष्टप ३.	१११११
त्रिवीथिका २.	२११४५
त्रिवृत २.	३१३१३७
" १. २. ३.	३१११०
त्रिवृत १. २. ३.	३१११०
त्रिशङ्कु १.	७११२९
त्रिशिरस् १.	११२४४
" १.	११२५६
त्रिपृष्ठ १. २. ३.	३१८२३
त्रिपुट १.	३१८४१
त्रिपुटभा २.	३१८४२
त्रिसन्ध्य ३.	२११६७

वैजयन्तीकोषः

त्रिसर १. २. ३.	८११२५
त्रिसरा २.	४१३७९
त्रिसारा २.	३१३९२
त्रिसीत्य १. २. ३.	३१८२२
त्रिसुगन्ध ३.	४१३१५०
त्रिस्नेह ३.	४१३९९
त्रिस्रोतस २.	४१३२४
त्रिहल्य १. २. ३.	३१८२२
त्रुटि २.	२११५२
" २.	३१८८७
" २.	६१२१७
त्रेता २.	२११९१
" २.	३११६२
" २.	६१२१७
त्रेधा ४.	८१८२०
त्रेधस् ४.	८१८२०
त्रैपुर १ ब.	३११३६
त्रैवृत ३.	४१३९९
त्रैपुट ३.	८११६६
त्रैहोत्र ३.	३१६९१
त्रोटि २.	२१३५०
त्र्यश्रा २.	३१३१३७
त्र्यूषण ३.	३१८८०
त्वक्क्षीरा २.	३१८९०
त्वक्त्र ३.	३१७१५२
त्वक्पत्र ३.	३१८१०४
त्वक्सार १.	३१३२२५
त्वग्गन्ध १.	३१३३६
त्वग्ज ३.	४१३११७
त्वग्बल १.	३१७१८३
त्वच् २.	३१३१३
" २.	४१४१०३
" २.	८१२२०
" २.	८१६१२
त्वच १. २.	३१३१३
" ३.	३१८१०४
त्वचिसार १.	३१३२१५
त्वरा १.	३११८९
त्वरित १. २. ३.	५१४१२४

[दक्षिणाशारत]

त्वरी २.	३११८९
त्वष्ट १. २. ३.	५१४१११
त्वष्टृ १.	११३१७
" १.	३१९३४
" १.	६११२५
त्वाष्ट्र १.	३१६१०८
त्वाष्ट्रक १.	३१८४२
त्वाष्ट्री २.	२११२३
त्विष्ट २.	४१३१५०
" २.	८१२१८
त्विष्टाम्पति १.	२१११२
त्सर १.	३१७१६८
द	
दंश १.	२१३४५
" १.	४१४१०
दंशन ३.	३१७१५२
दंशबन्धन ३.	४१४१३९
दंशालालिक १.	३१४१०
दंशित १. २. ३.	३१७१४२
दंशी २.	२१३४५
दंष्ट्रा २.	४१४८९
दंष्ट्रिन् १.	६१५४०
दक ३.	४१२१२
दक्ष १.	२१३१३
" १. २. ३.	५१४१९
" १. २. ३.	५१४५४
" १. २. ३.	५१४१३७
दक्षकन्या २.	८१२१७
दक्षवाच् १. २. ३.	
दक्षा २.	३११११
दक्षाध्वराराति १.	१११४१
दक्षिण १. २. ३.	५१४२०
" १. २. ३.	७१४५५
दक्षिणस्थ १.	३१७१३८
दक्षिणाधिप १.	११२३५
दक्षिणानल १.	११२३३
दक्षिणापथ १.	३११३२
दक्षिणायन ३.	२११८९
दक्षिणाशारत १.	३१६१५२

[दक्षिणमन्]

दक्षिणमन् १.	३११४०
दक्षिणस्थ १.	११७१३८
दग्धान्न ३.	४१३१७६
दण्ड १.	३१६१८
" १.	३१७४६
" १.	६१५१८
दण्डक ३.	२१४४२
" १ ब.	३११३३
दण्डधर १.	११२३३
दण्डनीति २.	३१६३०
दण्डपद्मासन १.	३१६२२८
दण्डपाल १.	३१७२१
दण्डपाशिक १.	३१७२०
दण्डवत् १. २. ३.	
दण्डाजिन ३.	३१६१९५
दण्डासन ३.	३१६२२६
" १.	३१७१८१
दण्डाहत ३.	३१८१४८
दण्डिक १.	३१७१८१
" १. २. ३.	
दण्डिका २.	३१९१२९
दण्डिन् १.	२१३२५
" १. २. ३.	
" १.	५१४११८
" १.	६११२६
दण्डोत्पल १.	३१३१०६
दक्षत्रेय १.	१११३१
दद २.	४१४१२५
ददुष्ट १.	३१३१५८
ददुज ३.	३१८१३५
ददुण १. २. ३.	४१४१४५
ददुनाशिनी २.	३१३१०३
ददुमत १.	४१४१४५
दधि ३.	३१८१०९
" ३.	३१८१३९
दधिक्षीर ३.	३१६१९९
दधित्थ १.	३१३३२
दधिकल १.	३१३३२
दधिबुस ३.	३१८१४२

शब्दानुक्रमिका

दधिमण्डक ३.	३१८१४४
दधिमुख १.	३१४४०
दधिसक्तु १.	४१३१७१
दध्यमल १.	४१३१७७
दध्याज्य ३.	३१६१९९
दध्याली २.	३१३१४३
दन्त १.	४१४८८
" १.	६११२६
दन्तच्छद १.	४१४८७
" १.	८११३३
दन्तधावन १.	३१३३३
दन्तबीज १.	४१२४७
दन्तभाग १.	३१७८१
दन्तवस्त्र ३.	४१४८८
दन्तवेष्ट १.	३१७११०
दन्तशठ १.	३१३३३
" १.	३१३३५
" १.	३१३३७
" १. २. ३.	८१५१९
दन्तशठा २.	३१३१६३
दन्ताली २.	३१७११२
दन्तावल १.	३१७६१
दन्तिका २.	४१३५३
दन्तिन् १.	३१७६०
दन्तुर १. २. ३.	५१४१९
दन्तोलखलक १. २. ३.	
दन्त्य १. २. ३.	५१४११७
दन्दशूक १.	४११४
" १.	४११४०
दध्र १. २. ३.	५१४१३६
दम १.	३१७४६
" १.	५१२२७
दमण्डक १.	३१५१९
दमथ १.	५१२२७
दमनक ३.	३१३१२३
दमयन्तिका २.	३१६१८
दमित १. २. ३.	
दमुनस् १.	११२१८
दम्पति १ द्वि.	४१४४८

[दलकूर्चिका]

दम्भ १.	३१६१९५
दम्भोलि १.	११२१३
दम्य १.	३१४५४
दया २.	३१६१९२
दयालु १. २. ३.	५१४३९
दयित १. २. ३.	५१४७०
दर १. ३.	६१५३९
" १. २. ३.	८११३७
दरण १.	२१३२५
दरथ १.	७१३३१
दरद २.	६१२१८
दरिगि १. २.	३१८२४
दरित १. २. ३.	५१४१८
दरिद्र १. २. ३.	५१४५९
दरी २.	३१२१६
" २.	८११३४
दरदर १.	३१७७४
" १.	३१९१२४
दरुरीक १.	८११२४
दर्पक १.	१११२७
दर्पण १.	४१३१६२
दर्भ १.	३१३२२७
" १.	३१३२२७
" १.	३१३२२९
दर्व १.	११३३३
दर्वि १.	२१३१०
" २.	४१३१६३
दर्वितुण्ड १.	२१३१०
दर्विदा २.	२१३१०
दर्वी २.	३१६१०१
दर्वीकर १.	४११७
" १.	४११८
" १.	४१११०
" १.	४११११
दर्श १.	२११७०
दर्शक १.	३१७२४
दर्शन ३.	३१७१७
दर्शनी २.	४१३१६
दल ३.	३१३१६
" १.	६१५३९
दलकूर्चिका २.	३१३१०८

[दलत्]

दलत् १.	४११४६
दली २.	८१९१७
दव १.	११२२१
” १.	६११२७
दवधु १.	४११२२
दश १ २. ३. ४.	४३११३१
दशन १.	४११८८
दशनोच्छिष्ट १.	८११५२
दशपुर ३.	३३१२०१
दशबल १.	१११३३
दशवाहु १.	१११४७
दशम १. २. ३.	५११२०
दशमिन् १. २. ३.	५११४४
दशमीस्थ १. २. ३.	८११७
दशरथात्मज १.	१११२२
दशा १ ब.	४३११६१
” २.	४११५३
” २.	५१२१२
दशाङ्गुल १. २. ३.	३११५३
दशानाह १.	३११६१
दशार्ण १ ब.	३११३७
दशाव्यय १.	१११४७
दशारव १.	१२१४२
दशास्य १.	१२१४२
दशोरक १ ब.	३११३८
दस्यु १.	३१११२
” १.	३११२५
” १.	३११४०
” १.	३११५६
दस्युजाति २.	३११२०८
दक्ष १ द्वि.	१३१३६
दहन १.	१२११५
” १.	५३१८
दहर १. २. ३.	५११३६
दह १. २. ३.	५११३६
दा २.	३११५२
दाक्षायण ३.	३२११९
दाक्षायणी २.	८२१३६
दाक्षाय्य १.	३३१३०

वैजयन्तीकोषः

दाक्षिणात्य १.	३३३२२०
दाक्षी २.	३३३४३
दाक्षीपुत्र १.	३३३५४
दाक्षिण १. २. ३.	३३३७२
” १. २. ३.	८१३८
दाण्डपाता २.	२१३७५
” २.	८१३६
दाण्डाजिनिक १. २. ३.	५१३२३
दात १. २. ३.	५१३०२
दात्यूह १.	२३३१२
” १.	२३३३६
दात्र ३.	३१८३०
दाधिक १. २. ३.	४३३९५
दान ३.	३३३६३
” ३.	३३३९१८
” ३.	६३३१५
दानव १.	१३३९
दानवाञ्जन ३.	३३३१२२
दान्त ३.	३३३१२३
” १. २. ३.	५१३१४
दान्ति २.	५२३२७
दामन् २. ३.	३१३२९
” २. ३.	८१३३२
दामनी २.	३१३२९
दामा २.	३१३२९
दामाञ्जन ३.	३१३१२
दामोदर १.	११३२५
दाय १.	६१३२६
दायाद १.	७१३३०
दार ३.	४२३३९
” १ ब.	४१३३५
दारक १. २. ३.	५१३२
दारद १ ब.	३१३२७
” १.	३२३४४
दारपत्र १.	४३३७१
दारसङ्ग्रह १.	३३३५४
दारित १. २. ३.	५१३११
दारिपत् १.	३१३२६
दारु ३.	३३३१३

[दिग्वासस्]

दारु ३.	३३३७१
दारुक १.	११३२६
दारुकण्टक ३.	२२३२७
दारुण १. २. ३.	३१३७९
” ३.	५३३५
दारुतक्षणी २.	३१३३६
दारुफला २.	३३३१८१
दारुहरिद्रा २.	३३३२१२
दारुहस्तक १.	४३३१६३
दारुदर ३.	३१३१६
दारुण्ड १.	२३३३८
दारुघाट १.	२३३३३
दारुिका २.	३२३४३
” २.	३३३११६
दारुी २.	३३३२१२
दाल ३.	३१३३५
दालिम १.	१२३६
दाव १.	६१३२७
दाश १.	३१३३२
दाशरथि १.	११३२०
दाशार्ह १.	११३२५
दाशोरक १.	३१३६७
दास १.	३१३२
दासमोचित १.	३१३४
दाससूनु १.	३१३३
दासी २.	३३३१११
” २.	३३३१९०
” २.	४१३२६
दासीसभ ३.	८१३२०
दासेय १.	४१३४३
दासेर १.	४१३४३
दिकरी २.	४१३८
दिगन्त १.	२१३६
दिग्म्बर १. २. ३.	५१३१५
दिग्गज १.	२१३८
दिग्ध १.	६१३४१
दिग्भव १. २. ३.	४१३१६
दिग्युग्म ३.	२१३७
दिग्वासस् १.	११३४६

[दिङ्मण्डल]

दिङ्मण्डल ३.	२१३६
दिङ्मण्ड ३.	२१३७
दिङ्मार्ग १.	४३३१७
दिधिषु १. २.	७१३४७
दिधिषूपति १.	६१३४३
दिन ३.	२१३५६
दिनत्रयिन् १.	३३३४१
दिनप्रणी १.	२१३१०
दिनम्मन्या २.	२१३५८
दिनादि १.	२१३६४
दिव् २.	११३१
” २.	८२३१७
दिवस १. ३.	२१३५५
दिवस्पति १.	१२३१
दिवा ४.	८१३७
दिवाकर १.	२१३१०
दिवाकीर्ति १.	८१३२४
दिवाचर १.	२१३१०
दिवाटन १.	३३३१५
दिवाभीत १.	८१३२४
दिविषद् १.	११३३
दिवौकस् १.	११३३
” १.	७१३३०
दिव्य ३.	२१३१
” ३.	३३३२०४
” ३.	३१३१२
” ३.	३१३११०
” ३.	८३३१८
दिव्यकालिनी २.	४१३१७
दिव्यलक १.	४१३१५
दिव्योल्क १.	४१३१७
दिश २.	२१३२
” २.	४३३१५
दिशा २.	२१३२
दिशान १.	३३३२२
दिश्य १. २. ३.	५१३१६
दिष्ट १.	२१३५२
” ३.	२१३२५
” ३.	३३३१८९
” ३.	४३३१५
दिष्टान्त १.	३३३२०१

शब्दानुक्रमिका

दिष्टि २.	३१३५३
” २.	३२३१९
दिष्ट्या ४.	८१३२१
” ४.	८१३१७
दिहण्ड १ ब.	३१३२४
दीक्षणीयेष्टि २.	३३३८७
दीक्षा १.	३३३८७
दीदिवि १.	२१३३४
” १. २.	४३३७६
दीधिति २.	२१३२२
दीन १.	३३३७०
” १.	३३३२२३
” १. २. ३.	५१३६०
दीनवादिन् १. २. ३.	५१३४७
दीनार १.	५१३४१
दीप १.	४३३१६१
दीपक १.	३१३४१
” १. २. ३.	७१३४७
दीपन १.	३३३६०
दीपवल्ली २.	४३३१६०
दीपवृक्ष १.	४३३१६१
” १.	८३३२०
दीपिका २.	४३३१६०
दीस १. २. ३.	८१३१४
दीसा २.	२२३४
दीसि २.	२१३२२
दीप्य १.	३१३८३
दीप्यका २.	३१३१०२
दीर्घ १. २. ३.	५१३८१
दीर्घकोशिका २.	४१३५८
दीर्घदण्ड १.	३१३५९
(दीर्घदण्ड)	
दीर्घदक्षिन् १.	३३३२३५
दीर्घदृष्टि १. २. ३.	५१३५३
दीर्घनादिन् १.	३३३६९
(रतिकील)	
दीर्घनिद्रा २.	३३३२०१
दीर्घनिर्वश १.	३३३१६३
दीर्घपत्र ३.	३३३२०६

[दुर्ग]

दीर्घपत्री २.	३३३१९६
दीर्घपर्णी २.	३३३१७४
दीर्घपाद १.	२३३३१
दीर्घपृष्ठ १.	४१३६
दीर्घफला २.	३३३१६०
दीर्घरोमक ३.	३३३२०२
दीर्घरोमन् १.	३३३४७
दीर्घवल्ली २.	३३३१३३
दीर्घवाच् १.	२३३१३
दीर्घवृन्त १.	३३३६८
” १.	३३३२१८
दीर्घशूक १.	३१३६१
दीर्घसूत्र १. २. ३.	५१३७९
दीर्घिका २.	४२३६
दीर्घाङ्ग १.	२१३२०
दीर्घी २.	२१३१२
दुःख १. २. ३.	१२३३९
” ३.	३३३१८७
” १. २. ३.	५१३४४
दुःखदोष्टा २.	३३३४९
दुःकूल ३.	४३३१२२
” ३.	७३३१८
दुग्ध ३.	३१३१४५
दुग्धतालीय ३.	८३३१४
दुग्धम १.	३३३२०५
दुध्र १.	१२३२१
दुन्दु १.	११३२६
दुन्दुभ ३.	३३३२००
दुन्दुभि १.	१२३४५
” १.	३३३१३३
” १. २.	७१३४८
दुर् ४.	८१३४
दुग्धव १.	३१३५०
दुराचार १. २. ३.	३३३१२
दुरालभा २.	३३३१२५
दुरासद १.	१२३१६
दुरित ३.	३३३१६८
दुरोदर १.	८१३१०
दुर्ग ३.	३३३१३

दुर्ग]	वैजयन्तीकोषः	[देवभिन्न	देवभूय]	शब्दानुक्रमणिका	[द्रविण
दुर्ग ३.	३१७४९	दुहितृ २.	३१२१८	देहलक्षण ३.	३१६१८०
" १. २. ३.	३१७४९	दूत १.	३१३१६३	देहलि १.	३१६१९५
दुर्गत १. २. ३.	३१७४९	" १.	३१७१४	देहली २.	३१६१५६
दुर्गति २.	३१३३७	दूती २.	३१३३२	देहवारि ३.	३१३१४
" २.	३१३३७	दून १. २. ३.	३१३१८	दैतेय १.	३१३१४
दुर्गन्ध ३.	३१३३७	दूर ३.	३१३१८	दैत्य १.	३१३१४
" १.	३१३३७	दूरदर्शिन १.	३१३३०	" १.	३१३१४
दुर्गम १.	३१३३७	" १.	३१३३०	" २.	३१३१४
दुर्गा २.	३१३३७	दूर्वा २.	३१३३२	दैत्यक्षय १.	३१३१४
दुर्जन १.	३१३३७	दूषक १.	३१३३२	दैत्यदेव १.	३१३१४
दुर्वर्त्ता २.	३१३३७	दूषणारि १.	३१३३२	दैत्यमदन १.	३१३१४
दुर्विन् ३.	३१३३७	दूषिका २.	३१३३२	दैत्या २.	३१३१४
दुर्नामन् २.	३१३३७	" २.	३१३३२	दैत्यारि १.	३१३१४
" ३.	३१३३७	दूष्य ३.	३१३३२	दैत्य ३.	३१३१४
दुर्वल १. २. ३.	३१३३७	" ३.	३१३३२	दैर्घ्य ३.	३१३१४
दुर्वल १. २. ३.	३१३३७	दूष्याङ्गी २.	३१३३२	दैव ३.	३१३१४
दुर्भग १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दैवज्ञ १.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दैवज्ञा २.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	" २.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दैवत ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दैवपर १. २. ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दैविक ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दैव ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	(नैष्ट)	
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोलक ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोला २.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	" २.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोलिका २.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोशिशखर १.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोष १.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोषग्रह १.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोषज्ञ १. २. ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	" १.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोषदर्शिन १. २. ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोषप्रणालिका २.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोषा ४.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोस् १. ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	" १. ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२	दोहल ३.	३१३१४
दुर्भनस् १. २. ३.	३१३३७	दृक्छन्द १.	३१३३२		

[द्रव्य]

द्रव्य ३.	६३११५
द्रव्यपद १.	५३११
द्राक् ४.	८८८१
द्राक्ता २.	३३३१८१
द्राक्ताफल १.	३३३२७
द्राग्भृत ३.	४२१४
द्रावण १.	३३३१४२
" १.	३३८१२४
द्राविडक १.	३३३१६७
द्राविल १.	३३३१५९
द्रु १.	३३३१४
द्रुक्लिम ३.	३३३१७१
द्रुघण १.	११११९
" १.	३३७१७१
" १.	७११३०
द्रुण ३.	३३७१७२
द्रुणा २.	३३७७८
द्रुणी २.	४११५१
द्रुत ३.	३३९१२३
" १. २. ३.	४३३९५
" १. २. ३.	५३३१२४
" १. २. ३.	६३३८
द्रुति २.	५३३१
द्रुम १.	३३३१४
" १.	३३३८५
द्रुमश १.	४३३१७७
द्रुमामय १.	४३३१५३
द्रुवय ३.	५३३१६४
द्रुह १.	३३५२६
द्रुहिण १.	११११७
" १.	७११३२
द्रुण १.	४११३२
द्रुकाण १.	२११५१
द्रुण १.	२३३१७
" १. ३.	५११५५
" १.	५११६३
" १. ३.	६११४०
द्रुणशीरा २.	३३३१५०
द्रुणदुग्धा २.	३३३१५०
द्रुणपुष्पिका २.	३३३१२४
द्रुणमुख ३.	४३३३

वैजयन्तीकोषः

द्रोणिका २.	३३३१२४
द्रोणी २.	४२११५
" २.	६२११८
द्रोह १.	३३५९
द्रौणिक १. २. ३.	३३८२१
द्रुन्ध ३.	५३११५
" ३.	६३३१६
द्रुय ३.	५३११५
द्रादश १. २. ३.	५३१२१
द्रादशात्मन् १.	२१११०
द्रादशाह १.	३३३१४४
द्राप १.	२११२२
" ३.	३३३१६२
" १.	७११३०
द्रार् २.	४३३१४२
" २.	८२११६
द्रार ३.	४३३१४२
द्रारका २.	४३३१६
द्रारपटल ३.	४३३१५०
द्रारपाल १.	३३७२४
द्रारबन्ध १.	४३३१४३
द्रारयन्त्र ३.	४३३१४९
द्रारवती २.	४३३१६
द्रारवतीपद ३.	३३११९
द्रास्थ १.	३३७२४
द्रिः-(स्) ४.	८८८६
द्रिक १.	२३३१५
" ३.	३३७१०
द्रिकालिक १. २. ३.	३३३१२८
द्रिखण्डक १.	४३३१२७
द्रिगुणाकृत १. २. ३.	३३८२३
द्रिज १.	३३३३
" १.	४३३७८
द्रिजकुत्सित १.	३३३१५
द्रिजन्मन् ३.	३३३१५७
(विजन्मन्)	
" १.	७११३१
द्रिजपोत १.	३३९११
द्रिजाति १.	७११३१

[द्वैगुणिक]

द्विजायनी २.	३३६२०
द्विजालय ३.	४३३८६
द्विजिह्व १. २. ३.	७५३४५
द्वितय ३.	५३११५
द्वितीय १. २. ३.	५३१२०
द्वितीया २.	२११३०
" २.	४३३३४
द्वितीयाकृत १. २. ३.	३३८२३
द्वित्र १. २. ३.	५३१२५
द्विधा ४.	८८८२०
द्विधागति १.	४३१४७
द्विगननक १. २. ३.	५३११५
द्विप १.	३३७६०
" १.	८६११५
द्विपद १.	११११९
द्विपाद १.	३३५११
द्विमुखी २.	४३१२०
द्विमुष्टिक १.	५३१५२
द्विरद १.	३३७६०
द्विरसन १.	४३११४
द्विरफ १.	२३३४२
द्विविदिनी २.	२३१७६
द्विष् १.	३३७४१
द्विषत् १.	३३७४०
द्विषन्तप १. २. ३.	५३३६९
द्विष्कृष्ट १. २. ३.	३३८२३
द्विस्वीय १. २. ३.	३३८२३
द्विहव्य १. २. ३.	३३८२३
द्विहायनी २.	३३३४५
द्वीप १. ३.	४२३३३
द्वीपवत् १. २.	८५२२९
द्वीपिन् १.	३३३३३
द्वेधा ४.	८८८२०
द्वेषण १.	३३७४१
द्वेषिन् १.	३३७४१
द्वेष्य १. २. ३.	५३३६९
द्वैगुणिक १. २. ३.	३३८८

[द्रव्य]

द्रव्य ३.	५३११५
द्रव्य ३.	३३७६
द्रुधम ४.	५३८२०
द्रुप १. २. ३.	३३७१२८
द्रुपायन १.	१११३२
द्रुमानुर १.	१११५४
द्रुवाचित ३.	५३१६२
द्रुवाटक १. ३.	५३१५५
द्रुवायोग ३.	२३१२२
ध	
धटिक १. ३.	५३१६०
धटिनी २.	३३३१८
धन ३.	३३८७३
धनञ्जय १.	८११२४
धनद १.	१२१५६
धनवत् १. २. ३.	५३१५७
धनाध्यक्ष १.	१२१५६
धनाया २.	३३३१८०
धनिन् १.	१२१५६
" १. २. ३.	५३१५७
धनिष्ठा २ ब.	२३१४१
धनीयिका २.	३३८७९
धनु (धनुःपट) १.	३३३५७
" १. २.	३३७१७२
" २.	६२१९
धनुर्ग्रह १.	३३१५३
धनुर्दण्ड १.	३३१५७
धनुर्धर १. २. ३.	३३७१४३
धनुर्वेद १.	३३३३०
धनुश्श्रेणी २.	३३३११४
धनुष्पाणि १.	१११२२
धनुष्मत् १. २. ३.	३३७१४३
धनुस् ३.	३३१५५
" ३.	३३१५७
" १. ३.	३३७१७२
" १.	८६११५
धनोत्पत्ति २.	३३७४४
धन्य १. २. ३.	५३३५६
धन्या २.	३३३१०४

शब्दानुक्रमणिका

धन्या २.	३३८४९
धन्याक ३.	३३८५०
धन्येय ३.	३३८५०
धन्वन् १.	३३२४२
" ३.	३३७१७२
धन्वन्तर ३.	३३१५७
धन्वन्तरसहस्र ३.	३३१६२
धन्वन्तरि १.	८११२५
धन्वयास १.	३३३१२६
धन्ववन १.	३३५३३
धन्विन् १. २. ३.	३३७१४३
धमन १.	३३३२२८
" १.	४३३९१
धमनी २.	३३८१०१
" २.	४३३११६
धम्मिल्ल १.	४३३१००
धयन ३.	४३३१०४
धर १.	३३९१९
धरण ३.	५३१४४
धरणी २.	३३१२
धरणीधर १.	११११३
धरा २.	३३१२
" २.	३३३१३१
धरासुत १.	२३१३१
धरित्री २.	३३१२
धरीक १.	४३१२८
धरुण १.	७११३२
" ३.	८३११८
धर्म १. ३.	३३३१६८
" १.	३३७१५८
" १.	५२११
" १. २. ३.	६३५४२
धर्मद्वी २.	४२२२५
धर्मपत्तन ३.	३३८७९
धर्मपाल १.	३३७१५८
धर्मभ्रातृ १.	३३६२४
धर्ममाणव १.	३३६२३
धर्मराज १.	१११३३
" १.	१२३३५
धर्षण ३. २.	७५३४८

[धारण]

धर्षणी २.	३३६४६
" २.	७५३४८
धव १.	३३३१७
" १.	४३३३७
" १.	६३३२७
धवल ३.	५३३१०
" १. २. ३.	७५३४९
धवला २.	३३३४३
धवित्र ३.	४३३१५९
धातकि २.	३३३१७
धातु १.	४३३१११
" १.	६३३२८
धातु १.	११११६
" १.	८६११
धातुपुष्पिका २	३३३१७
धात्री २.	३३१२
" २.	३३२१७७
" २.	६३३१९
धानका २.	५३३१०
धाना २.	३३८४९
" १ ब.	४३३७१
" २.	६३३१९
धानी २.	३३६६०
धानुष्क १. २. ३.	३३७१४३
धान्य ३.	३३८३१
" ३.	३३८५१
धान्यकोष्ठ १.	४३३६४
धान्यमञ्जरी २.	३३८६४
धान्यराशि १.	३३८६५
धान्यवृद्धि २.	३३८५
धान्या २.	३३८४९
धान्याल ३.	४३३८३
धान्योत्क्षेपण ३.	५२३६१
धामन ३.	४३३१७
" ३.	६३३१६
धामार्गव १.	३३३११५
" १.	३३३१६२
धारकदाह ३.	४३३४०
धारका २.	४३३६३
धारण ३.	५३३५९

[धारणा]

धारणा २.	३१६२३१
" २.	३१८१५
" २.	३१८१५
धारणी २.	३१८१७८
धारभार ३.	५११६१
धारा २.	३१७११८
" २.	३१७१८६
" २.	३१८१३०
" २.	३१८१२०
धाराग्र ३.	७३११८
धाराट १.	७११३३
धाराधर १.	२१२११
धारिका २.	२११५४
धारोष्ण ३.	३१८१४६
धार्तराष्ट्र १.	२३१७
धार्मिक १.	३१६२३
" १.	३१७२०
धावन २. ३.	७१५४९
धावनी २.	३१३१३६
धिक् ४.	८१७५
धिवृत्त १. २. ३.	५१७७१
" १. २. ३.	५१७११०
धिविक्रया २.	५१२२१
धिग्वन १.	३१५९७
धिग्वनक १.	३१५६
(धिग्वनक)	
धिषण १. २.	७१५५०
धिष्ण्य ३.	२११३८
" १. ३.	६१५४३
धी २.	३१६१६३
धीकर १.	३१९६
(अधीकर)	
धीकर्मिक १.	३१७२०
धीता २.	६१२२०
धीति २.	३१३१०४
धीमक ३.	३१२३३
धीमत् १.	३१६२३४
धीमती २.	३१७२१
धीर १. २. ३.	३१७१५०
" १. २. ३.	५१७२०

वैजयन्तीकोषः

धीर १. २. ३.	५१७२०
" १. २. ३.	६१५४४
धीरा २.	३१३१३१
धीवर ३.	३१२३३
" १.	३१५२६
" १.	३१५८२
" १.	३१९४२
धुत्तिम ३.	३१८१४५
धुत १. २. ३.	५१७९५
धुत्तर १.	३१३७६
धुनी २.	३१२२३
धुर् २.	३१७१३०
" २.	८१२१७
धुरण १.	५११४३
धुरन्धर १.	३१३९४
" १. २. ३.	३१४६७
धुरीण १. २. ३.	३१४६७
धुर्धर १.	३१३७७
धुर्य १. २. ३.	३१४६७
धुर्यावकर्तिक १. २. ३.	३१६१३३
धुर्वी २.	३१७१३०
धुस्तूर १.	३१३७६
(धुत्तर)	
धुङ्गणा २.	२१३१८
धूत १. २. ३.	५१७१०१
" १. २. ३.	६१७८
धूप १.	११२२८
धूपायित १. २. ३.	५१७९८
धूपित १. २. ३.	५१७९८
धूम १.	११२२८
" १.	८१६५
धूमक १. २. ३.	२१२१०
धूमकेतु १.	११२१६
" १.	८११२५
धूमज १ व.	२११३७
धूमयोनि १.	२१२११
धूमल १. ३.	३१९१३८
" १.	५१३२१
धूमवर्णा २.	११३३०

[धैवत]

धूमिका २.	२१२१०
धूमोर्णा २.	११२३६
धूम्या २.	५१११४
धूम्र १.	५१३८
" १.	५१३२१
धूम्रकर्ण १.	३१४६६
धूम्राट १.	२१३२७
धूर्जटि १.	१११४०
धूर्त ३.	३१२३६
" १.	३१३६०
" १.	३१३६१
" १.	३१३७६
" ३.	३१८११५
" १.	३१९५८
" १. २. ३.	५१४२४
धूर्तर १.	३१३६०
धूलि २.	३१८२५
" २.	८१६१७
" १. २.	८१९२६
धूलिजङ्घ १.	२१३१६
धूलिध्वज १.	११२४९
धूलिभक्त ३.	३१६५६
धूलिलुटित ३.	३१७१११
धूलीकदम्ब १.	८११५३
धूसर १.	३१९२७
" १.	५१३१४
धृति २.	१११४७
" २.	३१६१६६
" २.	३१७२०८
" २.	६१२२०
धृष्ट १. २. ३.	५१७१७
धृष्टा २.	३१६५०
धृष्टु १. २. ३.	५१७१७
" १. २. ३.	६१७१९
धेनु २.	३१४५०
" २.	३१७७०
धेनुप्या २.	३१४५०
धेनुक ३.	५१११०
धेनुकी २.	२११७७
धैर्य ३.	३१७२०८
धैवत १.	३१९१३२

[धारण]

धारण १.	२१३६
" ३.	३१७१२३
धोरी २.	३१६५७
धौत १. २. ३.	३१७१९७
धौतकौशेय ३.	४१३११८
धौतयुग्म ३.	४१३१२०
धौरण १. २. ३.	३१७१२१
धौरित १. २. ३.	३१७१२१
धौरितिक १. २. ३.	३१७११८
" १. २. ३.	३१७१२१
धौर्य १. २. ३.	३१४५७
धौर्य १. २. ३.	३१७१२१
ध्यान ३.	३१६२३२
ध्यामक ३.	३१३२३४
ध्रुव १.	३१७१३१
" १. २. ३.	६१५४४
ध्रुवा २.	३१३९६
" २.	३१३१००
" २.	३१६१००
ध्रुवा २.	२१४२
ध्वज १. ३.	३१७१३३
" १. ३.	६१५४३
" १. ३.	८१६५
ध्वजप्रहरण ३.	११२४८
ध्वजिन् १.	३१९४४
ध्वजिनी २.	३१७५५
ध्वनि १.	२१४१
ध्वस्त १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	५१७१०२
ध्वाङ्क १.	२१३१७
" १.	६११२७
ध्वाङ्गी २.	२१४४
ध्वान १.	२१४१
ध्वानका २.	५१७४९
ध्वान्त ३.	२१७६४
ध्वान्तमणि १.	२१३४७
न	
न ४.	८१७५
नःक्षुद्र १. २. ३.	५१७११

शब्दानुक्रमणिका

नकुटक ३.	४१७९१
नकुल १.	४११२७
नक्तक १.	२१३२३
" १.	५१३३०
नक्तखर १.	२१३२२
नक्तम् ४.	८१८७
नक्तमाल १.	३१३६२
नक्र १.	४११५३
नक्षत्र ३.	२१३३८
नक्षत्रकालिक १. २. ३.	३१६१२७
नक्षत्रनेमि १. २.	८१५२६
नक्षत्रमाला २.	६१७८७
" २.	४१३१४२
नख ३.	३१८१०१
" १. ३.	४१७७५
नखर १. ३.	४१७७५
नखरायुध १.	४१७७२
नखशस्त्र १.	८१६२३
नखायुध १.	४१७७२
नखारुस ३.	४१७११७
नग १.	३१३५
" १.	३१८१०४
" १.	८११५८
नगर ३.	४१३११
नगरद्वारकुट्टक १.	४१३१५
नगरी २.	४१३११
नगाधारा २.	३१७३
नगन १.	३१६७३
" १. २. ३.	५१७१५
" १.	६१३३१
नगनह १.	३१९५०
नगना २.	४१७१०
नगनाट १. २. ३.	५१७१५
नचक्र १.	३१६१९९
नट १.	३१३६९
" १.	३१५५५
" १.	३१५१०३
" १.	३१९६२
नटन ३.	३१९७८

[नन्दिकेश्वर]

नटभूषण ३.	३१२१३
नटिति २.	३१९७८
नटी २.	३१८१००
नटोत्साहन ३.	३१९१३९
नट्या २.	५१११४
नटवत् १. २. ३.	३११४४
नटवल १. २. ३.	३११४४
नण्ड १.	३१९६३
नत १. २. ३.	५१७८३
" १. २. ३.	५१७१२३
" १. २. ३.	६१७९
नतजानु २.	३१६४७
नतनास १. २. ३.	
नद १.	४१२२९
नदनु १.	२१२२
नदी २.	२१२२२
" २.	८१९३
नदीभव ३.	३१८१२०
नदीमातृक १. २. ३.	
नद्व १. २. ३.	३११४७
नद्वी २.	३१९४४
ननन्द २.	४१७२७
ननान्द २.	४१७२७
ननु ४.	८१७२२
" ४.	८१८२
नन्दक १.	११११७
नन्दथु १.	३१६१८८
नन्दन ३.	११२१०
" १.	३१६१०२
" १.	४१७३९
" १.	८१९१४
नन्दनीनन्दन १.	३१६१५८
नन्दयन्त्री २.	१११६०
नन्दा २.	१११६०
" २.	३१३१७
नन्दि २.	३१६१८८
नन्दिक १.	३१६१५८
नन्दिका २.	११३११
नन्दिकेश्वर १.	१११५१

नन्दिन्]		वैजयन्तीकोषः		[नागवारिक		नागवीथिका]		शब्दानुक्रमणिका		[निकाय	
नन्दिन् १.	१११५१	नयनोदक ३.	३११८७	नवांशुक ३.	४३१२०	नागवीथिका २.	२११४६	नाभीद ३.	३११५	नाली २.	३११६३
" १.	३१८३५	नर १.	३१५१	नवीन १. २. ३.	५११८८	नागवृत्तिका २.	३३११२६	नाभील ३.	७३११९	" २.	४१११६
नन्दिनी २.	१११६०	" १.	६११२९	नव्य १. २. ३.	५११८८	नागाङ्क ३.	४३१८	नाम ४.	८११२३	" २.	८११३८
" २.	३३११७८	नरक १.	१११३७	नसिक १.	४११३८	नागी २.	२११६	नामकर्मन् ३.	३११३३	नालीकर १. २. ३.	५११४८
" २.	३१८८८	नरकाराति १.	१११२५	नश्यत्प्रसूति ४.	४११२०	नागोदरी २.	३११५४	नामधेय ३.	३११३१	नालीकवाच् १. २. ३.	५११४८
" २.	४३१११	नरकीलक १. २. ३.		नश्वर १. २. ३.	२१११९	नागोद्भव ३.	३१८११८	नामन् ३.	३११३१	नावन ३.	४१११४०
" २.	४११२७		३१६१२	नष्टा २.	३१६१८	नाटक ३.	३१९१००	नामवर्जित १. २. ३.	५११२१	नावारोह १. २. ३.	४१११९
नन्दिवर्धन १.	१११४४	नरकोलि २.	३३१८९	नस २.	३१५२३	नाटकी २.	३१९१००	नामशास्त्र ३.	३१६३१	नाविक १.	३१५३८
" १.	२११७३	नरदेव १.	३१७२	नस्त ३.	४१११४०	नाटिका २.	३१९१००	नाय १.	३१२३२	" १.	३१५००
नन्दिसरस् ३.	२११११	नरनारायण १.	१११३०	नस्तित १. २. ३.	३१४५७	नाट्य ३.	३१२२८	नायक १.	४३११४३	" १. २. ३.	४१२१९
नन्दीचारी २.	३१११४२	नरवाहन १.	१२१५७	नस्य ३.	४१११४०	" ३.	३१२२८	नार ३.	३१११३	नाव्य १. २. ३.	४१२२०
नन्दीमुखी २.	३१६२००	नरेन्द्र १.	३१७२	नस्योत १. २. ३.	३१४५७	नाट्यधर्मिका २.	३१२२८	नारक १.	१२१३७	नाश १.	३१७२१०
नन्दावर्त १.	३३११९४	" १.	७११३७	नहुष १.	३१५१	नाट्योक्त ३.	३१२२८	" १.	१२१३८	" १.	६११३१
" १.	४३१३०	नर्तक १.	३१९६३	नाक १.	११११	नाडिजङ्घ १.	२३११६	नारकी २.	२११६	नासत्य १ द्वि.	१३१५
नपुंसक ३.	४११३	नर्तन ३.	३१९७३	नाक १.	६११२९	नाडिन्धम १.	३१२१६	नारङ्ग १.	३३१३६	नासत्यद्वय १ द्वि.	१३१५
नप्तृ १.	४११४५	नर्तनप्रिय १.	२३१३८	नाकु १.	३११४८	नाडी २.	२११५४	नारद १.	३३१३७	नासा २.	४३१४०
नप्र १.	३१९६३	नर्मदा २.	४३१२६	नाकुल ३.	३१६२१८	नाडीम्रण १.	३१८१३३	नारसिंही २.	१११६४	" २.	४३१४५
नभःप्राण १.	१२१४८	नर्मन् ३.	३१९८८	नाकुली २.	३१८१९८	नाथ १. २.	६१५४५	नाराच १.	३१७१८०	" २.	४३१४५
नभस् ३.	२१११	नल १.	३३१२२८	नाकुसुमन् १.	४११६	नाद १.	२१११	नाराची २.	३१९१९	" २.	४३१४५
" ३.	२११८४	नलक ३.	४३१२५	नाग ३.	३२१३०	नादेय ३.	३१८१२०	नारायण १.	११११०	नासाग्र ३.	४३१४२
नभस १.	७११३३	" ३.	४३११६	" ३.	३२१३२	नादेयी २.	३३१९६	" १. २.	८१११०	नासारज्जु २.	३१७११२
नभसङ्गम १.	२३१२	नलकुवर १.	१२१५९	" १.	४११४	" २.	३३१९९९	नारी २.	३३१८१	नासिका २.	४३१९१
नभस्य १.	२११८५	नलतीर ३.	४३१५९	नागकेसर १.	३३१८२	नाना ४.	८११२२	" २.	४३१८१	नासिकापुट १.	४३१९१
नभस्वत् १.	१२१५०	नलद्व ३.	३३१२३१	नागजिह्वा २.	३२११२	" ४.	८११४	नार्यङ्ग १.	३३१३६	नासिकामल १.	४३१९२
नभोज्जण १.	३३११९४	नलमीन १.	४३१४५	" २.	३३१३९	नानीकर १. २. ३.	५११४८	नाल १. २. ३.	३१८१८	नासिक्य १ द्वि.	१३१६
नभोजात १.	१२१५०	नलान्तर १.	३३१६१	नागजीवन ३.	३२१३१	नानीकवाच् १. २. ३.	५११४८	" १. २. ३.	३१८६३	नासिर १. ३.	३१७२०३
नभ्राज् १.	२२११	नलिक ३.	४३१२५	नागदन्त १.	४३१५३	नान्दी २.	३१९१६९	" ३.	६३११७	नासू २.	३१९१३३
नमः (नस्) ४.	८१११४	नलिन ३.	४२१३८	नागदन्तक ३.	३१६२१४	नानीपात १.	४११२०	" १, २. ३.	८१९३८	नास्तिक १. २. ३.	५११३८
नमत ३.	४३११६६	नलिनी २.	४२१४३	नागदन्ती २.	३३११०९	नान्दी २.	३१९१६९	नालक ३.	४३१२५	नि ४.	८१७५
" १.	७११३५	" २.	७२११०	नागपाश १.	३१७१९६	" २.	३१९१६९	नाला २.	४२१४२	निसन ३.	४३११७१
नमसित १. २. ३.		नलिवाह १.	३१७११७	नागबला २.	३१८६१	नापित १.	३१९२६	नालिका २.	३११५८	निकट ३.	५११४४०
	५१११०५	नली २.	३१८१००	नागमातृ २.	३२११२	नापितकोलिका २.	४३१९६	" २.	३११५८	निकर १.	५११२
नमस्कार १.	३१६३९	नल्व १.	३११६०	नागर १.	३३१६१	नामि २.	४३१६६	" २.	३१६९५	निकर्षण ३.	४३३३१
नमस्कारी २.	३३११४८	नल्वल ३.	५११५६	" १. २. ३.	७१५५०	" १.	६११३०	" २.	३१७११०	निकष १.	३१९१९
नमस्या २.	३१६३९	नल्विक १.	३११६०	नागरङ्ग १.	३३३३६	नाभिका २.	३१७१३५	" २.	३१७११७	निकषा ४.	८१११५
" २.	३१६३९	नव १. २. ३.	५११८८	नागराज १.	४११३	नाभिज १.	१११९	" २.	३१९१७२	निकामम् ४.	४३११०४
नमस्त्यत १. २. ३.		नवति २.	५११२७	नागरी २.	३३१३७	नाभिनाला २.	४३१९	" २.	७२१११	निकाय १.	५११४
	५१११०५	नवनीत ३.	३१८१३८	नागलोक १.	४१११	नाभी २.	४३१६६	नालिकेर १.	३३१२२०	निकाय १.	४३११८
नम्र १. २. ३.	५११८३	नवम १. २. ३.	५११२०	नागवल्ली २.	३३११४०						
नय १.	५१२३२	नवमालिका २.	३३११८६	नागवारिक १.	८११५३						
नयन ३.	४३१९४	नवश्री १. २. ३.	४३१११९								

[निकार]

निकार १.	७११३७
निकारण ३.	३१७२१२
निकार्य १.	४३११८
निकाश १ २. ३.	५४१२२२
निकुञ्जिन् ३.	३१६५१
निकुञ्ज १. ३.	३१२२०
निकुरुम्ब ३.	५११२
निकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
निकेतन ३.	४३११७
निक्रण १.	२१४१११
निक्राण १.	२१४१११
निक्षेप १.	३१८११२
निखर्व ३.	५११२८
” ३.	५११३०
निखिल १. २. ३.	५४१८५
निगण १.	३१६१९५
निगम १.	७११३५
निगारण १. २. ३.	४१४१८३
निगल १.	३१७१८३
निगाल १.	३१७१०९
निगूढक १.	३१८३८
निगूढचरण ३.	३१६१२२
निग्रह १.	७११३४
निघ १.	३१९१८
निघण्टु १.	३१६३१
निघस १.	४३११०२
निघानका २.	३१९२०
निघृष्टा २.	३१६१५०
निघ्न १. २. ३.	५४१२८
निचित १. २. ३.	५४१११५
नितुल १.	३१३१६७
निचोट १.	३१७१८४
निचोल १.	३१३१४१
” १.	४३१२६
” १.	४३१२८
निज १. २. ३.	३१७४३
” ३.	५२११

वैजयन्तीकोपः

निज १. २. ३.	६१४१९
नितम्ब १.	३१२१८
” १.	४१४६४
” १.	७११३६
नितम्बिनी २.	४१४१४
नितान्त १. २. ३.	५४१३२२
नित्य १. २. ३.	५४१८८
” १. २. ३.	५४१३०
नित्यशङ्किन् १.	३१४१२
नित्यहोम १.	३१६१७०
निदाघ १.	३१९१८१
” १.	८११५७
निदान ३.	७३१२०
निदानज्ञ १.	४१४१४४
निदिग्ध १. २. ३.	५४११०८
निदिग्धिका २.	३१३१०५
” २.	३१३१०६
निदेश १.	३१७४७
” १.	७११३४
निदेशक १.	३१११९
निद्रा २.	३१६१९७
निद्राण १. २. ३.	५४३१९
निद्रालु १.	३१३१५०
” १. २. ३.	५४३१९
निधन १. ३.	७१५५१
निधान ३.	११२१६०
” ३.	५२१४०
निधि १.	११२१६०
निधिपाल १.	११२१५७
निधुवन ३.	३११३४
(विधुवन)	
” १.	४३११७०
निन्दा २.	३११३३
” २.	६१२२१
निप १.	४११५८
निपक्षति २.	२११७०
निपात १.	३१६२०१
निपान ३.	४२१९
निपीतिन् १.	३१८१२७

[निरञ्जना

निबर्हण ३.	३१७२१२
निबड १. २. ३.	५४१२६
निबिरीस १. २. ३.	५४१२६
निभ ३.	३१६१९५
” १. २. ३.	३१९२१
” १. २. ३.	५४१२२
निभृत १. २. ३.	५४३२
निमय १.	३१८१७१
निमित्त ३.	७३११८
” १.	८३११६
निमित्तग्रहण ३.	३१७१९०
निमिष ३.	३१९१०
निमीलन ३.	३१३२०१
” १.	३१९१०
निमेष १.	२११५३
निम्नक १.	३१३३३६
निम्नगा २.	४२१२२
निम्ना २.	३१३१७८
निम्ब १.	३१३७५
नियति २.	७२१२
नियन्तृ १.	२१७१३८
नियम १.	३१६१४
” १.	३१६२०९
” १.	५२१३७
” १.	७११४०
नियमोज्झिति २.	५२१६
नियामक १.	४२११८
नियुत ३.	३१३२३२
” ३.	५११२८
” ३.	५११३०
” ३.	५११३२
नियुद्ध ३.	३१७२०७
नियोग १.	५२१२५
नियोज्य १.	३१९२
निर् (निस्) ४.	८१७५
निरञ्जन १.	३१३१२
निरञ्जना २.	११११६
” २.	२११७२

[निरन्तर]

निरन्तर १. २. ३.	५४१२२६
निरय १.	१२१३७
निरर्थक ३.	५२१६
निरवग्रह १. २. ३.	५४१२७
निरसन ३.	३१७२१३
निरस्त १. २. ३.	७३११३
निराकरिण्यु १. २. ३.	५४१४०
निराकार १.	५२१२३
निराकृति २.	३१६१९
निरामय १. २. ३.	४१४१४३
निरायस १.	३१४६३
निरास १.	५२१२३
निरिणा २.	३१६१४६
निरीष १.	३१८२८
निरुक्त ३.	३१६२८
” ३.	३१६३१
निरूपण १. २. ३.	८५१२
निरोध १.	७११३३
निर्भृति २.	१२१४२
निर्गमन ३.	५२११३
निर्गीत ३.	३१९११०
निर्गण्डी २.	३१३११८
” २.	३१३१८६
निर्ग्रन्थ १. २. ३.	५४११६
” १. २. ३.	७३११३
निर्ग्रन्थन ३.	३१७२१३
निर्घात १.	२२१६
निर्जर १.	१११३
निर्झर १.	३२१७
निर्णय १.	३१६१७६
निर्णिक १. २. ३.	५४१६६
निर्णोक्त १.	३१५४५
निर्दय १. २. ३.	७३११५
निर्देश १.	३१७४७
निबन्ध १.	५२११४

शब्दानुक्रमिका

निर्भर १. २. ३.	५४१३३१
निर्भरसन ३.	८३१८
निर्मद १.	३१७६८
निर्मल्य ३.	४३११५६
निर्मुक्त १.	४११२०
निर्मोक १.	४११२१
निर्याण ३.	५२११३
” ३.	७३११९
निर्यातन ३.	८३१७
निर्याम १.	४२११९
निर्यास १.	३१३१११
निर्यूह १.	४३१३१
” १.	४१४१४१
” १.	७११३८
निरलज्जा २.	३१६१४६
निरलिङ्ग ३.	८१७११
निरलेप ३.	४२१३८
निर्वपण ३.	३१६११८
निर्वहण ३.	३१९१०९
निर्वाण ३.	७३१२०
निर्वाद १.	२१४३३
निर्वापण ३.	३१७२१३
निर्वार्य १. २. ३.	५४१७३
निर्वासन ३.	३१७२१२
निर्विष १.	४११११
निर्विषा २.	४१११७
निर्वीरा २.	४३१२८
निर्वृति २.	७२११०
निर्वृत्त १. २. ३.	५४११११
निर्वेद १.	३१६१४७
” १.	५२१३४
निर्वेदा १.	७११३९
निर्व्यथन ३.	४११२
निर्हरण २.	३१७१९२
निर्हार १.	५२११७
निर्हाद १.	२१४११
निलय १.	४३११८
निलम्प १.	१११२
निलिम्पिका २.	३१४१४२
निलवयनी २.	४११२१
निवर्तन ३.	३११६०

[निरशलाक

निवर्तना २.	५२११७
निवसथ १.	४३१२
निवसन ३.	४३११८
” ३.	४३११६
निवह १.	५११२
” १.	७११३४
निवहा २.	३१३१८६
निवात १. २. ३.	७३११४
निवाप १.	३१३१६४
निवीत ३.	३१३२१
” १. २. ३.	४३१२२०
निवृत्त १. २. ३.	५४११०८
निवृत्ति २.	७२१११
निवेश १.	५२११४
” १.	७११३३
निशरण ३.	३१७२१२
निशा २.	२११५७
निशाकर १.	२११२४
निशाकेतु १.	२११२५
निशाचर १. २.	८१५१२
निशात १. २. ३.	३१७१९७
निशादर्शिन १.	२३१२२
निशानाथ १.	२११२४
निशान्त १. २. ३.	७५१५१
निशामणि १.	२३१४७
निशार १.	४३११२७
निशित १. २. ३.	३१७१९७
निशीथ १.	२११६६
तिशिथिनी २.	२११५८
निशिथ्या २.	२११५८
निशुम्भन ३.	३१७२१२
निश्रय १.	३१६१७६
निश्वारक १. २. ३.	८१५११
निश्रेणि २.	४३१५१
निश्वास १.	३१६२०४
निशालाक १. २. ३.	५४११९०

निशेष]	वैजयन्तीकोषः	[नीलवृष
निशेष १. २. ३.	निष्ठा २. ६१२२१	निस्स्पृहा २. ३६१५०
५४८६	निष्ठान ३. ४३१८५	निस्त्राव १. ४३१७९
निशेष्य १. २. ३.	" ३. ४३११०	निस्त्राध्याय १. २. ३.
५४८६	निष्ठीव १. ३. ५२३६	३६१९
निश्रेयस ३. ८३१८	निष्ठीवन ३. ५२३६	निहत १. २. ३. ३६३७
निश्वास १. ३६१२०४	निष्ठुर १. २. ३. २४३२१	" १. २. ३. ७४१३३
निषङ्ग १. ३७११७८	" ३. ३१२२७	निहन्नन ३. ३७२१२
" १. ७१३३४	" १. ५३१५	निहित १. २. ३.
निषङ्गिन् १. २. ३.	निष्ठेवन ३. ५२३६	५४११०४
३७११७३	निष्ठ्या २. २११४०	निह्व १. ७१३९
निषद्या २. ४३३३४	निष्ठ्यूत १. २. ३.	नीच १. २. ३. ३६३७
निषद्वर १. ३८१२६	७४११४	" १. २. ३. ५४३२२
" १. २. ८१५११	निष्ठ्यूति २. ५२३६	" १. २. ३. ५४६०
निषध ७१३८	निष्णात १. २. ३.	" १. २. ३. ५४८१
निषाद १. ३५४	५४११९	" १. २. ३. ६४२०
" १. ३५६९	निष्पक्क १. २. ३.	नीचुदार १. ३६१५४
" १. ३५७०	५४११५	नीचैः (-स्) ४. ८८११९
" १. ३५७२	निष्पतिसुता २. ४४२०	नीड १. ३. २३३४९
" १. ३५८४	निष्पत्राकृति २. ५२३८	" १. ३. ८५३६
" १. ३९१३२२	निष्पन्न १. २. ३.	नीडज १. २३३४
निषादिन् १. ३७१८७	५४११६	नीडिन् १. २३३२
निषिद्धैकलषि १. २. ३.	निष्पाव १. ४२३६	नीडोद्भव १. २३३२
३६१२२	" १. ४२३६	नीप १. ३३३६०
निषूदन ३. ३७२१२	निष्प्रवाणि १. २. ३.	नीर ३. ४२३१
निष्क १. ५१३४१	४३१२०	नील १. १२३६१
" १. ३. ५१३४६	निष्प्रभ ४. ८८१३३	" १. ३६११७
" १. ३. ६५२०	निसर्ग १. ५२३१	" १. ५३१११
निष्कला २. ४४११६	" १. ८५३५	नीलक १. १२३२९
निष्कासित १. २. ३.	निसृष्ट १. २. ३.	नीलकण्ठ १. ३३३१५५
५४७७१	५४११६	" १. ८६३२२
निष्कुट १. ३३३३	निस्तरुण ३. ५१२१२	नीलकेशी २. ३३३११०
" १. ३३३१४	निस्तल १. २. ३.	नीलग्रीव १. ११३४२
निष्कुटी २. ३८८८७	५४८२२	" १. ८६३२२
निष्कोटित १. ३.	निष्पिंश १. ३७१६०	नीलजम्बूर १. ३३३१५४
३९११२२	" १. २. ३. ७५५११	नीलदंष्ट्र १. ११३६७
निष्कोश १. ३७७७७	निस्वन १. २४३१	नीलपीतल १. ५३३२१
निष्क्रम १. ७१३६	निस्वान १. २४३१	नीलपुष्प १. ३८१५८
निष्टङ्क १. ३३३६२	निस्सङ्ग १. २. ३.	नीललोहित १. ११३४०
निष्टय १. ३५४६	३३३२०	" १. ५३३१९
निष्टयान्ता २. ३३३१३५	निस्सङ्गजा २. ३३३१८७	नीलवासस् २१३६६
निष्ठा २. ३९११०९	निस्सारण ३. ३५४१	नीलवृष १. ३६१२३३

नीलशीर्ष]	शब्दानुक्रमणिका	[पक्षक
नीलशीर्ष १. ३४४४१	नृपति १. ३७११	नौ २. ४२३१५
नीलसितश्याम १. ५३३१३	नृपलक्ष्मन् ३. ३७११६	" २. ८२३१७
नीला १. २३३५	नृपात्मज १. ३३३१७०	नौजीविन् १. ३९३४२
नीलाङ्गा २. ४१३३९	नृपात्मजा २. ३३३१६७	नौतार्य १. २. ३. ४२३२०
नीलाब्ज ३. ४२३३५	नृपार्हक ३. ३८१५५६	नौशिरस् ३. ४२३१७
नीलाम्बर १. ११३२४	नृलिङ्गक १. ३९१११२	नौस १. २. ३. ३६३१२७
नीलिक १. ३५३१९	नृशंस १. २. ३. ५४३२४	न्यक्ष १. २. ३. ६४३९
नीलिका २. ३३३१८६	नृसिंह १. ११३१८	न्यग्रोध १. ३३३२७
नीलिङ्गी २. ३१३४२	नृसेन २. ३. ८९३३४	" १. ४३८८२
नीलिनी २. ३३३११०	" २. ३. ८९३३५	न्यग्रोधी २. ३३३११३
नीली २. ३३३११०	नेतृ १. ३३३३७	न्यङ्कु १. ३३३१५
नीलीराग १. २. ३.	" १. २. ३. ५४३५७	" १. ६१३३३
४२३३४	नेत्र ३. ६३३१७	न्यच् १. २. ३. ५४८५
नीलोत्पल ३. ४२३३४	नेत्रपिण्ड १. ४४३९५	" १. २. ३. ५४९३
नीवलक १. ३५३२४	नेत्ररुज्ज २. ४४३३२	न्यर्तुद ३. ५१३२८
नीवाक १. ३८१६६	नेम १. २. ३. ५४८६	न्यस्त १. २. ३.
नीवार १. ३८१५७	" १. २. ३. ६५३४७	५४११०४
नीवि २. ४३३३३०	नेमि १. ३४३६६	न्यस्तक १. ३. ३८१३२
नीवी २. ३८१७०	" २. ३७३३५	न्याद १. ४३३१०२
नीष्ट १. ३३३२१	" २. ४२३२१	न्याय १. ३७३४८
नीष्ट ३. ४३३३७	" २. ३३३३७	" १. ३८१५५
नीहार १. २३३१९	नेनिन् १. ३३३३७	न्यायगण १. ३३३२९
नु ४. ८७३६	नेमीय १. ३३३३७	न्याय्य १. २. ३.
नुत १. २. ३. ५४३१०६	नेरिन् १. १२३५२	५४११०३
नुति २. ३३३३५	नैकृत १. २. ३. ५४३२२	न्यास १. ३८१३२
नुत्त १. २. ३. ५४३१७	नैकृतिक १. २. ३. ५४३२२	न्युङ्कु १. २. ३. ५४३३५
नुन्न १. २. ३. ५४३१७	५४३२२	न्युञ्ज १. ३३३३७
नूतन १. २. ३. ५३३८६	नैगम २. ३८१७२	" १. २. ३. ५४३११
नूतना २ ब. २१३१८	" १. ७१३३७	" १. २. ३. ५४३१०
नून १. २. ३. ५४३८६	नैगमेय १. ११३५७	" १. २. ३. ६५३४६
नूपुर १. ३. ४३३१४५	नैचिकी २. ३४३४६	प
नृ १. ३५३१	" २. ३४३६०	पक्षि २. ६३३२२
" १. ४४३३	नैपथ्य ३. ४३३३२	पक्षिका २. ३८३४२
नृगालिक १ ब. ३१३२८	नैपाली २. ३२३१७	पक्ष ३. ३८३४३
नृङ्ग ३. ४३३३	नैयग्रोध १. ३३३२२	" १. २. ३. ४३३९३
" ३. ४३३४	नैर्ऋत १. १२३४०	" १. २. ३. ४३३९५
नृत्त १. ३९३६३	नैर्ऋती २. २१३४	पक्ष्ण १. ३. ३९३२२
नृत्त ३. ३९३७३	नैल ३. ३१३८	पक्ष १. २१३७९
नृष १. ३९३७३	नैषध ३. ३१३६	" १. २३३४९
नृष १. ३९३७३	नैष्कि १. ३७३२१	" १. ६१३३५
नृष १. ३९३७३	नैष्टिक १. ३७३२१	पक्षक १. ४३३२४

[पञ्चक]

पञ्चक ३.	४३१४२
पञ्चचर १. २. ३.	८१५१३
पञ्चति २.	२११७०
” २.	७२११३
पञ्चद्वार ३.	४३१४२
वृक्षभाग १.	३१७८१
पञ्चरचना २.	३१७८६
पञ्चशाला २.	४३१२४
पञ्चाङ्ग ३.	२११५५
पञ्चान्त १.	३११७३
पञ्चिका २.	८११३
पञ्चिणी २.	२११५९
पञ्चिन् १.	२३११
पञ्चिपोत १.	२३१४
पञ्चिवन्धन ३.	३११४२
पञ्चिल १.	३११५९
पञ्चिशाला २.	४३१२१
पञ्चमन् ३.	४३१४५
” ३.	४३१५५
” ३.	६३११९
पञ्च १.	३१८२६
” १.	६१५४८
पञ्चक्रीडनक १.	३११६
पञ्चज ३.	४३१३७
” ३.	८११४०
पञ्चरस १.	३११४७
पञ्चिल १. २. ३.	३११४३
पञ्चरुह ३.	४३१२९
पञ्चि २.	५११२४
” २.	५११२६
” २.	५११३३
” २.	६३१२२
पञ्चु १. २. ३.	५१११४
पञ्चुल १.	३१७१०४
पञ्चन ३.	३११२७
” ३.	५११३२
पञ्चपञ्च १.	३३१८२
पञ्चपञ्चा २.	३३१२३
पञ्चा २.	५११३२
” २.	८११४

वैजयन्तीकोषः

पञ्चि २.	११२१८
” २.	२३११८२
पञ्च १.	३१११
पञ्चक ३.	३१७१०
पञ्चकृत्वः (-स्) ४.	८१८१६
पञ्चकोल ३.	३१८१३
पञ्चखार १. २. ३.	८११५४
पञ्चगृह १.	४१११६
पञ्चचीरोद्धित ३.	३१६१५
पञ्चचूड १. २. ३.	३१६१२
पञ्चजन १.	३१५११
पञ्चजनीन १.	३१७१३
(पञ्चजनिनः)	
पञ्चत्व ३.	३१६१०२
पञ्चदशी २.	२११७३
पञ्चभद्र १.	३१७१३
पञ्चम १.	३१११३२
” १. २. ३.	५११२०
पञ्चलक्षण ३.	३१४१८
पञ्चलोह ३.	३१२१८
पञ्चवक्त्र ३.	८१६१२
पञ्चबायु १. २. ३.	३१६१०३
पञ्चशाख १.	४१७३३
पञ्चष १. २. ३.	५११२६
पञ्चसुगन्ध ३.	४३११५२
पञ्चहस्त १.	३११५८
पञ्चाङ्गी २.	३१७१३
पञ्चाङ्गुल १.	३३१६५
पञ्चामृत ३.	४३१११
पञ्चाशत् ५११२६	
पञ्चास्य १.	३१४११
पञ्चिका २.	३११५९
पञ्चेषु १.	१११२८
पञ्चोषण ३.	३१८११
पञ्चर ३.	२३१४९
पञ्चिका २.	११२३६
पट १.	३३१५७
” १. ३.	४३१११६
” १. २. ३.	८११३७

[पणव]

पटकुटी २.	४३१२५
पटचर १ व.	३११४१
” १.	३११५७
” ३.	४३१२७
पटचोर १.	३११५७
पटल ४.	४३१३७
” १.	७१५२
पटली २. ३.	५११६
पटवासक १.	४३१५७
पटह १. ३.	३११३४
” १.	३११३८
पटी २.	८११३७
पटु १.	३३११६५
” १. २. ३.	३१७१४७
” ३.	३१८१२०
” ३.	३१८१२३
” १. २. ३.	४३१४३
” १.	५३१२६
” १. २. ३.	५३१५४
पटुच्छद १.	३३११६४
पटुञ्जिका २.	३११४९
पटोलक १.	३३११६५
पटोली २.	३३११५९
पट्ट १.	३१७१५४
” १.	४३१४०
” १.	६३१३४
पट्टन ३.	४३१३
” ३.	४३१३
पटबन्ध १.	३१५६२
पट्टस १.	३१७१६४
पठि १.	३३१२३
पट्वीश १.	३१७८६
पण १.	३१८१९
” १.	३११६०
” १.	५११३८
” १.	५११३८
” १.	५११३९
” १.	५११४५
” १.	६३१३४
पणव १.	३११३४
” १.	७११५२

पणिक]

पणिक ३.	३१६१८८
” १.	४३१३४
पणित १. २. ३.	५१११०६
पणितव्य १. २. ३.	३१८१६९
पणायित १. २. ३.	५१११०६
पण्ड १. २. ३.	३११५९
” १.	४३१३
पण्डा २.	३१११६४
” २.	३१११६५
पण्डित १.	३१११३४
पण्य १. २. ३.	३१८१६९
पण्यभू २.	४३१३५
पण्यवीथी २.	४३१३५
पण्यस्त्री २.	४३१२४
पण्यजीव १.	३१८७२
पतग १.	२३११
पतङ्ग १.	२३११
” १.	२३१४३
” १.	४३१४०
” १.	७११४०
पतङ्गना २.	३१८१४९
पतङ्गी २.	२३१४८
पतञ्जलि १.	३१११५७
पतत् १.	२३११
पतत्र ३.	२३१४९
” ३.	३३११७
” ३.	७३१२२
पतत्रि १.	२३११
पतत्रिन् १.	२३११
पतद्ग्रह १.	४३११६०
पतन ३.	३३११६
” ३.	३३११६
पतयालु १. २. ३.	५११३८
पताक १.	४३१७९
पताका २.	३१७१३३
” २.	३१७१९३
पताकिन् १. २. ३.	३१७१४५

शब्दानुक्रमिका

पताकिनी २.	३१७५५
पति १.	४३१३७
” १.	५११५८
पतिवरा २.	४३१७
पतिघ्नी २.	३११५३
पतित १. २. ३.	३१७२१९
पतितोत्पन्ना २.	३१६४९
पतिवत्नी २.	४३१४४
पतिघ्नता २.	४३१७
पतेर १.	४३१३
पत्तन ३.	४३१४
पत्ति २.	३१७५७
” १.	३१७१३९
” २.	४३११७९
पत्तिच्छेद १.	४३११४८
पत्तर १.	३३११५६
पत्नी २.	४३१२५
पत्नीसङ्ग्रह ३.	३१६८९
पत्र १.	३३११६
” १.	६३१२०
” १. २. ३.	८११३२
पत्रक ३.	३१८१२८
” ३.	४३१४९
पत्रकूट १.	३१८१८४
पत्रणा २.	३१७१८६
पत्रताली २.	३३१२२४
पत्रपरशु १.	३११३५
पत्रपाश्या २.	४३१३६
पत्रफला २.	३१७१६४
पत्रमध्यसिरा २.	३३१४३
पत्ररथ १.	२३११
पत्ररेखा २.	४३११७९
पत्रल ३.	३१८१४३
पत्रला २.	३३१२२४
पत्रसारक १.	३१८१२८
पत्राङ्ग ३.	३१८११५
पत्राङ्गुलि २.	४३११४९
पत्रिणी २.	४३१२८
पत्रिन् १.	२३११
” १.	३१७१७९
” १.	६३१३२

[पद्याख]

पत्री २.	८११३२
पत्रोर्ण १.	३३१६८
” १.	४३१११८
पथिकृत् १.	११२२५
पथिन् १.	३११४९
पथ्या २.	३३११७८
पद् १.	४३१५६
पद् ३.	२११७
” ३.	४३१५६
” ३.	६३११८
पदपणिका २.	३३११३६
पदभञ्जना २.	३३६३१
पदवत्मीक १.	४३१३३
पदवी २.	३३१४९
पदाजि १.	३१७१३९
” १.	७११५४
पदाति १.	३१७१३९
पदातिक १.	३१७१३९
पदिक १.	३११५१
पद्म १.	३१७१४०
पद्धति २.	५११२४
” २.	७३११५
पद्म १.	११२६०
” १. ३.	३३११९५
” ३.	३१७८२
” १. ३.	४३१३६
” ३.	५११३२
” ३.	५३११२
” १. २. ३.	६३१४८
” १.	८३११२
पद्मकर्कटी २.	४३१४६
पद्मकासनिन् १.	३३१२११
पद्मचारिणी २.	३१८१८९
पद्मनाभ १.	११११५
पद्मपत्र ३.	३१८१८८
पद्मबन्धु १.	२११११
” १.	२११५६
पद्मा २.	३३११००
” २.	३१८१८१
” २.	३१८१८९
पद्माङ्क ३.	४३१४६

पञ्चालया]	वैजयन्तीकोषः	[परिचिप्त
पञ्चालया २.	११२३६	परजात १
पञ्चासन ३.	१११७	१. १. ३. पा१४९
" ३.	३६१२०५	परतन्त्रक १. २. ३.
पञ्चासनिन् १. २. ३.	३६१२३४	पा१४२८
पञ्चिन् १.	४२१४३	परन्तप १. २. ३. पा१४९
पञ्चोत्तर ३.	३६१२११	परपिण्डाद् १. २. ३.
पद्य १. २. ३.	३६१४७७	पा१४४९
" १.	३६१११	परभाग १.
पद्यमात्रिका २.	२१४१४२	परभृत १.
पद्या २.	३६१४९९	२३११६
पनस १.	३६१४७४	परमन्यु १.
पनायित १. २. ३.	पा१४१०६	परमम् ४.
पनित १. २. ३.	पा१४१०६	परमात्मन् १.
पन्न १. २. ३.	पा१४१०२	परमान्न ३.
" १. २. ३. पा१४११५	पा१४११५	परमेश्वर १.
पन्नग १.	४११६	परमेष्ठिन् १.
पन्नगारि १.	१११३८	परमेष्ठिनी १.
पपा २.	४११२३६	परम्पर १.
पय १.	३६११२४	" १.
पयस् ३.	३६११४५	" १.
" ३.	४२१२	परम्परा २.
" ३.	६३१२०	परम्पराक २.
पयस्या २.	३६११९८	३६११९४
पयस्विनी २.	४२१२२	परम्परावाहन ३.
पयोगर्भ १.	२१२१२	३६११३७
पयोण्ड १.	३६१७४	परवत् १. २. ३. पा१४२८
पयोधर १.	८११२७	परशु १.
पयोवहा २.	४२१२०	" १.
पयोव्रत ३.	३६११४७	" १.
पर १.	३६११६१	परशुभृत १.
" १.	३६१७४१	१११५४
" ३.	३६११०५	परश्वः (-स्) ४.
" ३.	पा११२९	८११९
" १. २. ३. पा११४२	पा११४२	परश्वध १.
" १. २. ३. ६१५४९	६१५४९	३६१३५
परकुल १.	४११५४	परस्पर १. २. ३.
परच्छन्द १. २. ३.	पा१४२७	पा१४१२३
		पा१४११
		३६११३४
		३६१२२१
		८११२६
		३६११४४
		पा१२१
		३६१२०९
		८११५०
		पा१४२
		पा१४९१
		परिचिप्त १. २. ३. पा१४१०८

परिचेष]	शब्दानुक्रमिका	[परेत
परिचेष १.	८११३०	परिव्याण ३.
परिखा २.	४३११३	३६१३३०
परिगत १. २. ३.	८११७	परिव्याध १.
परिग्रह १.	२११३०	" १.
" १.	४११५१	परिवाज १.
" १.	८११३०	३६११६०
परिच १.	३६१७७१	परिशाय १.
" १.	७११४१	४३११६८
परिघातन १.	३६१७७१	परिशुष्क ३.
परिचय १.	३६११९५	४३१८८
" १.	पा१२३१	परिश्व २.
परिचर १. २. ३.	३६१७७१	३६११३३
परिचर्या २.	३६१३८	परिष्कार १.
परिचारक २.	३६१२	४३११३३
परिचारिका २.	३६१३६	परिष्कृ १.
परिच्छद १.	३६१४८	४३११६९
" १.	४३११५८	परिसर १.
परिजन १.	४३१५१	४३११२
परिजम्ब १.	२११२४	परिसर्प १.
परिणत १.	३६१७८	पा१२८
परिणय १.	३६१५४	परिसर्पा २.
परिणाम १.	पा१२४	परिस्कन्द १.
परिणाय १.	३६१६१	३६११५८
परिणाह १.	पा१२५	परिस्तोम ३.
परितः (-स्) ४.	८११३२	४३११६६
" ४.	८११३३	परिस्पन्द १.
परिताप १.	४३११२२	४३१५१
चरित्राण ३.	४३११०५	परिस्नावी २.
चरित्राणी २.	३६११०९	४३१३१
चरित्रेव ३.	२११२९	परिस्नुत २.
परिधान ३.	४३११२१	३६१४५
परिधि १.	३६११९	परिस्तुता २.
" १.	७११४१	३६१४५
परिधिस्थ १. २. ३.	३६११४१	परिहार १.
परिपण ३.	३६१८०	पा१२७
परिपत् १.	३६१२६	परिहृक १. २. ३.
परिपत्र ३.	४३११०३	पा१३०
परिपन्थिन् १.	३६१४२	परिच्छा १.
परिपाटी २.	३६१११४	३६११२२
		पा११३३
		८११३१
		पा११०५
		८११२९
		३६११३५
		३६१३२
		३६११२१
		३६१११७
		३६१४
		४३१५१
		८११२८
		४३१६८
		३६१४३
		३६१४३
		३६१६०
		३६१३१
		३६१४२
		३६१५९
		२११३१
		४३११००
		परिव्याण ३.
		३६११०५
		परिव्याध १.
		३६१३३०
		" १.
		३६१३०२
		परिवाज १.
		३६११६०
		परिशाय १.
		४३११६८
		परिशुष्क ३.
		४३१८८
		परिश्व २.
		३६११३३
		परिष्कार १.
		४३११३३
		परिष्कृ १.
		४३११६९
		परिसर १.
		४३११२
		परिसर्प १.
		पा१२८
		परिसर्पा २.
		पा१२८
		परिस्कन्द १.
		३६११५८
		परिस्तोम ३.
		४३११६६
		परिस्पन्द १.
		४३१५१
		परिस्नावी २.
		४३१३१
		परिस्नुत २.
		३६१४५
		परिस्तुता २.
		३६१४५
		परिहार १.
		पा१२७
		परिहृक १. २. ३.
		पा१३०
		परिच्छा १.
		३६११२२
		पा११३३
		८११३१
		पा११०५
		८११२९
		३६११३५
		३६१३२
		३६११२१
		३६१११७
		३६१४
		४३१५१
		८११२८
		४३१६८
		३६१४३
		३६१४३
		३६१६०
		३६१३१
		३६१४२
		३६१५९
		२११३१
		४३११००
		परिव्याण ३.
		३६११०५
		परिव्याध १.
		३६१३३०
		" १.
		३६१३०२
		परिवाज १.
		३६११६०
		परिशाय १.
		४३११६८
		परिशुष्क ३.
		४३१८८
		परिश्व २.
		३६११३३
		परिष्कार १.
		४३११३३
		परिष्कृ १.
		४३११६९
		परिसर १.
		४३११२
		परिसर्प १.
		पा१२८
		परिसर्पा २.
		पा१२८
		परिस्कन्द १.
		३६११५८
		परिस्तोम ३.
		४३११६६
		परिस्पन्द १.
		४३१५१
		परिस्नावी २.
		४३१३१
		परिस्नुत २.
		३६१४५
		परिस्तुता २.
		३६१४५
		परिहार १.
		पा१२७
		परिहृक १. २. ३.
		पा१३०
		परिच्छा १.
		३६११२२
		पा११३३
		८११३१
		पा११०५
		८११२९
		३६११३५
		३६१३२
		३६११२१
		३६१११७
		३६१४
		४३१५१
		८११२८
		४३१६८
		३६१४३
		३६१४३
		३६१६०
		३६१३१
		३६१४२
		३६१५९
		२११३१
		४३११००
		परिव्याण ३.
		३६११०५
		परिव्याध १.
		३६१३३०
		" १.
		३६१३०२
		परिवाज १.
		३६११६०
		परिशाय १.
		४३११६८
		परिशुष्क ३.
		४३१८८
		परिश्व २.
		३६११३३
		परिष्कार १.
		४३११३३
		परिष्कृ १.
		४३११६९
		परिसर १.
		४३११२
		परिसर्प १.
		पा१२८
		परिसर्पा २.
		पा१२८
		परिस्कन्द १.
		३६११५८
		परिस्तोम ३.
		४३११६६
		परिस्पन्द १.
		४३१५१
		परिस्नावी २.
		४३१३१
		परिस्नुत २.
		३६१४५
		परिस्तुता २.
		३६१४५
		परिहार १.
		पा१२७
		परिहृक १. २. ३.
		पा१३०
		परिच्छा १.
		३६११२२
		पा११३३
		८११३१
		पा११०५
		८११२९
		३६११३५
		३६१३२
		३६११२१
		३६१११७
		३६१४
		४३१५१
		८११२८
		४३१६८
		३६१४३
		३६१४३
		३६१६०
		३६१३१
		३६१४२
		३६१५९
		२११३१
		४३११००
		परिव्याण ३.
		३६११०५
		परिव्याध १.
		३६१३३०
		" १.
		३६१३०२
		परिवाज १.
		३६११६०
		परिशाय १.
		४३११६८
		परिशुष्क ३.
		४३१८८
		परिश्व २.
		३६११३३
		परिष्कार १.
		४३११३३
		परिष्कृ १.
		४३११६९
		परिसर १.
		४३११२
		परिसर्प १.
		पा१२८
		परिसर्पा २.
		पा१२८
		परिस्कन्द १.
		३६११५८
		परिस्तोम ३.
		४३११६६
		परिस्पन्द १.
		४३१५१
		परिस्नावी २.
		४३१३१
		परिस्नुत २.
		३६१४५
		परिस्तुता २.
		३६१४५
		परिहार १.
		पा१२७
		परिहृक १. २. ३.
		पा१३०
		परिच्छा १.
		३६११२२
		पा११३३
		८११३१
		पा११०५
		८११२९
		३६११३५
		३६१३२
		३६११२१
		३६१११७
		३६१४
		४३१५१
		८११२८
		४३१६८
		३६१४३
		३६१४३
		३६१६०
		३६१३१
		३६१४२
		३६१५९
		२११३१
		४३११००
		परिव्याण ३.
		३६११०५
		परिव्याध १.
		३६१३३०
		" १.
		३६१३०२
		परिवाज १.
		३६११६०
		परिशाय १.
		४३११६८
		परिशुष्क ३.
		४३१८८
		परिश्व २.
		३६११३३
		परिष्कार १.
		४३११३३
		परिष्कृ १.
		४३११६९
		परिसर १.
		४३११२
		पर

[परेत]

परेत १. २. ३.	६।५।५२
परैतराज १.	१।२।३४
परैषवि ४.	८।८।९
परैष्टुका २.	३।५।४९
परैधित १.	३।९।२
" १. २. ३.	५।४।४९
परोक्ष १. १. ३.	५।४।१३३
परोवण्ट १.	३।७।९८
परोष्णी २.	२।३।४४
पर्कट १.	२।३।३१
" ३.	३।३।२१७
पर्कटिन् १.	३।३।२८
पर्जनी २.	३।३।२१२
पर्जन्य १.	७।१।४३
पर्ण ३.	३।३।१७
" १.	३।३।२९
" १.	८।६।१२
पर्णक्ष १. २. ३.	३।६।१३१
पर्णशवर १.	३।५।४७
पर्णशाला २.	४।३।२६
पर्णादा २.	३।४।६३
पर्णास १.	३।३।११९
पर्णिका २.	३।३।१२४
पर्वन ३.	२।४।८
पर्पट १.	२।४।१२८
पर्पटी २.	३।२।४१
" २.	३।३।२१३
पर्पण १.	३।३।१०७
पर्परा २.	३।३।२१३
पर्परी २.	४।४।९९
पर्परीक १.	८।१।२५
पर्यङ्क १.	३।६।२१३
" १.	४।३।१६५
" १.	७।१।५२
पर्यटन ३.	५।२।११
पर्यलुयोग १.	२।४।३७
पर्यन्तपर्वत १	३।१।१७
पर्यन्तमू २.	४।३।१२
पर्यन्त १.	३।६।११४

वजयन्तीकोषः

पर्यवस्था २.	५।२।३०
पर्यवस्थात् १.	३।७।४२
पर्यस्ति २.	३।६।१५०
पर्याण ३.	३।७।११४
पर्याधात् १.	३।६।७४
पर्याप्त ३.	४।३।१०५
" १. २. ३.	७।५।५३
पर्याप्तम् ४.	४।३।१०४
पर्याय १.	३।६।११३
" १.	७।१।५५
पर्याहार १.	३।७।४५
पर्याहित १.	३।६।७४
पर्युदञ्चन ३.	३।८।४
पर्येषणा २.	३।६।१२१
पर्वत १.	३।२।१
पर्वन् ३.	२।१।७३
" ३.	३।३।११
" ३.	३।६।६२
" ३.	६।३।१९
" १. ३.	८।९।३१
पर्शु १. ३.	४।४।११५
पल ३.	४।४।१०६
" ३.	५।१।४५
" ३.	५।१।४६
" ३.	५।१।५१
पलगण्ड १.	३।९।१४
पलगण्डक १.	३।५।४८
पलङ्कष १.	३।८।११२
पलङ्कषा २.	३।३।१४१
पलतेजस् ३.	४।४।१०७
पलल १.	३।३।६९
" ३.	४।४।१०६
" ३.	७।३।२१
पलशत ३.	५।३।६०
पलशीनक १.	५।३।५०
पलाण्डु १.	३।३।२०५
" १.	३।३।२०७
पलाण्डुक १.	३।३।१५३
पलान्न ३.	३।७।२१०
पलाक १. ३.	३।८।६४

[पवित्र]

पलाक्ष ३.	३।३।१६
" १.	३।३।२९
" १.	३।३।२०३
पलाशिका २.	३।३।१९५
पलाशिन १.	७।१।५४
पलिकिनी २.	३।४।६३
पलिकनी २.	३।४।४६
" २.	४।४।२१
पलित ३.	३।८।७९
" ३.	५।४।१४४
" १. ३.	७।५।५२
पलिन १.	३।५।१९
पलिपादक ३.	३।७।७५
पलुष १.	५।३।४२
पलोद्भव ३.	४।४।१०७
पल्यङ्क १.	४।३।१६५
पल्ययन ३.	३।७।११४
" १.	४।४।४६
पल्ल १.	३।५।१४
पल्लव १. ३.	३।३।१७
" १.	४।४।३९
" १. ३.	७।५।५८
पल्लवाकुर १.	३।३।१५
पल्ली २.	४।१।३०
" २.	४।३।२७
" २.	६।२।२३
पव १.	३।८।४६
(पल)	
" १.	५।२।३१
पवन १.	१।२।४९
" १.	१।२।५३
" ३.	४।३।६६
" ३.	५।२।३१
पवमान १.	१।२।२४
" १.	१।२।४८
" १.	८।१।२७
पवि १.	१।२।१३
" १.	६।१।३३
पवित्र ३.	३।२।२२
" ३.	३।६।२०
" १.	३।८।५२

पवित्र]

पवित्र ३.	४।२।४०
" १. २. ३.	५।४।६५
" १. २. ३.	७।५।५८
पशु १.	३।४।३०
" १.	३।४।६२
" १.	३।४।७२
" १.	३।६।८४
" १.	३।६।११२
" ४.	८।८।२१
पशुगोयुग १.	५।१।१८
पशुपति १.	१।१।३८
" १.	८।१।२६
पशुबन्ध १.	३।६।८४
पशुसंस्कार १.	३।६।९३
पश्चात्ताप १.	३।६।१८५
पश्चात्सुन्दर १.	३।३।१५७
पश्चिम १. २. ३.	५।४।७७
पश्चिमाङ्ग ३.	४।४।६९
परयतोहर १.	३।९।५७
पछौही २.	३।४।४७
पांसु १.	३।८।२५
पांसुचन्दन १.	१।१।३८
पांसुज ३.	३।८।१२३
पांसुलवण ३.	३।८।१२२
पांसुला २.	४।४।१०
पाक १.	३।३।८३
" १.	३।८।४५
" ३.	५।२।४१
" १.	६।१।३३
" १.	८।९।१४
पाककृष्ण १.	३।३।८३
पाककृष्णफल १.	३।३।८३
पाकपुटी २.	४।३।२३
पाकफल १.	३।३।८३
पाकफलकृष्ण १.	३।३।८३
पाकमण्डल ३.	३।९।२७
पाकयज्ञ १.	३।६।८३
पाकयज्ञिक १.	१।२।२७
पाकल १.	३।७।९१
" ३.	३।८।९९
पाकवर्तन ३.	५।२।४१

शब्दानुक्रमणिका

पाकशासन १.	१।२।३
पाकशुक्ला २.	३।२।१३
पाकु २.	८।९।३
पाक्य ३.	३।८।१२२
" ३.	३।८।१२४
पागल १.	३।५।१५
पाचन १.	५।३।२६
पाज १.	४।३।७६
पाञ्चजन्य १.	१।१।१७
पाञ्चमिक १.	५।१।५९
पाञ्चालिका २	३।९।१४
पाट् ४.	८।८।२
पाटल १.	५।३।१७
" १. २. ३.	७।५।५६
पाटला १. २. ३.	३।३।२३
पाटलि १. २.	३।३।२०
पाटलिङ्गिका २.	३।८।४९
पाटली २.	३।६।६२
पाटव ३.	४।४।१४२
पाटूर १.	२।१।७०
पाठक १.	३।३।२३
पाठा २.	३।३।१३१
पाठीन १.	४।१।४२
पाणि १.	४।४।७३
" १.	५।१।४९
" १.	८।६।९
पाणिक १.	५।१।३८
पाणिगृहीती २.	४।४।३५
पाणिग्रह १.	३।६।५५
पाणिच १.	३।७।१
पाणिनि १.	३।६।१५४
पाणिन्युपज्ञ ३.	३।९।२१
पाणिपात्र १. २. ३.	३।६।१३२
पाणिमुक्त ३.	३।७।१९५
पाणिमूल ३.	४।४।७३
पाणिरुह १.	८।५।७६
पाणिवाद १.	३।९।७१
पाणिश १.	३।५।२०
पाण्डुर १.	५।३।१०
" १.	५।३।१२

[पाद]

पाण्डिय १ ब.	२।१।३३
पाण्डु १.	३।३।२२२
" १.	५।३।१२
पाण्डुक १.	३।५।२७
पाण्डुकम्बलिन् १. २. ३.	३।७।१२९
पाण्डुभूम १. २. ३.	३।१।४५
पाण्डुल १.	५।३।१४
षाण्डुवर्णक १.	४।४।१३७
पाण्डुसोपाक १.	३।५।४३
" १.	३।५।१०६
पाण्ड्य १ ब.	३।१।३३
पात् २.	४।४।५४
पातक ३.	३।६।१६८
पातन ३.	३।७।१७४
पाताल ३.	४।१।१
" ३.	७।४।२२
" ३.	८।३।१८
पातालमूलिक १. २. ३.	३।६।१२९
पाताली २.	७।२।१७
पातिक १.	३।७।१४०
पातुक १. २. ३.	५।४।३८
पात्म १.	२।१।८८
पात्र ३.	२।३।२६
" ३.	३।६।१४६
" ३.	३।९।६८
" ३.	४।२।३२
" ३.	५।१।५५
" ३.	६।३।२१
" १. २. ३.	८।९।३८
पाथस ३.	४।२।२१
" ३.	६।३।२०
पाथि १.	२।१।१३
पाथिस ३.	६।३।२१
पाथेय ३.	३।९।७
पाथेयका २.	३।३।२१९
पाद १.	२।१।१६
" १.	३।२।७
" १.	४।४।५६

पाद]	वैजयन्तीकोषः	[रालम
पाद १.	५२१७	पाम्मन् १.
पाददण्ड १.	३१७१८३	पामन् १.
पादप १.	७११४५	पामन १. २. ३.
पादपच्छाय १. २. ३.	७११४५	पामर १.
पादपाश १.	३१७११२	" १. २. ३.
पादपुटी २.	३१७११५	" १. २. ३.
पादप्रसार १.	३१६२१७	पामा २.
पादफली २.	३१७११५	पामारि १.
पादरक्षणी २.	३१७१५५	पायस ३.
पादरक्षिणी २.	३१६१६२	" ३.
पादवाहिक १.	३१११८	पायु १.
पादस्फोट १.	३१६१२२	पाय्य १.
(पादः, स्फोटः)		पार १.
पादात १.	३१७१३९	पारत १.
" ३.	५११११	पारद १ व.
पादायुध १.	२३११४	पारधेनुक १.
पादावर्त १.	३१२२१	" १.
पादिक ३.	३१७१४०	पाररक्षिक १.
" १.	५११३८	पारशव १.
" ३.	५११५२	" १.
पादिका २.	३१३३९	" १.
(पालिका)		" १.
पादिकाशीर्ष ३.	३१३४०	" १.
(पालिकाशीर्ष)		" १.
पादुका २.	३१७५०	" १.
" २.	३१३१६२	पारश्वधिक १. २. ३.
पादू २.	६१२२४	पारसीक १.
पादूकृत १.	३१९४३	" १.
पादोपवेश १.	३१६२१२	पारसीककुल ३.
पान १.	३१६२०४	पारायण १.
" ३.	३१३१०	" १.
पानगोष्ठिका २.	३१९५०	पारावत १.
पानीय ३.	३१२२	" १.
पानीयशालिकार.	३१२२३	" १. २. ३.
पानीयसम्भव ३.	३१८१२२	पारावतपदी २.
पाप १.	३१३१७७	पारावर १.
" १.	३१६१६८	पारावार १.
" १. २. ३.	६१५५०	पाराशरिन् १.
पापबेली २.	३१३१३०	पाराशर्य १.
पारि २.	६१२२४	
पारिकर्मिक १. २. ३.	३१७१९	
पारिकाङ्क्षिक १. २. ३.	३१६१२६	
पारिजातक १.	१३११४	
" १.	३३३४४	
पारितथ्या २.	३३१३६	
पारिन् १.	३११५४	
पारिपन्थिक १.	३१९५६	
पारिपार्श्विक १.	३१९६७	
पारिप्लव १. २. ३.	५१३७९	
पारिभद्र १.	३३१५४	
" १.	३३६७१	
पारिभाष्य ३.	३३८९९	
पारियाणिक १. २. ३.	३३७१२८	
पारियात्रक १.	३२२३	
पारिषद् १.	१११५१	
परिहार्य ३.	३१३१४४	
परिहास्य १.	५३१५०	
पारी २.	३३१५९	
पारीन्द्र १.	३३४११	
पारे ४.	८१८२१	
पार्थिव १.	३३७११	
पार्थिवेन्द्र १.	१११२२	
पार्वण ३.	३३६८३	
पार्वत १.	३३३७५	
पार्वती २.	१११५८	
" २.	३२२१६	
पार्श्व १. ३.	३१३६९	
" ३.	५१११४	
" १. ३.	६१५५१	
पार्श्वस्थ १.	३१९१६९	
पार्श्वोद्विग्न १.	३११४६	
पार्णि १.	३३७७९	
" १. २.	६१५४०	
पार्णिग्राह १.	३३७४०	
" १. २. ३.	३३७१४१	
पालम १.	३३३२३४	
(बालम)		

पालन]	शब्दानुक्रमणिका	[पितृव्य
पालन १.	३११४६	पिण्ड १.
पालाश १.	५३१२२	" १.
पालि १.	३३६५०	" १.
" २.	३३८२६	पिण्डक १.
" २.	३३९३६	" १.
" २.	६१२२२	" १.
पालिकाष्ठ ३.	३३१०	पिण्डफला २.
पाली २.	३३६४९	पिण्डा २.
" २.	३३९१२६	पिण्डारक १.
पालुखञ्जन १.	३३५१०	" १.
पालुषी २.	३३३३५	पिण्डि १.
पालक १.	३३९५५	" १.
पाल्लवा २.	८१९६	पिण्डिका २.
पावक १.	१२११५	" २.
" १.	३३३८६	पिण्डित १. २. ३.
" १.	३३६९२	पिण्डिल १. २. ३.
पावन १.	३३८१११	पिण्डीक १.
पावनक १.	३३८१३०	पिण्डीतक १.
पावनी २.	३३६१५	पिण्डीशूर १. २. ३.
पाश ३.	३३९३०	
" १.	६११३७	पिण्डूष १.
पाशक १.	३३९६०	पिण्या २.
पाशबन्धन २.	३३६६१	पिण्याक १.
(पादबन्धन)		" १.
पाशिन १.	१२१४५	पितामह १.
पाशुपत १.	३३३१९४	" १.
पाशुपाक्य ३.	३३७४	पितृ १.
पाशुबन्धिक १.	१२१२५	" १.
पाश्चात्य १ व.	३११३३	" १ व.
" १. २. ३.	५१३७७	पितृकार्य ३.
पाश्या २.	५१११४	पितृज्येष्ठ १.
पाषण्ड १.	३३६२३८	पितृदान ३.
" १.	३३६२३९	पितृनख १.
पाषाण १.	३३२८	पितृपति १.
पाषाणदारक १.	३३९२२	पितृपितृ १.
पाषाणपुष्प १.	३३८९६	पितृप्रपा २.
पासि १.	२१११४	पितृप्रसू २.
पिक १.	२३३२६	पितृभोजन ३.
पिङ्ग १.	३१११४	पितृयाण १.
" १.	५३११८	पितृवन ३.
पिङ्गल ३.	३३३२०२	पितृव्य १.
पिङ्गल १.	३११२७	
" १.	५३११८	
पिङ्गलकेशाक्षी २.	३३६५२	
पिङ्गला १.	२११९	
" २.	२३३२१	
पिङ्गाण १.	५३१३३	
पिच्छण्ड १.	७११५७	
पिच्छिण्ड १. २. ३.	५३४७	
पिच्छिण्ड १.	३३३८९	
पिच्छिण्डिका २.	३३९५८	
पितु १.	३३९९	
" १.	५११४९	
पितुमन्द १.	३३३७५	
पितुल १.	३३३५०	
" १.	३३३७६	
पितूल ३.	५११४७	
पिच्छट ३.	३३२३०	
पिच्छनद्ध १.	३३३२०६	
पिच्छन्दका २.	३३३३१	
पिच्छा २.	३३३८०	
पिच्छित १. २. ३.	५३८३	
पिच्छिल १. २. ३.	५३३४	
पिच्छिला २.	३३३९२	
पिच्छीला २.	३३९१२६	
पिच्छ ३.	२३३३९	
" ३.	६३३२१	
पिञ्ज १.	५३३१३	
पिञ्जा २.	३३३२११	
पिञ्जप १.	५३३२४	
पिट १.	३३३६४	
पिटक १.	३३३६३	
" १.	३३३६४	
" १. २. ३.	३३३१२३	
" १. २. ३.	८१९३७	
पिटका २.	३३३१२३	
" २.	८१९३७	
पिठर १.	३३३५५	

[पितृवत्सलीय]

पितृवत्सलीय १.	४४४४२	पीठर ३.	३३३२००
पित्त ३.	४४४१२१	पीठीव ३.	४४४६०
पित्तल ३.	३३३२२६	पीडन ३.	३३३२०७
पित्या २.	२११७२	पीडा २.	३३३१८७
पित्सत् १.	२३३११	" २.	६३३२२५
पिधान ३.	२११६४	पीडित १. २. ३.	४४४११५
" ३.	४३३५५	पीत १.	३३३११४
पिनद्ध १. २. ३.	३३३१४२	" १.	५३३१११
पिनाक १.	१११५०	पीतकङ्कु २	३३३१५६
" १. ३.	७५५५७	पीतघोषा २.	३३३१६२
पिनाकिन् १.	११३३९	पीतचन्दन ३.	३३३११३
पिपतिपत् १.	२३३११	पीततण्डुला २.	३३३१५५
पिपासा २.	३३३१८१	पीतदारु ३.	३३३१७१
पिपासित १. २. ३.	५३३३७	" १.	३३३१२२
पिपासु १. २. ३.	५३३३७	" ३.	३३३११४
पिपीलिका २.	४३३३६	पीतधातु १.	३३३१११
पिप्पल ३.	३३३१२०	पीतधूमल १.	५३३१२०
" १.	३३३१२७	पीतन ३.	३३३११४
" ३.	४३३६८	" १.	३३३३३१
पिप्पलक १.	३३३१२२	" ३.	३३३११७
पिप्पली २.	३३३७३	पीतपुष्प १.	३३३१७०
" "	३३३७६	पीतमुण्ड १.	३३३१२९
पिप्पलीमूल ३.	३३३९१	पीतरक्त १.	५३३१७७
पिप्पिका २.	३३३२४	पीतरसा १.	३३३१३९
पिप्पु १.	४३३९७	पीतल ३.	५३३१११
पिलाट १.	३३३७३	पीतलिका २.	३३३७३३
पिल्ल १.	६३३५	पीतलोह ३.	३३३२२५
पिशङ्ग १.	५३३१८	पीतलोहित १.	५३३१२०
पिशाच १.	१३३३४	पीतश्यामल १.	५३३१२०
" १.	७३३५७	पीतसागर १.	३३३१५१
पिशित ३.	४३३१०७	पीतशाल १.	३३३३३९
पिशुन १. २. ३.	५३३२५	पीतसितासित १.	५३३१२२
पिष्ट १.	५३३१५५	पीतहरित १.	५३३२२१
पिष्टक १.	४३३७२	पीता २.	३३३२२१
पिष्टपचन ३.	४३३१५७	पीताम्बर ३.	१३३१११
पिष्टपिण्डका २.	४३३७२	पीतामलान १.	३३३१८८
पिष्टात १.	४३३१५७	पीति १.	३३३७९१
पीठ ३.	४३३१६४	" १. २.	३३३५५१
पीठबन्धन १.	४३३८०	पीतु १.	२३३३३
पीठमर्द १.	३३३७०	पीथ १.	१३३१२९

वैजयन्तीकोषः

[पुष्पील]

पीथ ३.	३३३१३८	पीथ ३.	३३३१३८
" ३.	३३३१४५	" ३.	३३३१४५
" ३.	६३३२२	" ३.	६३३२२
पीन १. २. ३.	५३३६	पीनकोशी २.	३३३१६५
पीनकोशी २.	३३३१६५	पीनस १.	४३३११४
पीनस १.	४३३११४	" १.	४३३१२१
पीनस्कन्ध १.	३३३१५	पीनस्तनी २.	३३३१४९
पीनस्तनी २.	३३३१४९	पीनाह १.	४३३१८
पीनोष्णी २.	३३३१४९	पीनोष्णी २.	३३३१४९
पीयु १.	६३३३२	पीयूष ३.	३३३१४६
पीयूष ३.	३३३१४६	" ३.	७३३२३
" ३.	७३३२३	पीलु १.	३३३१४५
पीलु १.	३३३१४५	" १.	६३३३२
" १.	६३३३२	पीलुक १.	२३३३४
पीलुक १.	२३३३४	पीलुकुण १.	८३३११४
पीलुकुण १.	८३३११४	पीलुनी २.	३३३११४
पीलुनी २.	३३३११४	पीलुपर्णिका २.	३३३११४
पीलुपर्णिका २.	३३३११४	पीलुपर्णी २.	३३३११४
पीलुपर्णी २.	३३३११४	पीवन् १. २. ३.	५३३६
पीवन् १. २. ३.	५३३६	पीवर १.	३३३३२९
पीवर १.	३३३३२९	" १.	५३३६
" १.	५३३६	पीवरी २	३३३१४२
पीवरी २	३३३१४२	पुंश्रली २.	४३३९
पुंश्रली २.	४३३९	पुंस् १.	४३३२
पुंस् १.	४३३२	" १.	८३३६१
" १.	८३३६१	पुंसवन ३.	३३३३३
पुंसवन ३.	३३३३३	" ३.	३३३१४५
" ३.	३३३१४५	पुंहल १.	४३३१२५
पुंहल १.	४३३१२५	पुङ्ग १.	३३३१८५
पुङ्ग १.	३३३१८५	" १.	६३३३३
" १.	६३३३३	पुङ्गर्भः १.	४३३३९
पुङ्गर्भः १.	४३३३९	पुङ्गव १.	७३३५७
पुङ्गव १.	७३३५७	पुङ्गाह १.	३३३१००
पुङ्गाह १.	३३३१००	पुच्छ १. ३.	३३३७४
पुच्छ १. ३.	३३३७४	पुच्छभाग १.	३३३८१
पुच्छभाग १.	३३३८१	पुञ्ज १.	५३३३३
पुञ्ज १.	५३३३३	पुञ्जिका २.	२३३७
पुञ्जिका २.	२३३७	पुञ्जील १.	३३३२३

[पुट]

पुट २.	३३३२८	पुनरुद्धा २.	३३३४५
" १. २. ३.	३३३३३	पुनर्नव १.	४३३७६
" १.	४३३११	पुनर्नवा २.	३३३१४६
" १.	४३३१४	पुनर्भव १.	४३३७६
" १. २. ३.	८३३३७	पुनर्भू २.	३३३४५
पुटकिनी २.	४३३४४	पुनर्भूज १.	४३३४५
पुटभेद १.	४३३३०	पुनर्भुवन् १.	२३३२५
पुटभेदन ३.	४३३३३	पुनर्वसु १.	२३३३९
पुटानिल १.	१३३५३	" १.	३३३५८
पुटी २.	३३३३३	पुष्पाग १.	३३३७०
" २.	८३३३७	पुष्पिका २.	४३३३३
पुष्ट १.	६३३३२	पुष्ट २.	३३३३३
पुष्टक १.	५३३३०	" २.	४३३३१
पुष्टरीक १.	२३३३८	" २.	८३३३६
" ३.	३३३३३	पुष्ट १.	३३३३४
" १.	४३३१५	" ३.	३३३३३
" १.	४३३१९	" १.	३३३२७
" ३.	४३३२३	" ३. २.	४३३३१
" ३.	४३३४०	पुष्टः (-स्) ४.	८३३३३
" १.	८३३३६	पुष्टक १ ब.	३३३३०
पुष्टरीका १.	१३३३०	पुष्टः (-स्) ४.	८३३३३
पुष्ट १ ब.	३३३३०	पुष्टद्वार ३.	४३३३५
" १.	३३३२२६	पुष्टन्दर १.	१३३२
पुष्टलक्षण २.	३३३३०	पुष्टन्ध्री २.	४३३२१
पुष्टा २.	३३३३३	पुष्टमद १.	३३३१०८
पुष्ट ३.	३३३३६८	पुष्टरत्न १.	३३३१८
" १. २. ३.	६३३५०	पुष्टस्कृत १. २. ३.	८३३३९
पुष्टगन्धिक ३.	४३३४०	पुष्टस्तात् ४.	८३३३३
पुष्टयजन १.	८३३२६	पुष्टसर १. २. ३.	३३३३५
पुष्टयजनेश्वर	१३३५८	पुरा ४.	८३३२३
पुष्ट्याह ३.	२३३३७	पुराज १.	१३३८
" ३.	८३३२२	पुराण ३.	३३३३८
पुष्टिका २.	२३३३८	" ३.	३३३२९
पुष्ट १.	४३३३९	" १. २. ३.	५३३८७
" १.	४३३४८	पुराणान्त १.	१३३३५
" १.	८३३३३	पुरातन १. २. ३.	५३३८७
पुष्टजीव १.	३३३३७९	पुरावृत्त ३.	२३३३८
पुष्ट १.	८३३३३	पुरी २.	४३३३१
पुनःपुनः (र्) ४.	८३३३३	" २.	४३३३१
पुनर् ४.	८३३२४	पुरीष ३.	३३३२४

शब्दानुक्रमणिका

पुनरुद्धा २.	३३३४५	पुरीष ३.	४३३११८
पुनर्नव १.	४३३७६	पुरु १. २. ३.	५३३८५
पुनर्नवा २.	३३३१४६	पुरुष १.	१३३८
पुनर्भव १.	४३३७६	" १.	४३३२
पुनर्भू २.	३३३४५	" १.	७३३४६
पुनर्भूज १.	४३३४५	पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०
पुनर्भुवन् १.	२३३२५	पुरुषाद १.	१३३४१
पुनर्वसु १.	२३३३९	पुरुषोत्तम १.	१३३३२
" १.	३३३५८	पुरुह १. २. ३.	५३३८५
पुष्पाग १.	३३३७०	प्रहृत १.	१३३२
पुष्पिका २.	४३३३३	पुरोग १. २. ३.	३३३४५
पुष्ट २.	३३३३३	पुरोगम १. २. ३.	३३३४६
" २.	४३३३१	पुरोगामिन् १.	३३३७०
" २.	८३३३६	" १. २. ३.	३३३४६
पुष्ट १.	३३३३४	पुरोद्गाह १.	३३३९९
" ३.	३३३३३	पुरोधस् १.	३३३२४
" १.	३३३२७	पुरोनुवाक्या २.	३३३१२
" ३. २.	४३३३१	पुरोभागिन् १. २. ३.	५३३३४
पुष्टः (-स्) ४.	८३३३३	पुरोवचस् ३.	२३३४१
पुष्टक १ ब.	३३३३०	पुरोवात १.	१३३५४
पुष्टः (-स्) ४.	८३३३३	पुरोहित १.	३३३२४
पुष्टद्वार ३.	४३३३५	पुरोहिन् १.	३३३३४
पुष्टन्दर १.	१३३२	पुलक १.	३३३४१
पुष्टन्ध्री २.	४३३२१	" १.	३३३३३
पुष्टमद १.	३३३१०८	" १.	७३३४७
पुष्टरत्न १.	३३३१८	पुलकिन् १.	३३३३०
पुष्टस्कृत १. २. ३.	८३३३९	पुलाक १.	७३३४७
पुष्टस्तात् ४.	८३३३३	पुलाकिन् १.	३३३३५
पुष्टसर १. २. ३.	३३३३५	पुलिन ३.	४३३३३
पुरा ४.	८३३२३	पुलिन्द १.	३३३४७
पुराज १.	१३३८	" १.	३३३४७
पुराण ३.	३३३३८	" १.	३३३८३
" ३.	३३३२९	पुलिन्दक १.	४३३३६
" १. २. ३.	५३३८७	पुलोमजा २.	१३३११
पुराणान्त १.	१३३३५	पुलोमशत्रु १.	१३३३३
पुरातन १. २. ३.	५३३८७	पुलकस १.	३३३४८
पुरावृत्त ३.	२३३३८	" १.	३३३८२
पुरी २.	४३३३१	" १.	३३३८५
" २.	४३३३१	" १.	३३३८८

[पुष्कस]

पुरीष ३.	४३३११८	पुष्कस १.	३३३४८
पुरु १. २. ३.	५३३८५	" १.	३३३४८
पुरुष १.	१३३८	" १.	३३३४८
" १.	४३३२	" १.	३३३४८
" १.	७३३४६	" १.	३३३४८
पुरुषव्याघ्र १.	२३३३०	" १.	३३३४८
पुरुषाद १.	१३३४१	" १.	३३३४८
पुरुषोत्तम १.	१३३३२	" १.	३३३४८
पुरुह १. २. ३.	५३३८५	" १.	३३३४८
प्रहृत १.	१३३२	" १.	३३३४८
पुरोग १. २. ३.	३३३४५	" १.	३३३४८
पुरोगम १. २. ३.	३३३४६	" १.	३३३४८
पुरोगामिन् १.	३३३७०	" १.	३३३४८
" १. २. ३.	३३३४६	" १.	३३३४८
पुरोद्गाह १.	३३३९९	" १.	३३३४८
पुरोधस् १.	३३३२४	" १.	३३३४८
पुरोनुवाक्या २.	३३३१२	" १.	३३३४८
पुरोभागिन् १. २. ३.	५३३३४	" १.	३३३४८
पुरोवचस् ३.	२३३४१	" १.	३३३४८
पुरोवात १.	१३३५४	" १.	३३३४८
पुरोहित १.	३३३२४	" १.	३३३४८
पुरोहिन् १.	३३३३४	" १.	३३३४८
पुलक १.	३३३४१	" १.	३३३४८
" १.	३३३३३	" १.	३३३४८
" १.	७३३४७	" १.	३३३४८
पुलकिन् १.	३३३३०	" १.	३३३४८
पुलाक १.	७३३४७	" १.	३३३४८
पुलाकिन् १.	३३३३५	" १.	३३३४८
पुलिन ३.	४३३३३	" १.	३३३४८
पुलिन्द १.	३३३४७	" १.	३३३४८
" १.	३३३४७	" १.	३३३४८
" १.	३३३८३	" १.	३३३४८
पुलिन्दक १.	४३३३६	" १.	३३३४८
पुलोमजा २.	१३३११	" १.	३३३४८
पुलोमशत्रु १.	१३३३३	" १.	३३३४८
पुलकस १.	३३३४८	" १.	३३३४८
" १.	३३३८२	" १.	३३३४८
" १.	३३३८५	" १.	३३३४८
" १.	३३३८८	" १.	३३३४८

[पुष्कस]

पुष्कस १.	३१५८९
" १.	३१५९१
पुष् १.	४१४६१
पुष्पित १. २. ३.	५४१११४
पुष्कर १.	३८८८८
" ३.	७३१२४
पुष्करसार १.	४१११६
पुष्कराह्वय १.	२३३३३
पुष्करिणी २.	४२१५
पुष्कल १.	३६१५५
" ३.	३६१६६
" १.	४३१२२
" १. २. ३.	७४११९
पुष्ट १. २. ३.	५४१११४
पुष्टि २.	११११६
पुष्टिवर्धन १.	२३३२८
पुष्प १.	३३३१८
" ३.	४४११६
" ३.	८१११५
पुष्पक १. ३.	३१५५४
" १.	४१११८
पुष्पकाल १.	२११८८
पुष्पकेतु १.	३३३३३
पुष्पदन्त १.	२११८
पुष्पधन्वन् १.	१११२८
पुष्पफल १.	३३३३२
पुष्पफलित् १.	३३३६
पुष्परजस् ३.	३८१११७
पुष्पलोलुप १.	२३३४२
पुष्पव १.	३१५५४
" १.	३१५१०१
पुष्पवत् १.	२११२९
पुष्पवती २.	४४११५
पुष्पवाटी २.	३३३४
पुष्पवीर्या २.	३३३१२८
(पुष्पी, वीर्या)	
पुष्पसारण १.	२११८७
पुष्पाढ्य १. २. ३.	३६१२८
पुष्पाभिकीर्णक १.	४११११

वैजयन्तीकोषः

पुष्पाभिकीर्णक १.	४१११६
पुष्पिका २.	३१९१२७
पुष्पित १. २. ३.	३३३८
पुष्प १.	२११३९
" १.	२११९१
पुष्पफल १.	३३३१७०
पुष्परथ १.	३७१२६
पुष्पल १.	३७८८५
पुस्त ३.	३९११६
पुस्तक ३.	४३११०९
पू २.	३६११६३
पूग १.	३३३२१७
" १.	५१११
पूगतिथ १. २. ३.	
पूगपट्ट १.	५१११९
पूगपुष्पिका २.	३३३२२२
पूगावपनी २.	४३११०८
पूजा २.	३६३२९
पूजित १. २. ३.	
" १.	५४११३३
पूज्य १. २. ३.	६१५५१
पूज्यपाद १. २. ३.	
" १.	८११४६
पूत १. २. ३.	३८१६७
" १. २. ३.	५४१६५
पूतना २.	२१११८
पूति १. २.	३१५३५
" १.	५३१५७
पूतिक १.	३३३६२
पूतिकरज १.	३३३६२
पूतिकाष्ठ ३.	३३३७१
पूतिकाष्ठक ३.	३३३७४
पूतिपुष्पी २.	३३३३४
पूतिफली २.	३३३१०८
पूयण्ड १.	२३३४८
पूप १.	४३३७२
पूय ३.	४४१११८
पूर १.	४३३३०
पूरक १.	३३३३३
" १.	३८१४४

[पृतना]

पूरक १.	३९१६४
पूरणा २.	३३३१४५
पूरणी २.	३३३९०
" २.	३३३१४७
पूरित १. २. ३.	५४१८६
पूरी २.	३३३१४५
" २.	३८१२५
पूरुष १.	४४३
पूर्ण ३.	३७११९१
" १. २. ३.	५४१८६
" १. २. ३.	५४१८६
पूर्णकलश १. ३.	३६१५८
पूर्णकुम्भ १.	४३३६१
पूर्णकूट १.	२१३३२
पूर्णकूटक १.	२१३३२
पूर्णपात्र ३.	३६३६१
पूर्णपात्रक ३.	३६३१७
पूर्णमासी २.	२१३७२
पूर्णा २.	२१३७२
पूर्णनिक ३.	३६३६१
पूर्ण २.	४३१३३
पूर्णिका २.	२१३७२
पूर्णिमा ३.	२१३७२
पूर्त ३.	३६३११५
पूर्व १. २. ३.	५४१४७०
" १. २. ३.	६१५४७
पूर्वगन्धिक १.	३११८
पूर्वज १.	४४३३१
" १. २. ३.	५४४४
पूर्वदिकपाल १.	१३३२
पूर्वदेव १.	१३३१०
पूर्वरङ्ग १.	३९१३२९
पूर्वाह्न १.	२१३६४
पूर्वेष्टुः (-स्) ४.	८१३३२
" ४.	८११८
पूल १. ३.	३८१६४
पूलक १.	४४१११५
पूषन् १.	२१११०
पूष्य ३.	३८१७३
पूच्छा २.	२४३३७
पृतना २.	३७१५५

[पृतना]

पृतना २.	३७१५८
पृतनासाह १.	१३३२
पृथक् ४.	८१८४
पृथक्क्रिया २.	२४४४०
पृथक्पर्णी २.	३३३३३६
पृथग्जन १.	८१३२६
पृथक् १ ब.	३१३४०
पृथिवी २.	३१३३
पृथिवीपति १.	८११५३
पृथु १.	३४३४०
" २.	३८१८५
" २.	३८१३२२
" १. २. ३.	५४१८०
पृथुक १.	४३३६८
" १.	७११५८
पृथुचित्र १.	३६३४१
पृथुच्छद १.	३३३७६
पृथुरोमन् १.	४१३४१
पृथुल १. २. ३.	५४१८०
पृथुशालिका २.	३८१८५
पृथुसूय १.	३८१४०
पृथुहस्त १.	३७१५१
पृथिवका २.	३८१८५
" २.	३८१३२२
पृथ्वी २.	३१३३
" २.	३८१८५
पृथ्वीका २.	३८१८७
पृदाकु १.	७११५८
पृश्नि १. २. ३.	४५१५
पृश्निपर्णी २.	३३३३३६
पृषत् २. ३.	२३३८
पृषत १.	२३३८
" १.	३४३३३
" १.	३६३९९
पृषता २.	३६३४७
पृषत्क १.	३७१७९
पृषदंशक १.	३४३७१
पृषदश्च १.	१३३५०
पृषदाज्य ३.	३६३९९
पृष्ठ ३.	४४३६९
पृष्ठग्रन्थि १.	४४३३३

शब्दानुक्रमणिका

पृष्ठचक्षुस् १.	४१३४६
पृष्ठमध्यास्थि ३.	४४३९१
पृष्ठमांसादन ३.	५३३८
पृष्ठवाह्य १. २. ३.	३४३५६
पृष्ठस्थ १. २. ३.	३७१४१
पृष्ठ्य १. २. ३.	३४३५६
" ३.	५१३४४
पेचक १.	२३३२२
" १.	७१५३
पेचिका २.	२३३३१
पेट १. २. ३.	८१३३७
पेटक १.	४३३६३
" ३.	५१३३
पेटा २.	४३३६३
पेटी २.	८१३३७
पेख १.	३४३६४
पेय ३.	४३३९१
पेरा २.	३१३४
पेराल १.	५३३२०
पेरु १.	२१३३३
" १.	५३३३२
पेलव १.	३१५८५
" ३.	३८१७९
" १. २. ३.	५४३३६
पेशल १. २. ३.	५४३५४
" १. २. ३.	५४३३७
" १. २. ३.	७४३१९
पेशि २.	३३३८९
" २.	४४३१२२
पेशी १.	२३३५०
पैङ्गराज १.	४१३१७
पैठर १. २. ३.	४३३९४
पैण्डूष १. ३.	४४३९३
पैतृत्वसेय १.	४४३४२
पैष्टिकी २.	३९१५०
पोगण्ड १. २. ३.	५४३११
पोटकी २.	४३३२४
पोटगल १.	४१३३६
" १.	८१३२७
पोटना २.	२४३२६
पोटरूप १.	३४३१५

[पौष]

पोटा २.	४४३३
पोत १.	३७३६६
" १.	४३३४०
" १.	४४३३५
" १.	६१३३३
पोतकी २.	२३३१९
पोतवणिज् १.	४२३१८
पोतवाह १.	४२३१८
पोताधान ३.	४१३४५
पोत्र ३.	६३३२२
पोत्रिन् १.	३४३६
" १.	३४३९
पोथ १.	४२३१५
पोलिक १.	४३३७१
पोलिन्द १.	४२३३६
पोषी २ ब.	२१३१२
पोहित्थ ३.	४२३१५
पौश्चलेय १.	४४३४३
पौस्न ३.	३६३३
" १. २. ३.	५४३१८
पौण्ड्र १.	३१५५०
पौतव १.	५१३६४
पौत्तिक ३.	३८१३५
पौत्र १.	४४३४५
पौनर्भव १.	४३३४५
पौपिक १. २. ३.	४३३९२
पौर १.	१३३२२
पौरस्थ १. २. ३.	५४३६
पौरुष १. २. ३.	४४३८३
" ३.	४४३११
" ३.	७५५८
पौरुषेय १. २. ३.	८४३१०
पौरैन्द्र १.	२३३३२
पौरोगव १.	३७३२१
पौरहित ३.	३६३२७
पौर्णमासी २.	२३३७२
पौर्वापर्य ३.	३६३१३
पौलस्थ १.	१३३५६
" १.	७५५९
पौलोमी २.	१३३११
पौष १.	२३३८२

[पौषी]

पौषी २.	२११७४
पौष्टिक ३.	३६११९
पौष्पक ३.	३१२४३
पौष्यक ३.	३१२४१
सा २.	४४११०१
प्याट ४.	८८८२
प्र ४.	८८८६
प्रकट १.	३१९१३७
” १. २. ३.	५४११३४
प्रकरपन १.	११२५०
प्रकर ३.	३८८१०७
” १.	५१११
प्रकरण ३.	३१९१००
प्रकाण्ड ३.	८९१४२
प्रकाण्डकम् ३.	३३३१२
प्रकामम् ४.	४३११०४
प्रकार १.	५१२२३
” १. २. ३.	५४११२२
” १.	७११५६
प्रकाश १.	११२३१
” १. २. ३.	५३११३४
” १. २. ३.	७५१५४
प्रकीर्णक १.	३७१९०
” ३.	४३११५९
प्रकीर्य १.	३३३६२
प्रकुञ्ज ३.	५११५१
प्रकृति २.	३६११६१
” २.	३७३३
” २.	५१२२
” २.	७२११२
प्रकोटी २.	३३१११३
प्रकोष्ठ १.	४४१७२
” १.	७११५२
प्रक्रम १.	५२११५
प्रक्रय १.	३८८६९
प्रक्रिया २.	७२११४
प्रक्षण १.	२४११२
प्रकाण १.	२४११२
प्रचर १.	३७१११५
प्रचराङ्गी २.	३४१४४
प्रचवेलन १.	३७११८०

[वैजयन्तीकोषः]

प्रखर १. ३.	३७१११५
प्रख्य १. २. ३.	५४११२२
प्रयणिका २.	४३३३३
(प्रगणिता)	
प्रगण्ड १.	४४१७२
प्रगतजानुक १. २. ३.	५४११०
प्रगल्भ १. २. ३.	५४११७
प्रगाल १. २. ३.	७४१२०
प्रगुण १. २. ३.	५४११२४
प्रगो ४.	८८८१०
प्रग्रह १.	२११४८
” १.	३१९१५७
” १.	७११४९
प्रग्राह १.	७११४९
प्रग्रीव १. ३.	७५१५६
प्रघण १.	४३३४५
” १.	७११५२
प्रघाण १.	३३३१५
” १.	४३३४५
प्रघात १.	३७१२०५
प्रघार १.	५१२३४
प्रचक्र ३.	३७१२०१
प्रचक्षस् १.	२११३४
प्रचल १. २. ३.	५४१७८
प्रचालक १.	२३३३९
प्रचार १.	३७११५८
प्रचुर १. २. ३.	५४१८४
प्रचूडक १.	३८८४८
प्रचेतस् १.	१२१४६
” १.	७११५६
प्रच्छदपट १.	४३३१६६
प्रच्छजहार ३.	४३३१२६
प्रच्छदिका २.	४३३४२
” २.	८९१५
प्रजनन ३.	४४१६२
प्रजनिष्णु १. २. ३.	५४११४
प्रजल्पन ३.	२४३९
प्रजा २.	४४१४१
” २.	६१२३३

[प्रति]

प्रजागम १.	३६१८६
प्रजागर १.	३७११५८
प्रजाता २.	४४१४२
प्रजानुक १.	४४१५३
प्रजापति १.	१११६
” १.	८११३४
प्रजापतिहस्तक १.	३११५५
प्रजावती २.	४४१३६
प्रज्ञा २.	४४१२१
” २.	६१२३३
प्रज्ञान ३.	७३२२२
प्रज्ञु १. २. ३.	५४११०
प्रज्वलित १. २. ३.	८४११४
प्रणय १.	३८८७०
” १.	७११४४
प्रणव १.	३६१२३३
प्रणष्ट १. २. ३.	३७१२१९
प्रणाद १.	२४१९
प्रणाम १.	५१२३४
प्रणय्य १. २. ३.	७४११५
प्रणाल १. २. ३.	४२१२०
प्रणिधि १.	७११५५
प्रणिपात १.	५१२४८
प्रणिहित १. २. ३.	५४११०९
” १. २. ३.	८४१९
प्रणीत ३.	४३३९४
प्रणीति २.	४३३३८
प्रणेत्य १. २. ३.	५४३३२
प्रतति २.	७२१५५
प्रतल १.	४४१७७
प्रतानिनी २.	३३३७
प्रताप १.	७११५४
प्रतापन ३.	५३३८
प्रतापस १.	३४११४
प्रतारण ३.	५२३३५
प्रतारिका २.	४४१६६
प्रति ४.	८७१२५

[प्रतिकर्मन्]

प्रतिकर्मन् ३.	४३१३२
प्रतिकूल १. २. ३.	५४११२७
प्रतिकृति २.	३९१२०
प्रतिकृष्ट १. २. ३.	५४१७५
प्रतिक्षिप्त १. २. ३.	८४१८
प्रतिख्याति २.	५२१२९
प्रतिग्रह १.	८११३९
प्रतिग्राह १.	४३१६०
प्रतिघ १.	७११५४
प्रतिघातन ३.	३७१२१४
प्रतिच्छन्द १.	५११२१
प्रतिच्छाया २.	५११२०
प्रतिजागर १.	५२१२९
प्रतिज्ञा २.	५२३३७
प्रतिज्ञात १. २. ३.	५४११०६
प्रतिर्जन ३.	२४३३९
प्रतिताली २.	४३३४९
प्रतिदान ३.	८३३९
प्रतिध्वान १.	२४३१२
प्रतिध्वानदन्तुर १. २. ३.	२४३१४
प्रतिनप्त १.	४४३४५
प्रतिनिधि १.	३९१२१
प्रतिपक्ष १.	३७१४२
प्रतिपत्ति २.	८२१७
प्रतिपद २.	२११६९
” २.	७२११६
प्रतिपादन ३.	३६१११८
प्रतिबन्ध १.	५२११३
प्रतिबिम्ब ३.	३९१२१
प्रतिभ १.	३९१६९
प्रतिभय १. २. ३.	३९१७८
” १. २. ३.	८५११७
प्रतिभा २.	३६११७६
प्रतिभातवाच् १. २. ३.	५४१४७

(प्रतिभासवाच्)

[शब्दानुक्रमणिका]

प्रतिभायुक्त १. २. ३.	५४११७
प्रतिभास १.	३६११७६
प्रतिभू १. २. ३.	३८८१०
प्रतिम १. २. ३.	५४११२१
प्रतिमा २.	३९१२०
प्रतिमुक्त १. २. ३.	३७११४२
प्रतियत्न १.	८११३१
प्रतियातना २.	३९१२०
प्रतिरवि १.	४११२८
प्रतिरूपक ३.	३९१२१
प्रतिरोधक १.	३९१५६
प्रतिरोधिन् १.	३९१५६
प्रतिलम्भ १.	५२१२०
प्रतिलोम १.	३५१११८
” १.	३५१११९
” १. २. ३.	५४११२७
प्रतिलोमज १.	३५१८९
” १.	३५११०९
प्रतिवसथ १.	४३३१२
प्रतिवाक्य ३.	२४३३७
प्रतिविषा २.	३८८१०
प्रतिशासन ३.	५२३३५
प्रतिशिष्ट १. २. ३.	८४१८
प्रतिश्याय १.	४४११२१
प्रतिश्रय १.	८११३१
प्रतिश्रव १.	५२३२९
” १.	५२३३७
प्रतिश्रुत् २.	२४११२
प्रतिष्काश १. २. ३.	८५११४
प्रतिष्ठम्भ १.	५२३३३
प्रतिष्ठा २.	७२११५
प्रतिसङ्ख्य १.	२११९५
प्रतिसर १.	३६१५९
” १. २. ३.	८५११४
प्रतिसर्ग १.	२११९५
प्रतिसारण ३.	४४११४०
प्रतिसारा २.	४३३१२४

(९७)

[प्रत्यादेश]

प्रतिहत १. २. ३.	८४१८
प्रतिहारी २.	३७३३८
प्रतिहास १.	३३३१९२
प्रतीक १.	४४१५५
” १. २. ३.	७५१५४
प्रतीकार १.	३७१२०९
प्रतीक्य १. २. ३.	७४११७
प्रतीच १.	३८८१५७
प्रतीची २.	२११५
प्रतीचीन १. २. ३.	५४१९१
प्रतीच्छा २.	४३३१००
प्रतीत १. २. ३.	७४११६
प्रतीप १. २. ३.	५४११२७
प्रतीपदर्शिनी २.	४४१५
प्रतीवाप १.	३८८१४४
प्रतीहार १.	८११२७
प्रतोद १.	३८८२९
प्रतौली २.	४३३१६
प्रतन १. २. ३.	५४१८७
प्रत्यक्च्छेणी २.	३३३११३
” २.	३३३१३३
प्रत्यक्पर्णी २.	३३३११५
प्रत्यक्ष १. २. ३.	५४११३३
प्रत्यगाशापति १.	१२१४६
प्रत्यग्दृष्टि २.	३६११७५
प्रत्यग्र १. २. ३.	५४१८९
प्रत्यग्रथ १ व.	३११२६
प्रत्यच् १. २. ३.	५४१९१
प्रत्यनीक १.	३७१४१
प्रत्यय १.	७११५१
प्रत्ययित १. २. ३.	३८८९
(प्रत्ययिक)	
प्रत्यर्थिन् १.	३७१४२
प्रत्यवसान ३.	४३३१०२
प्रत्यवसित १. २. ३.	५४११०७
प्रत्यवस्कन्द १.	३८८१६
प्रत्याकार १.	३७११६८
प्रत्याख्यान ३.	५२३३३
प्रत्यादेश १.	५२३३३

प्रत्यालीढ]

वैजयन्तीकोषः

[प्रलम्बाण्ड

प्रलम्बारि]

शब्दानुक्रमिका

[प्रस्ताव

प्रत्यालीढ ३.	३।७।१८८	प्रपद ३.	४।४।५७	प्रमदा २.	४।४।५
प्रत्यासार १.	३।७।५९	प्रपदव्यापिन् १. २. ३.	४।३।१२१	प्रमदावन ३.	३।३।३
प्रत्याहार १.	३।६।२३१			प्रमनस् १. २. ३.	५।४।३३
" १.	३।९।१४०	प्रपा २.	४।३।२३	प्रमा २.	५।२।३३
" १.	५।२।१८	प्रपाठक १.	३।६।३२	प्रमाण ३.	७।३।२३
प्रत्युत्क्रम १.	५।२।१५	प्रपात १.	३।२।६	प्रमातामह १.	४।४।३०
प्रत्युत्पन्नमति १. २. ३.	५।४।३१	" १.	४।२।३२	प्रमाथ १.	३।७।१८९
		" १.	७।१।५३	प्रमाथित ३.	३।८।१४३
प्रत्युष १.	२।१।६८	प्रपातिन् १.	३।२।२	प्रमाद १.	३।६।१७८
प्रत्युष ३.	२।१।६८	प्रपितामह १.	४।४।२९	प्रमापण ३.	३।७।२१३
प्रत्युषडम्बर १.	२।१।१५	प्रपुञ्जाट १.	३।३।१५८	प्रमिति २.	५।२।३३
प्रत्युह १.	५।२।४	प्रपौत्रक १.	४।४।४५	प्रमीत १. २. ३.	३।७।२२०
प्रथन ३.	३।७।२०४	प्रफुल्ल १. २. ३.	३।३।९	प्रमीला २.	३।६।१९७
" १.	३।८।३६	प्रबर्ह १. २. ३.	५।४।६२	प्रमुख १. २. ३.	५।४।६२
" ३.	५।२।३४	प्रबल १. २. ३.	३।७।१५१	" १. २. ३.	५।४।७६
प्रथम १. २. ३.	५।१।२१	" १. २. ३.	५।४।६	प्रभृत ३.	३।८।३
" १. २. ३.	५।४।७६	प्रबोधन ३.	४।३।१४७	प्रमेह १.	४।४।१२८
" १. २. ३.	५।४।१४०	प्रभ १. २. ३.	५।४।१२१	प्रमेहनुद् १.	३।३।१०६
" १. २. ३.	७।४।१७	प्रभञ्जन १.	१।२।४९	प्रमोद १.	३।६।१८८
प्रथा २.	५।२।३४	प्रभव १.	७।१।५०	प्रयत १. २. ३.	५।४।६५
प्रथिक ३.	३।६।८८	प्रभवन्ती २.	५।२।२	" १. २. ३.	७।४।१८
प्रथिमन् १.	८।९।१४	प्रभविष्णुता २.	५।२।२	प्रयत्त १. २. ३.	५।४।९९
प्रदर १.	४।२।९	प्रभा २.	२।१।२२	प्रयत्नवत् १. २. ३.	५।४।११४
" १.	७।१।५७	" २.	२।१।२३		
प्रदीप्त १. २. ३.	८।४।१४	" २.	६।२।२३	प्रयम १.	३।६।१४
प्रदेशन ३.	३।७।४६	प्रभाकर १.	२।१।१४	प्रयस्त १. २. ३.	४।३।९४
(प्रदर्शन)		प्रभात ३.	२।१।६९	प्रयाण ३.	७।३।२१
प्रदेशिनी २.	४।४।७३	प्रभाव १.	५।२।२	प्रयाम १.	३।८।६६
प्रदेष्टु १.	३।७।२३	" १.	७।१।५६	प्रयुत ३.	५।१।२८
प्रदोष १. ३.	२।१।६५	प्रभावती २.	३।९।२०	" ३.	५।१।२९
" १.	७।१।५५	प्रभास ३.	३।२।२८	प्रयोक्तृ १. २. ३.	३।८।८
प्रद्युम्न १.	१।१।२७	प्रभिन्न १.	३।७।६८	प्रयोग १.	५।२।१५
प्रद्योतन १. ३.	८।५।१७	प्रभु १. २. ३.	५।४।५७	" १.	७।१।४४
प्रद्राव १.	३।७।२११	" १. २. ३.	६।४।१०	प्रयोजन ३.	३।६।२३६
प्रधान १. ३.	५।४।६२	प्रभुता २.	५।२।२	" ३.	८।३।८
प्रधानधातु १.	४।४।१११	प्रभूत १. २. ३.	५।४।८४	प्ररूढ १.	३।८।५२
प्रधि १.	३।७।१३५	प्रभ्रष्टक ३.	४।३।१५५	प्ररोचना २.	३।९।१४२
" १.	८।९।१३	प्रमथ १.	१।१।५१	प्ररोह १.	३।३।११
प्रपञ्च १.	७।१।५६	" १.	३।७।२११	प्ररोहक १.	३।७।११५
प्रपतित १. २. ३.	५।४।११५	प्रमथन ३.	३।७।२१३	प्रलम्बाण्ड १. २. ३.	५।४।८
		प्रमथाधिपति १.	१।१।४१		

प्रलम्बारि १.	१।१।२३	प्रवेक १. २. ३.	५।४।६३	प्रसाधन ३.	४।३।११२
प्रलय १.	२।१।९५	प्रवेणी २.	७।२।१६	" ३.	४।३।१३२
" १.	३।९।८९	प्रवेले १.	३।८।३६	प्रसित १. २. ३.	५।४।३०
" १.	७।१।४३	प्रवेश १.	५।२।१४	प्रसिति २.	५।२।२८
प्रलाप १.	२।४।३०	प्रवेष्ट १.	३।७।७२	प्रसिद्ध १. २. ३.	७।४।१९
प्रलोभिन् १.	३।३।१८९	" १.	४।४।७२	प्रसू २.	६।२।२४
प्रलोभ्य ३.	४।४।१०१	प्रव्याल १.	२।१।३२	प्रसूता २.	४।४।१७
प्रवक १.	३।९।६४	प्रवजित १.	३।६।१६०	प्रसूतात १ द्वि.	४।४।४७
प्रवण १. २. ३.	७।५।५३	प्रशंसा २.	२।४।३५	प्रसूति २.	४।४।४१
प्रवयस् १. २. ३.	५।४।३	प्रशसन ३.	३।७।२१४	" २.	७।२।१६
प्रवर १.	३।८।३४	प्रशस्तमृद् २.	३।८।२४	प्रसूतिका २.	४।४।१७
" १.	३।८।३७	प्रशान्ताचिस् १.	१।२।३२	प्रसूतिज ३.	१।२।३९
" ३.	३।८।११९	प्रशान्तिक ३.	३।६।१८२	प्रसून ३.	३।३।१८
" १. २. ३.	५।४।६२	प्रश्न १.	२।४।३७	" ३.	७।३।२४
" १. २. ३.	८।९।५३	" १.	८।९।१४	" १. २. ३.	७।५।५५
प्रवर्ग्य १.	१।२।२९	प्रश्नवादिनी २.	४।४।११	प्रसूत १.	४।४।७७
प्रवर्हिहा २.	२।४।३९	प्रश्रय १.	५।२।३८	" १. ३.	५।१।५२
प्रवह १.	७।१।४३	प्रश्रित १. २. ३.	५।४।३२	प्रसूता २.	४।४।५८
प्रवहण ३.	३।७।२७	प्रष्ट १. २. ३.	३।७।१४५	प्रसूत्वन् १. २.	८।५।२९
" ३.	४।२।१५	प्रष्टवाह १. २. ३.	३।४।५६	प्रसेवक १.	३।९।१२०
प्रवापण ३.	३।६।१२०	प्रसङ्ग २.	३।९।४५	" १.	४।३।६४
प्रवाल १. ३.	३।२।३९	प्रसभ १.	१।२।५५	प्रस्कन्न १. २. ३.	३।७।२१९
" १.	३।३।१५	" १. ३.	३।७।२०९	प्रस्तर १.	३।२।८
" १.	३।३।१५४	प्रसभा २.	३।६।४६	" १.	३।६।९१
" १. ३.	७।५।५५	प्रसरणी २.	३।७।२०१	" १.	४।३।१६५
प्रवासन ३.	३।७।२१३	प्रसर्पक १.	३।६।८१	" १.	७।१।५१
प्रवाह १.	४।२।३०	प्रसव १.	२।१।८७	" १.	३।३।२
" १.	५।२।३९	" १.	३।३।२०	" १.	३।३।२
" १.	७।१।४५	" १.	४।४।४०	प्रस्ताव १.	२।४।४१
प्रवाहि १.	३।७।१२५	" १.	७।१।४८	प्रस्तुता २.	३।४।४९
प्रवाहिक १.	१।२।४१	प्रसव्य १. २. ३.	५।४।२८	प्रस्थ १.	५।१।५३
प्रवाहिका २.	४।४।१२९	" १. २. ३.	७।४।१८	" १.	५।१।६३
प्रविदारण ३.	३।७।२०४	प्रसहनी २.	३।३।१०४	" १.	६।५।४६
प्रविसर १.	२।१।६८	प्रसहा २.	३।३।१०४	प्रस्थान ३.	५।२।१०
प्रविसारण ३.	३।७।२१५	प्रसह्य ४.	८।८।१८	प्रस्फोटन ३.	४।३।६५
प्रवीण १. २. ३.	५।४।१९	प्रसाद १.	७।१।५५	" ३.	४।३।६६
प्रवीरा २.	४।३।११	प्रसादन १.	३।३।३८	प्रस्मरण ३.	३।६।१७७
प्रवृत्ति २.	३।७।८२	(प्रसाधन)		प्रस्मरण १.	३।२।४
" २.	३।८।४८	" १.	४।३।२९	" ३.	३।२।७
" २.	७।२।१६	" ३.	४।३।७५	प्रस्ताव १.	४।३।७८
प्रवृद्ध १. २. ३.	७।४।१८	प्रसाधन १.	४।३।११२		

प्रत्नाव]	वैजयन्तीकोषः	[प्रासाद
प्रत्नाव १. ४१११२०	प्राचल १. ३१६२४	प्रान्तर ३. ३११५०
प्रहत १. २. ३. ३१८१८	प्राच्य १. ३११२२	" ३. ४३१२२
" १. २. ३. ५४४९९	प्राजन ३. ३१८२९	प्रापणिक १. ३१८७२
" १. २. ३. ७४११८	प्राजापत्य ३. ३१६२	प्रापणिका २. ३१६५०
प्रहर १. २११६७	" १. ३१६१८	प्राप्त १. २. ३. ५४१९९
प्रहरण ३. ८३१८	" ३. ३१६१३६	" १. २. ३. ५४११०३
प्रहसन ३. ३१९१००	" १. ३१६२०७	" १. २. ३. ५४११०९
प्रहसन्ती २. ३१३१८७	प्राजितृ १. ३१७१३८	" १. २. ३. ६४११०
(प्रसहन्ती)	प्राज्ञ १. ३१६२३४	प्रासरूप १. २. ३.
प्रहस्त १. १२१४४	प्राज्ञा २. ४४१२१	८१५१५
" १. ४४१७७	प्राज्ञी २. ४४१२१	प्रासर्तु २. ४४१८
प्रहार १. ५२११९	प्राज्य १. २. ३. ५४१८४	प्रासार्थ १. २. ३. ३१९५३
प्रहासिन् १. ३१९६९	प्राङ्गविपाक १. ३१८१४४	प्राप्ति २. ५२११३
प्रहि १. ४२१७	प्राण १. १२१४८	" २. ६२१२४
" १. ८१९१०	" १. ३२११५	प्राभृत ३. ३१७४६
प्रहित ३. ४३१८६	" १. ३१६२०३	प्राय १. ४४१५३
" १. २. ३. ५४१९७	" १. ३. ३१६२०३	" १. ६११३६
प्रहृष्ट १. २. ३. ८१११३	" १. २. ३. ५४१६१	प्रायः (-स्) ४. ८११३६
प्रहेलिका २. २१३३९	" १. ६११३८	प्रायण ३. ७३१३४
प्रांष्टु १. २. ३. ५४१८१	प्राणद १. १११९	प्रायणीय १. २. ३.
प्राकार १. ४३११४	" ३. ४४११०६	३१६८८
प्राकारमूलिक १. ४३११३	प्राणदा २. ३१८८३	प्रार्थित १. २. ३.
प्राक्तन् १. २. ३. ५४१८७	प्राणनाथ १. २. ३.	५४११२
प्राक्पादरज्जु २. ३१७११३	८१५१६	" १. २. ३. ७४११६
प्राग्जालिक १. ३. ३११२९	प्राणयम १. ३१६२२९	प्रालम्ब ३. ४३११५५
प्राग्योतिष १. ३. ३११२९	प्राणायाम १. ३१६२२९	प्रालम्बिका २. ४३११३७
प्राग्भार १. ५२१३	प्राणिक ३. ३१६९२	प्रालेय ३. २१२१९
प्राग्र १. २. ३. ५४१६३	प्राणिघृत ३. ८३११०	प्रावार १. ४३११२३
प्राग्रहर १. २. ३. ५४१६३	प्राणिन् १. ४४११	प्रावृत १. २. ३.
प्रागाढ ३. ३१८१४४	प्राणिफल १. ३१३२८	४३११२०
प्राग्वंश १. ३११५१	प्राणिस्वन १. २१३३	प्रावृष् २. २११८९
प्राच १. २. ३. ५४१९१	प्रातः (-र) ४. ८१११०	प्रावृषायणी २. ३१३१२९
प्राचिका २. २१३२०	प्रातिहारिक १. ३१९३३	" २. ८२११३
प्राची २. २११५	" १. २. ३. ५४१२४	प्रावृषेण्य १. ३१३६०
प्राचीन १. २. ३. ५४१९१	प्राथमकल्पिक १. ३१६२४	प्रावेशनिक १. ३११५९
प्राचीनतिलक १. २११२७	प्राहु (-स्) ४. ८१११८	प्राक्षिक १. २. ३. ३१८१९
प्राचीनवर्हिष १. ८११५४	प्रादेश १. ४४१८०	प्राप्त १. ३१७१६५
प्राचीना २. ३१३१३१	प्रादेशन ३. ३१६११९	प्रासङ्ग १. ३१७१३३
प्राचीनावीत ३. ३१६२१	प्राध्व १. २. ३. ६१५४७	प्रासङ्ग्य १. २. ३.
प्राचीर ३. ४३११४	प्राध्वम् ४. ८१११६	३१५५८
प्राचेतस १. ३१६१५३	प्रान्त १. ४३११३२	प्रासाद १. ४३१२९

प्रास्थित]	शब्दानुक्रमणिका	[फलिनी
प्रास्थित १. २३३६	प्रेस्थ ४. ८१११५	प्लुन १. २. ३.
प्राहुण १. ३१६६८	प्रेमन् १. ३. ३१६१८६	३१७१२३
प्राहु १. २११६४	" १. २. ५१५५१	प्लुषि १. २१३४८
प्रिय १. ३३३३१	प्रेष्य १. ३१९२	प्लसत १. २. ३.
" १. २. ३. ३१७४३	प्रेष १. ६११३३	५४११०७
" १. ४४३३७	प्रोक्षण ३. ३१६९४	फ
" १. २. ३. ५४१७०	प्रोक्षणासादन ३.	फक्कि १. ३१६३३
" १. २. ३. ५११३५	३१६८४	(पक्षिका)
प्रियंवद १. २. ३. ५४१४४	प्रोन १. २. ३. ३१९१२	फण १. २. ४११२१
प्रियक १. ३३३३९	प्रोथ १. ३. ३१७१०९	फणिन् १. ३३३४९
" १. ३३३३६	प्रोथिन् २. ३१७१०	" १. ४११५
" १. ३३३३७	प्रोन्द्र १. ५३१९	फणिर्जक १. ३३३१२०
" १. ७११५३	प्रोष्टपद १. २. ३. २११४१	फण्ड १. ३३३२०५
प्रियङ्गु २. ३१८१५५	प्रोष्टपदा २. ४. ८१९५७	" १. ३३३२०७
" ३. ३१८११७	प्रोष्टी २. ४११४४	फल ३. ३३३२०
प्रियङ्गुवाख्या २. ३३३६६	प्रोह १. ३१७७६	" १. ३३३८३
प्रियनादिका २. ३१९१३८	प्रौढ १. २. ३. ५४१७७	" ३. ३१७१८६
प्रियापत्य १. २३३३१	प्रौढि २. ३१६१६६	" १. ३१७१९२
प्रियाला २. ३३३१८१	प्रौष्टपद १. २११८५	" १. ३१८७०
प्रियाल १. ३३३१५७	प्रौष्टपदी २. २११७६	" ३. २. ६१५५२
प्रियलिका २. ३१८१४६	प्लक्ष १. ३३३२७	" ३. २. ६१५५३
प्रीत १. २. ३. ५४१९९	" १. ३३३२८	फलक ३. २. ३१७१९७
प्रीति २. ६२१२५	प्लक्षक १. ३३३१५९	" १. ३१८४५
प्रुव १. ५३३८	प्लक्षदीप १. ३३३११	" १. ३. ७१५६०
प्रेचा २. ६२१२५	प्लव १. २३३१३	" १. २. ८१९२७
प्रेङ्ग १. ३१७१३६	" ३. ३३३२०१	फलकिन् १. ४११४३
" १. ३१९३	" १. ३१९५४	फलकी २. ८१९२७
" १. ४३११६०	" १. ४११४७	फलकृष्ण १. ३३३८३
प्रेङ्गित १. २. ३. ५४१९५	" १. ४३११६	फलपाककृष्ण १. ३३३८३
" १. २. ३. ५४११०३	" १. ४३१७१	फलपाकान्ता २. ३३३२२४
प्रेङ्गोल ३. ३१७१३६	" १. ५२११२	फलस १. ५३३४०
प्रेङ्गालन ३. ३१७१३६	" १. ६२१३७	फला २. ३३३२६
प्रेङ्गोलि २. ८१९२७	प्लवग १. ८११३२	" २. ३३३१६१
प्रेङ्गोलित १. ५४११०३	प्लवङ्ग १. ८११३२	फलाङ्कुरा २. ३१८३५
प्रेजन ३. ५२१३२	प्लवन ३. ३३३२०१	फलाध्यक्ष १. ३३३४३
प्रेत १. १२३३८	प्लाव ३. ३३३२२	फलाशन १. २३३२५
" १. १२३३८	प्लाविन् १. २३३१	फलिक १. ३३३२
" १. २. ३. ६१५५२	" १. ३३३११	फलित १. २. ३. ३३३८
प्रेतदाहामि १. १२३२२	प्लीहन् १. ४३११३३	फलिन् १. २. ३. ३३३८
प्रेताल १. ३३३७७	प्लुत १. १. ३. ३१७११८	फलिन १. २. ३. ३३३८
		फलिनी २. ३३३१६

[फलिनी]

वैजयन्तीकोषः

[बलयु]

बलरिपु]

शब्दानुक्रमिका

[बाला]

फलिनी २.	३३१५८	फेरुण्ड १.	३३१३८	बन्धुता २.	५११९	बलरिपु १.	११२२	बहिर्गीत ३.	३१११०	बाहब ३.	५११९
" २.	३३१२०३	फेरुविज्ञा २.	३३११३७	बन्धुर १. २. ३.	५११८३	बलवत् ४.	८१८४	बहिर्द्वार ३.	४३१४२	बाहबेय १.	३११५३
फली २.	३३१६६	फेला २.	४३११०६	" १. २. ३.	७११२१	बला २.	३३१६६	बहिर्द्वारप्रकोष्ठ १.		बाहब्य ३.	५१११७
" २.	३३११५८	फेलुक १.	४११६३	बन्धुरा २.	३३११३२	" २.	३३११२७		४३१४६	बाह १. २. ३.	५१११३२
" २.	३३११९८	ब		बन्धुल १.	४११४४	" २.	३३१८७६	बहिर्कर्ष १.	३३१७०	" १. २. ३.	६११५५
" २.	६११५३	बक १.	२३११०	बन्धूक १.	३३११८५	" २.	३३१११४	" १.	३३१७८	बाहम् ४.	८११२६
फलीकृत १.	४३१६६	" १.	३३११३	बन्धु १.	११११०	" २.	३३११०७	बहु १.	११२२७	बाण १.	१११५२
फलीहस्त १.	३३१७१	" १. २. ३.	३३११३	" १.	४११२८	बलाका २.	२३११०	" १. २. ३.	५११८०	" १.	३३३३९
फलेग्राहि १. २. ३.	३३३१८	बकपुष्प १.	३३११९३	" १. २. ३.	४१११७७	बलाङ्ग १.	३३१३६	" १. २. ३.	५११८४	" १.	३३११७९
फलेपाकिन् १.	३३१५९	बकोट १.	२३३१०	" १.	५३११८	बलाङ्कार १.	३३१२०९	" १. २. ३.	६१११०	" १.	३३११८३
फलेरुह १.	३३१२१६	वडबा २.	३३११७७	बर्कर १.	३३१७३	बलारोहा २.	३३१८२	बहुकर १. २. ३.	३३१६७	बाणाभ्यास १.	३३११९५
फलेरुहा २.	३३१९०	वडबागण १.	५११९	बर्बर १.	३३१५०	बलास १.	४११२१	बहुत्तीरा २.	३३१४५	बादर १.	४३११७७
फलोदय २.	११११	वडबापति १.	३३१६६	" १.	४११९८	बलि १.	३३१४५	बहुगार्ह्यवाच् १. २. ३.		बाधा ३.	६१२२५
फल्गु २.	३३११११	वडबामुख १.	८११५५	" १. २. ३.	५११२२	" १. २.	३३११३८		५११४६	बान्धकिनेय १.	४११४४
" १. २. ३.	५११७६	यत ४.	८११२६	बर्ह १.	२३३३९	" १.	६११३९	बहुजाली २.	३३११६१	बान्धव	४११५१
फल्गुनाल १.	२११८३	बदर १.	३३३९९	" ३.	३३३१७	बलिक १. २. ३.		बहुतिथ १. २. ३.	५१११९	बाभ्रवी २.	१११५९
फल्गुनी २.	२११४३	बदरी १.	३३३८७	" ३.	६३३२२		३३३१२७	बहुपाद् १.	३३३२७	बार्हत ३.	३३३२२
फाणित ३.	३३१३३४	" २.	३३३१४८	बर्हचन्द्रक १.	२३३३९	बलिकण्टक १.	११११९	बहुप्रज १.	३३३६	बाल ३.	३३३२०२
फाण्ट १.	४११४१	बद्ध ३.	५११३०	बर्हिण १.	२३३३६	बलिन् १.	१११२२	बहुरूप १.	१११७७	" १.	३३३६६
" ३.	५११४	" १. २. ३.	५११६७	" ३.	३३३१९	" १.	१११२३	" १.	३३३१११	" १.	५३३३७
फारी ३.	३३१८५	" १. २. ३.	५११९७	बर्हिष्वजा २.	१११६०	" १.	३३३१६५	बहुल ३.	३३३१२४	" १. २. ३.	५११२
फाल १.	३३१८८	बद्धदर्भ १.	३३३१२४	बर्हिन् १.	२३३३६	" १.	३३३१८९	" १. २. ३.	५११८०	" १. २. ३.	६११११
" ३.	३३११०६	बद्धभूमि २.	४३३३२	बर्हिपुष्प ३.	३३१८२	" १.	३३३२२१	" १. २. ३.	५११८४	" १. २. ३.	६११५७
" १. २. ३.	४३३११७	बद्धम्बु ३.	४३३२९	बर्हिमुख १.	१११४	" १. २. ३.		" १. २. ३.	७११६१	बालक १.	३३३३३
" १.	६११३९	बन्दी २.	३३१५७	बर्हिष्ठ ३.	३३३२०२		३३३१५१	बहुला २.	३३१५२	" ३.	३३३१४०
फालगलालेप १.	३३१६७	बन्ध १.	३३१७०	बर्हिस् १.	६११५३	" १.	३३३३५	बहुलीकृत १. २. ३.		बालगर्भिणी २.	३३३४६
फालाकली २.	३३३३२	" १.	३३१३१	बल १.	१११२४	" १.	४३३१०		३३३६७	बालसूतक १.	५३३३५
फाल्गुन १.	२३१८२	" १.	४३३५३	" ३.	३३३३	बलिपुष्ट १.	२३३१६	बहुवक्र १.	३३३५४	बालजात ३.	३३३१४०
फाल्गुनिक १.	२३१८२	" १.	५३३२८	" ३.	३३३५५	बलिभुज १.	२३३१८	बहुवार १.	३३३५५	बालतृण ३.	३३३२३५
फाल्गुनी २.	२३१७५	" १.	६३३३९	" ३.	३३३२१०	बलिश ३.	३३३६०	बहुव्यय १. २. ३.		बालनायिका ३.	३३३६०
फुल्ल १. २. ३.	३३३१९	बन्धकी २.	३३३३५	" १.	३३३५३	" ३.	३३३४२		५३३५८	बालपत्र १.	३३३६३
" १. २. ३.	३३३७८	" २.	४३३१०	" ३.	३३३११४	बलिसदृशम् ३.	४३३११	बहुसारक १.	३३३१२८	बालपुष्कल १.	३३३८०
" १.	४३३११	" २.	७३३१७	" ३.	४३३१०९	बलीवर्द १.	३३३५३	बहुसुता २.	३३३१२४	बालभीरु १.	३३३३०
फुल्लक १.	४३३१९	बन्धन ३.	३३३२०	" १. २. ३.	६३३५४	बलवज १. २.	३३३२३०	बहुसूति २.	३३३५०	बालभूषिका २.	४३३३२
फुल्लरीक १.	४३३५	" ३.	३३३२१	बलक १.	३३३१९९	बलकयणी २.	३३३४८	बहुसूतिका २.	४३३२०	बालवत्स १.	२३३२३
फेन १.	४३३१३	" ३.	५३३२८	" ३.	४३३१९९	बस्त १.	३३३६२	बहुसूदन ३.	३३३१२४	बालशाकट १. २. ३.	
फेनक १.	४३३७४	बन्धनी २.	३३३३०	बलकाली २.	३३३८२	बहल १. २. ३.	५३३८४	बहुस्वन १.	२३३२२		३३३२१
फेनिल १.	३३३३२	बन्धाकि १.	३३३३२	बलदेव १.	१३३२२	" १. २. ३.	५३३८४	बहुदित ३.	२३३३९	बालशाकिन १. २. ३.	
" १. २. ३.	७३३६०	बन्धु १.	१३३२९	बलभद्र १.	१३३२३	" १. २. ३.	७३३२१	बहेटक १.	३३३१७६		३३३२१
फेरव १.	३३३३८	" १.	४३३५१	बलभद्रिका २.	३३३१०९	बहिः-(स्) ४.	८३३१४	बाहब १.	१३३२१	बालहस्त १.	३३३७४
फेरु १.	३३३३८	बन्धुजीव १.	३३३१८५	बलयु २.	३३३१११	बहिर्गार १.	३३३५०	" १.	३३३११	बाला २.	३३३१८५

[भट]

वैजयन्तिकोषः

[भाण]

भट १.	३१७१३९	भन्दना २.	२१११९
भटिन्न १. २. ३.	३१७१४४	भम्भराली २.	२१३१४४
भटोद्योग १.	३१७१२०२	भम्भा २.	३१७१३३
भट्ट १. २. ३.	८१७१४६	भय ३.	३१६१८५
भट्टरक १. २. ३.	८१७१४६	भयङ्कर १. २. ३.	३१७१७८
भट्टारक १.	३१७१०३	भयद्रुत १. २. ३.	३१७१८८
" १. २. ३.	८१७१४६	भयन ३.	३१७१८५
भट्टारिका २.	३१७१०४	भयानक १.	३१७१७५
भट्टिनी २.	३१७१०४	" १.	३१७१७७
भण्डन ३.	७१३२६	" १. २. ३.	३१७१७८
भण्डाकी ३.	३१३१०२	भर १.	५१२३३
भण्डिल १.	३१३१७२	" १.	६१११४१
भण्डीरी २.	३१३१४५	" १.	६१११४२
भदन्त १.	३१७१०७	भरण ३.	३१७१५
भद्र १.	३१७१६२	भरणी २.	२१११४१
" १. २. ३.	५१४८०	भरण्य ३.	३१७१५
" १. २. ३.	५१४१४३	भरत १.	११२१२६
" १. २. ३.	६१५६०	" १.	३१६१७८
" ३.	८१७१४४	" १.	३१७१६२
भद्रकाली २.	११११६१	भरथ १.	११२११९
भद्रकुम्भ १.	४१३१६१	भरद्वाज १.	२१३११९
भद्रदारु ३.	३१३१७१	भरित १. २. ३.	५१४८६
भद्रपदा १. २. ३.	२१११४१	भरुज १.	३१४३७
भद्रपणिका २.	३१३१५८	भरुटा २.	४१३१८६
भद्रमन्द १.	३१७१५४	भर्ग १.	११११४०
भद्रमन्दमृग १.	३१७१६४	भर्तृ १.	४१४३७
भद्रमुख १.	३१३१२८	भर्तृदारक १.	३१७१०५
भद्रमुस्तक १.	३१३१९९	भर्तृवारिका २.	३१७१०४
भद्रमृग १.	३१७१६४	भर्त्सन ३.	२१४३४
भद्रयव १. ३.	३१३१७३	भर्मन् ३.	३१७१५
भद्रलक्षण ३.	३१७१६३	" ३.	६१३२३
भद्रवदन १.	११११२४	भर्मिन् १.	३१५१११
भद्रश्री १.	३१८११२	भलुह १.	३१४१००
भद्रसुत १.	३१७१५९	भल्ल १.	३१७१८२
भद्रा २.	३१३१३९	भल्लट १.	३१४१७
भद्राकरण ३.	३१६१४	भल्लानक १. २. ३.	३१३१९५
भद्राङ्ग १.	११११२४	भल्लुक १.	३१४१४०
भद्राश्व ३.	३१११७	भल्लुक १.	३१३१६८
भद्रासन ३.	३१७१५५	" १.	३१४१७
भद्रेश्वर १.	१११३९		

(१०६)

[भाण्ड]

शब्दानुक्रमणिका

[भुवन]

भाण्ड ३.	३१७१४४	भावज्ञा २.	३१३१६७	भिक्षकूट ३.	३१७१५६
" ३.	४१३१६२	भावना २.	४१३१५८	भिया २.	३१६१८५
" ३.	६१३२३	" २.	८१७१४	भिक्ष १.	३१५१४६
भाण्डागारिक १.	३१७१२३	भावित १. २. ३.	५१४१९९	भिक्ष १. २. ३.	४१४१४३
भाण्डी २.	३१३१४५	" १. २. ३.	८१७१२२	भिक्षा १.	४१३१७६
भातु १.	२१११०	भावुक १. २. ३.	५१४१४१	भिक्षिस्टा २.	४१३१७७
भानु १.	२१११०	भाषणी २.	२१४३५	भी २.	३१६१८५
" १.	२१११५५	भाषा २.	११११९	भीत १. २. ३.	५१४१८
" १.	६११४०	" २.	३१८११६	भीति २.	३१६१८५
भाद्र १.	२११८५	" २.	३१७१०२	" २.	३१७१७६
भाद्रपद १.	२११८५	भास १.	२१३३२	भीम १.	११११४३
भामिनी २.	४१४१५	भासन्त १.	७११५८	" १. २. ३.	३१७१७८
" २.	४१४१०	भासुर १. २. ३.	५१४१४२	भीमर १.	३१७१२६
भार १.	५११६१	भास्कर १.	२१११२	भीरु १.	३१३१७८
" १.	६११४१	" १.	७११५८	" २.	३१३१६६
भारत ३.	३१११५	भास्वत् १.	२१११२	" २.	४१४१५
भारती २.	११११९	" १. २. ३.	६१५५९	" १. २. ३.	५१४१८
" २.	३१३११९	भास्वर १ व.	१३३८	भीरुक १. २. ३.	५१४१८
" २.	३१७१०१	भिक्षा २.	३१३१५	भीरुचेतस् १.	३१४१११
" २.	३१७१०२	" २.	३१३१२१	भीरुपर्णी २.	३१३१४२
भारद्वाज ३.	४१४१०९	" २.	६१२२६	भीरुबाल १.	३१३३०
भारद्वाजी २.	३१३१९९	भिक्षाचार १. २. ३.	३१३१७	भीलुक १. २. ३.	५१४१८
भारयष्टि २.	३१७१६	भिक्षु १. २. ३.	३१३१२६	भीषण १. २. ३.	३१७१०९
भारवह १. २. ३.	३१७१२२	" १.	३१३१६०	भीष्म १. २. ३.	३१७१७८
भारवाह १.	३१७१६	" १.	३१४१२७	भुक्त १. २. ३.	५१४१०८
भारसह १.	३१४१६६	भिक्षुकी २.	४१४१०	भुम्भ १. २. ३.	५१४१२४
भारिक १.	३१७१६	भिक्षुलोचक ३.	३१३१५	भुज १.	३१३१४५
भारित ३.	५१११६२	भिक्षुसङ्घाटी २.	४१३१२८	" १.	३१३१९३
भारुष १.	३१५१५८	भिक्षुपाल १.	३१७१६६	" १. २.	४१४१७१
" १.	३१६१०३	भिक्ष ३.	४१४१५६	भुजग १.	४१११५
भार्गव १.	२१११३४	भित्तिका २.	४१३३७	भुजगाह्वय ३.	३१३१२९
भार्गवी २.	१११३६	" २.	७१२१८	भुजङ्ग १.	४१११५
" २.	३१३१३३	भिदा २.	५१२१४१	" १.	४१४३९
भार्गी २.	३१८१८१	भिदु १.	११२१३	भुजङ्गम १.	४१११५
भार्या २.	४१४३४	भिदुर १.	११२१३	भुजङ्गारि १.	३१३१३७
भालुक १.	३१४३३	" १.	३१७१८३	भुजि १.	११२११८
भाव १.	३१६१७४	भिषा १.	४१२२९	भुजिष्य १.	३१७१२
" १.	३१७१८०	भिष १. २. ३.	५१४१११	" १.	३१७१४
" १.	३१७१९७	" १. २. ३.	६१४१११	" १. २. ३.	७१४२२
" १.	६११४३	भिक्षुकुम्भ १.	३१७१४	भुरग्यु १.	७११५९

(१०७)

[भुवन]

भुवन ३.	४११२
" ३.	४२१२
भुवन्य १.	७११५९
भुवस् १. ४.	३६१२०६
भुसुण्ठी १.	३७१७०
(भुसुण्डी)	
भू २.	३११४
" २.	८२११६
" २.	८६१४
भूघन १.	४११५३
भूत १. ३.	१३१२
" ३.	३६१२०६
" ३.	४१११
" १. २. ३.	५११२९
" १. २. ३.	६११५९
" १. ३.	८११३०
भूतग्राम १.	५१११७
भूतग्री ३.	३६११२१
भूतदमनी २.	१११४९
भूतधात्री २.	३११२
भूतपुष्प १.	३६१६९
भूतफल १.	३६११६६
भूतलोद्धव ३.	३२१३०
भूतवास १.	३६११७६
भूतसम्भव १.	२११९४
भूतसारी २.	३८१८२
भूतात्मन् १.	७११६०
भूतापुत्र १.	१३१२
भूति २.	१२१३३
" २.	४३१८७
" २.	६२१२७
" २.	८५१३४
भूतिक ३.	७३१२६
भूतेश १.	१११४३
भूतेशा २.	२११७०
" २.	२११८०
भूदार १.	३६१६
भूदेष्ट १.	३६११
भूधर १.	३२११
भूनामन् २.	३६११७
भूप १.	३७११

वैजयन्तीकोषः

भूतदी २.	३६११८३
भूतृषा १.	३६१२१९
भूभुज् १.	३७११
भूमृत्सभ ३.	८११२०
भूमि २.	३१११
" २.	६२१२७
भूमिकन्दर ३.	३६११५३
(भूमिकन्दक)	
भूमिका २.	३६१६८
भूमिकागत १.	३६१६८
भूमिकूरमाण्ड १.	
" ३.	३६११९५
भूमिमयी २.	२११२३
भूमिलाभ १.	३६१२०१
भूमिस्पृश १	३८११
" १.	७११५९
भूमिष्ठ १. २. ३.	५११८५
भूरद १.	३६११३३
भूरि १. ३.	३२१२०
" १. २. ३.	५११८५
भूरिमाय १.	३६१३८
भूरिलोह ३.	३२१२९
भूरिश्रवस् १.	१२१५
भूरूह १.	३६१४
भूरूह १.	३६१४
भूर्ज १.	३६१४५
भूर्जषत्र १.	३६१४५
भूलता २.	४११५९
भूलवण २.	३८११२२
भूवल्लर ३.	३६११५३
भूशक्र १.	३६११
भूश्वभ्र ३.	४११३
भूषण ३.	४३१३३
भूष्ण १. २. ३.	५११४१
भूस्त्वण ३.	३६१२३४
भूस्पृश १.	६११४२
भूस्फोट ३.	३६११५३
भूकुंस १.	३६१६७
भूकुटि २.	३६१९१
भूगु १.	३२१६
भृङ्ग १.	२३१२७

[भेल]

भृङ्ग १.	२३१४२
" ३.	३८११०४
" ३.	३८११०७
भृङ्गराज ३.	३६११०७
" १.	८११३६
भृङ्गरिड १.	१११५२
भृङ्गा २.	३८१५१
भृङ्गाण १.	३६१४२
भृङ्गार १.	४३११०८
भृङ्गारी २.	२३१४७
भृङ्गिन् १.	१११५२
भृङ्गिरिडि १.	१११५२
भृङ्गकण्ठ १.	३६१५३
" १.	३६१६६
भृङ्गकण्ठक १.	३६११००
भृत्तक १. २. ३.	३६१५
भृत्ति १.	३६१५
भृत्तिभुज् १. २. ३.	३६१५
भृत्त्य १.	३६१२
भृत्त्या २.	३६१६
भृथ १.	४११५०
भृश १. २. ३.	५११३३१
भृशकोपन १. २. ३.	
" ५११३२	
भृशङ्गत १. २. ३.	
" ३७१४९	
भृष्ट १. २. ३.	४३१९३
भृष्टयव १.	४३१७१
भेक १.	३६१२९
" १.	४११४७
" १. २. ३.	६११५९
भेटक १.	३८१६९
भेद १.	३७१३३
" १.	६११४२
भेदितं १. २. ३.	५११११
भेन १.	६११४२
भेय १.	५२११२
भेरी २.	३६११३३
भेरीनाद १.	३६१११
भेल १.	३६१३
" १.	४२११६

[भेल]

भेल १. २. ३.	६११५७
भेलन ३.	५२११२
भेलुक १.	१११५२
भेयज ३.	४११४१
भैल ३.	३८१२
" ३.	५११३३
भैमरथी २.	२११६१
भैरव १. २. ३.	३६१७९
" १.	८११६०
भैपज्य ३.	४११४१
भोः (-स्) ४.	८८१२
भोग १.	४११२१
" १.	६११४४
भोगभूमि २.	११११
भोगवती २.	४११४
" २.	४२१२५
भोगिन् १. २. ३.	७११३१
भीगिनी २.	७११३२
भोज १ ब.	३६१३७
" १.	३६१६२
भोजन ३.	४३११०२
भोजनीय ३.	३८११९
भोज्य ३.	३६१६२
भोल १.	३२१२१
भौम १.	१२१३२
भौरिक १ ब.	३११३१
" १.	३७१२१
भ्रकुंस १.	३६१६७
भ्रकुञ्ज १.	३६१५५
भ्रकुटि २.	३६१९१
भ्रम १.	३६११७७
" १.	३६११८
" १.	४२१११
" १.	५२११०
भ्रमन्त १.	५२१५१
(गृहकोल्हक)	
भ्रमर १.	२३१४२
" १. २. ३.	७११६२
भ्रमरक १.	३८११३५
" १.	४११९९
भ्रमरालक १.	४११९९

शब्दानुक्रमणिका

अमरेष्ट १.	८११५९
अमि २.	५२११०
अष १.	५१११०२
अष्ट १. २. ३.	५१११०२
आज् १.	१३१११
आणक्षक	३६१२५
आवृ १.	४११३१
" १.	४११४७
आवृव्य १.	७११५९
आत्र १.	३८१४१
आत्रीय १.	४११४२
आन्ति २.	५२११०
आमकादि १.	३२१३८
आमर ३.	३८१३३५
आमरी २.	१११५९
आप्द्र १.	५२१५६
अकुंस १.	३६१६७
अकुट १.	३६१३७
अकुटि २.	३६१९१
अू २.	४११९६
" २.	८११२
अूकुंस १.	३६१६७
अूकुटि २.	३६१९१
अूण १.	६११४०
अूणि २.	४२१२१
अूण १.	३६११५
अूणक १.	३६१३१
म	
मक १.	३६१२९
मकर १.	१२१६०
" १.	४११५१
" १.	८६१३३
" १.	८६११५
मकरध्वज १.	१११२७
मकरन्द १.	३६११९
मकरवाहन १.	१२१४५
मकरालय १.	४२१११
मकुट १. ३.	४३१३५
मक्षण १.	३७१६७
मक्षिका २.	२३१४४
मक्षुण ३.	५११४८

[मञ्जूषा]

मख १.	३६१८२
मगध १ ब.	३६१३१
मघवत् १.	१२१२
मघा १ ब.	२३१३३
मङ्क १.	४११२६
मङ्कश १.	३६१७०
मङ्कु ४.	८८११
मङ्ग १. ३.	३२११७
मङ्गल १.	२३१३१
" १.	५३१४८
मङ्गलध्वनि १.	३६१५७
मङ्गलमालिका २.	
" ३६१५७	
मङ्गलाह्निक ३.	३६१५८
मङ्गल्य १.	३६१३०
" ३.	३८१४०
" ३.	३८१३९
" ३.	४३११४
मङ्गल्या २.	३६१३९८
" ३.	३८११०८
" २.	५३१५८
मङ्गिनी २.	४२११५
मचचिका २.	८११४२
मज्ज १.	४१११०
मज्जा २.	३६११४
" २.	४१११०
मज्जाकर ३.	४१११०९
मञ्ज १.	४३१३२
मञ्जक १.	४३१३६४
मञ्जन ३.	३६१२४
मञ्जुरि २.	३६१२०
मञ्जरी २.	३६११९९
मञ्जरीक १.	३६१२०
मञ्जिष्ठा २.	३६१३५
मञ्जी २.	३६१२०
" २.	३६१६२
मञ्जीर १. ३.	४३१३५
मञ्जु १. २. ३.	५११३३४
मञ्जुल १. २. ३.	
" ५११३३४	
मञ्जूषा २.	४३१६३

मञ्जूषा]		वैजयन्तीकोषः		[मधु		मधु]		शब्दानुक्रमणिका		[मन्थर	
मञ्जूषा २.	७२११	मण्डलिन् १.	४११७	मस्याक्षी २.	३३१४४	मधु १.	२११८७	मधुराङ्गक १.	५३२२७	मध्वालुक १.	३३२२१०
मट १.	३१५१८	" १.	४११८	" २.	३३१५६	" १.	३३१६१	मधुराङ्गक ३.	३१८१३६	मध्वासव १.	३१५४९
मटची २.	२१२७	" १.	४१११०	मथित ३.	३१८१००	" २.	३३१४३	मधुलिह् १.	२३३४२	मनश्शिला २.	३३२११
मठ १.	४३१२७	" १.	४१११३	मथिन् १.	३१९३१	" १. ३.	३१८१३४	मधुवाच् १.	२३३२७	" २.	३३३२११
" १. २. ३.	८१९३९	" १.	७११६०	मथुरा २.	४३३६	" ३.	३१८१४५	मधुवार १.	३१९५२	मनस् ३.	३३३१७२
मठर १.	५३३३	मण्डलेखर १.	३१७२	मद १.	३३३१८८	" १.	५३३३३	मधुवत १.	२३३४३	मनसिज १.	१११२७
मठी २.	८१९३९	मण्डहारक १.	३१५४४	" १.	३१७८२	" १.	६१५६१	मधुशिग्रु १.	३३३५६	मनस्कार १.	३३३१७४
महृषिका २.	३३५५१	मण्डिका २.	४३३७८	" १.	५३३३२	मधुक १.	३१५३७	मधुश्रेणि १.	३१५४४	मनाक ४.	८१८१२
(मधूषिका, मट्टिका)		मण्डकी २.	३१७७९	" १.	८१५३६	" १.	३१७३०	मधुष्टील १.	३३३४३	मनाका २.	७२१९९
मड्डु १.	३१९१३५	मण्डक १.	३१७५१	मदकल १.	३१७६८	" ३.	३१८१३४	मधुसम्ब १.	१११२८	मनित १. २. ३.	५३१०१
मड्डुकैरिक १.	३१५३१	" १.	४११४८	मदकोहल १.	३१४५४	" १.	५३३३२	मधुसारथि १.	१११२९	मनीषा २.	३३३१६३
मणि १. २.	३३३३६	मण्डकपर्ण १.	३३३६८	मदन १.	२३३३	मधुकर १.	२३३४३	मधुसूदन १.	११११५	मनीषिन् १.	३३३२३५
" १. २.	४३३६२	मण्डकपर्णी २.	३३३१४४	" १.	३३३४९	मधुका २.	३१८५६	मधुस्रव १.	३३३४३	मनुज १.	३१५१
" १. २.	४३३७३	मण्डूर ३.	३३३३६	" १.	३३३६१	मधुकुक्कुटी २.	३३३३४	मधुस्रवा २.	३३३१८०	मनुज्येष्ठ १.	३३३१५८
" १. २.	६१५६२	मत ३.	३३३१७४	" १.	३३३५५	मधुकम १.	३१९५२	मधूक १.	३३३४३	मनुष्य १.	३१५१
मणिक १.	४३३५६	" ३.	३१८१०७	" १.	३३३३७	मधुकीर १.	३३३२२२	मधूच्छिष्ट ३.	३३३१३७	मनुष्यधर्मन् १.	१३३५६
मणिकण्ठ १.	२३३२९	मतङ्गज १.	३३३६०	" १.	७११६१	मधुच्छिद्र १. २.	३३३३८	मधूपद्मा २.	४३३६	मनोजव १.	३१५५
मणिकार १.	३१५६३	मतल्लिका २.	८१९४२	मदनध्वजा २.	२११७५	मधुतृण १.	३३३२२५	मधूल ३.	३१८१३७	मनोजवा २.	१३३३०
" १.	३१९१५	मति २.	३३३२३३	मदना २.	३१९४६	मधुप १.	२३३४२	" १.	५३३३३	मनोज्ञ १. २. ३.	
मणित ३.	२३३७	" २.	६३२२७	मदनी २.	३३३३६	मधुपर्क १.	३३३६२	मधूलक १.	३३३४४		५३३३३४
मणिवन्ध १.	४३३७३	मत्कुण ३.	३३३१५४	मदवृन्द १.	३३३६२	मधुपर्णी २.	८३३८	" १.	५३३२५	मनोज्वला २.	३३३१८२
मणिल १. २. ३.	५३३८	" १.	४३३३५	मदमत्तक १.	३३३७७	मधुपुष्प १.	३३३४३	" १. २. ३.	८३३३३	मनोभिधा २.	३३३१२
मणिसानु १.	१३३१२	मत्त ३.	३३३६७	मदयन्ती २.	३३३१८३	मधुबीज १.	३३३७४	मधूलिक १.	५३३३३	मनोरथ २.	३३३१७९
मणिसोपान ३.	४३३१४२	" १. २. ३.	५३३३७	मदस्थान ३.	३३३७३	मधुबोल १.	५३३३८	मधूषिका २.	४३३६	मनोरम १. २. ३.	
मणीच ३.	७३३२७	मत्तकाशिनी २.	४३३१२	मदिरा २.	३३३४५	मधुमलिका २.	२३३४५	मध्य ३.	३३३१२३		५३३३५
मणीचक ३.	३३३१८	मत्तवारण ३.	४३३३१	मदिष्टा २.	३३३४६	मधुमद्य ३.	३३३४८	" १. ३.	४३३६७	मनोविकार १.	३३३१८०
मण्टप १. ३.	४३३२८	" ३.	४३३१६४	मदुर १.	३३३३	मधुमालक १.	५३३३७	" १. २. ३.	५३३२९	मनोहर १. २. ३.	
मण्डजात ३.	३३८१४०	मत्थ ३.	३३८३०	मदोत्कट १.	२३३१४	मधुयष्टिका २.	३३८१०३	" १. २. ३.	६३३६३		५३३३५
मण्ड १. ३.	४३३७७	मत्सर १. २. ३.	७३३६३	" ३.	३३३४८	मधुर ३.	३३८१०३	मध्यदन्त १.	४३३८९	मनोहरी २.	३३८७७
" १.	५३३४७	मत्स्य १.	१३३१८	मदोदका २.	३३८८२	" ३.	३३९११२	मध्यदेश १.	३३३२२	मन्तु १.	३३७४७
मण्डन ३.	४३३१३३	" १.	४३३४१	मदुगु १.	२३३११	" १. २. ३.	४३३८२	मध्यन्दिन १.	२३३६५	मन्त्र १.	३३३३३
" १. २. ३.	५३३४१	मत्स्यगु १.	३३३१५७	" १.	३३३५२	" १.	५३३२५	मध्यम १.	३३३३२	" १.	६३३४५
मण्डपीठिका २.	२३३७	मत्स्यण्डी २.	३३८१३३	" १.	३३३७१	" १.	५३३२७	" १.	४३३६७	मन्त्रजिह्व १.	१३३१७
मण्डल १.	३३३६९	मत्स्यधानी २.	२३३४२	" १.	३३३८४	" १. २. ३.	७३३२२	" १. २. ३.	५३३७७	मन्त्रज्ञ १.	३३७२६
" ३.	३३७४९	मत्स्यनाशन १.	२३३३४	" १.	३३३९३	मधुरवाच् १. २. ३.		मध्यमा २.	४३३७४	मन्त्रिन् १.	३३७१८
" ३.	३३७१८७	मत्स्यपित्ता २.	३३८६८	महलध्वनि १.	२३३१०	मधुरस १.	३३३२१०	मध्यमीय १. २. ३.	५३३७७	" १.	८३३४५
" ३.	४३३१२४	मत्स्यराज १.	४३३५१	मद्य ३.	३३३४४	मधुरसा २.	८३३८	मध्यमास्वात १.	३३३२३०	मन्थ १.	३३३३१
" १. २. ३.	७३३६५	मत्स्यवेधन ३.	३३३४२	मद्यबीज ३.	३३३५०	मधुरस्वन १.	४३३५५	मध्यरात्र १.	२३३६६	" १.	४३३७१
मण्डलपत्रिका २.	३३३९२	मत्स्यव्रतिन् १. २. ३.	३३३३३१	मद्यसन्धान ३.	३३३५१	मधुरा २.	३३३२५	मध्यस्थ १. २. ३.	३३८१९	मन्थपात्र ३.	३३३३२
मण्डलाग्र १.	३३३१६०	मत्स्यसङ्घात १.	४३३४५	मधु १.	२३३८३	" २.	४३३६	मध्याह्न १.	२३३६५	मन्थर १. २. ३.	३३३१५०
मण्डलिन् १.	३३३७२										

मन्थर]	वैजयन्तीकोषः	[मलय	मलयज]	शब्दानुक्रमणिका	[महाबुस
मन्थर १. २. ३. ७।५।६४	मयु १. १।३।३	मर्कट १. ३।४।३९	मलयज १. ३।८।११२	मविघटी २. ३।९।२५	महाग्राम १. ४।३।२
मन्थविष्कम्भ १. ३।९।३२	मयूक १. २।३।३७	॥ ३. ४।३।४८	मलयद्वीप ३. ३।९।१४	मसुर १. ३।८।४०	महाग्रीव १. ३।४।६७
मन्थान १. ३।९।३१	मयूख १. २।१।१६	मर्कटक १. ३।८।६२	॥ ३. ३।९।१६	मसूरक १. ३।८।४०	महाघोण्टा २. ३।३।७८
मन्थोदधि १. ३।१।११	॥ १. २. ३. ८।९।२५	॥ १. ४।१।३४	मलयवासिनी २. १।१।६३	मसूरिका २. ३।८।४०	महाचण्डी २. १।१।६४
मन्द १. १।२।३४	मयूर १. २।३।१४	मर्कटास्थ ३. २।२।२४	मलयद्वाशस् २. ४।४।१५	मसूरी २. ४।४।१३७	महाचारी २. ३।९।१४२
॥ १. २।१।३५	॥ १. २।३।३६	मर्कटी २. ४।३।४८	मलवारिन् १. २. ३.	मसृण १. ५।३।४	महाजम्बू २. ३।३।९२
॥ ३. ३।८।१४०	मयूरक ३. ३।२।४२	मर्कस १. ३।९।५१	५।४।१६	मसृणत्व ३. ५।३।१	महाजाली २. ३।३।१६२
॥ १. २. ३. ५।४।५५	॥ १. ३।३।११५	मर्कटपिपीलिका २.	मलयविष्टम्भ १. ४।४।१२८	मसृणी २. ३।८।४५	॥ २. ३।८।१२३
॥ १. २. ३. ६।५।६०	॥ १. ३।३।१२०	४।१।३७	मलक्षुति २. ४।४।१२८	मस्कर १. ३।३।२१५	महाज्वाला २. १।२।२९
मन्दगामिन् १. २. ३.	मरकत ३. ३।२।३८	मर्त १. ३।६।२०६	मलहारक १. ३।७।८७	मस्करिन् १. ३।६।१६०	महाक्ष १. ४।१।५५
३।७।१५०	मरण ३. ३।६।२०२	मर्त्य १. ३।५।१	मलिन ३. ४।२।१	मस्तक १. ३. ४।४।८६	महाटवी २. ३।३।२
मन्दर १. ४।३।१४०	मरणालस ३. ३।६।२१७	मर्त्यलोक १. ३।६।२०६	॥ १. २. ३. ५।४।६६	मस्तिक १. ४।४।८५	महातेजस् १. १।१।५५
मन्दरमणि १. १।१।४६	मरन्द १. ३।३।१९	मर्द १. ३।६।१६७	मलिना २. ४।४।१५	मस्तिक १. ४।४।११२	महात्मन् १. २. ३.
मन्दरवासिनी २.	मराल १. २।३।५	मर्दन ३. ५।२।३०	मलिनाम्बु ३. ३।९।२५	मस्तु ३. ३।८।१४४	५।४।५६
१।१।६३	॥ १. ३।३।१९२	मर्दनी २. ३।७।१५५	मलिग्लुच १. ३।३।४४	मस्तुलङ्ग १. ३. ८।५।१९	महादंष्ट्र १. ३।४।४
मन्दाकिनी २. १।१।१३	॥ १. ३. ५।३।१७	मर्दल १. ३।९।१३४	॥ १. ३।६।७७	मस्तुलङ्गक १. ४।४।११२	महादेव १. १।१।४१
मन्दाक्ष ३. ३।६।१९४	मरिच ३. ३।८।७९	मर्दलध्वनि १. २।४।१०	॥ १. ३।९।५५	मह १. ३।६।६१	महादेवी २. १।१।५८
मन्दागा २ ब. २।१।४१	मरिष्टक १. ३।२।३८	मर्मभेदन १. ३।७।१७९	मलीमस १. २. ३.	महः ३. ३।६।२०७	॥ २. ३।७।३१
मन्दार १. १।३।१४	मरीच ३. ३।८।७९	मर्मर २. २।४।८	५।४।६६	महत् १. ३।६।१६३	महाधन १. २. ३.
॥ १. ३।३।४४	मरीचि १. २. २।१।१६	॥ १. ५।४।१४४	मलुक १. ३।४।७२	॥ ३. ३।६।२०७	४।३।११८
मन्दिर ३. ४।३।१८	मरीचिका २. २।१।२२	मर्मरा २. ४।३।७०	॥ १. ४।६।६७	॥ १. २. ३. ६।५।६३	महाधातु १. ४।४।१०४
॥ ३. ७।३।२७	॥ २. ५।१।४२	मर्मस्पृश १. २. ३.	मलुक १. २।३।२	॥ ३. ८।३।१८	महानट १. १।१।४४
मन्दुपाल २. ३।५।३१	मरु १ ब. ३।१।३८	५।४।११२	मल्ल १. ३।५।५५	महती २. ३।३।१३८	महानर्मन् १. ३।५।७१
मन्दुरा २. ४।३।२१	॥ १. ३।१।४२	मर्यादा २. ३।९।१५	॥ १. ४।३।६७	॥ २. ३।९।११९	महानस ३. ४।३।५४
मन्दोत्खात १. ३।६।२३०	मरुक १. ३।४।११	॥ २. ४।२।१३	॥ १. ४।४।८८	महत्तरी २. ३।७।३७	महानाद १. ३।४।१
मन्दोष्ण ३. ५।३।९	मरुजा २. ३।४।२२	॥ २. ४।३।११	मल्लक १. २।३।३१	महर् ३. ४. ३।६।२०७	महानील ३. ३।२।४०
मन्द्र १. २. ३. २।४।१३	मरुत् १. १।१।२	॥ २. ७।२।१९	मल्लनाग १. ३।६।१५९	महत्विज् १. ३।६।७९	महानेमि १. २।३।१५
॥ १. ३।७।६२	॥ १. १।२।३९	मर्ष १. ३।६।१८४	मल्लि २. ६।२।२७	महस् ३. ६।३।२४	महापक्ष १. २।३।११
मन्द्रभद्रमृगा १. ३।७।६५	॥ २. ३।३।११७	मल ३. ३।२।२९	॥ १. २. ८।९।२६	महाकदम्बक १. ३।३।६०	महापक्षिन् १. २।३।२३
मन्द्रलक्षण ३. ३।७।६३	मरुत्वत् १. १।२।४	॥ १. ३।५।२४	मल्लिका २. ३।३।१८३	महाकन्द ३. ३।३।२०४	महापत्र १. ३।३।२१६
मन्मथ १. १।१।२७	मरुद्गण १ ब. १।३।८	॥ १. ४।१।३२	मल्लिकाकुसुमप्रिय १.	॥ ३. ३।८।७६	महापद्म १. १।२।६०
॥ १. ३।३।३२	॥ १ ब. १।३।१०	(अल)	३।३।३५	महाकाय १. ३।७।६१	॥ १. ३।३।२०९
मन्मथसख १. २।१।८३	मरुध्व १. ३।३।६३	॥ १. ३. ४।४।११९	मल्लिका १. २।३।७	महाकार १ ब. ३।१।३९	॥ १. ४।१।१२
मन्या ३।७।८५	मरुन्माला २. ३।३।११७	॥ १. ३. ४।४।१२०	॥ १. ३।७।९२	महाकाल १. ८।१।३७	॥ ३. ४।२।४०
॥ २. ४।४।११७	मरुल १. ३।४।७३	॥ १. ५।४।१४४	मल्ली २. ४।३।५७	महाकाली २. १।१।६१	महाप्रलय १. २।१।९४
मन्यु १. ३।६।१८३	॥ ३. ४।२।१	॥ १. ६. ६।५।६५	॥ २. ८।९।२६	महाकीर्तन ३. ४।३।१९	महाफला २. ३।३।८८
॥ १. ६।१।४५	मरुवक ६. ३।३।४९	मलद १ ब. ३।१।३६	मशक १. २।३।४४	महाकोशातकी २.	॥ २. ३।३।९२
मन्वन्तर ३. २।१।९३	मरुक १. ७।१।६२	॥ १. ३।८।३५	मशकहरी २. ४।३।१२४	३।३।१५९	॥ २. ३।३।१७०
मय १. १।३।७	मरुद्धव १. ३।३।६४	मलना २. ३।३।१६०	मशकिन् १. ३।३।२८	महागण १. ५।१।३१	महाबल २. १।२।५०
॥ १. ३।४।६७	मर्क १. १।२।४९	मलय १. ३।२।३	मशन ३. २।४।२	महागन्धा २. १।१।६४	॥ २. ३।८।१३१
मयष्टक १. ३।८।३८	॥ १. ६।१।४७	॥ १. ७।५।६३	मशाक १. २।३।३	महाग्रहायणी २. २।१।७८	महाबुस २. ३।८।३४

[महाबुस]

महाबुस २.	३१८५१
महाभूत ३.	३१६१२०६
महामात्र १.	३१७८८
" १. २. ३.	५१४५६
महामुख १.	४११५३
महामुनि १.	३१३७९
महामूल्य १. २. ३.	४३११८
महामृग १.	३१७६१
महामेरु १.	११३१२
महाम्बुज ३.	५११३२
महायज्ञ १.	३१६६३
महायव १.	३१८५२
महारजत ३.	३१२१८
" ३.	३१८९१
महारण ३.	३१७२०६
महारस १.	३१३२२२
" १.	३१३२२५
महारसा २.	३१३११०
" २.	३१३१२३
महाराज १.	३१९१०३
" १.	४१४७६
" १.	८११२६
महारात्र १.	२११६६
महारात्री २.	१११६१
महाराष्ट्र १ ब.	३११३३
महालय १.	८११३६
महालोभ १.	३१३५२
महावस १.	४११५४
महाविड ३.	३१८१२३
महाविष्णु १.	१११३१
महावीर १. २. ३.	८१५२०
महावृष १.	३१८३५
महावेग १.	३१५४०
महाव्यसनसप्तक ३.	३१७११
महाव्रत १.	१११४५
महाशय १. २. ३.	५१४१६
महाशल्क १.	४११४४

वैजयन्तीकोषः

महाशल्का २.	३१३३४
महाशालि १.	३१८३२
महाशिला २.	३१७१६९
महाशूद्र १.	३१९२८
महाश्रावणिका २.	३१९१४
महाश्वेता २.	३१३१३५
" २.	३१३१९६
महासना २.	३१२११
महासन्धा २.	३१३१०५
महासर्प १.	४११११
महासहा २.	३१३१०७
" २.	३१३१८८
" २.	८१२१५
महासुसि २.	२११९४
महासेन १.	१११५५
महास्नायु २.	४१४११७
महाहस १.	३१९८४
महित १.	३१२१५
(महिक)	
महिमत १.	११२२७
महिमन् १. ३.	८१९३१
महिला २.	४१४४
महिष १.	३१४८
" १.	३१५१३
महिषबाहन, १.	११२३३
महिषाक्ष १.	३१८११२
महिषी २.	२११७४
" २.	३१७३१
" २.	७१२१९
मही २.	३११३
महीपति १.	३१३३७
महेच्छ १. २. ३.	५१४१६
महेन्द्र १.	११२७
महेन्द्रजित् १.	१११३७
महेश्वर १.	१११३८
" १.	३१३५३
महेश्वरी २.	३१२२६
महोत्त १.	३१४५५
महोत्पल ३.	४१२३७
महोदधि १.	४१२१२
महोदय १.	४३३७

[माणव्य]

महोदया २.	४१४६
महोदरी २.	३१३१९९
महोद्रेक १.	५११५४
महौजस् १.	१११५६
महौषध १.	३१३२०६
" ३.	८१३१०
मा २.	१११३६
" २.	८१७१०
" २.	८१९२
मांस ३.	४१४१०६
मांसकर ३.	४१४१०५
मांसकील १.	४१४१३३
मांसनिष्काथ १.	४१३८७
मांसल १. २. ३.	५१४६
मांसलता २.	४१४११२
मांसविक्रयिन् १.	३१९३७
मांसि १.	५१३५६
मांसिक १.	३१९३७
मांसी २.	३१८१००
माकन्द १.	३१३२५
माक्षिक ३.	३१२१५
" ३.	३१८१३५
मागध १.	३१५१६
" १.	३१५७९
" १.	३१५८०
" १.	३१५८७
" १.	३१७३०
" १.	३१८८४
मागधी २.	३१३१६०
" २.	३१८७६
मागवी २.	३१८५६
माघ १.	२११८२
माघी २.	२११७४
माघ्य १.	३१३१९१
माटङ्क १.	४१३३४
माठि २.	३१७१५३
माठि २.	३१३१८
माण १.	३१३२०९
माणव १.	४१३१४०
माणवक १. २. ३.	५१४३
माणव्य ३.	५११७

माणिक्य]

माणिक्य ३.	३१२४१
माणिक्या २.	४११३०
माणिचरि १.	११३३
माणिमन्थ ३.	३१८१२०
मातङ्ग १.	३१७५४
मातङ्गी २.	८१२१४
मातरपितर १ द्वि.	४१४४७
मातरिश्चन १.	११२४७
मातलि १.	११२९
मातापितृ १ द्वि.	४१४४७
मातामह १.	४१४३०
" १ ब.	४१४४९
मातुल १.	४१४३३
" १.	७११६१
मातुलपुत्र १.	८११५४
मातुलानिका २.	३१८५१
मातुलानी २.	४१४३६
मातुलाहि १.	४१११९
मातुली २.	४१४३६
मातुलुङ्ग १.	३१३३३
" १.	३१३३३
मातुलुङ्गी २.	३१३३४
मातृ २.	२११७४
" २.	४१३१६३
" २.	४१४२६
" २.	६१२२८
" २.	८१६१८
" २.	८१९४४
मातृका २.	४१४२१
मातृमुख १. २. ३.	५१४४६
मातृशिष्ट १. २. ३.	५१४२१
मातृष्वसेय १.	४१४४२
मातृष्वस्त्रीय १.	४१४४२
मात्र १. २. ३.	५१४३६
मात्रा २. ३.	६१५६२
" २. ३.	६१५६३
मात्सर्य ३.	३१६१८४
माथ १.	४१४१३८

शब्दानुक्रमणिका

माथिक १.	३१३७५
माद १.	५१३३२
माधव १. ३.	३१९४९
" १.	७११६१
माधवी २.	३१३१८७
" २.	३१९४५
माधुर १.	३१६१०८
" १.	५१३३२
माध्वी २ ब.	२११२१
माध्वीक ३.	३१९४८
मानमन्दिर १.	११२४२
(मानमन्दर)	
मानव १.	३१५११
मानवी २.	३१३१८२
मानस ३.	३१६१७२
मानसौक्य १.	२१३६
मानिन् १.	३१३१५०
मानी २.	५११५३
मानुष १.	३१५११
मानुष्यक ३.	५११८
मान्दा २ ब.	२१११९
मान्य ३.	४१४१३८
मान्धीर १.	२१३२८
मान्धीलव १.	२१३२८
माभीद १.	३१३७९
माया २.	११११६
" २.	३१३१३८
" २.	३१६१६१
" २.	३१७१२
मायाविन् १. २. ३.	५१४२४
मायिक १. २. ३.	५१४२४
मायिन् १. २. ३.	५१४२४
मायु १.	४१४१२१
मायूरी २.	३१९१३१
मार १.	१११२७
मारक १. ३.	३१६२०२
(मरक)	
मारजित् १.	१११३३
मारण ३.	३१७२१४
मारि २.	३१६२०२

[मार्षक]

मारि २.	४१४१३७
मारिष १.	३१३१५०
" १.	३१९१०६
मारुङ्ग १.	५१३११
मारुत १.	११२५०
मारुती २.	२११५
मार्कव १.	३१३१०७
मार्ग १.	३११४९
" १.	६११४६
मार्गण ३.	३१७१७४
" १. २. ३.	५१४६०
" १.	७१५६४
मार्गणा २.	३१६१२१
मार्गनिवेश १.	४१३१५
मार्गर १.	३१५३२
" १.	३१५१००
" १.	३१९४२
मार्गशीर्ष १.	२११८१
मार्गायणी २.	२१३३८
मार्गित १. २. ३.	५१४९८
मार्ज १.	५१३११
मार्जन १.	३१३५२
" १.	५१३११
मार्जना २.	२१४१०
" २.	३१९१३०
मार्जा ३.	४१३९९
मार्जारी १.	३१३१७८
" १.	३१३१५६
" १.	३१४७१
मार्जारकण्ठ १.	२१३३८
मार्जारकर्णिका २.	१११६३
मार्जारिका २.	३१४३६
मार्जारी २.	३१४३४
मार्जालीय १. २. ३.	८१५२०
मार्जिता २.	४१३९८
मार्तण्ड १.	२१११३
मार्तण्ड १.	२१११०
मार्दङ्गिक १.	३१९१७०
मार्षक १.	३१९१०६

[माष्टि]

माष्टि २.	४३११४७
माल ३.	३१११३
" १.	३१११२२
" १.	३११२५
मालती २.	३१११८२
मालतीतीरसम्भव १.	३१८१३०
मालव ३.	३११११६
" १ ब.	३११३७
" १.	३१११०६
मालवक १.	३१५६३
माला २.	४३११५४
मालाकार १.	३११३३
मालातृणक ३.	३१३२३४
मालिक १.	३११३३
मालिका २.	३१३१८६
" २.	४३१२९
" २.	५११२४
मालुक १. २. ३.	२११२०
" १.	३१५१९
मालुधान १.	४१११९
मालुवा २.	३१३२१०
मालूर १.	३१३३०
मालोर्जर १.	३१३१२०
माल्य ३.	६३१२५
माल्यजीविन् १.	३११३३
माल्यवत् १.	३१२४
माष १.	३१८३५
" १.	५११४३
" १.	५११४४
" १.	५११४५
" १.	५११६३
माषपर्णी २.	३१३१०७
माषाशिन १.	३१७९१
माषीण १. २. ३.	३१८२०
माष्य १. २. ३.	३१८२०
मास १.	८११६१
मास १.	२११८०
मासतम १. २. ३.	५१११९
मासर १.	३११५१

वैजयन्तीकोषः

मासर १.	४३१७८
मासिक ३.	३१६१५
माहामलय ३.	३१११६
माहिर १.	११२१६
माहिष १. २. ३.	३१११४
माहिषाडुक १.	३१५४८
माहिष्मती २.	४३१९
माहिष्य १.	३१५१२
" १.	३१५६९
माहेन्द्री २.	३१३१७५
माहेयी २.	३१४४२
माहेश्वरी २.	१११६४
मित १. २. ३.	५११३६
मितद्रु १.	४२१२२
मितरूपच १. २. ३.	५११५९
मित्र १.	२१११५
" ३.	३१७३९
" ३.	३१७४३
" ३.	३१८१२
" ३.	८११४७
मिथस् ४.	८१७२७
मिथिला २.	४३१७
मिथुन ३.	४३११००
" ३.	४१४४८
" ३.	५१११५
" १. २. ३.	५१११६
" ३.	५१११६
" ३.	८१११४
मिथुनत्व ३.	४३१७१
मिथुनिन् १.	२१३२४
मिथ्या ४.	८१८१३
मिथ्याचर्या २.	३१६१९६
मिथ्याभियोग १.	३११३२
मिर्मिर १. २. ३.	५११९
मिश्र १. २. ३.	५११०८
मिश्रक ३.	३१६१२
मिष १.	३१५१४
" ३.	३१६१९५
मिषत् १. २. ३.	५११६१
मिहिका २.	२१२१९

[मुखरा]

मिहिर १.	२१११५
" १.	७११६२
मीढ १.	३१४६४
" १. २. ३.	५१११३
मीढा २.	३१६१६
मीन १.	४११४१
" १.	८१११४
मीना २.	३१६१२३
मीनाङ्क १.	१११२७
मीमांसा २.	३१६२९
" २.	३१६१७५
मीलिका २.	३१२२७
(नीलिका)	
मुक १.	५११५६
मुकुन्द १.	११११३
" १.	१२१६१
मुकुन्दक १.	३१३२०५
मुकुर १.	४३११६२
मुकुल १. ३.	३१३१९
मुक्तकञ्चुक १.	४११२०
मुक्तबन्धना २.	३१३१८३
मुक्ता २.	४११५६
" २.	६१२२९
मुक्ताफल ३.	४११५७
मुक्तामुक्त ३.	३१७१९६
मुक्तावली २.	४३१३८
मुक्तास्फोट १.	४११५६
मुक्ति २.	३१६२३८
मुख ३.	३१८१२१
" ३.	४३११५
" ३.	४१४८६
" ३.	६३१२५
मुखज १.	३१६११
मुखबन्धन ३.	३१८१४१
मुखभूषण ३.	३१२३१
" ३.	३१३१०६
मुखभेद १.	३१९१८८
मुखमण्डन १.	३१३१६९
मुखर १. २. ३.	५११४६
मुखरज्जु २.	३१७११२
मुखरा २.	२१३२०

[मुखावास]

मुखावास १.	३१७४८
मुखवासन १.	५३१५३
मुखशाला २.	४३१२४
मुखशोभा २.	३१६३५
मुख्य १. २. ३.	५११६३
मुख्योपाय १.	३१७१२
मुख्य १. २. ३.	६१११२
मुखिर १. २. ३.	७११६६
मुखुटि १. २.	४११७९
मुखुटी २.	३१७१९३
मुखुलिन्द १.	३१३३६
मुञ्ज १.	३१३२२८
" १.	३१३२२९
मुञ्जकेशिन् १.	११११३
मुञ्जन ३.	२१४२
मुण्ड १. २. ३.	३१६१६
" १. ३.	४११८६
मुण्डन ३.	३१६१४
मुण्डा २.	३१३१२५
" २.	४१११०
मुण्डित १. २. ३.	३१६१६
मुण्डितिका २.	३१३१२५
मुण्डी २.	३१३१२५
मुण्डीर १.	२१११३
मुद् २.	३१६१८८
मुदित १. २. ३.	५११३३
" १. २. ३.	५११९९
मुदिर १.	२१२२
मुद्र १.	३१८३६
मुद्र १.	३१६१०२
" १.	३१७१७१
मुद्रक १ ब.	३११२९
मुद्रित १. २. ३.	५१३१७
" १. २. ३.	५१११०
मुधा ४.	८१८१२
मुनय १. ३.	३१६१६८
मुनि १.	१११३४
" १.	३१३१२३
" १.	३१३१५८
" १.	३१३२२७
" १.	३१६१५०

शब्दानुक्रमणिका

मुनि १.	३१६१५२
मुनिपिष्टकिन् १. २. ३.	३१६१३४
मुनिप्रिय १.	३१८५८
मुनिवृक्ष १.	८१६१९
मुनिव्रतित् १. २. ३.	३१६१३३
मुनिसेवित १.	३१८५७
मुनीन्द्र १.	१११३४
मुर ३.	३१८९८
मुरज १.	३१९१२९
मुरजध्वनि १.	२१४१०
मुररिपु १.	११११३
मुरली २.	३१९१२५
" २.	३१९१२७
मुस्ली २.	३१३१६
(मरुङ्गी)	
मुस्ली १ ब.	३११२५
मुस्ली १.	११२२०
" १.	५१३१६
मुषित १. २. ३.	५१११६
मुष्क १. ३.	४११६३
मुष्कर १. २. ३.	५११८८
मुष्टि १.	३१७१६८
" १. २.	४११७९
" १. २.	५११५१
" १. २.	५११६३
मुष्टिक १.	३११५४
मुष्टिमान्य ३.	३१७१९२
मुष्ट्यष्टक ३.	३१६१६
मुष्ट्यायोजन ३.	३१७१८९
मुसल १. ३.	४३१६५
मुसलयष्टिक १.	३१७१७१
मुसलिन् १.	१११२३
" १.	३१७१७
मुसली २.	३१३२०३
" २.	३१८५०
" २.	४११२६
" २.	४११३०
मुसल्य १. २. ३.	५११७१
मुसुटी २.	३१८५६

[मूल]

मुस्त १.	४११२५
" १. २. ३.	८१९३८
मुस्तक १. ३.	३१३२००
मुस्ता २.	३१३२००
" २.	८१९३८
मुस्तु १. २.	४१४७९
मुहुः (- र) ४.	८१७२७
" ४.	८१८११
मुहुःप्रोक्त १. २. ३.	२१४२२
मुहूर्त १. ३.	२११५४
मूक १.	३१७१०८
" १. २. ३.	५११४४
मूका २.	३१९१७
मूढ १. २. ३.	३१७२९९
" १. २. ३.	५११२१
" १. २. ३.	६१११२
मूत १.	६११४६
मूतक ३.	३१८१४४
मूत्र ३.	४११२०
मूत्रकृच्छ्र ३.	४११२८
मूत्राशय १.	४११६६
मूत्रित १. २. ३.	५१११३
मूर्ख १. २. ३.	५११२१
मूर्च्छन १. २. ३.	३१९१३१
मूर्च्छना २.	३१६२००
" २.	३१९११०
मूर्च्छा २.	३१६२००
मूर्च्छाल १. २. ३.	३१७२१९
मूर्च्छित १. २. ३.	३१७२१९
" १. २. ३.	७११२२
मूर्ति २.	६१२२८
मूर्धन् १.	४११८५
मूर्धाभिषिक्त १. २. ३.	८१५२७
मूर्धावसिक्त १.	३१५६५
मूर्धावसिक्तक १.	३१५६३
मूर्धा २.	३१३११४
मूल ३.	२११४०

[मूल]

वैजयन्तीकोषः

[मेघवाहिन

मूल ३.	३१३१३	मृगया २.	३१३१८
" ३.	३१३१६	मृगयु १.	३१३१८
मूलक १. ३.	३१३१५५	मृगरिपु १.	३१३१८
मूलकर्मन् ३.	३१३११७	मृगरोमज १. २. ३.	३१३११८
मूलकशाकट १. २. ३.	३१३१२१	मृगलघमन् १.	२१३१२५
मूलकशाकिन १. २. ३.	३१३१२१	मृगवीथी २.	२१३१४८
मूलकादिसुत १. २. ३.	३१३१२३	मृगव्य ३.	३१३१३८
मूलकारण ३.	३१३१६१	मृगशिरस् ३.	२१३१३८
मूलकृच्छ्र ३.	३१३१४०	मृगशीर्ष ३.	२१३१३८
मूलधातु १.	३१३१०४	मृगसिंहक १.	३१३१४२
मूलपुष्पिका २.	३१३१२४	मृगाजीव १.	३१३१४४
मूलबर्हणी २.	२१३१४०	मृगाद् १.	३१३१३३
मूलरस १.	५१३१२८	मृगादन १.	३१३१४४
मूलसस्य ३.	३१३१९०	मृगादी २.	३१३१७२
मूलिक १. २. ३.	३१३१२९	मृगारि १.	३१३१३३
मूलिन् १. २. ३.	३१३१२९	मृगित १. २. ३.	५१३१९८
मूल्य ३.	३१३१७०	मृगेन्द्र १.	३१३१३१
" ३.	३१३१२५	" १.	८१३१५
मृषिक १.	३१३१३१	मृड १.	११३१४०
मृषिकपर्णी २.	३१३११३	मृणाल १. २. ३.	३१३१४३
मृषिका २.	३१३१३४	" १. २. ३.	८१३१३८
मृग १.	३१३१११	मृणाली २.	३१३१४३
" १.	३१३१३०	" २.	८१३१३८
" १.	३१३१२१	मृत् १. २. ३.	३१३१२०
" १.	३१३१६२	" ३.	३१३१८२
" १.	३१३१६४	" ३.	५१३११६
" १.	३१३१४७	मृत्स्नान ३.	३१३१६४
मृगणा २.	३१३१२१	मृत्स्वन ३.	३१३१११
मृगतृणा २.	२१३१२२	मृत्तिका २.	३१३१२४
मृगदंशक १.	३१३१६८	मृत्तिकाचूर्ण ३.	३१३१२४
मृगधूर्त १.	३१३१३८	मृत्पु १. २.	३१३१२०२
मृगनाभि १.	३१३१०४	मृत्पुञ्जय १.	११३१४०
मृगपालिका २.	३१३१३५	मृत्पुष्प १.	३१३१२१४
मृगबन्धनी २.	३१३१३९	" १.	३१३१२२५
मृगमत्तक १.	३१३१३७	मृत्पुसंयमन १.	३१३१२३
मृगमद १.	३१३१०४	" ३.	३१३१२७
मृगमात्रिका २.	३१३१२६	मृत्सा २.	३१३१२४
		मृत्सना २.	३१३१२४
		मृद् २.	३१३१२४
		मृदङ्ग १.	३१३१५९

(११८)

मृदङ्ग १.	३१३१६०	मृदङ्ग १.	३१३१६०
" १.	३१३१२९	" १.	३१३१२९
मृदाह्वया २.	३१३११७	मृदाह्वया २.	३१३११७
मृदु १.	५१३१५	मृदु १.	५१३१५
" १. २. ३.	६१३१२	" १. २. ३.	६१३१२
मृदुकण्टक १.	४१३१४३	मृदुकण्टक १.	४१३१४३
मृदुत्वच् १.	३१३१४५	मृदुत्वच् १.	३१३१४५
" १.	३१३१२९	" १.	३१३१२९
मृदुरोमन् १.	३१३१३१	मृदुरोमन् १.	३१३१३१
मृदुल ३.	३१३१०७	मृदुल ३.	३१३१०७
" १.	५१३१५	" १.	५१३१५
मृदुवात १.	११३१५१	मृदुवात १.	११३१५१
मृदङ्ग ३.	३१३१३१	मृदङ्ग ३.	३१३१३१
मृद्वीका २.	३१३१८१	मृद्वीका २.	३१३१८१
मृध ३.	३१३१२०३	मृध ३.	३१३१२०३
मृषा ४.	८१३१३३	मृषा ४.	८१३१३३
मृषार्थक १. २. ३.	२१३१७	मृषार्थक १. २. ३.	२१३१७
मृषासाक्षिन् १. २. ३.	३१३१०	मृषासाक्षिन् १. २. ३.	३१३१०
मृष्ट १. २. ३.	५१३१९१	मृष्ट १. २. ३.	५१३१९१
मेकल १ ब.	३१३१३७	मेकल १ ब.	३१३१३७
" १ ब.	३१३१४०	" १ ब.	३१३१४०
" १.	५१३१६	" १.	५१३१६
मेखलकन्यका २.	४१३१२६	मेखलकन्यका २.	४१३१२६
मेखला २.	३१३१७	मेखला २.	३१३१७
" २.	४१३१४६	" २.	४१३१४६
" २.	४१३११८	" २.	४१३११८
मेघ १.	२१३११	मेघ १.	२१३११
" १.	८१३१३	" १.	८१३१३
मेघज ३.	४१३११	मेघज ३.	४१३११
मेघनाद १.	११३१४४	मेघनाद १.	११३१४४
" १.	३१३१५१	" १.	३१३१५१
मेघनादानुलासिन् १.	२१३१३८	मेघनादानुलासिन् १.	२१३१३८
मेघपुष्प ३.	४१३११	मेघपुष्प ३.	४१३११
मेघमाला २.	२१३१२	मेघमाला २.	२१३१२
मेघवर्मन् ३.	२१३१२	मेघवर्मन् ३.	२१३१२
मेघवह्नि १.	११३१२०	मेघवह्नि १.	११३१२०
मेघवाहन १.	८१३१५४	मेघवाहन १.	८१३१५४
मेघवाहिन १.	११३१२८	मेघवाहिन १.	११३१२८

मेघाख्य]

मेघाख्य ३.	३१३१५५	मेघाख्य ३.	३१३१५५
मेघाभ १.	३१३१९३	मेघाभ १.	३१३१९३
मेघक १.	२१३१३९	मेघक १.	२१३१३९
" ३.	४१३१६८	" ३.	४१३१६८
" १.	५१३१११	" १.	५१३१११
मेघटिक १.	५१३१५७	मेघटिक १.	५१३१५७
मेघ १.	४१३१२९	मेघ १.	४१३१२९
मेघी २.	४१३१४०	मेघी २.	४१३१४०
मेघ १.	४१३१६१	मेघ १.	४१३१६१
मेघक १.	३१३११९	मेघक १.	३१३११९
मेघि १. ३.	३१३१३१	मेघि १. ३.	३१३१३१
मेघिक १.	३१३१०६	मेघिक १.	३१३१०६
मेघ १.	३१३१३५	मेघ १.	३१३१३५
" १.	३१३१५२	" १.	३१३१५२
" १.	३१३१५३	" १.	३१३१५३
" १.	३१३११७	" १.	३१३११७
मेघक १.	३१३१५०	मेघक १.	३१३१५०
मेघस् ३.	४१३१०७	मेघस् ३.	४१३१०७
मेघस्कर ३.	४१३१०७	मेघस्कर ३.	४१३१०७
मेघस्तेजस् ३.	४१३१०९	मेघस्तेजस् ३.	४१३१०९
मेघिनी २.	३१३१३	मेघिनी २.	३१३१३
मेघुर १. २. ३.	५१३१४३	मेघुर १. २. ३.	५१३१४३
मेघोभव १.	४१३१०९	मेघोभव १.	४१३१०९
मेघजित् १.	३१३१५८	मेघजित् १.	३१३१५८
मेघा २.	३१३१६५	मेघा २.	३१३१६५
मेघाविन् १.	२१३१२५	मेघाविन् १.	२१३१२५
" १.	३१३१३४	" १.	३१३१३४
मेघ्य १.	३१३१२९	मेघ्य १.	३१३१२९
" १. २. ३.	५१३१५५	" १. २. ३.	५१३१५५
मेघ्या २ ब.	२१३११८	मेघ्या २ ब.	२१३११८
" २ ब.	२१३१२०	" २ ब.	२१३१२०
मेनात्मजा २.	११३१५८	मेनात्मजा २.	११३१५८
मेरु १.	११३११२	मेरु १.	११३११२
मेरुगण्ड १ ब.	११३११३	मेरुगण्ड १ ब.	११३११३
मेलन ३.	५१३१२७	मेलन ३.	५१३१२७
(मेलक)		(मेलक)	
मेलामणि १. २.	३१३१२५	मेलामणि १. २.	३१३१२५
मेलामन्द १.	३१३१२५	मेलामन्द १.	३१३१२५
मेलाम्बु ३.	३१३१२५	मेलाम्बु ३.	३१३१२५
मेघ १.	३१३१६४	मेघ १.	३१३१६४
" १.	८१३११४	" १.	८१३११४

शब्दानुक्रमणिका

मेघशृङ्ग ३.	४१३१२५	मेघशृङ्ग ३.	४१३१२५
मेघाण्ड १.	११३१६	मेघाण्ड १.	११३१६
मेघी २ ब.	२१३११९	मेघी २ ब.	२१३११९
" २.	४१३१६५	" २.	४१३१६५
मेहन ३.	४१३१७१	मेहन ३.	४१३१७१
(मोहन)		(मोहन)	
" २.	४१३१६१	" २.	४१३१६१
मेहल १.	५१३१५७	मेहल १.	५१३१५७
मेहिन १.	३१३१३३	मेहिन १.	३१३१३३
मैत्र ३.	३१३१५७	मैत्र ३.	३१३१५७
" १.	३१३१६१	" १.	३१३१६१
मैत्रक १.	३१३१०४	मैत्रक १.	३१३१०४
मैत्रावरुणि १.	३१३१५२	मैत्रावरुणि १.	३१३१५२
मैत्री २.	८१३१३५	मैत्री २.	८१३१३५
मैत्रेय १.	३१३१३४	मैत्रेय १.	३१३१३४
मैत्रेयक १.	३१३१५४	मैत्रेयक १.	३१३१५४
मैत्र्य ३.	८१३१३५	मैत्र्य ३.	८१३१३५
मैथिल १.	२१३१६५	मैथिल १.	२१३१६५
मैथुन ३.	७१३१२७	मैथुन ३.	७१३१२७
मैथुनिन् १.	२१३१३३	मैथुनिन् १.	२१३१३३
मैन १.	३१३११३	मैन १.	३१३११३
मैनाक १.	३१३१४३	मैनाक १.	३१३१४३
मैनाकभगिनी २.	११३१६२	मैनाकभगिनी २.	११३१६२
मैनाकस्वप्न २.	११३१६२	मैनाकस्वप्न २.	११३१६२
मैरेय ३.	३१३१४९	मैरेय ३.	३१३१४९
मोक १.	३१३१७२	मोक १.	३१३१७२
" १.	३१३१२५	" १.	३१३१२५
मोक्ष १.	३१३१३८	मोक्ष १.	३१३१३८
" १.	६१३१४७	" १.	६१३१४७
मोक्षण ३.	३१३१९२	मोक्षण ३.	३१३१९२
मोक्षावलम्बिन् १.	३१३१३८	मोक्षावलम्बिन् १.	३१३१३८
मोघ १. २. ३.	५१३१२९	मोघ १. २. ३.	५१३१२९
मोच १. २. ३.	६१३१६४	मोच १. २. ३.	६१३१६४
मोचक १.	३१३१५६	मोचक १.	३१३१५६
मोचा २.	३१३१७५	मोचा २.	३१३१७५
मोदयित ३.	३१३१९५	मोदयित ३.	३१३१९५
मोद १.	३१३१८८	मोद १.	३१३१८८
मोदक १. २. ३.	८१३१६६	मोदक १. २. ३.	८१३१६६
मोरक ३.	३१३१४६	मोरक ३.	३१३१४६
मोरट ३.	३१३१४६	मोरट ३.	३१३१४६

(११९)

[यच

मोरट १.	३१८१४९
" १.	७१३१६५
मोरटा २.	३१३१२४
मोषक १.	३१३१५६
मोह १.	३१३१०९
" १.	३१६१८१
" १.	६११४५
मोहकालिका २.	३१३१४६
मोहनी २.	१११११६
मौकलि १.	३१३११५
मौकल्य १.	३१५१७९
मौक्तिक ३.	३१२१४०
" ३.	४११५६
मौजी २.	३१६१४२
मौडी २.	४१३१७०
मौढव ३.	३१६२००
मौण्डिक २.	३१६१४
मौद्गली १. २. ३.	३१८१९९
मौनिन् १.	३१६११५०
मौरजिक १.	३१९१७०
मौर्विका २.	३१७१७८
मौर्वी २.	३१६१७७
मौलि १. २.	४१३१३५
" १. २.	६१५१६४
मौलिक ३.	३१६१२
मौष्टिक १.	३१९११६
मौहिनिक १.	२११८३
मौहूर्त १.	३१७१५
मौहूर्तिक १.	३१७२५
ग्लान १.	४११४८
ग्लिष्ट १. २. ३.	६१४११
ग्लेच्छ ३.	३१२२५
" १.	३१५११५
" १.	३१५११६
ग्लेच्छभोज्य १.	३१८५३
ग्लेच्छास्य ३.	११२२५
य	
यकृत् ३.	४१४११३
यद्य १.	११२५५
" १.	११३११
" १.	३१४६९

[यत्]

वैजयन्तीकोषः

[यञ्]

यत्तःपट्ट

शब्दानुक्रमिका

[योग]

यत् १.	८११५८	यति २.	६१२२९	यमस्वस् २.	१११६२
यत्तकर्म १.	४११५३	यतिन् १.	३१११६०	" २.	४१२२५
यत्तधूप १.	३१८१११	यत्त १. २. ३.	५११११४	यमी २.	४१२२५
यत्तराज् १.	११२१५५	यत्न १.	३१११६७	यमुना ३.	४१२२५
यत्तम १.	४१११२४	यत्त ४.	८१८२१	यमुनाभ्रातृ १.	११२३४
यत्तमन् १.	४१११२४	यथा ४.	८१७२७	ययु १.	६११४८
यज १.	३१६८३	" ४.	८१८२०	" १. २. ३.	६१५६५
यजत्र ३.	३१६९४	यथातथम् ४.	८१८१३	यहि ४.	८१८१५
यजन ३.	३१६९४	यथायथम् ४.	८१८१४	यव १.	३१८११
यजमान १.	३१६७६	यथार्थम् ४.	८१८१३	" १.	५११४३
यजुरादेष्टृ १.	३१६७६	यथार्हवर्ण १.	३१७२६	" १ ब.	८१९५६
यजुस् ३.	३१६२६	यथासुख १.	२११२६	यवक १.	३१८१५
यज्ञ १.	३१६६३	यथास्वम् ४.	८१८१४	यवक्य १. २. ३.	३१८१९
" १.	३१६८२	यथेप्सित १. २. ३.	४११०४	यवक्रीत १.	३१६१५६
" १.	६११४७	यथोद्वृत्त १. २. ३.	५१४२१	यवक्षार १.	३१८१२७
यज्ञकर्मार्ह १. २. ३.	५१११७	यद् १. २. ३.	५१४२१	यवचूर्णक १.	४१३६८
यज्ञक्रतु १.	३१६८६	" १. २. ३.	८१७११	यवह्वीप ३.	३१११४
यज्ञजागर १.	३१३२७	यदा ४.	८१८१५	" ३.	३१११५
यज्ञत्यागिन् १.	३१६७७	यदि ४.	८१८१४	यवन १ ब.	३११२४
यज्ञपुरुष १.	११११२	यहच्छा २.	५१२६	" १.	३१५१२
यज्ञलिह् १.	३१६७८	यज्ञविष्य १. २. ३.	५१४३०	" १.	३१५७२
यज्ञवराह १.	३१११८	यज्ञवद् १. २. ३.	५१४३०	" ३.	३१८१२३
यज्ञवह १.	११३६	यन्तु १.	३१७१३८	यवनिका २.	४१३१२४
यज्ञाग्नि १.	११२२३	" १.	६११४७	यवनेष्ट ३.	३१२३०
यज्ञाङ्ग १.	३१४१२	यन्त्र ३.	३१७५०	" १.	३१३२०७
यज्ञाढ्य १.	३१६१५५	यन्त्रक ३.	३१९१८	यवपिष्टक १.	४१३७२
यज्ञिय १.	२११९२	यन्त्रगृह ३.	४१३२४	यवफल १.	३१३२१५
" १.	३१३२२९	यन्त्रमुक्त ३.	३१७१९५	यवफलक १.	८११५५
" १. २. ३.	५१११७	यम १.	११२३३	यवमत्त १. २. ३.	५१४११९
यज्ञोपकरण ३.	३१६९४	" १.	३१६२०९	यवस १.	४१४७४
यज्ञोपवीत ३.	८१३१७	" १.	३१७९७	यवागू २.	४१३८०
यज्ञोपवीतक ३.	३१६२०	" १. २. ३.	३१७१२२	यवाग्र १.	५११४३
यज्वन् १.	३१६७६	" ३.	५१११५	यवाग्रज १.	३१८१२८
यज्वर १.	७११६२	" १.	५१२३०	यवानिका २.	३१८१०२
यत ३.	३१७८९	" १. २. ३.	६१५६५	यवान्वित १. २. ३.	
" १. २. ३.	५१४३२	यमक ३.	४१३९९	यवास १.	५१११९
" १. २. ३.	६१४१२	यमभगिनी २.	१११६२	यविष्ट १.	३१३१२३
यतः (-स्) ४.	८१८२१	यमरथ १.	३१४१०	यवीयस् १. २. ३.	५११४४
यतस्तु १.	३१६७८	यमराज १.	११२३४	यवीयस ३.	३१२२३
यति १.	३१६१६०	यमल ३.	५१११५	यव्य १. २. ३.	३१८१९

(१२०)

यत्तःपट्ट १.	३१९१३४	यान ३.	३१७१२३	युगमध्य ३.	३१७१३१
यत्तः ३.	२१४३६	" ३.	३१३२६	युगल ३.	५१११५
यष्टि १. २.	३१६१२३	यानमुख १.	३१७१३०	युगवर्तक १.	२१३३५
" २.	३१७१६२	यापन १.	७१३२८	युगान्त १.	२१९९४
" १. २.	८१९२५	याप्य १. २. ३.	५१४७५	युगालिक १ ब.	३११२५
यष्टिमुक्ता २.	३१८१०३	" १. २. ३.	६१४१३	युगवर्त १.	११११४
यष्टि १.	३१६७६	याप्ययान ३.	३१७१३६	युगासार ३.	२१९९२
यस्त १. २. ३.	५१४११६	याम १.	२११६७	युगाह्वया २.	३१८९४
याम १.	३१६८२	" १.	५१२३०	युगिन् १.	३१६८२
यागकण्टक १.	३१६८०	यामक १.	२११३९	युग ३.	५१११५
याचक १. २. ३.	५१४६०	यामिनी २.	२११५६	" १. २. ३.	५११२३
याचनक १. २. ३.	५१४६०	यामुन ३.	३१२४२	युग्य १.	१११५०
याचना २.	३१६१२०	याम्या २.	२११५६	" १. २. ३.	३१४५८
याचित ३.	३१८१२	यायजूक १.	३१६७५	" ३.	३१७१२३
याच्ना २.	३१३१२०	यायावर १.	३१६४२	युग्यादानप्रसेव १.	
याजक १.	३१६७८	" १.	३१६१५६		३१७११५
याजन ३.	३१६६३	याव १.	४१३१५३	युज् १. २. ३.	५११२३
" ३.	३१८१७	यावक ४.	३१८१३	युजिन १.	११२४८
याज्ञवल्क्य १.	३१६१५५	यावत् ४.	८१७२८	युजान १.	७११६३
याज्ञिक १.	३१८१५२	यावतिथ १. २. ३.	५११२०	युत १. २. ३.	६१४१३
याज्य १.	८१९४४	यावनाल १.	३१८१५६	युतक ३.	५१११५
याज्या २.	३१६११२	यावशादन १.	३१५१८	" १. २. ३.	७१५६७
याज्यापुट १.	३१६११२	यावशूक १.	३१८१२८	युद्ध ३.	३१७२०३
यात ३.	३१७८९	याष्टीक १. २. ३.	३१७१४४	युद्धध्वान १.	२१४१०
यातना २.	११२३९	यास १.	३१३१२६	युध् २.	३१७५६
यातयाम १. २. ३.	८१४११	युक्त १. २. ३.	५१४१०३	युधिष्ठिर १.	११२५
यातु ३.	११२४०	" १. २. ३.	६१४१३	युवति २.	४१४८
यातुक १.	२११६७	युग १.	३११५७	युवन् १. २. ३.	५१४३
यातुधान १.	११२४१	" ३.	३१७१३०	युष्मद् १. २. ३.	८१९४९
यातुगति १.	११२४३	" १.	५१११५	यू १.	४१३३८
यातृ २.	४१४३७	" १. ३.	६१५६६	यूथ १. ३.	५११४
यात्य १.	११२३८	युगकीलक ३.	३१८२८	यूथनाथ १.	३१७६७
यात्रा २.	५१२१०	युगच्छद १.	३१३१७	यूथप १.	३१७६७
" २.	६१२२९	युगद्वय ३.	२११९२	यूथिका २.	३१३१८२
यादस् ३.	४११४०	युगान्धर १ ब.	३११७९	यूप १. ३.	३१६१०३
यादसाङ्गाथ १.	११२४६	" १.	३१७१३२	यूपमध्य ३.	३१६१०४
यादसाप्ति १.	८११५७	युगपत् ४.	८१८६	यूपाग्र ३.	३१६१०४
यादस्पति १.	८११५८	युगपारवर्ग १. २. ३.	३१४५६	यूप १. ३.	४१३१००
यान ३.	३१७१६			योक्त्र ३.	३१८२८
				योग १.	३१६२०८

(१२१)

[योग]

योग १.	६११४८
योगपट्ट १.	३६६१५०
योगवाही २.	३८८१२९
योगाजि १.	३६६१५५
योगावाप १.	३७११८८
योगिन् १.	३३३३६
" १.	३८८१२८
योगिनी २.	१११६०
योगियान १.	२११४५
योगेश १.	३६६१५५
योगेष्ट ३.	३२२२९
योग्य १.	२११३९
" ३.	३७१२२४
" ३.	३८८१४५
" १. २. ३.	६१५६७
" १. २. ३.	३५५६७
योग्या २. ब.	२११४१
" २.	३६६१४६
" २.	३७११९५
" २.	३८८१९४
" २.	६१५६७
योग्यारथ १.	३७११३०
योजन ३.	३११६३
" १.	३३३२१८
योजनगन्धा २.	८२११२
योजनबल्ली २.	३३३१४५
योजना २.	३११६३
योजन ३.	३८८२८
योधन ३.	२१११०
योनि १. २.	४१४६१
" १. २.	६१५६६
योषा २.	४१४४
योषित् २.	४१४४
यौतक ३.	३६६१५५
" १. २. ३.	७१५६७
यौतुक ३.	३६६१५५
यौघ १.	३७११३९
यौघक १.	३७११३९
यौधेय १. व.	३११२८
यौन ३.	३६६२
यौनिक १.	१२१५२

वैजयन्तीकोषः

यौवन ३.	४१४५३
" ३.	५११८
यवागुली २.	४३३७८
यवागुल्या २.	४१४७८
र	
रहस्य ३.	१२१५५
रक्त ३.	३२२२४
" १.	३३३४०
" ३.	३८८११५
" ३.	३८८११६
" ३.	४१४१६
" ३.	४१४१०५
" १.	५३१११
" १. २. ३.	६१४१४
रक्तक १.	३३३१८५
रक्तकुण्डल ३.	४२१४४
रक्तग्रह १.	१२१४१
रक्तचन्दन ३.	८६१२३
रक्ततेजस् ३.	४१४१०७
रक्तदन्ती २.	१११६१
रक्तदृष्टि १.	२३३१४
रक्तपाणिक ३.	४२३३५
रक्तपीतासितश्चेत् १.	
" ३.	५३३१६
रक्तपुच्छिका २.	४११२९
रक्तपुष्प १.	३३३३९
" १.	३३३४७
रक्तफला २.	३३३१४७
रक्तभव ३.	४१४१०७
रक्तशालि १.	३८८३२
रक्तशीर्षक १.	३८८१०९
रक्ता २.	३३३१५३
रक्तात् १.	७२३६३
रक्ताङ्ग १.	३३३१५५
रक्तिका २.	३३३१७९
रक्षस् ३.	१२१४०
रक्षस्सभ ३.	८११२०
रक्षित १. २. ३.	५१४१००
रक्षोघ्न १.	३८८४१
" ३.	४३३८२

[रट्टास]

रङ्गुटी २.	३८८४४
रङ्ग ३.	३२२३०
" ३.	३२२३१
" १.	६११५१
रङ्गाजीव १.	३२२१२
" १.	३२२६३
रङ्गावतारिन् १.	३२२६३
" १.	३२२६५
रङ्गोपमर्दिन् १.	३२२६६
रचना २.	४३३१५८
" २.	५२२१४
" २.	५२२३९
रजःपुष्प १.	३३३२२३
रजःपूता २.	३४४३२
रजक १.	३५३३८
" १.	३५३४५
रजत ३.	३२२२३
" १. २. ३.	७१५७०
रजताद्रि १.	३२२५
रजनी २.	२११५६
" २.	३८८८९
" २.	७२२२०
रजस् ३.	३२२३२
" ३.	३३३१६२
" ३.	३८८२५
" ३.	६२२२८
" ३.	८१५३६
रजसानु १.	८११३७
रजस्वला १.	३४४९
रजस्वला २.	४१४१५
रज्जु २.	३११५८
" २.	३२२३०
" २.	८२२३
रज्जुदाल १.	३३३५४
रज्जन ३.	३८८११५
" ३.	३२२६०
रज्जनवल्ली २.	३३३१६४
रज्जनी २.	३२२११
" २.	३३३११०
" २.	३३३२११
रट्टास १.	३५३१३

[रण]

रण ३.	३७२०४
" १. ३.	६१५६८
रणरणक १.	३६६१७९
रणसङ्कुल ३.	३७२१७
रण्डा २.	३३३१३३
" २.	६२२३१
रत ३.	४३३१७०
रतद्विक ३.	८३३११
रताधिनी २.	४४१११
रति २.	३३३१७८
" २.	३२२७६
" २.	४३३१७०
रतिपति १.	१११२८
रतेमदा २.	१३३१
रत्न ३.	३२२३६
" ३.	६३३२६
" ३.	८३३१७
रत्नगर्भ १.	१२१५८
रत्नगर्भा २.	३११४
रत्नवर ३.	३२२२०
रत्नसू २.	३११४
रत्नहस्त १.	१२१५८
रत्नाकर १.	४११११
रत्नि १.	३११५४
रथ १.	२३३९
" १.	३३३३१
" १.	३७१२४
रथकट्या २.	५१११३
रथकार १.	३१५४८
" १.	३१५७५
" १.	३१५७५
" १.	३१५९०
" १.	३२२३४
रथकारक १.	३१५३३
रथगरुत १.	३६६१०७
रथगर्भक १.	३७१२७
रथगुप्ति २.	३७१३२
रथनीड १.	३८८१३२
रथपद ३.	३७१३४
रथरेणु १. २.	५११४२

शब्दानुक्रमणिका

रथवारक १.	३५२५
(रथकारक)	
रथाङ्ग ३.	३७१३३
" ३.	३७१३५
रथायुधक १.	३७१७४
रथाश्मन् १.	३५२०
रथिक १. २. ३.	३७१४०
रथिन् १. २. ३.	३७१४०
रथिन १. २. ३.	३७१४०
रथ्य १. २. ३.	६४११४
रथ्या २.	४३३१६
" २.	५१११३
रथ्यावाद १.	२४२७
रद १.	४४७८
" १.	६११५०
रदन १.	४४७८
रदिन् १.	३७१६०
रन्तिदेव १.	११११४
रन्धक १. २. ३.	४३३१०८
रन्धन ३.	५२३२२
रन्धित १. २. ३.	४३३१९३
रन्ध्र १.	३१५७
" ३.	४११२
" ३.	८६१९
रभस १.	५४१४४
" १.	७११६३
रभू १.	३७१२९
(रत्)	
रमणी २.	४४४६
रमति १.	८११६३
रमा २.	१११३६
रम्भण ३.	२४४५
रम्भा २.	२४४५
" २.	३३३१७३
" २.	३३३१७४
" २.	३६६१८
रम्भित ३.	२४४५
रम्यक ३.	३११८
रय १.	१२१५५
रयि १. २.	८११२७
रङ्गक १.	४३३२९

[रसगर्भक]

रव १.	२४४४
रवण १.	२४४१
" ३.	३२२२९
" १.	३३३१६५
(द्रवण)	
" १.	३४४६७
" १. २. ३.	५४४४८
" १. २. ३.	७१५७०
रवा २.	३३३१९९
रवि १.	२११४०
रविप्रावन् १.	३२३३७
रविध्वज १.	२११५५
रशना २.	४३३१४६
रसिम १. २.	२१११६
" १. २.	६११५०
" १. २.	८१२२५
रश्मिकलाप १.	४३३१३९
रश्मिमालिन् १.	२१११३
रस १.	४४४२
" १.	३२२१५
" १.	३२२४४
" १.	३३३१४९
" १.	३३३१५१
" १.	३३३२०५
" १.	३३३३०
" १.	३८८१११
" १.	३९१७४
" १.	३९१७५
" १.	४३३१००
" १.	४४४१०४
" १.	४४४११४
" १.	५३३२
" १.	५३३४५
" १.	६११४९
रसक १.	३२२३५
" १.	३६६१९८
" १.	३८८१२८
" १.	४३३८७
रसकोप १.	५३३४०
रसक्रिया २.	४४४१४२
रसगर्भक ३.	३२२४१

[रसज्ञ]

रसज्ञ १.	३१२३५
रसज्ञा २.	४११९०
रसज्येष्ठ १.	५३१२५
रसतेजस् ३.	४११०५
रसन ३.	७५१६८
रसना २.	४११९०
रसनेत्री २.	३२१११
रसयोनि १.	३१८१३०
रसवती २.	४३१५४
रसवर १.	३२२३५
रसविद्ध ३.	३२२२२
रसा २.	३११२
" २.	३३१३३१
" २.	३३११८१
" २.	४११२
रसागेह १.	१३११०
रसाग्र १.	४३१७७
रसाञ्जन ३.	३२१४१
रसाढ्य १.	३१८१२८
रसातल ३.	४१११
" १.	४३१११०
रसादान ३.	४३११०३
रसायन ३.	३१८१४८
रसाल १.	३३१४१
" १.	४३१९८
रसिक १.	३१९४७
रसोद्भव ३.	४१११०५
रसोन १.	३३१२०४
रहस् ३.	५१११२०
" ३.	६३१२७
रहस्य १. २. ३.	५१११२०
राक १.	६११५१
राका २.	२११७३
" २.	४११८
राक्षस १.	१२१४०
राक्षसघ्न १.	१११२१
राग १.	३१६१८१
" १.	३१९११४
" १.	६११५१
रागवत् १.	३३१२१७

वैजयन्तीकोषः

रागशालव १.	५३३३१
रागसूत्रक ३.	५११६४
राघव १.	१११२०
राङ्गव १. २. ३.	४३१११८
राज १.	३१७१
राजक ३.	५११८
राजकर्कटि २.	३३११६७
राजकोशातकी २.	३३११६१
राजजम्बू २.	२३१९३
राजदन्त १.	४११८९
राजधानी २.	४३१४३
राजन् १.	३१७१
" १.	६११५०
" १.	८१११२
राजन्य १.	३१७१
राजन्यक ३.	५११८
राजन्वत् १. २. ३.	३११४६
राजपटोल १.	३३११६६
राजपुत्री २.	८१२८
राजफल १.	३३११६६
राजवीजिन् १.	४११५०
राजभृङ्ग १.	२३१२७
राजमार्ग १.	४३११६
राजमाष १.	३१८४६
राजमुद्ग १.	३१८३८
राजराज १.	१२१५७
राजरीति २.	३२१२६
राजवंश्य १.	४११५०
राजवत् १. २. ३.	३११४६
राजवर्त १.	४३१११९
राजवल्ली २.	३३११६४
राजवाह्य १.	३१७३९
राजविहङ्गम १.	२३१२९
राजवृक्ष १.	८१६२०
राजवेश्मन् ३.	४३३३०
राजसर्षप १.	३१८४२
" १.	५११४२
राजसी २.	२११६०

[राङ्गान्त]

राजहंस १.	२३३७
राजादन १.	३३३४३
" १.	८१५२१
राजावर्त १.	४३१११९
राजि २.	४३११४८
" २.	४११९०
" २.	६२३३०
राजिका २.	३१८४२
राजिमत् १.	४११७
" १.	४११९
राजिल १.	४११९
" १.	४१११५
" १.	४१२०
" १. २. ३.	५१४७
राजीफल १.	३३३१६६
राजील १.	४११९
" १.	४१११०
राजीव १.	३३३१३
" ३.	४२३३८
राजीवक १.	४११४६
राजीवत् १.	३३३१६५
राज्ञी २.	३२२२७
राज्यलौक्य ३.	३३३१८२
राज्याङ्ग ३.	३३३३
राठ १.	३३३५०
राठा २.	३३३२१
" २.	३३३३०
" २.	४३३१५०
राण १. ३.	२३३७
रातप ३.	५३३३१
राता २.	३३३५२
रात्रि २.	२११५७
रात्रिचर १.	१२१४०
" १.	३१९५६
रात्रिज ३.	२१३३८
रात्रिजागर १.	३३३७०
रात्रिञ्चर १.	१२१४०
रात्रिद्विष् १.	२१११४
रात्र्याख्या २.	३३३२११
राथन्तरि १.	१२१२२
राङ्गान्त १.	३३३२५

[राध]

राध १.	२११८३
राधा २.	२११४०
राम १.	१११२०
" १.	१११२०
" १.	१११२२
" १.	३३३३२
" १. २. ३.	६३३१४
रामक १.	३१५७९
" १.	३१५८२
रामठ ३.	३१८१३१
रामदूती २.	३३३१०९
रामपूग १.	३३३२१८
रामभगिनी २.	१११६२
रामस्वस्त २.	१११६२
रामा २.	४१४६
रामभ १.	३३३१८
रालि १.	८१११०
रावण १.	१२१४२
रावणसूदन १.	१११२०
राशि १.	२११५०
" १.	५११३
" १.	५२१५४
राष्ट्र ३.	३३३३
" ३.	३३३४८
" ३.	६१५६९
राष्ट्रिका २.	३३३१०६
राष्ट्रीय १.	३३३१०५
रास १.	३३३७३
रासभ १.	३३३६५
" १.	८३३५
रासना २.	३३३१८
राहु ३.	२१३३७
रिक्त १.	२१३७९
रिक्तक १. २. ३.	५३३८७
रिक्थ ३.	३३३७३
रिङ्ग १.	३३३३३६
रिङ्गोल ३.	३३३३३६
रिङ्गोलन ३.	३३३३३६
रिपु १.	३३३३१
रिरी २.	३३३२५
रिष्ट ३.	६३३२७

शब्दानुक्रमणिका

रिष्टि २.	३३३१५९
रीढा २.	३३३१७२
रीण १. २. ३.	५३३१०९
रीति २.	३३३२५
" २.	५३३२
" २.	६३३३०
रीतिपुष्प ३.	३३३३३
रुक्म ३.	३३३१८
" ३.	६३३२७
" १.	८३३१०
रुग्भेद १.	४३३३७
रुच् २.	२३३२२
" २.	४३३१५०
" २.	८३३१९
रुचक १.	३३३३३
" ३.	३३३३२५
" १.	८३३६४
रुचि २.	२३३२२
" २.	३३३३३२
" २.	३३३८३
" २.	६३३१४
रुचिट १.	३३३१४
रुचित १. २. ३.	५३३९६
रुचिर १. २. ३.	५३३३४
रुचिष्य ३.	३३३३२५
रुचु १.	३३३२८
रुच्य १.	४३३३७
" १.	५३३३८
" १. २. ३.	५३३३४
रुज् २.	४३३३८
रुजा २.	३३३६५
" २.	४३३३८
" २.	६३३२९
रुण्ड १.	३३३१०८
" १.	३३३२१६
रुण्डक १.	३३३२८
रुत ३.	२३३४
रुदित ३.	३३३८७
रुद्ध १. २. ३.	५३३९६
रुद्ध १.	१३३३९
" १ व.	१३३८

[रूप्य]

रुद्रपुष्प ३.	३३३१९५
(ओद्धपुष्प)	
रुद्रमतिन् १. २. ३.	३३३१३१
रुद्रसख १.	१३३५८
रुद्रा २ व.	२३३२१
रुद्राक्ष १.	३३३७९
रुद्राणी २.	१३३५८
रुधिर १.	२३३३२
" ३.	४३३१०५
रुमा २.	३३३१०
रुमाभव ३.	३३३३२१
रुह १.	३३३१४
रुवथ १.	७३३६४
रुवु १.	३३३६५
रुवुक १.	३३३६५
रुवाती १. २. ३.	२३३१८
रुष् २.	३३३१८३
रुपा २.	३३३१८३
रुक्ष ३.	३३३३४
" १.	३३३१५
" ३.	३३३१४२
" १.	५३३३
" १.	५३३१५६
" १. २. ३.	५३३४४
" १. २. ३.	६३३३३
रुक्षणीय १.	३३३३७
रुक्षणीया २.	३३३६१
रुक्षवालुक ३.	३३३३५
रुक्षस्वर १.	३३३६६
रुद्ध १. २. ३.	३३३१७
" १.	३३३५१
रूप ३.	३३३१०१
" ३.	५३३१
" ३.	५३३२
" ३.	६३३२८
रूपजीवना २.	४३३२४
रूप्य ३.	३३३२३
" ३.	३३३७४
" १. २. ३.	६३३६८
" ३.	८३३११

[रूप्यमास]

रूप्यमास १.	पा११४४
रूप्यशतमान ३.	पा११६०
रूप १.	पा३१२९
रूपित १ २. ३.	पा११४३
रेक १.	पा११४६
रेखा २.	३१२४४
" २.	६२३२
रेचक ३.	८१११५
रेचनी २.	३३१३८
रेचित १. २. ३.	३३११८
" १. २. ३.	३३१२२
" ३.	३११२२
रेटि २.	६२३२
रेणु १.	३३८२५
" १. २.	पा११४२
" १. २.	८१२२६
रेणुका २.	३३८१५
रेतस् ३.	पा११११
" ३.	६३२७
रेफ १. २. ३.	पा११७५
रेभटि २.	३३१२६
रेभण ३.	२१४२
रेरिहाण १.	१११४४
रेवट १. ३.	७५६९
रेवती २.	१११५९
" २.	३३१०९
" २.	३३१८२
" २.	७२२०
रेवतीकान्त १.	१११२३
रेवा २.	४२२६
रेशी २ व.	२१२०
रेशण ३.	२१४६
रेषा २.	२१४६
रे १. २.	८१३८
रोक ३.	पा११२
" १. ३.	६५६७
रोक्य ३.	पा११०५
रोग १.	पा११३८
रोगहारिन् १.	पा११४३
रोगाल्य ३.	३३८९९
रोचक १.	पा३१२९

वैजयन्तीकोषः

रोचन १.	३३१९१
" १. २. ३.	पा११४२
रोचना २.	७२२०
रोचनी २.	३२२११
" २.	३३१९५
" २.	३३१३८
" २.	३३२११
रोचिष्णु १. २. ३.	पा११४२
रोचिस् ३.	२१११६
रोदन ३.	३११८७
रोदनी २.	३३१२५
रोदस २ द्वि.	३११५
रोदसी २ द्वि.	३११५
रोध १.	३३१८०
रोधस् ३.	पा१३१
रोधोवक्त्रा २.	पा१२२
रोपण १.	३३१७९
रोमकर्ण १.	३३३३१
रोमज ३.	पा३११७
रोमन् ३.	३३३७५
" ३.	पा११७
रोमन्थ १.	३३३७५
रोमन्थन ३.	३३३७५
रोमश १.	३३३७५
" १.	३३३६४
" १. २. ३.	पा१३८
रोमशपुच्छक १.	पा११२७
रोमशी २.	पा११२७
रोमहर्ष १.	३३१८२
रोमहर्ष ३.	३३२१४
रोमाङ्क १.	३३१८२
रोमाङ्ग १.	३३१८२
रोमोद्गम १.	३३१८२
रोष १.	३३१८३
" १.	पा१३४
रोषाण १.	३३१९९
" १. २. ३.	पा१७१
रोहणद्रुम १.	३३११२
रोहणी २.	पा११२९
रोहिणी २.	३३१४४
" २.	३३८८६

[लक्ष्मणा]

रोहिणी २.	पा१२१
रोहिणीकान्त १.	२११२४
रोहित् १.	३३११४
" १.	८११११
रोहित ३.	२२२३
" १.	३३१४०
" १.	३३११६
" १.	३३१५६
" १.	पा३११
रोहिताश्व १.	१२११५
रोहिन् १.	३३३४०
रौच्य १.	३३११६
रौद्र ३.	२११२२
" ३.	३३१७५
" १. २. ३.	३३१७९
रौद्री २.	१११४९
" २.	१११५८
" २.	३३११२
" २.	८२११४
रौमक ३.	३३८१२१
रौरव १.	१२३३७
रौहिण्य १.	८११३७
रौहितक १.	३३३४०
रौहिष १.	३३३४०
" १.	३३११६
" १. ३.	पा१३७१
ल	
लकुच १.	३३३७५
लक्ष १.	३३३३५
" ३.	३३११९४
" ३.	पा१३२
" १. २. ३.	पा१३९
लक्ष्मण ३.	२११२९
" ३.	३३११९४
" ३.	पा२११
" ३.	७३२८
लक्षा २.	पा१३२
लक्ष्मणा १. २. ३.	पा१५६
लक्ष्मणा २.	२३३३३

[लक्ष्मण]

लक्ष्मण ३.	२११२९
" ३.	६३२२९
लक्ष्मी २.	११११६
" २.	१११३६
" २.	३३१९९
" २.	३३८९३
" २.	३३८१९
" २.	८२११९
लक्ष्मीनिकेतन ३.	पा३११४
लक्ष्मीपति १.	८११३८
लक्ष्मीपुत्र १.	८११३८
लक्ष्मीवत् १.	३३३४२
" १. २. ३.	पा१५६
लक्ष्य ३.	३३११९४
लक्ष्यग्रह १.	३३११९०
लगणा २.	३३३३२९
लगुड १.	३३१२९
लगुडवैशिका २.	३३३२१६
लग्न १.	३३१६८
लग्नक १. २. ३.	३३८१०
लघु १.	३३३५३
" २.	३३३११६
" ३.	३३८१०७
" १. २. ३.	पा१३७६
" १. २. ३.	पा१३२४
" १. २. ३.	पा१३५५
लघुक १.	३३३२१९
लघुकाष्ठ १.	३३११९९
लघुग १.	१२३४८
लघुहस्त १. २. ३.	३३३१४९
लघ्वचरक १.	२११५२
लङ्का २.	पा३३२
लङ्कायिका २.	३३३११७
लङ्केरवर १.	१२३४३
लङ्गन ३.	पा३१२
लङ्गनी २.	पा३१५३
लङ्गन ३.	३३१२३३
" ३.	पा३१३९

शब्दानुक्रमणिका

लङ्गन ३.	पा३१२
लङ्गा २.	३३११९४
लङ्गालु २.	३३३१४८
" २.	३३३१४८
लङ्गाशील १. २. ३.	पा१३७
लज्जित १. २. ३.	पा१५१
लट् १.	पा३१५६
लट् १. २. ३.	पा१३३५
लण्ड १. ३.	पा१३१९
लता २.	३३३७
" २.	३३३६६
" २.	३३३१०४
" २.	३३३११७
" २.	३३३१८७
" २.	८११३
लताकुश १.	३३३२२८
लताकोलि २.	३३३७८
लताङ्कुर १.	३३३२१९
लतापूग ३.	३३३२१८
लतामारिष १.	३३३१५२
लतार्क १.	३३३२०५
" १.	३३३२०७
लताबृहती २.	३३३१०४
लब्ध १. २. ३.	पा१३४४
लब्धवर्ण ४.	३३३२३५
लभ्य १. २. ३.	पा१३५५
लम्पट १. २. ३.	पा१३६६
लम्पा २.	३३३३६
लम्पाक १ व.	३३३२५
लम्बकर्ण १.	३३३६२
लम्बन ३.	पा३३३७
लम्बा २.	३३३३६
लम्बोदर १.	१११५३
लम्भन ३.	पा३२०
लय १.	३३३२००
" १.	३३३१९२
" १.	३३३१२२
लयनालिक १.	पा३३२८
लल ३.	पा३३२९
ललना २.	पा३३४

[लस्तकग्रह]

ललना १.	३३३३४
ललन्तिका २.	पा३३३३६
लकाट ३.	पा३३९६
ललाटिका २.	पा३३३३६
" २.	पा३३३४९
ललाम १. २. ३.	पा३३७२
ललामक ३.	पा३३३५५
ललामन् १. ३.	पा३३७२
ललित ३.	३३३१९६
लल्लर १. २. ३.	पा३३३५
लव १.	२३३५३
" १.	पा३३२९
लवङ्ग ३.	३३३१०३
लवण ३.	३३३१२६
" १. २. ३.	पा३३९३
" १.	पा३३२६
" १.	पा३३२७
लवणक्रीटक १.	३३३१८८
लवणलायिका २.	३३३११६
लवणाकर १.	३३३११०
लवणापण १.	पा३३३४
लवणोरकट १. २. ३.	पा३३९३
लवणोद् १.	३३३११०
लवन १.	पा३३२९
लवली २.	३३३२६
लवित्र ३.	३३३३०
लवेटिका २.	३३३३१
लश १.	३३३११
लशुन ३.	३३३२०४
" ३.	३३३२०६
लशित १. २. ३.	पा३३९६
लस ३.	३३३११५
" १.	पा३३३५
" १.	पा३३५४
लसिका २.	पा३३३१८
लसीका २.	पा३३३१८
लस्तक १.	३३३१७७
(लस्तक)	
लस्तकग्रह १.	३३३१८९

लहरी]

लहरी २.	४२११४
लाक्षा २.	४३११५३
लाङ्गल ३.	३८१२७
लाङ्गलपद्धति २.	३८१३०
लाङ्गलिन् १.	३३१२२०
लाङ्गली २.	३३११९७
लाङ्गूल ३.	३११४७४
" ३.	७३१२९
लाङ्गूली २.	३३११३६
लाज १ ब.	४३१६८
लाजमण्ड १.	४३१७९
लाजि २.	३११२४
लाञ्छन ३.	२११२९
लाङ्गीक १.	३११३
लातक १.	३३११८९
लाभ १.	३८१७०
लामज ३.	३३१२३१
लाल १.	३११३६
" ३.	६३१२९
लालक १. २. ३.	२१११५
लालन १.	३८११११
लालस २. ३.	५११३६
लालसा १. २. ३.	७११७२
लाला २.	३३१२६
" २.	४११३२०
लालाटिक १. २. ३.	८११११
लालिका २.	३११११२
लाव १.	२३१४०
लावण १.	३१११०
लावली २.	३३१२६
लास्य ३.	३११७३
लिकुच १.	३३१७५
लिङ्गा २.	४११४२
लिङ्गु १.	३११११
" १.	६११५१
लिङ्ग ३.	५१११७
" ३.	६३१३०
लिङ्गज्येष्ठ ३.	३३११६३
लिङ्गवृत्ति १. २. ३.	३३११९
लिङ्गशोफ १.	४११३२२

वैजयन्तीकोषः

लिच्छिवि १.	३११५४
लिपि ३११२४	
लिपिकर १.	३११२३
लिपिसन्नाह १.	३१११५४
लिप्त १. २. ३.	६१११५
लिप्तिका २.	२११५३
लिप्सा २.	३३११८०
लिप्सु १. २. ३.	५११३५
लिवि २.	३११२३
लिष्ट १. २. ३.	५११११५
लिह १.	११२५१
लीला २.	३११८८
" २.	३११९२
" २.	३११९३
" २.	३११९७
" २.	६१२३३
लीसुष १.	५३१३८
लुङ्ग १.	३३१३३
लुङ्गना २.	२११२६
लुठित १. २. ३.	३१११०७
लुठित १. २. ३.	५११११६
लुब्ध १. २. ३.	५११३५
लुब्धक १.	३११३८
लुम्बिका २.	३११३३५
लुलाय १.	३१११९
लुलित १. २. ३.	५१११०३
लुष १.	३११३१
(युष)	
लुस्त ३.	३१११७७
लुत्त १. २. ३.	५११४४
लुता २.	४११३४
लुतात १.	४११३६
लुतापट्ट १.	४११३५
लुतिका २.	४११३४
लुन १. २. ३.	४१११०२
लुनदोस् १.	१११५२
लुमन् ३.	३११७४
लेख १.	१११३
" १.	३१११२

[लोपामुद्रा]

लेखक १.	३११२३
लेखनी २.	३१११३
लेखा २.	३११२४
" २.	४३११४९
" २.	५११२४
लेख्य ३.	३८११२
लेह १.	११२५१
लेप १.	४३११०२
" १.	६११५२
लेपकार १.	३१११४
लेप्य ३.	३१११३
लेलिहान १.	४१२५
लेहा १.	२११५४
लेट्टु १.	३८१२४
लेहन ३.	४३११०३
लेह्य ३.	४३१९१
लैङ्गिक १.	३३११६३
लैङ्गधूम १.	३३१८०
लोक १.	३३१२०६
" १.	६११५२
लोकजित् १.	१११३३
लोकपाल १.	२११४
" १.	८११३८
लोकान्ताद्रि १.	३१२३
लोकालोक १.	३१२३
लोचक १. २. ३.	३३११३४
" १. २. ३.	७११७३
लोचन ३.	४११९४
लोचना २.	२११२८
लोचमस्तक १.	३८११०२
लोचमालक १.	३३११९९
लोटन ३.	५१२४२
लोटना २.	२११२८
लोठमू २.	३११११२
लोट १.	३११८७
लोघ्र १.	२११८७
" १.	३३१५२
" १.	३३१५२
लोपा २.	२३१२५
लोपामुद्रा २.	३३११५३

लोपायिका]

लोपायिका २.	२३१२५
लोपास १.	३११३९
लोप्त्र ३.	३११५८
लोभन ३.	३१११९
" १.	३८१३६
लोमन् ३.	४११९७
" १. ३.	८११३१
लोमश १. २. ३.	५११८
लोमशी २.	३८११००
लोल १.	३११२०६
" १. २. ३.	५११३६
" १. २. ३.	६१११६
लोलम्ब १.	२३१४२
लोलिका २.	३८१५८
लोलुप १. २. ३.	५११३६
लोलुभ १. २. ३.	५११३६
लोष्ट १. ३.	३८१२४
लोष्टभञ्जन १.	३८१२९
लोह ३.	३१२३३
" ३.	३१२३६
" १. ३.	६११६९
लोहकारक १.	३१११६
लोहकार्पापण १.	५११३९
लोहज ३.	३१२२९
लोहदण्ड १.	३११६७
लोहपृष्ठ १.	२३१३१
लोहमात्र १.	३८११५६
लोहमारक १.	३३११५६
लोहमालक १.	३११३६
लोहल १. २. ३.	५११४७
लोहशृङ्खल १.	३११८५
लोहसंश्लेषक १.	३८११३०
लोहाख्य ३.	३८१८०
" १.	३८११०७
लोहाभिसार १.	३११२००
लोहित १. २.	३८११२६
" १.	४११४३
" ३.	४११०५
" १.	५३१११
लोहितक ३.	३१२३९

शब्दानुक्रमणिका

लोहितचन्दन ३.	३८१११६
लोहिता २.	११२३०
लोहिताक्षक १.	४१११५
लोहिताङ्ग १.	३११३१
लोहिताहि १.	४१११२
लोहिनीक ३.	५११४७
लोहित्य १.	३१११७
लोह्य ३.	३१२२६
(लोभ्य)	
लोह ३.	३१२३३
व	
व ४.	८१११५
वंश १.	३३१११
" १.	३३१२१४
" १.	३३१२२६
" १.	३१११२५
" १.	४११४९
" १.	४११६६
" १.	६११५२
वंशक ३.	३८११०७
वंशज १.	४११५०
वंशपत्र ३.	३१२१४
वंशरोचना २.	३८१९०
वंशवर्ण १.	३८१४३
वंशिक १.	३११६१
" १.	३१५२३
" ३.	३८११०७
वंशिका २.	३१११२५
वंश्य १-	४११५०
वंश्या २.	३८१५०
वकुल १.	३३१२६
वक्तव्य १. २. ३.	८१११५
वक्तृ १. २. ३.	५११४५
वक्त्र ३.	४११८६
वक्त्रपट्ट १.	३१११४४
वक्र १.	२११३६
" १.	४११९१
" १. २. ३.	५११२३३
वक्रकील १.	३११८५
वक्रदंष्ट्र १.	३११५

[वक्षक]

वक्रपद ३.	४३१११९
वक्राख्य ३.	३१२३१
वक्राङ्ग १.	२३१३६
वक्रोष्ठक १. २. ३.	३११८३
वक्त्रशृङ्खल १.	३१११५३
वक्षस् ३.	४११६८
वक्षसिज १.	४११६८
वङ्किक १.	४११११५
वङ्कण १.	४११५९
वङ्ग १ ब.	३११३१
" ३.	३१२३१
वङ्गजीवन २.	३१२२४
वङ्गसेनक १.	३३११५६
वचन ३.	२११२१
" ३.	२११३४
वचनेस्थित १. २. ३.	५११४९
वचस् ३.	२११२१
वचा २.	३३११९७
वचाच्छद १.	३३११२१
वज्र १. ३.	११२१३
" १. ३.	२१२३६
" १. ३.	३३१२०२
" १. ३.	३३११४६
" १. ३.	६११६८
" १. ३.	८११३३
वज्रदक्षिण १.	११२१७
वज्रधारण ३.	३१२२२
वज्रनिष्पेष १.	२१२३६
वज्रपाणि १.	११२१५
वज्रपुष्प ३.	३८१४०
वज्रा २.	३३१९७
वज्रांशुक ३.	४३१११९
वज्राभिवर्ण ३.	३३११४७
वज्रासन ३.	३३१२१८
वज्रिन् १.	११२११
वज्री २.	३३१९८
वक्षक १. २. ३.	५१११४

[वक्षक]

वक्षक १. २. ३.	७५१७४
वक्षति १.	१२११८
वक्षथ १.	७११६४
वक्षन ३.	५२१३५
वक्षुल १.	२३१११
" १.	२३१२६
" १.	३३१३१
" १.	३३१४०
" १.	३३१४६
वक्षुला २.	३३१४५
वट १.	३३१२७
" १.	३३१५७
" १. २. ३.	३३१३०
" १. २. ३.	८११३७
वटक ३.	५११४८
वटाश्रय १.	१२१५६
वटी २.	३३१३०
" २.	८११३७
वटु १. २. ३.	५११३
वटुकृति २.	३३१९
वडबा २.	३३१७०७
" २.	४११२६
" २.	७२१२२
वडबामुख ३.	४१११
" १.	८११५५
वणिग्गृह ३.	४१३३४
वणिज् १.	३३८७२
वणिजा २.	३३८३
वणिज्य ३. २.	८११३२
वणिज्या २.	३३८३
वण्ट १.	५२१७
वण्टफ १.	३३८३०
वर्तस १.	४३११५४
" १.	८११५९
वत्स १.	२११९१
" १.	३३३७३
" १.	३३४५१
" १. २. ३.	५११२
" १. २. ३.	६१५७३
वत्सकामा २.	३३४७७
वत्सतर १.	३३४५४

वैजयन्तीकोषः

वत्सनाभ १.	१११२४
वत्सर १.	२११९०
वत्सरान्ता ३.	२११७७
वत्सल १. २. ३.	५१११८
वत्सला २.	३३१४७
वत्सादनी ३.	३३११३२
वत्सीय १. २. ३.	३३१२८
वद १. २. ३.	५११४५
वदन ३.	४११८६
वदान्य १. २. ३.	७११२६
वदाल १.	४११४३
वदावद १. २. ३.	५११४५
वध १.	३३७२११
" १. २. ३.	६१५७५
वधरत १. २. ३.	३३१११
वधस्थान ३.	३३१३७
वघा २.	३३११४९
वधिर. १. २. ३.	५११३३
वधू २.	४११४
" २.	४११७
" २.	४११३५
" २.	४११३६
" २.	४११३६
वधूटी २.	४११९
वधोद्यत १. २. ३.	५११६८
वन ३.	३३११
" ३.	४२१२
" ३.	६३३३१
वनकोद्रव १.	३३८५५
वनगव १.	३३४३३
वनच्छाया १.	३३४६३
वनज १.	२३३४१
" ३.	४२३३६
वनतिका २.	३३३३०
वनद्रुम १.	३३८१०८
वनन १.	३३४११
वनप्रिय १.	२३३२७
वनमाय १.	३३८१०८
वनमालिन् १.	१११२५
वनमुद्ग १.	३३८३८

[वमति]

वनस्पति १.	३३३६
" १.	८११४२
वनायुज १.	३३८८५
वनालु १.	३३३१५०
वनाश १.	३३८५२
वनिता २.	४११४
" २.	७२१२५
वनी २.	३३३१
वनीपक १. २. ३.	५११६०
वनेवासिन् १.	३३१२४
वनोद्भवा २.	३३११८४
वनौकस् १.	३३४४०
वन्दन ३.	३३३३९
वन्दनमाला २.	३३३५९
वन्दा २.	३३३८४
वन्दाक १.	३३३८४
वन्दारु १. २. ३.	५११४३
वन्दिन् १.	३३५७८
" १.	३३५८१
" १.	३३३३०
वन्दीक १.	१२१७
वन्ध्य १. २. ३.	३३३८
वन्ध्या २.	३३४४७
वन्थ १.	३३३३३
" ३.	४२३३६
वन्था २.	३३३३६१
" २.	५१११४
वपन ३.	३३३४
" ३.	३३३२६
वपनी २.	४३३२५
वपा २.	४११२
" २.	६२३३३
वपुस् ३.	६३३३०
" ३.	८३३१७
वप्तु १.	४११२९
वप्र १. ३.	३३२७
" १. ३.	३३८२६
" १. ३.	४३३१३
" १. ३.	६१५७९
वमति १.	८१११०

[वमथु]

वमथु १.	३३७८२
" १.	४११२६
" १.	८११३३
वमि १.	१२११८
" २.	४११२६
वम्र १. २. ३.	४१३८
वयस् ३.	४१५३
" ३.	४१५३
" ३.	६३३३०
वयस्य १. २. ३.	३३७४३
वयस्या २.	३३३११२
" २.	४११२५
वयस्थ १. २. ३.	५११३
वयस्था २.	७१५७८
वर १.	२३३१८
" ३.	३३२५४
" ३.	३३३५४
" १.	३३३५५२
" ३.	३३३१९९
" १.	३३८११०
" ३.	३३८११७
" १.	३३८१२७
" ३.	४११११
" १. २. ३.	५११६४
" १. २. ३.	६१५७२
वरक १.	३३८३८
" १.	३३८५४
" १.	४३३२७
वरट १. २.	८११२६
वरटा २.	२३३८
" २.	२३३४६
वरण ३.	२३३६३
" १.	३३३४१
" १.	४३३१४
वरण्ड १.	४३३६५
" १.	४११२५
वरत्रा २.	३३७८४
" २.	३३१४४
वरनिमन्त्रण ३.	३३३५६
वरप्रदा २.	३३३५३
वरयात्रा २.	३३३५६

शब्दानुक्रमणिका

वरयितृ १.	४१३७
वररुचि १.	३३३१५८
वरला २.	२३३८
वरवर्णिनी २.	८२३३३
वरवाहन १ द्वि.	१३३५
वरा २.	३३३१०५
" २.	३३३१७९
" २.	३३३२३३
" २.	३३३२३३
वराङ्ग ३.	३३८१०४
" ३.	७३३२९
वराङ्गना २.	३३३२२४
वराङ्गा २.	३३३४५
वराट १.	३३३३०
वराटक १.	४११५७
" १.	४११४५
वराणक १.	३३५५०
" १.	३३३५५९
वराधि १.	३३३३९
वरान्तक १.	१३३६
वराभ १.	३३३६१
वरामल १.	३३३३३
वरारोहा २.	३३३१८४
" २.	३३३१९९
" २.	४१३३२
वरार्गल १.	३३३७९
वराल १.	५३३१४
वरालक ३.	३३८१०३
वराला २.	२३३८
वराश्रि १.	५३३२८
वरासि २.	४३३२६
वराह १.	३३३५
वराहकन्द १.	३३३३१०
वराहकर्णक १.	३३७१६७
वराहद्वीप ३.	३३३१४
" ३.	३३३१८
वरिवसित १. २. ३.	५११०५
वरिवस्या २.	३३३३८
वरिष्ठ १.	२३३३५
" ३.	३३३२५

[वर्णिनी]

वरिष्ठ १. २. ३.	७११२५
वरीयस् १. २. ३.	७११२६
वरुट १.	३३५५५
वरुण १.	१२३४५
वरुणकाष्ठिका २.	३३३१०८
वरुणकृच्छक ३.	३३३१४१
वरुणग्रह १.	४१३३४
वरुणप्रिया २.	१२३४६
वरुणावास १.	४२३११
वरुथ १.	३३७३३२
वरुथिनी २.	३३७५५
वरेणुक १.	३३८३१
वरेण्य १. २. ३.	५११६३
वरेन्द्री २.	३३३२१
" २.	३३३३०
वरोत्कट १.	३३३४४
वरोत्पल ३.	४२३३५
वर्ग १.	५११४
" १.	५१३३६
वर्चस् ३.	६३३३१
वर्चस्क १.	४१११९
वर्जन ३.	५२३४०
" ३.	७३३२९
वर्ण १. ३.	२३३२१
" १.	३३५२
" १.	४३३१५६
" १. २. ३.	६१५७०
वर्णक ३.	३३३५६
" ३.	४३३४७
" १. २. ३.	७१५७९
वर्णतर्णक १. २. ३.	८१३३२
वर्णन ३.	५२३३९
वर्णा २.	३३८४९
वर्णि १.	८१११०
वर्णित १. २. ३.	५११०६
वर्णिन् १.	३३३७
वर्णिनी २.	३३३२२

वर्णिलिङ्गिन्]	वैजयन्तीकोषः	[वशीकार	वरय]	शब्दानुक्रमणिका	[वातमृग
वर्णिलिङ्गिन् १. २. ३.	वर्षमुख १. २११८१	वलीमुख १. ३११४०	वश्य १. २. ३. ५११३२	वस्त्रान्त १. ४११३१	वाच्य १. २. ३. ८११५५
वर्ण्य ३. ३१८११६	वर्षवर १. ३१८२३	" ३. ३१८१४१	वपट् ४. ८१८३	वस्न १. ३१८१००	वाज १. २१३४९
वर्तक ३. २३३४०	वर्षा २ व. २११८९	वल्क ३. ३३३१४	वसति २. ७१२२३	" ३. ३१८१२२	" १. ३१७१८५
" ३. ३३३२०१	" २. ३३३११७	वल्कल १. ३. ३३३१३	वसन ३. ४३३११६	वस्वौकसारा २. ११२५९	" १. ४३३७६
" १. ७११६४	वर्षाभी १. ४३३१८	वल्गन ३. ३३३१२२	वसन्त १. २११८७	वह १. ११२४८	वाजिदन्तक १. ३३३१०१
वर्तन ३. २१३२२	वर्षाभू १. २. ७११७७	वल्गा २. ३३३११४	वसन्तघोष १. २३३२७	" १. ६११५३	वाजिन् १. ६११५५
" ३. ३३३१११	वर्षाभूवी २. ३३३१४५	वल्गित १. २. ३. ३३३११८	वसा २. ४३३११४	वहन ३. ३३३१२४	वाजिन ३. ३३३१८
" ३. ३३३११	वर्षामद १. २३३३७	" १. २. ३. ३३३११८	वसिक १. २. ३. ३३३१३४	वहा २. ४३३२३	वाजिशाला २. ४३३२१
" ३. ५१२४१	वर्षायस् १. २. ३. ५११४४	" १. २. ३. ३३३१२२	वसित ३. ४३३११६	वहि १. ६११५३	वाञ्छा २. ३३३१७९
" १. २. ३. ५११४०	वर्मन् १. ३. ६११८१	वल्गु ३. ४३३१५	वसिष्ठ १. ३३३१५५	वह्नि ३. ३३३१२४	वाञ्छित १. २. ३. ५११५६
वर्तनी २. ७१२२१	वल् १. ६११५३	" १. २. ३. ६११६	वसीर १. ३३३१८८	वह्निर्कर्ण १. ३३३२१६	वाट १. ३३३२१
वर्ति २. ४३३१६१	वल्क १. ५३३१५	वल्मीक १. ३. ३३३१४८	वसु १ व. १३३८	वह्नि १. १३३१४	" १. ३. ४३३१४
" २. ४३३१६१	वल्ग १. ५३३१४०	वल्की २. ३३३११६	" १. ३३३१५४	वह्नि १. ५३३८	" १. २. ३. ८११३७
वर्तिष्णु १. २. ३. ५३३१०	" ३. ७११७८	वल्गम १. २. ३. ५३३१००	" ३. ३३३१६	वह्निशिल्प ३. ३३३१९१	वाटक १. ३. ४३३१५
वर्तुल १. २. ३. ५३३१८२	वल्जा २. ३३३१६५	" १. २. ३. ७३३२५	" १. ३३३१५	वह्निमुत १. ४३३१०४	वाटधान १. ३३३१५३
वर्तुलान्त १. २३३३०	" २. ३. ७११७८	वल्गरि २. ३३३२०	" १. ३३३१९४	वा ४. ८१८६	" १. ३३३१०१
वर्तु ३. ४३३१५	वल्न ३. ३३३१११	वल्गरीका २. ४३३१९९	" १. २. ३. ३३३१११	" ४. ८१८१५	वाटिका २. ३३३२१७
वर्तुन् ३. ४३३१५	" १. ५३३१२	वल्गव १. ३३३२८	" १. ३३३१६	वाक्पति १. ५३३४५	वाटी २. ३३३१४
वर्द्धी २. ३३३१४४	वल्ना २. २३३२५	" १. २. ३. ४३३१२	" ३. ३३३१७३	वाक्य ३. २३३२१	" २. ३३३२३०
(वर्द्धी)	वल्भी २. ४३३३१	वल्गा २. ३३३१४८	" १. ६११७८	वाचट् ४. ८१८३	" २. ८११३७
वर्द्धकि १. ३३३१३४	" २. ४३३३९	वल्गार १. ३३३५२	वसुदेव १. १३३२६	वागीश १. २. ३. ५३३४५	वाटधपुष्पी २. ३३३१२७
वर्द्धकिहस्त १. ३३३१५६	वलय १. १३३५१	वल्गी २. ३३३३७	वसुधा २. ३३३१२	वागुर १. ३३३१७	वाटधमण्ड १. ४३३७९
वर्धन ३. ४३३१००	" १. ३३३२५	वल्गीपद ३. ४३३११९	वसुन १. ३३३१८३	वागुरा २. ३३३१३९	वाटया २. ३३३१२७
" १. २. ३. ५३३४०	" १. ३३३१९९	वल्गूर ३. ४३३२	वसुन्धरा २. ३३३१२	वागुरिक १. ३३३१३८	वाटधाल १. ३३३१२८
" ३. ७३३२९	" ३. ४३३१४४	" १. २. ३. ४३३८९	वसुभट्ट १. ३३३१९४	वागूजी २. ३३३१०८	" १. ३३३१५४
वर्धनी २. ४३३१५७	वलयित १. २. ३. ५३३१५६	वशा १. ३३३८३	वसुमती २. ३३३१२	वागुद १. २३३२८	वाडबेय १. ८१३३९
वर्धमान १. ४३३१५९	वल्गिपु १. १३३२	" १. ३३३८३	वसुरेतस् १३३१६	वाग्मिन् १. २३३२५	वाण ३. २३३११
" १. ८१३४४	वल्ग १. २३३८७	" १. २. ३. ५३३२८	वसुवह्निका २. ३३३१०८	" १. २. ३. ५३३४५	वाणि २. ३३३१८
वर्धिष्णु १. २. ३. ५३३४०	वल्हाक १. २३३१	" १. २. ३. ५३३३२	वसुव्रत ३. ३३३१४९	वाघत् १. ३३३७८	वाणिज १. ३३३७२
वर्ध्नी २. ६३३३४	" १. ३३३७८	" १. २. ३. ६३३७१	वस्त ३. ४३३१७	वाच २. १३३११	वाणिज्य ३. ३३३८३
वर्मन् ३. ३३३१५२	" १. ४३३१२	वशा २. ३३३८६	(वस्न)	वाच्येय १. ३३३१५०	वाणिनी २. ७३३२३
वर्मि १. ८३३१०	" १. ४३३१७	" २. ३३३४७	वस्ति १. २. ४३३१३१	वाचस्पति १. २३३३३	वाणी २. १३३१९
वर्मित १. २. ३. ३३३१४२	" १. ४३३१७	" २. ३३३४७	" १. २. ४३३१६६	वाचाट १. २. ३. ५३३४६	वात १. १३३४७
वर्ग १. २. ३. ५३३६३	वल्हाका २. ३३३१९८	" २. ३३३४७	वस्तिगुण्डक ३. ३३३२१७	वाचाल १. २. ३. ५३३४६	वातगामिन् १. २३३३४
वर्गा २. ४३३७	वलि २. ३३३३३	" २. ३३३४७	वस्त ३. ४३३१७	वाचाला २. २३३२०	वातम १. ३३३३५
वर्ष १. ३. २३३१९१	वलिन् १. २. ३. ५३३७	वशाकु १. २३३३	वस्त्र ३. ४३३११६	वाचिक ३. २३३२५	वातपात १. २३३३६
" १. ३. २३३१७	वलिभ १. २. ३. ५३३७	वशामख १. ३३३२७	वस्त्रकोश ४३३६३	" ३. २३३३६	वातपोथ १. ३३३२९
" १. ३. २ व. ६३३७९	वलिर् १. २. ३. ५३३३३	वशिक १. २. ३. ५३३८७	वस्त्रग्रन्थ १. ३. ४३३१३०	" १. २. ३. ३३३१९९	वातप्रमी १. ३३३१६
वर्षकारी २. ३३३५२	वलीक ३. ४३३३७	वशिन् १. ४३३५४	वस्त्रधारणी २. ४३३५३	वाचोयुक्तिपटु १. २. ३. ५३३४५	" १. ८३३३८
वर्षण ३. २३३७	वलीनक १. ३३३२३	वशीकार १. ३३३११७			वातमृग १. ३३३१६

[वातल]

वैजयन्तीकोषः

[वार्ताहर]

वातल १. २. ३. ४४१४५
वातसख १. १२११७
वातसञ्चार १. ४४१२७
वातसारथि १. १२११७
वातसुत १. ३११७०
वातापिसूदन १. ३११५२
वातायन ३. ४४१५४
वातायु १. ३१११६
वाताहार १. २. ३. ३११२१
वाति २. १२१४८
वातिक १. ४११२५
वातिङ्गन १. ३३१०२
वातुल १. ३११४३
वातूल १. २. ३. ७११८०
वात्या २. २११५१
" २. ५१११४
वात्सक ३. ५१११०
वात्स्यायन १. ३११५५
वादन ३. ३१११४
" ३. ३१११२१
" ३. ३१११३१
" ३. ३१११३६
वादर १. २. ३. ४४११७
वादित्र ३. ३१११४
" ३. ३१११३६
वादित्रलुङ्ग १. ३१११३६
वाद्य ३. ३१११४
वाद्यनिर्घोष १. ३१११३६
वाद्यवादकसामग्री २. ३१११४०
वान १. २. ३. ३३११०
" ३. ३१११८
" १. २. ३. ६११८०
वानक ३. ३१११४
वानदण्डक १. ३१११८
वानप्रस्थ १. ३३११४
" १. ३१११२४
" १. ८१११४०

वानर १. ३११३९
" १. ८१११७
वानवासिक १. ३११२०
वानस्पत्य १. ३३११६
वानरी १. ३३१३१
वान्ताशिन १. २. ३. ३१११९
वान्ति २. ४४११२६
वापिम १. ३११६४
वापी २. ४२११६
वाप्य ३. ३१११९
वाम १. १११२९
" १. १२१५५
" १. २. ३. ६१११६
वामदेव १. १११४२
वामन १. ११११९
" १. १२११८
" १. २. ३. ५११८१
वामलूर १. ३११४८
वामलोचना २. ४४१५५
वामा २. १११४८
" २. ४४१५५
वामी ३. ३१११०७
वायव्य १. २१११९
" १. २. ३. ३१११०१
वायस १. २३११६
" १. ८१११६
वायसाली २. ३३१२२६
वायसी २. ३३११२२
" २. ३३११४९
वायु १. १२१४७
वायुन १. १११२२
(वायुन)
वायुवर्मन् ३. २११११
वायुसम्भवा २. ३११४४
वार २. ३. ४२१२३
वार १. ५११११
" १. ५२११७
वारक ३. ३१११५०
वारट १. ५११५१

वारण १. १२११७
" १. ३१११६१
" १. ४२११०
वारणावत ३. ४३११९
वारणासी २. ४३११७
वारवुसा २. ३३११७३
वारमुख्या २. ४४१४२
वारवाण १. २. ८११२२
वारवाणि १. ८११४२
वारस्त्री २. ४४१२४
वाराणसी २. ४३११७
वाराह ३. ३१११८
वाराही २. १११६४
" २. ३३१२१०
वारि ३. ४२१११
" २. ६११८२
वारिकूट १. ४३११५
वारिज ३. ३१११९९
वारिधर १. २२१११
वारिपणी २. ४२१४६
वारिपिण्ड १. ४११४८
वारु १. ३१११०
" २. ६२१३७
वारुणपाशक १. ४११५२
वारुणी २. १११५९
" २. ३३११०९
" २. ३११४६
वार्ध ३. ३३१११
वार्त ३. ४४१४४२
" १. २. ३. ४४१४४३
वार्ता २. २४१३९
" २. ३११८१
" २. १. ३. ६११२५
वार्ताकशाकट १. २. ३. ३११२१
वार्ताकशाकिन १. २. ३. ३११२१
वार्ताकी २. ३३११०२
" २. ३३११०४
वार्ताकु २. ३३११०२
वार्ताहर १. ३१११६

वार्तिक]

शब्दानुक्रमणिका

[विकराल]

वार्तिक ३. ३११५६
" १. ३११२९
वार्द्धक ४. ७३१३०
" ३. ८१११७
वार्धुष ३. ३११५५
वार्धुषिक १. २. ३. ३११८८
वार्धुषिन् १. २. ३. ३११८८
वार्धुष्य ३. ३११५५
वार्धुषिणस १. ३११८८
(वाधुणीस)
वार्मण ३. ५१११३
वार्मिक १. ३११४०
वार्पी २. २११८९
वाल १. ३. ४३११६०
" १. ४४१९८
" १. ६११५४
वालक ३. ७३१३१
वालकूर्वा १. ४४११००
वालकेशी २. ३३१२३०
वालधि १. ३११४७४
वालनाटक १. ३११८१
वालपाशक १. ३११८१
वालपाश्या २. ५३११३६
वालमृग १. ३११२९
वालवायज १. ३११४०
वालवीज्य १. ३११६३
वालहस्त १. ३११४७४
वालिका २. ४३११३५
वालिनी २. २११४२
वालुक ३. ३११९६
" ३. ४११२३
वालुका २ व. ४२१३३
" २. ७२१२४
वालुकी २. ३३११६७
वालक १. २. ३. ४३१११७
वालमीक १. ३११५५३
वालमीकि १. ३११५५३
वावदूक १. २. ३. ५४१४५
वावाता २. ३११३२
वाशन ३. २११४४

वाशा २. ३३११०२
वाशित ३. २११४४
वाशिता २. ७२१२२
वाशी २. २११२०
वास १. ३३११९१
" १. ३१११८
वासक १. ३३११०१
वासतेयी २. २११५७
वासन १. ४३१४५
" ३. ४३११६७
" ३. ५४१४९
वासना २. ४३११५८
वासनी २. ३३११६८
वासनीयक ३. ३११११६
वासन्त १. ३३११६१
" १. ३११३७
वासन्ती २. ३३११८२
" २. ३३११८७
वासयोग १. ४३११७७
वासर १. २. २११५५
" १. ७३१७२
वासव १. १२१११
" १. ३३११०८
वासस् ३. ४३१११६
" १. ८१११६
वासागार ३. ४३१२०
वासिक ३. ४३१४१
वासिष्ठ ३. ४४११०६
वासी २. ३११३६
वासुकि १. ४११३३
वासुदेव १. ११११२
" १. ८११३९
वासू २. ३१११०७
वास्तु १. ३. ४३११०
" १. ३. ६११८०
वास्तुक १. ३३११५४
वास्तुकशाकट १. २. ३. ३११२१
वास्तुकशाकिन १. २. ३. ३११२१
वास्तुमध्य ३. ४३११०

वास्तोष्पति १. १२१२२
वास्त्र १. २. ३. ३३११२९
वाह १. ३३१४५२
" १. ३३१६५
" १. ५११५६
" १. ५११५८
" १. ५११५८
वाहन ३. ३३११२३
वाहनी २. ४३११७
वाहवारण १. ३३१३३
वाहस १. ४३११९
" १. ७३१६५
वाहि १. ८१११०
वाहिक १. ५११५३
वाहित १. ३३१८७
" ३. ५११६४
वाहित्य ३. ३३१७३
वाहिनी २. ३३१५५
" २. ३३१५८
" २. ४२१२३
वाहिनीपति १. २. ३. ३३११४१
वाहीक १ व. ३३१२७
वाह्य १. ३३१५२
" ३. ३३११२३
वि १. ३३१२२
" १. ८११६०
" ४. ८११६६
विंश १. २. ३. ५११२२
विंशति २. ५११२६
विंशतितम १. २. ३. ५११२२
विंशतिभुज १. १२१४२
विकङ्कत १. ३३१३८
विकच १ व. १२१३७
" १. २. ३. ३३११९
विकट १. २. ३. ५४१२६
" १. २. ३. ७४१२६
विकटा २. ३३१७७
विकराल १. ३३१४७

[विकराल]

विकराल १. २. ३. पा३८२	विकरालिन् १. पा३१९	विकर्तन १. २।११११	विकर्मन् ३. ३।६।११७	विकल १. २. ३. पा३८६	विकला २. ३।६।५०	विकलाङ्ग १. २. ३. पा३१११	विकल्पना २. २।३।४०	विकसा २. ३।३।१३५	विकार १. पा२।२२	" १. ७।१।६६	विकालक १. २।१।६५	विकिर १. २।३।३	" १. ४।२।८	" १. ७।१।७०	विकिष्कु १. ३।१।५६	विकुण्ठना २. ३।६।१७५	विकुर्वाण १. २. ३. पा३।३३	विकृत १. २. ३. ३।९।७८	" ३. ३।९।५५	" १. २. ३. ४।४।१४४	" १. २. ३. ७।४।२५	विक्र १. ३।७।६६	विक्रम १. पा२।१६	" १. पा२।१७	विक्रय १. ३।८।६९	विकथिक १. २. ३. ३।८।६८	विक्रान्त १. २. ३. ३।७।१४७	" ३. ३।९।४८	विक्रायिक १. २. ३. ३।८।६८	विक्रेतृ १. २. ३. ३।८।६८	विक्रय १. २. ३. ३।८।६९	विकलव १. २. ३. पा३।६७
-----------------------	--------------------	-------------------	---------------------	---------------------	-----------------	--------------------------	--------------------	------------------	-----------------	-------------	------------------	----------------	------------	-------------	--------------------	----------------------	---------------------------	-----------------------	-------------	--------------------	-------------------	-----------------	------------------	-------------	------------------	------------------------	----------------------------	-------------	---------------------------	--------------------------	------------------------	-----------------------

वैजयन्तीकोषः

[विताली]

विभुभा २. २।१।२३	विज्ञाभ १. ३।७।७४	विगण्डीर ३. ३।३।१५१	विगत १. २. ३. ७।४।२४	विगतनासिक १. २. ३. पा३।१२	विगता २. ३।६।४८	विगन्धिका २. ३।२।१२	विगन्धिन ३. ४।२।३६	विगम १. पा२।२७	विगर्वा २. २।४।२८	विगीत १. २. ३. ३।६।११	विग्रक १. ३।३।८४	विग्र १. २. ३. पा३।१२	विग्रह १. ३।७।६	" १. पा२।३	" १. ७।१।६८	विघन १. ३।६।१०२	विघस १. ३।६।६७	विघसासिन् १. ३।६।४१	विघूणिका २. ४।४।९१	विघ्न १. पा२।४	विघ्नेश १. १।१।५३	विचकिल १. ३।३।१८३	विचक्षण १. ३।६।२३४	विचक्षणा २. ३।८।४७	विचयन ३. पा२।४२	विचचिका २. ४।४।१२३	विचारिका २. ३।७।३७	विचारोक्ति २. २।८।२८	विचिकित्सा २. ३।६।१७७	विचुल १. ३।३।५०	विचोलक १. १।२।४३	विच्छित्ति २. ३।९।९३	विच्युत १. २. ३. पा३।१०२	विजन १. २. ३. पा३।११९	विजन्मन् १. ३।५।१०४	(द्विजन्मन्)	विजय १. ३।७।१५९	" १. ३।७।२०९	विजयच्छन्द १. ४।३।१३९	विजविल १. २. ३. पा३।४	विजाता २. ४।४।१७	विजाति २. ३।४।२६	विजिज्ञासा २. ४।६।१७५	विज्ञ १. २. ३. पा३।१९	विट १. २।९।७०	" १. ४।४।३९	विटका २. ४।३।३८	विटकान्ता २. ३।३।२१२	विटङ्क १. ३।३।१७२	" १. ३. ४।३।५४	विटप १. ३।३।१६	" १. ३।८।७३	" १. ३. ७।५।६२	विटपिन् १. ३।३।४	विटाटिका २. ३।३।१४६	" २. ४।३।३८	विटाश्रय १. ४।३।२७	विट्खदिर १. ३।३।६४	विट्चार १. ३।४।७१	विट्पति १. १।१।४	विड १. ३।८।१२४	विडङ्क १. ३. ३।८।९७	" १. २. ३. ८।९।३८	विडु ३. ४।४।१०८	वितंस १. ३।९।४१	वितत ३. ३।९।११५	" ३. ३।९।११६	वितथ १. २. ३. २।४।१७	वितरण ३. ३।६।११८	वितर्क १. ३।६।१७६	वितर्दिका २. ४।३।३६	वितस्ति २. ३।१।५३	" २. ४।४।८०	" १. २. ८।९।२७	वितान ३. ३।७।१९०	" १. ३. ४।३।१२३	" १. २. ३. ७।५।७६	विताली २. ३।९।१२४
------------------	-------------------	---------------------	----------------------	---------------------------	-----------------	---------------------	--------------------	----------------	-------------------	-----------------------	------------------	-----------------------	-----------------	------------	-------------	-----------------	----------------	---------------------	--------------------	----------------	-------------------	-------------------	--------------------	--------------------	-----------------	--------------------	--------------------	----------------------	-----------------------	-----------------	------------------	----------------------	--------------------------	-----------------------	---------------------	----------------	-----------------	--------------	-----------------------	-----------------------	------------------	------------------	-----------------------	-----------------------	---------------	-------------	-----------------	----------------------	-------------------	----------------	----------------	-------------	----------------	------------------	---------------------	-------------	--------------------	--------------------	-------------------	------------------	----------------	---------------------	-------------------	-----------------	-----------------	-----------------	--------------	----------------------	------------------	-------------------	---------------------	-------------------	-------------	----------------	------------------	-----------------	-------------------	-------------------

[वितुन्नक]

वितुन्नक ३. ३।२।४२	वित्त ३. ३।८।७३	" १. २. ३. ६।५।७४	वित्तेश १. १।२।५७	विदग्ध १. पा३।१८	" १. २. ३. पा३।२०	विदण्ड १. ४।३।५०	विदर १. पा२।४१	विदल १. २. ३. ३।३।१४	विदा २. ३।६।१६३	विदारक १. ४।२।३१	विदारण ३. ८।३।१२	विदारी २. ३।३।२३	" २. ३।३।१९५	विदित १. २. ३. पा३।१०१	" १. २. ३. ७।४।२३	विदिश २. २।१।३	विदुर १. २. ३. पा३।४३	विदुल १. ३।३।३१	(अशुप्रिय)	विदूषक १. ३।९।६९	विदूषिका २. ३।६।५३	विदेह १. ३. ३।१।३०	विद्ध १. २. ३. पा३।१७	" १. २. ३. पा३।१११	" १. २. ३. ६।४।१७	विद्धकर्णी २. ३।३।३१	विद्यायुध ३. ३।७।१७३	विद्या २. ३।६।२७	" २. ३।६।३०	विद्याधर १. १।३।४	विद्युत् २. २।२।३	" २. ३।२।१२	विद्रधि १. २. ४।४।१३७	विद्रव १. ३।७।२११	विद्रुत १. २. ३. ४।३।९५	विद्रुम १. ३।२।३९	" १. ७।१।६५	विद्रुमलता २. ३।८।९५	विद्रुस् १. ३।६।२३४
--------------------	-----------------	-------------------	-------------------	------------------	-------------------	------------------	----------------	----------------------	-----------------	------------------	------------------	------------------	--------------	------------------------	-------------------	----------------	-----------------------	-----------------	--------------	------------------	--------------------	--------------------	-----------------------	--------------------	-------------------	----------------------	----------------------	------------------	-------------	-------------------	-------------------	-------------	-----------------------	-------------------	-------------------------	-------------------	-------------	----------------------	---------------------

शब्दानुक्रमणिका

विद्वेष १. ३।६।१८४	विधवा २. ४।४।१४	विधा २. ३।६।३५	" २. ६।२।३४	विधातृ १. १।१।६	विधान ३. ७।३।३३	विधि १. १।१।९	" १. ३।६।३३	" १. ३।६।११३	" १. ३।६।१८९	" १. पा२।२५	" १. ६।१।५५	विधु १. २।१।२४	" १. ६।१।५५	विधुत १. २. ३. पा३।१०१	" १. २. ३. ७।४।२३	विधुन्तुद १. २।१।३६	विधुर १. १।२।४१	" १. २. ३. ७।४।२७	विधुवन ३. पा२।४०	विधूनन ३. पा२।४०	विधेय १. २. ३. पा३।२८	" १. २. ३. पा३।३२	विनय १. ७।१।७०	विनयग्राहिन् १. ३।७।६७	विना ४. ८।८।४	विनायक १. १।१।३२	" १. १।१।५३	विनिमय १. ३।८।७१	विनियोग १. पा२।२५	विनीत १. २. ३. ७।५।७४	विनोद १. ३।६।१८७	विन्दु १. २. ३. पा३।४३	विन्ध्य १. ३।२।३	विन्ध्यकूटक १. ३।६।१५१	विन्ध्यवासिन् १. २।६।१५८	विन्ध्यवासिनी २. १।१।६३	विन्न १. २. ३. पा३।९९	" १. २. ३. ६।४।१७
--------------------	-----------------	----------------	-------------	-----------------	-----------------	---------------	-------------	--------------	--------------	-------------	-------------	----------------	-------------	------------------------	-------------------	---------------------	-----------------	-------------------	------------------	------------------	-----------------------	-------------------	----------------	------------------------	---------------	------------------	-------------	------------------	-------------------	-----------------------	------------------	------------------------	------------------	------------------------	--------------------------	-------------------------	-----------------------	-------------------

[विप्रव]

विपक्षक १. ३।७।४२	विपक्षी २. ३।९।११६	" २. ७।२।२४	विपण १. ३।८।६९	विपणि २. ४।३।३५	" २. ७।२।२४	विपत्ति २. ३।६।१९१	विपथ १. ३।१।५०	विपद् २. ३।६।१९१	" २. ३।७।४	विपर्यय १. पा२।१	विपर्यास १. पा२।५	विपश्चित् १. ३।६।२३४	विपाक १. ३।६।१८९	" १. ७।१।६७	विपाकिन् १. २।३।१२७	विपादिका १. ४।४।१२२	(विपाटिका)	विपाश २. ४।२।२७	विपाशा २. ४।२।२७	विपिन ३. ३।३।१	विपुल १. २. ३. पा३।८०	विपुला २. ३।१।२	विप्र १. ३।६।१	विप्रकार १. पा२।२२	विप्रकुण्ड १. ३।६।६२	विप्रकृष्ट ३. पा३।१४२	विप्रतिसार १. ३।६।१८५	विप्रप्रिय ३. ३।८।१३९	विप्रयाण ३. ३।७।२१०	विप्रयोग १. पा२।१६	विप्रलम्भ १. पा२।२०	विप्रलाप १. २।४।२९	" १. ८।१।४१	विप्रशेषित ३. ३।६।६७	विप्रशिक्षा २. ४।४।११	विप्रिय ३. ३।७।४७	" १. २. ३. पा३।६९	विप्रुष २. २।२।८	विप्रुष १. २।३।२	विप्रुव १. ३।६।१९०
-------------------	--------------------	-------------	----------------	-----------------	-------------	--------------------	----------------	------------------	------------	------------------	-------------------	----------------------	------------------	-------------	---------------------	---------------------	--------------	-----------------	------------------	----------------	-----------------------	-----------------	----------------	--------------------	----------------------	-----------------------	-----------------------	-----------------------	---------------------	--------------------	---------------------	--------------------	-------------	----------------------	-----------------------	-------------------	-------------------	------------------	------------------	--------------------

[विबुध]

विबुध १.	३१५२०
विबुध १.	७११६६
विभण्ड १.	३१५२६
विभजन ३.	५१२३९
विभाकर १.	२१११४
विभाग १.	५१२३७
विभाजन ३.	३१३१५१
विभात ४.	२११६८
विभाव १.	३१९८०
विभावनी २.	३१३१८५
विभावरी २.	२११६७
विभावसु १.	८१३३९
विभाषण ३.	२१३२४
विभीतक १. २. ३.	३१३१७५
विभीदक १.	३१३१७६
विभीषण १.	११२५
विभु १. २. ३.	६१५८१
विभृति २.	८१५३४
विभूषण ३.	५१३१३३
विभ्रम १.	३१२९६
" १.	७११६९
विमनस १. २. ३.	५१३३४
विमल १.	३१२४१
" १. २. ३.	५१३६६
विमातृज १.	४१३३३
विमान १. ३.	७१५८१
वियत् ३.	२१११
वियद्गङ्गा २.	११३१३
वियम १.	५१२३०
वियात १. २. ३.	५१३१७
वियाम १.	५१२३०
वियुन १.	११२६
वियोग १.	५१२२६
विरजा २.	३१३९२
विरत ३.	३१७२०२
विरति २.	५१२३६
विरल १. २. ३.	५१११२५
विरह १.	५१२२६
विराग १.	३१६१६७

वैजयन्तीकोषः

विरागार्ह १. २. ३.	५१३५४
विराज् १.	३१७१
विराव १.	२१३३
विरावृत्त ३.	३१८७९
विरिञ्च १.	१११७
विरुक्तकोद्रव १.	३१८५५
विरुक्कण ३.	२१३३३
विरूप १. २. ३.	५१३१२६
विरूपाक्ष १.	१११४२
विरोचन १.	८११४२
विरोध १.	३१६१८४
विरोधन ३.	५१२३०
विरोधिन् १.	३१७४२
विरोधोक्ति २.	२१३२९
विलस १. २. ३.	५१३२९
विलम्बित ३.	३१९१२३
" १. २. ३.	८१३१२
विलम्भ १.	५१२१९
विलाप १.	२१३२९
विलाव १.	५१२२९
विलास १.	३१९९३
विलिष्ट १. २. ३.	५१३८४
विलीन १. २. ३.	४१३९५
" १. २. ३.	७१३२३
विलेपी २.	४१३८०
विलेप्या २.	४१३८०
विलोमिका २.	३१३१११
विल्वगन्ध १.	३१३१२१
विविध १. ५	७११७१
विवरण ३.	२१३२६
विवर्ण १.	३१५२
" १. २. ३.	७१३२४
विवर्णता २.	३१९८१
विवश १. २. ३.	७१२३७
विवस्वत् १.	११३३
" १.	२११३२
विवाद १.	२१३२४
विवाह १.	३१६५४
विवाहाग्नि १.	११२२७
विविक्त १. २. ३.	५१३१९९

[विशुन्धलवण]

विविक्त १. २. ३.	७१३२४
विवृताक्ष १.	२१३१३
विवेशिका २.	४१३४
विवेष्टन ३.	५१२४२
विश १.	३१५२
" १.	३१८१
" २. ३.	४१३१९९
" १. २.	८१५३९
विशङ्कट १. २. ३.	५१३८२
विशद १.	५१३१०
" १. २. ३.	५१३१३४
" १. २. ३.	७१३२५
विशय १.	३१६१७७
विशर १.	३१७२११
विशल्या २.	३१३१३१
विशस् १.	३१७२११
विशसन १.	३१७१५८
" ३.	३१७२१४
विशास्त्र १.	१११५७
" १.	७१५८३
विशाखा २.	२११४०
" २.	८११५७
विशाखिका २.	३१६१२३
विशारद १. २. ३.	८१३१२
विशाल १.	४१३१२९
" १. २. ३.	५१३८०
" १. २. ३.	५१३८२
विशालता २.	५१२५
विशालत्वच् १.	३१३४७
विशाला २.	३१३१०३
" २.	३१३१७२
विशिख १.	३१७१७९
" १. २. ३.	७१५८१
विशिखा २.	४१३१६
विशिखाश्रय १.	३१७१७८
विशीर्णपाद् १.	११२३५
विशीर्णाङ्गी २.	३१६५१
विशुन्धलवण २.	३१८१२१

[विशेष]

विशेष १.	३१६२०५
विशेषक १. ३.	४१३१४८
" १. ३.	८१९३०
विशेषभाग १.	३१७७६
विशोक १.	२१३२९
विश्राणन ३.	३१६११८
विश्लिष्ट १. २. ३.	५१३१२५
विश्लेष १.	५१२२६
विश्व १ ब.	११३८
" १. २. ३.	५१३८६
" १. २. ३.	६१५७८
विश्वकद्रु १.	३१९३९
विश्वकर्मन् १.	११३६
" १.	८१३४१
विश्वगोप्त् १.	८१३३९
विश्वभृत् २ ब.	२११२१
विश्वभेषज ३.	३१८७५
विश्वस्मर १.	८१५२२
विश्वरुचि २.	११२३०
विश्वरूप १.	११११५
विश्वरेतस् १.	१११८
विश्वविस्ता २.	२११७५
विश्वस्ता २.	४१३१४
विश्वहयंक १.	३१६८३
(विश्वहयंत)	
विश्वा २.	३११३
विश्वात्मन् १.	१११६
" १.	७१३६७
विश्वामसु १. २.	८१५२३
विष ३.	३१२३३
" ३.	३११२४
" ३.	४१२२
विषम १.	३१३५५
विषम २.	३१३१००
" २.	३१३१२७
" २.	३१३१३२
विषजित् ३.	३१८१६६
विषधर १.	४११६
विषपुष्पक १.	३१३५०
विषम १.	३१३२१६

शब्दानुक्रमणिका

विषमच्छद १.	३१३४७
विषमस्पृहा २.	३१६१७९
विषमायुध १.	१११२८
विषमोज्ञत १. २. ३.	५१३८३
विषय १.	३१७४८
" १.	५१३२
" १.	७११२२
विषयग्राम १.	५१११७
विषयिन् १. २. ३.	७१५७५
विषवृत्त १.	८१६१९
विषवैद्य १.	४११२५
विषा २.	३१८९०
विषाण १. २. ३.	७१५८२
विषाणिका २.	४१३२२
विषाणिन् १.	३१३५२
" १. २. ३.	७१५७७
" १.	८१६१४
विषाणी २.	३१३११६
विषाद १.	३१६१९१
विषुव १. ३.	२११९०
विषुवत् १. ३.	२११९०
विषूचीन १. २. ३.	५१३९१
विष्कम्भ १.	७१३६७
विष्किर १.	२१३३८
" १.	७१३६६
विष्ट ३.	३१६२०६
विष्टर १.	३१३४
" ३.	४१३१६४
" १.	७१३६९
विष्टरश्रवस् १.	११११०
विष्टि १.	३१९५५
विष्टा २.	३१३१००
" २.	४१३११९
विष्टाख्य ३.	३१३३६
विष्टिका २.	३१८८१
विष्णु १.	११११०
" १.	१११२०
विष्णुकान्ता २.	३१३१२३

[विस्मय]

विष्णुकान्ता २.	३१३१३४
विष्णुसुप्त १.	३१६१५९
विष्णुपद ३.	२१११
विष्णुपदी २.	४१२२४
विष्णुरथ १.	११३३८
विष्णुशक्ति २.	११३१६
विष्फार १.	२१३९
विष्फुलिङ्गिनी २.	११२३०
विष्य १. २. ३.	५१३७१
विष्वक् ४.	८१८३
विष्वक्सेन १.	१११११
विष्वक्सेना २.	३१३६६
विष्वच् १. २. ३.	५१३९१
विष्वद्रीचीन १. २. ३.	५१३९३
विष्वद्यच् १. २. ३.	५१३९३
विसंवाद १.	५१२२०
विसर १.	५१११
" १.	५१३२६
विसर्ग १.	११२८९
" १.	३१६३७
" १.	७१३७०
विसर्जन ३.	३१६११८
विसर्जिका २.	२११९१
विसार १.	४१३४२
विस्मृत १. २. ३.	५१३११०
" १. २. ३.	७१३२६
विस्त १.	५१३५१
विस्तर १.	५१२३
विस्तार १.	३१३१६
" १.	५१२३
विस्तीर्ण १. २. ३.	५१३८०
विस्तीर्णजानु २.	३१६३७
विस्तृत १. २. ३.	५१३११०
विस्फोट १.	४१३१२३
विस्मय १.	३१६१८९
" १.	३१९७६
" १.	७१३६५

[विस्मरण]

वैजयन्तीकोषः

[वृद्ध]

विस्मरण ३.	३१६१७७	वीथि २.	३१९१००
विस्मृत १. २. ३.	५४११०९	वीथिका २.	५१२१४६
विस्म ३.	४४११०६	वीथी २.	२१११४४
" ३.	४४११०८	" २.	६१२१४५
विस्मसजा २.	४४११४४	वीथि १. २. ३.	५४११६६
विस्मन्ध १. २. ३.	५४११५२	वीनाह १.	३१३१२२७
विस्मम्भ १.	७१११६६	वीर १. २. ३.	३१७११४७
विहग १.	२१३१२	" १.	३१९१७५
विहगाधिप १.	१११३१८	" १. २. ३.	६१५१८२
विहङ्ग १.	२१३१२	वीरजयन्तिका २.	
विहङ्गम १.	२१३१२		३१७१२०८
विहङ्गिका २.	३१९१६	वीरण ३.	३१३१२३१
विहगन ३.	३१९११०	वीरतृण ३.	३१३१२३१
विहसित ३.	३१९१८३	वीरपत्नी २.	४४११३३
विहस्त १. २. ३.	५४११६८	वीरपाण ३.	३१७१२०२
विहान १. ३.	२१११६८	वीरभद्र १.	११११५३
विहापन ३.	३१६११९८	वीरभार्या २.	४४११३३
विहायस् १. ३.	७१५१८०	वीरमातृ २.	४४११३३
विहायस ३.	२११११	वीरल १.	४१११५५
विहार १.	४१३१२८	वीरविप्लावक १.	
" १.	७१११६८		३१६१७२
विहारिणी २.	३१६१५२	वीरवृक्ष १.	८१६११८
विहास १. २. ३.	७१५१८३	वीरशङ्कु १.	३१७११८०
विह्वल १. २. ३.	५४११६७	वीरशाक १.	३१३११५४
वीकाश १.	७१११६७	वीरसू २.	४४११३३
वीक्षा २.	३१६११८१	वीरस्कन्ध १.	३१४१९
वीचि २.	४१२११४	वीरस्नाना २.	४१३१११
" २.	६१२१३५	वीरहन् १.	३१६१७१
वीज्य १.	३१८१३१	वीराशंसन ३.	३१७१२०६
" १.	३१८१३२८	वीरासन ३.	३१६१२२७
वीणा २.	३१९१११६	वीरधू २.	६१२१३५
वीणावंशशलाका २.	३१९११२०	वीरोज्ज १.	३१६१७०
वीणावाद १.	३१९१७०	वीरोपजीवक १.	३१६१७१
वीत ३.	३१७१८९	वीर्य ३.	३१७११०
(पीत)		" ३.	४४११११
" १. २. ३.	६१५१७५	" ३.	६१३१३२
वीतक ३.	४१३१११०	वीर्यकर १.	४४१११०
वीतराग १.	१११३१५	वीलक १.	३१५१२८
वीतिहोत्र १.	११२११४	वीवध १.	७१११७१
		वृक १ ब.	३१११४०
		" १.	३१११८

(१४०)

[वृद्ध]

शब्दानुक्रमणिका

[वेन]

वृद्ध १. २. ३.	६१५१८०	वृषपर्णी २.	३१३१४३	वेणु १.	३१३११४
वृद्धकाक १.	२१३११७	वृषपूतन १.	३१६१२२	" १.	६१११५४
वृद्धगोनस १.	४१११३३	वृषभ १.	३१२१५	वेणुक १.	३१५१३३
वृद्धनाभि १. २. ३.		" १.	३१४१५२	" ३.	३१७१८२
वृद्धप्रपितामह १. ४४१३०		वृषल १.	३१४१५२	वेणुका २.	३१९१२५
वृद्धप्रमातामह १. ४४१३०		" ३.	३१८१७६	वेणुधमा १.	३१९१७१
वृद्धवयस् १. २. ३.		" १.	३१९११	वेणु ३.	४१३१२७
	५४१३	वृषलक्षणा २.	३१६१५२	वेतन ३.	३१९१५
वृद्धश्रवस् १.	११२११	वृषली २.	७१२१२४	वेतस १.	३१३१३१
वृद्धा २.	४४१२१	वृषवाहन १.	११११४६	वेतस्वत् १. २. ३.	
वृद्धि २.	३१८१५	वृषसानु १.	८१११४०		३१११४३
" २.	३१८१९४	वृषस्यन्ती २.	४४१११	वेताल १.	११२१३८
" २.	४४११३१	वृषा २.	३१३११३	वेतालासन ३.	३१६१२२१
" २.	५१२१३३	" २.	३१३११७३	वेज १.	३१३१३३
" २.	६१२१३७	" २.	३१८१९४	वेजधर १.	३१७१२४
वृद्धोक्ष १.	३१४१५५	वृषाकपायी २.	८१२१३३	वेजवती २.	४११२८
वृद्धयाजोव १. २. ३.		वृषाकपि १.	८१११४०	वेद १.	३१६१२७
	३१८१८	वृषाक्रान्ता २.	३१४१५१	वेदगर्भ १.	३१६११
वृन्त ३.	३१३१२०	वृषाण १.	११११५२	वेदन १. २. ३.	७१५१८३
" १.	३१३१६८	वृषावाह १.	३१८१५७	वेदपठितृ १.	२१६१३३
" ३.	३१४१५१	वृषिण १.	३१४१६४	वेदयष्टि २.	३१६१२४
" ३.	४४१६८	वृष्टि २.	२१२१७	(देवयष्टि)	
वृन्ततुम्बी २.	३१३१६८	वृष्ट्य १.	३१३१२५	वेदाङ्ग ३.	३१६१२८
(वृत्ततुम्बी)		" १.	३१८१३५	वेदि २.	३१६१०९
वृन्ता २.	३१३१६६	वृष्यकन्द ३.	४१२१४७	" २.	३१६११०
वृश्चिक १.	३१३१४६	वृष्या २.	३१८१९४	वेदिका २.	४१३१३६
" १.	४११३२	वेग १.	११२१५५	" २.	७१२१२५
" १. २.	४११३३	" १.	६११५६	वेदितृ १. २. ३.	५४१४३
" १.	४११३३	वेगसर १.	३१७१०८	वेदिपर १ ब.	३११३७
वृश्चिकच्छदा २.	३१३१२७	वेगिन् १.	११२१५०	वेद्यास्तरण ३.	२१६१९१
वृश्चिकाली २.	३१३१२६	वेङ्कट १.	३१२१५	वेधक १.	३१८१२०
वृष ३.	४१३१३६	वेङ्कर १.	३१६१६९	वेधनिका २.	३१९११८
" १.	४४१२	वेजन १.	३१६१०८	वेधमुख्यक १.	३१३११७
" १. २. ३.	६१५१७७	वेटी २.	४१२१५५	वेधमुख्या २.	३१४१३६
वृषण १.	४४१६३	वेण १.	३१६१९८	वेधस् १.	११११९
वृषणश्च १.	११२११०	" १.	३१६१९८	" १.	६११५७
वृषणवसु १.	११२१८	वेणि २.	४१२३०	वेधित १. २. ३.	५४११११
वृषध्वज १.	११११४२	वेणिनी २.	४४१६	वेध्य ३.	३१७१९४
वृषन् १.	११२११	वेणी २.	३१३१८६	वेध्या २.	३१९१३५
" १.	६११५६	" २.	३१४१६५	वेन १.	३१५१८४
" १. २. ३.	५४१११६	" २.	६१२३६	" १.	३१५१९७

(१४१)

[वेन]

वेन १.	३१५१९
वेपथु १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वेमन् १.	३१५१८
वेल १.	३१५१८
वेलज १.	३१५१८
वेलव १.	३१५१८
(पेलव)	
वेल २.	३१५१८
" २.	३१५१८
" २.	३१५१८
वेलान १.	३१५१८
वेल्ल ३.	३१५१८
वेल्लन ३.	३१५१८
वेल्लित १. २. ३.	३१५१८
" १. २. ३.	३१५१८
वेश १.	३१५१८
(उग्रवेश)	
" १.	३१५१८
वेशनी २.	३१५१८
वेशन्त १.	३१५१८
वेशवार १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वेशमन् ३.	३१५१८
वेशमस्थूणा २.	३१५१८
वेश्य ३.	३१५१८
वेश्या २.	३१५१८
वेश्यागृह ३.	३१५१८
वेश्याचार्य १.	३१५१८
वेश्याजनाश्रय १.	३१५१८
वेश्यापति १.	३१५१८
वेप १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वेष्ट १.	३१५१८
" ३.	३१५१८
वेष्टन ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
वेष्टावार ३.	३१५१८
वेष्टित १. २. ३.	३१५१८
वेसर १.	३१५१८

[वैजयन्तीकोषः]

येहत् २.	३१५१८
वै ४.	३१५१८
" ४.	३१५१८
वैकच्य ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
वैकरञ्ज १.	३१५१८
" १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैकुण्ठ १.	३१५१८
" १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैकुन्त १.	३१५१८
वैखानस १.	३१५१८
वैखारक १.	३१५१८
वैघटिक १.	३१५१८
वैचित्य ३.	३१५१८
वैजनन १.	३१५१८
वैजयन्त १.	३१५१८
" १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैजयन्तिक १. २. ३.	३१५१८
वैजयन्ती २.	३१५१८
" २.	३१५१८
वैज्ञानिक १. २. ३.	३१५१८
वैदूर्य ३.	३१५१८
वैणव ३.	३१५१८
" १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैणविक १.	३१५१८
वैणिक १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैतंसिक १.	३१५१८
वैतनिक १. २. ३.	३१५१८
वैतालिक १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैदिक १.	३१५१८
वैदेह १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैदेहक १.	३१५१८

[वैश्वदेवामि]

वैदेहक १.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैदेही २.	३१५१८
वैद्य १. २. ३.	३१५१८
वैद्यमातृ २.	३१५१८
वैद्यशास्त्र ३.	३१५१८
वैद्युत ३.	३१५१८
वैद्युत्त्व १.	३१५१८
वैद्योत १. २. ३.	३१५१८
वैद्यव्यलक्षणोपेता २.	३१५१८
वैधान १.	३१५१८
वैधेय १. २. ३.	३१५१८
वैनतेय १.	३१५१८
वैनयिक १. २. ३.	३१५१८
वैनीतक १. ३.	३१५१८
वैपरीत्य ३.	३१५१८
वैमात्रेय १.	३१५१८
वैमेय १.	३१५१८
वैयथित १.	३१५१८
वैयाघ्र १. २. ३.	३१५१८
वैर ३.	३१५१८
वैरङ्गिक १. २. ३.	३१५१८
वैरशुद्धि २.	३१५१८
वैराग्य ३.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैरिन् १.	३१५१८
वैवधिक १.	३१५१८
वैवस्वत १.	३१५१८
वैशाख १.	३१५१८
" १. ३.	३१५१८
" १.	३१५१८
वैशाखिन् १.	३१५१८
वैशाखी २.	३१५१८
वैशिख ३.	३१५१८
वैश्य १.	३१५१८
वैश्यकुण्ड १.	३१५१८
वैश्रवण १.	३१५१८
वैश्वदेवामि १.	३१५१८

[वैश्वदेवामि]

वैश्वदेवामि १.	३१५१८
" ३.	३१५१८
वैश्वानरी २.	३१५१८
वैश्वयिकी २.	३१५१८
वैश्वय १.	३१५१८
वैश्वी २.	३१५१८
" २.	३१५१८
वैश्वी ३.	३१५१८
वैश्वारिण १.	३१५१८
वैश्वार्य ३.	३१५१८
वैश्वसिक २.	३१५१८
वैश्वस्वान १.	३१५१८
वैश्वट ४.	३१५१८
वैश्वट ४.	३१५१८
वैश्वसक १. २. ३.	३१५१८
वैश्वस १.	३१५१८
" १. २. ३.	३१५१८
वैश्वज्ञ २.	३१५१८
वैश्वजन ३.	३१५१८
वैश्वज्जक १.	३१५१८
वैश्वजन १.	३१५१८
" १. ३.	३१५१८
" १. २. ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
वैश्वतिकर १.	३१५१८
वैश्वतिहार १.	३१५१८
वैश्वत्यय १.	३१५१८
वैश्वत्यास १.	३१५१८
वैश्वथा २.	३१५१८
वैश्वध्व १.	३१५१८
वैश्वन्तर १.	३१५१८
वैश्वय १.	३१५१८
वैश्वर्य १. २. ३.	३१५१८
वैश्वलीक ३.	३१५१८
" १. २. ३.	३१५१८
वैश्वच्छेद १.	३१५१८
वैश्वधि १.	३१५१८
वैश्वहार १.	३१५१८

[शब्दानुक्रमणिका]

व्यवहार १.	३१५१८
व्यवहित ३.	३१५१८
व्यवाय १.	३१५१८
व्यष्ट ३.	३१५१८
व्यसन ३.	३१५१८
व्यसनार्त १. २. ३.	३१५१८
व्याकरण ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
व्याकुल १. २. ३.	३१५१८
व्याकृति २.	३१५१८
व्याकोच १. २. ३.	३१५१८
व्याघात १.	३१५१८
व्याघ्र १.	३१५१८
व्याघ्रक १. ३.	३१५१८
व्याघ्रनख ३.	३१५१८
व्याघ्रपाद १.	३१५१८
व्याघ्रपुच्छक १.	३१५१८
व्याघ्राट १.	३१५१८
व्याज १.	३१५१८
" १.	३१५१८
व्यादीर्णस्य १.	३१५१८
व्याध १.	३१५१८
व्याधाम १.	३१५१८
व्याधि १.	३१५१८
" १.	३१५१८
व्याधित १. २. ३.	३१५१८
व्यापन १.	३१५१८
व्यापलण्डिका २.	३१५१८
व्यापादन ३.	३१५१८
व्याप्य १.	३१५१८
व्याप्य १.	३१५१८
व्याम १.	३१५१८
व्यायत १. २. ३.	३१५१८
व्यायाम १.	३१५१८
" १.	३१५१८
व्यायोग १.	३१५१८
व्याल १.	३१५१८
" १.	३१५१८
" १. २. ३.	३१५१८
व्यालप्राहिन् १.	३१५१८

[शत]

व्यालप्राहिन् ३.	३१५१८
व्यालि १.	३१५१८
व्यावहारी २.	३१५१८
व्यास १.	३१५१८
" १.	३१५१८
" ३.	३१५१८
" १.	३१५१८
व्युत्क्रम १.	३१५१८
व्युत्थान ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
व्युत्पन्न १. २. ३.	३१५१८
व्युप १. २. ३.	३१५१८
व्युष्ट ३.	३१५१८
व्युष्टि १. २. ३.	३१५१८
" १. २. ३.	३१५१८
व्यूह १. २. ३.	३१५१८
" १. २. ३.	३१५१८
व्यूति २.	३१५१८
व्यूह १.	३१५१८
" १.	३१५१८
व्योकार १.	३१५१८
व्योमकेत १.	३१५१८
व्योमगुण १.	३१५१८
व्योमधारण १.	३१५१८
व्योमन् ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
व्योमसम्भवा २.	३१५१८
व्योमाख्य ३.	३१५१८
" ३.	३१५१८
व्योप ३.	३१५१८
व्यज १.	३१५१८
" १.	३१५१८
" १.	३१५१८
व्यज १. ३.	३१५१८
व्यजघनी २.	३१५१८
व्यजबन्ध १.	३१५१८
व्यज ३.	३१५१८
" १ ब.	३१५१८
" १. ३.	३१५१८
" १. ३.	३१५१८
" १.	३१५१८

व्रतति]

व्रतति २.	३३३७
व्रतती ३.	३३३७
व्रतसङ्ग्रह १.	३३६८७
व्रतिन् १.	३३६७
" १.	३३७९०
व्रश्चन १.	३३९३५
व्राजिक ३.	३३९३८
व्रात १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
व्रात्य १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
व्रीड १. २.	३३९५९
व्रीला १.	३३९५९
व्रीहि १ व.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
व्रीहिकङ्क १.	३३९५९
व्रीहिन् १. २. ३.	३३९५९
व्रीहिमत् १. २. ३.	३३९५९
व्रीहेय १. २. ३.	३३९५९
श	
शंसा २.	३३९५९
" २.	३३९५९
शंस्य १.	३३९५९
शक १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शकट १.	३३९५९
" १. ३.	३३९५९
शकटाविल १.	३३९५९
शकल १. ३.	३३९५९
" ३.	३३९५९
शकलज्योतिस् १.	३३९५९
शकुटा २.	३३९५९
शकुन १.	३३९५९

वैजयन्तीकोषः

शकुन ३.	३३९५९
शकुनि १.	३३९५९
शकुन्त १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शकुन्ति १.	३३९५९
शकुलाक्ष १.	३३९५९
शकुलादनी २.	३३९५९
" २.	३३९५९
शकुलार्भक १.	३३९५९
शकुलिन् १.	३३९५९
शकुत् ३.	३३९५९
शक्ति २.	३३९५९
" २.	३३९५९
" २.	३३९५९
" २.	३३९५९
शक्तिपाणि १.	३३९५९
शक्र १.	३३९५९
शक्रवृत् १.	३३९५९
शक्राख्य १.	३३९५९
शक्ल १. २. ३.	३३९५९
शक्करी २.	३३९५९
" २.	३३९५९
शङ्कर १.	३३९५९
शङ्का २.	३३९५९
शङ्किल १.	३३९५९
शङ्कु १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शङ्कुकर्ण १.	३३९५९
शङ्कुमूली २.	३३९५९
शङ्कुला २.	३३९५९
शङ्कु १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १. ३.	३३९५९

[शतभिषज्]

शङ्ख ३.	३३९५९
" १. ३.	३३९५९
" १.	३३९५९
शङ्खक १.	३३९५९
शङ्खकार १.	३३९५९
शङ्खद्वीप ३.	३३९५९
शङ्खनख १.	३३९५९
शङ्खपात्र ३.	३३९५९
शङ्खपाल १.	३३९५९
शङ्खमुख १.	३३९५९
शङ्खिनी २.	३३९५९
शची २.	३३९५९
शचीपति १.	३३९५९
शचीवल १.	३३९५९
शठ ३.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १. २. ३.	३३९५९
शण्डपुष्पिका २.	३३९५९
शण्ड १.	३३९५९
शण्डिली २.	३३९५९
शत ३.	३३९५९
" ३.	३३९५९
शतकोटि १.	३३९५९
शतघ्नी २.	३३९५९
शततम १. २. ३.	३३९५९
शतद्रु २.	३३९५९
शतधारक ३.	३३९५९
शतधृति १.	३३९५९
शतपत्र ९.	३३९५९
" ३.	३३९५९
शतपदी २.	३३९५९
शतपर्व ३.	३३९५९
शतपर्वन् २.	३३९५९
" १.	३३९५९
" ३.	३३९५९
" १. २. ३.	३३९५९
शतप्रास १.	३३९५९
शतभिषज् १.	३३९५९

शतभीरु]

शतभीरु १.	३३९५९
(शीतभीरु)	
शतमन्यु १.	३३९५९
शतमान ३.	३३९५९
" ३.	३३९५९
शतमुखी २.	३३९५९
शतमूर्धन् १.	३३९५९
शतमूली २.	३३९५९
शतवीर्या ३३९५९	
शतवेधिन् १.	३३९५९
शतहृदा २.	३३९५९
शताङ्ग १.	३३९५९
शतानन्द १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शतावरी २.	३३९५९
शतावर्त १.	३३९५९
शतावर्ता २.	३३९५९
शत्रु १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १. २.	३३९५९
शत्रुघ्न ३.	३३९५९
शनक १.	३३९५९
शनकैः (-स्) ४.	३३९५९
शनि १.	३३९५९
शनैः (-स्) ४.	३३९५९
शनैश्चर १.	३३९५९
शपथ १.	३३९५९
शफ १.	३३९५९
शफरी २.	३३९५९
" १. २.	३३९५९
शबर १ व.	३३९५९
" १.	३३९५९
शबल १.	३३९५९
शबली २.	३३९५९
शब्द १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शब्दकार १. २. ३.	३३९५९
शब्दग्रह १.	३३९५९

शब्दानुक्रमणिका

शब्द १. २. ३.	३३९५९
शम् ४.	३३९५९
शम १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शमथ १.	३३९५९
शमन १.	३३९५९
" ३.	३३९५९
" १.	३३९५९
शमल ३.	३३९५९
" ३.	३३९५९
शमित १. २. ३.	३३९५९
शमिता २.	३३९५९
शमी २.	३३९५९
" २.	३३९५९
शमीधान्य ३.	३३९५९
शमीफला २.	३३९५९
शम्फली २.	३३९५९
शम्ब १.	३३९५९
शम्बर १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १. ३.	३३९५९
शम्बरारि १.	३३९५९
शम्बरी २.	३३९५९
शम्बल १. ३.	३३९५९
शम्बाकृत १. २. ३.	३३९५९
शम्बूक १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शम्बूकावर्त १.	३३९५९
शम्भर १.	३३९५९
शम्भल १.	३३९५९
शम्भु १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शम्या २.	३३९५९
शम्याक १.	३३९५९
शय १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शयणक १.	३३९५९

[शरि]

शयथ १.	३३९५९
शयन ३.	३३९५९
" ३.	३३९५९
" १. ३.	३३९५९
शयनीय ३.	३३९५९
शयान १.	३३९५९
शयालु १.	३३९५९
" १. २. ३.	३३९५९
शयित १. २. ३.	३३९५९
शयीचि १.	३३९५९
शयु १.	३३९५९
शय्य ३.	३३९५९
शय्या २.	३३९५९
" २.	३३९५९
शर १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
" १.	३३९५९
शरज १.	३३९५९
शरजालक ३३९५९	
शरण ३.	३३९५९
शरद् २.	३३९५९
" २.	३३९५९
" २.	३३९५९
शरदण्ड १ व.	३३९५९
शरभ १.	३३९५९
शरभा १.	३३९५९
" २.	३३९५९
शरण्य १. २. ३.	३३९५९
" १. २. ३.	३३९५९
शराटिका २.	३३९५९
शरादान ३.	३३९५९
शराधुध ३.	३३९५९
शरारु १. २. ३.	३३९५९
शराव १.	३३९५९
शरावती २.	३३९५९
शरासन ३.	३३९५९
शरि १.	३३९५९

[शरि]

वैजयन्तीकोषः

[शान्तिगृह]

शरि १.	३१४७४	शशादन १.	२१३३०	शाक्य १.	१११३४
(चरि)		शशिन १.	२११२४	शाक्यसिंह १.	१११६४
शरीर ३.	४१४५२	शशिशूषण १.	१११३९	शकर १.	३१४५३
शरु १.	२१३२०	शशिशेखर १.	१११३९	शाख १.	१११५७
शर्करा २.	३१८१३४	शशोर्ण ३.	३१८११८	शाखा २.	३१३१५
" २.	७१२२६	" ३.	८१२२२	" २.	६१२३९
शर्करिल १. २. ३.		शशवत् ४.	८१७२८	शाखापुरी २.	४१३१
	३११४४	" ४.	८१८१६	शाखामृग १.	३१३३९
शर्मन् ३.	३१६१८९	" ४.	८१८११	शाखारण्ड १. २. ३.	
शर्व १.	१११४०	" ४.	८१८१२		३१६१३
शर्वर १. २.	७१५८४	शङ्कुली २.	४१३७५	शाखास्थि ३.	४१४११६
शर्वरी २.	२११५७	" २.	४१२२६	शाखि १ व.	३११२७
" २.	८१६५	शङ्ख ३.	३१३२३५	शाखिन् १.	३१३१५
शर्वाणी २.	१११५८	शस्त १. २. ३.	५१४१०६	शाखोट १.	३१३७७
शल १.	१११५४	शस्त्र ३.	३१६१११	शाङ्गिक १.	३१९१७
" ३.	३१४३७	" ३.	३१७१५७	शाट १.	४१३२७
" १.	३१४६६	" ३.	३१७१९६	" १. २.	८१२२६
शलक १.	२१३४	" ३.	३१८२६	शाटिका २.	४१३१२७
शलभ १.	२१३४३	" ३.	६१३३३	शाटी २.	८१२२६
शलल ३.	३१४३७	शास्त्रक १.	३१८१३१	शाडव १.	५१३२८
" २. ३.	३१४३७	शास्त्रहार १.	३१८१३१	शाडविक १.	५१३४०
शलाका २.	३१७१९९	शास्त्रमार्ज १.	३१८१५	शाण १.	३१९१९
" २.	३१९४१	शास्त्रमुख ३.	३१७१८६	" १.	५११४७
शलाट १.	५११६१	शास्त्राख्य ३.	३१२३३	" १.	५११६३
शलाट्ट १. २. ३.	३१३१०	शाखिका २.	३१७१६३	शाणी २.	४१३१३०
शलक ३.	६१३३२	शाक १.	३१३७६	शात ३.	३१६१८९
शलमलि १. २.	३१३९०	" १.	३१८६२	शातकुम्भ ३.	३१२२०
शलप १.	३१४३७	" १. ३.	४१३९०	शातर १.	२११८२
" १. ३.	३१७१६७	शाकट १. २. ३.	३१४५८	शात्रव १.	३१७४१
" १. ३.	३१९४१	" १.	५११६१	शाद १.	३१३२३५
शलप्यक १.	३१६३३	" ३.	५११६१	" १.	३१८२६
शलक १. २.	८१२२६	शाकटीन १.	५११६१	" १.	६१५५७
शलव १. ३.	३१७२१६	शाकफला २.	३१३१७०	शाङ्गल १. २. ३.	३११४३
शलवयान ३.	३१७२१६	शाकशाकट १. २. ३.		शानक १.	२११८२
शलवर १.	३१३५२		३१८२०	शान्त १.	३१३१४९
शलवशीर्षक १.	३१६१०७	शाकशाकिन १. २. ३.		" १.	३१८७५
शलश १.	३१२१५		३१८२०	" १. २. ३.	५१११४
" १.	३१४३१	शाकुनिक १.	३१९४०	शान्ति २	५१२२७
शलशमृत् १.	२११२४	शाकोल १.	३१३१५२	" २.	६१२३९
शलशलोमन् ३.	३१८११८	शाक्तीक १. २. ३.		शान्तिक ३.	३१६१२०
शलशङ्क १.	२११२७		३१७१४४	शान्तिगृह ३.	४१३२०

(१४६)

[शान्तियात्रा]

शब्दानुक्रमिका

[शितिवन्दन]

शान्तियात्रा २.	३१६५६	शालाजिर १.	५१३५९	शितर ३.	३१२८
शाप १.	२१४३२	शालि १.	३१८३२	" ३.	३१३१५
शापटिक १.	२१३३७	शालिजात १.	३१४३५	शितरिणी ३.	४१३९८
शाब ३.	५११६	शालियष्टिक १.	३१८३४	शितरिन् १.	२१३५
" १. २. ३.	५१४२	शालिहोत्रि १.	३१७९०	" १.	८११५८
शाम्बरी २.	३१७१२	शालीन १.	३१३१५६	शितरी २.	३१३१५
शार १.	३१९६१	" १.	३१६४१	शित्वा २.	११२२९
" १.	५१३९९	" १. २. ३.	५१४१७	" २.	३१३१५
" १.	५१३२५	शालु १.	४११४७	" २.	४१४६८
" १. २. ३.	६१५९१	शालुक ३.	४१२४४	" २.	४१४१०४
शारद १.	३१३४७	" ३.	७१३३४	" २.	६१२४०
" १.	३१८३६	शालूर १.	४११४७	" २.	८१३१५
" १. २. ३.	५१४८९	शालेय १. २. ३.	३१८१९	शिखावत् १. २. ३.	
" १.	७१५८६	शारवत १. २. ३.	५१४८८		३१६६
शारदी २.	३१३१९७	शाङ्कुलिक ३.	५११११	शिखावल १.	२१३३६
शारि २.	२१३२०	शासन ३.	३१७४७	शिखिग्रीव १.	३१२४२
" १.	३१९६०	" ३.	७१३३५	शिखिन् १ व.	२१३३७
" १. २.	६१५८८	शासि १.	८१९१२	" १.	२१३३३
शारिका २.	३१९१३६	शास्ति १.	८१९१२	" १.	२१३३७
शारिवा २.	३१३१३९	शास्व १.	१११३२	" १.	६१३६०
शार्कर १. २. ३.	३११४४	" १.	३१७१५९	शिखिवाहन १.	१११५५
" १.	३१९४९	शास्त्र ३.	६१३३३	शिखीन्द्र १.	३१३९४
शार्ङ्ग ३.	११११७	शास्त्रचिद् १. २. ३.		शिमु १.	३१३५६
" १.	२१३२४		४१४१४४	" १.	४१३९०
" ३.	६१३३३	" १. २. ३.	५१४३१	शिमुज ३.	३१८९०
शार्ङ्गवत ३.	३११९	शिशपा २.	३१३९१	शिक्षिन् ३.	४१४१०३
शार्ङ्गहा २.	३१३१११	शिशुमार १.	४११५४	शिक्षाण १.	४१४९२
" २.	३१३१४४	शिक्य ३.	३१९१७	" ३.	४१४१०३
" २.	३१३१७९	शिक्यित १. २. ३.		शिक्षाणिन् १. २. ३.	
शार्ङ्गिन् १.	१११११		५१४११६		४१४९१
शार्ङ्गल १.	३१४१	शिवा २.	३१६२८	शिक्षित ३.	२१४९
" १.	३१४३३	शिक्षित १. २. ३.		शिक्षिनी २.	४१३१४५
शार्वर ३.	२११६२		३१७१४८	" २.	७१२२६
" १. २. ३.	७१५८८	" १. २. ३.	५१४१९	शिष्याकी २.	४१३८४
शार्वी २.	२११५	शिखण्ड १.	२१३३९	शित १. २. ३.	६१५८३
शाल १.	३१३१५६	" १.	४१४१०२	शितशिव ३.	३१८९६
शाला २.	३१३१५	शिखण्डक १.	४१४१०२	" ३.	३१८१२०
" २.	३१८८८	शिखण्डिक १.	२१३१३	शितशूक १.	३१८५१
" २.	६१२३७	शिखण्डिन् १.	२१३३७	शिति १. २. ३.	६१४१७
शालाक ३.	३१८१३६	शिखण्डिनी २.	८१२१९	शितिकुम्भ १.	३१३१९२
शालाका २.	२११५	शिखण्डी २.	४१४१०२	शितिवन्दन ३.	३१४३६

(१४७)

[शितिसारक]

शितिसारक १.	३३१५१
शितपुट १.	२३३४३
शितिल १. २. ३.	३३३१६
शितिली २.	३३३२८
शितिविष्ट १. २. ३.	३३३१४७
" १. २. ३.	३३३१५
" १. २. ३.	३३३१८
शिता २.	३३३१२
" २.	३३३१०
" २.	३३३१५
शितिका २.	३३३३६
शितिर ३.	३३३१०
शित्वा २.	३३३१५
(शित्वा)	
शित्विक १.	३३३३७
शिर १.	३३३७८
" १.	३३३९१
शिरःपीठ १.	३३३८४
शिरस् ३.	३३३१५
" ३.	३३३८५
" ३.	३३३११
शिरसिज १.	३३३९७
शिरसिसिच २.	३३३१२४
शिरस्थ १. २. ३.	३३३१७
(शिरस्थ)	
शिरस्थ ३.	३३३१०१
शिरिष १.	३३३७२
शिरोगेह ३.	३३३३४
शिरोधरा २.	३३३८४
शिरधि २.	३३३८४
शिरोरन ३.	३३३१३६
शिरोरुह २.	३३३९८
शिरोरुहा २.	३३३११२
शिरवर्तिन् १. २. ३.	३३३१०
शिरास्थि ३.	३३३११५
शिल ३.	३३३१२
शिला २.	३३३१८
" २.	३३३१२

वैजयन्तीकोषः

शिला २.	३३३४०
" २.	३३३४५
" २.	३३३१६३
शिलाजतु ३.	३३३१६
शिलाह्वय ३.	३३३१६
शिली २.	३३३१५९
" २.	३३३४०
शिलीमुख १.	३३३१८१
" १.	३३३१४४
शिलोच्चय १.	३३३१७
शिलोद्भव ३.	३३३१८
शिल्प ३.	३३३१८
शिल्पा २.	३३३२५
शिल्पिन् १.	३३३१७
" १.	३३३१७
शिल्पशाला २.	३३३२२
शिव १.	१११११
" १.	३३३१४९
" ३.	३३३१५५
" १.	३३३१६
" ३.	३३३१६
" १.	३३३१७
" ३.	३३३१४३
" १. २. ३.	३३३१८४
शिवङ्कर १.	३३३१५८
" १. २. ३.	३३३१५५
शिवताति १. २. ३.	३३३१५५
शिवपार्श्व १.	१३३२
शिवपुरी २.	३३३७
शिवप्रिय १.	३३३१९३
शिवमल्लिका २.	३३३१९३
शिवव्रतिन् १. २. ३.	३३३१३०
शिवा २.	१११४९
" २.	१११५८
" २.	३३३११९
" २.	३३३१७७
" २.	३३३१६०
" २.	३३३१८४

[शीरा]

शिवेष्ट १.	३३३८३
शिशिर १.	२३३८७
" १.	३३३७
शिशु १. २. ३.	३३३२
शिशुक १.	३३३७३
शिशुकच्छ ३.	३३३१३७
शिशुकृच्छातिकृच्छ ३.	३३३१३८
शिशुत्व ३.	३३३१४
शिशुप्रिय ३.	३३३१५
शिशुवर्जिता २.	३३३२०
शिश्र ३.	३३३१६
शिश्रदान १. २. ३.	३३३१२
शिश्रि २.	३३३१८
शिश्रि १.	३३३२५
" १. २. ३.	३३३१४४
शीकर १. २.	३३३७
" १.	३३३६
शीघ्र १.	१३३५०
" १. २. ३.	३३३१२५
शीघ्रगमन ३.	३३३११
शीत १.	३३३३१
" १.	३३३६
" १. २. ३.	३३३१५३
शीतक १. २. ३.	३३३१५५
शीतकङ्क २.	३३३१५६
शीतकृच्छक ३.	३३३१४०
शीतपङ्क १.	३३३१७७
शीतपङ्कव १.	३३३१३३
शीतल १.	१३३४५
" १.	३३३८२
" ३.	३३३४४
" १.	३३३६
शीतला २.	३३३१३४
" २.	३३३४४
शीशु ३.	३३३४५
" १.	३३३४७
शीन १. २. ३.	३३३१५
शीरा २.	३३३१९

[शीरी]

शीरी २.	३३३२२८
शीर्णक १. २. ३.	३३३१२९
शीर्णपर्णाशिन १. २. ३.	३३३१२९
शीर्णवृन्त १.	३३३१७१
शीर्ष ३.	३३३१०७
" ३.	३३३८५
शीर्षक ३.	३३३१५६
शीर्षण्य ३.	३३३१५६
" ३.	३३३१०१
शीर्षत्राण ३.	३३३१५६
शील ३.	३३३३३
शीवाल ३.	३३३४५
शुक १.	३३३२
" १.	३३३२५
" ३.	३३३१२
शुककूट १.	३३३१५८
शुकनास १.	३३३१५७
शुकनासक १.	१३३६८
शुकपोत्र १.	३३३१७
शुक्त ३.	३३३८२
" ३.	३३३८५
" १.	३३३२६
" १.	३३३२९
" १. २. ३.	३३३१८
शुक्ततिलकषायक १.	३३३३५
शुक्ति २.	३३३८१
" २.	३३३१०१
" २.	३३३१३२
" २.	३३३१५६
" २.	३३३१५८
" २.	३३३१५०
" २.	३३३३७
शुक्र १.	१३३२३
" १.	३३३३४
" १.	३३३८४
" १.	३३३१९
" १. २. ३.	३३३८६
शुक्रशिष्य १.	१३३१०

शब्दानुक्रमणिका

शुक्रसृष्टा २.	३३३१७८
शुक्रा २. ३.	३३३२१
शुक्ल १.	३३३७९
" ३.	३३३१११
" १.	३३३१०
शुक्लकार ३.	३३३४७
शुक्लधातु १.	३३३१३
शुक्लपुष्प १.	३३३६१
" १.	३३३१९१
शुक्लहरित १.	३३३२४
शुक्लापाङ्ग १.	३३३३६
शुक्ल १. २. ३.	३३३१७
शुक्ला २. १. ३.	३३३३७
शुक्ल २.	३३३१८३
शुक्लि १.	३३३८४
" १.	३३३८८
" १.	३३३१३५
" १.	३३३१०
" १. २. ३.	३३३१५
" १. २. ३.	३३३८५
शुक्लिकर्णिक ३.	३३३४०
शुण्ठ १.	३३३८९
शुण्ठि २.	३३३७५
शुण्ठा २.	३३३४०
शुण्ठापान ३.	३३३१५३
शुण्ठाल १.	३३३६२
शुतुद्री २.	३३३२७
शुद्ध ३.	३३३८५
" १. २. ३.	३३३१५
" १. २. ३.	३३३११
" ३.	३३३१८
शुद्धजड १.	३३३७२
(शुद्ध, जड)	
शुद्धान्त १.	३३३३६
" १.	३३३७४
शुद्धि २.	३३३८९
शुन १.	३३३६९
शुनक १.	३३३६८
शुनासीर १.	१३३१
शुनि १.	३३३६९

[शुद्धी]

शुद्धी २.	३३३७१
शुभ १.	३३३१४३
" १. २. ३.	३३३१७
" १.	३३३१६
शुभयु १. २. ३.	३३३२९
शुभक १.	३३३४१
शुभदती २.	३३३१९
शुभा २.	३३३४१
शुभान्वित १. २. ३.	३३३२९
शुभ ३.	३३३२४
" १.	३३३१०
" १. २. ३.	३३३१८
शुभ्रि १.	३३३१२
शुभ्रक १. ३.	३३३८९
शुभ्र ३.	३३३२४
" ३.	३३३३४
शुभ्रवा २. ३.	३३३३०
(शुभ्रवा)	
शुभ्रवा २.	३३३३८
शुभ्रपित १. २. ३.	३३३१०५
शुष १.	३३३१५०
शुषिका २.	३३३१८१
शुषिल १.	१३३४७
शुष्कगोमय १.	३३३६०
शुष्कमांस ३.	३३३८९
शुष्मन् १.	१३३१५
" ३.	३३३२१०
शुष्मि १.	१३३१०
शूक १.	३३३१५८
" १.	३३३६५
शूकीट १.	३३३३३
शूकधान्य ३.	३३३६२
शूकशिम्बि २.	३३३१२९
शूद्र १.	३३३१७
" १.	३३३११
शूद्रकुण्ड १.	३३३६३
शूद्रा २.	३३३२३
शूद्री २.	३३३२९

शून्य]	वैजयन्तीकोषः	[शौण्ड	शौण्ड]	शब्दानुक्रमणिका	[श्रेष्ठिन्
शून्य १. २. ३. २११२०	शृङ्गिण १. २११६४	शैवल १. ४२१४९	शौण्ड १. २. ३. ६१५९०	श्रद्धा २. २१११८०	श्रीपर्णा २. २११५८
" १. २. ३. २११४५	शृङ्गिणी २. २११४१	शैवल्लिनी २. ४२१२३	शौण्डिक १. २१५४४	" २. ६२१३८	" २. २११५८
" १. २. ३. ५११८७	शृङ्गिन् १. २११४९	शैवाल ३. ४२१४९	" १. २१५४४	श्रद्धालु १. २. ३. ५११३७	" २. ७११८६
शूर १. २. ३. २११२८	" १. २११५२	शैव ३. ४११५४	शौण्डी २. २११७६	श्रद्धान ३. ५२१३९	श्रीपुष्प ३. ४२१४१
" १. २. ३. २११४७	" १. २११५६	शोक १. २११८३	" २. ६१५९०	श्रपणी २. २१११००	श्रीफल १. २११३०
" १. २११३३	" १. ४११४४	" १. २११७६	शौद्धोदनि १. १११३४	(श्रयणी)	श्रीफली २. २१११०
" १. २. ३. ६१५९२	" १. ८११६०	शोचिष्केष १. १२११५	शौभिक १. २१११०३	श्रपाय १. ७११७४	श्रीवेर ३. २११२०२
शूरसेन १ व. २११२४	शृङ्गिवेर ३. २११२१४	शोचिस् ३. ६२१३४	शौरि १. १११२६	श्रमण १. २. ३. ५१११५	श्रीमकुट ३. २१११९
शूरसेनि १ व. २११२४	" ३. २११७६	शोण १. २११६८	शौर्य ३. ५११५६	श्रमणी २. २११२५	श्रीमत् १ व. २११३७
शूर्प १. ३. ४११६५	शृङ्गी २. २११९०	" १. २१११००	शौर्य ३. २११२१०	" २. २१११०	" १. २११२५
" १. ३. ५११५६	" २. ४११४४	" १. ५२११७	शौर्यकरण ३. ५२११६	श्रमस्थान ३. २१११९४	" १. २११५३
शूर्पकर्ण १. २११६१	शृङ्गीकनक ३. २१२२२	" १. ५२१५१	शौक्तिक १. २. ३. ५११५०	श्रयण ३. ४२१३३	" १. २११६०
शूर्पकारि १. १११२८	शृत १. २. ३. ४२१९५	शोणरत्न ३. २१२३९	शौक्विक १. २१११५	श्रवण ३. २११४०	" १. २११६९
शूर्पावर ३. ५११५५	शेखर १. ४२११५३	शौणिक १. ५२१३१	श्च्योति २. ५२१३४	" ३. ४११९३	" १. २११५३
शूल १. ४११३७	शेफ १. ४११६१	शोणित ३. ४११०६	श्मशान ३. २११४८	श्रवस् ३. ४११९२	श्रील १. २. ३. ५११५६
" १. ३. ६१५९२	शेफस् ३. ४११६१	" ३. ५२१५१	श्मश्रु ३. ४११०३	श्रविष्ठा २ व. २११४०	श्रीवत्स १. १११११
शूलनाशक ३. २११२५	शेफालिका २. २११८६	" ३. ८११८	श्मश्रु १. २. ३. ५११९	श्राणा २. ४११८०	" १. ११११७
शूलाकृत १. २. ३. ४११९४	शेमुषी २. २११६३	शोध १. ४११२२	श्याम १. २११४५	श्राद्ध ३. २११६४	श्रीवत्सपिण्याक १. २१११०९
शूलिक १. २११३१	शेवधि १. ३. १२१६०	शोधशत्रु १. २११२०९	" ३. २११७९	" १. २. ३. ५११३७	श्रीवत्साङ्ग १. १११११
" १. २११५५	शेवाल ३. ४२१४९	शोधन १. २११४१	" १. ५२१११	श्राद्धदेव १. १२१३४	" १. ८११४५
" १. २११५२	शेष १. १११३०	शोधनी २. ४२१५२	" १. ५२११४	श्रान्त १. २. ३. ५११३६	श्रीवास १. २१११०९
" १. २११६९	" १. ४११३३	शोधित १. २. ३. ५११६६	श्यामकङ्कु २. २११५६	श्रामणी २. २११२५	श्रीवृक्ष १. २११२७
" १. २११७३	" १. २. ३. ६१५८७	शोधय ३. ४११०५	श्यामल १. ५२१११	श्राय १. ५२१३३	" १. ८१११९
शूलिका २. २११२३	शैव १. २११२४	शोफ १. ३. ४११२२	श्यामलक १. २११२६	श्रावक १. २११११	श्रीवृक्षकिन् १. २११९२
शूलिन् १. १११४१	शैव १. १२१८७	शोफघ्नी २. २११४५	श्यामवल्ली २. २११८०	श्रावण १. २११८५	श्रीवेष्ट १. २१११०९
शून्य १. २. ३. ४११९४	" १. २११५३	शोभ १. २११२३९	श्यामा २. २१११९	श्रावणिक १. २११८४	श्रीसंज्ञ ३. २१११०३
शृङ्गल १. २. ३. २११८३	" १. २१११००	शोभन ३. २११३२	" २. २११३८	श्रावणी २. २११७६	श्रुत १. २. ३. ६१५८९
" १. २. ३. ४११४६	शैखरिक १. २१११५५	" १. २. ३. ५११३५	" २. २११७७	" २. २११९३	श्रुतकर्मन् १. २११३६
शृङ्गलक १. २११६८	शैखलीक १. २१११०७	शोभा २. ४११३५	" २. ४११८	श्री २. २११९१	श्रुति २. २११२७
शृङ्ग ३. २१२१८	शैग्रव ३. २११२२	शोभा २. ४११३५	" २. ६२१६९	" २. ८१११९	" २. ४११९३
" १. ३. ६१५८७	शैनि १. १११२६	शोभा २. ४११३५	श्यामाक १. २११५६	श्रीकण्ठ १. १११३८	" २. ६२१४०
शृङ्गवर्जित १. २११७३	शैव्या २. ४२१२७	शोभा २. ४११३५	श्यामाङ्ग १. २११३२	श्रीकर्णायिक १. २११४०	श्रृणा २. २१११५४
शृङ्गवाद्य ३. २११२५	शैल १. २११८६	शोष १. ४११२४	श्यामाङ्गी २. ४२१२६	श्रीकृष्ण ३. २११४०	श्रेणि २. ६१५९०
शृङ्गाट १. २११५१	" १. २११२१	शोषु १. २११८१	श्यामिका २. २१११९	श्रीखण्ड १. २१११३	श्रेयस् १. २. ३. ५१११३
" १. २११५१	" १. ८११४३	शौक ३. ५११६	श्यामि १. ५२११८	श्रीगर्भ १. २११५५	" १. २. ३. ८११३२
शृङ्गाटक १. ४२१४७	" १. ८११११	शौक्तिकेय ३. ४११५७	" १. ५२१३१	श्रीघन १. १११३२	श्रेयसी २. २११३१
शृङ्गार १. २११८६	शैलमूल ३. २११२०३	शौक्लिकेय १. ४११२४	श्रेय १. ५२११०	" १. २११३९	" २. ८११३३
" १. २११७५	शैलालिन् १. २११६२	शौच ३. २११२०९	श्रेय १. २१११९	श्रीधर १. ११११२	श्रेष्ठ ३. २११२५
" १. ४११६९	शैल १. २११६२	शौटीर्य ३. २११६९	" १. २११३०	श्रीपति १. १११११	" १. २. ३. ५११६३
शृङ्गारगर्व १. २१११६९	शैलेय ३. २११४१	शौण्ड १. २१११४	श्रेयना २. २११२०	श्रीपथ १. ४१११६	श्रेष्ठिन् १. २११७१
	" ३. २११९६	" १. २. ३. ५११३७			

[श्रौण]

श्रौण १. २. ३.	पा११४
श्रौणा २.	२११४०
श्रौणि २.	४११४४
श्रौत्र ३.	४११४३
श्रौत्रकान्ता २.	३११४३
श्रौत्रिय १.	३११४८१
" १.	८११४५
श्रौषट् ४.	८११४३
श्रौषि २.	३११४६६
श्रौष्य ३.	३११४०९
श्रौष्य १.	पा११२८
श्रौषण १.	पा११४
" १. २. ३.	पा११३६
श्रौषणपत्रक १.	३११४९४
श्रौषणवाच् १. २. ३.	पा११४४
श्रौषा २.	२११३५
श्रिकु २. ३.	३१११९१
श्रीपद १.	४११३३३
श्रीष्मन् १.	४११२११
श्रीष्मफल १.	३१३१५५
श्रीष्मल १.	३१८१५३
" १. २. ३.	४११३४६
श्रीष्मसू १. २. ३.	४११३४६
श्रीष्मातक १. २. ३.	३१३१५५
श्रीष्मिन् १.	३१३१५३
श्रीोक १.	६११६०
श्रः (-स्) ४.	८११८९
श्रकण्टक १.	३१५५८
" १.	३१५१०६
श्रचण्डाल १.	३१५५८
श्रदंष्ट्रा २.	३१३१४२
" २.	३१७१५१
श्रदयित ३.	४१११०९
श्रन् १.	३१४१८६
" १.	८१६१५
श्रनिश ३. २.	३१५३४
श्रपच १.	३१५३९
" १.	३१५४७
श्रपाक १.	३१५३८

वैजयन्तीकोषः

श्रपाक १.	३१५५१
श्रपामन १.	३१३१०७
श्रमीरु १.	३१४३७
श्रभ्र १. ३.	४११२
श्रयधु १.	४११२२
श्रयुति २.	३१८१७
श्रशुर १.	४११३०
" १ द्वि.	४११४८
श्रशुर्य १.	७११७४
श्रश्रु २.	४११३०
श्रश्रुश्रुर १ द्वि.	४११४८
श्रश्रयस १. २. ३.	पा११४३
श्रसन १.	११२४७
श्रसित ३.	३१६२०४
श्रस्तन १. २. ३.	पा११८९
श्रापद १.	३१४७३
श्राली १.	३१४७१
श्राविधु १.	३१४३७
श्रास १.	३१६२०४
श्रासहेति २.	३१६२००
श्रासा २.	३१३१३८
श्रित्र ३.	४११२५
" १. २. ३.	पा११४४
श्रेत ३.	३१८१३९
" १.	पा११०
" १. २. ३.	६१५९२
श्रेतकन्द १.	३१३२०५
श्रेतकाक १.	२१३१८
श्रेतक्षार १.	३१८१२७
श्रेतच्छाण ३.	३१८१४९
श्रेततण्डुल १.	३१८३२
श्रेतपिङ्गल १.	३१४११
श्रेतबिन्दुका २.	पा१३१५
श्रेतमध्य १.	३१३२००
श्रेतमरिच ३.	३१८१९०
श्रेतरक्त १.	पा१३१७
श्रेतशाल १.	३१८३३
श्रेतशिबिका २.	३१८१४६
श्रेतसुरसा २.	३१३११९
" २.	३१३१८७

[षण्मातुर]

श्रैता २.	३१९५०
श्रैत ३.	३११९
श्रौववीयस ३.	पा११४२
ष	
षट्क ३.	३१७१०
षट्कर्मन् ३.	३१६६३
षट्पद १.	२१३४३
षट्सप्त १. २. ३.	पा११२६
षडभिज्ञ १.	१११३२
षडभ्रा २.	३१३१११
" २.	३१३१७७
षडानन १.	१११५६
षडवर्ण ३.	३१८८१
षडगुण १.	३१७६
षडग्रन्थ १. २.	७१५८७
षडग्रन्था २.	३१३१९८
षडज १.	३१९१३२
षडूद १. २. ३.	३१४५७
षडूस १.	पा१३४५
षडूसासव १.	४१११०४
(षडूसावस)	
षण्ड १.	३१४५३
" १.	३१६१२२
" १.	३१७३३
" १. ३.	पा११५
" १.	६११६०
षण्डतायोग्य १.	३१४५५
षण्माससङ्ग्रहिन् १.	३१६१२५
षष्टि २.	पा११२७
षष्टिक १.	३१८३४
षष्टिक्य १. २. ३.	३१८१९
षष्टितम १. २. ३.	पा११२२
षष्टिहायन १.	३१७६४
षष्ट १. २. ३.	पा११२१
षष्टकालिन् १. २. ३.	३१६१२७
षष्टी २.	१११५९
षण्ड १.	१११४६
षण्मातुर १.	१११५६

[षण्मासी]

षण्मासी २.	३१६६६
षाष्टिक ३.	३१६१४६
षिङ्ग १.	३१९७०
" १.	४१३३९
षोडश १. २. ३.	३१४५७
षोडशक १. २. ३.	८१५२४
षोडशाङ्गि १.	४११४७
षोडशावर्त १.	४११५६
षोडशाह १.	३१६१४४
षट्कम् १.	६११६१
स	
संयत् २.	३१८२०६
संयत् १. २. ३.	पा१४६७
संयता २.	३१८१६८
संयम १.	३१६२३३
" १.	पा१३०
संयज्य १.	३१६११२
संयाम १.	पा१३०
संयाव १.	४१३७३
संयुग १.	३१८२०४
संयोग १.	पा१२२६
संरम्भ १.	३१९८९
संराव १.	२१४४
संरोध १.	७११७६
संवत् ४.	८१८१०
संवत्सर १.	११२९०
संवत्सरतम १. २. ३.	पा१११९
संवदन ३.	२१४२५
संवदन ३.	३१६११७
संवर १.	४१२१०
" १.	४१२१२
संवर्त १.	३१३१७७
" १.	३१८४३
" १.	३१९७६
संवर्तक ३.	१११२४
" १.	११२२१
संवर्तिका २.	४१२४५
संवसथ १.	४३३२
संवादन् ३.	२१४२५
संवाप १.	४३३१६७

शब्दानुक्रमणिका

संवाल १.	२११२८
" १.	३१७८०
संवास १.	४३३४
" १.	४३३३५
" १.	४३३१६७
संवासन ३.	४३३२३
संवाहक १.	३१९१५
संवाहन ३.	पा१३०
संवित्ति २.	३१६१६४
" २.	७१२२९
संविद् २.	पा१३०
" २.	६१२४१
संवीक्षण ३.	पा१४२
संवीत १. २. ३.	पा१४९६
संवृत १.	२११४५
संवृतता २.	३१६३५
संवेश १.	४३३१६८
(सवोस)	
संव्यान ३.	४३३१२२
संसप्तक १.	३१७१५२
संशय १.	३१६१७७
" १.	३१६१९७
(संश्रय)	
संशयालु १. २. ३.	पा१३८
संशित १. २. ३.	पा१४९४
संश्रव १.	पा१३७
संश्लेष १.	पा१२६
संसद् २.	३१८१३
संसरण ३.	४३३१६
" ३.	८३३१२
संसिद्धि २.	७१२२९
संसृष्ट १. २. ३.	७३३२८
संसृष्टिन् १.	पा१४५
संस्कार १.	३१६१२
संस्कृत १. २. ३.	७३३२८
संस्कृतस्तम्भ १.	३१६१०३
संस्कृति १. २.	७३३२८
संस्तर १.	४३३१६५
" १.	७३३७६

संस्तव १.	पा१३३१
संस्ताव १.	३१६११०
संस्थाय १.	७३३७८
संस्था २.	३१६८७
" २.	३१८१५
" २.	६१२४३
संस्थाचर १.	३१७२७
संस्थान ३.	पा१२१
" ३.	७३३३७
संस्थित १. २. ३.	३१७२२०
संस्पृष्टमैथुना २.	३१६४८
संस्फोट १.	३१७२०४
संहतजानु १. २. ३.	पा१४१०
संहतल १.	४३३७८
संहनन ३.	४३३५२
संहार १.	२११९५
संहारी २.	४३३३८
संहिता २.	७३३२८
संहृति २.	२१३३१
सकल १. २. ३.	पा१४८५
सकाश १. २. ३.	पा१४१३३
सकृत् ४.	८१७२९
" ४.	८१८१६
सकृत्प्रज १.	२३३१७
" १.	८११४५
सकृप १. २. ३.	३१९७९
सकृ १.	४३३७०
" १. ३.	८१३३१
सकृत्फला २.	३३३८९
सकृत् ३.	३१७७९
" ३.	४३३५९
सखि १. २. ३.	३१७४३
" १. २. ३.	६१५९८
सखी २.	४३३२५
सख्य ३.	३१६१८७
सगर ३. २.	८१९३३
सगर्भ १.	४३३३४
सगोत्र १.	४३३५०

[सगोत्र]

[सन्धि]

वैजयन्तीकोषः

[सदागति]

सन्धि २.	४३१०३	सङ्गय ३.	४३१४२	सतत १. २. ३.	४३१३०
सङ्कट १. २. ३.	४३१२६	सङ्ग्रह १.	७११७८	सतश्च ३.	४३१२१
सङ्कर १.	४३१५२	सङ्ग्राम १.	३७१२०६	सती २.	१११५९
सङ्करज १. २. ३.	३७१६२	सङ्ग्रह १.	३७१२००	" २.	३२११६
" १. २. ३.	३७१६५	" १.	४३१७९	" २.	४३१७७
" १. २.	३७१११	सङ्ग १.	४३११४	सतीनक १.	३७१४४
सङ्कर्षण १.	१११२२	सङ्गचारिन् १.	४३१४२	सतीर्थ्य १.	३७१२४
सङ्कलित १. २. ३.	४३१०९	सङ्कथित १. २. ३.	४३११९	सतीर्ष १. २. ३.	४३१३७
सङ्कल्प १.	३७११७३	सङ्कर्ष १.	७११७७	तिरक ३.	२११८६
सङ्कीर्ण १.	३७१५२	सङ्कात १.	४३११०९	सत्किष्कु १.	३७१५७
" १. २. ३.	४३१११०	" १.	४३१११	सत्त्व ३.	३७१६२
सङ्कुचित १.	२३१३६	सङ्कातिका २.	३७११०८	" ३.	३७१९७
सङ्कुल १. २. ३.	२३११७	सचिव १.	७११७५	" १. ३.	६५१९३
" १. २. ३.	४३१११०	सञ्जः (-च्) ४.	८११७७	सत्त्वक १.	१२१३८
सङ्कुसुम १. २. ३.	४३१६८	सञ्ज १. २. ३.	३७११४२	सत्पथ १.	३७१४९
सङ्कोच ३.	३७११७७	सज्जन ३.	३७१५९	सत्य ३.	१११४७
सङ्कन्दन १.	१२१३३	सज्जना २.	३७१७०	" ३.	३७१२०९
सङ्कम १.	३७१५२	सञ्जय १.	४३१११	" ३.	४३१३३
सङ्क्रा २.	१२१५१	सञ्जर १.	४३१५३	" १. २. ३.	६५१९५
सङ्क्षेप १.	२३१४०	सञ्चार १.	३७१२८	सत्यङ्कार १.	३७१७१
सङ्ख्य ३.	३७१२०४	सञ्चारिका २.	३७१३६	सत्ययुग १.	२३१९१
सङ्ख्यान ३.	४३१३६	सञ्चारिणी २.	४३१२४	सत्ययौवन १.	१२१३४
सङ्ख्यावत् १.	३७१२३४	सञ्चारित १.	३७१३३	सत्यलोक १.	३७१२०८
सङ्ग ३.	३७१२२१	सञ्चारिन् १.	३७१८१	सत्यवती २.	३७११४४
" ३.	४३१६१	सङ्छादनी २.	४३१०३	सत्यवतीसुत १.	१११३१
" १.	४३१२७	सङ्छेय ३.	४३१३१	सत्याकृति २.	३७१७१
सङ्गत १.	२३१६४	सङ्जवन ३.	४३१२६	सत्याग्नि १.	३७१५२
" १.	३७११४७	सङ्जावन ३.	३७११४४	सत्यानृत ३.	३७१३३
" ३.	३७११८६	सङ्क्षपन ३.	३७१२१५	सत्यापन ३.	३७१७१
सङ्गति २.	४३१२१	सङ्क्षा २.	२३१२३	सत्र ३.	३७१८५
सङ्गम १.	३७११४७	" २.	६२१४३	" ३.	३७१८५
" १.	४३१२७	सङ्ख्यु १. २. ३.	४३११०	" ३.	६२१३५
सङ्गर १.	३७१२०५	सङ्ख्वर १.	१२१३१	सत्रशाला २.	४३१२६
" १.	७११९२	सट १.	३७१५७	सत्रा ४.	८११७७
सङ्गव १.	२३१६४	सट्ट ३.	४३१४४	सत्वर १. २. ३.	४३१२४
सङ्गाली २.	३७१८९	सट्टक ३.	४३१९८	सदस् २. ३.	३७११४
सङ्गीतक ३.	३७१७२	सणि १.	४३१५५	सदसदात्मक ३.	३७१६४
सङ्गीर्ण १. २. ३.	४३१०६	सण्डीन ३.	२३१५०	सदस्य १.	२३१८१
सङ्गूढ १. २. ३.	४३१०९	सत् ३.	१२१३८	" १.	३७१३३
		" ३.	३७१२३४	सदा ४.	८११५
		" १. २. ३.	८३१३६	सदागति १.	१२१५०

[सदागति]

शब्दानुक्रमणिका

[सप्तला]

सदागति १.	२३११५	सन्तान १.	१३१४४	सन्धिबन्धन ३.	४३११७
सदानन १. २. ३.	४३१८८	" १.	४३१४०	सन्ध्या २.	२३१६९
सदाफल १.	३३१२२१	" १.	४३१४९	सन्न १. २. ३.	४३११५
सदाश १. २. ३.	४३१२२१	सन्तानिनी २.	३७११४७	" १. २. ३.	६५१९९
सदाश १. २. ३.	४३१२२१	सन्ताप १.	१२१३१	सन्नद्ध १. २. ३.	३७११४२
सदाश १. २. ३.	४३१२२१	" १.	४३१३८	सन्नय १.	७११८२
सदाश १. २. ३.	४३१२२१	सन्तापित १. २. ३.	४३१२८	सन्नाम १.	४३१२४
सदाश्रि १.	१२११८	" १.	४३१२८	सन्नाह १.	३७११५३
(सन्धि)		सन्तोष १.	३७११६६	सन्नाहित १. २. ३.	४३११७
सद्वन् ३.	४३११८	" १.	३७१२०९	सन्नाहय १.	३७१६९
सद्यः (-स्) ४.	८११७७	सन्देश १.	३७११७	सन्निकृष्ट १. २. ३.	४३११४१
सद्यःपाक १.	३७११९९	" १.	४३११०	सन्निधि १.	७११८०
सद्यःप्रचालिताक्षक १.	३७१४२	सन्देशित १. २. ३.	३७१११	सन्निपात १.	४३१२६
सद्यस्तन १. २. ३.	४३१८९	सन्दर्भ १.	४३१३९	सन्निभ १. २. ३.	३७१२१
सद्युचि १. २. ३.	३७१४३	सन्दष्ट १.	३७११३३	" १. २. ३.	४३१२२
सधर्मचारिणी २.	४३१३५	सन्दान ३.	३७१२९	सन्निवेश १.	४३१३१
सध्रीचीन १. २. ३.	४३१९३	सन्दानिनी २.	४३१२२	" ३.	४३१२१
सध्वयच १. २. ३.	४३१९३	सन्दानभाग १.	३७१७६	सन्निहित १. २. ३.	४३१३३
सन्कुमार १.	१२१३७	" १.	३७१७९	सन्दाल १.	४३१३३
सनल १. २. ३.	३७१४४	सन्दित १. २. ३.	४३११७	सन्द्यास १.	३७१४४
सना ४.	८११६६	सन्देष्ट १. २. ३.	४३१३८	सन्द्यासपल्ली २.	४३१२८
सनात् ४.	८११६६	सन्देश १.	२३१२५	सपट्टी २.	४३१४४
सनातन १.	१२१३७	सन्देशगिरि २.	२३१३६	सपत्न १.	३७१४१
" १. २. ३.	४३१८८	सन्देशहर १.	३७१२९	सपत्राकृति २.	४३१३८
" १. २. ३.	८११२५	सन्देश १.	३७१७७	सपदि ४.	८११३३
सनाभि १.	४३१५०	सन्देश १.	४३१३२	" ४.	८११३१
सनालिङ्ग १.	३७१२०	सन्देश १.	३७१३२	सपर्या २.	३७१३९
सनि १. २.	३७१२१	सन्देश १.	३७१३२	सपिण्ड १.	४३१५०
" १.	८१११०	सन्देश १.	३७१३२	सपीति २.	३७१५३
सनिष्ठीव १. २. ३.	२३११८	सन्देश १.	३७१३२	ससकी २.	४३१४६
सनीडक १. २. ३.	४३१४१	सन्देश १.	३७१३२	ससजिह्व १.	१२११७
सन्त १. २. ३.	४३१४१	सन्देश १.	३७१३२	ससतन्तु १.	३७१८२
सन्तति २.	४३१४१	सन्देश १.	३७१३२	ससति २.	४३१२७
" २.	७३१२८	सन्देश १.	३७१३२	ससर्पण १.	३७१४७
सन्तमस ३.	२३१६२	सन्देश १.	३७१३२	ससम १. २. ३.	४३१२०
		सन्देश १.	३७१३२	ससमवृत् २.	१२१६५
		सन्देश १.	३७१३२	ससर्षि १. २.	२३१५०
		सन्देश १.	३७१३२	ससला २.	३७१८५

सप्तसप्तति]

वैजयन्तीकोषः

[समुद्रनवनीतक

सप्तसप्तति १.	२११११	समन्तात् ४.	८१८३
सप्तार्चिस् १.	१२११६	समन्तिक १. २. ३.	
सप्ति १.	३१७९०		५११३३
सप्तह्यचारिन् १.	३१६२४	समपद ३.	३१७१८७
सभा २.	३१८१३	समस् ४.	८१८१७
" २.	५११५	समय १.	७११८२
" २.	६१२४२	समया ४.	८१७३३
सभाजन ३.	३१६१८६	" ४.	८१८१५
सभासद १.	३१८१३	समर १. ३.	३१७२०६
सभास्तार १.	३१८१३	" १. ३.	८१६१७
समिक १.	३१९५९	" १. ३.	८१६१८
सम्य १.	११२२५	समर्थ १. २. ३.	७११३०
" १.	३१८१३	समर्थन ३.	३१८१५
" १. २. ३.	६१११८	समर्थान् १. २. ३.	
सम् ४.	८१७८		५११३४१
सम १.	३११५२	समलेपनी २.	३१९१४
" ३.	५११६१	समवकारक १.	३१९१००
" ३.	५११६२	समवर्तिन् १.	११२३४
" १. २. ३.	५११८६	समवाय १.	५१११
" १. २. ३.	५११२१	समशन १.	५१३५४
" १. २. ३.	६१५९५	समष्टि २.	५१३४८
समक ३.	५११६२	समसुप्ति २.	२११९४
समकम् ४.	८१८१७	समस्त १. २. ३.	५११८५
समल १. २. ३.	५११३३	समस्थान ३.	३१६२२४
समग्र १. २. ३.	५११८५	समस्या २.	२११४०
समङ्ग १.	३१९६०	समा २ ब.	२११९१
समङ्गा २.	३१३१३५	" २.	६१५९५
समज १.	५११५	समांसमीना २.	३११४८
समज्ञा २.	२११३६	समाघात १.	३१७२०४
समज्या २.	३१८१४	समाज १.	५११५
समक्ष ३.	३१७४८	समादान ३.	३१६१०४
समतट १ ब.	३११३१	समाधि १.	३१६२३२
समधिक १. २. ३.		" १.	३१९६०
	५११३७	" १.	७११८१
समनीपद १.	११२४४	समान १. २. ३.	५११२१
समन्त १. २. ३.	५११३३	" १. २. ३.	७११८८
समन्ततः (-स्) ४.		समानोद्व्य १.	४१३३४
	८१८३	समापन ३.	८१३१३
समन्तदुग्धा २.	३१३१७	समालम्भन ३.	४१३१४७
समन्तभद्र १.	१११३३	समास १.	२११४०
समन्तभुज १.	११२१४	" १.	५१२१८

(१५६)

समुद्रान्ता]

शब्दानुक्रमणिका

[सर्वज्ञ

समुद्रान्ता २.	८१२१०	सम्भोग १.	३१७७०	सरस्वती २.	१११९
समुन्दन ३.	५१२२९	" १.	७११८०	" २.	४१२२८
समुन्नति २.	३१३१६	सम्भ्रम १.	३१९८९	" २.	८१५३०
समुन्नद्ध १. २. ३.	८१११२	" १.	७११७९	सरि २.	२११२
समूह १.	३१४२०	सम्मति २.	७१२२९	सरित् २.	४१२२२
समूह १.	५११२	सम्मद १.	३१६१८८	सरिताम्पति १.	४१२११
समूहन ३.	३१७१८९	सम्मर्द १.	३१७२०५	सरिस्पति १.	४१२१२
समृद्ध १. २. ३.	५११५७	सम्मार्जनी २.	४१३५२	सरी २.	३१७९८
समृद्धि २.	३१८९३	सम्मासा २.	३१३१२७	सरीस्प १.	४११४
समोलक १.	५१३४५	(समांसा)		" १.	४११४०
समोलुक ३.	३१२३०	सम्मुख १. २. ३.	५११४७	सरुज् २.	३१६५०
सम्पत्ति २.	३१६१९१	सम्मुखन ३.	५१२४१	सरुहाह १.	३१७१०६
" २.	३१७४	सम्यक् ३.	५१३३	सरोज २.	४१२३७
सम्पद् २.	३१६१९१	सम्प्राज्ञ १.	६११६१	सरोरुह ३.	४१२३६
" २.	८१९५	सर १.	१२१४८	सर्ग १.	३१६३२
सम्पात १.	५१२२६	" १.	३१३४२	" १.	५१२११
सम्पातपाटव ३.	५१२१९	" ३.	३१८१४५	" १.	६११६२
सम्पुट १.	४१३६४	" १.	५१३२६	सर्ज १.	३१३३८
सम्पूर्ण १. २. ३.	५११८७	सरक ३.	३१९५३	सर्जक १.	३१८१४०
सम्पृक्त १. २. ३.	५११७८	" ३.	७१३३८	सर्जन १.	३१८१११
सम्प्रति ४.	८१८५	सरघा २.	२१३४५	सर्प १.	४११४
सम्प्रधारण ३.	३१८१५	सरट् १.	६११६४	" १.	८१६१५
सम्प्रयोग १.	५१२२६	सरट् १.	४११२८	सर्पजाति २.	४११११
" १.	८११४५	सरटी २.	३१२२७	सर्पद्वी २.	३१३१२७
सम्प्रहार १.	३१८१५	सरणी २.	४१२२१	सर्पभुज् १.	४१११६
सम्प्रेष १.	५१२२५	सरण्यु १.	७११७६	" १.	८१६२१
सम्प्रेषणी २.	३१६६५	सरमा २.	३१७७१	सर्पभृता २.	३१११
सम्फल १.	३१४६४	सरल १.	३१३७४	सर्पराज १.	४११३
सम्फुल्ल १. २. ३.	३१३९	" १. २. ३.	५१२०	" १.	४१११५
सम्बन्ध १.	५१२३३	सरलद्रव १.	३१८१०९	" १.	४१११६
सम्बाध १. २. ३.		सरलशोणिक १.	५१३५१	सर्पशफरी २.	४११४४
	५११२६	सरलिक १.	५१३५२	सर्पाक्षर १.	४११२१
" १. २. ३.	७११२२	सरस् ३.	४१२६	सर्पारि १.	८१६२१
सम्भरी २.	३१८१२१	" ३.	६१३३४	सर्पिस् ३.	३१८१३८
सम्भव १.	७११७९	सरमिज ३.	४१२३७	" ३.	६१३३५
सम्भाल १ ब.	३११२४	सरसी २.	४१२६	सर्व १.	५१३३१
सम्भावना २.	३१६१७६	सरसीज ३.	४१२३७	" १.	५११८५
सम्भाषण ३.	२१४२३	सरसीरुह ३.	४१२३७	सर्वसहा २.	३११३
सम्भेद १.	४१२३१	सरस्वत् १.	४१२२९	सर्वगन्ध ३.	४१३१५१
" १.	५१२२६	" १.	८१५३३	सर्वजनप्रिया २.	३१८१९३
		" १.	८१५३४	सर्वज्ञ १.	१११३३

(१५७)

[सर्वज्ञ]

वैजयन्तीकोषः

[साज्य]

सर्वज्ञ १.	१११४४	सवितृ १.	२१११०
सर्वज्ञः (-स्) ४.	८१८३	" १.	७११७८
सर्वतोभद्र १.	४१३३०	सविध १. २. ३.	पा४१२१
सर्वतोमुख १.	१११८	" १. २. ३. पा४१४१	
" ३.	८१३१८	सविस्मय १. २. ३.	४१४२९
सर्वदा ४.	८१३५	सवेध १. २. ३. पा४१४१	
सर्वधुरीण १. २. ३.	३१४५८	सवेश १. २. ३. पा४१४१	
सर्वभक्ष १. २. ३.	पा४५०	सव्य १.	११२२८
सर्वभक्षा २.	३१४६२	" १. २. ३. ६१४१८	
सर्वमङ्गला २.	१११५८	सव्येष्ट १.	३१७१३८
सर्वला २.	३१७१६६	सस्य ३.	३१३२०
सर्वलोचना २.	३१८१८	" ३.	३१८३१
सर्वविद् २.	३१६२३३	सस्यसंवर १.	३१३३८
सर्वविद्या २.	३१६३१	सह ४.	८१८१७
सर्ववेदस् १.	३१६१७७	सहकारक १.	३१३२५
सर्ववेशिन् १.	३१९६३	सहचर १. २. ३.	३१३१९१
(सर्वकेशिन्)		सहचरी २.	४१४३४
सर्वसन्नहन ३.	३१७१५७	सहज १.	४१४३१
सर्वसस्यभू २.	३१८१७	" ३.	पा२११
सर्वसह १.	३१३५३	सहधर्मिणी २.	४१४३४
सर्वाङ्गीन १. २. ३.	पा४५०	सहन १. २. ३. पा४३३	
सर्वाभिसार १.	३१७१५७	सहपानक ३.	३१९५३
सर्वार्थसिद्ध १.	१११३४	सहभोजन ३.	४१३१०३
सर्वोघ १.	३१७१५७	सहरक्षस् १.	१११२१
" ३.	३१८१३६	" १.	१११२२
सर्षप १.	३१८४१	सहस् १.	२११८१
सर्षपी २.	३१३६७	" ३.	३१७२१०
सलज्ज १.	३१३१२२	सहसा ४.	८१७३४
सलवण ३.	३१२३२	सहसानु १.	३१६१८३
सलिल ३.	४२११	" १.	७१५४५
सल्लकी २.	३१३९६	सहस्य १.	२११८२
सल्लाप १.	२१४२९	सहस्र ३.	पा१२८
सव ३.	३१६८२	सहस्रतम १. २. ३.	
सवन १.	३१६६९	सहस्रदंष्ट्र २.	पा१२३
सवर्ण १.	३१५३	सहस्रपत्र ३.	४११४२
" १.	३१५७०	सहस्रवीर्या २.	३१२३३
" १. २. ३. पा४१२१		सहस्रवेधिन् ३.	३१८१३१
सविक्रम १.	३१७९१		

(१५८)

सहस्रवेधिन् १.	३१८१३३	सहा २.	३१३१०६
सहस्रांशु १.	२१११५	" २.	३१३१२८
सहस्रात् १.	११२११	" २.	३१३१२८
सहस्रिन् १. २. ३.		" २.	३१३१२८
		" २.	३१३१२८
सहा २.	३१३१०६	सहाध्यायिन् १.	३१६१२४
" २.	३१३१२८	सहाय १.	३१७१६
" २.	३१३१२८	" १. २. ३. ३१७१३	
" २.	३१३१२८	सहायता २.	पा११९
सहाध्यायिन् १.	३१६१२४	सहित ३.	३१७१७६
सहाय १.	३१७१६	सहितोद्गर ३.	३१७१७७
" १. २. ३. ३१७१३		सहिष्णु १. २. ३. पा४३३	
सहायता २.	पा११९	सहुरि १.	११२१८
सहित ३.	३१७१७६	" १.	७११७५
सहितोद्गर ३.	३१७१७७	सांयात्रिक ३.	११२६८
सहिष्णु १. २. ३. पा४३३		" ३.	३१७१२३
सहुरि १.	११२१८	" १.	४२११८
" १.	७११७५	सांयुगीन १. २. ३.	
सांयात्रिक ३.	११२६८		३१७१४९
" ३.	३१७१२३	सांराविण ३.	८१९१७
" १.	४२११८	सांवत्सर १.	११२१८०
सांयुगीन १. २. ३.		" १.	३१७२५
	३१७१४९	" १.	३१८३३
सांराविण ३.	८१९१७	सांवत्सरी २.	३१६६६
सांवत्सर १.	११२१८०	साकम् ४.	८१८१७
" १.	३१७२५	साकेत ३.	४१३१५
" १.	३१८३३	साक्षात् ४.	८१७३०
सांवत्सरी २.	३१६६६	साक्षिन् १. २. ३.	३१८१९
साकम् ४.	८१८१७	सागर १.	४२११०
साकेत ३.	४१३१५	साङ्कारिका २.	३१६१५२
साक्षात् ४.	८१७३०	साङ्ग्रामिकगुण १.	
साक्षिन् १. २. ३. ३१८१९			३१७४४
सागर १.	४२११०	" १.	३१७५
साङ्कारिका २.	३१६१५२	साचि १.	११२१८
साङ्ग्रामिकगुण १.		" ४.	८१८१९
	३१७४४	साज्य ३.	३१६६५
" १.	३१७५		
साचि १.	११२१८		
" ४.	८१८१९		
साज्य ३.	३१६६५		

[साति]

साति २.	६१२१४४	साधन ३.	७१३३६
सातिसार १. २. ३.	४१४१४६	साधारण १. २. ३.	पा४१२९
साध्वत १.	१११२३	साधिका २.	३१३१७८
" १. २. ३. ३१५५७		साधीयस् १. २. ३.	७१३२९
" १. २. ३. ३१५०५		साधु १. २. ३. पा४१३५	
साध्वती २.	३१९१०१	" १. २. ३. ६१५९६	
सात्त्विक ३.	३१६११९	साधुवाद १.	२१४३६
" १. २. ३. ३१९१९		साध्य १ ब.	११३८
सात्त्विकी २.	२११६०	साध्वस ३.	३१६१८५
साद १.	३१६१९१	साध्वी २.	४१४७
सादिन् १.	६११६५	सानु १. ३.	३१२१७
साद्यस्क १. २. ३.	पा४१८९	" १.	३१६८३
	पा४१८९	सानुनासिक १. २. ३.	२१४१६
साधन ३.	७१३३६	सानुमत् १.	३१२११
साधारण १. २. ३.	पा४१२९	सान्व १. २. ३. २१४१६	
साधिका २.	३१३१७८	" ३.	३१७१३
साधीयस् १. २. ३.	७१३२९	" ३.	६१३३५
साधु १. २. ३. पा४१३५		सान्वन ३.	३१७१३
" १. २. ३. ६१५९६		" ३.	पा२३८
साधुवाद १.	२१४३६	सान्वष्टिक ३.	३१६२३६
साध्य १ ब.	११३८	सान्वेशिक १.	३१७२९
साध्वस ३.	३१६१८५	सान्द्र १. २. ३. पा४१२६	
साध्वी २.	४१४७	सान्द्रस्निग्ध १. २. ३.	पा४१३६
सानु १. ३.	३१२१७		
" १.	३१६८३		

शब्दानुक्रमणिका

सान्व १. २. ३. २१४१६		सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्वष्टिक ३.	३१६२३६	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्वेशिक १.	३१७२९	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्द्र १. २. ३. पा४१२६		सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्द्रस्निग्ध १. २. ३.	पा४१३६	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
		सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्वन ३.	३१७१३	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
" ३.	पा२३८	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्वष्टिक ३.	३१६२३६	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्वेशिक १.	३१७२९	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्द्र १. २. ३. पा४१२६		सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्द्रस्निग्ध १. २. ३.	पा४१३६	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
		सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्वन ३.	३१७१३	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
" ३.	पा२३८	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्वष्टिक ३.	३१६२३६	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्वेशिक १.	३१७२९	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्द्र १. २. ३. पा४१२६		सान्व १. २. ३. ३१६१६	
सान्द्रस्निग्ध १. २. ३.	पा४१३६	सान्व १. २. ३. ३१६१६	
		सान्व १. २. ३. ३१६१६	

(१५९)

[सिंह]

सारपर्णी २.	३१३१००	सारपर्णी २.	३१३१००
सारमेय १.	३१४६८	सारमेय १.	३१४६८
सारस १.	२१३३३	सारमेय १.	३१४६८
" ३.	४१३३७	सारमेय १.	३१४६८
" १.	७११८३	सारमेय १.	३१४६८
सारसन ३.	३१७१५६	सारमेय १.	३१४६८
" ३.	४२११४६	सारमेय १.	३१४६८
सारसप्रिया २.	२१३३३	सारमेय १.	३१४६८
सारस्वत १.	३१६१९	सारमेय १.	३१४६८
सारिका २.	३१९१२८	सारमेय १.	३१४६८
सारी २.	३१९१९१	सारमेय १.	३१४६८
सार्थ १.	पा११४	सारमेय १.	३१४६८
सार्थवाह १.	३१८७२	सारमेय १.	३१४६८
सार्द्र १. २. ३. पा४१०७		सारमेय १.	३१४६८
सार्धम्	८१८१७	सारमेय १.	३१४६८
सार्पिष्क १. २. ३. ४१३१५		सारमेय १.	३१४६८
सार्धभौम १.	२११८	सारमेय १.	३१४६८
" १.	३१७२	सारमेय १.	३१४६८
सार्ष्टि २.	३१६२३७	सारमेय १.	३१४६८
साल १.	३१३३८	सारमेय १.	३१४६८
" २.	४१३१४	सारमेय १.	३१४६८
" २.	६११६५	सारमेय १.	३१४६८
सालभक्षिका २.	३१९१४	सारमेय १.	३१४६८
सालातुरीयक १.		सारमेय १.	३१४६८
	३१६१५४	सारमेय १.	३१४६८
सालावृक १.	८११४६	सारमेय १.	३१४६८
साख १ ब.	३१३३२	सारमेय १.	३१४६८
" १ ब.	३१३३८	सारमेय १.	३१४६८
सावन १.	२११८१	सारमेय १.	३१४६८
सावित्र १.	३१६१४१	सारमेय १.	३१४६८
सावित्री २.	४१४७४	सारमेय १.	३१४६८
सावित्रेय २.	११२३४	सारमेय १.	३१४६८
साष्टी २.	३१३१७५	सारमेय १.	३१४६८
सास्ना २.	३१६६०	सारमेय १.	३१४६८
साहस १. ३.	३१७४६	सारमेय १.	३१४६८
साहस्र १. २. ३.		सारमेय १.	३१४६८
	३१७४६	सारमेय १.	३१४६८
" ३.	पा११३	सारमेय १.	३१४६८
" ३.	पा११३	सारमेय १.	३१४६८
साहायक १. २.	८१९३५	सारमेय १.	३१४६८
सिंह १.	३१३१५	सारमेय १.	३१४६८
" १.	३१३१५	सारमेय १.	३१४६८

[सिंह]

सिंह १.	८१६१४
सिंहकर्णी २.	३१७१२३
सिंहकेसर १.	३३३२६
सिंहपुच्छी २.	३१११३७
" १.	८२११५
सिंहमल ३.	३२१२८
सिंहल ३.	३१११९
" ३.	३२३३१
" ३.	३०८७५
सिंहवाहना २.	१११६२
सिंहसंहनन १. २. ३.	५११६
सिंहाण ३.	३२३३६
सिंहासन ३.	३०११५
सिंहास्य ३.	३३३१०१
सिंहिका २.	३६१४७
सिंही २.	३३३१०२
" २.	३३३१०६
सिकता २ ब.	४२३३३
सिकताप्राय ३.	४२३३३
सिकतावत् १. २. ३.	३११४४
सिकतिल १. २. ३.	३११४४
सिक्थ १.	६११६६
सिच् २.	४३३११६
सिचय १.	४३३११६
सित १.	५१११०
" १. २. ३.	५११९७
सितकाच १.	५३३१३
सितकाचर १.	५३३१३
" १.	५३३२४
सितकुञ्जर १.	१२३४
सितकृष्ण १.	५३३२४
सितच्छद १.	२३३५
सितपिङ्गाण १.	५३३१४
सितपीतहरित्रील १.	५३३१५
सितलोहित १.	५३३२५
सितश्याम १.	५३३१२
" १.	५३३१५

वैजयन्तीकोषः

सिता २.	३१८१३४
सिताङ्ग १.	३१८१०५
सितायुध १.	४११४४
सितासित १.	१११२४
सितोदर १.	१२१५८
सिद्धगुण्ड १.	३३३१८
" १.	३१५९
सिद्ध १.	१३३२
" १. २. ३.	४३३९३
" १. २. ३.	५३३१११
सिद्धसेन १.	१११५५
सिद्धान्त १.	३६३२५
सिद्धार्थ १.	३१८१४१
सिद्धि २.	३१८१२३
सिद्धम ३.	४१४१२६
सिद्धमन् १.	५१४१४४
सिद्धमल १. २. ३.	४१४१४६
सिध्य १.	२११३९
सिन ३.	४१४५२
सिनीवाली २.	२११७१
" २.	८२११०
सिन्दुक १.	३३३११८
सिन्दुवार १.	३३३११८
सिन्दूर ३.	३१८११८
सिन्धि ३.	३१८१२१
सिन्धु १ ब.	३११२७
" १.	३३३१८
" २.	४२३२३
" १.	६१५९७
सिन्धुर १.	३१७६१
सिन्धुसर्ज १.	३३३३९
सिन्धुझव ३.	३१८१२१
सिरा २.	४१४११६
सिराल १. २. ३.	५१४१८
सिल ३.	३१८१२
सिलिन्ध्र १.	३३३१५३
सिह १.	३१८११०
सीता २.	३१८३०
" २.	६२३४५
सीत्य १. २. ३.	३१८२२

[सुगन्धि]

सीम १.	५३३७
सीमन् २.	४३३११
" २.	६२३४४
सीमन्त १.	४१४१००
सीमन्तिनी २.	४१४४
सीमन्तोन्नयन ३.	३६३३
सीमा २.	४३३११
" २.	६२३४४
सीर ३.	३१८२७
सीवन ३.	३१९१२
सीवनी २.	३१९११
" २.	४१४६२
सीस १. ३.	३२३२९
सु ४.	८१७८
" ४.	८१८४
" ४.	८१८१३
सुकर १. २. ३.	३१७१०७
सुकुमार १.	५३३५
सुकृत ३.	३६३१६८
" ३.	७१५९४
सुकृतिन् १. २. ३.	५१४५६
सुख ३.	३६३१८९
" ३.	५१४१४४
" ३.	६३३३५
सुखकर १.	१११२१
सुखङ्घुण १.	१११५०
सुखदोह्या १.	३१४४९
सुखवर्चक १.	३१९१२९
सुखवास १.	३३३१७१
सुखसुसिका २.	३६३२००
सुखा २.	१११४९
सुखोदय १.	३१९४८
सुगत १.	१११३४
सुगन्ध १.	३३३६९
" १.	३३३२००
" १.	४३३१५३
सुगन्धक १.	३३३१६४
सुगन्धा २.	३३३१८६
" २.	३१८१७
सुगन्धि २.	३३३११९

[सुगन्धि]

सुगन्धि १.	३१४२
" १.	३१९८४
सुगन्धिक १.	३१८३२
सुगन्धिक २.	३३३१३९
सुगन्धिन् ३.	३१८१५
सुगन्धी २.	३३३१७५
सुग्रीव १.	४११५५
सुचरित्रा २.	३१८५०
सुत १.	१३३३
" १.	४१४४०
" १.	६११६६
सुतङ्ग १.	३३३२२०
सुतश्रेणी २.	३३३११३
सुतापुत्र १ द्वि.	४१४४८
सुताङ्गा २.	३३३१४४
सुतेजित १. २. ३.	५१४९४
सुत्रामन् १.	१२३४
सुत्वन १.	३६३७५
सुदर्शन ३.	११११७
" ३.	१२३१०
" १.	२३३३०
सुदर्शना २.	३३३१४३
सुदार १.	३२३४
सुदिनाह ३.	८१९२२
सुदुष्प्रभ १.	४११२९
सुधन्व १.	३६३१०७
(युन्धान)	
सुधन्वन् १.	३१५५६
सुधन्वाचार्य १.	३१५५७
" १.	३१५१०४
सुधर्मन् २.	१३३११
सुधा २.	४३३१०५
" २.	६२३४५
सुधी १.	३६३२३४
सुनन्दा २.	१११६०
" २.	३३३४३
सुनाल ३.	४२३४२
सुनासीर १.	१३३५
सुनिषण्णक १.	३३३१५०
सुन्दर १. २. ३.	५१४१३४

शब्दानुक्रमणिका

सुन्दरी २.	४१४६
सुपथिन् १.	३११४९
सुपर्ण १.	१११३८
" १.	३३३४९
सुपर्णक १.	२३३१९
सुपर्णाण्ड १.	३१५२५
सुपर्णातिनय १.	१११३७
सुपर्वन् १.	१११४
सुपार्थ १.	३३३५९
सुप्त १.	२३३२४
" ३.	३६३१९७
" १.	४१४१३४
सुप्रतीक १.	२११८
सुफल १.	३३३३३
" १.	३३३९३
सुब्रह्मण्य १.	१११५७
सुभग १. २. ३.	५१४७०
सुभञ्जन १.	३३३५६
सुभद्रा २.	३३३१७०
सुभिक्षा २.	३३३९७
सुभीरुक ३.	३२३२४
सुम ३.	३३३१८
सुमदा २.	१३३१
सुमन १.	३१८५३
सुमनस् २ ब.	३३३१८
" १. २.	७१५९०
सुमना २.	३३३४४
सुमानस १. २. ३.	५१४५७
सुमुखी २.	३३३१२३
सुमेरु १.	१३३१२
सुयमा २.	३३३६७
सुर १.	१११२
सुरगायन १.	१३३२
सुरज्येष्ठ १.	१११७
सुरदीविका २.	१३३१३
सुरपर्णिका २.	३३३१००
सुरभि १.	१३३२६
" १.	२११८७
" २.	३३३९६
" १.	३३३१२२

[सुवृत्त]

सुरभि २.	३१४४३
" १.	५३३४७
" १.	५३३४९
" १. २. ३.	७१५९३
सुरभिच्छद १.	३३३१३
सुख १.	५३३५४
सुरवर्मन् ३.	२१११
सुरवत्सल १.	३३३७०
सुरश्वेता २.	४१३३१
सुरसा २.	३३३९३
" २.	२१८१७
सुरा २.	३१९४५
सुराचार्य १.	२१३३३
सुराजन् १. २. ३.	३१४४६
सुराजिका २.	४१३३१
सुराधिप १.	१३३२
सुरामण्ड १.	३१९५२
सुरालय १.	१३३१२
सुरावास १.	११११
सुराष्ट्र १.	३१८३७
सुराष्ट्रजा २.	३२३१७
सुराह्वय ३.	३३३७१
सुरूपा २.	३३३१८४
सुरूहक १.	३०१०२
सुरोत्तम १.	११११४
सुलभ १.	१३३२७
सुललिक १.	३१५२७
सुलवणा २.	३१८१०
सुलोह ३.	३२३३४
सुलोहक ३.	३२३२५
सुवर्चला २.	२१३२३
" २.	३१८५५
सुवर्चिका २.	३१८१२९
सुवर्ण १.	३२३१९
" १. ३.	५१३४१
" १.	५१३४९
सुवहा २.	३१८१८
सुवासक १.	३३३१७१
सुवासिनी २.	४१४८
सुवृत्त १. २. ३.	५१४८९

[सुवेल]

सुवेल १.	३१२२
सुवता २.	३१४१९
सुषम १. २. ३.	५४११३५
सुषमा २.	४३१५२
सुषवी २.	३३१६३
" २.	३१८८५
सुषि १. २.	४११२
सुषिक १.	५३१६
सुषिम १.	५३१६
सुषिर १.	३३१२२८
" ३.	३१११५
" ३.	४११२
" १. ३.	७५१९०
सुषिरच्छेद १.	३१११३७
सुषिरा २.	३१८१००
सुषुप्ति २.	३१६१२००
सुषुम्ना २. १.	८११२५
सुषेण १.	३३१८४
सुषेणी २.	३३११३८
सुष्ठु ४.	८८१४
" ४.	८८१३३
सुसंस्कृत १. २. ३.	४३१९४
सुसाम १.	३३३३७
सुस्निग्धा २.	३३११०४
सुहस्त १. २. ३.	३१७१४८
सुहित १. २. ३.	४३११०५
" १. २. ३.	५३१९९
सुहृद् १.	३१७३
" १. २. ३.	३१७४३
" २.	४३१२५
" १. २. ३.	६३१२०
सुहृदय १. २. ३.	५४११६
सुहृ १ व.	३१११५
सुकर १.	३१४५
" १.	३१८३३
सुकरी २.	४३१४१
सूक्ष्म ३.	४३११२२
" ३.	४३१११०
" १. २. ३.	५४११३६

वैजयन्तीकोषः

सूक्ष्म १. २. ३.	६५१९८
"	८११११०
सूक्ष्मदर्शिन १. २. ३.	
सूक्ष्मा २.	११११६
सूक्ष्म १.	३१४३८
" १.	३१५४०
" १.	३१९६८
" १. २. ३.	५४१२५
सूचना २.	८२११४
सूचा २.	३१९११
" २.	८२११४
सूचि १.	३१५२९
" १.	३१५९१
" २.	३१९११
" २.	४३१४८
सूचिसूत्र ३.	३१९१२
सूची २.	४३१४८
सूचीमुख ३.	३१६११४
सूत १.	३२१४४
" १.	३१५१२
" १.	३१५७७
" १.	३१५७७
" १.	३१७१३८
सूता २.	३१४७३
सूति १.	२३१६
सूतिकागृह ३.	४३१२०
सूतिकामास १.	४३११९
सूथान १. २. ३.	५४१५४
सूत्र ३.	३१६१२०
" ३.	३१९११
" ३.	३१९१४२
" ३.	६३१३६
सूत्रक ३.	३१७१५३
सूत्रधार १.	३१९६८
सूत्रवेष्टन १.	५११९
सूत्रसङ्ग्रह १.	३१७११७
सूद १.	४३१८६
" १. २. ३.	४३१९२
सून ३.	३३११८
" ३. २.	६५१९९

[सुप्र]

सूना २.	३१७८४
" २.	४३१९०
सूनातटि २.	३१९३७
सूनु १. २.	४३१३९
सूनुत ३.	५४११४३
" १. २. ३.	७४१२९
सूप १. ३.	४३१८६
" १. २. ३.	४३१९३
सूपकार १. २. ३.	४३१९२
सूर १.	२१११०
सूरण १.	३३१२०८
सूरि १.	३३१२३४
सूर्मि १. २.	३१९२२
" १. २.	८१९२५
सूर्य १.	२१११०
सूर्यकान्त १.	३२१३७
सूर्यभ्रातृ १.	१२११२
सूर्या २.	३३११३४
सूर्याचन्द्रमस १ द्वि.	२११२९
सूर्यारक १ व.	३१३२५
सूर्यावर्त १.	३३११२४
सूर्योद १.	३१६६८
सूक्था २.	४११५८
सूक्न ३.	४३१८८
सूग १.	३१७१६६
सूगाल १.	३१४३७
" १.	८१५७
सूगालकोलि २.	३३१८९
सूगालवास्तुक १.	
	३३११५४
सूजया २.	३१४१०
" २.	४१३२०
सूणि १. २.	३१७८४
सूणिका २.	४३११२०
सूति २.	३१४४९
सूदाकु १.	१२११९
" १.	७११७७
सूपाट १. २.	८१९२५
सूपाटिका २.	२३१५७
सुप्र १.	२११२७

[समर]

समर १.	३१४२९
सृष्टा २.	३१८९४
" २.	३१९१२९
सृष्टि २.	८१५३५
से १. २. ३.	८१५४०
सेकपात्र ३.	४२११८
सेकमिश्रान्न ३.	४३११०६
सेकिम ३.	३२११५५
सेवतृ १.	४३१३७
सेचन ३.	४२११८
सेतु १.	३३१४१
" १.	४२११०
सेतुज १ व.	३११३४
सेना २.	३१७५५
सेनानी १.	१११५५
" १. २. ३.	३१७१४१
सेनामुख ३.	३१७५८
सेनारक्ष १. २. ३.	३१७१४०
सेनास्थ १. २. ३.	३१७१४०
सेभ्य १.	५३१७
सेराल ३.	५३१२०
सेराह १.	३१७१०४
सेहराह १.	३१७१०६
सेलिस १.	३१४२४
सेलु १.	३३१५५
सेवक १.	३१७१७
" १. २. ३.	७५१९३
सेवन ३.	३१६३८
" ३.	३१९१२
" ३.	७३३३७
सेवनी २.	३३११८४
सेवा २.	३१६३८
" २.	३१८३७
सेभ्य १.	२३११८
" ३.	३३१२३१
" ३.	३१८११५
" ३.	३१८१२०
" ३.	३१८१४२
" १.	३१९४९

शब्दानुक्रमणिका

सेव्य ३.	८३११८
सेव्या २.	३३१८५
" २.	३३११७७
" २.	३१८५८
सेहिका २.	५११५४
सेहिकेय १.	२११३६
सेकत १. २. ३.	३११४४
" ३.	४२१३३
सेतवाहिनी २.	४२१२६
सेता २.	४२१२६
सेध १.	२११८२
सैनिक १. २. ३.	
	३१७१४०
" १. २. ३.	३१७१४०
सैन्धव ३.	३१८१२०
" ३.	३१९७२
" १.	७५१९१
सैन्य ३.	३१७५५
" १. २. ३.	३१७१४०
सेर १ व.	३११४०
सेरन्ध्री २.	४३१२५
सेराभ १.	५३११५
सेरिक १. २. ३.	३१४५८
सेरिन्ध्र १.	३१६११२
" १.	३१६११५
सेरिन्ध्रजाति २.	३१६११३
सेरिभ १.	४३१८
सेरेयक १.	३३११९०
सोड १. २. ३.	
	५४१११५
सोड १. २. ३.	५४३३३
सोत्पात ३.	४३११२
सोख १.	३१६७६
सोदर १.	४३३३४
सोदर्य १.	४३३३४
सोन्माद १. २. ३.	
	५४३४१
सोपाक १.	३१५४५
" १.	३१५१०६
सोपान ३.	४३१५१

[सौमिक]

सोम १.	३३११६९
" १.	३३१८४
" १.	६३१६६
सोमप १.	३३१७५
सोमपान ३.	३३१९२
(सोममान)	
सोमपीथिन् १.	३३१७५
सोमभवा २.	४२१२६
सोमयोनि १.	८११४९
सोमरसोद्धव ३.	३१८१७५
सोमराजि २.	३३११८८
सोमल १.	५३१८
सोमवल्लरी २.	३३११४४
सोमवल्लरी २.	३३११०८
" २.	३३११३२
सोमाल १.	५३१४
सोमिन् २.	३३१८३
सोर १.	५२११२
सोरण १.	५३१३८
सोरावास १.	४३१८८
सोल १.	५३१६
" १.	५३१३५
सोलिक १.	५३१६
सोवाल १.	५३११३
सौख्य ३.	३३११८९
सौगन्धिक १.	३२११४
" ३.	३३१२३४
" ३.	४२१३५
सौचिक १.	३१९११
सौदामनी २.	२२१५
सौध ३.	३२१३४
" १. ३.	४३१२९
सौधात १.	३१५७
सौनन्द ३.	१११२५
सौसिक १.	३३१२०३
सौभागिनेय १.	४३३३३
सौमनस १.	५३१४९
सौमिक ३.	३३११०१
(सोमक)	
" १. २. ३.	३३११२७

सौमिकी]	वैजयन्तीकोषः	[स्थल
सौमिकी २.	३१६८७	स्त्व १.
सौमेरव ३.	३११७	स्तिमित १. २. ३.
सौम्य १.	२११३२	स्तुत १. २. ३.
" ३.	२११९१	स्तुति २.
" १.	३१६८४	" २.
" १.	३१६१०८	स्तुतिपाठक १.
" ३.	३१६१४५	स्तूप १.
" १. २. ३.	६१५९८	स्तूपपृष्ठ १.
सौम्यकृच्छ्र ३.	३१६१३२	स्तेन १.
सौम्या २.	८१२१५	स्तेम १.
सौरत १.	११२५१	स्तेय ३.
सौरभेय १.	३१४५३	स्तैन्य ३.
सौरभेयी २.	३१४४१	स्तोक १.
सौरसा २.	३३३८८	" १. २. ३.
सौराष्ट्र ३.	३१२२९	स्तोकक १.
सौराष्ट्रिक १.	४११२४	स्तोकपाण्डु १.
(सारोष्ट्रिक)		स्तोत्र ३.
सौराष्ट्री २.	३१२१६	" ३.
" २.	३१८४८	स्तोम १.
सौरि १.	२११३५	" १.
सौरिक १.	११११	स्थान १. २. ३.
सौर्य १.	२११९१	स्त्री २.
सौवर्चल ३.	३१८१२५	" २.
" ३.	३१८१२६	" २.
सौवस्तिक १.	३१७२४	स्त्रीधर्मिणी २.
सौवास १.	३३११२०	स्त्रीपुंसलक्षणा २.
सौविद १.	३१७२२	स्त्रीप्रिय १.
सौविद्वह १.	३१७२२	स्त्रीभूषण १.
सौविष्ट ३.	३१६११२	स्त्रीवास १.
सौवीर १ ब.	३११२८	स्त्रीव्यञ्जनाकृता २.
" ३.	३१२४२	स्त्रैण १. २. ३.
" ३.	४३३८१	स्याख्या १.
" १. ३.	७१५९१	स्थगणा २.
सौशमिकन्ध ३.	८१९१९	स्थण्डिलश १. २. ३.
सौष्ठव ३.	३१७२०८	स्थपति १.
सौहार्द ३.	३१६१८६	" १.
सौहित्य ३.	४३११०५	" १.
सौहृद ३.	३१६१८६	स्थपुट १. २. ३.
स्कन्द १.	१११५४	स्थल ३.
" १.	६१५६५	
स्कन्दोल १.	५३१६	

स्थल]	शब्दानुक्रमणिका	[स्फिच्
स्थल १. २.	८१९३२	स्थिति २.
स्थलशृङ्गाट १.	३३११४१	" २.
स्थली २.	३११४२	स्थिर १.
" २.	८१९३२	स्थिरगति १.
स्थविर १. २. ३.	५४३३	स्थिरजिह्व १.
स्थाणु १.	१११४३	स्थिरप्रेमन् १. २. ३.
" १. ३.	३३११३	स्थिरा २.
स्थान ३.	३१७१८६	" १.
" ३.	३१९१११	स्थूल ३.
" ३.	६३३३६	स्थूणा २.
स्थानिक १. २. ३.	३१९१९	" २.
स्थानीय ३.	४३११	स्थूणाशीर्ष ३.
" ३.	४३१२	स्थूरिन् १. २. ३.
स्थाने ४.	८१८१४	स्थूल ३.
स्थापत्य १.	३१७२३	" १. २. ३.
" १.	८१९४५	" १. २. ३.
स्थापनी २.	३३३१३०	स्थूलकाष्ठानि १.
स्थाप्य १.	३१८१२	स्थूलनास १.
स्थामन् ३.	३१७२९०	स्थूलपुष्पिका २.
स्थायिन् १.	३१९८१	३३३१३५
" १. २. ३.	५४४४२	स्थूललक्ष १. २. ३.
स्थायिभाव १.	३१९७६	५४५५८
स्थायुक १.	३१७२१	स्थूलशाटिका २.
" १. २. ३.	५४४४२	स्थूलहस्त १.
स्थाल १.	१११४५	स्थूलोच्चय १.
" ३.	४३३६१	स्थेय १.
स्थाला २.	३१८२७	स्थेयस १. २. ३.
स्थालिक १.	५३३५७	स्थेष्ट १. ३.
स्थाली २.	४३३५५	स्थौण्य ३.
स्थावर १. २. ३.	५४३६२	स्थौर १ ब.
स्थाविर ३.	४३३५४	स्नपित १. २. ३.
स्थासक १.	३१७८७	५४३१०७
" १.	४३११३	स्नव १.
" १.	४३११४८	स्नसा २.
स्थास्नु १. २. ३.	५४३४२	स्नातक १.
" १. २. ३.	५४३७९	स्नान ३.
स्थित १. २. ३.	६३३२०	" ३.
स्थितासन ३.	३३३२२६	स्नायु २. ३.
स्थिति २.	३१८१५	स्नाव १.
" २.	५३३२	" १.

स्फीत]		वैजयन्तीकोषः		[स्वर्नदी	
स्फीत १.	पा३१७	संसिन् १.	३३३४५	स्वधिति १.	३१९३६
स्फुट १. २. ३.	३३३९	सक्ति २.	४३३५२	स्वन १.	२१४११
" १. २. ३.	पा३१३४	सज् २.	४३३५४	" १. २. ३.	पा३४८
" १. २. ३.	६१४१९	स्रव १.	४३३९३	स्वप्न १.	३३३१९७
स्फुटन ३.	पा३४१	" १.	पा३३२	" १.	३३३१९७
स्फुटवस्त्रकी २.	३३३१४०	स्रवण १.	३३३४२	स्वप्नज १. २. ३.	पा३३९
स्फुटित १. २. ३.	३३३४४	स्रवत्पाणिपादा २.	३३३५२	स्वप्रतिष्ठ १.	पा३२७
स्फुरण ३.	पा३३३	स्रवभूर्मा २.	३३३४७	स्वभाव १.	पा३२
स्फुरित ३.	३३३९१	स्रवन्ती २.	४३३२२	स्वभू १.	११११२
स्फुलन ३.	पा३३३	स्रष्ट १.	१११६	स्वमनीषिका २.	३३३१७४
स्फुलिङ्ग १. २. ३.		स्रष्टृष्व ३.	१११४८	स्वयंवरा २.	४३३७
	११३३१	स्रस्त १. २. ३.	पा३१०२	स्वयम् ४.	८८८१८
स्फूर्जक १.	३३३५१	स्राक् ४.	८८८१	स्वयम्भू १.	१११८
स्फूर्जधु १.	२३३६	स्रावस्ती २.	३३३२१	स्वर १.	३३३११०
स्फोटक १.	४३३१२३	" २.	३३३३०	" १.	३३३१३२
स्फ्य १.	३३३१०२	स्रगासादन ३.	३३३८९	" १.	६३३६३
स्म ४.	८३३७	स्रगिज्झ १.	१३३१७	स्वरकम्प १.	३३३८५
" ४.	८३३११	स्रुच २.	३३३१००	स्वरभेद १.	३३३८५
स्मय १.	३३३१६९	" २.	८३३१८	स्वराष्ट्रचिन्ता २.	
स्मयाक १.	३३३५८	स्रुत १. २. ३.	पा३१०९		३३३१४
स्मर १.	१३३२७	स्रुव ३.	३३३१००	स्वरिङ्गण १.	१३३५२
स्मराङ्गुला १.	४३३७६	स्रुवा २.	३३३११४	स्वरित १. २. ३.	३३३३७
स्मित १. २. ३.	३३३९	स्रोतस् ३.	४३३९३	स्वरु १.	६३३६४
" ३.	३३३८३	" ३.	६३३३७	स्वरुमोचन १.	३३३१०६
" ३.	८३३१६	स्रोतस्विनी १.	४३३२२	स्वरूप ३.	पा३१
स्मृति २.	३३३२९	स्रोतोजन ३.	३३३४२	स्वरैणु २.	२३३२३
स्यद १.	१३३५५	स्व १. २. ३.	८३३३८	स्वर्ग १.	१३३१
स्यन्द १.	२३३२६	स्वः (-र) ४.	१३३२	स्वर्जि २.	३३३१२९
स्यन्दन १.	३३३१२४	" (-र) ४.	३३३२०७	स्वर्जिका २.	३३३१२९
स्यन्दनध्वनि १.	२३३९	" (-र) ४.	८३३७	स्वर्ण ३.	३३३१८
स्यन्दिनी २.	४३३१२०	स्वकुलचय १.	४३३४१	" १.	३३३२२१
स्यज १. २. ३.	पा३१०९	स्वङ्ग १. २. ३.	पा३३६	स्वर्णकार १.	३३३१६
स्यमीक १.	७३३७५	स्वच्छन्द १. २. ३.		स्वर्णचूड १.	३३३२९
स्याल १.	४३३३२		पा३३७	स्वर्णद्वीप ३.	३३३१९
स्यालिका २.	४३३२८	स्वज १.	४३३२०	स्वर्णराज ३.	४३३४१
स्यूत १.	४३३६४	" १.	४३३४५	(स्वर्णराग)	
" १. २. ३.	पा३११२	स्वजन १.	४३३५१	स्वर्णरीति २.	३३३२६
स्यूति २.	३३३१२	स्वतन्त्र १. २. ३.	पा३२७	स्वर्णशुक्तिका २.	३३३२१
स्यूना २.	६३३४५	स्वतन्त्रवृत्ति २.	पा३२०	स्वर्णाद्रि १.	१३३१२
स्यूम १.	६३३६१	स्वदन ३.	पा३१०३	स्वर्नदी २.	१३३१३
स्योनाक १	३३३६८	स्वधिति १.	३३३३६	(स्वर्णदी)	

स्वर्भानु]		शब्दानुक्रमणिका		[हरिकेलीय	
स्वर्भानु १.	२३३३६	स्वामिन् १.	३३३१५९	हठ १.	६३३६८
स्वर्वापी २.	४३३२४	" १.	३३३३	हङ्गिक १.	३३३४८
स्वर्वेश्या १.	१३३१	" १.	३३३१०५	हङ्ग १. ३.	३३३३४
स्वल्पदेहा २.	३३३५१	" १. २. ३.	पा३५८	हङ्गा २.	३३३१०८
स्वल्पफला २.	३३३१६०	" १. २. ३.	६३३९४	हत्तक १. २. ३.	३३३१४७
स्वप्न १.	४३३३१	स्वामिनी २.	३३३३२	" १. २. ३.	पा३३६७
स्वप्न २.	३३३१४	" २.	३३३१०३	हना २.	३३३५०
स्वप्न ३.	४३३२६	स्वाराज १.	१३३४	हनन ३.	पा३३६
स्वस्कन्द १.	३३३१४	स्वास्थ्य ३.	४३३१४२	हनु १.	३३३३४
(स्वस्कन्ध)		स्वाहा २.	१३३१९	" २.	३३३१०१
स्वस्तर १.	३३३६६	स्वित् ४.	८३३६	" १. २.	४३३९०
स्वति ४.	८३३२९	स्वेद १.	३३३८१	हन्त ४.	८३३३०
स्वस्तिक १.	२३३२८	स्वेदचूषक १.	१३३५२	" ४.	८३३२
" १.	३३३१४९	स्वेदज १. २. ३.	४३३२	हन्तकार १.	३३३१५
" १.	३३३२२४	स्वेदनी २.	४३३५६	हन्त १. २. ३.	पा३११३
" १.	४३३३०	स्वैर १. २. ३.	६३३२०	हय १.	३३३९०
" १.	४३३१३६	स्वरिणी २.	४३३९	हयन ३.	६३३२७
स्वस्थयन ३.	३३३५८	स्वरिन् १. २. ३.	पा३२७	हयपुच्छी २.	३३३१०७
स्वस्तीय १.	४३३४१	ह		हयशिरस् १.	१३३३०
स्वाती २.	२३३४०	ह ४.	८३३८	हर १.	६३३६७
स्वादु १.	पा३३५	" ४.	८३३११	हरक १.	३३३१६२
" १. २. ३.	६३३१९	हंस १.	२३३५	हरण १.	३३३८२
" ३.	८३३१८	" १.	३३३२००	" ३.	३३३१९३
स्वादुकण्टक १.	८३३५५	" १.	६३३६८	" ३.	३३३९८
स्वादुगन्धा २.	३३३५७	" १.	८३३६	" १.	४३३७१
स्वादुतिक्तकषाय १.	पा३३३	" १.	४३३१४४	" ३.	७३३३९
स्वादुमुस्ता २.	४३३४८	हंसक १.	४३३१४४	हरणि २.	पा३२१
स्वादुरसा ३.	८३३९	हंसकान्ता २.	२३३८	हरणोत्तरा २.	पा३२४
स्वाद्य १.	पा३३३०	हंसकालीसुत १.	३३३१०	हरात्रि १.	३३३१५
स्वाङ्गलतिक्ततुवर १.	पा३३३९	हंसच्छत्र ३.	३३३७६	हरानत १.	१३३३२
स्वाङ्गी २.	३३३१८१	हंसपद ३.	पा३३५०	हराङ्ग १.	३३३८०
स्वाध्याय १.	७३३८३	हंसपाद ३.	३३३४५	हरि १.	१३३१५
स्वान १.	१३३११	हंसबाहन १.	१३३८	" १.	३३३३२
" १.	२३३१	हंससाध १.	२३३९	" १.	३३३३२
स्वान्त ३.	३३३१७३	हकार १.	३३३३१	" १.	३३३३२
स्वाप १.	३३३१९७	हता २.	३३३१०८	" १.	३३३३२
" १.	४३३१६७	हृत् १.	पा३३५	" १.	३३३३२
स्वापतेय ३.	३३३८३	हृदयिकासिनी २.	३३३१०१	" १.	३३३३२
स्वामिन् १.	१३३५६	हृदयैरमाली २.	४३३३५	" १.	३३३३२
		हठ १.	३३३१०९	" १. २. ३.	पा३३३३
		" १.	४३३४६	हरिकेलीय १. २. ३.	३३३३३

हृच्छय]	वैजयन्तीकोषः	ह्लादीनि
हृच्छय १. १११२९	हेति २. ६१२४६	होतृ १. ३६१७९
" १. ११२२१	हेतु १. ५३३३७	होत्र १. ३६१६९
हृणिया २. ३६१९३	" १. ६११६९	होत्रन् १. ३६१७६
(मृणिया)	हैमकरक १. ४३१५८	होम १. ३६१६९
हृणीया २. ३६१९३	हैमकुश ३. ३१११९	होमकाष्टी २. ३६१९५
हृद् ३. ३६१७३	हैमस्र ३. ३२३३०	होमधूम १. ३६१९५
" ३. ४११६८	हैमस्त्री २. ३३३२११	होमधेनु २. ३६१९५
" ३. ४११११४	हैमज ३. ३२३३२	होमभस्मन् ३. ३६१९५
हृदय ३. ४११६८	हैमदुग्धक १. ३३३२८	होमयूप १. ३६१९०३
" ३. ४११११४	हैमधारण ३. ५३१५९	होमन्धन ३. ३६१९६
" ३. ७३३३८	हैमन् ३. ३२३२०	होरा २. २११५१
हृदयालु १. २. ३. ५३११६	" ३. ६३३३७	होला १ व. ३१२२६
हृष १. ३३३३२	हैमन्त १. २११८७	हयः (-स) ४. ८८१९
" ३. ३३८१३९	हैमपुष्प १. ३३३४१	हयस्तन १. २. ३. ५३१८९
" ३. ३३९४८	" १. ३३३८१	हृद् १. ३३१६४
" १. २. ३. ५३१९६	हैमपुष्पिका २. ३३३१८२	" १. ४३१५
" १. २. ३. ५३१३५	हैमप्रतिमा २. ३३१२२	हृस्व १. २. ३. ५३१८१
" १. २. ३. ६३११००	हैममाष १. ५३१५	" १. २. ३. ६३११०१
हृद्यगन्ध १. ३३८८४	हैमा २. ३३१३	हृस्वगवेषुका २. ३३८६१
हृद्या २. ३३२११	हैरग्व १. ३३१९	हृस्वनिर्वशक १. ३३१५५
" २. ३३१६३	" १. ७३१८४	हृद् १. २३१२
" २. ३३८९४	हैरुक १. ३३३३९	हृदिनी २. ४३२३३
हृद्यांशु १. २३१२६	हैरुक ३. ५३१६२	" २. ७३२२९
हृदलेख १. ३३१७७	हैला २. ६३२४६	हृदुनि २. २३२५
हृषित १. २. ३. ८३११३	हैलि २. ३३१५७	हृी २. ३३१९४
हृषीक ३. ३३३२०३	" १. ६३१६९	हृीक १. २. ३. ६३१९०१
हृषीकेश १. १३१११	हैषा २. २३१६	हृीण १. २. ३. ५३१५१
हृष्ट १. २. ३. ५३१९९	है ४. ८३१२	हृीत १. २. ३. ५३१५१
" १. २. ३. ८३११३	हैमकूट ३. ३३१६	हैषा २. २३१६
हृष्टि २. ३३१८८	हैमवत ३. ३३१३	हृद् १. ३३१८८
है ४. ८३१२	हैमवती २. ८३१११	हृदिनी २ व. २३१५९
हैका २. ४३११२७	हैयङ्गवीन ३. ३३१३८	
हेति १. २. ३३११५७	हैड ३. ५३१६२	

समाप्तश्चास्य ग्रन्थः

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

१. **रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी**। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज।
२. **वैजयन्तीकोषः** (कोश)। यादव प्रकाशचार्य विरचित। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री
३. **नाटकलक्षणरत्नकोशः** (कोश)। सागर नन्दी प्रणीत। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री
४. **राजतरङ्गिणी जोनराजकृत**। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह
५. **कालिकापुराणम्** (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय
6. **New Light on the Sun Temple of Konarka.**
Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.
7. **Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa** - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya). An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri
Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.
Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.
८. **भास्करोदया**। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्य-प्रमाणपारावारीणनीलकण्ठभट्टसूनुपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मी- नृसिंहशर्मकृत। म. म. ज्योतिषपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।
९. **तिलकमञ्जरी**। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।
१०. **काव्यमाला**। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)
११. **संस्कृत साहित्य का इतिहास**। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'
१२. **सेतुबन्धम्** महाकवि प्रवरसेन विरचित। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

Mahākavi Pravarasena's

सेतुबन्धम्

Setubandham

Text with Hindi & English Translation

Dr. Asha Kumar

'Setubandham' also named as 'Rāvaṇavaho', 'Dahamuhavaho' and 'Rāmaṣetu' is the oldest and 'most monumental court epic' of Mahārāṣṭrī Prakrit. It is one of the most beautiful works of not only Prakrit but entire ancient Indian literature. It is only its poetic perfection that lead not only its erudite commentator Rāmdāsa Bhūpati but some other scholars also to attribute its authorship to kavikulaguru Kālidāsa. Though the internal and external evidences are enough to prove that it has been composed by Pravarsena II of the Vākāṭaka dynasty.

The perspicuity of language, the picturesque and colourful style of descriptions, portrayal of not only external actions or gestures but also the innermost feelings of all the living beings, excellent uses of figures of speech, highest flight of poetic fancy and above all the aesthetic perfection of the epic are the features that are enough to attract astonished appreciation of aesthets be he Ācārya Daṇḍī or Vāṇabhaṭṭa.

Unfortunately this marvellous epic could not get the attention of modern day scholars which it deserves. Absence of any fully annotated bilingual translation was the main force behing presentation of this work. The meticulous translation and annotations will particularly be useful for non Prakrit knowing scholars and students who intend to relish the beauties of Pravarsena's superb poesy.

जयकृष्णदास-कृष्णदास प्राच्यविद्या ग्रन्थमाला

(स्थापित सन् १९७१)

रासपञ्चाध्यायी-श्रीसुबोधिनी। सचित्र (वेदान्त-शुद्धाद्वैत) महाप्रभु श्रीवल्लभाचार्य विरचिता श्रीमद्भागवत-दशमस्कन्ध-रासपञ्चाध्यायी की हिन्दी व्याख्या। व्याख्याकार जगन्नाथ (मुनमुन जी) चतुर्वेदी। शुभाशंसक गोस्वामी श्री दीक्षित जी महाराज

वैजयन्तीकोषः (कोश)। यादव प्रकाशाचार्य विरचिता। सम्पादक-हरगोविन्दशास्त्री

नाटकलक्षणरत्नकोशः (कोश)। सागर नन्दी प्रणीता। 'प्रभा' हिन्दी व्याख्या।

व्याख्याकार-बाबूलाल शुक्ल शास्त्री

राजतरङ्गिणी जोनराजकृत। हिन्दी अनुवाद। व्याख्याकार-रघुनाथ सिंह

कालिकापुराणम् (पुराण)। संपादक-श्रीविश्वनारायण शास्त्री। प्रस्तावना-बलदेव उपाध्याय

New Light on the Sun Temple of Konarka. Four unpublished Manuscripts relating to Construction, History and Ritual of this Temple. Translated into English and annotated by Alice Boner and Sadāśiva Rath Sharma with Rajendra Prasad Das. Introduction by Alice Boner. Technical Drawings by Sadāśiva Rath Sharma. With many Plates and Illustrations.

Kāvya-prakāśa of Mammata-bhaṭṭa - काव्यप्रकाश मम्मट-भट्ट (Kāvya).

An Introduction to Indian Literary criticism. By S. N. Ghoshāl - Śāstri
Part I Principle, Technique and History of Literary Criticism.

Part II The Kāvya-Prakāśa the central work of Indian Literary Criticism, with its Commentaries Rasa-Prakāśa and the critical explanation of the Texts.

भास्करोदया। तर्कसंग्रहदीपिका-प्रकाशस्य (नीलकण्ठ्याः) व्याख्या पदवाक्यप्रमाणपारावारीण-नीलकण्ठभट्टसूनूपण्डितेन्द्र श्रीमल्लक्ष्मीनृसिंहशर्मकृता। म. म.झोपाख्यपण्डित श्रीमुकुन्दशर्मणा संस्कृता-परिष्कृता-संशोधिता च।

तिलकमञ्जरी। श्रीधनपालविरचिता। म. म. पण्डितशिवदत्तशर्मतनूज पण्डितभवदत्तशास्त्रिणा, मुम्बापुरवासिपरबोपाहव पाण्डुरङ्गात्मज काशिनाथशर्मणा च संशोधिता।

काव्यमाला। सम्पादक-पं. दुर्गा प्रसाद तथा काशीनाथ पाण्डुरङ्गपर्व तथा केदारनाथ वासुदेव शास्त्री पणशीकर। (सम्पूर्ण सेट १-१४ भाग)

संस्कृत साहित्य का इतिहास। डॉ० उमाशंकर शर्मा 'ऋषि'

सेतुबन्धम्। महाकवि प्रवरसेन विरचिता। हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद सहित। डॉ. आशाकुमारी

शाखा :

चौखम्भा बुक्स

Chaukhambha Books

5 UA, Jawahar Nagar (Behind Jawahar Nagar Post Office)
Malkaganj Chowk, Delhi-110007 (India)